



ड्रामा का रहस्य

अव्यक्त मुरली (1969 to 2017)



- # होली मनाना अर्थात् हाइएस्ट और होलिएस्ट बनना ।
- # बहुत समय का पुरूषार्थ तो बहुत समय की प्रारब्ध।
- # इस समय बाप अनेक सम्बन्धा के अनके रूपों से मिलते हैं।
- # जितने श्रेष्ठ कर्म उतनी तकदीर की लकीर लम्बी और स्पष्ट।
- # विजयी रतनों का यादगार बाप के गले का हार आज तक पूजा जाता है।
- # गाया हुआ भी है 'साइंस के ऊपर साइलेन्स की जीत', न कि वाणी की।
- # पास होने वाले तो बहुत होंगे लेकिन पास विद आनर विशेष ही होंगे।
- # पास विथ आनर बनने के लिए हर खज़ाने का एकाउण्ट चेक करके जमा करो ।
- # चिंता है तो उदासी है। उदासी माना दासी बनना। इसलिए बादशाह बनना।

- ✚ जितनी प्यूरिटी की परसनाल्टी होगी उतना ही विशेष आत्माएं गाई जाएंगी।
- ✚ पहले 8 की माला तैयार हो गई तो फिर और पीछे वाले तैयार हो ही जायेंगे।
- ✚ 8 नम्बर में आ जाओ। आठ को ही इनाम मिलेगा। ऐसे नहीं सिर्फ एक को मिलेगा।
- ✚ भुजाओ के सहयोग बिना तो कुछ हो नहीं सकता। इसलिए ही तो माला जपते हैं ना।
- ✚ शक्तियों का अपना गायन है और पाण्डवों का अपना। तो आप सब महान आत्मार्ये हो।
- ✚ दुर्गा अर्थात् दुर्गुण समाप्त कर सर्वगुण सम्पन्ना। तब ही दशहरा मना सकते हो।
- ✚ चरित्र से चित्र बने है। संगम पर प्रैक्टिकल चरित्र दिखाया है तब चित्र बने है।
- ✚ पवित्रता की मान्यता है। पवित्रता के कारण ही परम पूज्य और गायन योग्य बनते हैं।
- ✚ पहले मैं, ऐसा सोचो - इस मरजीवा बनने में ही मज़ा है। इसी को ही महाबली कहा जाता है।
- ✚ जब सबको शान्ति का सन्देश मिले तब आपको शान्ति की देवी वा शान्ति का देवता मानेंगे।

- ✚ यह मेला भी बाप के दर्शन करने का स्थान है। भक्त दर्शन करेंगे और बच्चे मिलन मनायेंगे।
- ✚ जैसे उस बाम्ब से विनाश होता है ना! तो इस आत्मिक बाम्ब से अंधकार का विनाश हो जायेगा।
- ✚ जहाँ भी ब्राह्मण बच्चों के पांव पड़ते हैं वहाँ कोई न कोई आत्मायें हैं तब जाना होता है।
- ✚ आत्मा और परमात्मा यह भी युगल हैं। आत्मा सजनी, सीता कहते हैं ना। परमात्मा है साजन, राम।
- ✚ पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आधार है। पूज्य बनने का आधार है। श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार है।
- ✚ अगर कोई भी शक्ति की कमी होगी तो दूसरे भी उसी बात में कमजोर होंगे क्योंकि निमित्त हैं ना।
- ✚ आप लोगों का ही गीत है, अनुभव का गीत गाते हो, “पाना था वो पा लिया- अब काम क्या बाकी रहा।
- ✚ बापदादा बच्चों को निमित्त बनाए स्वयं बैकबोन (Backbone) बन सहज सिद्धि प्राप्त करा रहे हैं।

- ✚ यह तो पक्का है ना! जहाँ भी ब्राहमण आत्माओं ने इतनी सेवा की है वह पिकनिक स्थान जरूर रहेंगे।
- ✚ सेवा का चांस मिलना भी भाग्य की निशानी है। बड़े चक्रवर्ती बनना है तो सेवा का चक्र भी बड़ा है।
- ✚ लाइट का वतन है तो लाइट के वतन में कारोबार कैसे चलती है? लाइट के आधार पर या और किसी आधार पर?
- ✚ आखिर गुप्त वेष में कितना रहेंगे। अब तो प्रत्यक्ष हो जाओ। वह समय अनुसार जो हुआ वह तो हुआ ही।
- ✚ कहा जाता है बेगर टू प्रिंस। स्वयं लेने की इच्छा वाले नहीं। इस अल्पकाल की इच्छा वाले से बेगर।
- ✚ ऐसे पक्के अंगद के समान, संकल्प रूपी नाखून भी माया हिला न सके - ऐसे ही बाप के अति प्यारे हैं।
- ✚ पुरुषार्थी जीवन में युद्ध करते-करते ही शरीर छूटा तो रिज़ल्ट क्या होगी! चन्द्रवंशी बन जायेंगे।

- ✚ जितना बाप के समीप उतना परिवार के समीप। अगर परिवार के समीप नहीं होंगे तो माला में नहीं आयेंगे।
- ✚ त्याग के आधार पर नम्बरवन आत्मा ने नम्बरवन भाग्य बनाया और अष्ट रत्न नम्बर का आधार भी यही त्याग है।
- ✚ लौकिक रीति से भी ब्राह्मण तिलक लगाते हैं, तो यह निशानी अब संगमयुग की है, तो सदा तिलक कायम रहता है?
- ✚ संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। एक बाप, एक मत, यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते हैं।
- ✚ जब ब्रह्मा बाप समान सब कापियाँ तैयार हो जायेंगी तब बेहद का बारूद चलेगा, फटाके छूटेंगे और ताजपोशी होगी।
- ✚ वैरायटी भी चाहिए। लेकिन गुलाब के फूलों को तो सदा बीच में डालेंगे और वैरायटी फूलों को किनारे पर डालेंगे।
- ✚ बन्धनमुक्त होने के पहले स्वयं को गुणों के फूलों से सम्पन्न करना है तो स्वतः ही बन्धनमुक्त हो ही जायेंगे।

- # निराकार तो निराकारी दुनिया के वासी हो जायेंगे। साकार ब्रह्मा बाप के साथ राज्य-भाग्य की प्रालब्ध भोगेंगे।
- # एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जावेगी। यहाँ एक होना ही एक धर्म एक राज्य की दुनिया को लाने का आधार बनेगी।
- # प्लॉन सोचने से नहीं होता है, लेकिन न चाहते भी ड्रामा का पार्ट निमित्त बना देता हैं। इसमें भी बड़ा रहस्य है।
- # वर्तमान समय की खुशी का नाचना भविष्य चित्र में भी दिखाते हैं। कृष्ण को सदैव डान्स के पोज़ में दिखाते हैं ना।
- # एक-एक शक्ति सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने वाली है। जब शक्ति सेना मैदान में आ जायेगी तब जय-जयकार होगी।
- # फरिश्तों को चित्र रूप में भी दिखायेंगे तो पंख दिखायेंगे। किसलिए? उड़ते पंछी हैं ना। तो पंछी सदा ऊपर उड़ जाते।
- # राज्य दरबार रोज लगाते हो या कभी-कभी? क्या करते हो? राज्य अधिकारी के यहाँ के संस्कार भविष्य में कार्य करेंगे।

- # माताओं से तो विशेष प्यार है तभी देखो माताओं के कारण बाप का गऊपाल नाम पड़ा है। तो माताओं के कारण गऊपाल नाम है।
- # “सपूत बन अपनी सूरत से बाप की सूरत दिखाना, निर्माण (सेवा) के साथ निर्मल वाणी, निर्माण स्थिति का बैलेन्स रखना”
- # यह बाप के स्थान ‘अचल घर’ हैं। तो अचल घर में पहुँचना यह भी बड़े भाग्य की निशानी है। त्याग किया तो अचलघर पहुँची।
- # छोटे-छोटे पेपर से पास होना बड़ी बात नहीं। लेकिन सूक्ष्म महीन पेपर से पास होना - यह है ‘पास विद् ऑनर’ की निशानी।
- # मिलने के लिए आये हैं, यह मिलन ही कल्पकल्प की नूँध है। इस मिलन की यादगार जगह-जगह पर अनेक रूपों से मेला मनाते हैं।
- # जब बाप साथ दे रहा है तो लेने वालों को लेना चाहिए ना। दाता दे रहा है तो पूरा लेना चाहिए, थोड़ा नहीं। जर्मन ग्रुप से
- # तो यह एक ही जयन्ती है जो बाप और बच्चों की इकट्ठी जयन्ती है इसीलिए इस शिव जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहा जाता है।

- # संगठन की शक्ति जो चाहे वह कर सकती है। संगठन की निशानी का यादगार है पांच पाण्डव। पांच हैं लेकिन संगठन की निशानी है।
- # आज बाप-दादा अपने सर्व महान तीर्थों के चक्कर पर निकले। अब के सेवाकेन्द्र भक्ति में तीर्थ स्थान के रूप में पूजे जायेंगे।
- # यह मिलन इस समय का मिलन कितना महान है! सारे कल्प के अन्दर अगर महान समय है तो अब है इसीलिए गायन है संगमयुग महान युग है।
- # दृढ़ संकल्प वाले बनो। परिवर्तन करना ही है, कल भी नहीं, आज। आज भी नहीं अभी। इसको कहा जाता है 'महावीर'। राम के आज्ञाकारी।
- # जैसे कल्प पहले भी कहा यह सब मरे हुए हैं, ऐसे ही यह माया भी मरी हुई है, जिन्दा नहीं है, सिर्फ निमित्त मात्र विजयी बनना है।
- # 'और संग तोड़ एक संग जोड़ो' -- यह कहावत क्यों प्रसिद्ध है? क्योंकि एक बाप का प्यारा बनने के लिए सर्व से न्यारा बनना पड़ता है।
- # सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है-स्वप्न-मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे। इसी को ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।

- # रियलाइजेशन की कमी अर्थात् अनुभवी मूर्त बनने की कमी। भक्ति और ज्ञान का विशेष अन्तर ही यह है। वह वर्णन है और यह अनुभव होता है।
- # 5 पाण्डवों ने क्या किया था? अक्षोणी सेना को खत्म कर दिया। तो पाण्डव भी कम नहीं हैं। एक एक पाण्डव महान है। तो करेंगे ना कमाल?
- # चारों ओर जब इतने शान्ति की देवी और देवतायें फैल जायेंगे तो क्या हो जायेगा? शान्ति दाता बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जायेगा।
- # पाण्डव अर्थात् विजयी। पाण्डवों की कहानी का रहस्य ही क्या है? विजय है ना। तो हर कल्प के विजयी। इमर्ज रूप में नशा रहे। मर्ज नहीं।
- # योग द्वारा शक्तियाँ कौन सी और कहाँ तक फैलती हैं उनकी विधि और गति क्या होती है यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देंगे। ऐसे संगठन तैयार हैं ?
- # दो चार जन्म भी कम हुआ तो बहुतकाल में गिनती नहीं होगी। पहला जन्म हो और पहला प्रकृति का श्रेष्ठ सुख हो। वन-वन- वन हो। सबमें वन हो।
- # जितना जो बाप के गुणों में, स्थिति में समीप उतना वहाँ स्थान में भी समीप, चाहे घर में, चाहे राज्य में। स्थिति स्थान के समीप लाती है।

- # प्रजा भी सम्पन्न तो विश्व महाराजा क्या होगा! तो जैसे भविष्य दाता बनने का पार्ट बजाना है, अभी से ही वही दातापन के संस्कार भरने हैं।
- # कौन-सी माला में आने वाले हो? अगर कभी-कभी इसी स्थिति में स्थित रहते हो तो कभी-कभी पूजने वाली माला में आयेंगे, पीछे का मनका बनेंगे।
- # पाण्डवों की विशेषता है उन्हें सदा बहादुर दिखाते हैं, कमज़ोर नहीं। अपने यादगार चित्र देखे हैं ना। चित्रों में भी महावीर दिखाते हैं ना।
- # दुआयें लो दुआयें दो। जब अभी संगम पर दुआयें लेंगे और देंगे तब आपके जड़ चित्र द्वारा भी दुआ मिलती रहेगी। अभी जमा करते हो तभी मिलती है।
- # हर बोल में बाप के समान अथॉरिटी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात् हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा। जिसको कहा जाता है सत-वचन।
- # शक्ति सेना को बाप-दादा विशेष चढ़ती कला का सहयोग देते हैं? क्योंकि शक्तियों को, माताओं को सबने नीचे गिराया अब बाप आकर के ऊँचा चढ़ाते हैं।
- # समाप्ति भी एक सेकण्ड में नहीं होगी, धीरे-धीरे परिवर्तन होगा। लेकिन शुरू हो जाए और सबके दिल से यह आवाज निकले कि अब नई दुनिया आने वाली है।

- # बापदादा के पास सबके पत्रों के फाइल हैं। कभी देखते हैं शुरू से लेकर क्या-क्या पत्र हैं, जो मन में सोचते हैं, वो भी सबका टेप रिकॉर्ड है।
- # पाण्डवों के बिना भी गति नहीं है। इसीलिए चतुर्भुज रूप की महिमा ज्यादा है। पाण्डव और शक्तियाँ दोनों का कम्बाइण्ड रूप विष्णु चतुर्भुज है।
- # जैसे फरिश्तों को सदा ऊंची पहाड़ी पर दिखाते हैं, तो आप फरिश्ते सदा ऊंची स्टेज अर्थात् ऊंची पहाड़ी पर रहने वाले। ऐसी ऊंची स्टेज पर रहते हो?
- # ऑटोमेटिक कैमरा है। साइन्स वालों ने सब वतन से ही तो कापी की है। कभी वतन में आकर देखना क्या-क्या चीजें वहाँ है। जो चाहिए, वह हाजिर मिलेगी।
- # विश्व की राजाई तो 20 जन्म होगी लेकिन यह बेफिक्र बादशाही और दिलतख्त-यह एक ही इस युग में मिलते हैं एक जन्म के लिए, तो एक का महत्त्व है ना!
- # सूक्ष्म इशारों की भाषा तो जानते हो ना। जैसे अव्यक्त बाप इशारों की ही भाषा जानते हैं। अव्यक्त वतन में तो नयनों की भाषा और इशारों की भाषा है।
- # जैसे आकाश के ऊपर चमकते हुए सितारों को ऊँची नज़र से देखते वैसे आप सबको सर्वश्रेष्ठ महान, लकीएस्ट (Luckiest), समीप आत्माओं की नज़र से देखते हैं।

- # पाण्डव अर्थात् सदा के विजयी। पाण्डवों का नाम विजय के कारण ही प्रसिद्ध है। पाण्डव सेना वह भी विशेष सागर के कंठे पर श्रेष्ठ संग में रहने वाली।
- # इस मेले का भी थोड़ा-सा समय रह गया है - इसलिए अब सुना तो बहुत, सुनना अर्थात् वाणी द्वारा ही यह ब्राह्मण जन्म लिया इसलिए मुख वंशावली कहलाते हो।
- # इस ग्रुप में गंगा-यमुना इकट्ठी हो गई हैं। यह विशेषता है ना। सरस्वती तो गुप्त होती है। इसका भी बड़ा गुह्य रहस्य है कि गंगा कौन और यमुना कौन है!
- # यहाँ समानता में समीप होंगे और वहाँ सम्बन्ध में समीप होंगे। जितना यहाँ समीपता द्वारा सदा साथ है उतना ही मूलवतन में भी ऐसी आत्माएं साथ-साथ हैं।
- # जहाँ देखो वहाँ एक ही देखो, इसी को ही भावना के कारण भक्ति में सर्वव्यापी कह दिया है। वह कह देते तू ही तू...आप सदा बाप के साथ का अनुभव करते हो।
- # अपने को अकेला नहीं समझो। आप एक-एक के पीछे आपकी राजधानी है। वे भी आप को देख रहे हैं। इसलिए यह याद रहे कि जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सभी करेंगे।
- # आप मोस्ट लकी (Most Lucky) हो। क्योंकि लास्ट नम्बर भी बाप-दादा के नयनों के तारे हैं, नूरे रतन हैं। ऐसे नूरे रतन को अब तक भी नयनों पर रखा जाता है।

- # आप आत्माओं ने बाप समान अनुभव किया। इसी 'समान' शब्द को लोगों ने 'समाना' शब्द कह दिया है। आत्मा परमात्मा में समा नहीं जाती, लेकिन बाप समान बनती है।
- # महावीर मुश्किल को सहज बनाता, यादगार देखा ना, संजीवनी बूटी लाना कितना मुश्किल था, लेकिन सारा पहाड़ ही ले आया। महावीर अर्थात् पहाड़ को राई बनाने वाला।
- # सूक्ष्मवतन की सारी कारोबार किस पावर से चलती है? जैसे यहाँ भिन्न-भिन्न साधनों द्वारा कारोबार चलती है और सतयुग में विशेष एटॉमिक एनर्जी द्वारा चलेगी।
- # अगर बहुत समय विधनों के वश होते रहेंगे तो अंत में निर्विघ्न नहीं रहेंगे। इसलिए बहुतकाल की निर्विघ्न अवस्था चाहिए। तो अभी विघनों को आने नहीं देना।
- # इस जन्मदिन को शिवजयन्ती भी कहते हैं और शिवरात्रि भी कहते हैं। तो जन्म के साथ कर्तव्य का भी यादगार है। अंधकार मिटने का और प्रकाश फैलने का यादगार है।
- # बापदादा तीन वर्सा कौन सा देते हैं? सुख, शांति और शक्ति। जितना अधिकार लेंगे उतना वहाँ राज्य के अधिकारी बनेंगे। सम्पूर्ण अधिकार पाने का लक्ष्य रखना है।
- # दिल्ली वालों को राज्य का फाउण्डेशन (Foundation;नींव) लगाना है। राज्य का फाउण्डेशन कैसे लगेगा, उसका आधार क्या? पहले स्वयं का राज्य, फिर विश्व का राज्य।

- # कर्नाटक निवासियों की विशेषता रचयिता बनने में होशियार है। विष्णु बनना कम आता है। शंकर रूप अर्थात् विघ्न-विनाशक - उसका भी पुरुषार्थ अभी और ज्यादा चाहिए।
- # जो जैसा समय वैसी ड्रेस और वैसा ही श्रृंगार कर सकते हैं। सतयुग में भिन्न-भिन्न ड्रैसेज और श्रृंगार चेन्ज करेंगे लेकिन संस्कार तो यहाँ से ही भरने हैं ना।
- # आज जब हम वतन में गई तो शिवबाबा बोले - साकार ब्रह्मा की आत्मा में आदि से अन्त तक 84 जन्मों के चक्र लगाने के संस्कार हैं तो आज भी वतन से चक्र लगाने गये थे।
- # बाप पसन्द, ब्राह्मण परिवार पसन्द और विश्व की सेवा के पसन्द। यह तीनों विशेषता जब होगी तब कहेंगे एवररेडी हैं। पहले कंगन तैयार होगा फिर बड़ी माला तैयार होगी।
- # यह सुख ही सबसे बड़ा अलौकिक अविनाशी झूला है, जैसे जो लाडले बच्चे होते हैं उनको झूले में झुलाते हैं, जैसे कृष्ण को लाडला होने के कारण झूले में झुलाते हैं ना।
- # अमृतवेले भोले भण्डारी के वरदानों के खज़ाने से सहज वरदान प्राप्त होने का वेला है। जो गायन है मन इच्छित फल प्राप्त करना, यह इस समय अमृतवेले के समय का गायन है।
- # पाण्डवों ने क्या प्रतिज्ञा की? सदा विजयी रहेंगे! हार खा करके छिपना नहीं, लेकिन सदा विजयी रहना। ऐसे प्रतिज्ञा करने वालों को सदा बापदादा की बधाई मिलती रहती है।

- ✚ विदेश से तो नाम निकलेगा, लेकिन नाम पहुँचेगा कहाँ? (दिल्ली में) तो दिल्ली वालों को नवीनता करनी चाहिए क्योंकि सेवा का आदि स्थान है। सेवा की 'बीज रूप' दिल्ली है।
- ✚ जो गायन है कोटो में कोई, कोई में कोई यह हम आत्माओं का गायन है, क्योंकि साधारण रूप में आये हुए बाप को और बाप के कर्तव्य को जानना यह कोटो में कोई का पार्ट है।
- ✚ जैसे भक्ति में भी कहते हैं - अनहद शब्द सुनाई दे, अजपाजप चलता रहे, ऐसा पुरुषार्थ निरन्तर हो - इसको कहा जाता है श्रेष्ठ पुरुषार्थ। याद करना नहीं, याद आता ही रहे।
- ✚ आजकल जो महान आत्माएं भी कहलाती हैं उन्हीं के नाम भी अखंडानन्द हैं, लेकिन सब में अखंड स्वरूप तो आप हो ना! आनन्द में भी अखंड, सुख में भी अखंड..... सबमें अखंड हो?
- ✚ हरेक बच्चे के साथ सर्व स्वरूपों से सर्व सम्बन्धों से, 'बाप-दादा का सदा हाथ और साथ है।' अभी ड्रामानुसार समय मिला है, यह अपना लक (Luck;भाग्य) समझ समय का लाभ उठाओ।
- ✚ जैसे बाप नाम रूप से न्यारे हैं तो सबसे अधिक नाम का गायन बाप का है - वैसे ही अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदाकाल के लिए सर्व के प्यारे स्वतः बन जायेंगे।
- ✚ सभी साक्षी होके खेल देख रहे हो या क्वेश्चन मार्क उठता है? क्यों, क्या तो नहीं उठता ना! जो होता है, उसमें कई रा ज समाये हुए होते हैं। वह बाप जाने और ड्रामा जाने।

- ✚ लक्ष्मी स्वरूप अर्थात् धन-देवी और नारायण स्वरूप अर्थात् राज्य-अधिकारी। लक्ष्मी को धन देवी कहते हैं। वो धन नहीं लेकिन ज्ञान के खज़ानें जो मिले हैं उस धन की देवियाँ।
- ✚ सदा खुशी में रहने वाले पास विद् ऑनर और कभी-कभी खुशी में रहने वालों को धर्मराजपुरी पास करनी पड़ेगी। पास विद् ऑनर वाले एक सेकण्ड में बाप के साथ जायेंगे, रूकेंगे नहीं।
- ✚ जिन-जिन देशों से बाप के बच्चे निकले हैं उन स्थानों का भी महत्व है। यह स्थान भी किसी न किसी रूप से यादगार बन जाते हैं। आप लोग विशेष उन स्थानों पर चक्कर लगाते रहेंगे।
- ✚ क्या अनुभव होता है साथ वा साथी ? सर्व के साथी सर्वव्यापी नहीं हुआ! भक्तों ने शब्द कापी किया है - लेकिन कब और कैसे का भावार्थ भूल जाने के कारण गायन बदल ग्लानि हो गई।
- ✚ जब आपके चित्रों की भी भक्त महिमा करते हैं, हर अंग की महिमा करते हैं कीर्ति गाने का कीर्तन करते हैं - आप चैतन्य रूप में एक दो के गुणगान करो - विशेषताओं का वर्णन करो।
- ✚ उद्घाटन के पहले जो भी रिबन बांधते हो या फूलों को बांधते हो, उसे पहले कैंची से काटते हो फिर उद्घाटन होता है। और कैंची को रखते कहाँ हो? फूलों से सजी हुई थाली के अन्दर।

- ✚ आप सभी साकार लोक से आये हैं और बापदादा साकार लोक से भी परे परलोक से वाया सूक्ष्मवतन ब्रह्मा बाप को साथ लाये हैं। और नज़दीक भी इतना है जो सेकण्ड में पहुँच सकते हो ना।
- ✚ सतयुग में अमेरिका और लण्डन नहीं होगा। भारत में ही समा जायेंगे। विश्व एक हो जायेगी। डबल विदेश और भारत ये अलग नहीं होगा। इस्ट और वेस्ट दोनों मिलकर एक विश्व हो जायेगा।
- ✚ सुनाया ना - बाप के संस्कार सो अपने संस्कार, फिर जैसे निमित्त मात्र कर रहे हैं लेकिन करावनहार बाप है। करन-करावनहार जो गाया जाता है वह इस समय का ही प्रैक्टिकल अनुभव है।
- ✚ अगर मोहब्बत हो तो मेहनत कभी नहीं कर सकते। क्योंकि बाप अनेक भुजाओं सहित आपकी मदद करेगा। वो अपनी भुजाओं से सेकेण्ड में कार्य सफल कर देगा। पुरूषार्थ में सदा उड़ते रहेंगे।
- ✚ फरिश्ते सदा उड़ते रहते हैं और मैसेज देते रहते हैं। फरिश्ता आया, सन्देश दिया और उड़ा। तो वो फरिश्ते कौन हैं? आप ही हो ना? फलक से कहो-हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे।
- ✚ कोई भी समस्या सम्पूर्ण बनने में विघ्न रूप नहीं बने। अन्त अच्छी तो भविष्य आदि भी अच्छा होता है। जैसा मत में होगा वैसी गति होगी। तो एवररेडी का पाठ इसलिए पढ़ाया जा रहा है।

- ✚ 108 की माला तैयार है? तैयार है? क्योंकि राजधानी में राज्य अधिकारी तो वही बनेंगे ना। 108 राज्य अधिकारी, फिर 16 हजार 108 राज्य अधिकारी के साथी। फिर उसके बाद है नम्बरवार।
- ✚ अर्जुन अर्थात् विशेष आत्मा, न्यारी आत्मा, अलौकिक आत्मा, अलौकिक विशेष आत्मा। जैसे ब्रह्मा बाप सदा 'पहले मैं' के स्लोगन से जो ओटे सो अर्जुन बना ना, अर्थात् नम्बरवन आत्मा।
- ✚ एक-एक सालिग्राम बाप के साथ के हैं। जैसे बाप की पूजा होती वैसे सालिग्राम की भी होती है। उन सभी की निशानी बिन्दू लगाते हैं। तो शिवरात्रि पर विशेष बिन्दू की महिमा होती है।
- ✚ जो भी चांस लो उसमें रूहानियत की आकर्षण का दृश्य जरूर हो। जैसे तीर्थस्थान पर शान्ति कुण्ड या गति-सद्गति के कुण्ड बनाते हैं ना। तो ऐसे समझें कि सर्व प्राप्ति कुण्ड यही है।
- ✚ खुशी के लिए कितना समय, धन और शारीरिक शक्ति भी खत्म कर देते हैं। हिप्पी बन जाते हैं। उन्हीं को अब हैपी बनाओ। सर्व की आवश्यकता को पूर्ण करने वाले अन्नपूर्णा के भण्डार बनो।
- ✚ तो तीर्थ स्थान पर जा करके कुछ छोड़कर आते हैं, कुछ लेकर आते हैं, इसलिए जो भी आपकी प्रगति में विघ्न डालने वाली चीज़ हो वह छोड़कर जाना और सदा सद्गति की ओर तीव्रगति से चलते रहना।

- ✚ विधि चेन्ज होती रहती है। जो साकार में मिले और अव्यक्त में मिल रहे हैं। विधि चेन्ज हुई ना। आगे भी विधि चेन्ज होती रहेगी। वृद्धि प्रमाण मिलने की विधि भी चेन्ज होती रहेगी।”
- ✚ जैसे गायन है भारत के लिए घर-घर मन्दिर जैसे आस्ट्रेलिया वालों के घर-घर में अर्थात् जो भी आने वाले हैं, यह सेवा का सबूत देने में घर-घर को मन्दिर बनाने में नम्बर वन आ रहे हैं।
- ✚ संगमयुग पर ही देवों के देव के सुहाग और परमात्म वा ईश्वरीय सन्तान के भाग्य का तिलक प्राप्त होता है। तो यह सुहाग और परमात्म वा ईश्वरीय सन्तान के भाग्य का तिलक प्राप्त होता है।
- ✚ सदा विजयी आत्माओं का यादगार क्या है? विजय माला विजयी रत्नों की यादगार है। अनेक बार विजयी बने हैं तब तो यादगार बना है ना। अनेक बार के विजयी हैं-इस स्मृति से सदा समर्थ रहेंगे।
- ✚ 108 की माला में और 16000 की माला में आने के चिन्ह व निशानी क्या है? जो यहाँ सदा विजयी रहते हैं, वही विजय माला में आयेंगे। जो कभी-कभी के विजयी हैं वे 16000 की माला में आयेंगे।
- ✚ शक्तियाँ शस्त्रधारी हो? शस्त्रधारी शक्तियों का ही पूजन होता है। अगर किसी भी समय शस्त्र छोड़ देती तो उस समय पूज्य नहीं। पूज्य अर्थात् सदा पूज्य - ऐसे नहीं, कभी पूज्य कभी कमजोर।

- # बाबा कहा दिल से और दिलाराम हाजर। इसीलिये ही कहते हैं हजूर हाजर है, हाजरा हजूर है। जहाँ भी हैं, जो भी हैं लेकिन हर स्थान पर हर के पास हाजर हो जाते हैं इसीलिये हाजरा हजूर हो गया।
- # जितना यहाँ अपनी मूर्त में सर्व बातें धारण करेंगे उतना ही भविष्य राज्य तो मिलेगा ही लेकिन द्वापर में जो आपकी जड़ मूर्तियाँ बनेंगी वह भी इस संगम की मूर्ति प्रमाण ही बनेंगी। समझा।
- # विजय का झण्डा लहराने वाली पाण्डव सेना हो ना? एक-एक पाण्डव कितने के बराबर हो? वह अक्षोहिणी सेना यह 5 पाण्डव । तो कितने वैल्यूबल और अमूल्य हो। अभी अमेरिका के चारों ओर फैल जाओ।
- # आपके इस साकार सृष्टि का गीत है जो भक्त लोग गाते हैं, बाप को कहते हैं 'देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई' ...तो बाप भी देख रहे हैं, भक्तों का आवाज भी आ रहा है और देख भी रहे हैं।
- # होली का अर्थ है, हो ली, बीत चुका सो बीत चुका। तो आप सबने जो पुरानी जीवन, पुरानी बातें, पुराने संस्कार, पुराने व्यर्थ संकल्प को हो ली कर दी ना। बीती सो बीती करना अर्थात् हो ली।
- # "मन्सा द्वारा प्रकृति को सतोगुणी बनाने की सेवा करो शुभ भावना शुभकामना रख संस्कार मिलन की रास करो और अपने पुराने संस्कारों को जलाकर प्रभु के संग का रंग लगाते सच्ची होली मनाओ"

- ✚ जो यहाँ सदा बाप के समान रहते हैं वा खुशी में नाचते रहते हैं वही फिर भविष्य में भी साथ-साथ रास करेंगे। ब्रह्मा बाप के साथ पार्ट बजाना, तो बाप समान होंगे तब तो पार्ट बजायेंगे ना।
- ✚ दृढ़ संकल्प की तीली से आज इन कमजोरियों के रावण को जलाओ। अर्थात् 'दशहरा' मनाओ। पाँच विकारों के वंश को भी और पाँच तत्वों के अनेक प्रकार के आकर्षण को भी इन दस ही बातों के विजयी बनो।
- ✚ महावीर को भी वरदानी कहते हैं - और शक्तियों को भी वरदानी कहते हैं। अब आपके जड़ चित्रों द्वारा अनेक भक्त वरदान प्राप्त कर लेते हैं तो चैतन्य में तो वरदानों से झोली भरने वाले हो ना?
- ✚ जैसे कल्प पहले का चित्र है - हरेक शक्ति सेना के हाथ में विजय का झण्डा लहरा रहा है। आज तक भी आप श्रेष्ठ आत्माओं को विजयी रतन के रूप में दुनिया वाले सुमिरण करते और पूजते रहते हैं।
- ✚ सबकी हथेली पर स्वर्ग के स्वराज्य का गोला दिखाई दे रहा है ना! जो चित्र बनाया है वह एक का नहीं है, आप सबका है। अपना चित्र देखा है? समझते हो हम सबका चित्र है या एक श्रीकृष्ण का है?
- ✚ तो यू.के. या यूरोप की विशेषता क्या है? यू.के. विदेश सेवा के वृक्ष का बीज है। तो बीज की विशेषता क्या होती है? बीज में पानी दे दो तो सारे झाड़ के पत्ते-पत्ते को पानी पहुँच जाता है।

- ✚ वतन में समय नहीं होता। घडी नहीं होती। लेकिन इस व्यक्त दुनिया में यह सभी बातें देखनी पड़ती है। वहां तो जब सूर्य, चाँद ही नहीं तो रात दिन किस हिसाब से हो। इसलिए समय का बंधन नहीं है।
- ✚ ऐसे पिचकारियों से होली खेलने से देव आत्मा बन जाते हो। गोपी-वल्लभ, गोप गोपियों से एक दिन होली नहीं खेलते लेकिन संगमयुग का हर दिन होली डे है। संगम पर होली और सतयुग मे होगी हाली डे।
- ✚ जैसे बाप हीरो पार्टधारी है तो उनका हर कर्म गाया और पूजा जाता है, ऐसे बाप के साथ जो सहयोगी आत्मायें हैं उन्हों का भी हीरो पार्ट होने के कारण हर कर्म गायन और पूजन योग्य हो जाता है।
- ✚ क्वान्टिटी की विशेषता अपनी है, क्वालिटी की विशेषता अपनी है। चाहिए दोनों ही। गुलदस्ते में वैरायटी रंग रूप वाले फूलों से सजावट होती है। पत्ते भी नहीं होंगे तो गुलदस्ता नहीं शोभेगा।
- ✚ कुमारियों का पूजन होता है, पूजन का आधार है 'सम्पूर्ण पवित्र। तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के आधार पर है। अगर कुमारी, कुमारी होते हुए भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं।

- ✚ अगर कोई के संगदोष में आ जाते या अवगुण देखते तो योग खंडित होता। जो अखंड योगी नहीं वह पूज्य नहीं हो सकते, अगर योग खंडित होता तो थोड़े समय के लिए पूज्य होंगे; सदा का पूज्य बनना है ना।
- ✚ आगे तो भारत ही होना है ना। यह अमेरिका, लण्डन नहीं होगा। यह सब पिकनिक के स्थान बन जायेंगे। बाकी जो भी होगा एक ही भारत। तो अभी यह अनुभव करते हैं कि हम सेवा के लिए विदेश में गये हैं।
- ✚ वायुमण्डल ऐसे हो जाये जैसे मधुवन में प्रैक्टिकल फर्क पड़ जाये। हर एक को सेन्टर में ऐसा वायुमण्डल बनाना है जो गायन है ना घर घर में मन्दिर। तो घर घर में चैतन्य फरिश्तों का मन्दिर हो।
- ✚ बाप जानते हैं कि हरेक आत्मा का, कोई अपना समय-समय का पार्ट है, कोई का आदि में पार्ट है, कोई का मध्य में, कोई का अन्त में पार्ट है, कोई का भक्ति का पार्ट है, कोई का ज्ञान का पार्ट है।
- ✚ विदेश के रहने वाले बच्चों को यह भी एक विशेष लिफ्ट (Lift) है जो स्वयं को विश्व के आगे प्रख्यात कर बाप का परिचय देते हैं-ऐसी सर्विस करने से एक्स्ट्रा मार्क्स (Extra Mark) मिल जायेंगी।

- ✚ मधुरता भी चाहिए। शक्ति रूप भी चाहिए। देवियों के चित्र बहुत देखते हैं तो उसमें क्या देखते हैं? जितना ज्वाला उतनी शीतलता। कर्तव्य ज्वाला का है सूरत शीतलता की है। यह है अन्तिम स्वरूप।
- ✚ जैसे फॉरेन वाले कहते हैं ना भारत में ही बाप क्यों आया? तो भारत में प्रभाव है ना। ऐसे भारत में भी ईस्टर्न में ज्ञान सूर्य प्रगटा। तो धरनी में प्रभाव है इसलिए इस ज़ोन में और भी ज़ोन हैं।
- ✚ अपनी अवस्था सदैव अचल हो। तुम बच्चों की स्थिति का ही यह अचलघर यादगार है। जैसे बापदादा एकरस रहते हैं वैसे बच्चों को भी एकरस रहना है। जब एक के ही रस में रहेंगे तो एकरस अवस्था में रहेंगे।
- ✚ रिगार्ड (Regard) भी विशेष ब्राह्मण जीवन के चढ़ती कला का साधन है। जो रिगार्ड देते हैं वही विशेष आत्मा वर्तमान समय और जनम जन्मान्तर भी अन्य आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं।
- ✚ आपके लास्ट जन्म में भी आपकी महिमा क्या गाते हैं? आपके देवता रूप के आगे आपकी महिमा सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी यह गाते हैं। तो आपका यह बनने का पार्ट अभी संगमयुग का ही गायन है।
- ✚ अगर विश्व की सर्व- आत्माओं द्वारा विश्व-कल्याणी माननीय नहीं बनेंगे, तो माननीय के बिना पूज्यनीय भी नहीं बन सकेंगे। सन्तुष्ट मणि बनने के बिना बाप-दादा के मस्तक की मणियाँ नहीं बन सकते हो।

- ✚ कोई कम्पलेन्ट नहीं, सभी कम्पलीट होकर जा रही हो ना! अभी देखेंगे, नदियाँ कहाँ बहती हैं। तालाब बनती हैं, बड़ी नदी बनती हैं, छोटी बनती हैं या कुआँ बनता है। तालाब से भी छोटा कुआँ होता है ना।
- ✚ क्योंकि आप विशेष आत्माओं का जमा करने का समय इस छोटे से जन्म के सिवाए सारे कल्प में कोई समय नहीं है। और आत्माओं का हिसाब अलग है। लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए -”अब नहीं तो कब नहीं”।
- ✚ बाप जैसे सदा जागती ज्योति है, अखण्ड ज्योति है, अमर ज्योति है, ऐसे बच्चे भी सदा ‘अमर ज्योति’! अमर ज्योति के रूप में भी आपका यादगार है। चैतन्य में बैठे अपने सभी जड़ यादगारों को देख रहे हो।
- ✚ शांतामणी दादी से:- शेश शैया पर सोई हुई हो। जैसे विष्णु को दिखाते हैं ना शेश शैया पर आराम से लेटा हुआ, ऐसे आप भी लेटी हुई हो। बहुत अन्दर कमाई हो रही है। अपनी सूक्ष्म मन्सा सेवा करती रहो।
- ✚ संगमयुग के समय हर कदम में पद्मों की कमाई का चान्स - सदा बाप की याद में रहते हुए हर कदम उठाते पदमों की कमाई जमा करते रहते हो? यह जो गायन है हर कदम में पदम यह किन्हीं का है? आप सबका है ना।

- ✚ तो सतयुग में न ये बैंक होगी, न रूहानी खजाने जमा करने की बैंक होगी। दोनों बैंक नहीं होगी। इस समय एक का पद्मगुणा करके देने की बैंक है लेकिन एक जमा करेंगे तब पद्म मिलेगा, ऐसे नहीं। हिसाब है।
- ✚ स्थापना करने वाले विनाश की ज्वाला प्रज्वलित करने के निमित्त बने हुए हैं न कि विनाश वाले स्थापना करने वालों के पुरुषार्थ की ज्वाला प्रज्वलित करने के निमित्त हैं। स्थापना वाले आधारमूर्त हैं।
- ✚ हिम्मत नहीं हारना कि कोई निकलता नहीं, निकलेंगे। कोई-कोई धरनी फल थोड़ा देरी से देती है कोई जल्दी से। इसलिए जहां भी ड्रामा अनुसार सेवा के निमित्त बने हो तो जरूर कोई रतन है तभी निमित्त बने हो।
- ✚ सर्व आत्माओं की बहुत समय की आशाएं - मुक्ति को प्राप्त करने की, आपकी चढ़ती कला के आधार से ही पूर्ण होती हैं। सर्व आत्माओं की मुक्ति प्राप्ति का आधार, आप आत्माओं के जीवन मुक्ति की प्राप्ति है।
- ✚ श्रेष्ठ पार्टधारी आत्माओं का यादगार भी विजयमाला के रूप में है सिर्फ माला नहीं कहते लेकिन 'विजय माला।' इससे क्या सिद्ध होता है? कि श्रेष्ठ आत्मा ही विजयी आत्मा है। इसलिए विजयमाला गाई हुई है।

- ✚ कितना भी कहो फिर भी बड़ा-बड़ा है, छोटा-छोटा है। क्योंकि डायरेक्ट साकार तन की जन्मभूमि और कर्मभूमि, चरित्र भूमि का विशेष महत्व तो है ही। तब तो भक्ति में भी कुछ नहीं होते हुए स्थान का महत्व है।
- ✚ जर्मन की धरती द्वारा भी कोई विशेष कर्म जरूर होना है। जर्मन की धरती में ऐसे विशेष व्यक्ति हैं जो एक भी बहुत नाम बाला कर सकता है, छिपे हुए रतन हैं जर्मनी में। चारों ओर आवाज़ फैलाओ तो निकल आयेंगे।
- ✚ 108 तो क्या, बापदादा खुली छुट्टी देते हैं - जितने विजयी बनने चाहो उतनी बड़ी विजय माला बन सकती है। 108 की हद में भी नहीं आओ। हैं ही 108 नम्बर, हम तो उसमें आ नहीं सकते - ऐसी कोई बात नहीं है। बनो।
- ✚ जब अपने पूज्य स्वरूप को देखते हो तो स्मृति आती है ना कि यह हमारे ही रूप है। चाहे भक्तो ने अपनी-अपनी भावना से रूप दे दिया है लेकिन हो तो आप ही पूज्य आत्माये! जितना ही स्वमान उतना ही फिर निर्मान।
- ✚ बाप है निराकार, एक तरफ निराकार है दूसरे तरफ जन्म मनाते हैं। एक ही शिव बाप है जिसको अपना शरीर नहीं होता इसलिए ब्रह्मा बाप के तन में अवतरित होते हैं, यह अवतरित होना ही जयन्ती के रूप में मनाते है।

- ✚ पाण्डवों का भी सदा सहयोगी और सदा साथ रहने का गायन है। यादगार में देखो गोपी वल्लभ के साथ ग्वाल-बाल दिखाये हैं। हर कार्य में सहयोग और सदा साथ रहने वाले हो ना? सभी याद और सेवा दोनों में तत्पर रहो।
- ✚ वैसे भी देखो कुमारियों का भक्तिकाल के अन्त में भी पूजन होता है। तो लास्ट तक भी इतनी श्रेष्ठ हो। कुमारी जीवन का बहुत महत्व है। तभी पूज्य है, नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती।
- ✚ सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सदा शक्ति मिलती रहती है, तो कमजोर कैसे होंगे। कमजोरी आ सकती है? कभी गलती से आ जाती है? जब कुम्भकरण की नींद में अलबेले होकर सो जाते हो तब आ सकती है, नहीं तो नहीं आ सकती है।
- ✚ भक्ति-मार्ग में सिर्फ उत्साह दिलाने के लिए उत्सव मनाने का साधन बनाया है। खुशी में नाचते हैं ना। कोई की भी उदासी या उलझन आदि होती है, वह किनारे हो जाती है ना। तो हिम्मत के साथ उल्लास भी जरूर चाहिए।
- ✚ अभी तो दूसरे के राज्य में अपना कार्य करना पड़ता है, फिर अपना राज्य हो जायेगा। प्रकृति भी आपको आफर करेगी। प्रकृति जब आफर करेगी तो आत्मायें क्या करेंगी? आत्मायें तो सिर झुकायेंगी। तो क्या करेंगे अभी?

- ✚ सदा श्रेष्ठ, सदा पूज्य, हर कर्म, हर गुण का सभी लोग कीर्तन गाते रहें। कीर्तन का अर्थ ही है - कीर्ति गाना। अगर सदा श्रेष्ठ कर्म अर्थात् कीर्ति वाले कर्म हैं तो फिर सदा ही लोग आपका कीर्तन गाते रहेंगे।
- ✚ महावीर तो पहाड़ को भी सेकेण्ड में हथेली पर रख उड़ने वाला है। अर्थात् पहाड़ को भी पानी के समान हल्का बनाने वाला है। छोटी-छोटी परिस्थितियाँ क्या बात हैं! फिर तो ऐसे महावीर को कहेंगे चीटी से घबराने वाले।
- ✚ साइंस आप लोगों की सेवा के लिए पुरुषार्थ के लिए निकली है और आप सम्पन्न हो जायेंगे तो साइंस समाप्त हो जायेगी। रिफाइन होके फिर हमारे राज्य में आयेगी। साइंस के साधन आप सबकी सेवा करेंगे लेकिन निर्विघ्न।
- ✚ जैसे बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है। इसलिए 'त्रिमूर्ति' का विशेष गायन और पूजन है। त्रिमूर्ति शिव कहते हो। एक बाप के तीन विशेष कार्यकर्ता हैं जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं।
- ✚ उत्तर- जिनके गले अर्थात् मुख द्वारा बाप के गुण, बाप का दिया हुआ ज्ञान वा बाप की महिमा निकलती रहती, जो बाप ने सुनाया वही मुख से आवाज निकलता, ऐसे बच्चे बापदादा के गले का हार बन गले में पिरोये रहते हैं।
- ✚ अच्छा है, देखो विजय का गायन पाण्डवों का है। शक्तियों का गायन शक्ति देने का है। तो पाण्डव नाम ही विजय की स्मृति दिलाते हैं। इसीलिए हर एक पाण्डव को अपने मस्तक में विजय का तिलक सदा स्मृति में रखना चाहिए।

- ✚ इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामी-ग्रामी मन्दिर हैं वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है?
- ✚ लेकिन सुनाया ना - नम्बर किस आधार पर बनते। जो समय प्रमाण कोई भी विशेषता को कार्य में नहीं लगाते तो नम्बर आगे पिछे हो जाता। समय पर जो कार्य में लगाता है, वह विन करता है अर्थात् वन हो जाता। तो यह चेक करो।
- ✚ बाप अपने सेवा के साथियों को देख रहे हैं। देश से विदेश तक भी पतित पावनी नदियाँ पहुँच गई हैं। देश-विदेश की आत्मायें पावन बन कितने महिमा के गीत गाती हैं। यह मन के गीत फिर द्वापर में मुख के गीत बन जाते हैं।
- ✚ बापदादा तो कर्म और फल दोनों से न्यारे हैं। इस समय ब्रह्मा बाप भी इसी स्थिति पर हैं। फिर तो हिसाब किताब में आना ही है लेकिन इस समय बाप समान हैं। इसलिए जो जैसा करेंगे अपने लिए ही करते हो। बाप तो दाता है।
- ✚ चाहे दुनिया की अक्षौणी आत्मायें एक तरफ हो जाएं, आप अकेले हो, फिर क्या होगा? बोलो, मैं अकेला नहीं हूँ, बाप मेरे साथ है। बापदादा खुश होते हैं - स्वयं की भी जीवन बनाई और अनेको की जीवन बनाने के निमित्त बने हो।

- ✚ बॉम्बे - गुजरात ग्रुप:- बेहद बाप के अर्थात् बेहद के मालिक के बालक हैं, ऐसे समझते हो? बालक सो मालिक होता है, इसलिए बापदादा बच्चों को “मालेकम् सलाम" कहते हैं। बेहद बाप के बेहद के वरसे के बालक सो मालिक हो।
- ✚ आप सभी के मन में तो होगा ही-कि हमारी मम्मा कहाँ गई। अभी यह राज इस समय स्पष्ट करने का नहीं है। कुछ समय के बाद सुनायेंगे कि वह कहाँ और क्या कर रही है। स्थापना के कार्य में भी मददगार है लेकिन भिन्न नाम रूप से।
- ✚ कर्मणा के साथ-साथ मंसा स्थिति भी सदा श्रेष्ठ रहे, तब सेवा का फायदा है। शक्तियाँ भी अच्छी स्नेही हैं, अथक हैं, बाहों में दर्द तो नहीं पड़ता, बापदादा स्नेह से पाँव और बाँहें दबा रहे हैं। स्नेह ही पाँव दबाना है।
- ✚ मनाने के साथ मिलना। तो रूहानी मिलना वा मिलन करना अर्थात् मिलना अर्थात् बाप समान बनना। यह सिर्फ गले मिलन नहीं लेकिन गुणों से मिलना। संस्कारों से मिलना। मिलना अर्थात् समान बनना। इसीलिए ही संग के रंग का गायन है।
- ✚ सच्चे ब्राह्मण अर्थात् सदा सत्य बाप का परिचय देने वाले। ब्राह्मणों का काम है कथा करना, तुम कथा नहीं करते लेकिन सत्य परिचय सुनाते हो। ऐसे सत्य बाप का सत्य परिचय देने वाले, ब्राह्मण आत्मायें हैं, यही नशा रहे।

- ✚ वृद्धि, विधि को भी चेन्ज करती हैं। वृद्धि होना भी जरूरी है और हर विधि में सम्पन्न और सन्तुष्ट रहना भी जरूरी है। अभी तो फिर भी बाप और बच्चे के सम्बन्ध से मिलते हो। समीप आते हो। फिर तो दर्शन मात्र रह जायेंगे।
- ✚ अभी तो सिर्फ प्रोग्राम का निमन्त्रण देते हैं फिर जैसे जड़ चित्रों को आंखों और सिर पर उठाते हैं वैसे आप सबको उस नज़र से कहाँ बिठावें, क्या करें कुछ सूझेगा नहीं। महिमा में क्या बोलें क्या न बोलें यह सूझेगा नहीं।
- ✚ राइट हैण्ड हो ना! लेफ्ट तो नहीं हो ना। राइट हैण्ड का अर्थ ही है-श्रेष्ठ कार्य करने वाले। लेफ्ट हैण्ड तो आपकी प्रजा की भी प्रजा होगी। लेकिन आप सभी ब्राह्मण राइट हैण्ड हो। यह नशा है कि हम भगवान के राइट हैण्ड है?
- ✚ सतयुग में जमा नहीं होगा। कर्म वहाँ भी होंगे लेकिन अकर्म होंगे। क्योंकि वहाँ के कर्म का सम्बन्ध भी यहाँ के कर्मों के फल के हिसाब में है। तो यहाँ है करने का समय और वहाँ है खाने का समय। तो इतना अटेन्शन रहता है?
- ✚ जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद की लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो ना! मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते।

- ✚ 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउण्डेशन पवित्रता है। आत्मा अर्थात् बच्चे और बाप से मिलन का आधार 'पवित्र बुद्धि' है। सर्व संगमयुगी प्राप्तिओं का आधार 'पवित्रता' है। पवित्रता, पूज्य-पद पाने का आधार है।
- ✚ लग्न की अग्नि से। अपनापन कुछ भी नहीं। मानव, मानव नहीं रहा फरिश्ता बन गया। जैसे कच्ची मिट्टी को साँचे में ढालकर आग में डालते हैं तो ईंट बन जाती, ऐसे यह भी परिवर्तन हो जाता। इसलिए इस याद को ही ज्वाला रूप कहा है।
- ✚ कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्हीं से खेलूं, तुम्हीं से खाऊं - यह चित्र देखा है सखे रूप से। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को सखा रूप से साखी रूप दिखाया है, ग्वालबाल के रूप में दिखाया है ना।
- ✚ हँसों का भोजन अमूल्य मोती होते हैं। ऐसे ही आप सब होली हँसों के बुद्धि का भोजन ज्ञान रतन है। अमृतबेले से बापदादा के साथ रूह-रूहान द्वारा, रूहानी मिलन द्वारा ज्ञान रतनों को धारण व्रते हो। शक्तियों को धारण करते हो।
- ✚ जो निमित्त बनते हैं उनके हर संकल्प में, बोल में, कर्म में बाप ही दिखाई दे। जो भी देखें तो उनके मुख से यही निकले कि यह तो बाप समान है। जो कहावत है - 'बड़े ते बड़े, छोटे सुभान अल्ला'। यह कहावत प्रैक्टिकल अनुभव करेंगे।

- ✚ दिल का सहयोग बाप को प्रिय है। इसलिए यहाँ यादगार भी 'दिलवाला मन्दिर' बनाया है। तो दिलवाला बाप को दिल का स्नेह, दिल का सहयोग ही प्रिय है। छोटी दिल वाले छोटा सौदा कर खुश हो जाते और बड़ी दिल वाले बेहद का सौदा करते हैं।
- ✚ गणेश वह हैं जो पेट में सब बातें छिपाने वाले हैं। हनुमान - पूँछ से आसुरी संस्कार जलाने वाला है। पूँछ भी सेवा के लिए है। पूछपूछ का पूँछ नहीं है। पाण्डवों की यह विशेषता है - बात पचाने वाले हैं, इधर-उधर करने वाले नहीं।
- ✚ आप सबका मनाना है - 'मिलन मनाना' और उन्हों का मनाना है - 'आह्वाहन करना'। उन्हों का है 'पुकारना' और आपका है 'पा लेना'। वह कहेंगे 'आओ' और आप कहेंगे 'आ गये'। मिल गये। यादगार और प्रैक्टिकल में कितना रात-दिन का अन्तर है।
- ✚ ऐसा संगठन है ना! विशेष मणकों की विशेष माला है। स्वतः तैयार हो रही है ना माला! तैयार करनी नहीं पड़ती लेकिन हो रही है। वैसे अगर नम्बर निकालें या नम्बर दें तो क्वेश्चन उठेंगे लेकिन स्वतः ही नम्बरवार सेट होते जा रहे हैं।
- ✚ (बाबा, एडवान्स पार्टी का इस समय क्या रोल है?) जो आप लोगों का रोल है वही उन लोगों का रोल है। आप शुभ भावना से सेवा कर रहे हो ना। लड़ाई-झगड़े के बीच जाकर के तो नहीं कर रहे हो। तो वो भी अपने वायब्रेशन से सब करते रहते हैं।

- ✚ प्रजा तो त्रेता के अन्त वाली चाहिए। द्वापर युग के लिए भक्त चाहिए। भक्त भी बनाओ और प्रजा भी बनाओ। अब तो ऐसा समय आयेगा -- देते जाओ, झोली भरते जाओ। इतनी तड़पती हुई आत्मायें आयेंगी, उन्हें बूँद भी देंगे तो खुश हो जायेंगी।
- ✚ सिंगल पूजा और डबल पूजा में कितना अन्तर रहा! वह प्रजा का पूजन रूप और वह राज्य पद प्राप्त करने वाले पूजा का रूप। विशेष देवताओं का हर कर्म का पूजन होता है और कोई-कोई देवताओं का रोज पूजन होता है, परन्तु हर कर्म में नहीं।
- ✚ तो बच्चे जब स्नेह के गीत गाते हैं तो बापदादा भी खुशी में नाचते हैं ना। इसीलिए शंकर डांस बहुत मशहूर हैं। सेवा भी तो नाचना है ना। जिस समय सर्विस करते हो उस समय मन क्या करता है? नाचता है ना। तो सेवा करना भी नाचना ही है।
- ✚ सारे विश्व का गोला उनके हाथ में दिखाया है। विश्व का मालिक होने के कारण विश्व का गोला उनके हाथ में दिखाया है। ऐसे वर्तमान समय भी विश्व-कल्याणकारी होने के नाते से सारे विश्व की सर्व आत्मायें आपके मस्तक में सदा समीप हैं।
- ✚ यही निर्मल स्वभाव निर्मानता की निशानी है। तो अण्डरलाइन करो 'निर्मल स्वभाव'। बिल्कुल शीतल। शीतलता का गायन शीतला देवी है। तो निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव। बात जोश दिलाने की हो लेकिन आप निर्मल हो तब कहेंगे सफल टीचर।

- ✚ यह श्रेष्ठ ज्ञान है अनुभवी बनने का। द्वापर से अनेक प्रकार ज्ञान सुने और सुनाये। जो आधाकल्प किया वह अभी भी किया तो क्या बड़ी बात! यह नई जीवन, नया युग, नई दुनिया के लिए नया ज्ञान, तो इसकी नवीनता ही तब है जब अनुभव में लाओ।
- ✚ जैसे दुनिया वाले बताते हैं कि एक-एक सितारे में दुनिया है, उन सितारों में तो दुनिया नहीं लेकिन आप जो लकी सितारे हो उन एक एक सितारों में दुनिया है अर्थात् अपनी-अपनी राजधानी है। तो एक-एक को अपनी-अपनी राजधानी स्थापन करनी है।
- ✚ जो ब्रह्मा का तन मुकरर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है वही मुरली है। और सन्देशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है।
- ✚ अब तो ज्वाला रूप होना है। आपका ही ज्वाला रूप का यादगार है। पता है ज्वाला देवी भी है वह कौन है? यह सभी शक्तियों को ज्वालारूप देवी बनना है। ऐसी ज्वाला प्रज्ज्वलित करनी है। जिस ज्वाला में यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जायेगा।
- ✚ हरेक अपने को सूर्यवंशी आत्मा समझते हो? पहले राज्य में आयेंगे वा दूसरे नम्बर के राज्य में आयेंगे? फर्स्ट राज्य में आने का एक ही पुरुषार्थ है, वह कौन सा? सदा एक की याद में रहकर एकरस अवस्था बनाओ तो वन-वन और वन में आ जायेंगे।

- ✚ बाकी क्या करेंगे? गुलबासी डालेंगे? गुलाब की पत्तियाँ डालेंगे? स्वयं ही गुलाब हो। बाकी कोई आशा रह गई हो तो कल गुलाब जल डाल देना। रंग में तो रंगे हुए ही हो। वह रंग तो मिटाना पड़ेगा और यह रंग तो जितना चढ़ा हुआ हो उतना अच्छा है।
- ✚ जैसे एक-एक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम गई हुई है वैसे एक-एक माता जगत् माता है। कहाँ 100 ब्राह्मण, कहाँ सारा जगत। तो किसकी ऊँची महिमा हुई? एक-एक माता जगत्माता बनकर जगत की आत्माओं के ऊपर तरस, स्नेह और कल्याण की भावना रखो।
- ✚ जैसे बाप सदैव हाँ बच्चे, मीठे बच्चे, विश्व के मालिक बच्चे समझ कर अपना सिरताज बनाते हैं, ऐसे सिरताज स्थिति में स्थित रहते हो? ब्राह्मणों की चोटी का स्थान कहाँ होता है? सिर के ऊपर है ना तो ब्राह्मण चोटी अर्थात् बाप के सिरताज।
- ✚ फरिश्ते सदैव उड़ते हुए दिखाते हैं। फरिश्ते का चित्र भी पहाड़ी के ऊपर दिखाएंगे। फरिश्ता अर्थात् ऊँची स्टेज पर रहने वाला। कुछ भी इस देह की दुनिया में होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे।
- ✚ कितने वैरायटी ग्रुप्स आते हैं! बापदादा भी वैरायटी फुलवाड़ी को देख हर्षित होते हैं। भले आये। शिव की बारात का गायन जो है वह देख रहे हो ना! बाबा-बाबा कहते सब चल पड़े तो हैं ना। मधुवन तो पहुँच गये। अब सम्पूर्ण मंजल पर पहुँचना है।

- ✚ स्नेहमूर्त होने से उन्हीं को जगत्-माता के रूप का अनुभव होगा। जैसे मां बच्चे को भले कैसे भी शब्दों में शिक्षा देती है, तो मां के स्नेह कारण वह शब्द तेज वा कडुवे महसूस नहीं होते। समझते हैं - मां हमारी स्नेही है, कल्याणकारी है।
- ✚ लंदन से सारे विदेश के सेवा केन्द्रों का सम्बन्ध है। तो लंदन निवासी इस सेवा के वृक्ष का फाउण्डेशन हो गये। फाउण्डेशन कमजोर तो सारा वृक्ष कमजोर हो जायेगा। इसलिए फाउण्डेशन को सदा अपने ऊपर सेवा की जिम्मेवारी सहित अटेंशन रखना है।
- ✚ संस्कार मिलन की महारास गाई हुई है। जो यादगार में है महारास, वह संस्कार मिलन की महारास है। अभी रास होती है, महारास नहीं हुई है। (महारास क्यों नहीं होती हैं?) अण्डरलाइन नहीं है, टूटता नहीं है। अलबेलापन भिन्न-भिन्न प्रकार का है।
- ✚ बंधन है, बंधन है यही सोचते जायेंगे तो कहां जायेंगे? पिंजड़े में ही जायेंगे! अंत में अगर बंधन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवांसपार्टी में सेवा के लिए जायेंगे, इसलिए कभी भी अपने से तंग नहीं हो।
- ✚ बलि किसकी चढ़ाते हैं? कमजोरियों की। जब कमजोरियों की बलि चढ़ा दी तो क्या बन गये? महाबलवान। सबसे बड़ी कमजोरी है देह अभिमान। देह-भान समर्पित करना अर्थात् उनके वंश को भी सम-र्पित किया। क्योंकि देह-अभिमान का सूक्ष्म वंश बहुत बड़ा है।

- ✚ साइन्स भी सब आपके लिए ही इन्वेन्शन कर रही है। इसीलिए बापदादा साइन्स के साधन निकालने वाले बच्चों को भी स्नेह से मुबारक देते हैं। दिमाग तो चलाते हैं। साइन्स वाले भी आयेंगे, आपकी अंचली लेंगे। फिर आपकी सेवा में भविष्य में आयेंगे।
- ✚ संगमयुग की विशेषता है कि इस युग में ही बाप भी प्रत्यक्ष होते हैं, ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण भी प्रत्यक्ष होते हैं। आप सबके 84 जन्मों की कहानी भी प्रत्यक्ष होती है। श्रेष्ठ नॉलेज भी प्रत्यक्ष होती है। इस कारण ही प्रत्यक्ष फल मिलता है।
- ✚ श्रेष्ठ भावना का अर्थ यह नहीं कि किसी में भावना रखते-रखते उसके भाववान हो जाओ। यह गलती नहीं करना। क्योंकि चलते-चलते उल्टा भी कर लेते हैं। भाववान बनना यानि उसके भक्त बन जाना अर्थात् उसके गुणों पर न्यौछावर हो जाना, माना भक्त बनना।
- ✚ सेवा के क्षेत्र में पाण्डव भी महावीर बन आगे बढ़ रहे हैं। हलचल को पार करने में होशियार हैं। सभी का चित्र वही है। पाण्डव मोटे ताजे लम्बे-चौड़े दिखाते हैं। क्योंकि स्थिति ऐसी ऊँची और मजबूत है। इसलिए पाण्डव ऊँचे और बहादुर दिखाये हैं।
- ✚ इसलिए बाप अकेले नहीं आते लेकिन साथ बच्चों के आये हैं क्योंकि यही जयन्ती सब जयन्तियों से वन्डरफुल है। सारे कल्प में यह एक ही जयन्ती है जो बाप और बच्चों का साथ में जन्म होता है इसलिए इस जयन्ती को कहा ही जाता है हीरे तुल्य जयन्ती।
- ✚ जितना अपने को सर्विस में सहयोगी बनायेंगे उतना ही प्रजा आपकी सहयोगी बनेगी। कोई भी कारण है तो उनको हल्का छोड़कर पहले सर्विस के मौके को आगे रखो। कर्तव्य को पहले रखना होता है। कारण होते रहेंगे। लेकिन कर्तव्य के बल से ढीले पड़ जायेंगे।

- ✚ सबका लक्ष्य तो एक ही है कि बाप समान बनना ही है। क्योंकि समान के बिना तो न बाप के साथ स्वीट होम में जायेंगे और न ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। जो बापदादा के साथ अपने घर में जायेंगे वही ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में उतरेंगे।
- ✚ अच्छा, बाम्बे वाले क्या करेंगे? आजकल बहुत बड़े-बड़े बॉम्ब निकाले हैं। दीपावली में देखा होगा ना, इतने बॉम्ब इकट्ठे जलाते हैं जो लाइन की लाइन खत्म। तो बाम्बे वाले अनेक विकल्पों की लाइन को एक तीली लगाना और सारे के सारे खत्म हो जायें।
- ✚ तो ड्रामा अनुसार अगर समय आपको सिखायेगा या समय के आधार पर परिवर्तन होगा तो बापदादा जानते हैं कि प्रालब्ध भी समय पर मिलेगी क्योंकि समय टीचर है। समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप समय का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप मास्टर रचता हो।
- ✚ ज्ञानदाता बन बहुत किया, अब शक्तियों का वरदाता बनना है। इसलिए शक्तियों के आगे सदैव वर मांगते हैं। सिद्धि कैसे मिलेगी शक्तियों द्वारा? अभी कौनसी सर्विस करनी है? वरदानी बनकर सर्वशक्तियों का अपनी निमित्त बनी हुई रचना को वरदान देना है।
- ✚ ऐसे चारों ही बातों में रिगार्ड अच्छा रखने वाले विश्व की आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बनते हैं। अर्थात् अब विश्व कल्याणकारी रूप में और भविष्य विश्व महाराजन के रूप में और मध्य में श्रेष्ठ पूज्य के रूप में प्रसिद्ध होते हैं।

- ✚ अल्लाह अवलदीन का चिराग बहुत मशहूर है। जिस चिराग द्वारा जो देखना चाहें, जो पाना चाहें, वह देख और पा सकते हैं। मधुवन निवासी विशेष अल्लाह अवलदीन के चिराग हैं। सेकेण्ड में घर और राज्य दिखाने वाले अर्थात् मुक्ति, जीवनमुक्ति देने वाले।
- ✚ ऐसा समय आयेगा जो आपके सर्व स्थान शान्ति प्राप्ति के चुम्बक बन जायेंगे, आपको नहीं जाना पड़ेगा वह स्वयं आयेंगे। लेकिन तब, जब सर्व में शान्ति की महान शक्ति निरन्तर संकल्प बोल और कर्म में हो जायेगी। तब ही मास्टर शान्तिदेवा बन जायेंगे।
- ✚ पाण्डव भी आदि साथी हैं तो शक्तियाँ भी साथी हैं। राइट हैण्ड हैं इसलिये ब्रह्मा की अनेक भुजायें दिखाई हैं। भुजा अर्थात् सहयोगी-साथी। सभी राइट हैण्ड हो ना? यहाँ लेफ्ट भी राइट हो जाता है। लेफ्ट को लेफ्ट नहीं कहेंगे, सर्व साथी कहेंगे।
- ✚ टिका क्यों लगाया जाता है? जैसे तिलक मष्तिष्क पर ही लगाया जाता है, ऐसे ही बिन्दी स्वरूप यह भी तिलक है जो सदैव लगा ही रहे। दूसरा भविष्य का राज्जिकल यह भी तिलक ही है। दोनों की स्मृति रहे। उसकी निशानी यह तिलक है। निशानी को देख नशा रहे।
- ✚ तो महाराष्ट्र पांच लाख बनायेंगे! कोई खयाल नहीं करना कि 9 लाख तो पूरे हो गये! पंजाब वाले चार लाख लायेंगे और महाराष्ट्र पांच लाख लायेगा। फिर छांट छूट भी तो होगी ना? कोई त्रेता की प्रजा होगी, कोई सतयुग की होगी, इसलिये इतने भले बनाओ।

- ✚ जैसे आज के दिन को गायन करते हैं - शिव के भण्डारे भरपूर,... तो आपका गायन है, सिर्फ बाप का नहीं। सदा भण्डारा भरपूर हो। दाता के बच्चे दाता बन देते जाओ। सुनाया था ना - भक्त हैं 'लेवता' और आप हो देने वाले 'देवता' तो दाता माना देने वाले।
- ✚ स्वयं गुप्त रूप में तखतनशीन बच्चों को देखते भी हैं, सहयोगी भी हैं लेकिन प्रैक्टिकल तखतनशीन बच्चों को ही बनाते हैं। यह रसम अभी से आरम्भ होती है। करन करावनहार है - तो करनहार का भी पार्ट बजाया और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं।
- ✚ निर्मान स्वभाव, निर्मान बोल और निर्मान स्थिति से सम्बन्ध-सम्पर्क में आना, देवताओं का गायन करते हैं लेकिन है ब्राह्मणों का गायन, देवताओं के लिए कहते हैं उनके मुख से जो बोल निकलते वह जैसे हीरे मोती, अमूल्य, निर्मल वाणी, निर्मल स्वभाव।
- ✚ ज्ञान का दान ब्राह्मण को तो नहीं करना है, वह तो अज्ञानियों को करेंगे। ब्राह्मण परिवार में फिर इस दान के महादानी बनो। जैसे गायन है 'ना दे दान तो छूटे ग्रहण'। जो भी कमजोरियाँ रही हुई हैं वह सभी प्रकार के ग्रहण इस महादान से छूट जायेंगे।
- ✚ माया चाहे शेर के रूप में आये अर्थात् विकराल रूप में आये लेकिन शक्तियाँ उस शेर पर भी सवारी करने वाली, इतनी निर्भया। जो निर्भय स्टेज पर रहते उनका साक्षात्कार शक्ति रूप का होता। सदा शस्त्रधारी। दुनिया आपको इसी रूप में नमस्कार करने आयेगी।

- ✚ जिन बच्चों ने जन्म से विशेष कोई कमजोरी को टच नहीं किया है, वह जन्म से ही वैष्णव हुए। कोई-कोई बच्चे जन्म से सात्विक संस्कार वाले होते हैं। कोई रजोगुणी से सात्विक बनते हैं, कोई तमोगुणी से रजोगुणी बनते हैं, कोई तीनों में मिक्स चलते हैं।
- ✚ इसलिए उत्सव के रूप में यादगार बना लिया है। तो बाप से होली मनाना अर्थात् अविनाशी रूहानी रंग में बाप समान बनना। वह लोग तो उदास रहते हैं इसलिए खुशी मनाने के लिए यह दिन रखे हैं। और आप लोग तो सदा ही खुशी में नाचते-गाते, मौज मनाते रहते हो।
- ✚ जैसे यात्रा पर जाते हैं, क्यों जाते हैं? (पाप मिटाने) उस भूमि में यह विशेषता है तब तो जाते हैं। इस भूमि में फिर क्या विशेषता है? जो है ही वरदान भूमि, वहाँ वरदान तो प्राप्त है ही। अपने आप ही वरदान तो मिलेगा ना। मांगने की दरकार नहीं है।
- ✚ प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है वह है प्यार निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में है निभाने वाले नहीं। मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है। मधुबन की धरनी का ही महत्व है।
- ✚ शीतल-स्वरूप में रहना अर्थात् चाँदनी में बैठना। सदा ही चाँदनी रात में रहो। चादनी रात में ड्रेस भी स्वतः चमकीली हो जायेगी। जहाँ देखेंगे वहाँ चमकते हुए दिखाई देंगे। और सदा सागर के कण्ठे पर रहो अर्थात् सदा सागर समान सम्पन्न स्थिति में रहो।

- ✚ आज पक्के प्यार का दिन मना रहे हो ना। ऐसा प्यार अब और एक जन्म में ही मिलता है। इस समय का परमात्म प्यार अनेक जन्म प्यार सम्पन्न जीवन की प्रालब्ध बना देता है लेकिन प्राप्ति का समय अभी है। बीज डालने का समय अभी है। इस समय का कितना महत्व है।
- ✚ समय को, संकल्प को बचाओ, जितना अभी बचत करेंगे, जमा करेंगे तो सारा कल्प उसी प्रमाण राज्य भी करेंगे और पूज्य भी बनेंगे। चाहे द्वापर से आप साकार रूप में तो गिरती कला में आते हो लेकिन आपका जमा किया हुआ खाता आपके जड़ चित्रों की पूजा कराता है।
- ✚ दिल्ली सबकी है। कितने बार दिल्ली में राज्य किया है? अनगिनत बार। तो आपकी हो गई ना! इसीलिए स्थापना की सेवा भी दिल्ली में जमुनाघाट पर हुई। राज्य भी जमुनाघाट पर करना है तो आरम्भ भी जमुनाघाट से हुआ। मेहनत की लेकिन राज्य का छाप तो लगा दिया ना।
- ✚ सम्मान दो और महिमा योग्य बनो। सम्मान देने वाला ही सर्व द्वारा माननीय बनते हैं। और जितना अभी माननीय बनेंगे, उतना ही राज्य अधिकारी और पूज्य आत्मा बनेंगे। देते जाओ लेने का नहीं, लो और दो यह तो बिजनेस वालों का काम है। आप तो दाता के बच्चे हो।
- ✚ हैं ही! ऐसे अनुभव होता है! जैसे बाप ब्रह्मा का आधार ले सेवा करते हैं वैसे आप भी बापके माध्यम हो। वर्तमान समय बाप माध्यम द्वारा करावनहार अपना कार्य करा रहे हैं। विशेष माध्यम हो। ब्रह्मा के आकार द्वारा और आपके साकार द्वारा कार्य करा रहे हैं।
- ✚ सभी सोचते हैं बाबा बड़ा आवाज़ क्यों नहीं करते हैं। लेकिन बहुत समय के संस्कार से अव्यक्त रूप से व्यक्त में आते हैं तो आवाज़ से बोलना जैसे अच्छा नहीं लगता है। आप लोगों को भी धीरे-धीरे आवाज़ से परे इशारों पर कारोबार चलानी है। यह प्रैक्टिस करनी है।

- ✚ तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं, तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं। तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है।
- ✚ बापदादा सभी बच्चों को चैतन्य साक्षात्कार कराने वाली साक्षात मूर्तियाँ देखना चाहते हैं, जब चैतन्य मूर्तियाँ तैयार हो जायेंगी तब यह जड़ मूर्तियाँ समाप्त हो जायेंगी और यही भारत बेहद का मन्दिर बन जायेगा, अनेक समाप्त होकर एक ही बड़ा मन्दिर हो जायेगा।
- ✚ संगमयुग की सबसे बड़ी विशेषता क्या है? बाप और बच्चों का, आत्मा और परमात्मा का मेला संगम पर लगता है। इस समय संगमयुग पर है बाप और बच्चों का मेला और लोगों ने यहाँ नदियों के मेले को संगम बना दिया है। तो यह किससे कॉपी की है? इस समय को कॉपी की है ना।
- ✚ कमाल करेंगे, पाण्डव कम थोड़े ही हैं। पाण्डवों का गायन भी विशेष है। साथी पाण्डव दिखाये गये हैं। शक्तियों को मैदान में दिखाया गया है लेकिन पाण्डव साथी दिखाये गये हैं। साथ देने वाले और साथ रहने वाले, बाप के साथ रहने वाले और सर्व को साथ देने वाले।
- ✚ “आज शमा अपने परवानों के रूहानी महफिल में आये हैं। यह रूहानी महफिल कितनी अलौकिक और श्रेष्ठ है। शमा भी अविनाशी है, परवाने भी अविनाशी हैं और शमा-परवानों की प्रीति भी अविनाशी है। इस रूहानी प्रीति को शमा और परवानों के सिवाए और कोई जान नहीं सकता।

- ✚ यह परमात्म तख्त कितना श्रेष्ठ है और कोई युग में परमात्म तख्त प्राप्त नहीं होता। यह परमात्म तख्त गाया भी जाता है परमात्म तख्त के अधिकारी भक्ति मार्ग में भी माला के मणकों के रूप में गाये और पूजे जाते हैं। कोटों में कोई के रूप में गाये जाते हैं।
- ✚ बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता है। भले बेगर हो लेकिन बेगर होते भी बेगमपुर के बादशाह हो।
- ✚ जैसे कल्प पहले के यादगार शास्त्रों में वर्णन हैं कि स्वयं बाप ने द्रोपदी के पाँव दबाये, तो बाप समान उपकारी बच्चे बन सर्व आत्माओं की थकावट मिटाओ। अब बुद्धि रूपी पाँव थक गये हैं, बुद्धि में स्मृति के स्विच को दबाओ। यही बुद्धि रूपी पाँव दबाना है।
- ✚ आफ्रिका - सेवा की वृद्धि का उमंग उत्साह तो सदा रहता है ना। जैसे दृष्टान्त देते हैं कि मछली नीर के बिना नहीं रह सकती वैसे ब्राह्मण सेवा के बिना नहीं रह सकते। क्योंकि सेवा करने से एक तो स्व उन्नति और साथ-साथ अनेक आत्माओं की भी उन्नति हो जाती है।
- ✚ इस एक जन्म में सम्मान देना है और साराकल्प उसकी प्रालब्ध सम्मान प्राप्त होता है। आधाकल्प राज्य अधिकारी का सम्मान मिलता है, आधाकल्प भक्ति में भक्तों द्वारा सम्मान मिलता है। लेकिन इसका, सारे कल्प का आधार है इस एक जन्म में सम्मान देना, सम्मान लेना।

- ✚ धर्मात्माओं को आकर्षित करने वाली भी यह पर्सनैलिटी है। वह अनुभव करें कि जो हमारे पास चीज़ नहीं है वह यहाँ है। जो हमारी बुद्धि में बात नहीं है वह इन्हों के प्रैक्टिकल जीवन में है। यह है महारथी को नीचे गिराना। जैसे चींटी हाथी को भी गिरा देती है ना।
- ✚ अभी नम्बर आउट नहीं हुई हैं इसलिए जो भी निमित्त बन नम्बरवन आने चाहे वह आ सकते है। समझा क्या करना है? उसका साधन भी सुनाया-''उड़ती कला''। चढ़ती कला नहीं उड़ती कला। उसके लिए सदा डबल लाइट रहो। यह तो जानते हो ना! जानते सब हो अभी स्वरूप और अनुभव में लाओ।
- ✚ घर बैठे बाप मिला तो कितना बड़ा भाग्य है! दुनिया वाले बाप को ढूँढने के लिए निकलते हैं और आपको घर बैठे मिल गया। तो इतना बड़ा भाग्य प्राप्त होगा - ऐसे कभी संकल्प में भी सोचा था? यह जो गायन है “घर बैठे भगवान मिला”.. यह किसके लिए है? आपके लिए है ना।
- ✚ यह ‘मैं’-‘मैं’ जो करता है उसे कहेंगे बकरी दिल और बड़ी दिल वाले को कहेंगे शेर दिल। शक्तियों की सवारी किसके ऊपर है? बकरी के ऊपर या शेर के ऊपर? शेर पर है ना। आप भी शक्ति सेना हो। तो शेर पर सवारी है ना। ‘मैं’-‘मैं’ को बलि चढ़ा लिया ना, समाप्त कर दिया।
- ✚ स्वयं से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है। ऐसे सन्तुष्ट हो? मातायें सन्तुष्ट देवी हो ना? सन्तोषी मां का पूजन होता है, वो कौन हैं? आप ही हो ना। तो कुछ भी हो जाये अपनी विशेषता को सदा साथ रखो।

- ✚ आपके अपने में जो रावण-पन के संस्कार हैं, उन रावणपन के संस्कारों का संस्कार करो अर्थात् रावणपन के संस्कारों को सदा के लिए छुट्टी देकर लाभ उठाओ। हड्डियाँ व राख बाँध कर साथ नहीं ले जाना। राख अर्थात् संकल्प रूप में भी रावणपन के संस्कार नहीं ले जाना।
- ✚ बापदादा अपने सहयोगियों को जब चाहें तब इमर्ज कर लेते हैं। ट्रिब्युनल भी गाई हुई तो है। लास्ट में होगी सहयोगियों की ट्रिब्युनल। अभी तो मुरबी बच्चों व सहयोगी बच्चों के रूप में इमर्ज करते हैं। क्यों करते हैं? बापदादा भी छोटी-छोटी सभायें करते हैं ना।
- ✚ एडवांस पार्टी के अपने सभी क्योंकि कोई न कोई स्थान से भिन्न-भिन्न गये हुए हैं। तो गये हुए को याद तो करते हो ना! बापदादा भी अमृतवेले विशेष एडवांस पार्टी से सेवा कराते हैं क्योंकि सारी दुनिया तो सोई हुई होती है और यह ड्रेस बदलके वतन में आ जाते हैं।
- ✚ सदा भाग्य-विधाता बाप आज्ञाकारी बच्चों को अमृतवेले रोज सफलता का तिलक लगाते रहेंगे। यह भी तिलक का गायन है ना कि भक्तों को भगवान तिलक लगाने आया तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवास्थान अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफलता का तिलक देने आयेंगे।
- ✚ सभी का एक ही वरदान है जो बिना मेहनत के, बिना सोचे समझे हुए बाप ने कैसी भी कमजोर आत्मा को हिम्मतहीन आत्मा को अपना स्वीकार कर लिया। जो है जैसा है मेरा है। यह सेकेण्ड में वर्से के अधिकारी बनाने की लाटरी कहो, भाग्य कहो, वरदान कहो, बाप ने स्वयं दिया।

- ✚ यह प्रकृति भविष्य की रिहर्सल आपको यहाँ ही अन्त में दिखायेगी। चारों ओर कितनी भी किसी तत्व द्वारा हलचल हो लेकिन जहाँ आप प्रकृति के मालिक होंगे वहाँ प्रकृति दासी बन सेवा करेगी। सिर्फ आप प्रकृतिजीत बन जाओ। प्रकृति आप मालिकों का अब से आह्वान कर रही है।
- ✚ सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ हो क्योंकि जब बाप के बन गये तो विजय तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। इसलिए यादगार भी 'विजय माला' गाई और पूजी जाती है। सभी विजय माला के मणके हो ना? अभी फाइनल नहीं हुआ है इसलिए चांस है जो भी चाहे सीट ले सकते हैं।
- ✚ अंगद का जो अब तक गायन हो रहा है, वह किन का गायन है? अपना ही गायन फिर से सुन रहे हो। जो कल्प पहले विजय प्राप्त की है उस विजय का नगाड़ा अब भी सुन रहे हो। वह नक्शा अभी आपके सामने है कल्प-कल्प विजयी हो। अनेक बार वे विजयी हो, इसलिए सहजयोगी कहा जाता है।
- ✚ यह संगमयुग 'अमृतवेला' है। पूरा ही संगमयुग अमृतवेला होने के कारण इस समय की सदा के लिए महानता गाई जाती है। तो पूरा ही संगमयुग अर्थात् अमृतवेला अर्थात् डायमण्ड मारिगा। सदा बाप बच्चों के साथ है और बच्चे बाप के साथ हैं इसलिए बेहद की डायमण्ड मारिगा।
- ✚ सेवा की वृद्धि हो रही है। जितना वृद्धि करते रहेंगे उतना महान पुण्य आत्मा बनने का फल, सर्व की आशीर्वाद प्राप्त होती रहेगी। पुण्य आत्मा ही पूज्य आत्मा बनती है। अभी पुण्य आत्मा नहीं तो भविष्य में पूज्य आत्मा नहीं बन सकते। पुण्य आत्मा बनना भी जरूरी है।

- ✚ बाम्बे निवासी अब सदा संतुष्टता और प्रसन्नता का पेपर नम्बरवन में पास करेंगे - बहुत अच्छा है - आप साथ छोड़ो तो भी बाप-दादा नहीं छोड़ेंगे। विशेष बाम्बे और देहली में आदि रतन ज्यादा है - विश्व सेवा की स्थापना के कार्य में बाम्बे और देहली का विशेष सहयोग है।
- ✚ वह लक्ष्य है बिन्दु। एक लक्ष्य अर्थात् बिन्दी की तरफ सदा देखने वाले। नज़र एक बिन्दु की तरफ ही हो - जैसे यादगार रूप में भी दिखाया है कि मछली के तरफ नज़र नहीं थी लेकिन आंख की भी बिन्दु में थी। तो विस्तार को नहीं देखा लेकिन सार अर्थात् एक बिन्दु को देखा।
- ✚ कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे मन की, तन की, या सम्पर्क की-कोई भी आत्मा संकल्प में न आये। संकल्प में भी कोई आत्मा की स्मृति आई तो उसी सेकेण्ड का भी हिसाब बनता है। तभी तो आठ पास होते हैं। विशेष आठ का ही गायन है। ज़रूर इतनी गुह्य गति होगी? बड़ा कड़ा पेपर है।
- ✚ सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन- शक्ति - इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी। नहीं तो ट्रॉयल की लिस्ट में रहेगी। सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी सही गायन-पूजन योग्य होंगी।
- ✚ टीचर्स के साथ - टीचर्स का अर्थ ही है - बाप-समान अपने संकल्प, बोल और हर कर्म द्वारा अनेकों का परिवर्तन करने वाली। सिर्फ बोल से नहीं लेकिन संकल्प से भी सेवाधारी, कर्म से भी सेवधारी। जो तीनों ही सेवा में सफलतामूर्त होते हैं, वही पास विद आनर बन जाते हैं।

- ✚ समय अन्तिम और पुरुषार्थ की रफ्तार व स्थिति मध्यम होगी तो रिजल्ट क्या होगी? स्वर्ग के सुखों की प्रालब्ध मध्यम पुरुषार्थ वाले सतयुग के मध्य में प्राप्त करेंगे - ऐसा लक्ष्य तो नहीं है ना? लक्ष्य फर्स्ट जन्म में आने का है तो लक्षण भी फर्स्ट क्लास चाहिए।
- ✚ सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एकजैम्पुल बनते हैं - जिसको देखकर अनेक आत्मायें स्वयं भी कर्मयोगी बन जाती हैं और भविष्य में भी पूज्यनीय बन जाती हैं।
- ✚ एक तरफ सारी सृष्टि हो, दूसरे तरफ आप एक भी हो - तो भी आपकी शक्ति श्रेष्ठ है। क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप आपके साथी हैं। इसलिए गायन है शिव-शक्तियाँ। जब शिव और शक्तियाँ दोनों ही साथी हैं तो सृष्टि की आत्मायें उसके आगे क्या हैं? अनेक होते भी एक समान नहीं हैं।
- ✚ शक्तियों का अपना पार्ट है, पाण्डवों का अपना पार्ट है। पाण्डव नहीं हों तो भी काम नहीं चले, शक्तियाँ नहीं हो तो भी काम नहीं चले, इसीलिए भारत में चतुर्भुज का यादगार है। और कोई भी धर्म में चतुर्भुज नहीं दिखाते लेकिन भारत के यादगार में चतुर्भुज का महत्व है।
- ✚ किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता खण्डन हुई है तो परम पूज्यनीय नहीं बन सकते हैं। बाप समान न होने कारण समीप सम्बन्ध में नहीं आ सकते। इसलिए श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्मचारी, जिसको ही फालो फादर भी कहते हैं।

- ✚ माताओं के साथ - माताओं के लिए तो बहुत खुशी की बात हैं - क्योंकि बाप आया ही है माताओं के लिए। गऊपाल बनकर गऊ माताओं के लिए आये हैं। इसी का तो यादगार गाया हुआ है। जिसको किसी ने भी योग्य नहीं समझा लेकिन बाप ने योग्य आपको ही समझा - इसी खुशी में सदा उड़ते चलो।
- ✚ अब मालूम हैं सर्विस कौन सी करनी है? सम्मेलन किया, बस यही सर्विस है? इनके साथ-साथ और श्रेष्ठ सर्विस कौन सी करनी है? अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है नज़र से निहाल, तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस यह प्रैक्टिकल में लानी है।
- ✚ जितनी शक्तियों की शक्ति है वैसे पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। कम्बाइण्ड। दोनों ही कम्बाइण्ड रूप से इस सेवा के कार्य में सफलता पाते हैं। ऐसे नहीं समझना यही (दादियाँ) अष्ट देव हैं। या यही 9 रत्न हैं। लेकिन पाण्डवों में भी हैं।
- ✚ तो ब्राह्मण आत्माओं के दिल से, मुख से तो 'बाबा' निकलता ही है, लेकिन सर्व आत्माओं के दिल से वा मुख से "बाबा" निकले। तब तो समाप्ति हो ना। चाहे "अहो प्रभु" के रूप में निकले, चाहे "वाह बाबा" के रूप में निकले। लेकिन 'बाबा' शब्द का परिचय मिलना तो है ही।
- ✚ अभी सहज योगी और भविष्य में सहज जीवन होगी। ऐसी सहज जीवन बनाओ। अगर बारबार माया का वार होता रहेगा तो अति इन्द्रिय सुख का अनुभव चाहते हुए भी कर नहीं पायेंगे। जो गायन है, 'अति इन्द्रिय सुख संगमयुग का वरदान है' - यह और किसी युग में नहीं होता। यह अब का अनुभव है।

- ✚ वतन में आने के लिए तो कोई बन्धन नहीं। कोई नहीं रोकेगा, टर्न लगाने की भी जरूरत नहीं। अभ्यास से ऐसा अनुभव करेंगे जैसे यहाँ शरीर में होते हुए एक सेकण्ड में चक्कर लगाकर वापस आ गये जो अन्तः वाहक शरीर से चक्र लगाने का गायन है। यह अन्तर की आत्मा वाहन बन जाती है।
- ✚ सुनाया था ना कि बापदादा के पास आपकी साकार दुनिया से न्यारी शक्तिशाली टी.वी. है। आप सिर्फ शरीर के एक्ट को देख सकते हो। बापदादा मन के संकल्प को भी देख सकते हैं। जो भी हर एक ने पार्ट बजाया वह सब संकल्प सहित, मन की गतिविधि और तन की गतिविधि दोनों ही देखी, सुनी।
- ✚ यह लिमिट 108 ही फिक्स नहीं हैं और बढ़ सकते हैं। यह तो सिर्फ नम्बर दिखाये हैं। इसलिए 108 की हद नहीं रखो - रेस करो। वह भक्ति की माला यह प्रैक्टिकल की माला है। अभी यह वर्ष मेकप करने को दिया है इसलिए लगाओ जम्प। माला के नम्बर बदली हो सकते हैं, इसकी कोई बात नहीं।
- ✚ बहुत-काल के स्व-परिवर्तन के आधार से ही बहुतकाल का राज्य-अधिकार मिलेगा। स्व-परिवर्तन बहुतकाल का चाहिए। अगर अन्त में स्व-परिवर्तन होगा तो विश्व-परिवर्तन के निमित्त भी अन्त में बनेंगे, फिर राज्य भी अन्त में मिलेगा। तो अन्त में राज्य लेना है कि शुरू से लेना है?

- ✚ बापदादा विशेष बच्चों को सौगात देते हैं बच्चे में आपके सदा साथ हूँ। बाबा कहा और बच्चों के लिए बाप सदा हाजिर है। जो कहा गया है हजूर हाजर है सर्वव्यापी नहीं है लेकिन बच्चों के आगे हजूर हाजर है। तो सदा विजयी बनना जहाँ भगवान साथ है वहाँ विजयी बनना क्या मुश्किल है।
- ✚ बच्चों का नशा और तीव्र पुरुषार्थ देख बाप भी बच्चों पर बलिहार जाते हैं अर्थात् बच्चों के गले का हार बन जाते हैं। जैसे हार सदा गले में पिरोये हुए होता है, वैसे बच्चों के मुख में, नयनों में, बुद्धि में बाप ही समाया हुआ है, अर्थात् बाप को अपने गले का हार बनाया है।
- ✚ और इसी सहयोग का चित्र अभी भी देख रहे हो। अभी प्रैक्टिकल कर भी रहे हो और चित्र भी देख रहे हो। वैसे कोई मरने के बाद अपना चित्र नहीं देखता। आप चैतन्य में कल्प पहले वाला चित्र देख रहे हो। पहले अपने ही चित्र की पूजा करते थे। अगर पता होता तो गायन नहीं करते, बन जाते।
- ✚ (सागर पर) आज भी सर्व खजानों और गुणों से सम्पन्न, सागर के कण्ठे पर, साथ में ऊंची स्थिति की पहाड़ी पर, शीतलता की चाँदनी में रूहानी माशूक, रूहानी आशिकों से मिल रहे हैं। सागर है सम्पन्नता का और पहाड़ी है ऊची स्थिति की। सदा शीतल-स्वरूप है चाँदनी। तीनों ही साथ में हैं।
- ✚ अभी तो बहुत थोड़े हो फिर भी इतना दूर बैठना पड़ता है। जब वृद्धि को प्राप्त होंगे तो फिर दर्शन मात्र रह जायेंगे। फिर मिलने का चान्स नहीं होगा। सिर्फ दर्शन करने का। दृष्टि, दर्शन में बदल जायेगी। अन्त में जो सिर्फ दृष्टि मिलेगी वह भक्ति में दर्शन शब्द में बदल जायेगी।

- ✚ सन्तुष्ट को सन्तुष्ट रखना महावीरता नहीं है, स्नेही को स्नेह देना महावीरता नहीं, सहयोगी साथ सहयोगी बनना महावीरता नहीं। लेकिन जैसे अपकारियों पर भी उपकार करते हैं, कोई कितना भी असहयोगी बने, अपने सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बनाना - इसको महावीरता कहा जाता है।
- ✚ पूज्य आत्मा की स्मृति में रहने वाली कुमारियों के तरफ किसी की भी ऐसी दृष्टि नहीं जा सकती है। सदा इस बात में अपने को सावधान रखना। कभी भी अपने को हल्की स्मृति में नहीं रखना। ब्रह्माकुमारी तो बन गई, ... कभी ऐसे अलबेले नहीं बनना। अभी तो दादी बन गई, दीदी बन गई... नहीं।
- ✚ एक-एक सितारे की कितनी रचना है। जितनी यहाँ रचना होगी उतना वहाँ बड़ा राज्य होगा। यहाँ कितनी रचना रची है? अपनी रचना देखी है? भविष्य को जानते हो? रचयिता तो सभी हैं लेकिन बड़ी रचना की है या छोटी रचना की हैं? (आश तो बड़ी की है) बड़ी रचना के साथ फिर जिम्मेवारियों भी बड़ी है।
- ✚ अभी बहुत-बहुत बढ़ाते जाओ। कितने वर्ष पहले के बोल अभी सुन रहे हो। बाप की यही आश है कि एक-एक अनेक सेन्टर सम्भालें। तब कहेंगे नम्बर वन टीचर। जब कलियुगी प्राइम मिनिस्टर एक दिन में कितने चक्र लगाते, तो संगमयुगी टीचर्स को कितने चक्र लगाने चाहिए। तब कहेंगे चक्रवर्ता राजा।
- ✚ संकल्प की तीली से, जो भी कुछ स्व प्रति वा सेवा प्रति व्यर्थ संकल्प अर्थात् कमज़ोरी के संकल्प संस्कार हैं, सबको इकट्ठे करके तीली लगा दो, इसी को ही सूखी लकड़ियाँ कहते हैं।

तो सबको इकट्ठे करके दृढ़ संकल्प की तीली लगा दो। तो जलाना भी हो जायेगा। जलाना ही मनाना और बनना है।

✚ याद के अन्न का महत्त्व है, इसलिए ब्रह्मा भोजन की महिमा है। अगर याद में नहीं बनाते और खाते तो यह अन्न स्थिति को ऊपर नीचे कर सकता है। याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता और दुवा का भी काम करता। याद का अन्न कभी नुकसान नहीं कर सकता।

✚ आज होली मना रहे हो ना। होली जलाई भी जाती है और मनाई भी जाती है। पहले जलाई जाती है फिर मनाई जाती है। होली मनाना अर्थात् कुछ जलाना और कुछ मनाना। जलाने के बिना मनाई नहीं जाती। तो दृढ़ संकल्प की अग्नि द्वारा पहले अपनी कमज़ोरी को जलाना है तब मनाने की मौज अनुभव कर सकेंगे।

✚ कई सोचते हैं-ये आत्मायें ही निमित्त क्यों बनीं? तो इसका रहस्य है कि विशेष समय पर विशेष हिम्मत रखने का प्रत्यक्षफल सदा का फल बन गया। इसलिए गाया हुआ है-एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम बाप की मदद के। इसलिए सदा सब बातों को पार करने की विल-पॉवर विल के रूप में प्राप्त हुई।

✚ वह श्रेष्ठ भाग्य है कि आप बच्चे ही डबल पवित्र अर्थात् होली बनते हो। वैसे धर्मात्मायें भी हैं लेकिन वह शरीर से पवित्र नहीं बनते हैं। आप ब्राह्मण आत्माओं का भविष्य में आत्मा भी पवित्र बनती और शरीर भी पवित्र बनता है। इनकी निशानी डबल पवित्र तो डबल ताज प्राप्त होता है।

- ✚ बाप की चरित्र भूमि है ना। तो भूमि निवासियों से विशेष स्नेह होगा ना। बिचारे आज के भक्त तो भूमि की मिट्टी मस्तक में लगाने के लिए तरस रहे हैं और आप सदा वहाँ निवास करते हो तो कितने भाग्यशाली हो! दिल तख्तनशीन तो सब हैं लेकिन मधुवन निवासी चुल्ह पर भी हैं तो दिल पर भी हैं।
- ✚ प्रकृति को अधीन कर विजयी बनने वाले वत्स विश्व के राज्य के अधिकारी बनेंगे अथवा नहीं, यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। प्रकृति ऐसे अपने विजयी मालिक के आगे-पीछे दासी के समान झुकती रहती है व प्रणाम करती रहती है। हर समय सदा सेवाधारी श्रेष्ठ आत्मा के आगे सेवाधारी बन के रहती है।
- ✚ सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे।
- ✚ अभी आप सब जाग रहे हो, आप सभी के लिए कहाँ न कहाँ जागरण होता रहता है। जब आपके भक्त जागरण करते हैं तो आपने किया तो क्या बड़ी बात है। सभी शुरू संगम से ही होता है। जो आप ज्ञान से करते उसे वह भक्ति से करते हैं। भक्ति का फाउण्डेशन भी संगम पर ही पड़ता है। वह भावना और यह ज्ञान।
- ✚ अगर रूह को न देख रूप तरफ आकर्षित होते हैं तो समझो मुर्दे से प्रीत कर रहे हैं। मुर्दे से प्रीत रखने वाले को समझना चाहिए कि हमारा भविष्य मुर्दाघाट में कार्य करने का है। जिस समय ऐसा संकल्प भी आये तो मुर्दा घाट का पार्ट समझो। सभी को कहते हो ना एम और ऑब्जेक्ट को सामने रखो।

- ✚ किसी की भी स्थिति में हलचल होती है तो अचलघर मधुबन याद आता है कि मधुबन अचलघर में जाने से अचल हो जायेंगे - ऐसी भावना से, शुभ कामना से इस पुण्य भूमि पर सभी आते हैं - जब अनेक आत्माओं की हलचल का साधन मिलने का स्थान अचलघर मधुबन है तो मधुबन में रहने वाले भी सदा अचल होंगे ना।
- ✚ दूसरी निशानी वा अनुभूति- जैसे भक्तों को वा आत्मज्ञानियों का व कोई- कोई परमात्म-ज्ञानियों को दिव्य दृष्टि द्वारा ज्योति बिन्दु आत्मा का साक्षात्कार होता है, तो साक्षात्कार अल्पकाल की चीज है, साक्षात्कार कोई अपने अभ्यास का फल नहीं है। यह तो ड्रामा में पार्ट वा वरदान है।
- ✚ मधुबन निवासी बनाना भी भाग्यवान की निशानी है। क्योंकि मधुबन के गेट में आना और वरदान को सदा के लिए पाना। स्थान का भी महत्व है। सभी मधुबन निवासी वरदान स्वरूप में स्थित हो ना। सम्पन्न-पन की स्टेज अनुभव कर रहे हो ना। सम्पन्न स्वरूप तो सदा खुशी में नाचते और बाप के गुण गाते।
- ✚ यहाँ पहुँचने से कल्प पहले की स्मृति इतनी स्पष्ट हो जाती है जैसे इस जन्म में भी अभी-अभी देखा है। यही निशानी है समीप आत्मा की। इसी अनुभव द्वारा ही अपने को जान सकते हो कि हम ब्राह्मण आत्माओं में भी समीप की आत्मा हैं वा दूर की आत्मा है। फर्स्ट नम्बर है या सेकण्ड नम्बर हैं।
- ✚ बापदादा को आज के दिन सच्चे भगत भी बहुत याद आ रहे हैं। वह व्रत रखते हैं एक दिन का और आपने व्रत रखा है सारे जीवन में सम्पूर्ण पवित्र बनने का। वह खाने का व्रत रखते हैं.

आपने भी मन के भोजन व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प, अपवित्र संकल्पों का व्रत रखा है।
पक्का व्रत रखा है ना?

✚ जैसे गायन है - 'ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची', संकल्प का इतना महत्व दिखाया हुआ है। ब्रह्मा आदि काल में रचना रचते हैं। वैसे तुम ब्राह्मण आदि काल अर्थात् अमृतवेले, जैसा संकल्प रचेंगे, वैसे ही सारे दिन की दिनचर्या रूपा सृष्टि ऑटोमेटिकली (AUTOMATICALLY;स्वतः) होती रहेगी।

✚ देखो, नये वर्ष में एक दो का मुख मीठा भी करते हैं, बधाई देंगे, तो मुख मीठा भी कराते हैं ना! तो सारा वर्ष कडुवापन नहीं दिखाना। वह मुख मीठा करते आप सिर्फ मुख मीठा नहीं कराते लेकिन आपका मुखड़ा भी मीठा हो। सदा अपना मुखड़ा रूहानियत के स्नेह का हो, मुस्कराने का हो। कडुवापन नहीं।

✚ सब विदेश के भिन्नभिन्न स्थानों से विशेष आत्माओं के सहयोग के आधार से विजय का फाउन्डेशन पड़ेगा। जैसे आजकल की दुनिया में भी हर स्थान की मिट्टी एक स्थान पर इकट्ठी करते हैं -तो हर विदेश के स्थान के विशेष व्यक्तियों के आवाज द्वारा भारत में विजय के झण्डे का फाउन्डेशन मजबूत होगा।

✚ बाप का दिलतख्त इतना बेहद का बड़ा है जो सारे विश्व की आत्माएं भी समा सकती हैं इतना विराट स्वरूप है लेकिन बैठने की हिम्मत रखने वाले कितने बनते हैं! क्योंकि दिलतख्तनशीन बनने के लिए दिल का सौदा करना पड़ता है। इसलिए बाप का नाम 'दिलवाला' पड़ा है। तो दिल लेता भी है, दिल देता भी है।

- ✚ गीता का ज्ञान सुनने वाले “हे अर्जुन” हैं। “अर्जुन” समझकर गीता-ज्ञान सुनते हो या “अर्जुन” दूसरा है। “मैं अर्जुन हूँ” - यह समझते हो? सदैव यह अनुभव करके सुनो - मैं अर्जुन हूँ, मुझे विशेष भगवान गीता का ज्ञान सुना रहा है। गीता पाठशाला वाले तो सबसे नम्बरवन निकल जायेंगे।
- ✚ तो ब्रह्मा बाप का स्नेह किससे रहा? मुरली से। सबसे ज्यादा प्यार मुरली से रहा ना तब तो मुरलीधर बना। भविष्य में भी इसलिए मुरलीधर बना। मुरली से प्यार रहा तो भविष्य श्रीकृष्ण रूप में भी ‘मुरली’ निशानी दिखाते हैं। तो जिससे बाप का प्यार रहा उससे प्यार रहना-यह है प्यार की निशानी।
- ✚ जब शक्ति सेना अपने को प्रत्यक्ष करेगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा क्योंकि शक्ति और पाण्डवों के द्वारा ही बाप प्रत्यक्ष होना है। तो पहले शक्तियां या पाण्डव खुद अपने को सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे तब बाप प्रत्यक्ष होगा। हर एक के चेहरे में बाप ही दिखाई देगा। इतनी संगठन में शक्ति है।
- ✚ आदि रत्न है मुख-वंशावली, और आप हो संकल्प की वंशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गाई हुई हैं। एक मुख वंशावली, एक संकल्प द्वारा सृष्टि रची। हो तो ब्रह्मा की रचना, तब तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। शिवकुमारी तो नहीं कहलाते हो ना। डबल फोरेनर्स भी सब संकल्प की रचना है।
- ✚ परखने की शक्ति कम होने और शक्तियों के युक्ति-युक्त काम में न लाने से सदा सफलतामुर्त नहीं बन सकते। अष्ट-शक्तियां अब प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देनी चाहियें। महावीर की निशानी

यही है कि अष्ट-शक्तियां हर समय प्रत्यक्ष रूप में नज़र आयें। ऐसे आत्मायें ही अष्ट रत्नों में आ सकते हैं।

✚ एक बाप ही दातापन का प्यार देने वाला है, लेने की कोई कामना नहीं। चाहे कितनी भी धर्मात्मा, महात्मा, पुण्य आत्मा हो, गुप्त दानी हो, फिर भी लेता है, दाता नहीं है। स्नेह भी शुभ लेने की कामना वाला होगा। बाप तो सम्पन्न सागर है इसलिए वह दाता है! परमात्म प्यार ही दातापन का प्यार है।

✚ जैसे कोई भी शुभ कार्य करते हैं तो प्रतिज्ञा करने के लिए सभी पहले मन में संकल्प करने की निशानी कंगन बांधते हैं। कार्यकर्ताओं को चाहे धागे का, चाहे किसका भी कंगन बांधते हैं। तो यह श्रेष्ठ संकल्प का कंगन है ना। और जैसे आज सभी ने भण्डारी में बहुत उमंग-उत्साह से श्रीगणेश किया।

✚ चेक करो संगम के श्रेष्ठ जन्म में भी सर्व प्राप्ति हैं जो बाप ने दी है, यह भगवान का जैसे प्रसाद होता है ना, तो प्रसाद का कितना महत्व रखते हैं। तो बाप की जो भी प्राप्ति हैं, वह प्रभु प्रसाद प्राप्त है, प्रभु प्रसाद का महत्व है! वर्सा भी है, अधिकार भी है और प्रसाद भी है।

✚ अपने कार्य प्रमाण यह मन्सा सेवा भी अभी के समय प्रमाण अति आवश्यक है। तो समय निकाला रहमदिल बनो। कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व कल्याणकारी। तो रहम आता है? कि हो जायेगा? इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिन्हों को आप सकाश देंगे वही आपके भक्त बनेंगे इसलिए क्या करना है?

- ✚ जैसे कई आत्मायें सम्पर्क में आती तो समझती हैं यह अच्छा काम कर रहे हैं, इतना सब मान लें तो विजय का झण्डा लहरा जायेगा। इसी संकल्प से मुक्तिधाम में चली जायें तो भी ठीक है। इसी संकल्प से मुक्तिधाम जायेंगे तो जब अपना-अपना पार्ट बजाने आयेंगे तो पहले यही संस्कार होंगे कि गाड इज वन।
- ✚ इतने प्रभु परिवार के साथी अकेले कैसे होंगे! यह माया की चालाकी हैं। पहले अकेला कर देती फिर वार करती। माला में देखो अकेला मोती है? माला में विशेषता क्या है? एक मोती का दूसरे मोती से समीप का सम्बन्ध है, जरा भी बीच में धागा नहीं दिखता है। स्नेही, सहयोगी, साथी यही आपका यादगार है।
- ✚ जैसे कोई घर में आता है तो उसे पानी तो पूछा जाता है ना! अगर ऐसे ही चला जाए तो बुरा समझते हैं ना! ऐसे ही सम्पर्क में जो आये तो उसे बाप के परिचय का पानी जरूर पूछो। थोड़ा सुनाया तो पानी पूछा - सप्ताह कोर्स कराया तो ब्रह्मा भोजन कराया। कुछ-न-कुछ देना जरूर। क्योंकि दाता के बच्चे हो।
- ✚ इस वर्ष की विशेष सर्व विघ्नप्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस सदा पहनकर रखना। मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनना और सदा सर्व गुणों के गहनों से सजे रहना। विशेष 8 शक्तियों के शस्त्रों से सदा अष्ट शक्ति शस्त्रधारी सम्पन्न मूर्ति बनकर रहना। सदा कमल पुष्प के आसन पर अपने श्रेष्ठ जीवन के पाँव रखना।
- ✚ अब समय आयेगा जब राज्य-सत्ता और धर्म-सत्ता दोनों साथ होंगी। तब विश्व में भारत की जय-जयकार होगी। भारत ही लाइट हाउस होगा। भारत की तरफ सबकी दृष्टि होगी। भारत को

ही विश्व प्रेरणा-पुंज अनुभव करेगा। भारत अविनाशी खण्ड है। अविनाशी बाप की अवतरण भूमि है। इसलिए भारत का महत्व सदा महान है।

✚ बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चे को सहयोग का सबूत देने में बहुत खुशी होती है इसलिए हजारों भुजायें दिखाई हैं। तो भुजायें सहयोग की निशानी हैं। बापदादा जानते हैं एक-एक बच्चे ने चारों ओर चाहे देश में, चाहे विदेश में सभी ने चाहे धन से, चाहे मन से, चाहे तन से सहयोग अवश्य दिया है।

✚ जितना ही अति पुराना लास्ट जन्म है उतना ही नया पहला जन्म कितना सुन्दर है! यह श्याम और वह सुन्दर। इतना स्पष्ट जैसे आज के दिन पुराना वर्ष भी स्पष्ट है और नया वर्ष भी सामने स्पष्ट है। ऐसे अपना नया युग, नया जन्म स्पष्ट सामने आता है? आज लास्ट जन्म में हैं, कल फर्स्ट जन्म में होंगे।

✚ आप अपना देश छोड़कर आते हो तो बापदादा भी अपना देश छोड़कर आते हैं। बापदादा की प्रवृत्ति नहीं है क्या! सारे विश्व के कार्य को छोड़ यहाँ आते हैं। विश्व की प्रवृत्ति बाप की प्रवृत्ति है ना। बाप के लिए तो सभी बच्चे हैं। अंचली तो सबको देनी है। वर्सा नहीं देते है ना। अंचली तो देते हैं ना।

✚ लेकिन 16हजार की माला सदा नहीं जपी जाती, कहाँ-कहाँ और कभी-कभी जपते हैं। 108 की माला तो सदा जपते रहते हैं। अब मैं कौन? - यह स्वयं जानो। अगर बाप कहेंगे वा और कोई कहेंगे कि आप तो 16000 में आयेंगे तो क्या कहेंगे? मानेंगे? क्वेश्चन-मार्क शुरू हो जायेंगे। इसलिए अपने आपको जानो-मैं कौन?

- ✚ विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विजय प्राप्त करना। जब विघ्न अपना कार्य अच्छी तरह से कर रहे हैं तो आप मास्टर सर्वशक्तिमान अपने विजय के कार्य में सदा सफल रहो। सदा यह याद रखो कि हम विघ्न-विनाशक आत्मायें हैं। विघ्न-विनाशक का जो यादगार है उसका प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो ना।
- ✚ आप तो चारों ओर नहीं जा सकते लेकिन बापदादा तो रोज़ चक्र लगाते हैं। बाबा के साथ जो आपके एडवांस पार्टी के विशेष गये हैं ना वह भी बापदादा के साथ चक्र पर निकलते हैं। आप लोगों को देख करके खुश होते हैं हमारे भाई, हमारी बहन आ गये, आ गये इसलिए आगे बढ़ते चलो, सारे परिवार की आपको मुबारक है।
- ✚ रावण राज्य की कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति जरा भी संकल्प रूप में भी हिला न सके, नाखुन को भी न हिला सके। संकल्प में हिलना अर्थात् नाखुन हिलना। तो संकल्प रूप में भी न व्यक्ति, न परिस्थिति हिला सके, कभी कोई सम्बन्धी या दैवी परिवार का भी ऐसा निमित्त बन जाता है जो विघ्न रूप बन जाता है।
- ✚ महाराष्ट्र की राजधानी सुन्दर और सम्पन्न है। तो महाराष्ट्र को ऐसे सम्पन्न नामीग्रामी आत्माओं को सम्पर्क में लाना है। इसलिए कहा कि महान आत्मा बनाए सुन्दर गुलदस्ता बाप के सामने लाना है। अब अन्त के समय में इन सम्पत्ति वालों का भी पार्ट है। सम्बन्ध में नहीं, लेकिन सम्पर्क का पार्ट है।
- ✚ दाता के बच्चे, अपने भाईयों के ऊपर दया और रहम की दृष्टि डालो। महादानी बनो। वरदानी बनो। चमकती हुई सन्तुष्ट मणियाँ बन सर्व को सन्तोष दो। आजकल सन्तोषी माँ को बहुत

पुकारते हैं। क्योंकि सन्तुष्टता वा संतोष सर्व प्राप्तिओं का आधार स्वरूप है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ अप्राप्ति का अभाव है।

- ✚ मधुबन वाले सम्पूर्ण नहीं बन गये हैं लेकिन जो भी आते हैं वह मधुबन के वायुमण्डल से खुश हो जाते हैं, ऐसा सेन्टर का वायुमण्डल हो। जो गाया हुआ है ना, घर घर स्वर्ग बनेगा। तो सब सेन्टर इन्डिया वालों के लिए भी है, तो सब सेन्टर ऐसे हों जो स्वर्ग का नक्शा हो। तब तो कहेंगे घर-घर स्वर्ग बन गया।
- ✚ बापदादा हरेक बच्चे में विशेषता ही देखते हैं। विशेषता देखते, वर्णन करते-करते विशेष बन ही जायेंगे। कल थे, आज हैं और कल फिर बनेंगे। 'आज' और 'कल' में सारा ड्रामा आ गया। जितना-जितना सम्पूर्ण बनते जायेंगे तो यह स्मृति स्पष्ट होती जायेगी। जितनी स्मृति स्पष्ट होती है उतना नेचुरल नशा रहता है।
- ✚ जो सदा याद और सेवा में रहने वाले हैं उन्हीं को प्रत्यक्षफल सहज प्राप्त होता है। सोचेंगे भी नहीं कि ऐसा हो सकता है! लेकिन सहज अनुभव होते रहेंगे। चलते-चलते ऐसे अनुभव करेंगे जैसे भक्ति मार्ग में कहावत है, "भगवान छप्पर फाड़कर देते हैं।" तो यहाँ भी मेहनत का छप्पर फाड़कर सहज अनुभूति होगी।
- ✚ सभी अनन्य हैं ना। अनन्य अर्थात् जो अन्य न कर सकें वह करके दिखाने वाले। जो सब करते वो ही किया तो बड़ी बात नहीं। पालना का अर्थ है उन्हीं को शक्तिशाली बनाना, उन्हीं के संकल्पों को, शक्तियों को इमर्ज करना, उमंग- उत्साह में लाना। हर बात में शक्ति रूप बनाना। इसी रूप की पालना अब ज्यादा चाहिए।

- ✚ 84 का साल आ रहा है। 84 घण्टों वाली शक्ति मशहूर है। सभी देवियों की महिमा है। 84 में घण्टा तो बजायेंगे ना तब तो गायन हो, 84 का घण्टा है। अभी आदि-समान साक्षात्कार की लहर फैलाओ। धूम मचाओ। आप साक्षात् बाप बनो तो साक्षात्कार आप ही हो जायेगा। साक्षात् बाप बनना ही साक्षात्कार की चाबी मिलना है।
- ✚ सभी बच्चों को यह अलौकिक बर्थ-डे विश्व की हर आत्मा यादगार रूप में मनाती ही आती है क्योंकि बाप के साथ बच्चों ने भी ब्राह्मण जीवन में सर्व आत्माओं को बहुत, बहुत, बहुत सुख-शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग दिया है। इस सहयोग के कारण सब दिल से शिव और शालिग्राम दोनों का बर्थ-डे शिव जयन्ती मनाते हैं।
- ✚ बापदादा अभी यही चाहते हैं कि मन को शक्तियों की लगाम से जैसे चलाने चाहो वैसे चलाओ। जो गायन है मन जीते जगतजीत वह किसका गायन है? आप बच्चों का ही तो गायन है। हर कल्प किया है तभी गायन है क्योंकि जैसे और कर्मेन्द्रियों को मेरी कहते हो वैसे ही मन को भी मेरा कहते हो। मेरा कहना अर्थात् मालिक बनो।
- ✚ रावण को समाप्त किया है वा रावणराज्य को समाप्त किया है? जो बाप की श्रीमत है उसी प्रमाण, उसी लकीर के अन्दर सदा रहने वाले सदा ऊपर उड़ते रहते हैं। सच्ची सीता। लकीर के बाहर पाँव निकाला तो रावण आ जायेगा। रावण इन्तजार में रहता है-कि कहाँ कोई पाँव निकाले और मैं भगाऊँ! तो कुमारी अर्थात् सच्ची सीता।
- ✚ सच्ची आवश्यकता है और सच्चा मन है तो कोई भी सेवा के कार्य में, कार्य तो सफल होगा ही लेकिन भण्डारी में और ही भरपूर हो जायेगा, बचेगा। इसलिए गायन है - “शिव के भण्डारे

और भण्डारी सदा भरपूर'। तो सच्ची दिल वालों की और सच्चे साहेब के राजी होने की निशानी है - 'भण्डारा भी भरपूर, भण्डारी भी भरपूर'।

✚ कोई भी विघ्न अथवा तूफान, परेशानी वा उदासाई आती है तो समझना चाहिए - कहां-न-कहां मर्यादाओं की लकीर से अपनी बुद्धि रूपी पांव को निकाला है। जैसे सीता ने पांव निकाला। बुद्धि भी पांव है जिससे यात्रा करते हो। तो बुद्धि रूपी पांव ज़रा भी मर्यादाओं की लकीर से बाहर निकालते हो, तब यह सभी बातें आती हैं।

✚ एक सीता का मिसाल सुनाते वा सुनते रहते हो कि सीता सदा किसके सम्मुख रहती थी -- राम के। सम्मुख अर्थात् स्थूल में सम्मुख नहीं लेकिन बुद्धि से सदा बापदादा के सम्मुख रहना है। बापदादा के सम्मुख रहना अर्थात् रावण माया से विमुख रहना है। जब माया के सम्मुख हो जाते हो तो बाप से बुद्धि विमुख हो जाती है।

✚ देहली राजधानी में रहने वाले स्व-राज्यधारी हैं ना? यह तो बहुत काल का संस्कार चाहिए। अगर अन्त में बनेंगे तो विश्व का राज्य भी कब मिलेगा? अगर विश्व का राज्य आदि में लेना है तो आदिकाल से यह भी संस्कार चाहिए। बहुत समय का राज्य, बहुत समय के संस्कार। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी बड़ी बात नहीं।

✚ मन में मौज है तो हर कार्य में मौज है। किसी भी प्रकार की मूँझ नहीं। क्यों-क्या यह है - मूँझ। ओहो, आहा यह है मौज। क्यों, क्या तो अब नहीं है ना। दशहरा तो मना के आये हो ना। अभी दिवाली मनाने आये हो। दशहरे के बिना दीवाली नहीं होती। दशहरा समाप्त करके दीवाली मनाने आये हो। विजयी हो गये हो ना! अच्छा।

- ✚ हरेक ब्राह्मण आत्मा के अन्दर विश्व की आत्माओं के लिये रहम है, तरस है कि हमारे सर्व भाई-बहनें बाप की प्रत्यक्षता का आवाज सुनें कि बाप अपना कार्य कर रहा है। समीप आवें, सम्बन्ध में आवें, अधिकारी बनें, पूज्य देवता बनें या 33 करोड़ नाम गायन करने वाले ही बनें लेकिन आवाज जरूर सुनें। ऐसा उमंग है ना?
- ✚ होली हंस हो। होली हंस कितने प्यारे है! हंस सदा पानी में तैरने वाले होते हैं। होली हंस भी सदा ज्ञान जल में तैरने वाले हो। उड़ने वाले और तैरने वाले। आप सभी भी उड़ना और तैरना जानते हो ना, ज्ञान मनन करना इसको कहेंगे ज्ञान अमृत में तैरना ओर उड़ना अर्थात् सदा ऊंची स्थिति में रहना। दोनों जानते हो ना?
- ✚ मैजारिटी सच्चाई वाले हैं। कोई-कोई छिपाते भी हैं लेकिन मैजारिटी अपनी कमजोरी सच्चाई से बाप के आगे रखते हैं। तो बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज टूथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है।
- ✚ साकार स्नेही हो या निराकार स्नेही हो? निराकार स्नेही जो होते हैं उनकी यह विशेषता ज्यादा होती है कि वह निराकारी स्थिति में ज्यादा स्थित होंगे, साकार स्नेही चरित्रवान होंगे। उनका एक-एक चरित्र सर्विसएबुल होगा। दूसरा वह औरों को भी स्नेह में ज्यादा ला सकेंगे। निराकारी, निरहंकारी दोनों समान चाहिए।
- ✚ 36 प्रकार का भोजन भी इस ब्रह्मा भोजन के आगे कुछ नहीं है। क्योंकि डायरेक्ट बापदादा को भोग लगाकर इस भोजन को परमात्म प्रसाद बना देते हो। प्रसाद की वैल्यु आज अन्तिम

जन्म में भी भक्त आत्माओं के पास कितनी हैं? आप साधारण भोजन नहीं खाते। प्रभु प्रसाद खा रहे हो। जो एक-एक दाना पद्यों से भी श्रेष्ठ है।

✚ पांडवों के विजय का मुख्य आधार - 'एक बाप दूसरा न कोड़ी' पांडवों का संसार बाप था। संसार ही बाप है। जहाँ देखो वहाँ बाप ही नज़र आता है। संसार में सम्बन्ध और सम्पत्ति होती, तो सम्बन्ध भी बाप में है और सम्पत्ति भी बाप में है। पांडव अर्थात् जिसका संसार ही बाप है। ऐसे पांडव हर कार्य में विजयी होंगे ही।

✚ ब्राह्मण जीवन की चैलेन्ज ही है काम-जीत। यही असम्भव से सम्भव कर दिखाने की, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ ज्ञान दाता की निशानी है। जैसे नामधारी ब्राह्मणों की निशानी चोटी और जनेऊ है वैसे सच्चे ब्राह्मणों की निशानी 'पवित्रता और मर्यादायें' हैं। जन्म की वा जीवन की निशानी वह तो सदा कायम रखनी होती है ना।

✚ अभी जो गायन है कि योगियों को रिद्धि-सिद्धि प्राप्त होती है, वह कौनसी सिद्धि? संकल्प की सिद्धि और कर्तव्य की विधि। यह दोनों ही होने से जन्मसिद्ध अधिकार सहज ही पा लेते हो। संकल्प की सिद्धि कैसे आयेगी, मालूम है? संकल्पों की सिद्धि न होने का कारण क्या है? क्योंकि अभी संकल्प व्यर्थ बहुत चलते हैं।

✚ पूरा निश्चय-बुद्धि बनना है -- बाप हमारा साथी है, बाबा सदा मददगार है। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। ऐसा सदा स्मृति में रखते हुये, हर कदम उठाओ तो देखो विजय आपके गले का हार बन जावेगी। जिन्हों के गले में विजय की माला पड़ती वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर अभी विजयी नहीं बनते तो विजय माला में नहीं आते।

- ✚ शिव जयन्ती भगत भी मनाते है लेकिन वह सिर्फ पुकारते हैं, गीत गाते हैं। आप पुकारते नहीं, आपका मनाना अर्थात् समान बनना। मनाना अर्थात् सदा उमंग-उत्साह से उडते रहना। इसीलिए इसको उत्सव कहते है। उत्सव का अर्थ ही है उत्साह में रहना। तो सदा उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने वाले हो ना! सदा है या कभी-कभी है?
- ✚ विश्व कल्याणकारी का कर्म, कर्मयोगी होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य होता है।
- ✚ स्व-परिवर्तन, विश्व-परिवर्तन दोनों के जिम्मेवारी के ताजधारी सो विश्व के राज्य के ताज के अधिकारी होंगे। संगमयुगी ताजधारी सो भविष्य का ताजधारी। वर्तमान नहीं तो भविष्य नहीं। वर्तमान ही भविष्य का आधार है। चेक करो और नालेज के दर्पण में दोनों स्वरूप देखो- संगमयुगी ब्राह्मण और भविष्य देवपदधारी।
- ✚ कीचड़ में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राह्मण इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त हैं; न कि टीचर्स। यह पार्ट पाण्डवों का है अथवा प्रवृत्ति में रहने वालों का है। टीचर्स के पास पहुंचने से पहले सैम्पल के रूप में आप हो। सैम्पल को देखकर ही व्यापार करने की हिम्मत व उल्लास आता है।
- ✚ बापदादा सभी बच्चों को उसी नज़र से देखते हैं कि यह हर एक रत्न इस ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार है। श्रृंगार हो ना? बहुत वैल्युएबल श्रृंगार हो। इसलिए अभी तक आपके जड़ चित्रों को

कितना श्रृंगार करते रहते हैं। अभी लास्ट जन्म तक भी श्रृंगार होता रहता है। ऐसी खुशी है? भगवान का श्रृंगार बनना कम बात है क्या!

- ✚ जैसे अब साकार रूप में जैसे यमुना किनारे निवास करते हो, वैसे बुद्धियोग द्वारा स्वयं को इस देह और देह की पुरानी दुनिया की स्मृति से किनारा किया हुआ अनुभव करो। संगमयुगी अर्थात् कलियुगी दुनिया से किनारा कर देना। किनारा अर्थात् न्यारा हो जाना। पुरानी दुनिया से न्यारे हो गये हो कि अब भी उसके प्यारे हो?
- ✚ क्योंकि गुजरात की रास मशहूर है। वह रास तो बहुत अच्छी करते हो, लेकिन रास मिलाना, बाप से संस्कार मिलाना यह है बाप के संस्कारों से रास मिलाने की रास। एक है रास करना, एक है रास मिलाना। संस्कार मिलाना यही बड़े ते बड़ी रास है। आज के दिन लक्ष्मी के साथ आपका भी पूजन होता है। माँ के साथ बच्चों का भी होता है।
- ✚ अपने जीवन का फैसला स्वयं खुद को करना है। माँ बाप कहें, नहीं। स्वयं जज बनो। आप शिव शक्तियाँ हो, आपको कोई बन्धन में बाँध नहीं सकता। बकरियों को बन्धन में बांध सकते हैं, शक्तियों को नहीं। शक्तियों की सवारी शेर पर है, शेर खुले में रहता है, बन्धन में नहीं, तो सदा हम बाप की राइट हैण्ड हैं - यह याद रखना।
- ✚ आत्मा पुरुष है और शरीर प्रकृति है। तो पुरुषोत्तम अर्थात् उत्तम आत्मा हूँ। सबसे नम्बरवन पुरुषोत्तम कौन है? (ब्रह्मा बाबा) इसीलिए ब्रह्मा को आदि देव कहा जाता है। 'फरिश्ता ब्रह्मा' भी उत्तम हो गया और फिर भविष्य में देव आत्मा बनने के कारण पुरुषोत्तम बन जाते। लक्ष्मी-नारायण को भी पुरुषोत्तम कहेंगे ना।

- ✚ समय आयेगा जब यूथ ग्रुप पर गवर्मेन्ट का भी अटेन्शन जायेगा लेकिन तब जायेगा जब आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। 'विघ्न-विनाशक' किसका नाम है? आप लोगों का है ना! विघ्नों की हिम्मत नहीं हो जो कोई कुमार का सामना करे, तब कहेंगे 'विघ्न-विनाशक'। विघ्न की हार भले हो, लेकिन वार नहीं करे। विघ्न-विनाशक बनने की हिम्मत है?
- ✚ विदाई के समय दीदी से - बाप-दादा भी प्रेम के बंधन में बंधे हुए हैं। छूटने चाहें तो भी छूट नहीं सकते हैं? इसीलिए भक्ति में भी बंधन का चित्र दिखाया है। प्रैक्टिकल में प्रेम के बन्धन में अव्यक्त होते भी बंधना पड़ता है। व्यक्त से छुड़ाया फिर भी छूट नहीं सकते। इसीलिए आप भी बंधन में हो। बाप भी बंधन में है।
- ✚ सदा अपने को 'अननोन बट वेरी वैल नोन' योद्धा समझते हुए युद्ध के मैदान पर मायाजीत बन करके रहते हो? साधारण रीति से बैठे हुए हो, चलते हो, खाते हो लेकिन चलते-फिरते भी माया से युद्ध कर विजयी बनते जा रहे हो। बाहर से कुछ भी कर रहे हो लेकिन अन्दर में माया पर जीत पहन विश्व का राज्य ले रहे हो। तो अननोन हुए ना।
- ✚ समानता ही समीपता लाती है! समानता नहीं तो समीप भी नहीं हो सकते। गायन भी करते हैं कि 16 हजार पटरानियाँ थीं। 16 हजार में भी नम्बर तो होंगे ना! एक माशूक के इतने आशिक दिखाये तो हैं लेकिन अर्थ नहीं समझते हैं। रूहानियत को भूल गये हैं। तो आज रूहानी माशूक, आशिकों को कहते हैं - "समान बनो" अर्थात् समीप बनो।

- ✚ सदा अपने को संगमयुगी हीरे तुल्य आत्मायें अनुभव करते हो? आप सभी सच्चे हीरे हो ना! हीरे की बहुत वैल्यु होती है। आपके ब्राह्मण जीवन की कितनी वैल्यु है। इसीलिये ब्राह्मणों को सदा चोटी पर दिखाते हैं। चोटी अर्थात् ऊँचा स्थान। वैसे ऊँचे हैं देवता लेकिन देवताओं से भी ऊँचे तुम ब्राह्मण हो - ऐसा नशा रहता है?
- ✚ ये मरना(समाना/ मिटाना) सदा के लिये जीना है। लोग कहते हैं ना कि बिना मरे स्वर्ग नहीं मिलेगा। तो उस मरने से तो स्वर्ग मिलता नहीं लेकिन इस मरने से स्वर्ग का अधिकार जरूर मिलेगा। इसलिए ये मरना अर्थात् स्वर्ग का अधिकारी बनना। डर जाते हो ना-मरना पड़ेगा, मरना पड़ेगा, सहन करना पड़ेगा तो छोटी बात बड़ी हो जाती है।
- ✚ देखो, भक्ति मार्ग में भी आपके चित्र बनाते हैं तो डबल ताज दिखाते हैं। एक तो लाइट का ताज है ही क्योंकि बेफिक्र आत्मा की निशानी है मस्तक में लाइट चमकती है और दूसरा ताज विकारों पर विजयी बने हो इसलिए ताज दिखाया है इसलिए यह अटेन्शन रखो कि जब बापदादा ने फिकर लेकर फखुर दे दिया तो क्या बन गये? बेफिक्र बादशाह।
- ✚ देखो, भक्ति मार्ग में भी आपके चित्र बनाते हैं तो डबल ताज दिखाते हैं। एक तो लाइट का ताज है ही क्योंकि बेफिक्र आत्मा की निशानी है मस्तक में लाइट चमकती है और दूसरा ताज विकारों पर विजयी बने हो इसलिए ताज दिखाया है इसलिए यह अटेन्शन रखो कि जब बापदादा ने फिकर लेकर फखुर दे दिया तो क्या बन गये? बेफिक्र बादशाह।
- ✚ आप सबके यादगार चित्र में भी खुशी का पोज़ दिखाया हुआ है - अपना चित्र याद है ना! अमृतवेले से लेकर इस खुशी के खज़ाने को यूज़ करो - सोचो - वा अपने आप से बातें करो -

आँख खुलते कौन सामने आता है! पहले-पहले संकल्प में किससे मिलन होता है - विश्व के रचता, सर्व खज़ानों के दाता, सर्व वरदानों के दात बीज से मिलन होता है।^b

- ✚ “सदा शुभ चिन्तक की चिन्दी”। ताज के साथ-साथ यह चन्दी जरूर होती है। जैसे आत्मा बिन्दी चमक रही है ऐसे मस्तक के बीच यह चिन्दी की मणी भी चमक रही है। यह सारा ही शुभचिन्तक ग्रुप है ना। परचिन्तन को तलाक देने वाले, सदा शुभ चिन्तक। जब भी कोई ऐसी बात सामने आये तो शुभ-चिन्तक की मणी की गिफ्ट सदा स्मृति में रखो।
- ✚ फारेन ग्रुप तो बहुत जाने वाला है। एक जाना अनेकों को लाना है। एक-एक स्टार अपनी दुनिया बनायेंगे। यह चैतन्य सितारों की दुनिया है इसलिए साइन्स वाले आपके यादगार सितारों में दुनिया ढूँढ रहे हैं। अभी उन्हीं को भी अपनी दुनिया में ले आओ। तो मेहनत से बच जायें। उन्हीं को अनुभव कराओ कि सितारों की दुनिया कौन सी है?
- ✚ अल्प काल का पुण्य, अल्प काल की वस्तु देने से होता है, वा अल्प काल के सहयोग देने से होता है। लेकिन यह सदा काल का उमंग उत्साह अर्थात् खुशी का खज़ाना वा स्वयं के सहयोग का, आत्मा को सदा के लिए पुण्यात्मा बना देता है। इसलिए यह बड़े ते बड़ा पुण्य हो जाता है। एक जन्म में किए हुए इस पुण्य का फल सारा कल्प मिलता है।
- ✚ आज ब्रह्मा ने 16108 मणकों अर्थात् सभी सहयोगी आत्माओं के तकदीर की लकीर फाइनल (Final) कर दी। इस कारण भाग्य विधाता, भाग्य बाँटने वाला ब्रह्मा को ही कहते हैं और यादगार रूप में भी जन्मपत्री, जन्म दिवस पर या नाम संस्कार पर ब्राह्मण ही जन्म-पत्री बनाते हैं। तो ब्रह्मा माँ ने 16108 मणकों की निश्चित तकदीर सुनाई।

- ✚ बापदादा हर एक बच्चे का खुश चेहरा देखना चाहते हैं। आपको भी वही पसंद है तो बाप को भी वही पसंद है। इसलिए बापदादा कहते हैं कि यह गीत सदा गाते रहो - ``पाना था वो पा लिया, काम बाकी क्या रहा!" यह गीता आपका है ना! बापदादा ने ब्राह्मण जन्म होते ही सबको बड़े-ते-बड़ा खज़ाना ``खुशी" दी। यह ब्राह्मण जन्म की गिफ्ट है।
- ✚ जो बलिहार होता है उसमें हिम्मत ज्यादा होती है तो जितना-जितना अपने को बलिहार बनायेंगे उतना ही गले के हार में नजदीक आयेंगे। अभी बलिहार होंगे फिर बनेंगे प्रभु के गले का हार। अगर बलिहार बनकर के ही कर्म करेंगे तो दूसरों को भी बलिहार बनायेंगे। जिसको वारिस कहा जाता है। अभी प्रजा बहुत बनती हैं। वारिस कम बनते हैं।
- ✚ पंजाब में विशेष `अकालतख्त' का यादगार है। जहाँ तख्त का यादगार है वहाँ के निवासी स्वयं भी सदा अकालतख्त पर विराजमान हैं। अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा साक्षी हो कार्य करते हुए स्वराज्य अधिकारी हो। अकालतख्तनशीन आत्मा अर्थात् राज्य-अधिकारी। ऐसे राज्य अधिकारी बन करके चलते हो? कर्मेन्द्रियों के अधीन तो नहीं होते।
- ✚ इस वर्ष में विशेष जो भक्त आपकी महिमा करते हैं - शान्ति देवा। इसी स्वरूप को इमर्ज करो। अभ्यास करो, मुझ आत्मा के शान्त स्वरूप के वायब्रेशन कहाँ तक कार्य करते हैं। शान्ति के वायब्रेशन नजदीक की आत्माओं तक पहुँचते हैं वा दूर तक भी पहुँचते हैं। अशान्त आत्मा के ऊपर अपने शान्ति के वायब्रेशन्स का अनुभव करके देखो।
- ✚ क्योंकि विशेष न समझने के कारण स्वयं द्वारा स्वयं के विघ्न और साथ-साथ सम्पर्क में आने से भी आये हुए विघ्नों में समय बहुत जाता है। क्योंकि स्वयं की कमजोरी वा औरों की

कमजोरी, इसकी कथा और कीर्तन, दोनों बड़े लम्बे होते हैं। जैसे आपके यादगार “रामायण” को देखा-तो कथा और कीर्तन दोनों ही बड़े दिलचस्प और लम्बे हैं।

✚ एक डायमण्ड जुबली और दूसरा शान्तिवन की तैयारी। तो बूंद-बूंद से तालाब बन जायेगा। देखो खेल क्या है? एक बिन्दू और दूसरा बूंद। बाप के यादगार जो मन्दिर हैं उसमें भी क्या दिखाते हैं? बूंद भी दिखाते हैं और बिन्दू भी दिखाते हैं। तो आप सबकी शुभ भावना और सहयोग की बूंद यह मेला भवन तैयार कर देगी। तो सभी सहयोगी हैं ना?

✚ कम से कम 9 लाख तो पहले चाहिए। ऐसे तो संख्या ज्यादा होगी लेकिन सारे विश्व पर राज्य करेंगे तो कम से कम 9 लाख तो हों। समय प्रमाण श्रेष्ठ विधि चाहिए। श्रेष्ठ विधि है ही उड़ाने की विधि। उसका प्लैन बनओ। छोटे-छोटे संगठन तैयार करो। कितने वर्ष अव्यक्त पार्ट को भी हो गया! साकार पालना, अव्यक्त पालना कितना समय बीत गया।

✚ प्रालब्ध आपको पानी है, बाप को नहीं पानी है। प्रजा वा भक्त भी आपको चाहिए। बाप को नहीं चाहिए। जो आपके भक्त होंगे वह बाप के स्वतः ही बन जायेंगे। क्योंकि द्वापर में आप लोग ही पहले भक्त बनेंगे। पहले बाप की पूजा शुरू करेंगे। तो आप लोगों को सभी फॉलो अभी करेंगे। इसलिए अभी क्या करना है? पुकार सुनो। मुक्ति दाता बनो।

✚ हरेक ब्राह्मण बच्चा कर्म करने के पहले त्रिकालदर्शी स्टेज पर स्थित हो तीनों कालों को जानने वाले बन कर्म के आदि, मध्य, अन्त को जान कर्म करते हैं! और फिर कर्म करते समय साक्षी दृष्टा हो पार्ट बजाते हैं। ऐसे पार्ट बजाने वाले वर्तमान समय और भविष्य में भी पूज्य स्वरूप बन अनेक आत्माओं के आगे दृष्टान्त रूप बनते हैं।

- ✚ ऐसे समय पर, आप सर्व वरदानी आत्माओं की स्वयं की स्थिति भी, बाप की विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण, बाप के समान सम्पन्न और दातापन की होती है। ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञान-सूर्य की लाईट और माइट की किरणों विशेष बच्चों को वरदान रूप में देते हैं। इसलिए इस समय को 'ब्रह्म मुहूर्त' का समय कहते हैं।
- ✚ एक वी.आई.पी. द्वारा अनेक साधारण आत्माओं का कल्याण हो जाता है। बाकी समीप सम्बन्ध में तो नहीं आयेंगे। अपने धर्म में, अपने पार्ट में उन्हीं को विशेषता का कोई न कोई फल मिल जाता है। बाप को पसन्द साधारण ही है। समय भी वह दे सकते। उन्हीं को तो समय ही नहीं है। लेकिन वह निमित्त बनते हैं तो फायदा अनेकों को हो जाता है।
- ✚ और सारे कल्प में कर्म अनुसार प्रालब्ध प्राप्त करते वा जैसा कर्म वैसा फल स्वतः प्राप्त होता रहता है लेकिन इस वरदानी समय पर एक कदम आपका कर्म और पद्मगुणा बाप द्वारा मदद के रूप में सहज प्राप्त होता है। सतयुग में एक का पद्मगुणा प्राप्त नहीं होता लेकिन अभी प्राप्त हुए प्रालब्ध के रूप में भोगने के अधिकारी बनते हो।
- ✚ आपके पास तो सब शक्तियां हैं। धन की शक्ति है कि धन की शक्ति करोड़पतियों के पास है? सबसे बड़ा धन है अविनाशी धन, जो सदा साथ है। तो धन की शक्ति भी है, बुद्धि की शक्ति भी है, पोजीशन की शक्ति भी है। जो भी शक्तियां गाई हुई हैं सब शक्तियां आप में हैं। हैं या कभी प्रायः लोप हो जाती हैं? इन्हें इमर्ज रूप में अनुभव करो।
- ✚ जो भी संकल्प करते हैं, अगर यथार्थ विधि-पूर्वक है तो सिद्धि जरूर होती है। अगर विधि नहीं है तो समझो कि सिद्धि भी नहीं है। इसलिए भक्ति मार्ग में भी जो कोई कार्य करते हैं या कराते

हैं वैल्यु उसकी विधि पर ही होती है। विधि-पूर्वक होने के कारण ही उस सिद्धि का अनुभव करते हैं। सभी का प्रारम्भ तो यहाँ से ही हुआ है ना?

- ✚ बाप के सम्बन्ध का प्रूफ है - वर्सा। आत्म ज्ञान का व महान आत्माओं का सम्बन्ध भाई-भाई का है। बाप नहीं है, इसलिए वर्सा नहीं है। आत्म ज्ञानी महान आत्मायें आत्मा भाई-भाई हैं, परमात्मा बाप नहीं है। इसलिए अविनाशी वर्सा चाहते हुए भी उसका अनुभव नहीं पा सकेंगे। परमात्म ज्ञान का सहज प्रूफ जीवन में वर्से की प्राप्ति है।
- ✚ सफलता प्रत्यक्षता का आधार है। हर बोल सफलता पूर्वक हो, हर संकल्प सफलतापूर्वक हो। इसलिए आजकल के यादगार में भी गुरू कहलाने वालों को सत वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, महान तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना महान आत्मायें।
- ✚ बिछड़े हुए जो होते हैं वह आने से ही तीव्र पुरुषार्थ में लग जाते हैं हिम्मत बच्चे रखते हैं, मदद बाप देते हैं। एक कुमारी १०० ब्राह्मणों से उत्तम गई जाती है। एक में १०० की शक्ति भरेंगे तो क्या नहीं कर सकते। सिर्फ अपने पांव को पक्का मजबूत बनाओ। कितना भी कोई हिलाएं तो हिलना नहीं है। अचलघर भी तुम्हारा यादगार है ना।
- ✚ आज सम्पर्क वाले, कल सम्बन्ध वाले हो जायेंगे। उन्हीं को जगाते रहना चाहिए। नहीं तो थोड़ी आँख खोल फिर सो जाते हैं। कुम्भकरण तो हैं ही। नींद का नशा होता है तो कुछ भी खा-पी भी लेते तो भूल जाते। कुम्भकरण भी ऐसे हैं। कहेंगे हाँ, फिर आयेंगे, यह करेंगे। लेकिन फिर पूछो तो कहेंगे याद नहीं रहा। इसलिए बार-बार जगाना पड़ता है।

- ✚ बापदादा बहुत बार माला तैयार करने के लिए बैठते हैं लेकिन अभी पूरी ही नहीं हुई है। मणका, मणके के समीप तब आता है अर्थात् बाप उसको पिरोता तभी है जब उस मणके को तीन सर्टिफिकेट हों:- बाप पसंद, ब्राह्मण-परिवार पसंद और अपने यथार्थ पुरूषार्थ पसंद। तीनों बाते चेक करते हैं तो मणका हाथ में ही रह जाता है, माला में नहीं आता।
- ✚ वरदान भूमि पर आकर वरदाता द्वारा वरदान पाने का भाग्य बनाया है? जो गायन है - भाग्य विधाता बाप द्वारा जो चाहो वह अपने भाग्य की लकीर खींच सकते हो। यह इस समय का वरदान है। तो वरदान के समय को, वरदान के स्थान का कार्य में लाया? क्या वरदान लिया? जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए सागर कहा जाता है। सागर का अर्थ ही है “सम्पन्न”।
- ✚ कितनी बार विजयी बने हो! तो कल्प-कल्प की विजयी आत्माओं के लिए फिर से विजयी बनना मुश्किल होता है क्या? अमृतवेले सदा अपने मस्तक में विजय का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक लगाओ। भक्ति-मार्ग में तिलक लगाते हैं ना। भक्ति की निशानी भी तिलक है और सुहाग की निशानी भी तिलक है। राज्य प्राप्त करने की निशानी भी राजतिलक होता है।
- ✚ देखो जब कोई भी कारण सामने आता है और कारण के कारण हिम्मत कम होती है, कमजोरी आती है और जब वो बात समाप्त हो जाती है तो अपने ऊपर शर्म आती है ना! अपने ऊपर ही संकोच होता है कि ये अच्छा नहीं किया, ये अच्छा नहीं हुआ। करके और फिर पश्चाताप् करे..... ये तो आपकी प्रजा का काम है या आपका है? पश्चाताप् वाले क्या राजा बनेंगे?
- ✚ अगर माताओं को बाप निमित्त नहीं बनाता तो नया ज्ञान, नई सिस्टम होने कारण पाण्डवों को देखकर बहुत हंगामा होता। मातायें ढाल हैं क्योंकि नया ज्ञान है ना। नई बातें हैं। लेकिन बहनों

के साथ भाई सदा ही साथ हैं। पाण्डव अपने कार्य में आगे हैं और बहनें अपने कार्य में आगे हैं। दोनों की राय से हर कार्य निर्विघ्न बन चल रहा है।

- ✚ एक दो को सहयोग का हाथ मिलाओ। इस सहयोग के हाथ मिलाने का दृश्य ऐसा बन जायेगा जैसे हाथ में हाथ स्नेह का मिलाना, सहयोग का मिलाना, माला बन जाये। शिक्षा नहीं दो, स्नेह भरा सहयोग दो। न्यारा नहीं बनो, किनारा नहीं करो, सहारा बनो क्योंकि आपका यादगार विजयमाला है। हर एक मणका, मणके के साथी सहयोगी है तब माला का चित्र बना है।
- ✚ लोग तो प्रकृति की हलचल देख डरते हैं कि कल क्या होगा! लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा क्योंकि अभी यह संगमयुग सृष्टि चक्र का अमृतवेला चल रहा है। तो अमृतवेले के बाद क्या होता है? सवेरा। अंधकार खत्म हो रोशनी आ जाती तो आपको खुशी है कि अभी हमारा राज्य सुखमय संसार जहाँ प्रकृति भी सुखमई है वह राज्य आया कि आया।
- ✚ बापदादा सदा कहते हैं कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंग न्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक अर्थात् स्मृति का तिलक। मस्तक स्मृति का स्थान है, इसलिए तिलक मस्तक पर ही लगाते हैं। तीन बिन्दियों का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रखना।
- ✚ ये तो सुना दिया कि जितना साधन बढ़ायेंगे उतनी संख्या डबल, ट्रिबल बढ़ेगी। तो ये तो चलना ही है। अभी ज्ञान सरोवर बना रहे हैं फिर दूसरे वर्ष कहेंगे ज्ञान सरोवर छोटा हो गया। ये तो होना ही है। क्योंकि सेवा को समाप्त भी करना है या चलते रहना है? सम्पन्न करके समाप्त करना है। तो सम्पन्न तब होगी जब कम से कम 9 लाख की माला बनाओ।

- ✚ और एक मजे की बात क्या होती है, जो भक्ति में भी आपको कापी की है, वह कौन सी बात है? 'मनगढ़ंत कहानियाँ' - जैसे गणेश वा हनुमान रीयल हैं क्या? लेकिन कहानी कितनी रमणीक हैं! ऐसे छोटी सी बात का भाव बदल, मनगढ़ंत भाव भरकर पूरी स्टोरी (tor;कहानी) तैयारी कर लेते हैं। और सुनने, सुनाने वाले बड़ी रूचि और समय देकर सुनते-सुनाते हैं।
- ✚ शिवशक्तियां हैं सकाश देने वाली और पाण्डव हैं वारिस और सहयोगी बनाने वाले। देखो, बड़े बड़े प्रोग्राम पाण्डवों के बिना हो नहीं सकते। इसीलिए चतुर्भुज रूप का यादगार है। शिव शक्तियां पाण्डवों के बिना नहीं कर सकती पाण्डव शक्तियों के बिना नहीं कर सकते। इसलिए हर एक पाण्डव के मस्तक में विजय का तिलक लगा हुआ है, उसको इमर्ज करो।
- ✚ एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा। यहाँ का जो यादगार है उसमें योग की निशानी क्या दिखाई है? तीसरा नेत्र। अगर बुद्धिमें तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्दी जायेगा। इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई।
- ✚ वारिस हो तो वारिस की निशानी है - अतीन्द्रिय सुख के वर्से के अधिकारी। वारिस को बाप सभी-कुछ विल करता है। जो वारिस नहीं होंगे उनको थोड़ा-बहुत देकर खुश करेंगे। बाप तो पूरा विल कर रहे हैं। जिनका बाप के विल पर पूरा अधिकार होगा, उन्हीं की निशानी क्या दिखाई देगी? वह विल-पावर वाले होंगे। उनका एक-एक संकल्प विल-पावर वाला होगा।

- ✚ अब तो गाँव गाँव या मोहल्ले में हैं, लेकिन अब गली गली में 'ज्ञान-स्थान' हो। भक्ति में देव-स्थान बनाते हैं लेकिन यहाँ घर-घर में ब्राह्मण आत्मा हो। जैसे घर घर में और कुछ नहीं तो देवताओं के चित्र जरूर होंगे। ऐसे घर घर में चैतन्य ब्राह्मण आत्मा हो। गली गली में ज्ञान-स्थान हो तब हर गली में प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे।
- ✚ पहले स्व पर विजयी फिर सर्व पर विजयी, फिर प्रकृति पर विजयी बनेंगे। यह तीनों विजय आपको 'विजयी माला' का मणका बनायेगी। प्रकृति में वायुमण्डल, वायुब्रशेन या स्थूल प्रकृति की समस्यायें सब आ जाती हैं। तो तीनों पर विजय हो? इसी आधार से विजय माला का नम्बर अपना देख सकते हो! इसलिए नाम ही 'वैजयन्ती माला' रखा है। तो सभी विजयी हो?
- ✚ सामना करने की शक्ति अर्थात् अनुभव कराने की शक्ति, सभी को श्रेष्ठ चरित्र द्वारा बाप-दादा का चित्र दिखाने की शक्ति - ऐसे शस्त्रधारी हैं? क्या समझते हो - ऐसे शक्ति स्वरूप ग्रुप है? चारों ही सबजेक्ट्स के चारों ही अलंकारधारी हों? दो भुजा वाले शक्ति स्वरूप हो या चार भुजा वाले हो? यह चार अलंकार चार सबजेक्ट्स की निशानी हैं।
- ✚ यह रूहानी शक्ति सेना विचित्र सेना है। नाम रूहानी सेना है लेकिन विशेष साइलेन्स की शक्ति है, शान्ति देने वाली अहिंसक सेना है। तो आज बापदादा हर एक शान्ति देवा बच्चे को देख रहे हैं कि हर एक ने शान्ति की शक्ति कहाँ तक जमा की है? यह शान्ति की शक्ति इस रूहानी सेना के विशेष शस्त्र हैं। हैं सभी शस्त्रधारी लेकिन नम्बरवार हैं।

- ✚ श्रीलंका का नाम सुन करके तो रावण को जीतने का संकल्प आता है। तो श्रीलंका में रावण का नामनिशान नहीं रहे, रावण वह नहीं, यह 5 बुराईयाँ ही रावण है। 5 विकार नारी में भी है, 5 विकार नर में भी है, तो दोनों का मिला हुआ १० शीश वाला रावण दिखाते हैं। बाकी १० शीशवाला मनुष्य सोयेगा कैसे, खायेगा कैसे, लेकिन यह बुराईयों का सूचक है।
- ✚ अमरनाथ बाप का पहला वरदान है - बच्चे अमरभव! अमरनाथ की कथा सुनने वाले आप सब हो ना? यह खुशी होती है कि हम सबका यादगार अब तक भी चल रहा है? कल्प पहले का यादगार अभी भी देख रहे हो। अमरनाथ में आपका ही यादगार है। एक-एक बच्चे की कितनी महिमा करें। जितनी आप सबने द्वापर से बाप की महिमा गाई है उतनी बाप अभी आप बच्चों की गाते हैं।
- ✚ तो खण्डित चाबी नहीं लगाना। भाग्य विधाता ने भाग्य बाँटा ही ब्रह्मा द्वारा है। सिवाए ब्रह्माकुमार, कुमारी के भाग्य बन नहीं सकता। इस लिए उल्टी चाबी नहीं लगाओ, डबल चाबी लगाओ। डबल बाप भी और डबल आप और बाप भी, इसी सहज विधि से सदा भाग्य के खज़ाने से पद्मापद्म भाग्यशाली बन सकते हो। कारण को निवारण करो तो सदा सम्पन्न बन जायेंगे।
- ✚ बापदादा अकेला कुछ नहीं करता क्योंकि जन्म लेते यज्ञ रचा। तो यज्ञ में ब्राह्मण चाहिए तो आपका भी जन्म बाप के साथ हुआ। इसका यादगार भक्ति में भी शिवरात्रि मनाते हैं तो साथ में सालिग्रामों की भी पूजा होती है। अनेकानेक सालिग्रामों को पूजते हैं। तो यह जयन्ती वन्दरफुल जयन्ती है इसलिए इस जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहा जाता है।

- ✚ अपने स्वरूप को जानना, तो स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश, सुकर्म, स्व- लक्ष्य, स्व-लक्षण और स्वदर्शन चक्रधारी बनना। यह 7 बातें धारण करनी है। इनको धारण करने से क्या बनेंगे? शीतला देवी। काली नहीं बनना है। अभी शीतला देवी बनना है। काली बनना है विकारों के ऊपर। असुरों के सामने काली बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण कुल में शीतला बनना है।
- ✚ आपके जड़ चित्रों के लिए भक्त जागरण करते हैं, कभी तो आप लोगों ने भी किया है तभी भक्त कापी करते हैं। यह जागरण डबल कमाई वाला जागरण है। वर्तमान की कमाई हुई और वर्तमान के आधार पर भविष्य भी श्रेष्ठ हुआ। तो हम कल्याणकारी आत्मायें हैं, हर बात में कल्याण समाया हुआ है, अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप के बच्चे बन गये।
- ✚ जब संगठित रूप में पुराने संस्कार, स्वभाव व पुरानी चलन के तिल व जौं स्वाहा करेंगे तब यज्ञ की समाप्ति होगी। तिल और जौं यज्ञ में डालते हैं ना। जब यज्ञ की समाप्ति होती है सब इकट्ठे स्वाहा कर देते हैं, तब ही यज्ञ सफल होता है। अगर एक भी आहुति नहीं पड़ी तो अच्छा नहीं मानते हैं। तो पुरुषार्थ क्या हुआ? संगठित रूप में स्वाहा करो।
- ✚ सारे दिन के चार्ट में चेक करो कि सर्व प्रकार की सेवा में मार्क्स ली या सिर्फ वाचा और कर्मणा सेवा की? सब प्रकार की सेवा का खाना भरना चाहिए। ऐसे अपना रोज़ का चार्ट चेक करो क्योंकि यहाँ के ऑलराउण्ड सेवाधारी वहाँ ऑलराउण्ड विश्व के मालिक बनेंगे। जितनी यहाँ सेवा में कमी होगी, उतनी वहाँ भी बेहद और हद स्टेट में अन्तर हो जायेगा।

- ✚ हँस अर्थात् स्वच्छता, क्षीर और नीर को या मोती और पत्थर को पहचान मोती ग्रहण करने वाले। जानते है कि यह कंकड़ है, यह मोती है लेकिन कंकड़ को धारण नहीं करते । इसलिए होलीहँस संगमयुगी ज्ञान-स्वरूप विद्या देवी ' सरस्वती ' का वाहन है । आप सभी ज्ञान-स्वरूप हो, इसलिए विद्यापति या विद्या देवी हो। यह वाहन दिव्य बुद्धि की निशानी है ।
- ✚ सबसे पहले अपने आपको और बाप को जानने की विशेषता जो आप ब्राह्मण बच्चों में है वह किसी भी नामीग्रामी आत्मा में नहीं है। इसलिए भोले, साधारण होते हुए, वरदाता से वरदान ले जन्म-जन्म के लिए विशेष पूज्य आत्मायें बन जाते हैं। जो आज की नागीग्रामी आत्मायें हैं वह भी पूज्य आत्माओं के आगे नमन-वन्दन करती हैं। ऐसी विशेष आत्मायें बन गये।
- ✚ सुनाया था ना - रास में ताल मिलाने पर ही होती है - वाह! वाह! तो यहाँ भी ताल मिलाना अर्थात् रास मिलाना है। इतनी आत्मायें जो नॉलेज वर्णन करती हैं तो सबके मुख से यह निकलता है - ये एक ही बात कहते हैं, इन सब का एक ही टॉपिक, एक ही शब्द है यह सब कहते हैं ना। इसी प्रकार सबके स्वभाव और संस्कार एक-दो में मिलें, तब कहेंगे रास मिलाना।
- ✚ चाहे सारी विश्व के विद्वान पण्डित और अनक आत्मायें शास्त्र के प्रमाण कलियुग ही मानत लेकिन आप 5 पाण्डव अर्थात् कोटों मे कोई थोड़ी सी आत्मायें चैलेन्ज करते हो कि अभी कलियुग नहीं, संगमयुग है, यह किस अथार्टी से? सत्यता की महानता के कारण। विश्व में मैसेज देते हो कि आओ और आकर समझो। सोये हुए कुम्भकरणों को जगाकर कहते हो - समय आ गया।

- ✚ बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि जैसा नाज़ुक समय नजदीक आता जायेगा तो अनेक आत्मार्ये आपसे थोड़े समय की खुशी की मांगनी करने के लिए आयेंगी। इतनी सेवा करनी है जो कोई भी खाली हाथ नहीं जाये। जितनी खुशी बांटेंगे उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। तो यह देना, देना नहीं, लेना है। अच्छा है, सबके चेहरे में उमंग-उत्साह है। लेकिन अटेन्शन क्या रखना हे।
- ✚ खुद कमज़ोर बनते हो तब उल्टे संग का वार होता है। तो माया जीत अर्थात् सिवाए एक बाप के और किसी भी संग के रंग से प्रभावित होने वाले नहीं। इसीलिये सतसंग गाया जाता है। सतसंग की महिमा देखो कितनी है! आप तो सतसंग अर्थात् सत बाप के संग में रहने वाले हो। ऐसे है ना। एक बाप (परमात्मा) का संग है सतसंग और दूसरे सब हैं कुसंग या व्यर्थ संग।
- ✚ बापदादा यही चाहता है कि एक एक बच्चा सम्पन्न हो कम नहीं हो क्योंकि यह चांस बाप द्वारा अविनाशी खाता जमा होना यह सिर्फ अभी हो सकता है। इसीलिए कहा हुआ भी है अभी नहीं तो कभी नहीं। यह संगम समय के लिए ही गायन है। भविष्य में तो जो जमा किया है उसका फल प्राप्त करेंगे लेकिन प्राप्ति का समय सिर्फ अब है। तो हर एक को अपना खाता देखना है।
- ✚ शक्तियों के चित्रों में सदैव दो गुणों की समानता दिखाते हैं -- स्नेही भी और शक्ति-रूप भी। नैनों में सदैव स्नेह और कर्म में शक्ति- रूप। तो शक्तियों को चित्रकार भी जानते हैं कि यह शिव-शक्तियाँ दोनों गुणों की समानता रखने वाली हैं। इसलिए वह लोग भी चित्र में इसी भाव को प्रकट करते हैं। जब प्रैक्टिकल में किया है तभी तो चित्र बना है।
- ✚ दुनिया वाले कहते हैं पालनहार है, जन्मदाता है। लेकिन जन्मदाता का परिचय ही नहीं है। और आप नशे से कह सकते हो कि जन्मदाता परमात्मा कैसे हैं, पालनहार परमात्मा कैसे हैं! ब्रह्मा-

माँ की पालना भी मिल रही है और बाप की श्रेष्ठ मत पर योग्य आत्माएं बन गये। बाप बच्चे को योग्य बनाता है और माँ शक्तिशाली बनाती है। दोनों अनुभव हैं ना! अच्छा!

✚ जब आदि हुई तो राजकुमार और राजकुमारियों से भी ज्यादा पालना, साधन, सब अनुभव कराया और आगे चलकर बेगरी लाइफ का भी पूरा अनुभव कराया। तो जिन्होंने दोनों अनुभव किया उनकी आदत बन गई। तो आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहाँ भी रहते हो, सभी हिलने हैं, सब आधार टूटने हैं। तो ऐसे टाइम पर क्या चाहिये? एक ही बाप का आधार।

✚ यह बदले तो मैं बदलूँ, यह करे तो मैं करूँ... इसमें विशेष हर एक बच्चे को ब्रह्मा बाप विशेष कह रहा है कि मेरे समान हे अर्जुन बनो। इसमें पहले मैं, पहले यह नहीं, पहले मैं। यह ``मैं'' कल्याणकारी मैं है। बाकी हद की मैं, मैं नीचे गिराने वाली है। इसमें जो कहावत है - जो ओटे सो अर्जुन, तो अर्जुन अर्थात् नम्बरवन। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन।

✚ धर्म युद्ध भी तो अभी रही हुई है ना। अभी गुरुओं की गद्दी को कहाँ हिलाया है। अभी तो टाल टालियाँ आदि सब बहुत आराम से अपनी धुन में लगे हुए हैं। बीज कब प्रत्यक्ष रूप में आता है? मालूम है बीज ऊपर कब आता है? जब छोटी बड़ी टाल टालियाँ एकदम बिगर पत्तों की सूखी हुई डालियाँ रह जाती हैं तब बीज ऊपर प्रत्यक्ष होता है। तो उसका प्लैन बनाया है?

✚ आपके पीछे अपनी राजधानी में आपकी रॉयल फैमिली, आपकी रॉयल प्रजा, फिर द्वापर से आपके भक्त, सतो रजो तमोगुणी, तीन प्रकार के भक्त, लम्बी लाइन है आपके पीछे। जो आप करेंगे वह आपके पीछे वाले करते हैं। आप बहानेबाजी देते हो तो आपके भक्त भी बहुत

बहानेबाजी करते हैं। अभी ब्राह्मण परिवार भी आपको देख उल्टी कापी करने में तो होशियार होते हैं ना।

✚ एक देहली की विशेषता देख रहे थे। सेवा की आदि का स्थान है और आदि में भी सेवाधारियों को, सेवा की आदि के लिए जमुना का किनारा ही प्राप्त हुआ। जमुना किनारे जाकर सेवा की ना! सेवा का बीज भी देहली में जमुना किनारे पर शुरू हुआ और राज्य का महल भी जमुना किनारे पर ही होगा। इसलिए गोपीवल्लभ, गोप गोपियों के साथ-साथ जमुना किनारा भी गाया हुआ है।

✚ बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य- मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर अंत में बनेंगे तो फिर बाप दादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे।

✚ बापदादा ने सुनाया था, एक पुराना गीत है ऊँची-ऊँची दीवारें... यह डबल विदेशियों का गीत है। समुद्र पार करते हुए, धर्म, देश, भाषा सब ऊँची-ऊँची दीवारें पार करके बाप के बन गये। इसलिए बाप को प्रिय हो। भारतवासी तो थे ही देवताओं के पुजारी। उन्होंने ऊँची दीवारें पार नहीं की। लेकिन आप डबल विदेशियों ने यह ऊँची-ऊँची दीवारें कितना सहज पार की।

✚ समान होना ही फैन्डशिप है। बाप के कदम पर कदम रखने वाले। क्योंकि फ्रेंड्स भी हो और फिर माशूक के आशिक भी हो। तो आशिक सदा माशूक के पांव के ऊपर पांव रखते हैं। यह रसम है ना। जब शादी होती है तो क्या कराते हैं! यही कराते हैं ना। तो यह सिस्टम भी कहाँ से

बनी? आप लोगों से बनी है। आपका है बुद्धि रूपी पाँव और उन्होंने स्थूल पाँव समझ लिया है।

- ✚ बाप-दादा को हर स्थान पर पहुँचने में कितना टाइम लगता है? जो आपने न देखा वह हमने देखा। बाप का स्नेह ही पाँव दबाता है। निमित्त दिल्ली वालों ने लेकिन सर्व ब्राह्मण आत्माओं के सहयोग से जो भी बच्चे सेवा के मैदान पर आये, सेवा के पहाड़ को अंगुली दी उन सभी बच्चों को बाप-दादा स्नेह और सदा साथ की छत्रछाया अन्दर याद प्यार से पाँव दबा रहे हैं।
- ✚ समय समीप आने के कारण जल्दी-जल्दी सेवा का विस्तार बढ़ता ही जायेगा। क्योंकि संगम पर ही त्रेता के अन्त तक की प्रजा, रायल फैमली और साथ-साथ कलियुग के अन्त तक की अपने धर्म की आत्मायें तैयार करनी है। विदेश के सभी स्थान पिकनिक के स्थान बनेंगे लेकिन ब्राह्मण आत्मायें तो राजाई घराने में आयेंगी, वहाँ राजाई नहीं करनी है, राजाई तो यहाँ करेंगे।
- ✚ “आज ज्ञान सागर बाप, सागर के कण्ठे पर ज्ञान रत्न चुगने वाले होली हंसों से मिलने आये हैं।^b हरेक होली हंस कितना ज्ञान रत्नों को चुनकर खुशी में नाच रहे हैं, वह हंसों के खुशी का डांस देख रहे हैं। यह अलौकिक खुशी की रूहानी डांस कितनी प्यारी है और सारे कल्प से न्यारी है! सागर की भिन्न-भिन्न लहरों को देख हरेक हंस कितना हर्षित हो रहे हैं।
- ✚ माताओं को अविनाशी सुहाग का तिलक तो लगा हुआ है ना। जैसे लौकिक में सुहाग की निशानी तिलक है, ऐसे अविनाशी सुहाग अर्थात् सदा स्मृति का तिलक लगा हुआ हो। ऐसी सुहागिन सदा भागिन (भाग्यवान) है। कल्प-कल्प की भाग्यवान आत्मायें हो। ऐसा भाग्य जो कोई भाग्य को छीन नहीं सकता। सदा अधिकारी आत्मायें हो, विश्व का मालिक, विश्व का राज्य ही आपका हो गया।

- ✚ पवित्रता अर्थात् एक धर्म अब की स्थापना है जो भविष्य में भी चलती है। ऐसे ही भविष्य का क्या गायन है? एक राज्य, एक धर्म और साथ में सदा सुख-शान्ति, सम्पत्ति, अखण्ड सुख, अखण्ड शान्ति, अखण्ड सम्पत्ति। तो अब के आपके स्वराज्य के जीवन में, वह है विश्व राज्य और इस समय है स्वराज्य, तो चेक करो अविनाशी सुख, परमात्म सुख, अविनाशी अनुभव होता है?
- ✚ सदा खिला हुआ पुष्प वह है जो दूर से ही सबको आकर्षित करे। ऐसी रूहानियत है? जो भी सम्पर्क में आए उसको यह रूहानी खुशबू आकर्षित करे - खिले हुए फूल ही किसी को भेंट किये जाते। बापदादा के ऊपर भी खिले हुए फूल ही बलिहार होते हैं। जो सच्चे भक्त होते हैं वह कभी देवताओं पर सड़े हुए फूल नहीं चढ़ायेंगे, अच्छे खिले हुए फूल देवाताओं पर भेंट करेंगे।
- ✚ दिल्ली जोन :- बापदादा को सभी बच्चे अति प्रिय हैं क्योंकि बापदादा ने विशेषताओं के आधार पर ड्रामा अनुसार चुनकर इस ब्राह्मण परिवार के गुलदस्ते में लाया है। यह चैतन्य फूलों का गुलदस्ता है ना! हरेक फूल की विशेषता, रंग-रूप अपना-अपना होता है। किसमें खुशबू ज्यादा होगी, किसका रंग रूप गुलदस्ते को सजाने वाला होगा लेकिन है तो दोनों ही आवश्यक।
- ✚ जैसे अभी आप लोग झण्डा लहराते हो तो सभी झण्डे के नीचे गीत गाते हो और फिर क्या होता है! झण्डा लहराने से सभी के ऊपर फूलों की वर्षा होती है। ऐसे सभी की दिल से यह गीत स्वतः ही निकलेगा। सर्व का एक बाप। गति सद्गति दाता एक बाप। ऐसे गीत गाते ही अविनाशी सुख शान्ति का वर्षा, पुष्पों की वर्षा समान अनुभव करेंगे। बाप कहा और वर्से का अनुभव किया।

- ✚ इस ग्रुप को सदैव यह समझना चाहिए कि जो भी कदम वा कर्म होता है वह हर कर्म विश्व के लिए एक एग्जाम्पल बनकर के रहे। क्योंकि आप लोगों के इन कर्मों का कहानियों के रूप में यादगार बनेगा। आप लोगों के यह चरित्र गायन योग्य बनेंगे। इतनी ज़िम्मेवारी समझकर के चलते हो? यह इस ज़िम्मेवार ग्रुप की विशेषतायें हैं। जो जितना ज़िम्मेवार उतना ही हल्का भी रहेगा।
- ✚ जैसे शास्त्रवादियों के बोल दिखाई देते हैं कि इन्हों को शास्त्र की अथॉरिटी है, वैसे आपके हर बोल से अथॉरिटी प्रसिद्ध होनी चाहिए। फाइनल स्टेज तो यही है ना। बोल से, चेहरे से, चलन से, सभी से अथॉरिटी का मालूम पड़ना चाहिए। आजकल के जमाने में अगर छोटी-मोटी अथॉरिटी वाले ऑफीसर अपने कर्त्तव्य में जब होते हैं तो कितना अथॉरिटी का कर्म दिखाई देता है।
- ✚ भक्ति में भी आपके चित्रों के आगे अखण्ड ज्योति जलाते हैं। क्यों जलाते हैं? चेतन्य स्वरूप में अखण्ड ज्योति स्वरूप रहे हो तब अखण्ड ज्योति का यादगार रहता है। ज्योति के आगे कोई आवरण तो नहीं आता, तूफान हिलाता तो नहीं हैं? अपना भी स्वरूप ज्योति, बाप भी ज्योति और घर भी ज्योति तत्व है। तो सिर्फ ज्योति शब्द भी याद रखो तो सारा ज्ञान आ जाता है।
- ✚ सभी टीचर्स आर्टिस्ट हो। चित्र बनाना आता है? अपना श्रेष्ठ चरित्र का चित्र बनाना आता है ना! तो बड़े-ते-बड़े चित्रकार वही हैं जो हर कदम में चरित्र का चित्र बनाते रहते हैं। इसी चरित्र का चित्र बनाने कारण ही आपके जड़ चित्र आधाकल्प चलते हैं। तो टीचर्स अर्थात् बड़े-ते-बड़े चित्रकार। अपना भी चित्र बनाते और अन्य आत्माओं को भी चित्रकार बना देते हो।

- ✚ 84 घण्टों वाली देवियाँ मशहूर हैं। तो अभी 84 में घण्टा बजायेंगे वा और भी अभी इन्तजार करें! विदेश में तो डर से जी रहे हैं। तो कब घण्टे बजायेंगे। विदेशी बजावें वा देश बजावे। 84 माना चारों ओर के घण्टे बजें। जब समाप्ति में आरती करते हैं तो जोर-जोर से घण्टे बजाते हैं ना - तब समाप्ति होती है। आरती का होना माना समाप्ति होना। तो अब क्या करेंगे?
- ✚ अब बहुकाल के बाद जो सुन्दर मेला हो गया इस मेले से अब सेकेण्ड भी वंचित नहीं रहने वाले हो - ऐसी कम्पेनियनशिप निभाने वाले हो ना - आज बाप-दादा अपनी पार्वतियों का श्रृंगार देख रहे थे कि हरेक पार्वती कहाँ तक सजी सजाई रहती है। श्रृंगार तो सब करते हो लेकिन फिर भी नम्बरवार - माला सभी पहनते हैं लेकिन कहाँ नौ लखा हार और कहाँ साधारण मोतियों का हार।
- ✚ सिर्फ बाप नहीं लेकिन शिक्षक और सतगुरू भी बनें। जैसे भक्त लोग कहते हैं भगवान जब राज़ी हो जाते हैं तो छप्पर फाड़ कर देते हैं। तो यह भी इस आकाश तत्व को भी पार कर, देने के लिए आ गये ना। वह तो सिर्फ छप्पर फाड़कर कहते लेकिन यह तो आकाश तत्व से पार रहने वाले 5 तत्वों को भी पार करके प्राप्ति करा रहे हैं तो कितने भाग्यशाली हुए। ऐसा भाग्य सदा याद रहे।
- ✚ आज बेहद के मात-पिता चारों ओर के विशेष बच्चों को देख रहे थे। क्या विशेषता देखी? कौन से बच्चे अखुट ज्ञानी, अटल स्वराज्य अधिकारी, अखण्ड निर्विघ्न, अखण्ड योगी, अखण्ड महादानी हैं-ऐसे विशेष आत्मायें कोटों में कोई बने हुए हैं। ज्ञानी, योगी, महादानी सभी बने हैं लेकिन अखण्ड कोई-कोई बने हैं। जो अखुट, अटल और अखण्ड हैं वही विजय माला के विजयी मणके हैं।

- ✚ सभी ने जागरण किया! आपके भक्त जागरण करते हैं तो भक्तों को सिखाने वाले तो इष्ट देव ही होते हैं, जब यहाँ इष्ट देव जागरण करें तब भक्त कॉपी करें। तो सभी ने जागरण किया अर्थात् अपने खाते में कमाई जमा की। तो आज की रात कमाने के सीजन की रात हो गई। जैसे कमाई की सीजन होती है तो सीजन में जागना ही होता है। तो यह कमाई की सीजन है इसलिए जागना अर्थात् कमाना।
- ✚ यह वतन है ही बच्चों के लिए। और कोई भी आत्मायें सूक्ष्मवतन का अनुभव कर ही नहीं सकती हैं क्योंकि ब्रह्मा और ब्राह्मणों का ही सम्बन्ध है। भक्त लोग सिर्फ कोई विशेष दृश्य का साक्षात्कार कर सकते हैं लेकिन सूक्ष्मवतन हमारा घर है, ब्रह्मा बाप का स्थान सो हमारा स्थान है। सूक्ष्मवतन के का अनुभव, मिलने का अनुभव, बहलाने का अनुभव ब्राह्मण ही कर सकते हैं।
- ✚ बापदादा देख रहे थे कि सभी बच्चों को बाप की जयन्ती मनाने का कितना उमंग-उत्साह है। तो बाप भी देखो बच्चों के स्नेह में आपके साथ साकार शरीर का लोन लेकर पहुंच गये हैं। इसको कहते हैं अलौकिक प्यार। बच्चे बाप के बिना नहीं रह सकते और बाप बच्चों के बिना नहीं रह सकते। प्यार भी अति है और फिर न्यारे भी अति हैं, इसीलिए बाप की महिमा ही है न्यारा और प्यारा।
- ✚ उत्तर:- तिलक का अर्थ है - 'स्मृति स्वरूप'। तो सदा स्मृति रहे कि हम तख्तनशीन हैं। हम वह सिकीलधी आत्मायें हैं जो प्रभु तख्त के अधिकारी बनी हैं। इस तिलक को धारण करने से सदा खुशी और नशे में रहेंगे। वैसे भी कहा जाता है - 'तख्त और बख्त'। तख्तनशीन बनने का बख्त अर्थात् भाग्य मिला। तो सदा श्रेष्ठ तख्त और बख्त वाली आत्माएँ हैं, यही नशा और खुशी सदा रहे।

- ✚ दादी जी से - संकल्प किया और सर्व को श्रेष्ठ संकल्प का फल मिल गया। कितने आशीर्वादों की मालायें पड़ती हैं! जो निमित्त बनते हैं उन्हीं के भी, बाप के साथ-साथ गुण तो गाते हैं ना। इसलिए तो बाप के साथ बच्चों की भी पूजा होती है, अकेले बाप की नहीं होती। सभी को कितनी खुशी प्राप्त हो रही है! यह आशीर्वादों की मालायें भक्ति में मालाओं के अधिकारी बनाती हैं!
- ✚ कुछ भी सेवा करो चाहे जिज्ञासू कोर्स वाले आवे या नहीं आवे लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो। बढ़ते जाओ, करते जाओ। और ही पश्चाताप करके आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कहा हमने नहीं माना। यहाँ ही आप देवियां बनेंगी। आपके पांव पर पड़ेंगे, तभी तो भक्ति में भी पांव पड़ेंगे ना। तो वह टाइम भी आना है जो सब आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कितना अच्छा हमारा कल्याण किया।
- ✚ यह अनुभव करते हो कि हम वरदान भूमि पर पहुँचे हुए हैं? नये-नये क्या समझते हैं? ऐसा भाग्य जो विदेश से इस भूमि पर अधिकारी बनकर आये हो। ऐसा भाग्य अब तक भक्त लोग गायन करते हैं कि ऐसा भाग्य कब मिल जाए तो ऐसे अपने को भाग्यशाली अनुभव करते हो? बाप तो हर एक बच्चे को अपने से भी ऊँचा बनाते हैं इसलिए बच्चे को कहते ही हैं सिरताज। ऐसा सिरताज अपने को समझते हो?
- ✚ निमित्त बने हुए सेवाधारी बाप-समान बनने ही हैं, कैसे भी बाप को बनाना ही है क्योंकि ऐसे-वैसे को तो साथ ले ही नहीं जायेंगे। बाप की भी तो शान है ना। बाप सम्पन्न हो और साथी लंगड़ा या लूला हो तो सजेगा नहीं। लूले-लंगड़े बाराती होंगे, साथी नहीं। इसलिए शिव की बारात सदा लूली-लंगड़ी दिखाई गई है क्योंकि कुछ कमज़ोर आत्मायें धर्मराजपुरी में पास होने लायक बनेंगी।

- ✚ किसी भी प्रकार का दृढ़ संकल्प रूपी व्रत लेना अर्थात् अपनी वृत्ति को परिवर्तन करना। दृढ़ व्रत वृत्ति को बदल देता है। इसलिये ही भक्ति में व्रत लेते भी हैं और व्रत रखते भी हैं। व्रत लेना अर्थात् मन में संकल्प करना और व्रत रखना अर्थात् स्थूल रीति से परहेज करना। चाहे खान-पान की, चाहे चाल-चलन की, लेकिन दोनों का लक्ष्य व्रत द्वारा वृत्ति को बदलने का है।
- ✚ अगर दिल से साथ नहीं निभाते तो मधुवन में होते भी दूर हैं। विदेश और लास्ट देश में रहते भी दिल से समीप हैं तो वो साथ हैं। इसीलिये बापदादा को दिलाराम कहते हैं, शरीर राम नहीं कहते। तो दिल बाप में है ना? बाप के दिल में आपका दिल है और आपके दिल में बाप का दिल है। तो दिल जाने इस रूहानी साथ को। अनुभवी हो ना? कि यहाँ से जायेंगे तो कहेंगे दूर हो गये? नहीं।
- ✚ बाबा के पास आज संदेशी भोग ले आई तो बाबा ने कहा कि बच्चे तो यहाँ पर बैठे ही प्रिन्स बन गये हैं। बाबा की बेगरी टोली भूल गयी है। वैभव तो वहाँ मिलने हैं। संगम पर बेगरी टोली याद पड़ती है। वो ही बाप को प्यारी लगती है। सुदामा के चावलों की वैल्यु है ना। इस टोली में प्यार भरा हुआ है। बनाने वाले ने प्यार भरा है तो बाप और ही प्यार भरकर बच्चों को खिलाते हैं।
- ✚ लौकिक रीति में भी कोई ड्यूटी वाला अपनी ड्यूटी को अच्छी तरह न सम्भाले तो उसको क्या करते हैं (निकाल देते हैं) यहाँ किसी को भी निकाला नहीं जाता लेकिन स्वतः ही निकल जाता। वहाँ तनख्वाह कट कर देंगे, या वार्निंग देंगे निकाल भी, लेकिन यहाँ अगर अपनी ड्यूटी ठीक नहीं बजाते तो ड्रामानुसार प्राप्ति की तनख्वाह कट ही जाती है, खुशी कम हो जाती, शक्ति कम हो जाती।

- ✚ इसी पुरुषार्थी शब्द में सारा ज्ञान समाया हुआ है। पुरुषार्थी अर्थात् पुरुष अर्थात् रथी। किसका रथी है? किसका पुरुष है? इस प्रकृति का मालिक अर्थात् रथ का रथी। एक ही शब्द के अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ तो क्या होगा! सर्व कमज़ोरियों से सहज पार हो जायेंगे। पुरुष प्रकृति के अधिकारी हैं न कि अधीन है। रथी रथ को चलाने वाला है न कि रथ के अधीन हो चलने वाला।
- ✚ समीप रहने के लिए भक्ति मार्ग में भी सत्संग का बहुत महत्व है। संग रहो अर्थात् समीप रहो। वह तो सिर्फ सुनने वाले होते हैं और आप संग में रहने वाले हो। ऐसे हो? कभी मुख मोड़ तो नहीं लेते हो? माया आकर ऐसे मुख कर लेवे तो? धोखा खाने वाले चन्द्रवंशी बन जाते हैं। तो अच्छी तरह से माया को पहचानने वाले हो ना। बाप को भी पहचानना और माया को भी अच्छी तरह से पहचानना।
- ✚ एडवांस पार्टी वालों के साथ होली मनाई। एडवांस पार्टी है ना नाम ही एडवांस पार्टी है। तो बापदादा ने एडवांस होली मनाई। जानते हो क्या होली मनाई? सभी एडवांस पार्टी वाले नये वा पुराने आजकल के गये हुए महारथियों को भी आप याद करते हो ना उन्हीं को भी इमर्ज किया क्योंकि अभी जाने वाले जो भी हैं उन्होंने बचपन से लेके यानी काफी समय से अपना सेवा का पार्ट बजाया।
- ✚ विश्व पर सदा के लिए सुख और शान्ति का झण्डा लहर जाए। सदा चैन की बंसुरी बजती रहे। तो देहली वालों ने इस लक्ष्य को लेकर महा- यज्ञ का महा कर्तव्य भी किया। सदा सर्व के सहयोग की अंगुली से कि हम सब एक हैं - यही नारा विश्व को बुलन्द आवाज से सुनाया। देहली में सभी का हक है। क्योंकि सब राज्य-अधिकारी बन रहे हो ना! तो सेवा के नये-नये कार्य में दिल लेने वाले।

✚ अब अव्यक्त होने के कारण एक और क्वालिटी बढ़ गई है। कौन सी? मालूम है? वह यह है - पहले तो बाहरयामी था, अभी अन्तर्यामी हो गया हूँ। अव्यक्त स्थिति में जानने की आवश्यकता नहीं रहती। स्वतः ही एक सेकेण्ड में सभी का नक्शा देखने में आ रहा है। इसलिए कहते हैं कि पहले से एक और गुण बढ़ गया है। अव्यक्त स्थिति में तो खुशबू से ही पेट भर जाता है। आप लोगों को मालूम है?

✚ जैसे यहाँ पंछियों का संगठन लाइन में जाता है, वैसे विमानों के संगठन जायेंगे। ऐसे नहीं एक जायेगा तो दूसरा नहीं जा सकेगा। ऐसे भिन्न-भिन्न डिजाइन में जायेंगे। राज्य फैमिली अपनी डिजाइन में जायेगी, साहूकार अपनी डिजाइन में जायेंगे। जहाँ चाहो वहाँ उतार लो। अभी प्रकृतिजीत बनो तो प्रकृति दासी बनेगी। अभी प्रकृतिजीत कम तो प्रकृति दासी भी कम होगी! समझा-अच्छा।

✚ जिनमें दुनिया वालों की आँख नहीं जाती उन्होंने ही बाप से सौदा किया और परमात्म नयनों के सितारे बन गये, नूरे रतन बन गये। ना उम्मीद आत्माओं को विशेष आत्मा बना दिया। ऐसा नशा सदा रहता है? परमात्म डायरेक्टरी के विशेष वी.आई.पी. हम हैं। इसलिए ही गायन है - भोलों का भगवान। है चतुरसुजान लेकिन पसन्द भोले ही आते हैं। दुनिया की बाहरमुखी चतुराई बाप को पसन्द नहीं।

✚ सभी पांडव क्या करेंगे? सदा उत्साह में रहेंगे ना। उत्साह कभी नहीं छोड़ना। अभी का उत्साह आपके जड़-चित्रों के आगे जाकर, पहले उत्साह, हिम्मत लेकर फिर कार्य शुरू करते हैं। इतनी उत्साह भरी आत्माये हो जो आपके जड़-चित्र भी औरों को उत्साह हिम्मत दिला रहे है!

पांडवोका का महावीर का चित्र कितना प्रसिद्ध है! कमजोर शक्ति लेने के लिए महावीर के पास जाते हैं! अच्छा!

✚ बापदादा को भारत ही पसन्द आया, लण्डन का रिट्रीट हाउस नहीं। जब रेस्ट करेंगे ना तो परमधाम के रिट्रीट हाउस में जायेंगे। तो भारतवासियों से विशेष बाप का प्यार है और भारतवासियों को भी विशेष नाज़ है, नशा है कि स्वर्ग भी विशेष तो भारत ही बनेगा और बनाने वाला बाप भी भारत में ही आते हैं। और स्टोरी भी विशेष तो आदि से अन्त तक भारत की है। तो भारत अविनाशी खण्ड है।

✚ जो जितने सब्जेक्ट्स में पास होगा तो उतना ही उन सब्जेक्ट्स के आधार पर ऑब्जेक्ट (लक्ष्य) और रिसपेक्ट मिलेगी। एक तो प्राप्ति का अनुभव भी होगा। जैसे कि ज्ञान की सब्जेक्ट है तो उससे जो ऑब्जेक्ट प्राप्त होती है-लाइट और माइट वह प्राप्ति का अनुभव करेंगे। उस नॉलेज की सब्जेक्ट के आधार पर रिसपेक्ट भी इतनी मिलेगी ही। चाहे दैवी परिवार से, चाहे अन्य आत्माओं से।

✚ बहुत करके क्या कहते कि 'मुझे ही मरना है', 'मुझे ही बदलना है', 'मुझे ही सहन करना है' लेकिन जैसे लोग कहते हैं ना कि 'मरा और स्वर्ग गया' उस मरने में तो स्वर्ग में कोई जाते नहीं हैं लेकिन इस मरने में तो स्वर्ग में श्रेष्ठ सीट मिल जाती है। तो यह मरना नहीं है लेकिन स्वर्ग में स्वराज्य लेना है। तो मरना अच्छा है ना? क्या मुश्किल है? उस समय मुश्किल लगता है।

✚ अब लाइट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुण और प्रकृति के तमोगुणी संस्कारों को भस्म करने का कर्तव्य चलना है। अब समझा कि कौनसे कर्तव्य का अभी समय है? तपस्या द्वारा तमोगुण को भस्म करने का। जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी

अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित हो तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ।

✚ आपके(डबल विदेशी मुख्य भाईयों) अनुभव से दूसरा अनुभवी बनता है, आगे बढ़ता है तो उनका फल आपको मिलता है, वह क्या मिलता है? अन्दर की खुशी। हल्कापन। कोई प्राबलम, प्राबलम नहीं लगेगी। जो गायन है ना पहाड़ भी रूई बन जायेगा। देखने में बड़ी प्राबलम आयेगी लेकिन अनुभव के आधार से ऐसी हल्की हो जायेगी जैसे रूई। तो प्राबलम प्रूफ हो जायेंगे। ऐसी लाइफ हो जायेगी, नो प्राबलम।

✚ यह प्यारापन ही न्यारा बनाता है। बाप का प्यारा बन, न्यारा बन कार्य में आना - इसको कहते हैं बेहद का वैरागी। बाप का प्यारा नहीं तो न्यारा भी नहीं बन सकते, लगाव में आ जायेंगे। बाप का प्यारा और किसी व्यक्ति वा वैभव का प्यारा हो नहीं सकता। वह सदा आकर्षण से परे अर्थात् न्यारे होंगे। इसको कहते हैं निर्लेप स्थिति। कोई भी हद की आकर्षण की लेप में आने वाले नहीं।

✚ यही विदेश जहाँजहाँ ब्राह्मणों द्वारा सेवा का पार्ट चलता है, वही फिर भविष्य में सैर के स्थान बन जायेंगे। यादगार के रूप में बनेंगे, मन्दिर नहीं होंगे। प्रेक्टीकल स्थान की व्यू (View;दृश्य) यादगार के रूप में होती। विशेष नामी-ग्रामी व्यक्तियों द्वारा जो सेवा हो रही है, उससे भारत को शिक्षा भी मिल रही है और भविष्य राजधानी के स्थान भी निश्चित होते जा रहे हैं।

✚ स्नेह से परमात्मा वा भगवान को भी अपना दोस्त बना देते हैं। जो यादगार है खुदा दोस्त का। खुदा को दोस्त बनाके कोई भी समस्या दोस्ती के नाते से सहज कर देते हैं। बाप को अपना साथी बना देते हैं। ज्ञान बीज है, लेकिन प्रेम का पानी बीज में फल लगा देता है, प्राप्ति के फल।

तो ऐसे बाप के स्नेही बच्चे बाप को याद करना मेहनत नहीं समझते हैं लेकिन भूलना मुश्किल समझते हैं।

✚ भगवान् बच्चों को कहते हैं वन्दे मातरम् कितना फर्क हो गया। इतना नशा रहता है? जिस बाप की अनेक भक्त वन्दना करते हैं, वह स्वयं आकर कहते हैं वन्दे मातरम् इस खुमारी की निशानी क्या होगी? उनके नयन, उनके मुखड़े, उनकी चलन, बोल आदि से खुशी झलकती रहेगी। जिस खुशी को देख कहियों के दुःख मिट जायेंगे। ऐसी मातार्यीं जिनको बापदादा स्वयं वन्दना करते हैं, उनकी निशानी है खुशी।

✚ मेले में एक होता है - मनाना, दूसरा - एक-दो से मिलना, तीसरा - कुछ लेना, कुछ देना, चौथा - खेलना। आप सभी ने भी यह चार ही बातें की। मेले में तो आये लेकिन मनाना अर्थात् सदा अविनाशी उत्साह भरी, उमंग भरी जीवन में सदा रहने का दृढ़ संकल्प करना। यह रूहानी मेला मनाना, अविनाशी उत्सव मनाना, एक दो दिन के लिए नहीं, संगमयुग है ही सदा का उत्सव अर्थात् उत्साह बढ़ाने वाला।

✚ होली का अर्थ भी है - 'हो ली'। पास्ट इज पास्ट। ऐसे बिन्दी लगाने आती है ना! यह भी होली का अर्थ है। जलाने वाली होली भी आती। रंग में रंगने वाली होली भी आती और बिन्दी लगाने की होली भी आती। मंगल मिलन मनाने की होली भी आती। चारों ही प्रकार की होली आती है ना! अगर एक प्रकार भी कम होगी तो लाइट का ताज टिकेगा नहीं। गिरता रहेगा। ताज टाइट नहीं होता तो गिरता रहता है ना।

✚ कोई भी देह की वा देह की दुनिया की परिस्थिति स्थिति को हिला नहीं सके इसी स्थिति का ही गायन गाया हुआ है। अंगद के रूप में जो कल्प पहले का गायन है-यही सम्पूर्ण स्टेज है। जो

बुद्धि रूपी पाँव को प्रकृति की परिस्थितियाँ हिला नहीं सकें, ऐसे बने हो? लक्ष्य तो यही है ना? अभी तक लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। कल्प पहले के गायन और वर्तमान प्रैक्टिकल जीवन में अन्तर है।

✚ वास्तव में हैं यह विस्तार के संकल्प को कंट्रोल करने की बात, लेकिन उन लोगों ने श्वास को कंट्रोल करने का साधन बना दिया है। यहाँ है विस्तार के बजाए एक संकल्प में स्थित होना, उन लोगों ने श्वास को कंट्रोल करने का अभ्यास चालू कर दिया है। अब महारथियों के याद की यात्रा की ऐसी सिद्धि चाहिए। ऐसे एक संकल्प को धारण करने वाले, जो जितना समय चाहे बुद्धि को स्थित करें।

✚ आप ऐसी यात्रा कराते जो जन्म-जन्म के लिए यात्रा करने से छूट जायेंगे, और वह बार-बार यात्रा करते रहेंगे। तो सदा के लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति की मंजिल पर पहुँचाने वाले पण्डे हो। आधे पर छोड़ने वाले, भटकाने वाले नहीं हो। मंजिल पर पहुँचाने वाले हो। जैसे बाप का कार्य है, बाप ने रास्ता दिखाया ना! वैसे बच्चों का भी वही कार्य। रास्ता भी वह दिखा सकते जो स्वयं जानते हो।

✚ "भरत मिलाप"। यह है ब्रदरहुड की स्थिति। भाई-भाई की दृष्टि की निशानी है - सेवा और स्नेह। स्नेह कि निशानी दीपमाला दिखाई है। सेवा की सफलता का आधार ब्रदरहुड दिखाया है। इसके बिना दीपमाला नहीं मना सकते। दीपमाला के सिवाए राज-तिलक नहीं कर सकते। तो आज का यादगार विजय दशमी मनाई है। इसका आधार पहले अष्टमी मनाते हैं। बिना अष्टमी के विजय नहीं। अष्ट शक्ति और एक शक्तिवान।

- ✚ हरेक के मन के खुशी के गीत भी सुन रहे हैं। बिना गीत के डांस तो नहीं होती है ना। तो साज भी बज रहे हैं और डांस भी हो रहा है। 'मन्मनाभव' हुए और गीत गाना व सुनना शुरू हुआ। जब हैं ही कम्बाइन्ड तो अलग कैसे दिखाई देंगे, अलग कर सकते हो आप? आप अलग करेंगे वह आपस में मिल जायेंगे। जैसे बापदादा का आपस में कम्बाइन्ड रूप है तो आपका भी है ना! आप भी बाप से अलग नहीं हो सकते।
- ✚ कोई भी संस्कार चाहे काम का, चाहे लोभ का, चाहे अहंकार का, बदलने में नाउम्मीदी न आए। ऐसे नहीं मैं तो बदल ही नहीं सकता, यह तो बदलना बड़ा मुश्किल है। ऐसा संकल्प भी न आये। क्योंकि अगर अभी नहीं खत्म करेंगे तो कब करेंगे? अभी दशहरा है ना। सतयुग में तो दीपमाला हो जायेगी। रावण को खत्म करने का दशहरा अभी है। इसमें सदा विजय का उमंग उत्साह रहे। नाउम्मीदी के संस्कार नहीं।
- ✚ ऐसे नहीं सोचना विनाश की तैयारियाँ तो अभी दिखाई नहीं दे रही है, जब ऐसा समय समीप आयेगा तब सभी को संदेश दे देंगे। कई समझते हैं अभी तो आपस में समीप आ रहे हैं, शान्ति की बातें हो रही हैं। लेकिन जब सभी की बुद्धि में आयेगा कि बहुत समय पड़ा है, तब ही अचानक होगा। इसलिए सदा एवररेडी। एवररेडी अर्थात् सदा अपने को सब रीति से सम्पन्न बनाना। इसको कहते हैं - लास्ट सो फास्ट।
- ✚ गायन शक्तियों का ज्यादा है। कर्तव्य के सम्बन्ध में शक्तियों का गायन ज्यादा है। क्योंकि साकार में अन्तिम कर्तव्य की समाप्ति शक्तियों द्वारा है। इसलिए कर्तव्य की स्मृति वा यादगार भी शक्तियों का ज्यादा है। दिन- प्रतिदिन भविष्य में देवताओं के स्वरूप का पूजन वा यादगार कम होता जायेगा, शक्तियों का पूजन गायन बढ़ता जायेगा। गायन होते-होते ही प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

- ✚ टीचर्स के साथ - सभी स्वयं को कौन-सी मणि समझते हो? (सन्तुष्टमणि) आज के समय में विशेष सन्तुष्टता की ही आवश्यकता है। पूजा भी ज्यादा किस देवी की होती है? सन्तोषी की। और सन्तोषी को राजी करना ही सहज होता है। संतोषी सन्तुष्ट जल्दी हो जाती है। संतोषी की पूजा क्यों होती है? क्योंकि आज के समय में टेन्शन बहुत है, परेशानियाँ बहुत हैं, इस कारण असन्तुष्टता बढ़ती जा रही है।
- ✚ जैसे लौकिक में सब बातों के अनुभवी हो, ऐसे मास्टर ज्ञानसागर बन ज्ञान की गहराई में भी अनेक अनुभव रूपी रत्नों को प्राप्त करते जा रहे हो ना? जितना सागर के तले में जाते हैं उतना क्या मिलता है? रत्न। ऐसे ही जितना ज्ञान की गहराई में जायेंगे उतना अनुभव के रत्न मिलेंगे और ऐसे अनुभवी मूर्त हो जायेंगे जो आपके अनुभवों को देख और भी अनुभवी बन जायेंगे। ऐसे अनुभवी बने हो?
- ✚ सेवा के लिए यह भी एक थोड़े समय का पार्ट मिला हुआ है। नहीं तो विदेश की सेवा कैसे होती? वहाँ वालों को निमित्त बना के विदेश की सेवा करा रहे हैं। जैसे कल्प पहले का गायन भी है कि पाण्डव गुप्त वेश में यहाँ-वहाँ सेवा के लिए गए थे। तो आप भी रूप-धर्म में परिवर्तन करके पाण्डवसेना सेवा के लिए गए हो। लेकिन हो 'पाण्डवसेना'। अब तो धर्म, देश, गुण और कर्तव्य सब बदल गया ना?
- ✚ अब इतने सभी खजाने चेक करो कि हम इन खजानों को अपने अन्दर कितना धारण कर सके हैं? अथवा ऐसा तो नहीं कि कोई खजाना धारण हुआ है और कोई नहीं हुआ है? किसी भी खजाने से अधूरे तो नहीं रह गये हो? वंचित तो होंगे नहीं लेकिन यदि अधूरी प्राप्ति की, तो भी चन्द्रवंशी हो गये, सूर्यवंशी नहीं हुए। सूर्यवंशी अर्थात् सम्पन्न। किसी भी बात में यदि सम्पन्न नहीं तो सूर्यवंशी नहीं कहेंगे।

✚ हरेक बच्चे की विशेषता ने बाप का बनाया है, ऐसा कोई बच्चा नहीं जिसमें 'विशेषता' न हो। इसलिए बापदादा हरेक बच्चे की विशेषता देख सदा खुश होते हैं। नहीं तो कोटों में कोई, कोई में कोई, आप ही क्यों बनें! जरूर कोई विशेषता है। कोई कौन सा रत्न है, कोई कौन सा? भिन्न-भिन्न विशेषताओं के 9 रत्न गाये हुए हैं। हरेक रत्न विशेष विघ्न-विनाशक होता है। तो आप सभी भी विघ्न-विनाशक हो।

✚ एक बात सभी को समझनी चाहिए कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही हिसाब-किताब चुक्का होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राह्मण परिवार में क्या होता है। ब्राह्मणों का हिसाब-किताब ब्राह्मणों द्वारा ही चुक्का होना है। तो यह चुक्का हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब-किताब चुक्का हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई।

✚ वह दो रूप हैं - एक सर्व के पूर्वज, दूसरा सर्व के पूजनीय। पूर्वज और पूजनीय! पूजन के साथ-साथ गायन योग्य तो हैं ही। ऐसे अपने दोनों की स्मृति रहती है कि हम ही सर्व धर्म स्थापक व सर्व धर्म की आत्माओं के पूर्वज हैं? 'ब्राह्मण सो देवता' अर्थात् आदि सनातन धर्म की आत्माएं बीज अर्थात् बाप द्वारा डायरेक्ट तना के रूप में हैं। सृष्टि वृक्ष के चित्र में भी आपका स्थान कहाँ है?

✚ कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है - उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा। अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर - यह मेरा-मेरी सहज को मुश्किल कर

देता है। सहज मार्ग का साधन है - 'नष्टो मोहा अर्थात् ट्रस्टी।' इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ।

- ✚ अभी तो कोई- कोई गाली भी देते हैं क्योंकि गुप्त हो ना। जब प्रत्यक्ष होंगे तो आपे ही सब नमस्कार करने के लिए आयेंगे। जितनी गालियाँ देते हैं उतने पुष्प चढ़ायेंगे। एक गाली के बजाए कितनी बार फूलों की मालायें चढ़ानी पड़ेगी। जैसे बाप ने बहुत गालियाँ खाई तो पूजन भी इतना ही होता है ना। ऐसे जितनी गाली खायेंगे उतने बड़े पूज्य बनेंगे। इसलिए घबराना नहीं। मालायें तैयार हो रही हैं।
- ✚ सबके हृदय में बाप-दादा बस रहा है और यही पुरुषार्थ प्रैक्टिकल में ला रहे हैं कि सभी कैसे दिल चीरकर दिखायें कि बाप हमारे दिल में है। इस समय का सबका रूप यादगार में गाए हुए सेवक हनुमान के मिसल है। कोई संकल्प के तीर लगा रहे हैं जिस श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करें। कोई अपने मुख के स्नेही और शक्तिशाली बोल से बाप को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं।
- ✚ जैसे पाण्डवों की गुफायें दिखाते हैं ना, तो गुफायें कोई और नहीं हैं, लेकिन पाण्डव इन्हीं गुफाओं में रहते हैं। इसी को ही कहा जाता है अन्तर्मुखता। जैसे गुफा के अन्दर रहने से बाहर के वातावरण से परे रहते हैं ऐसे अन्तर्मुखी अर्थात् सदा देह से न्यारे और बाप के प्यारे रहने के अभ्यास की गुफा में रहने वाले दुनिया के वातावरण से परे होते, वह वातावरण के प्रभाव में नहीं आ सकते।
- ✚ अभी से देखो भीड़ लगने शुरू हो गई है। जब और वृद्धि होगी तो कितनी भीड़ होगी। यह वरदान की विशेषता की नींव पड़ रही है। जब भीड़ हो जायेगी फिर क्या करेंगे। वरदान देंगे, दृष्टि देंगे। यहाँ से ही चैतन्य मूर्तियाँ प्रसिद्ध होंगी। जैसे शुरू में आप लोगों को सब देवियाँ-

देवियाँ कहते थे...अन्त में भी पहचान कर देवियाँ-देवियाँ करेंगे। 'जय देवी, जय देवी' यहाँ से ही शुरू हो जायेगा।

✚ आज के दिन सभी विशेष नया वर्ष मनाने के उमंग-उत्साह से आये हुए हैं। दुनिया के लोग मनाने के लिए बुझे हुए दीप वा मोमबत्तियाँ जगाते हैं। वह जगाकर मनाते हैं और बापदादा जगे हुए अनगिनत दीपकों से नया वर्ष मना रहे हैं। बुझे हुए को जगाते नहीं और जगाकर फिर बुझाते नहीं। ऐसा लाखों की अन्दाज में जगे हुए रूहानी ज्योति के संगठन का वर्ष मनाना - यह सिवाए बाप और आपके कोई मना नहीं सकता।

✚ जैसे शरीर के अंदर नस-नस में ब्लड समाया हुआ है, ऐसे आत्मा में निश-पल अर्थात् हर पल याद समाई हुई है। इसको कहते हैं दिल के स्नेह सम्पन्न निरंतर याद। जैसे भक्त आत्माएं बाप के लिए कहती हैं - जहाँ देखते हैं तू ही तू है। ऐसे बाप के स्नेही समान आत्माओं को जो भी देखे कि इन्हीं की दृष्टि में, बोल में, कर्म में परमात्मा बाप ही अनुभव होता है। इसको कहते हैं - स्नेही सो समान बाप।

✚ जो कोई भी आप लोगों के सामने आये तो जैसे कि आप के जड़ चित्र के आगे जाते ही उन को महान् समझते अपने को पापी और नीच सहज ही समझ लेते हैं अर्थात्-एक सेकेण्ड में अपना साक्षात्कार कर लेते हैं। मूर्ति कहती तो नहीं है कि तुम नीच हो। लेकिन स्वयं ही साक्षात्कार करते हैं। ऐसे ही आप लोगों के सामने कोई भी आये तो ऐसे ही अनुभव करे कि यह क्या हैं और मैं क्या हूँ। यह स्टेज आनी तो है ना?

✚ साथ रहने का वायदा है। आप भी क्या कहते हो? हम भी जहाँ बाप वहाँ साथ-साथ होंगे। यह है बच्चों का बाप से बाप का बच्चों से वायदा। कहाँ भी शरीर द्वारा रहते हैं लेकिन दिल में सदा

बाप साथ है इसीलिए बाप को दिलाराम कहते हैं। यहाँ यादगार भी दिलवाला मन्दिर है। तो सभी के दिल में साथ में दिलाराम है ना! और बाप सदा बच्चों को कहते हैं कभी भी अकेले नहीं बनना। सदा साथ हैं साथ रहना ही है।

✚ अगर अब तक भी व्यर्थ का खाता 50% या 60% है तो ऐसे रिजल्ट वाले को कौन से समय के राज्य अधिकारी कहेंगे ? क्या सतयुग के पहले राज्य के या सतयुग के मध्यकाल के या त्रेता के आदिकाल के? आदिकाल के विश्व अधिकारी वही बन सकते जिन आत्माओं का वर्तमान समय, संकल्प और समय पर अधिकार है। ऐसी अधिकारी आत्माएँ ही विश्व की आत्माओं द्वारा सतोप्रधान आदिकाल में सर्व का सत्कार प्राप्त कर सकती हैं।

✚ आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खज़ाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमज़ोरियों का किनारा स्वतः ही हो जायेगा। समझा अभी क्या करना है? अभी बेहद को सोचो, बेहद के कार्य को सोचो। चाहे दृष्टि से दो, चाहे वृत्ति से दो, चाहे वाणी से दो, चाहे संग से दो, चाहे वाइब्रेशन से दो। लेकिन देना ही है। वैसे भी भक्ति में यह नियम होता है, कोई भी वस्तु की कमी होती है तो कहते हैं - दान करो।

✚ संगमयुग पर भी रानी बन गई हो ना? बेहद के राजाओं के राजा की रानियाँ हो। सतयुग में तो होंगी देव-रानी, लेकिन अभी परमात्म-रानियाँ हो। इसलिए पटरानियाँ दिखाई हैं। सिर्फ कृष्ण छोटे बच्चे को रानियाँ दिखा दी हैं। कृष्ण को बच्चे के रूप में भी दिखाते, फिर रानियाँ भी दिखाते। मिक्स कर दिया है। यह राजाओं का राजा बनाने वाले की सब रानियाँ हैं। रानियाँ भी हो, सीतायें भी हो। यही जादू है।

- ✚ तामिलनाडु में डांस बहुत अच्छी करते हैं। कोई भी दादियाँ जाती हैं तो अच्छी-अच्छी डांस दिखाते हैं। जैसे शास्त्रों में शंकर के लिए दिखाते हैं, नृत्य करते-करते सारा विनाश कर दिया। तो डांस करते-करते क्या करेंगे? भिन्न-भिन्न प्रकार से सभी विघ्नों का विनाश। जैसे डांस वे भिन्न-भिन्न पोज़ रखते हो ना ऐसे एक-एक विकल्प को अच्छी तरह से, ऐसे खत्म करना जो नाम-निशान भी नहीं रहे। ठीक है?
- ✚ अब हैण्डस बनाने का कर्तव्य करो। समय प्रमाण जैसे समय की गति तीव्र होती जा रही है, ऐसी सेवा की रिजल्ट का प्रत्यक्ष फल बनी बनाई निमित्त बनने वाली आत्माएँ सहज ही निकल सकती हैं। सिर्फ लक्ष्य, हिम्मत और परख चाहिए। जैसे कल्प पहले का गायन है - पाण्डवों ने तीर मारा और जल निकला अर्थात् पुरुषार्थ किया और फल निकला। अब प्रत्यक्ष फल का समय है। सीजन है, समय का वरदान है। इसका लाभ उठाओ।
- ✚ पाण्डवों के बिना भी तो कार्य नहीं चलता लेकिन ज्यादा संख्या शक्तियों की है। इसलिए 5 पाण्डव लिख दिये हैं। फिर भी प्रवृत्ति को निभाते न्यारे और बाप के प्यारे बन हिम्मत और उमंग का सबूत दिया है इसलिए पाण्डव भी कम नहीं हैं। शक्तियों का सर्वशक्तिवान गाया हुआ है तो पाण्डवों का पाण्डवपति भी गाया है। इसलिए जैसे निमित्त बने हो ऐसे निमित्त बने हो ऐसे सदा स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो।
- ✚ पंजाब, हरियाणा, हिमाचल ग्रुप:- सभी अपने को महावीर और महावीरनियाँ समझते हो? महावीर तो हो लेकिन सदा महावीर हो? या कभी महावीर, कभी थोड़ा कमजोर हो जाते हो? सदा के महावीर अर्थात् सदा लाइट हाउस और माइट हाउस। ज्ञान है लाईट और योग है माइट। तो महावीर अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा भी और योगी तू आत्मा भी। ज्ञान और योग - दोनों शक्तियाँ - लाइट और माइट सम्पन्न हों, इसको कहते हैं - 'महावीर'।

✚ कई बच्चे सोचते हैं कि 108 की माला में तो जो निमित्त बने हुए बच्चे हैं वही आयेंगे लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है यह तो 108 का गायन भक्ति की माला का है लेकिन अगर आप हर एक विजयी दाना बनेंगे तो बापदादा माला के अन्दर बहुत लड़ी लगा देगा। बाप के दिल की माला में आप हर एक विजयी बच्चों को स्थान है यह बाप की गैरन्टी है। सिर्फ स्वयं को मन्सा-वाचा-कर्मणा और चलन चेहरे में विजयी बनाओ।

✚ जो अभी भी अपने संकल्प के अधीन होता है तो क्या वह अधिकारी हुआ? वह संकल्पों के भी अधीन हुआ ना? तो इसलिये अब संकल्पों के भी अधीन नहीं, स्वभाव और संस्कार के भी अधीन नहीं होना है। जो अब से इन सबके अधिकारी बनेंगे, वह ही वहाँ राज्य-अधिकारी बनेंगे। अब हिसाब निकालो कि कितना अधीन रहते हैं और कितना अधिकारी रहते हैं। फिर उसकी रिजल्ट से स्वयं भी अपने भविष्य का साक्षात्कार कर सकते हो।

✚ फर्स्ट डिवीज़न वाले को हर गुण की अनुभूति हर शक्ति की अनुभूति होगी। अगर कोई भी कमी है अर्थात् 14 कला है सेकेण्ड डिवीज़न। ऐसी आत्मायें अभी अभी श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित रह जाती और भविष्य में भी सतोप्रधान प्राप्ति के बजाय सतो प्राप्ति करती हैं। तो सेकण्ड डिविजन हो गये ना। फर्स्ट डिवीजन वाले राज्य के, प्रकृति के सतोप्रधानता का सुख लेंगे और वह सतो का सुख लेगे, सतोप्रधान का नहीं।

✚ ड्रामानुसार हर रत्न की वैल्यू अलग-अलग समय और अलग-अलग स्टेज पर प्रत्यक्ष होती है। इसलिए चारों ओर यादगार मन्दिर बने हुए हैं। सिर्फ एक स्थान पर है क्या? फिर तो एक ही स्थान पर सबका मन्दिर बन जाए। लेकिन हर रत्न का हर स्थान भिन्न-भिन्न सेवा के महत्व का

है, इसलिए चारों ओर मन्दिर है। चारों ओर यादगार है ना। गाँव में भी यादगार होगा। ऐसा कोई नहीं होगा जहाँ आप पूर्वजों का यादगार न हो।

✚ महारथियों की अवस्था का यादगार चित्र भी है - हरेक गोपी के साथ गोपी वल्लभ का चित्र देखा है। हरेक गोपी के मुख से यही निकलता कि मेरा गोपी वल्लभ। तो ऐसे सदा साथ का चित्र यह है स्थिति का यादगार चित्र। एक दो से अलग नहीं - सदा साथ है। बाप पर पूरा हरेक का अधिकार है। ऐसे अधिकारियों का यह चित्र है जिन्होंने सदा के लिए बाप को अपना साथी बना लिया है - यह है महारथियों की स्थिति का चित्र।

✚ अपने को सदा सम्पूर्ण पवित्र आत्मा की स्टेज पर अनुभव करते हो? जब यहाँ पवित्रता के ताजधारी बनते हो तब वहाँ रतनजड़ित ताज भी मिलेगा। सदा अपने उपर लाइट का क्राउन अनुभव करो। जो राजकुमार और राजकुमारियाँ होती हैं वे ताजधारी होते हैं ना। आप तो साहबजादे और साहबजादियाँ हो तो बिगर ताज हो कैसे सकते! लण्डन निवासी तो सभी ताजधारी हैं ना? ऐसे ताजधारी जो सब आपके क्राउन को देख नमस्कार करें।

✚ यह थोड़े समय की सेवा देना वा चक्रवर्ती बन अपने दृष्टि द्वारा, वाणी द्वारा, वा सम्पर्क द्वारा, वा सूक्ष्म शुभभावना और शुभकामना के वृत्ति द्वारा अनेक प्रकार के आपकी राजधानी के तैयारी के निमित्त बने हुए सेवाधारी आत्माओं को सेवा के फल में सेवाधारी बनने के कार्य में सर्व श्रेष्ठ आत्मा की नज़र द्वारा सब निमित्त बनने वाली आत्माएं ज्ञानी व विज्ञानी प्रसिद्ध हो रही हैं। समझा रहस्य को?

✚ सदा अमृतवेले स्वयं को तीन बिन्दियों का तिलक देते हो? तिलक का अर्थ क्या है? स्मृति का तिलक। तो तिलक का बहुत महत्व होता है। तिलक राज्य की भी निशानी है। जब राज्य

देते हैं तो राज तिलक कहा जाता है और भक्ति में भी तिलक की निशानी जरूर रखेंगे और सुहाग और भाग्य की निशानी भी तिलक है। तो तिलक का महत्व है। क्योंकि तिलक स्मृति की निशानी है। तो ज्ञान मार्ग में भी स्मृति का ही महत्व है ना।

✚ जितना अभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे उतना ही राज्य के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, तो राज्य क्या चलायेंगे! राज्य को क्या सन्तुष्ट करेंगे! क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आपकी रॉयल फैमिली बनेंगे तो जो फैमिली को सन्तुष्ट नहीं कर सकते वो प्रजा को क्या करेंगे? संस्कार तो यहाँ भरना है ना! कि वहाँ योग करके भरेंगे! यहाँ ही भरना है।

✚ ऐसे ब्राह्मण जीवन में भी यथार्थ यह धारणा है कि - मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। मैं आत्मा शान्त, सुख, आनंद स्वरूप हूँ। इसी आधार पर कर्म बदल गया। अगर कर्म में श्रेष्ठ के बजाए साधारण कर्म हो जाता है, उसका भी आधार इसी धर्म अर्थात् धारणा की कमी हो जाती कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, श्रेष्ठ गुणों का स्वरूप हूँ। तो फाउन्डेशन क्या हुआ? इसी कारण धर्मात्मा शब्द कहा जाता है। आप सब धर्मात्मा हो ना।

✚ परिवार का प्रत्यक्ष सैम्पल, कर्मयोगी का प्रत्यक्ष सैम्पल, अथक सेवाधारी का प्रत्यक्ष सैम्पल, वरदान भूमि के वरदानी स्वरूप का प्रत्यक्ष सैम्पल कौन है? मधुबन निवासी हो ना! भागवत् का महात्तम सुनने का बड़ा महत्व होता है। सारे भागवत का इतना नहीं होता। तो चरित्र भूमि का महात्तम मधुबन वाले है ना! अपने महत्व को तो याद रखते हो ना। मधुबन निवासियों को याद स्वरूप बनने में मेहनत है वा सहज है?

- ✚ ३. सभी अमूल्य रत्न हो। कितने अमूल्य हो? इस दुनिया में ऐसा शब्द नहीं जो आपको कहे! बहुत श्रेष्ठ रत्न हो, इसलिए द्वापर से जब आपके मंदिर बनते हैं तो उसमें रत्न जड़ते हैं, जड़-चित्रों को भी रत्नों से सजाते हैं। तो जब जड़-चित्र इतने अमूल्य बने तो चैतन्य में कितने श्रेष्ठ हो, अमूल्य हो। और अपने राज्य में जब होंगे तो यह रत्न क्या होंगे! जैसे यहाँ पत्थर सजाते हो वैसे वही रत्न-जड़ित महल होंगे।
- ✚ आजकल के ब्राह्मणों द्वारा ही किसी भी प्रकार की शुद्ध वा श्रेष्ठ कार्य कराते हैं। क्योंकि उन्हों को महान समझते हैं, श्रेष्ठता ही पवित्रता है। कभी स्वप्न में भी अपवित्रता के संकल्प नहीं आए इसको कहा जाता है प्यूरिटी की परसनाल्टी वाले। इस परसनाल्टी के कारण ही विश्व की आत्माएं आज तक नमस्कार कर रही हैं। महान आत्माओं को न जानते भी नमस्कार करते हैं, साधारण को नहीं, तो ऐसे महान हो ना।
- ✚ अटेन्शन रूपी चौकीदार सुजाग हों तो सदा सेफ रहेंगे। तो सदा जागती ज्योत बनो इसीलिए यादगार मन्दिरों में भी अखण्ड ज्योति जगाते हैं। बुझने नहीं देते। अखण्ड ज्योति जगाने का फैशन पड़ा कहाँ से? संगम पर तुम सब चेतना में जागती ज्योति बने हो तभी यह यादगार चला आता है। अगर खण्डन हो जाती हैं तो बुरा मानते हैं। तो चैतन्य में आप सब क्या हैं? अखण्ड ज्योति, खण्डित चीज़ कभी भी पूज्य हो नहीं सकती।
- ✚ जर्मन वाले भविष्य के लिए ऐसा ग्रुप तैयार करो जो भविष्य में आकर आपकी सेवा के निमित्त बने। सतयुग में भी एटॉमिक एनर्जी का कार्य चलना है। तो जर्मनी में सम्पर्क में आई हुई आत्मायें ऐसे कार्य के निमित्त वहाँ बनेंगी। आप तो मालिक बनेंगे लेकिन सम्पर्क में ऐसे आयेंगे जो सेवा के निमित्त बनेंगे। तो जर्मनी को बहुत सेवा करनी है। हिम्मत बच्चे मददे बापा जो सम्पर्क में आये उनकी सेवा करते चलो।

- ✚ ज्ञान दान तो सब करते हैं लेकिन आपको अपनी 'विशेषताओं का दान करना है।' बाप की विशेषतायें सो आपकी विशेषतायें। तो उन विशेषताओं का दान करो। जो विशेषताओं के महादानी हैं वह सदा के लिए महान रहते हैं। चाहे पूज्य पन में चाहे पुजारी पन में, सारा कल्प महान रहते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा अन्त में भी कलियुगी दुनिया के हिसाब में भी महान रहा ना! तो आदि से अन्त तक ऐसा महादानी महान रहता है।
- ✚ पहले जन्म में कौन आयेंगे? सभी आयेंगे। पहले जन्म की विधि का पता है ना! विधि का पता है - जो पहला नम्बर चार ही सबजेक्ट में होंगे, एक सबजेक्ट भी कम नहीं। सब सबजेक्ट में पहला नम्बर। वह पहले जन्म में साथी बनेंगे। हैं हिम्मत? कोई भी देखो स्थूल पढ़ाई में भी अगर एक सबजेक्ट में भी फेल होते हैं, कम मार्क्स लेते हैं तो वह नम्बरवन तो नहीं आता ना। तो वन जन्म में आना अर्थात् वन नम्बर में आना।
- ✚ वतन से बहुत कुछ करना पड़ता है। बच्चों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है तो भक्तों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है। सभी कार्य काम पर ही होते हैं। बाप का परिचय मिला ,खज़ाना, लाटरी मिली। अभी बच्चों की सर्विस पूरी की। वतन से अभी सबकी करनी है। बच्चे सगे भी हैं तो लगे भी हैं। सर्विस तो सबकी करनी है। सवेरे भी आकर दृष्टि से परिचय दे दिया। दृष्टि द्वारा सर्चलाइट दे सभी को सुख देना बाप का कर्तव्य है।
- ✚ लोगों के पास कुमारी आती है तो दुख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्वकल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा, कुमारी जीवन का महत्व कितना है!

आज विशेष कुमारियों का दिन है ना। भारत में अष्टमी पर कुमारियों को खास बुलाते हैं। तो बापदादा भी अष्टमी मना रहे हैं। हर कन्या अष्ट शक्ति स्वरूप है।

✚ तो संगमयुग है ही बधाइयों से वृद्धि को पाने का युग। यह बधाइयाँ ही श्रेष्ठ पालना हैं। इसीलिए आपके इस बधाइयों की पालना का यादगार जब भी कोई देवी देवता का दिन मनाते हैं तो उसको बड़ा दिन कह देते हैं। दीपमाला होगी, शिवरात्रि होगी तो कहेंगे आज बड़ा दिन है। जो भी उत्सव होंगे उसको बड़ा दिन कहेंगे। क्योंकि आपकी बड़ी दिल है तो उन्होंने बड़ा दिन कह दिया है। तो एक दो को बधाइयाँ देना यह बड़ी दिल है।

✚ विदेश की सर्विस का मूल फाउण्डेशन ही यह है कि विदेश की आवाज द्वारा भारत के कुम्भकरण जागेंगे। विदेश-सर्विस की एम ऑब्जेक्ट यह है। विदेश का विदेश में दिखाया यह कोई बड़ी बात नहीं है। और यह भी जानते हैं कि अन्य मत मतान्तरों का स्वर्ग में आने का पार्ट नहीं है, लेकिन जो ट्रॉन्सफर हो गये हैं, व कन्वर्ट हो गये हैं उन आत्माओं को अपने आदि धर्म में लाने के लिये भेजा जाता है जो बहुत थोड़े होंगे।

✚ ऐसे जो सदा दिल तख्त नशीन वा राज्य नशीन ही रहते हैं, उन्हीं को सर्व आत्माओं से रिटर्न में (Return; बदले में) क्या मिलता है? स्नेह तो मिलता ही है, लेकिन दिल तख्त नशीन वाले जो भी कर्म करते, जो भी बोल बोलते, सभी के दिल पर ऐसे लगता है, जैसे बाप द्वारा जो भी निकलता वह सदा का यादगार बन जाता, सबके दिलों में समा जाता है। यादगार रह जाता है। फिर आधा कल्प के बाद यादगार 'गीता' के रूप में होता।

✚ शास्त्र में भी मधुबन की महिमा विशेष गाई हुई है - तो मधुबन निवासी हर बात में विशेष आत्माएँ हर समय कोई विशेषता दिखाने वाली हैं - जो भी गुप आवे वह यह अनुभव करे कि

मधुबन निवासियों में यह विशेषता थी। मधुबन स्वर्ग में हर आत्मा सदा तृप्त आत्मा सम्पन्न मूर्त्त थी। इसका आधार है कि सदा एक लक्ष्य हो कि हमें दाता का बच्चा बन सर्व आत्माओं को देना है न कि लेना है - यह करे तो मैं करूँ, नहीं।

✚ यह उपराम अवस्था कितनी प्यारी है! अभी-अभी कार्य में आये, अभी-अभी उपराम। ऐसा अनुभव हैं ना? आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में मन्दिरों में रखते हैं, लेकिन भक्ति में भी संगम की उपराम स्टेज की परम्परा चली आती है। मन्दिर लक्ष्मी नारायण का, लेकिन लक्ष्मी-नारायण अपना समझेंगे? उपराम हैं ना? जड़ चित्र जो पूज्य बनते हैं उन्हीं में भी अपनापन नहीं तो चैतन्य पूज्य आत्मायें उनमें भी सदा मेजमान वृत्ति।

✚ जो तख्त नशीन होंगे वह राज्य चलाने वाले। और जो सम्बन्ध में होंगे वह हैं राज्य कारोबार में आने वाले। तो राज्य कारोबार चलाने वाले भी अभी बन रहे हैं ना। राज्य कारोबार चलाने वालों की विशेषता क्या होगी? तख्त पर तो सब नहीं बैठेंगे, तख्त वालों के सम्बन्धी तो बनेंगे लेकिन तख्त पर बैठने वालों की तो लिमिट है ना। रायल फैमली में आनेवाले और राज्य सिंहासन पर बैठने वाले उन्हीं में भी अन्तर होगा।

✚ बच्चों के स्नेह के जादू से आकार भी साकार बन जाता है। ऐसे स्नेह के जादूगर बच्चे हैं। स्नेह, स्वरूप को बदल लेता है। यह स्नेह की रस्सी ऐसी मजबूत है जो कोई तोड़ नहीं सकता। 21 जन्मों के लिए ब्रह्मा बाप के साथ भिन्न-भिन्न सम्बन्ध में बँधे हुए ही रहेंगे। अलग नहीं हो सकते। ऐसी रस्सी बाँधी है ना? इसको ही कहा जाता है अविनाशी मीठा बन्धन। 21 जन्मों तक निश्चित है। तो ऐसा बन्धन बाँध लिया है ना?

✚ “18 जनवरी की यादग्यार तो है ही 18 अध्याय का समर्था स्वरूप। 18 जनवरी क्या याद दिलाती है? - ‘सम्पन्न फरिश्ता स्वरूप’। फालो फादर का पाठ हर सेकण्ड, हर संकल्प में स्मृति दिलाता है। ऐसे ही अनुभवी हो ना? 18 जनवरी के दिवस सब कहाँ होते हैं? साकार वतन में वा आकारी फरिश्तों के वतन में? तो 18 जनवरी सदा फरिश्ता स्वरूप, सदा फरिश्तों के दुनिया की स्मृति दिलाती है अर्थात् समर्थ स्वरूप बनाती है।

✚ अमेरिका ने चतुराई बहुत अच्छी की है जो अमेरिका के अनेक कोनों में अपना शक्ति सेना पाण्डवों का लश्कर रख दिया है। अभी चारों ओर से अपना घेराव तो कर लिया है, फिर जब समय आयेगा तो सेकण्ड में ‘व्हाइट हाउस’ के ऊपर ‘लाइट हाउस’ की विजय होगी। क्योंकि विनाश की ज्वाला भी अमेरिका से निमित्त बनेगी तो स्थापना के विशेष कार्य में भी अमेरिका की पाण्डव गवर्मेन्ट कहो, पाण्डव सेना कहो, वही निमित्त बनेगी।

✚ गायन है ना कि पाण्डव पहाड़ों पर जाकर गल गये। पहाड़ का अर्थ क्या है? पहाड़ ऊंचा होता है ना धरती से? तो पाण्डव धरती अर्थात् नीचे की स्टेज को छोड़कर जब ऊंची स्टेज पर जाते हैं तो अपने पास्ट के वा ईश्वरीय मर्यादाओं के विपरीत जो संस्कार, स्वभाव, संकल्प, कर्म वा शब्द जो भी हैं उसमें अपने को मरजीवा बनाया अर्थात् गल गये। तो आप भी धरती से ऊंचे चले गये थे ना। पूरे गल कर आये हो वा कुछ रखकर आये हो?

✚ एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं - “सत्यम् शिवम् सुन्दरम्”। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गाड इज ट्रथ भी मानते। तो बाप द्वारा सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है। यह भी वर्सा मिला है ना! सत्यता की अथार्टी प्राप्त हो गई है।

- ✚ महावीर अर्थात् सदा शस्त्रधारी। शक्तियों को वा पाण्डवों को सदा वाहन में दिखाते हैं और शस्त्र भी दिखाते हैं। शस्त्र अर्थात् अलंकार। तो वाहनधारी भी और अलंकारधारी भी। वाहन है श्रेष्ठ स्थिति और अलंकार हैं सर्वशक्तियाँ। ऐसे वाहनधारी और अलंकारधारी ही साक्षात्कारमूर्त्त बन सकते हैं। तो साक्षात बन सब को बाप का साक्षात्कार कराना यह है महावीर बच्चों का कर्तव्य। महावीर अर्थात् सदा उड़ने वाले।
- ✚ कमजोरी ही मर्ज अर्थात् बीमारी बन जाती है। इसलिए इस कर्ज को एक सेकण्ड में, 'यह पुराना, पराया है' - इस एक दृढ़ संकल्प से समाप्त करो। इसको जलाओ। आतिशबाजी जलाते हैं ना। आजकल आतिशबाजी में बाम्ब बनाते हैं ना। तो आप दृढ़ संकल्प की तीली से आत्मिक बाम्ब की आतिशबाजी जलाओ जिससे यह सब पुराना समाप्त हो जाए। वह लोग गँवायेंगे और आप कमायेंगे। वह आतिशबाजी में पैसा गँवाते हैं, आप आतिशबाजी पर कमायेंगे।
- ✚ सिर्फ सेवा का साधन समझकर यूज करना। सेवा के लिए साधन है क्योंकि विश्व-कल्याण करना है तो यह भी साधन सहयोग देते हैं। साधनों के वश नहीं होना। लेकिन साधन को सेवा में यूज करना। यह बीच का समय है जिसमें साधन मिले हैं। आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अन्त में भी नहीं रहेंगे। यह अभी के लिए हैं। सेवा बढ़ाने के लिए हैं। लेकिन यह साधन हैं, साधना करने वाले आप हो। साधन के पीछे साधना कम नहीं हो।
- ✚ कुमारियों को कहते हैं 100 ब्राह्मणों से उत्तम एक कन्या। और कुमार कितनों से श्रेष्ठ हैं। 7 शीतलाओं के साथ एक कुमार दिखाते हैं तो आप 700 ब्राह्मणों से उत्तम हुए। कुमार हार्डवर्क हैं, जो करना चाहें वह कर सकते हैं। हरेक कुमार को अपना ग्रुप तैयार करना चाहिए। आपस

में रीस नहीं लेकिन रेस करो। माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अंगद के मुआफिक ज़रा भी नहीं हिलो, नाखून से भी हिला न सके।

✚ रोज़ अपनी दिनचर्या को चेक करो कि आज सारे दिन में तीनों सेवाओं का बैलेन्स रहा। बैलेन्स रखने से सर्वगुणों की अनुभूति करते रहेंगे। चलते-फिरते स्वयं को और सर्व को सर्वगुणों का अनुभव करा सकेंगे। सब कहेंगे, ये गुणदान करती हैं क्योंकि दिव्यगुणों का श्रृंगार स्पष्ट दिखाई देगा। तभी तो अन्त में देवी जी, देवी जी कहकर नमस्कार करेंगे और यही अन्त के संस्कार द्वापर से देवी की पूजा के रूप में चलेंगे।

✚ सभी 16 श्रृंगारधारी सजी-सजाई सजनियाँ अर्थात् 16 कला सम्पन्न। तो सभी 16 कला सम्पन्न अर्थात् 16 श्रृंगारधारी बनें। अभी तक कोई 8 कला, कोई 10 कला, कोई 11 कला... लेकिन सभी 16 कला बन जाएं। अपने-अपने नम्बर अनुसार सभी 16 कला तो होंगे ना! जैसे और धर्मों की भी अपने हिसाब से गोल्डन स्टेज होती है। तो यहाँ भी सभी की अपने हिसाब से 16 कला होंगी ना! कहना, करना और सोचना सब समान हो तो सम्पन्न बन जायेंगे।


✚ इसलिए देह अभिमान के अंशमात्र सहित समर्पित हो - इसको कहा जाता है शिव बाप के ऊपर बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। ऐसी शिवरात्रि मनाई है ना? यह व्रत धारण करना है। वे लोग तो स्थूल चीजों का व्रत रखते हैं लेकिन आप क्या व्रत लेते हो? श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा यह व्रत लेते हो कि सदा कमज़ोर वृत्ति को मिटाए, शुभ और श्रेष्ठ वृत्ति धारण करेंगे। जब वृत्ति में श्रेष्ठता है तो सृष्टि श्रेष्ठ ही नज़र आयेगी।


✚ मानव जीवन में, तन में भी विशेष दिल ही महान गाई जाती है। दिल रूक गई तो जीवन समाप्त। तो आध्यात्मिक जीवन में भी दिल तख्त का बहुत महत्त्व है। जो दिल तखतनशीन हैं वही आत्मायें विश्व में विशेष आत्मायें गाई जाती हैं। वही आत्मायें भक्तों के लिए माला के मणकों के रूप में सिमरी जाती हैं। वही आत्मायें कोटों में कोई, कोई में भी कोई गाई जाती है। तो वह कौन हैं? आप हो? पाण्डव भी हैं? मातायें भी हैं।


✚ मधु अर्थात् मधुरता और बन में क्या विशेषता होती है? बन में वैराग्य वृत्ति वाले जाते हैं। तो बेहद की वैराग्य बुद्धि भी चाहिए। फिर इससे सारी बातें आ जायेगी। और आप सभी को कॉपी करने के लिए यहाँ आयेँगे। सभी साचेंगे यह कैसे ऐसे बने हैं। सभी के मुख से निकलेगा कि मधुबन तो मधुबन ही है। तो यह दो विशेषतायें धारण करनी हैं - मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं स्नेह और शक्ति।


✚ मुख्य संस्कार भरने का समय अभी है। आत्मा में हर जन्म के संस्कारों का रिकार्ड इस समय भर रहे हो। तो रिकार्ड भरने के समय सेकेण्ड-सेकेण्ड का अटेंशन रखा जाता है। किसी भी प्रकार के टेंशन (तनाव) का अटेंशन; टेंशन में अटेंशन रहे। अगर किसी भी प्रकार का टेंशन होता है, तो रिकार्ड ठीक नहीं भर सकेगा। सदा काल के लिए श्रेष्ठ नाम के बजाए, यही गायन होता रहेगा कि जितना अच्छा भरना चाहिए, उतना नहीं भरा है।

✚ कल्प पहले भी पाण्डवों की स्मृति की विशेषता क्या गाई हुई है? पाण्डवों को नशा था बाप हमारे साथ है। बाप के साथ का नशा होने के कारण चैलेन्ज (चेतावनी) करने वाले बने। चैलेन्ज की ना कि हम विजयी बनेँगे। चैलेन्ज का आधार था बाप का साथ। तो जब पाण्डवों के साथ की यह विशेषता गाई हुई हो तो प्रेक्टीकल में कितना नशा होगा? माया के बड़े-बड़े महावीर की पाण्डवों के आगे क्या रिजल्ट हुई? विनाश को प्राप्त हुए।

-  विशेषता न देख ईर्ष्या में आये तो कितना लम्बा कीर्तन और कहानी हो गई! ऐसे विशेषता को न देखने से लक्ष्मी-नारायण की कथा के बजाए रामकथा बन जाती है। और इसी कथा कीर्तन में स्वयं का, सेवा का समय व्यर्थ गंवाते हो। और भी मजे की बात करते हो, सिर्फ अकेला कीर्तन कथा नहीं करते लेकिन कीर्तन मण्डली भी तैयार करते हैं - इसीलिए सुनाया कि इस व्यर्थ कीर्तन कथा से समय बचने के कारण विशेष समय भी मिल जाता है।

-  भारत बाप की अवतरण भूमि है और भारत प्रत्यक्षता का आवाज बुलन्द करने के निमित्त भूमि है। आदि और अन्त भारत में ही पार्ट हैं। विदेश का सहयोग भारत में प्रत्यक्षता करायेगा और भारत की प्रत्यक्षता का आवाज विदेश तक पहुँचेगा। इसलिए, भारत के बच्चों की विशेषता सदा श्रेष्ठ है। भारत वाले स्थापना के आधार बने। स्थापना के आधारमूर्त भारत के बच्चे हैं, इसलिए भारतवासी बच्चों के भाग्य का सभी गायन करते हैं।

-  अभी तक हिन्दी नहीं समझते हो! क्योंकि सतयुग में जाना है, वहाँ आपकी यह भाषा नहीं होगी। आप सबकी आदि भाषा हिन्दी है ना। तो बोलना नहीं भी आवे तो समझना तो आवे ना। तो कौन हिन्दी समझता है हाथ उठाओ। समझने के लिये पुरूषार्थ करो। क्योंकि बाप जिस भाषा में बोलते हैं वह भाषा तो समझनी चाहिये ना। वैसे भी देखो अगर इंगलिश बोलने वाले माँ-बाप होंगे तो बच्चे भी क्या सीखेंगे? तो बाप की भाषा तो समझनी चाहिये।

-  होली हंस अर्थात् सदा स्वच्छ। हंस सदा स्वच्छ दिखाते हैं। स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तो अभी स्वच्छ बन गये ना। अगर व्यर्थ भी है तो सम्पूर्ण स्वच्छ नहीं कहेंगे। तो व्यर्थ को समाप्त करना अर्थात् होलीहंस बनना। हर समय बुद्धि में ज्ञान रत्न चलते रहें, मनन चलता रहे। ज्ञान चलेगा

तो व्यर्थ नहीं चलेगा। इसको कहा जाता है रत्न चुगना। व्यर्थ है पत्थर। कभी भी अगर व्यर्थ आता है तो दुःख की लहर आती है ना।

✚ सभी बाप की दिल में रहने वाले हो, उन्हों के दिल में क्या है? बाप के नाम का झण्डा। यह तो यादगार झण्डा है लेकिन बाप के नाम का झण्डा जल्दी से जल्दी विश्व में लहरायेगा। वह भी दिन दूर नहीं है। अवश्य चाहे अंजान बच्चे हैं, चाहे जानने वाले बच्चे हैं, सभी को बाप का परिचय मिलना ही है। और सबके मुख से आ गया, बाप आ गया, यह आवाज़ निकलना ही है। उसके लिए सभी तैयारी कर रहे हैं। और निश्चित है, होना ही है।

✚ बापदादा ने देखा युगल तैयार तो अच्छे हो गये हैं। लेकिन बाबा की जो आशा है उसको पूर्ण नहीं किया है। कौन सी आशा है? कोई महामण्डलेश्वर को चरणों में झुकाओ क्योंकि आप लोग सहज उनको फेल कर सकते हो। आप कहते हो हो नहीं सकता और हमने सहज किया है। अपने अनुभव की अथॉरिटी से उन्हों को झुका सकते हो तभी गीता का भगवान भी सिद्ध होगा। युगलों में यह ताकत है वह जब ढीले हो जायेंगे ना फिर सब बातें मानने लगेंगे।

✚ सुनाया कि सूक्ष्मवतन में मेहनत नहीं करनी पड़ती है चेकिंग करने में। संकल्प का स्विच ऑन (switch on) किया और हरेक का सब प्रकार का टोटल इमर्ज हो जाता है। साकार दुनिया के माफिक मेहनत नहीं करनी पड़ती है। जो साइन्स के साधन अभी निकाल रहे हैं उसका रिफाइन रूप वहाँ पहले से ही है। यह टी.वी. तो अभी निकली है लेकिन आप बच्चों को सूक्ष्मवतन में स्थूल वतन का दृश्य स्थापना के आदि में ही दिखाकर अनुभव कराया है।

✚ आप सबका कर्म क्या है? शान्ति देना। अभी भी आप सबके भक्त लोग आरती करते हैं तो क्या कहते हैं? शान्ति देवा। तो यह किसकी आरती करते हैं? आपकी या सिर्फ बाप की?

शान्ति देवा बच्चे सदा शान्ति के महादानी वरदानी आत्मायें हैं। शान्ति की किरणें विश्व में मास्टर ज्ञान सूर्य बन फैलाने वाले हैं, यही नशा है ना कि बाप के साथसाथ हम भी मास्टर ज्ञान सूर्य हैं वा शान्ति की किरणें फैलाने वाले मास्टर सूर्य हैं।

✚ पवित्रता की पर्सनैलिटी वाले, रॉयल्टी वाले मन-बुद्धि से भी इस बुराई को टच नहीं करते। क्योंकि सफल तपस्वी अर्थात् सम्पूर्ण वैष्णव। वैष्णव कभी बुरी चीज को टच नहीं करते हैं। तो उन्हों का है स्थूल, आप ब्राह्मण वैष्णव आत्माओं का है सूक्ष्म। बुराई को टच न करना यही तपस्या है। धारण करना अर्थात् ग्रहण करना। ये तो बहुत मोटी बात है। लेकिन संकल्प में भी टच नहीं करना। इसको ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।

✚ सदा पुण्य भूमि और श्रेष्ठ आत्माओं के संग का विशेष पार्ट यह कम भाग्य नहीं है। जड़ चित्रों के मन्दिर के पुजारी भी अपने को कितना महान समझते हैं - हैं पुजारी - लेकिन नशा कितना रहता। क्योंकि समझते हैं मूर्ति के समीप सम्बन्ध वाले हैं। तो जड़ चित्रों के पुजारी भी इतना नशा रखते यहाँ तो पुजारी की बात नहीं। यहाँ तो सम्पर्क में रहने वाले संग में रहने वाले संगी साथियों को कितना नशा और खुशी होनी चाहिए।

✚ इस मरजीवे जीवन का सदा निर्विघ्न वा सदा तीव्र पुरुषार्थी, सदा प्राप्ति द्वारा अनुभवी मूर्त्त वा पुरुषार्थी जीवन वा चढ़ती कला वा उतरती कला, इसी रफ्तार में चलने वाली जीवन - इन तीनों प्रकार की जीवन का आधार रूप, रेखा और वेला पर है। जो हर कल्प की अति समीप आत्मायें वा पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मायें हैं उनकी रूप, रेखा और वेला क्या होती है, वह जानते हो? ऐसी आत्मायें सेकेण्ड में पहुँची और बाप की बनी।

- ✚ लेकिन होता सेकण्ड का खेल है। सेकण्ड में हार हो जाती और सेकण्ड में जीत हो जाती। सेकण्ड की हार सदा की हार है जो चन्द्रवंशी कमानधारी बना देती है और सेकण्ड की जीत सदा की खुशी प्राप्त कराती जिसकी निशानी श्रीकृष्ण को मुरली बजाते हुए दिखाया है। तो कहाँ चन्द्रवंशी कमानधारी और कहाँ मुरली बजाने वाले! 'तो सेकण्ड की बात नहीं है लेकिन सेकण्ड का आधार सदा पर है'। तो इस राजको समझते हुए सदा आगे चलते चलो।
- ✚ सूखा मेवा खाने वाले नहीं, ताजा मेवा खाने वाले। सेवाधारी सो भाग्य अधिकारी। कितना बड़ा भाग्य है। यादगार चित्रों के पास जाकर भक्त लोग सेवा करते हैं। उस सेवा को महापुण्य समझते हैं। और आप कहाँ सेवा करते हो! चैतन्य महातीर्थ पर। वे सिर्फ तीर्थों पर जाकर चक्कर लगाकर आते तो भी महान आत्मा गाये जाते। आप तो महान तीर्थ पर सेवा कर महान भाग्यशाली बन गये। सेवा में तत्पर रहने वाले के पास माया आ नहीं सकती।
- ✚ स्वदर्शन चक्रधारी के आगे माया हिम्मत नहीं रख सकती। तो कभी-कभी माया आती है या चली गई? तो माया हार खाकर जाती है या हार खिला कर जाती है? माया से हार होती है? स्वदर्शन चक्र का गायन कल्प पहले का भी गाया हुआ है। तो स्वदर्शन चक्र के आगे कोई ठहर नहीं सका। तो कल्प पहले स्वदर्शन चक्रधारी कौन बने थे? आप थे या दूसरे कोई थे? कल्प पहले भी थे, और अब भी हैं और सदा आप ही होंगे। ये आपका पक्का अनुभव है ना?
- ✚ मधुबन में आना अच्छा लगा है, या वहाँ बैठकर मुरली सुन लो! क्या अच्छा लगता है? वहाँ भी तो मुरली सुनेंगे ना। यहाँ भी तो पीछे-पीछे टी.वी. में देखते हैं। तो जो समझते हैं मधुबन में आना ही अच्छा है, वह हाथ उठाओ। (सभी ने उठाया) अच्छा। फिर भी देखो भक्ति में भी गायन क्या है? मधुबन में मुरली बाजे। यह नहीं है लण्डन में मुरली बाजे। कहाँ भी हो, मधुबन की महिमा का महत्व जानना अर्थात् स्वयं को महान बनाना।

✚ आज बाप-दादा बच्चों के इस रजिस्टर को देख रहे थे कि कितने बच्चे सदा ब्रह्मचारी हैं और कितने ब्रह्मचारी हैं। बाल ब्रह्मचारी का महत्त्व होता है, बाल ब्रह्मचारी वर्तमान समय भी पूज्य है अर्थात् श्रेष्ठ हैं। बाप-दादा भी ऐसे बच्चों को पूज्य बच्चों के रूप में देखते हैं। विश्व के आगे भी अभी अन्त में पूज्य के रूप में प्रत्यक्ष होंगे। बाप के आगे पूज्य प्रसिद्ध होने वाले सदा समीप सम्बन्ध में रहते हैं।

✚ स्नेह में सब सेन्ट-परसेन्ट हो या परसेन्टेज है? अपने को टर्न करने के लिये तैयार हो? स्नेह के पीछे यह त्याग है या भाग्य है? भक्त तो सिर उतार कर रखने के लिये तैयार हैं, आप रावण का सिर उतार कर रखने के लिये तैयार हो? शरीर का सिर नहीं उतारो लेकिन रावण का सिर तो उतारो! पांचों ही सिर उतारेंगे या एक-दो रखेंगे? थोड़ा कमज़ोरी का सिर रखेंगे? चलो पांच नहीं, छठा दिखाते हैं ना बेसमझी का, वो रखेंगे? अच्छा।

✚ भविष्य में जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी है लेकिन अब संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अलौकिक आनंद और ही अलौकिक है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - कर्म करते कर्म के बंधन से न्यारे। जीवन में होते कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे। इतने बड़े परिवार की जिम्मेवारी, जीवन की जिम्मेवारी, योगी बनाने की जिम्मेवारी, फरिश्ता सो देवता बनाने की जिम्मेवारी होते हुए भी बेफिकर बादशाह। इसी को ही जीवनमुक्त स्थिति कहा जाता है।

✚ सतयुग में यह गीत नहीं गाएँगे - 'नया दिन लागे, नयी रात लागे'। यह अब की बात है। बापदादा ने शुरू से किस गीत से बच्चों को जगाया है! वह गीत याद है? - जाग सजनियाँ जाग.... क्यों जागो? नवयुग आया! बचपन का यही गीत है ना! अभी तो नये-नये गीत बना दिये हैं। आदि

गीत बाप ने यही सुनाया ना। तो नवयुग कब हुआ? अब! पुराने के आगे नया लगता है ना। पुरानी दुनिया, पुरानी जीवन बदल गई। नयी जीवन में आ गये ना। बेहोश थे।

✚ सदा सुख देना है, शान्ति देनी है। शान्तिदाता के बच्चे शान्ति देवा हो। तो शान्ति देवा कौन है? अकेला बाप नहीं, आप सब भी हो। तो शान्ति देने वाले शान्ति देवा - शान्ति देने का कार्य कर रहे हो ना! लोग पूछते हैं - आप लोग क्या सेवा करते हो? तो आप सभी को यही कहो कि इस समय जिस विशेष बात की आवश्यकता है वह कार्य हम कर रहे हैं। अच्छा, कपड़ा भी देंगे, अनाज़ भी दे देंगे, लेकिन सबसे आवश्यक चीज़ हैं - 'शान्ति'।

✚ नज़र से निहाल होने वालों की लम्बी क्यू हैं। इसलिए सदा सम्पूर्णता की आँख खुली रहे। बाप दादा जहान के नूरों का वन्दरफुल दृश्य देखते हैं। जहान के नूर भी अपने नयनों को एकाग्र नहीं रख सकते। कोई निहाल करते-करते हल्के से झुटके भी खा लेते हैं। अब झुटके वाले नज़र से निहाल कैसे करेंगे। संकल्पों का घुटका ही झुटका है। आपके भक्त आपको देख रहे हैं। और दर्शनीय मूर्त झुटके खा रहे हैं। तो भक्तों का क्या हाल होगा।

✚ वो सेवा निमित्त मात्र ईश्वरीय सेवा के लिए करते हो। नहीं तो पाण्डव उनकी सेवा करने के लिए समय क्यों दें। इसी सेवा से लाभ लेने के लिए गुप्त सेवाधारी बनकर सेवा में रहते हो। जैसे गायन है कि पाण्डव गुप्त रूप में सेवा करने के लिए गये। तो पानी भरने या पैर दबाने नहीं गये, लेकिन गुप्त वेष में राज्य पलटाने के लिए सेवाधारी बनकर गये। वैसे ही गुप्त वेश में गये हो? विश्व के राज्य को परिवर्तन करने के लिए।

✚ कर्मातीत स्टेज का तख्त कितना श्रेष्ठ तख्त है। इसी स्टेज की अधिकारी आत्मायें अर्थात् तख्तनशीन आत्मायें विश्व के आगे ईष्ट देव के रूप में प्रत्यक्ष होंगी। स्वराज्य अधिकारी सभा

अर्थात् इष्ट देव सभा। सभी अपने को ऐसे इष्ट देव आत्मा समझते हो? ऐसे परम पवित्र, सर्व प्रति रहमदिल, सर्व प्रति मास्टर वरदाता, सर्व प्रति मास्टर रूहानी स्नेह सागर, सर्व प्रति शुभ भावनाओं के सागर, ऐसे पूज्य इष्ट देव आत्मा हो।

✚ देखो शुरू-शुरू में स्थापना में पहले यह सभी विशेष आत्मायें तीन फुट की जगह पर सोई हैं। चार फुट भी नहीं, तीन फुट, पट में। विशेष महारथी पट में सोते थे तो जो आदि में हुआ वह आप अन्त में करेंगे ना! कारण तो नहीं बतायेंगे कि कमर में दर्द हो गया? जब कोई भी दर्द होता है ना तो डाक्टर्स भी कहते हैं - सीधा-सीधा पट जैसा सोओ। बेड पर नहीं सोओ, संदल पर सीधा सोओ तो हेल्थ भी ठीक हो जायेगी। यह तो सब एवररेडी हैं।

✚ ऐसे साक्षात्कार मूर्त बने हो जो कोई आत्मा में किसी भी प्रकार की कामनाएं हों, उनकी पूर्ति कर सको। अल्पकाल की कामनाएं नहीं, सदाकाल की कामनाएं पूरी कर सकती हो? कामधेनु माताओं को कहा जाता है ना। कामधेनु का अर्थ ही है – सर्व की मनोकामनाएं पूरी करनेवाली। जिसकी अपनी सर्व कामनाएं पूरी होंगी, वही औरों की कामनाएं पूरी कर सकेंगी। सदैव यही लक्ष्य रखो कि हमको सर्व की कामनाएं पूर्ण करनेवाली मूर्ति बनना है।

✚ यहाँ के सुहाग, भाग्य के सदा तिलकधारी सो भविष्य के सदा राज्य-तिलकधारी। हर जन्म में राज्य तिलक का उत्सव होगा। राजा के साथ रायल फैमली का भी तिलक-दिवस मनाया जाता है। वहाँ के हर जन्म के राज तिलक का उत्सव और यहाँ ब्राह्मण जीवन में सदा बाप से मिलन मेले का, स्वयं की सदा चढ़ती कला का, हर प्रकार की सेवा का अर्थात् तन-मन-धन-जन सबकी सेवा का सदा उत्साह और उमंग होगा। तो अब का उत्साह और भविष्य का उत्सव होगा।

- ✚ साधारण जीवन से सहजयोगी, राजयोगी बन गये। ऐसी श्रेष्ठ योगी आत्मायें सदा ही अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती हैं। हठयोगी योग द्वारा शरीर को ऊँचा उठाते हैं और उड़ने का अभ्यास करते हैं। वास्तव में आप राजयोगी ऊँची स्थिति का अनुभव करते हो। इसको ही कापी करके वो शरीर को ऊँचा उठाते हैं। लेकिन आप कहाँ भी रहते ऊँची स्थिति में रहते हो, इसलिए कहते हैं - योगी ऊँचा रहते हैं। तो मन की स्थिति का स्थान ऊँचा है।
- ✚ बापदादा पाण्डवों के मस्तक में सदा विक्ट्री देखते हैं और विक्ट्री के बीच में आत्मा चमक रही है। जैसे पाण्डवों का गायन है, पाण्डवों को ड्रामानुसार यादगार में भी विजय का वरदान मिला हुआ है। गायन ही है विजयी पाण्डव। तो पाण्डवों को कभी भी किसी भी बात में हार नहीं खाना है। बापदादा के गले का हार बनना, हार खाना नहीं। जब भी कोई ऐसी बात आवे ना, तो कहो हम बापदादा के गले का हार हैं, हार खाने वाले नहीं हैं।
- ✚ कोई अच्छी बात होती है तो न चाहते भी सभी को कॉपी करने की इच्छा होती है। जैसे बाप को कॉपी करते हैं वैसे आप लोगों के हर कर्म को कॉपी करें। जितना श्रेष्ठ कर्म होगा उतना ही श्रेष्ठ आत्माओं में सिमरण किये जायेंगे। नाम सिमरण करते हैं ना। जितना कोई श्रेष्ठ आत्मा है, तो न चाहते भी उनके गुणों और कर्म को मिसाल बनाने लिए नाम सिमरण करते हैं। ऐसे ही आप सभी भी श्रेष्ठ आत्माओं में सिमरण करने योग्य बन जायेंगे।
- ✚ कुमारियाँ चाहे छोटी हैं, चाहे बड़ी हैं लेकिन सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हैं - ऐसे समझती हो? सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या क्यों गाया जाता है? हर एक कन्या कम से कम सौ ब्राह्मण तो जरूर तैयार करेगी। इसलिए सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या कहा जाता है। सौ तो कुछ भी नहीं है, आप तो विश्व की सेवा करेंगी। सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्यायें हो। सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो।

✚ और ही उमंग-उत्साह में आकरके दृढ़ संकल्प करो कि मुझे अपने जमा(याद से, सेवा से, शुभ भावना, शुभ कामना से) का खाता बढ़ाना ही है। समझा? दिलशिकस्त तो नहीं होंगे? फिर बाप को मेहनत करनी पड़े! फिर बड़े-बड़े पत्र लिखना शुरू कर देंगे - बाबा क्या हो गया... ऐसा हो गया... ! बाबा बचाओ, बचाओ - ऐसे नहीं कहना। देखो आपके जड़ चित्रों से जाकर मांगनी करते हैं कि हमको बचाओ। तो आप बचाने वाले हो, बचाओ-बचाओ कहने वाले नहीं।

✚ शक्तियों की भुजाएं कितनी दिखाते हैं? भुजाओं का अर्थ है इतनी सर्विस में मददगार बनना। पाण्डव समझते हैं कि यह तो शक्तियों की ही भुजाएं हैं। पाण्डवों को फिर क्या दिखाया है, मालूम है? लम्बा दिखाया है। तो यह भी पाण्डवों की इतना ज्यादा मददगार बनने की निशानी है। लम्बा शरीर नहीं लेकिन बुद्धि लम्बी है। इन्हों का आगे दौड़ना गोया शक्तियों का आगे दौड़ना है। शक्तियों को आगे रखना यही इन्हों की दौड़ की निशानी है।

✚ खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती है। इसलिए जरा भी मन्सा, वाचा, कर्मणा में खण्डित नहीं हो अर्थात् अपवित्रता न हो, तब कहा जायेगा पूज्य आत्मा। तो ऐसे पूज्य बने हो? जड़ मूर्ति भी खण्डित हो जाती है तो पूजा नहीं होती। उसको पत्थर मानेंगे, मूर्ति नहीं मानेंगे। म्युज़ियम में रखेंगे, मन्दिर में नहीं रखेंगे। तो ऐसे पवित्रता का फाउन्डेशन चेक करो-कोई भी संकल्प आये, तो स्मृति में लाओ कि मैं परम पूज्य आत्मा हूँ।

✚ बच्चों को तो कहते हैं डेडकोन्सेस नहीं बनो लेकिन ब्रह्मा बाप एक बात में डेट कान्सेस हैं, कौन सी डेट? कि कब मेरा एक-एक बच्चा जीवन मुक्त बन जाए! ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त

राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। उसके पहले जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आप जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा।

✚ पास विद ऑनर अर्थात् मन में भी संकल्पों से सजा न खाएं। धर्मराज की सजाओं की तो बात पीछे हैं। परन्तु अपने संकल्पों की भी उलझन अथवा सजाओं से परे। इसको कहते हैं पास विद ऑनर। अपनी गलती से स्वयं को सजा देते हैं। उलझते हैं, पुकारते हैं, मूँझते हैं इससे भी परे। पास विद ऑनर इसको कहते हैं। ऐसी प्रतिज्ञा करने को तैयार हो? संकल्पों में भी न उलझें। वाणी, कर्म, सम्बन्ध, संपर्क की बात छोड़ दो। वह तो मोटी बात है।

✚ अभी तो बहुत आयेंगे, यह तो कुछ भी नहीं है। प्रबन्ध बढ़ाते जायेंगे, बढ़ने वाले बढ़ते जायेंगे। जब मधुवन में भीड़ लगे तब भक्ति में यादगार बनें। जितना बनाते जायेंगे उतना बढ़ते ही जायेंगे यह भी वरदान मिला हुआ है। यही यादगार में कहानियाँ बनाकर दिखाते हैं कि सागर तक भी पहुँच गये। फिर भी छोटा हो गया। अभी आबूरोड तक तो पहुँचो तब गायन हो। आबू रोड से माउण्ट तब बैठें तब प्रत्यक्षता होगी। सोचेंगे यह क्या हो रहा है।

✚ बापदादा हाइएस्ट होस्ट भी है और गोल्डन गेस्ट भी है। होस्ट बनकर भी मिलते हैं, गेस्ट बन कर आते हैं। लेकिन गोल्डन गेस्ट है। चमकीला है ना। गेस्ट तो बहुत देखे - लेकिन 'गोल्डन गेस्ट' नहीं देखा। जैसे चीफ गेस्ट को बुलाते हो तो वह थैंक्स देते हैं। तो ब्रह्मा बाप ने भी होस्ट बन इशारे दिये और गेस्ट बन सबको मुबारक दे रहे हैं। जिन्होंने पूरी सीजन में सेवा की उन सबको 'गोल्डन गेस्ट' के रूप में बधाई दे रहे हैं।

✚ माताओं को क्या नशा रहता है? बहुत नशा रहता है! मातायें नशे में कहती हैं कि बाबा आया ही है हमारे लिए। ऐसे है ना! क्योंकि आधाकल्प में माताओं को मर्तबा नहीं मिला है, अभी

संगम पर राजनीति में भी माताओं को अधिकार मिला है। हर डिपार्टमेंट में आप शक्तियों को बाप ने आगे रखा ना, तो संसार में भी हर वर्ग में अब माताओं को अधिकार मिलता है। कोई भी ऐसा वर्ग नहीं है जिसमें मातायें नहीं हो। यह संगमयुग का मर्तबा है।

✚ जैसे स्थूल में अगर किसको हाथ पाँव चलाने नहीं आते तो दूसरे साथी क्या करते? हाथ में हाथ में मिला कर साथ दे करके उनको सिखा देते हैं। तो आप भी क्या करती हो? आगे बढ़ सहयोगी बन सह- योग का हाथ दे, संस्कार मिलाने की डान्स सिखाती हो ना? इसमें तो नम्बरवन हो ना? इसी विशेषता के आधार पर, जो सबसे ज्यादा संस्कार मिलाने की डान्स करता, बाप का सहयोगी बनता वही फर्स्ट जन्म में श्रीकृष्ण के साथ हाथ मिलाकर डान्स करेगा।

✚ इस चेकिंग के आधार पर वहाँ भी प्रालब्ध में परसेन्टेज के आधार पर नम्बरवार पद की प्राप्ति होती है। सब में फुल परसेन्ट तो फुल समय और फुल प्रालब्ध। नहीं तो स्टेटस् में और समय में अन्तर हो जाता है। फुल समय वाले और फुल प्रालब्ध वाले वन-वन-वन के संवत से पहला-पहला सम्पूर्ण फुल सतोप्रधान प्रकृति, फुल राज्य-भाग्य, संवत भी वन, प्रालब्ध भी वन, प्रकृति का सुख भी वन। नहीं तो फिर सेकेण्ड, थर्ड यह शुरू हो जायेगा।

✚ इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप का प्यारा और दुनिया से न्यारा। यही सबसे अच्छी स्थिति है। इसी को ही 'कमल पुष्प समान' जीवन कहा जाता है। इसलिए शक्तियों को कमल आसन भी देते हैं! कमल पुष्प पर विराजमान दिखाते हैं। क्योंकि कमल समान न्यारे और प्यारे हैं। तो सभी सेवाधारी कमल आसन पर विराजमान हो ना? आसन अर्थात् स्थिति। स्थिति को ही आसन का रूप दिया है। बाकी कमल पर कोई बैठा हुआ तो नहीं है ना? तो सदा कमल आसन पर बैठो।

✚ सदाकाल के लिए खुशी, सदा के लिए नशा, अनुभूति ऐसे सर्व प्रकार का प्रसाद पाया? तो प्रसाद बांटकर खाया जाता है। प्रसाद आंखों के ऊपर, मस्तक के ऊपर रखकर खाते हैं। तो यह प्रसाद आंखों में समा जाए। मस्तक में स्मृति स्वरूप हो जाए अर्थात् समा जाए। ऐसा प्रसाद इस महायज्ञ में मिला? महाप्रसाद लेने वाले कितने महान भाग्यवान हुए ऐसे चान्स कितनों को मिलता है? बहुत थोड़ों को उन थोड़ों में से आप हो। तो महान भाग्यवान हो गये ना।

✚ दिव्य गुणों की धारणा अर्थात् आह्वान करने की विधि है ही - 'स्वच्छता'। जैसे भक्ति में भी जब लक्ष्मी का वा किसी देवी का आह्वान करते हैं तो आह्वान की विधि स्वच्छता ही अपनाते हैं। तो यह स्वच्छता का श्रेष्ठ स्वभाव, दैवी स्वभाव को स्वतः ही आह्वान करता है। तो यह विशेषता मैजारिटी डबल विदेशी बच्चों में है। इसलिए तीव्रगति से आगे बढ़ने का गोल्डन चांस ड्रामा अनुसार मिला हुआ है। इसको ही कहते हैं - 'लास्ट सो फास्ट'।

✚ द्वापर-कलियुग में पाण्डवों को चांस मिलता है और संगम पर शक्तियों को चांस मिलता है। अभी देखो बाप ने माताओं को चांस दिया तो दुनिया में भी आजकल माताओं को चांस देने का बुद्धि में आया है। धर्मनेताओं में देखो पहले कोई माता नहीं होती थी लेकिन अभी महामण्डलेश्वरियां भी हैं। अभी मातायें भी गुरू बन जाती हैं। तो जब बाप ने चांस दिया तो लोग भी चांस देने लगे। तो माताओं को डबल खुशी है ना कि हमको बाप ने ऊंचा बना दिया!

✚ अगर सदैव हर कर्म में बाप को अपना साथी समझकर चलो तो यह सहज याद नहीं है? जब कोई सदैव ही साथ रहता है, उस साथ के कारण याद स्वतः ही रहती है ना। तो ऐसे साथी रहने से वा बुद्धि को निरन्तर सत् का संग बनाने से निरन्तर सत्संग होना चाहिए। आप हो ही सत्संगी।

हर सेकेण्ड, हर कदम में सत् के संग तो हो ना। अगर निरन्तर अपने को सतसंगी बनाओ तो याद सहज रहेगी और पावरफुल संग होने के कारण हर कर्तव्य में आपका डबल फोर्स रहेगा।

✚ प्रसन्नचित आत्मा; कोई कैसी भी आत्मा परेशान हो, अशान्त हो उसको अपने प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न कर देगी। जो बाप का गायन है “नज़र से निहाल करने वाले”, वह सिर्फ बाप का नहीं है आपका भी यही गायन है। और अभी समय प्रमाण जितना समय समीप आ रहा है तो नज़र से निहाल करने की सेवा करने का समय आयेगा। सात दिन का कोर्स नहीं होगा, एक नज़र से प्रसन्नचित हो जायेंगे। दिल की आश आप द्वारा पूर्ण हो जायेगी। तो सभी क्या समझते हो?

✚ जैसे कल्प पहले की यादगार में भी रावण राज्य की विशेषता सर्व तत्त्वों को अपने वशीभूत करना गाया हुआ है - कल्प पहले माफक इसी कार्य में विदेशी आत्माएं लगी हुई हैं। साथ-साथ विज्ञानी आत्माएं आप योगी आत्माओं के लिए, आपके श्रेष्ठ योग की जो प्रालब्ध स्वर्ग के राज्य भाग की प्राप्ति होनी है; उस आने वाले राज्य में सर्व सुखों के साधन आप राजयोगी आत्मों को प्राप्त हों, ऐसे साधन न जानते हुए भी बनाने में खूब व्यस्त हैं।

✚ शक्ति की विशेषता है मायाजीत। शक्ति के आगे किसी भी प्रकार की माया आ नहीं सकती, क्योंकि शक्ति माया के ऊपर सवारी करती है। शक्तियों के हाथ में सदा त्रिशूल दिखाते हैं। यह किसकी निशानी है? त्रिशूल स्टेज की निशानी है। संगमयुग के जो टाइटिल हैं - मास्टर त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ, यह सब स्थिति की निशानी इस त्रिशूल में आ जाती हैं। तो यह स्टेज स्मृति में रहती हैं? 'निरन्तर' को अन्डरलाइन करो।

✚ सबसे बड़ी खुशी की बात है-बाप ने अपना बना लिया! दुनिया वाले तड़पते हैं कि भगवान की एक सेकेण्ड भी नज़र पड़ जाये और आप सदा नयनों में समाये हुए हो! वो तो एक घड़ी की नज़र कहते हैं और आप रहते ही बाप की नज़रों में हो। इसीलिए टाइटल है-नूरे रत्न आंखों के नूर। तो वे तड़पते हैं और आप समा गये। इसको कहा जाता है खुशनसीब। सोचा नहीं था लेकिन बन गये। अपना नसीब देखकर के नशे में रहते हो ना। वाह-वाह! अभी 'हाय-हाय' तो नहीं करते ना।

✚ इतने सब फर्स्ट में आवेंगे! फर्स्ट में कौन आवेंगे उसकी पहचान विशेष एक बात से करो। वह कौनसी? आदि से अब तक अव्यभिचारी और निर्विघ्न होंगे, विघ्न आए भी हों तो विघ्नों को जम्प दे पार किया है वा विघ्नों के वश हुए - निर्विघ्न का अर्थ यह नहीं कि विघ्न आए ही न हों - लेकिन विघ्न विनाशक वा विघ्नों के ऊपर सदा विजयी रहे। यह दोनों बातें अगर आदि से अन्त तक ठीक हैं तो फर्स्ट जन्म में साथी बन सकते हैं - सहज मार्ग हैं ना।

✚ इस निमित्त बनने का तख्त समय प्रमाण, ड्रामा प्रमाण सर्व श्रेष्ठ तख्त और अति सफलता सम्पन्न तख्त गाया हुआ है। जो भी तख्त पर बैठे सफलता मूर्त्त। यह अनादि आदि वरदान है तख्त को। इस तख्त के तख्तनशीन भी बड़े गुह्य रहस्य और राजयुक्त आत्माएँ ही बनती हैं। बाप-दादा महारथियों को वर्तमान समय भी डबल तख्तनशीन देखते हैं। दिलतख्त तो है ही लेकिन यह निमित्त बनने का तख्त बहुत थोड़ों को प्राप्त होता है। यह भी राज बड़े गुह्य हैं।

✚ बापदादा सभी का चित्र खींच जाते हैं। कैसे-कैसे बैठे हैं। शरीर रूप में नहीं। मन की स्थिति के आसन का फोटो निकालते हैं। मुख से कोई क्या भी बोल रहा हो लेकिन मन से क्या बोल रहे हैं, वह मन के बोल टेप करते हैं। बापदादा के पास भी सबके टेप किये हुए कैसेट्स हैं। चित्र भी हैं, दोनों हैं। वीडियो, टी.वी.आदि जो चाहो वह है। आप लोगों के पास अपना कैसेट तो है ना। लेकिन कोई-कोई को अपने मन की आवाज़, संकल्प का पता नहीं चलता है।

✚ दिलाराम बाप को पसन्द ही दिल का स्नेह है। इसलिए जो भी हो, जैसे भी हो लेकिन परमात्मा को पसन्द हो। इसलिए अपना बना लिया। दुनिया वाले अभी इन्तजार ही कर रहे हैं। बाप आयेगा उस समय ऐसा होगा, वैसा होगा। लेकिन आप सबके मुख से, दिल से क्या निकलता है? “पा लिया”। आप सम्पन्न बन गये और वह बुद्धिवान अब तक परखने में ही समय समाप्त कर रहे हैं। इसलिए ही कहा गया है - भोलानाथ बाप है। पहचानने की विशेषता ने विशेष आत्मा बना लिया।

✚ कि हमें जो पाण्डव पाण्डवों को विजयी कहा जाता है तो पाण्डवों का जो लक्ष्य रहा और है भी कि जो गायन है विजयी पाण्डव पाण्डव कहो तो क्या याद आता है विजय। चाहे अक्षोणी सेना थी तो भी पाण्डव शब्द कहने से विजय याद आती है। 5 पाण्डव लेकिन विजयी। कैसा भी वायुमण्डल हो अक्षोणी सेना का वायुमण्डल था लेकिन पाण्डव पाण्डवपति की श्रीमत से विजयी बने और विजय का नाम बाला किया। अभी वही पाण्डव विजयी बन औरों को भी विजय दिलाने वाले।

✚ सतयुग की सीन सीनरियाँ सामने आती हैं कि नहीं? सतयुग के नजारे स्वयं ही सामने आते हैं या लाते हो? जितना-जितना आगे बढ़ेंगे तो न चाहते हुए भी सतयुगी नजारे स्वयं ही सामने आयेंगे। लाने की भी जरूरत नहीं। जितना-जितना नजदीक होते जायेंगे, उतना-उतना नजारे भी नजदीक होते जायेंगे। सतयुग में चलना है और खेल-पाल करना है। यह तो निश्चित है ही आज जो भी सभी बैठे हैं उनमें से कौन समझता है कि हम श्रीकृष्ण के साथ पहले जन्म में आयेंगे?

✚ शक्तियों की पूजा ज्यादा है। दो तरफ लम्बी लाइन लगती है। पाण्डवों की यादगार हनुमान के पास और शक्तियों की तरफ से वैष्णव देवी के पास - दोनों के पास लम्बी लाइन लगती है।

दिन-प्रतिदिन लाइन लम्बी होती जा रही है। तो सर्व भक्तों को भक्ति का फल, गति-सद्गति देने वाले हो ना? तो सदा अपने को मास्टर गति-सद्गति दाता समझ, गति और सद्गति का प्रसाद भक्तों को बाँटों, प्रसाद बाँटना आता है। आज तो विशेष विदेशियों से मिलने आये हैं।

✚ धीरे-धीरे साइन्स वाले, चाहे शास्त्र वाले, दोनों ही यह समझेंगे कि हम ऊपर-ऊपर के हैं, फाउण्डेशन हम लोगों का नहीं है। और इन्हों का अनुभव फाउण्डेशन है। चाहे चन्द्रमा तक भी चले गये लेकिन अपने आप की अनुभूति नहीं है। चन्द्रमा पर गये तो क्या हुआ? तो यह महसूस करेंगे लेकिन अन्त में करेंगे क्योंकि वारिस तो बनना नहीं है। तो अन्त में साइंस अर्थात् शास्त्रधारी और शास्त्रधारी दोनों ही समझेंगे कि हम क्या हैं और यह क्या हैं!

✚ अपने को सदा हर्षित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा अनुभव करते हो? हर्षितमुख, हर्षितचित्त। इसकी यादगार आपके यादगार चित्रों में भी दिखाते हैं। कोई भी देवी या देवता की मूर्ति बनायेंगे तो उसमें चेहरा जो दिखाते हैं, वह सदा हर्षित दिखाते हैं। अगर कोई सीरियस (गम्भीर) चेहरा होगा तो देवता का चित्र नहीं मानेंगे। तो हर्षितमुख रहने का इस समय का गुण आपके यादगार चित्रों में भी है। हर्षितमुख अर्थात् सदा सर्व प्राप्तिओं से भरपूर।

✚ तो कमजोरियों के संस्कार रूपी बीज को याद के लगन की अग्नि में जला दो तो वृक्ष पैदा नहीं होगा अर्थात् मन-वाणी और कर्म में कमजोरी आयेगी ही नहीं। जैसे होली जलाने में होशियार हो ऐसे होली (पवित्र) बनने की होली जलाना तो होली (Hol) हो जायेंगे। कमजोरियों को जला दिया तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे। सदा यह टाइटिल याद रखो कि - हम 'विघ्न-विनाशक' हैं। स्व के साथ-साथ विश्व के भी विघ्न-विनाशक। अब विश्व की सेवा में लगना ही पड़ेगा।

- ✚ सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है- बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना, बूंद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं- कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। विजय प्राप्त की ना! तो वह कौन-सी कुमारी थी? हरेक समझें मैं। इसमें हरेक अपने को आगे रखे। पहले मैं। इसको कहा जाता है कुमारियों की कमाल।
- ✚ जरूर कोई न कोई मर्यादा वा नियम थोड़ा भी नीचे ऊपर होता है तो गाड़ी रूक जाती है। लेकिन यह संगमयुग है ही 'मर्यादा पुरुषोत्तम' बनने का युग। पुरुष नहीं, नारी नहीं लेकिन 'पुरुषोत्तम' हैं, इसी स्मृति में सदा रहो। पुरुषों में उत्तम पुरुष - 'प्रजापिता ब्रह्मा' को कहा जाता है। तो ब्रह्मा के बच्चे आप सब 'ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ' भी पुरुषोत्तम हो गये ना। इस स्मृति में रहने से सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे, नीचे नहीं रूकेंगे।
- ✚ चाहे समस्याओं के कारण, चाहे सरकमस्टांस के कारण, चाहे अप्राप्ति के कारण, लेकिन अल्पकाल की भी वैराग वृत्ति का प्रभाव जरूर पड़ता है। जब आप यहाँ शक्तिशाली बनते हो तो वहाँ भी शक्तिशाली कोई न कोई विशेष बात होती है। यहाँ की लहर ब्राह्मणों के साथ-साथ दुनिया वालों पर भी पड़ती है। अगर विशेष निमित्त बने हुए थोड़ा उमंग में आते और फिर साधारण हो जाते तो वहाँ भी उमंग में आते फिर साधारण हो जाते हैं। तो मधुबन एक विशेष स्टेज है।
- ✚ अभी इशारे में कह रहे हैं फिर सभी प्रत्यक्ष रूप में आपकी स्थिति बोलेगी। छिप नहीं सकेंगे। जैसे नारद की सूरत सभा के बीच छिप सकी? अभी तो बाप गुप्त रखते हैं लेकिन थोड़े समय के बाद फिर गुप्त नहीं रह सकेगा। उनकी सूरत सीरत को प्रत्यक्ष करेगी। जैसे साइंस में आजकल इन्वेंशन करते जाते हैं। कोई भी गुप्त चीज़ स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाए। ऐसे ही साइलेंस की शक्ति का भी स्वतः ही प्रत्यक्ष रूप हो जायेगा। कहने वा करने से नहीं होगा।

- ✚ कोई भी बाप अपने बच्चों को तख्त देने के बाद कैसे तख्त पर बैठ राज्य चला रहे हैं। वह इस कलियुगी दुनिया में नहीं देखते हैं लेकिन अलौकिक बाप, पारलौकिक बाप, बच्चे सेवा के तख्तनशीन बन कैसे सेवा का कार्य चला रहे हैं, वह प्रैक्टिकल में देख हर्षित होते हैं। यह संगमयुग की विशेषता है जो बाप स्वयं बच्चों को देख सकते हैं। यही परम्परा सतयुग में भी चलेगी। वहाँ भी बाप बच्चों को राज्य तिलक दे देखेंगे, कलियुग में कोई नहीं देखता।
- ✚ साइलेन्स की शक्ति के साधनों द्वारा नजर से निहाल कर देंगे। शुभ संकल्प से आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर देंगे। शुभभावना से बाप की तरफ स्नेह की भावना उत्पन्न करा लेंगे। ऐसे उन आत्माओं को शान्ति की शक्ति से सन्तुष्ट करेंगे, तब आप चैतन्य शान्ति देव आत्माओं के आगे 'शान्ति देवा, शान्ति देवा' कह करके महिमा करेंगे और यही अंतिम संस्कार ले जाने के कारण द्वापर में भक्त आत्मा बन आपके जड़ चित्रों की यह महिमा करेंगे।
- ✚ (चन्द्रमणि दादी से) बेहद की चक्रवर्ती बन गई-आज यहाँ, कल वहाँ! तो इसको ही कहा जाता है विश्व की आत्माओं से स्वतः और सहज सम्बन्ध बढ़ना। विश्व का राज्य करना है, विश्व-कल्याणकारी हैं, तो कोने-कोने में पांव तो रखने चाहिए ना। इसलिए देश-विदेश में चांस मिल जाता है। प्रोग्राम न भी बनाओ लेकिन यह ड्रामानुसार संगम की सेवा भविष्य को प्रत्यक्ष कर रही है। इसलिए बेहद की सेवा और बेहद के सम्बन्ध-सम्पर्क बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे।
- ✚ बापदादा ने देखा है कि बच्चों का अटेन्शन है कि सदा जैसे ब्रह्मा बाप जीवन में रहते जीवनमुक्त थे इतनी जिम्मेवारी होते भी इतने बड़े परिवार को सम्भालना सभी को योगी जीवन वाला बनाना इतनी सेवा की जिम्मेवारी सम्भालना सेवा में सदा आगे बढ़ाना सब कुछ जिम्मेवारी होते भी जीवनमुक्त के मजे में रहा इसलिए भक्ति मार्ग में ब्रह्मा का आसन कमल आसन दिखाते

हैं। जीवनमुक्त बन अभी जीवनमुक्त का मजा लिया और आप सभी बच्चों को भी ऐसा ही बनाया।

✚ बाप तो बैक बोन (Backbone;सहारा) है। शक्तियों को कौन सी स्थिति में रहना चाहिए? जैसे देवियों के चित्र में दो विशेषताएं दिखाते हैं। आंखों में मात्र भावना और हाथों से शस्त्रधारी अर्थात् असुर का संहार करने वाली। मात्र भावना अर्थात् रहम की भावना और संघार की भावना भी। संघार करना अर्थात् उन्होंके आसुरी संस्कारों के खत्म करने का प्लान भी हो और रहम भी हो। लॉफुल (Lawfull) और लवफुल (Lovefull) का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हों।

✚ सर्विस के साधन तो बहुत हैं - अभी धर्म नेताओं तक नहीं पहुँचे हैं, जो लास्ट युद्ध है, जिससे चारों ओर आवाज़ फैल जाए। यह होगा ज्ञान की बात से। जैसे गीता के भगवान की बात से नाम बाला होना है। इसके लिए छोटे-छोटे ग्रुप बनाकर चारों ओर पहले कुछ अपने सहयोगी बनाओ, स्टूडेंट्स कम्पीटीशन (Student Competition) रखी ना, फिर उसमें से एक चुना। ऐसे हर स्थान पर छोटे-छोटे ग्रुप बनें और फिर उन सबका एक स्थान पर संगठन हो फिर नाम बाला होगा।

✚ यही संगमयुग की विशेषता है जो ऊँचे ते ऊँचे बाप के सर्व बच्चे स्वराज्य-अधिकारी बनते हैं। वैसे लौकिक परिवार में हर एक बाप बच्चों को कहते हैं कि यह मेरा बच्चा 'राजा' बेटा है वा इच्छा रखते हैं कि मेरा हर एक बच्चा 'राजा' बने। लेकिन सभी बच्चे राजा बन ही नहीं सकते। यह कहावत परमात्म बाप की कापी की है। इस समय बापदादा के सब बच्चे राजयोगी अर्थात् स्व के राजे नम्बरवार जरूर हैं लेकिन हैं सभी राज-योगी, प्रजा योगी कोई नहीं है।

✚ पाण्डवों के बिना शक्तियाँ नहीं, शक्तियों कि बिना पाण्डव नहीं। चतुर्भुज की दो भुजा वह हैं, दो भुजा वह हैं। इसलिए पाण्डवों की विशेषता अपनी। निमित्त सेवा इन्हों को (दादियों को) मिली हुई है, इसलिए यह करती हैं। बाकी सदा पाण्डवों के लिए शक्तियों को और शक्तियों के लिए पाण्डवों को स्नेह है, रिगार्ड है और सदा रहेगा। शक्तियाँ पाण्डवों को आगे रखती हैं - इसमें ही सफलता है और पाण्डव शक्तियों को आगे रखते - इसमें ही सफलता है।

✚ अगर बार-बार हार खाते रहते हैं तो उसका भविष्य भी क्या होगा? ऊँचे-ऊँचे पद तो नहीं पा सकते। बार-बार हार खाने वाले को देवताओं के हार बनाने वाले बनना पड़ेगा। जितना ही बार-बार हार खाते रहेंगे उतना ही बार-बार हार बनानी पड़ेगी रत्नजड़ित हार बनते हैं ना। और फिर द्वापर से भी जब भक्त बनेंगे तो अनेकों मूर्तियों को बार-बार हार पहनना पड़ेगा। इसलिए हार नहीं खाना। यहाँ कोई हार खाने वाला है क्या। अगर हार नहीं खाते तो बलिहार जाते हैं।

✚ वाणी द्वारा किसी कमजोर आत्मा को खुशी में लाना, परेशान को शान की स्मृति में लाना, दिलशिकस्त आत्मा को अपनी वाणी द्वारा उमंग-उत्साह में लाना, सम्बन्ध-सम्पर्क से आत्मा को अपने श्रेष्ठ संग का रंग अनुभव कराना, इस विधि से पुण्य का खाता जमा कर सकते हो। इस जन्म में इतना पुण्य जमा करते हो जो आधाकल्प पुण्य का फल खाते हो और आधाकल्प आपके जड़ चित्र पापी आत्माओं को वायुमण्डल द्वारा पापों से मुक्त करते हैं। पतित-पावनी बन जाते हो।

✚ अंगुली देने से पहाड़ उठता है ना। यही गायन है गोप गोपियों ने अंगुली से पहाड़ उठाया। अंगुली नहीं देंगे तो पहाड़ नहीं उठेगा। सृष्टि पर आत्माओं का उद्धार कर, वह पहाड़ उठाकर फिर साथ ले जाना है। समूह होता है ना। अन्त में समूह बनकर सभी के साथ रहना है। पहले-पहले साक्षात्कार में लाल-लाल समूह देखा था तब तो समझ में नहीं आया परन्तु अब वही आत्माओं का समूह है, जिनको साथ ले जाने का ड्रामा के अन्दर प्रोग्राम है। सभी की सर्विस करनी है।

✚ एक वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप, दूसरा वर्तमान जन्म का अन्तिम सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप। इस समय 'हम सो, सो हम' के मन्त्र में पहले हम सो फरिश्ता स्वरूप हैं फिर भविष्य में हम सो देवता रूप है। आज वतन में, सभी बच्चों के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, जो अन्तिम फरिश्ता स्वरूप बनना है, उस रूप को इमर्ज किया। जैसा साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा। दोनों के अन्तर को देखते और अनुभव करते थे कि पुरुषार्थी और सम्पूर्ण में क्या अन्तर है।

✚ जैसे भक्ति-मार्ग में कहते हैं कि अगर कोई श्रेष्ठ यात्रा करते हैं तो वह भाग्यवान, पुण्य आत्मा माने जाते हैं। और आप जिस स्थान पर पहुँचे हो, यह सब यात्राओं से महान तीर्थ-स्थान है। तो महा तीर्थस्थान पर आने से सब तीर्थ हो जाते हैं, सब यात्रायें हो जाती हैं। जिसने यह महान यात्रा की, उसने सब यात्रायें कर लीं। तो कितने भाग्यवान हो गये! आपके सब तीर्थ सिद्ध हो गये। और तीर्थ करने की आवश्यकता नहीं रही अगर एक महान तीर्थ कर लिया।

✚ जो सोचते रहेंगे तो बाप भी राज्य-भाग्य देने के लिए सोचेंगे। जो स्वयं को स्वयं ही आफर करते हैं उनको बापदादा भी विश्व की राजधानी का राज्य- भाग्य पहले आफर करते हैं। अगर अपने को आफर नहीं करेंगे तो बापदादा भी विश्व का तख्त क्यों आफर करेंगे। अपने को आपेही आफर करो तो आफरीन कही जायेगी। गैस के गुब्बारे नहीं बनना। वह बहुत तेज उड़ते हैं लेकिन अल्पकाल के लिए। यहाँ अपने में अविनाशी एनर्जा भरना। टैम्प्रेरी आक्सीजन का आधार नहीं लेना।

✚ तो अष्ट रतन चीफ जस्टिस (Chief Justice) हैं। जस्टिस की जजमेण्ट (Judgement) हाँ या ना की फाइनल (Final) होती है। बाप प्रेज़ीडेंट (resident) है लेकिन बच्चे चीफ जस्टिस हैं। जजमेण्ट बच्चों की है। चीफ जस्टिस की जजमेण्ट सदा यथार्थ होती है। जस्टिस

के ऊपर चीफ जस्टिस हाँ या ना कर सकते हैं लेकिन चीफ जस्टिस के जजमेण्ट की बहुत वैल्यू (Value) होती है। इसलिए जब तक भविष्य भी वर्तमान के समान स्पष्ट न हो तो जजमेण्ट यथार्थ कैसे दे सकेंगे?

✚ कमल-आसन ब्राह्मण आत्माओं की श्रेष्ठ स्थिति की निशानी है। आसन स्थित, बैठने का साधन है। ब्राह्मण आत्मायें कमल-स्थिति में स्थित रहतीं, इसलिए कमल-आसनधारी कहलाती हैं। जैसे ब्राह्मण सो देवता बनते हो, ऐसे आसनधारी सो सिंहासनधारी बनते हैं, जितना समय बहुतकाल वा अल्पकाल कमल आसनधारी बनते हैं, उतना ही बहुतकाल वा अल्पकाल राज्य सिंहासनधारी बनते हैं। कमल-आसन विशेष ब्रह्मा बाप समान अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल (चिन्ह) है।

✚ 8 बादशाही में से लक्ष्मी नारायण की फर्स्ट, सेकेण्ड उसमें आयेंगे। 8 बादशाही में आने के लिए क्या करना पड़ेगा? बहुत सिम्पल बात है, यह देखो कि हर समय हर परिस्थिति में अष्ट शक्तियां साथ-साथ इमर्ज रूप में होती हैं? अगर दो-चार शक्तियां हैं और एक भी शक्ति कम है तो अष्ट बादशाहियों में नहीं आ सकते। अष्ट शक्तियों की समानता हो और एक ही समय अष्ट ही शक्तियां इमर्ज चाहिए। ऐसे भी नहीं कि सहन शक्ति 100% लेकिन निर्णय शक्ति 60% या 50% है।

✚ बहुत अच्छे-अच्छे कहते-कहते बहुत अच्छे हो जाते हैं। कमज़ोर हो, कमज़ोर हो कहते हो तो कमज़ोर हो जाते। एक तो पहले कमज़ोर होते हैं दूसरा कोई कह देता है तो मूर्छित हो जाते हैं। कैसा भी मूर्छित हो लेकिन उसको श्रेष्ठ स्मृति की, विशेषताओं की स्मृति की संजीवनी बूटी खिलाओ तो मूर्छित से सुरजीत हो जायेगा। संजीवनी बूटी सबके पास है ना! तो विशेषताओं

के स्वरूप का दर्पण उसके सामने रखो। क्योंकि हर ब्राह्मण आत्मा विशेष है। कोटो में कोई है ना।

✚ वरदाता देने में नम्बरवार नहीं देते हैं क्योंकि वरदाता के पास अखुट वरदान हैं जो जितना लेने चाहे खुला भण्डार है। ऐसे खुले भण्डार से कई बच्चे सर्व वरदानों से सम्पन्न बनते हैं और कोई बच्चे यथा-शक्ति तथा सम्पन्न बनते हैं। सबसे ज्यादा झोली भरकर देने में भोलानाथ, 'वरदाता' रूप ही है। पहले भी सुनाया है - दाता, भाग्यविधाता और वरदाता। तीनों में से 'वरदाता' रूप से भोले भगवान कहा जाता है। क्योंकि वरदाता बहुत जल्दी राजी हो जाते हैं।

✚ आप सभी भी जब दीपमाला के दिन जगे हुए दीपकों को देखते हो तो देखते हुए यह खुशी होती है कि हमारी ही यादगार मना रहे हैं? जैसे जगा हुआ दीपक प्यारा लगता है, वैसे अपनी यादगार को देख स्मृति आने से आप सभी भी विश्व के बाप और सारे विश्व के आत्माओं को प्यारे लगते हो। तो आज यादगार रूप को प्रत्यक्ष रूप में देखने आए हैं। माला में एक दाना नहीं होता है, अनेकों की माला बनती है। अगर एक दीपक अलग जगा हुआ हो तो उसको दीपकों की माला नहीं कहेंगे।

✚ अब होलीहंस बनते हो तब ही भविष्य में भी हिज़ होलीनेस कहलाते हो। कभी गलती से भी किसका अवगुण धारण न करने वाले, सदा गले में गुण माला हो। शक्तियों के गले में भी माला दिखाते हैं, देवताओं के गले में भी माला दिखाते हैं। तो संगम में गुणों की माला धारण करने वालों की यादगार में माला दिखाई है। बाप के गुणों को धारण करते हुए सर्व के गुण देखने वाले हो तो यह गुणमाला सभी के गले में पड़ी है? गुणमाला धारण करने वाले ही विजय माला में आते हैं।

✚ बापदादा तो हर बच्चे के तीनों काल जानते हैं ना। और बच्चे सिर्फ अपने वर्तमान को ज्यादा जानते हैं इसलिए कभी कैसे, कभी कैसे हो जाते हैं। लेकिन बापदादा तीनों कालों को जानने कारण उसी दृष्टि से देखते हैं कि यह कल्प पहले वाला हकदार है। अधिकारी है। अभी सिर्फ थोड़ा सा कोई हलचल में है लेकिन अभी-अभी हलचल अभी-अभी अचल हो ही जाना है। भविष्य श्रेष्ठ देखते हैं। इसलिए वर्तमान को देखते भी, नहीं देखते। तो हर एक बच्चे की विशेषता को देखते हैं।

✚ इस देह के जो सर्व सम्बन्ध हैं, दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से - उन सबसे न्यारा - देह का सम्बन्ध देखते हुए भी स्वतः ही आत्मिक, देही सम्बन्ध स्मृति में रहे। इसलिए दीपावली के बाद भैया-दूज मनाया ना। जब चमकता हुआ सितारा वा जगमगाता अविनाशी दीपक बन जाते हो, तो भाई-भाई का सम्बन्ध हो जाता है। आत्मा के नाते भाई-भाई का सम्बन्ध और साकार ब्रह्मावंशी ब्राह्मण बनने के नाते से बहन-भाई का श्रेष्ठ शुद्ध सम्बन्ध स्वतः ही स्मृति में रहता है।

✚ इस खेल में भी आपस में खेलते-खेलते दोस्त बन जाते हैं। वह हुआ स्थूल खेल। यहाँ भी खेल-खेल में आत्माओं की समीपता का मेल होता है। आत्माओं के संस्कार स्वभाव का मेल होता है। खेल के साथी बहुत पक्के होते हैं, जीवन के अन्त तक अपना साथ निभाते हैं। रूहानी खेल के साथ अन्त तक आपस में मेल निभाते हो, तब तो इस मेल की निशानी 'माला' बनी हुई है। सभी बातों में जब अन्त में एक दूसरे के समीप हो जाते, मेल हो जाता तब दाना दाने से मिल माला बनती है।

✚ "मुश्किल को सहज करने वाले।" तो जब बाप का गायन है मुश्किल को सहज करने वाले, पहाड़ को राई बनाने वाले व रूई बनाने वाले। रूई (कपास) कितनी हल्की होती है और स्वच्छ होती है और पहाड़ कितना मुश्किल और भारी होता है। कहां पहाड़, कहां रूई वा राई। तो जो

बाप का गायन है वह आपका नहीं है? जो मुश्किल को सहज बनाने वाले ब्राह्मण, उनको कोई भी बात मुश्किल अनुभव हो, यह हो सकता है? तो अपने स्वमान में स्थित रह अपनी विशेषता को हर समय स्मृति में रखो।

✚ (धार्मिक नेतायें बहुत हैं) एक भी धार्मिक नेता को अगर अनुभव करा दिया तो कितना नाम बाला हो जायेगा! तो यह विशेषता दिखाओ। जब वह लोग भी प्रैक्टिकल अनुभव सुनेंगे तो अनुभव के आधार पर आकर्षित होंगे। तो यह नवीनता दिखाओ। कुमारियाँ ऐसे विद्वानों को बाण मारें। यह कल्प पहले की यादगार है ना। तो वह कौन सी कुमारियाँ हैं?v आप हो ना। कोई भी निमित्त बनें। ब्रह्माकुमार नजदीक लायेंगे और ब्रह्मा कुमारियाँ जीत प्राप्त कर विजय का झण्डा लहरायेंगी।

✚ बाप को भी परकाया में बैठना पड़ता है ना! आपको ट्रेन में बैठना पड़ता, बाप को परकाया में बैठना पड़ता। तकलीफ मालूम पड़ती है क्या? अभी तो आपके पोत्रे-धोत्रे सभी आने वाले हैं। भक्त भी आने वाले हैं, फिर क्या करेंगे? भक्त तो आपको बैठने ही नहीं देंगे। अभी तो फिर भी आराम से बैठे हो, फिर आराम देना पड़ेगा। फिर भी तीन पैर पृथ्वी तो मिली है ना। भक्त तो खड़े-खड़े तपस्या करते हैं। आपके चित्रों को देखने लिए भक्त क्यूँ लगाते। तो आप भी अनुभव तो करो।

✚ "आज दीपकों वे मालिक अपनी दीपमाला को देखने आये हैं।b जिन चैतन्य दीपकों की यादगार जड़ दीपकों की दीपमाला मनाते रहते हैं। भक्त लोग जड़ चित्र और जड़ दीपकों के साथ दीपावली मनायेंगे और आप चैतन्य दीपक सदा जगे हुए दीपक, दीपकों के मालिक से बालक बन मिलन मना रहे हो अर्थात् दीपावली मेला मना रहे हो। हर एक दीपक कितना सुन्दर जगमगा रहा है। बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में जगे हुए दीपक को ही देख रहे हैं। इतनी बड़ी दीपमाला कहाँ हो ही नहीं सकती।

✚ जिसमें जो कमज़ोरी होती है उनके आधार पर उसको तीर लगाना - यह है विजय पाना। शास्त्र में भी गायन है देवताओं ने विजय प्राप्त की तब, जब उन्हें कमज़ोरी का पता पड़ा यह भी आध्यात्मिक बात है। तो धर्म नेतायें भी आयेंगे जरूर लेकिन ऐसी कोई नवीनता देखेंगे तब। अभी सिर्फ कहते हैं कि ज्ञान अच्छा है। आप भी ठीक हैं, हम भी ठीक हैं, ऐसा कह पानी डाल देते हैं। सिस्टम के ऊपर प्रभावित होते हैं लेकिन उन्हीं के मुख से जब यह निकले कि यह एक ही रास्ता है।

✚ सभी यथार्थ और युक्ति-युक्त हैं? थोड़ा-बहुत तो होता ही है और होना भी चाहिए। नहीं तो लास्ट पेपर्स कैसे होंगे? यह भी प्रैक्टिकल पेपर्स ही हैं। यह पेपर्स ही मार्क्स जमा कराते हैं। मार्क्स जमा होते-होते पास विद ऑनर की लिस्ट में आयेंगे। यह जो कुछ होता है वह पेपर्स के मार्क्स जमा होने के लिए हैं। सब बातों में जमा होना चाहिए न सिर्फ याद की यात्रा में नहीं, लेकिन चारों सब्जेक्ट्स में मार्क्स जमा होनी चाहिए। तब ही पास विद ऑनर होंगे।

✚ जमुना नदी के किनारे पर राजधानी और रास दिखाते हैं लेकिन यू.पी. की पतित पावनी मशहूर है, यानी यू.पी. को सेवा का स्थान दिखाया है। तो ऐसा कोई यू.पी. से निकला जरूर जो अनेकों की सेवा के निमित्त बने। ऐसा कोई तैयार हो जायेगा। जैसे अमेरिका से एक से अनेकों की सेवा हो रही है, ऐसे यू.पी. से भी कोई निकल आयेगा जो एक से अनेकों की सेवा हो जायेगी। आवाज तो फैलेगा ना! जब विदेश से आवाज आयेगा तब सब जाग जायेंगे। अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है।

✚ विदेशी बच्चे जब से जन्म लेते हैं तभी पहली घड़ी में ही बापदादा द्वारा विशेष वरदान सदा छत्रछाया के अन्दर रहने का मिल जाता है जैसे भारत के शास्त्रों में दिखाया है, जब श्रीकृष्ण

का जन्म हुआ तो जेल में जन्म होते हुए भी जब नदी पार किया तो साँप ही सेफ्टी के साधन बन गये, तो विदेशी बच्चों को वरदान है कि कैसे भी वातावरण अशुद्ध है, कैसी भी जीवन पार्ट देख रहे हैं लेकिन फिर भी बाप की छत्रछाया बच्चों को सदा सेफ रखती आई है और अन्त तक रखेगी।

✚ जब तक स्थापना के लिए सब प्रकार की वैरायटी आत्मायें स्थापना के कार्य में बीज नहीं डालेगी तो विनाश कैसे होगा! क्योंकि सतयुग में सब प्रकार के कार्य वाले काम में आयेंगे। सेवाधारी बनकर आपकी सेवा करेंगे। अभी एक जन्म थोड़े समय की आप सेवा कर ऐसे सेवाधारी तैयार करो जो अनेक जन्म आपकी सेवा करें। साइन्स वालों का भी वहाँ पार्ट है, जो वहाँ के सुख के साधनों की विशेषता है वह यहाँ से सहज मार्ग का बीज डालकर जायेंगे, यही बीज वहाँ काम में आयेगा।

✚ सब ब्राह्मण परिवार है। जिस दिन सब मधुबन भूमि पर इकट्ठे हो जायेंगे फि रतो हलचल शुरू हो जायेगी। संगठन का चित्र तो दिखाया है ना! कि सभी ने अंगुली दी। सूक्ष्म में तो देते ही हो लेकिन इतना बड़ा परिवार है, परिवार को देखना तो चाहिए ना! इसका प्लैन बनाया है। सतयुग में तो सिर्फ आपकी प्रजा होगी, यहाँ तो आपके भक्त भी आयेंगे। डबल वंशावली होगी। वह भी पूछेंगे नहीं। पहुँच जायेंगे। जैसे अभी भी कई पहुँच जाते हैं ना! भक्त तो होते ही चात्रक हैं।

✚ हिम्मत से दृढ़ संकल्प किया कि हमें पवित्र बनना ही है और बाप ने पद्मगुणा मदद दी कि आप आत्मायें अनादि-आदि पवित्र थी, अनेक बार पवित्र बनी हैं और बनती रहेंगी। नई बात नहीं है। अनेक बार की श्रेष्ठ स्थिति को फिर से सिर्फ रिपीट कर रहे हो। अब भी आप पवित्र आत्माओं के भक्त आपके जड़ चित्रों के आगे पवित्रता की शक्ति मांगते रहते हैं, आपके पवित्रता के गीत गाते रहते हैं। साथ-साथ आपके पवित्रता की निशानी हर एक पूज्य आत्मा के ऊपर लाइट का ताज है।

✚ जैसे आजकल की दुनिया में किसी को कहते हो - भक्ति का फल प्राप्त करो, सहज राजयोगी बनो तो ज्यादा किसमें रूचि रखते हैं? भक्ति के कथा-कीर्तन में ज्यादा रूचि रखते हैं ना! मनोरंजन समझते हैं। ऐसे कई विशेष आत्मायें भी व्यर्थ की रामकथा की मण्डली में वा कीर्तन-मण्डली में बड़ा मनोरंजन समझती हैं। ऐसे समय पर उन आत्माओं को कहो - छोड़ो इस कीर्तन को, शान्ति में रहो तो मानेंगे नहीं क्योंकि संस्कार पड़े हुए हैं ना! अब इस कीर्तन मण्डली को समाप्त करो।

✚ बाप-दादा तो सर्व बच्चों को एक ही पढ़ाई, एक ही लक्ष्य - मनुष्य से देवता वा विजयी रत्न बनने को देते हैं, फिर भी पूजन में इतना अन्तर क्यों? कोई की डबल पूजा अर्थात् सालिग्राम रूप में भी और देवी या देवताओं के रूप में भी, कोई की सिर्फ सालिग्राम रूप में माला के मणके के रूप में पूजा होती है। इसका भी क्या रहस्य है? मुख्य कारण है आत्माभिमानि बनने का लक्ष्य व आत्मिक स्वरूप में स्थित रहने का पुरुषार्थ, हर ब्राह्मण आत्मा जन्म से ही करते हैं।

✚ तो भक्त रूप में भक्ति थी लेकिन शक्ति नहीं थी। स्नेह था लेकिन पहचान वा सम्बन्ध श्रेष्ठ नहीं था। भावना थी लेकिन अल्पकाल की कामना भरी भावना थी। अभी भी स्नेह और भावना है लेकिन समीप सम्बन्ध के आधार पर स्नेह है। अधिकारीपन के शक्ति की, अनुभव के अथार्टी की श्रेष्ठ भावना है। भिखारीपन की भावना बदल, सम्बन्ध बदल अधिकारीपन का निश्चय और नशा चढ़ गया। ऐसे सदा श्रेष्ठ प्राप्ति और सेवा की भावना वाली श्रेष्ठ आत्माओं को प्रत्यक्षफल प्राप्त हुआ है।

✚ कोई दुःख का नजारा देख करके भी 'हाय' शब्द नहीं निकलना चाहिए। कल 'हाय-हाय' के गीत गाते थे और आज 'वाह-वाह' के गीत गाते हो। इतना अन्तर हो गया! यह किसकी शक्ति है? बाप की या ड्रामा की? (बाप की) बाप भी तो ड्रामा के कारण आया ना। तो ड्रामा भी शक्तिशाली हुआ। अगर ड्रामा में पार्ट नहीं होता तो बाप भी क्या करता। बाप भी शक्तिशाली है और ड्रामा भी शक्तिशाली है। तो दोनों के गीत गाते रहो - वाह ड्रामा वाह! जो स्वप्न में भी न था, वह साकार हो गया।

✚ रास अर्थात् राशि मिलना। जैसे कोई भी कनेक्शन जोड़ते हैं व मिलन करते हैं, तो राशि मिलाते हैं ना? अगर राशि नहीं मिलती तो जोड़ी नहीं मिलाते हैं। एक-दो में राशि मिलना अर्थात् स्वभाव, संस्कार, गुण और सेवा साथ-साथ मिलने में दिखाई दे। समान तो नहीं हो सकता। नम्बर तो होंगे लेकिन जरा-सा अन्तर जो न के बराबर दिखाई दे-ऐसी राशि मिलने वाले कितने तैयार हुए हैं? क्या आधी माला? जितने भी तैयार हुए हैं, होना तो है, हुई पड़ी है सिर्फ घूँघट के अन्दर है।

✚ विदेशियों को ही समाप्ति की डेट फिक्स करनी पड़ेगी। पहले वालों ने स्थापना की डेट फिक्स की और अब आप लोगों को समाप्ति की डेट फिक्स करनी पड़ेगी। अभी सबका इंतज़ार आपके ऊपर होगा। बाप दादा से पूछेंगे कि विनाश कब होगा तो कहेंगे विदेशियों से पूछो। देश वालों ने स्थापना की जिम्मेवारी ली। विदेशी भी कोई तो जिम्मेवारी लेंगे ना। है भी विदेश विनाशी और भारत अविनाशी तो भारतवासियों ने स्थापना का किया और विदेशी विनाश के कार्य में विशेष निमित्त बनेंगे।

✚ जमा का खाता चेक करो। क्योंकि सारा कल्प चाहे राज्य करेंगे, चाहे पूजे जायेंगे लेकिन जमा अभी करना है या द्वापर में या सतयुग में करेंगे? तो ये चेक करो कि मैंने जमा कितना किया?

कम से कम इतना तो जमा करो जो 21 जन्म रॉयल फैमिली में प्रालब्ध भोगते रहो। अगर कम जमा होगा तो त्रेता में आयेंगे, सतयुग मिस करेंगे। त्रेता में आना पसन्द है? सारा पहला-पहला सुख तो सूर्यवंशी ले लेंगे, चन्द्रवंशियों को बाद में बचा हुआ मिलेगा। तो जमा का खाता चेक करो।

✚ परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहे हैं, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। आपका यादगार माला है, माला में देखो कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप एक राज्य, तो एक होके चलना है।

✚ अभी सफलता को लाने के लिए आप लोगों को समय और संकल्प, सम्पत्ति, शक्ति बहुत लगानी पड़ती है। फिर क्या होगा? सफलता स्वयं आपके सामने आयेगी। सम्पत्ति लगानी नहीं पड़ेगी, सम्पत्ति आपके सामने स्वयं स्वाहा होने आयेगी। समझा? इतना अन्तर है सिर्फ एक बात की धारणा से। वह कौनसी बात? मन्मनाभव होकर हरेक के मन के भाव को जानना। लेकिन अभी जो इतना पुरुषार्थ करते हो प्रकृति के ऊपर विजयी होने का, उस पर विजय का फल वा प्राप्ति इस श्रेष्ठ जन्म में ही देखेंगे।

✚ बाह्यमुखता के रस बाहर से बड़े आकर्षित करते हैं, इसलिए इसको कैची लगाओ। यह रस ही सूक्ष्म बंधन बन सफलता की मंजिल से दूर कर देते हैं। प्रशंसा हो जाती लेकिन प्रत्यक्षता और सफलता नहीं हो सकती, इसलिए अब उद्धाटन की तैयारी करो। उद्धाटन की तैयारी करने वाले सदा फूलों के बगीचे में बापदादा द्वारा लगी हुई फुलवाड़ी, फूलों के विशेषता की खुशबू लेने

में और उसी खुशबू को सूंघने में सदा तत्पर होंगे अर्थात् उनकी जीवन रूपी थाली में सदा फूल ही फूल होंगे।

✚ बाप और दादा आये हैं - सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का, चाहे जीवनमुक्ति का, लेकिन वर्सा मिलना जरूर है। कोई भी वंचित नहीं रहेगा क्योंकि बाप बेहद का मालिक है, बेहद का बाप है। तो बेहद को वर्सा लेना ही है। भल योगबल से अपने जन्म-जन्म के पाप नहीं भी काट सकें लेकिन सिर्फ इतना भी जान लिया कि बाप आये हैं, तो कुछ न कुछ पहचान से वर्से के अधिकारी बन ही जायेंगे। तो जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है।

✚ बेफिकर बादशाह स्वयं को भी प्रिय लगते और जो ऐसी स्थिति में उड़ते तो उनकी चमकती हुई लाइट देख दूसरों को कितना प्यार आता है। इसलिए बापदादा सदा बच्चों को बेफिकर बादशाह स्थिति में रहना यह स्मृति स्वरूप में टिकाते रहते हैं इसलिए आप लोगों का चित्र भी भक्त लोग डबल ताजधारी दिखाते हैं। एक लाइट का ताज और दूसरा विकारों को जीतने का बादशाहपन का ताज डबल ताज दिखाते हैं इसलिए बापदादा यही सदा हर बच्चों को शिक्षा देते हैं सदा मौज में रहना बहुत सहज है।

✚ अष्ट शक्तिधारी, इष्ट और अष्ट हो ना। अष्ट की निशानी क्या है, जानते हो? हर कर्म में समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण, हर शक्ति कर्म में लाने वाले। अष्ट शक्तियाँ इष्ट भी बना देती हैं और अष्ट भी बना देती हैं। अष्ट शक्तियाँधारी हो इसलिए आठ भुजायें दिखाते हैं। विशेष आठ शक्तियाँ हैं। वैसे है तो बहुत, लेकिन आठ में मैजारिटी आ जाती है। विशेष शक्तियों को समय पर कार्य में लाना है। जैसा समय, जैसी परिस्थिति वैसी स्थिति हो। इसको कहते हैं अष्ट वा इष्ट।

- ✚ जैसे आपके यादगार चित्रों द्वारा सिद्धि प्राप्त करने वालों की विशेष दो बातों की विधि सुनाई। एकान्तवासी और एकाग्रता। यही विधि कल्प पहले मुआफिक साकार में अपनाओ। एकाग्रता कम होने के कारण ही दृढ़ निश्चय की कमी होती है। एकान्तवासी कम होने के कारण ही साधारण संकल्प बीज को कमजोर बना देता है। इसलिए इस विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बनो, जो सैर पर देखे वही आप हो ना? तो यादगार रूप को अब याद रूप बनाओ। पाण्डवों की यादगार से भी भक्त लोग सिद्धि माँगते हैं।
- ✚ नॉलेजफुल होते हुए भी, औरों को पवित्र बनने की विधि बताते हुए भी, औरों की कमजोरियों को सुनते हुए भी, उनको बापकी श्रीमत देते हुए भी, स्वयं सदा सुनते हुए, जानते हुए भी सदा स्वच्छ रहे हैं अर्थात् पवित्रता की सबजेक्ट में सिद्धि स्वरूप रहे हैं। इसलिए ऐसे परम पवित्र आत्माओं का पूजन भी सदा विधि पूर्वक होता है। अष्ट देव के रूप में भी पूजन और भक्तों के इष्ट देव के रूप में भी पूजन। अष्ट शक्तियों का प्रैक्टिकल स्वरूप 'अष्ट देव' प्रत्यक्ष होते हैं।
- ✚ (आयोध्या की घटना के बाद कई स्थानों से हिंसा के समाचार मिल रहे हैं) लेकिन पूर्वज आत्माओं ने समाचार सुनने के बाद सर्व की पालना की? अशान्ति के समय आप पूर्वज आत्माओं का और विशेष कार्य स्वतः ही हो जाता है। तो हे पूर्वज! अपने पालना की सेवा में लग जाओ। जैसे अशान्ति के समय विशेष पुलिस वा मिलेट्री समझती है कि यह हमारा कार्य है-अशान्ति को शान्त करना। ऑर्डर द्वारा पहुँच जाते हैं और ऐसे टाइम पर विशेष अटेन्शन से अपनी सेवा के लिए अलर्ट हो जाते हैं।
- ✚ जैसे आपके यादगार चित्र श्रीकृष्ण के चित्र में बचपन से ही ताज दिखाते हैं। बड़ा होकर तो होगा ही लेकिन बचपन से ही ताजधारी। यह किसका चित्र है? एक ब्रह्मा का चित्र है या आप सबका है? तो जैसे श्रीकृष्ण के चित्र में बचपन से ही ताजधारी दिखाया है वैसे आप श्रेष्ठ

आत्मार्ये भी मरजीवा बनीं, ब्राह्मण बनीं और जिम्मेवारी का ताज धारण किया। तो जन्म से ताजधारी बनते हो इसलिए यादगार में भी जन्म से ताज दिखाया है। तो ब्राह्मण बनना अर्थात् ताजपोशी का दिन मनाना।

✚ उत्तर:- ‘एक बाप दूसरा न कोई’ - यह है महा-तपस्या। ऐसी स्थिति में स्थित रहने वाले महातपस्वी हुए। तपस्या का बल श्रेष्ठ बल गाया जाता है। जो इस तपस्या में रहते - ‘एक बाप दूसरा न कोई’, उनमें बहुत बल है। इस तपस्या का बल विश्व परिवर्तन कर लेता है। हठयोगी एक टांग पर खड़े होकर तपस्या करते हैं लेकिन आप बच्चे एक टांग पर नहीं, एक की स्मृति में रहते हो, बस - एक ही एक। ऐसी तपस्या विश्व-परिवर्तन कर देगी। तो ऐसे विश्वकल् याणकारी अर्थात् महान तपस्वी बनो।

✚ (मधुबन के प्रफुल्ल भाई ने एकसीडेंट में शरीर छोड़ा है) बच्चा अच्छा था और सेवा के उमंग-उत्साह में भी रहा लेकिन हिसाब-किताब का टाइम बनता है तो कोई न कोई कारण से बन ही जाता है। बाकी बच्चा स्वयं ठीक था। (बाबा जब बच्चों को मदद करता है तो उस टाइम क्यों नहीं की?) उनका हिसाब उसी ड्राइवर से उसी स्थान से होता है। भावी को नहीं टाल सकते। (डाक्टरों ने बचाने के बहुत प्रयास किये) सभी का प्यार भी था। मृत्यु की डेट टल नहीं सकती। भगवान भी बदल नहीं सकता।

✚ (दादी को) वर्तमान समय आप आत्मा की डबल रूप से आह्वान की लीला चल रही है। एक तरफ भक्त आत्माएं अनजान रूप में आह्वान कर रही हैं - अष्ट देव के रूप में। दूसरी तरफ ज्ञान-स्वरूप होकर के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे आह्वान कर रही हैं। ऐसे ही आह्वान कर रहे हैं जैसे आपकी जड़ चित्र अष्ट देव के रूप में करते हैं। लेकिन वह अन्जान हैं, इसलिए उन्होंको वह रस नहीं

आता। लेकिन उन्हीं को आह्वान से भी वरदान की अनुभूति की प्राप्ति का अनुभव होगा, डबल आह्वान हो गया ना?

✚ बाप के बच्चे बने और स्व का दर्शन हुआ। बाप का बच्चा बनना अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बनना। ऐसे स्वदर्शन चक्रधारी ही विश्व-कल्याणकारी हैं। क्योंकि विघ्नविनाशक हैं। विघ्न विनाशक गणेश को कहते हैं। गणेश की कितनी पूजा होती है! कितना प्यार से पूजा करते हैं, कितना सजाते हैं, कितना खर्चा करते हैं, ऐसी विघ्न विनाशक आत्मायें कौन हैं? सदा स्मृति में रहे कि हम विघ्न-विनाशक हैं, यह संकल्प ही विघ्न को समाप्त कर देता है क्योंकि संकल्प ही स्वरूप बनाता है।

✚ माताओं का स्वरूप विशेष रहमदिल का होता है। मातायें रहमदिल होती हैं। आप बेहद की माताओं को बेहद की आत्माओं के प्रति रहम आता है? जब रहम आता है तो क्या करती हो? जो रहमदिल होते हैं वह सेवा के सिवाए रह नहीं सकते हैं। जब रहमदिल बनते हो तो अनेक आत्माओं का कल्याण हो ही जाता है। इसलिए माताओं को 'कल्याणी' भी कहते हैं। कल्याणी अर्थात् कल्याण करने वाली। जैसे बाप को विश्व-कल्याणकारी कहते हैं वैसे माताओं को विशेष बाप समान कल्याणी का टाइटिल मिला हुआ है।

✚ इस महान तीर्थ स्थान पर पहुँचने से सभी तीर्थ इसमें समाये हुए हैं। इस महान तीर्थ पर ज्ञान स्नान करो और जो कुछ कमजोरी है उसका दान करो। तीर्थ पर कुछ छोड़ना भी होता है। क्या छोड़ेंगे? जिस बात में आप परेशान होते हो वही छोड़ना है। बस। तब महान तीर्थ सफल हो जाता है। यही दान करो तो इसी दान से पुण्य आत्मा बन जायेंगे क्योंकि बुराई छोड़ना अर्थात् अच्छाई धारण करना। जब अवगुण छोड़ेंगे, गुण धारण करेंगे तो पुण्य आत्मा हो जायेंगे। यही है इस महान तीर्थ की सफलता।

✚ ईश्वरीय कार्य में अंगुली देना इससे बड़ा पुण्य प्राप्त होता है। उसकी निशानी है गुरुद्वारे में देखो बड़े बड़े वी.आई.पी. भी सेवा करने जाते हैं? क्यों? जूतियां भी सम्भाल के रखते हैं। क्योंकि पुण्य प्राप्त होता है। तो यह तो डायरेक्ट ईश्वर के कार्य में सहयोगी बनना, कितना पुण्य है और पुण्य की पूंजी साथ में जायेगी और कुछ नहीं जायेगा। तो अपने पुण्य का खाता जमा करते रहो। स्नेही, सहयोगी बनते रहो। अभी शिव शक्ति होके रहो। शिव परमात्मा साथ है। शिव शक्ति।

✚ आप सभी भी स्नेह के गीत गाते हो। बापदादा भी बच्चों के स्नेह के गीत गाते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा स्नेह का गीत रोज बापदादा गाते हैं। जिस गीत को सुन-सुन सभी स्नेही बच्चों का मन खुशी में नाचता रहता है। रोज गीत गाते इसीलिए यादगार में भी गीत का महत्व श्रेष्ठ रहा है। बाप के गीत का यादगार - 'गीता' बना दी। और बच्चों के गीत सुन खुशी में नाचने और खुशी में, आनन्द में, सुख में भिन्न-भिन्न अनुभवों के यादगार - भागवत् बना दिया है। तो दोनों का यादगार हो गया ना।

✚ दूसरी बात - मनन शक्ति का अभ्यास सदा न करने से समय पर बिना अभ्यास के अचानक काम में लगाने का प्रयत्न करते हो, इसलिए धोखा खा लेते हो। यह अलबेलापन आ जाता है - ज्ञान तो बुद्धि में है ही, समय पर काम में लगा लेंगे। लेकिन सदा का अभ्यास, बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। नहीं तो उस समय सोचने वाले को क्या टाइटल देंगे? - कुम्भकरण। उसने क्या अलबेलापन किया? यही सोचा ना कि आने दो, आयेंगे तो जीत लेंगे। तो ऐसा सोचना कि समय पर हो जायेगा, यह अलबेलापन धोखा दे देता है।

✚ तो मधुवन निवासी चलते फिरते चैतन्य दर्शनीय मूर्त हो। चलते फिरते आपका दर्शन होता रहता है। ऐसे हर कर्म करते अपने आपको दर्शनीय मूर्त समझकर चलते हो? या कभी साधारण भी

हो जाते हो? मन्दिर में देखा है हर कर्म का दर्शन होता है? अभी भगवान सो रहा है अभी नहा रहा है, अभी खा रहा है, अभी श्रृंगार कर रहा है। सबका दर्शन होता है। इससे क्या सिद्ध होता है? कि हर कर्म करते दर्शनीय मूर्त। इसलिए हर कर्म का दर्शन होता है। तो ऐसे दर्शनीय मूर्तियों का कितना महत्व है।

✚ इस वर्ष ऐसा कोई नया प्लैन बनाओ जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि जिस भी सम्बन्धी के पास गया उसको ज्ञान सुनाया, तो यहाँ भी आप बच्चों से जब भी कोई मिलने आये तो उसको यही अनुभव हो कि मैं कोई फरिश्ते से मिल रहा हूँ। आने से ही उसे जादू लग जाए। जहाँ जाए, जिससे मिले उससे जादू का ही अनुभव करे। जैसे शुरू-शुरू में बाप को देखा, मुरली सुनी, परिवार को देखा तो मस्त हो जाता था, ऐसे अभी भी जो सोचकर आवे, उससे पदमगुणा अनुभव करके जाए। ऐसा अब प्लैन बनाओ।

✚ बापदादा के पास भी कौन से बच्चे स्वीकार होंगे? जिनको मनसा में भी संकल्प न आये इसको कहा जाता है महाबली। ऐसे महान बलि को ही महान बल की प्राप्ति होती है। सर्वशक्तिवान के बच्चे हो और फिर शक्ति नहीं, बाप की पूरा जायदाद का हक़दार बनना है ना। सर्वशक्तिवान बाप की सर्व शक्तियों की जायदाद, जन्म-सिद्ध अधिकार सदैव अपने सामने रखो। सर्वशक्तिवान के आगे कमज़ोरी ठहर सकती है? आज से कमज़ोरी ख़त्म। सिर्फ़ एक शक्ति नहीं। पाण्डव भी शक्ति रूप हैं। एक दीप से अनेक जगते हैं।

✚ बापदादा को और कोई हीरे मोती तो चाहिए नहीं। बाप को स्नेह की छोटी वस्तु ही हीरे रत्न हैं। इसलिए सुदामा के कच्चे चावल गाये हुए हैं। इसका भावार्थ यही है कि स्नेह की छोटी-सी सुई में भी मधुबन याद आता है। तो वह भी बहुत बड़ा अमूल्य रत्न है। क्योंकि स्नेह का दाम है। वैल्यु स्नेह की है। चीज़ की नहीं। अगर कोई वैसे ही भल कितना भी दे देवे लेकिन स्नेह नहीं

तो उसका जमा नहीं होता। और स्नेह से थोड़ा भी जमा करे तो उनका पदम जमा हो जाता है। तो बाप को स्नेह पसन्द है।

✚ वह है सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि और कोई तो बिचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं, लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर बलि चढ़ते हैं तो शक्तियाँ वा देवियाँ ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती है तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार कर सकता है। अगर यहाँ स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊँच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है।

✚ अपना- अपना जो मूल संस्कार है, उसको मिटाकर बापदादा के संस्कारों को कॉपी करना सहज है या मुश्किल है? इसमें कॉपी भी रीयल हो जायेगी। सभी बापदादा के संस्कारों में समान हो। एक-एक बापदादा के समान हो गया फिर तो एक-एक में बापदादा के संस्कार दिखाई देंगे। तो प्रत्यक्षता किसकी होगी? बापदादा की। जैसे भक्ति-मार्ग में कहावत है जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है। लेकिन यहाँ प्रैक्टिकल में दिखाई देखें, जिसको देखें वहाँ बापदादा के संस्कार ही प्रैक्टिकल में जहाँ दें।

✚ जहाँ साथ वहाँ सफलता तो स्वतः ही हुई पड़ी है। वैसे भी भक्ति मार्ग में यही पुकार देते हैं - कि थोड़े समय के साथ का अनुभव करा दो, झलक दिखा दो लेकिन अब क्या हुआ ? सर्व सम्बन्ध से साथी हो गये। झलक वा दर्शन अल्पकाल के लिए होता है लेकिन सम्बन्ध सदाकाल का होता है, तो अब बाप के समीप सम्बन्ध में आ गये कि अभी तक भी जिज्ञासु हो। जिज्ञासा तब तक होती जब तक प्राप्ति नहीं। अब जिज्ञासु नहीं अधिकारी हो, हर सेकेण्ड का साथ है, हर सेकेण्ड में सम्बन्ध के कारण समीप हैं।

✚ शिव बाप ने ब्रह्मा माँ को आगे बढ़ाया और ब्रह्मा माँ ने सरस्वती माँ को आगे बढ़ाया। तो फालो फादर मदर हो गया ना। सदैव यह स्मृति में रखो कि आगे बढ़ाने में आगे बढ़ता समाया हुआ है। जबसे बापदादाने माताओं के ऊपर नजर डाली तब से दुनिया वालों ने भी 'लेडीज फर्स्ट' का नारा जरूर लगाया। नारा तो लगाते हैं ना? भारत की राजनीति में भी देखो तो सभी पुरुष भी नारी के लिए महिमा तो गाते हैं ना। ऐसे तो पाण्डव भी किसी हिसाब से नारियाँ ही हो। आत्मा नारी है और परमात्मा पुरुष है।

✚ जैसे नये वर्ष में उसी दिन विशेष नये-नये वस्त्र, नया-नया श्रृंगार, नया उमंग और विशेष खुशी का दिन समझते हुए सबको बधाई देते हैं, मुख मीठा कराते हैं वैसे आप रूहानी बच्चों के लिए संगमयुग का हर दिन सर्व को बधाई देने का है और सर्व का सदा के लिए मुख मीठा करने का है। ऐसे सदा उत्साह में रहना और औरों को भी उत्साह दिलाना। सदा मुख में मीठा बोल, यह है मुख मीठा होना और औरों को भी मीठे बोल द्वारा, मीठे बाप की स्मृति दिलाना, सम्बन्ध में लाना यह है - मीठा मुख कराना।

✚ 84 में कम से कम 84 का चक्र तो पूरा हो। उड़ने और नीचे आने का चक्र तो पूरा हो। 84 जन्म हैं, 84 का चक्र गाया हुआ है। 84 में जब यह चक्र पूरा होगा तब स्वदर्शन चक्र दूर से आत्माओं को समीप लायेगा। यादगार में क्या दिखाते हैं? एक जगह पर बैठे चक्र भेजा और वह स्वदर्शन चक्र स्वयं ही आत्माओं को समीप ले आया। स्वयं नहीं जाते। चक्र चलाते हैं। तो पहले यह चक्र पूरे हों तब तो स्वदर्शन चक्र चलें। तो अभी 84 में यह विधि अपनाओ जो सब हद के चक्र समाप्त हों ऐसे ही सोचा है ना।

✚ जो भी कदम याद में उठाते हो, तो एक सेकण्ड की याद इतनी शक्तिशाली है जो एक सेकण्ड की याद पद्यों की कमाई जमा करने वाली है। अगर साधारण कदम उठाते हैं, याद में नहीं उठाते तो कमाई नहीं है। याद में रहकर कदम उठाने से पद्यों की कमाई है। और हर कदम में पद तो कितने पद हो गये! इसलिए पद्मापद्म भाग्यवान कहा जाता है। पद तो आपके आगे कुछ भी नहीं है। लेकिन इस दुनिया के हिसाब से कहने में आता है। तो जब किसी की अच्छी कमाई होती है तो उसके चेहरे की फलक ही और हो जाती है।

✚ आगरा वालों ने भी कोई नई कमाल करके दिखाई नहीं है। होनी तो है ना! सारे विश्व में बाप का नाम बाला तो होना ही है। लेकिन जो निमित्त बनता है उसको एक्स्ट्रा मार्क मिल जाती हैं। उसका पद, जितनी सेवा की उस अनुसार एड होकर मार्कस जमा होती जाती हैं। समझो साधारण है लेकिन सेवा निर्विघ्न है, तो सेवा की मार्क्स एडीशन होने से साधारण राजा से आगे नम्बर में आ जाते हैं। और आगे-आगे जाते आखिर विश्व महाराजा के रॉयल फैमिली में आ जाते हैं। तो ये करना है ना! आगरा भी कमाल करेगा।

✚ नई सदी में अपने चलन और चेहरे से फरिश्ते स्वरूप को प्रत्यक्ष करो (24 तारीख को मधुवन आते समय आगरा सेवाकेन्द्र की माताओं की गाडी एक ट्रक से टकरा गई, जिसमें करीब 6 मातायें, एक टीचर तथा ड्राइवर टोटल - 8 ने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया और एक दिल्ली की पुरानी माता ने शान्तिवन में शरीर छोड़ा है, यह समाचार बापदादा को सुना रहे हैं) (एक कुमारी 18 साल की थी) वह भी लगन वाली थी। (घेवर-जलेबी) आप लोग गुलाब का फूल भी तलते हैं ना। (दीदी और चन्द्रमणि दादी) तो दीदी पहले उठी।

✚ जैसे चारों ओर अगर आग जल रही हो और एक कोना भी शीतल कुण्ड हो तो सब उसी तरफ दौड़कर जाते हैं, ऐसे शान्ति स्वरूप होकर शान्ति कुण्ड का अनुभव कराओ। उस समय वाचा

की सेवा नहीं कर सकते लेकिन मंसा से अपनी शान्ति कुण्ड की प्रत्यक्षता कर सकते हो। जहाँ भी शान्ति सागर के बच्चे रहते हैं वह स्थान 'शान्ति-कुण्ड' हो। जब विनाशी यज्ञ कुण्ड अपनी तरफ आकर्षित करता है तो यह 'शान्ति कुण्ड' अपने तरफ न खींचे यह हो नहीं सकता। सबको वायब्रेशन आने चाहिए कि बस यहाँ से ही शान्ति मिलेगी।

✚ जो सदा दिलतख्तनशीन हैं वह निश्चित ही निश्चिन्त हैं। जैसे कहते हैं - भावी टाली नहीं जाती, अटल होती है। ऐसे दिलतख्तनशीन आत्मा निर्भय है, निश्चिन्त हैं - यह निश्चित है, अटल है। दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। थोड़ा आकर्षण करके बाहर निकालने की कोशिश जरूर करेगी। जैसे सीता के लिए दिखाते हैं - लकीर से बाहर पाँव निकाला तब रावण आया, नहीं तो आ नहीं सकता। तो संकल्प भी बाहर निकलने का आया तो माया आ जायेगी। अगर दिलतख्त पर हो तो आ नहीं सकती। तो सिर्फ दिलतख्त पर बैठ जाओ।

✚ साकार शरीर के बंधन में आ गये ना, साकार शरीर के बंधन में इतना कर नहीं सकते लेकिन वतन में कर सकते हैं इसीलिए तो बंधनमुक्त हो गये ना। वहाँ जगह का सवाल नहीं, समय का सवाल नहीं लेकिन आपको पता है, एक गुप्त बात बताते हैं, बापदादा वतन में ग्रुप-ग्रुप को बुलाते हैं और उनसे रूहरिहान भी करते हैं। जैसे साकार में याद है - ब्रह्मा बाप ने एक एक ग्रुप को अपने पास भोजन पर बुलाया था, याद है? (क्लिफ्टन पर) ऐसे बापदादा वतन में बुलाते जरूर हैं लेकिन साकार में नहीं कर सकते।

✚ दिल्ली वालों का, उसमें भी विशेष शक्ति सेना का विशेष गुण कौनसा है? यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम में आई है। वह बहुत महत्व के समय काम में आई है। तो महत्व के समय पर अगर कार्य में चावल चपटी भी लगाते तो वह बहुत वृद्धि हो जाती है। जैसे समय इतना फलीभूत नहीं होता। समय पर सहयोग

देने से दिल्ली वालों को विशेष गिफ्ट की लिफ्ट मिली है। बाप की ओर से ड्रामा प्रमाण दिल्ली वालों को सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त है।

✚ हाल छोटा पड़ गया) शास्त्रों में यह आपका जो यादगार है, उसमें भी गायन है - पहले गिलास में पानी डाला, फिर उससे घड़े में डाला, फिर घड़े से तालाब में डाला, तालाब से नदी में डाला। आखरीन कहाँ गया? सागर में। तो यह महफिल पहले हिस्ट्री हाल में लगी, फिर मेडिटेशन हाल में लगी, अभी ओम् शान्ति भवन में लग रही है। अब फिर कहाँ लगेगी? लेकिन इसका मतलब नहीं कि साकार मिलन के बिना अव्यक्त मिलन नहीं मना सकते हो। अव्यक्ति मिलन मनाने का अभ्यास समय प्रमाण बढ़ना ही है और बढ़ाना ही है।

✚ जिन आत्माओं को, विशेष माताओं को हर बात में अयोग्य बना दिया है ऐसी अयोग्य आत्माओं को योग्य अर्थात् बाप के भी अधिकारी आत्मायें बना दिया। जिनको चरणों की जूती समझा है, बाप ने नयनों का नूर बना दिया। जैसे कहावत है - 'नूर नहीं तो जहान नहीं'। ऐसे ही बापदादा भी दुनिया को दिखा रहे हैं - 'भारत माता शक्ति अवतार नहीं तो भारत का उद्धार नहीं'। ऐसे अयोग्य आत्माओं से योग्य आत्मा बनाया। तो महान आत्मायें बन गये ना! जिन्होंने भी बाप को जाना और जानकर अपना बनाया वह महान हैं।

✚ यह चेक करो कि हर संकल्प से पदमों की कमाई जमा की? हर वचन से, हर कर्म से, हर कदम से पदमों की कमाई जमा की? नहीं तो यह कहावत किसलिए है - हर कदम में पदम हैं? पदम कमल पुष्प को भी कहते हैं ना। तो पदम समान बनकर चलने से हर संकल्प और हर कदम में पदमों की कमाई कर सकेंगे। एक संकल्प भी बिना कमाई के नहीं होगा। अब तो ऐसा अटेन्शन रखने का समय है - एक कदम भी बिना पदम की कमाई के न हो। ऐसे जब अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बन जायेंगे।

✚ एक - मन से, मुख से चिल्लाना और दूसरा कैसे भी मजबूरी से जीवन को, देश को चलाना। चिल्लाना और कार्य से चलाना। यह दो काम बाकी रह गये हैं। खुशी-खुशी से चलना वह समाप्त हो गया है। कैसे भी चलाना है यह रह गया है। विदेश में भी यह रूपरेखा बन गई है। तो यह भी क्या निशानी हुई? मजबूरी से चलाना कहाँ तक चलेगा! अब जो चिल्ला रहे हैं ऐसे विश्व को क्या करना है? मजबूरी से चलाने वालों को प्राप्ति के पंख दे उड़ाना है। कौन उड़ा सकेगा? जो स्वयं उड़ती कला में होगा। तो उड़ती कला में हो?

✚ जैसे स्थूल दिलवाड़ा है, उसकी विशेषता क्या है? हरेक कमरे की डिजाइन अलग-अलग वैरायटी है। हर कमरे की अपनी-अपनी विशेषता है। इसलिए यह मन्दिर सब मन्दिरों से न्यारा है। मूर्तियाँ तो औरों में भी होती है लेकिन इस मन्दिर में जहाँ जाओ वहाँ विशेष कारीगरी है। ऐसे चैतन्य दिलवाड़ा मन्दिर में भी हम मूर्तियों की विशेषता अपनी-अपनी दिखाई दे। जिसको देखें, उसकी एक दो से आगे विशेष विशेषता दिखाई दे। जैसे वहाँ कहते कमाल है बनाने वाले की। ऐसे यहाँ एक-एक की विशेषता की कमाल वर्णन करें।

✚ लेकिन हैं श्रेष्ठ आत्मा, पूज्य आत्मा, शक्ति रूप आत्मा... शक्ति के ऊपर किसी की भी नजर नहीं जा सकती। अगर किसी की गई तो दिखाते हैं - वह भैंस बन गया। और भैंस जैसे काली होती है तो वह भैंस अर्थात् काली आत्मा बन गई। और भैंस बुद्धि अर्थात् मोटी बुद्धि हो जायेगी। अगर किसी की भी बुरी दृष्टि जाती है तो वह मोटी बुद्धि, भैंस बुद्धि बन जायेगा। क्यों किसी की दृष्टि जाए। इसमें भी कमजोरी कुमारियों की कहेंगे। पाण्डवों की अपनी कमजोरी, कुमारियों की अपनी। इसलिए अपने को चेक करो।

✚ कैसा भी बच्चा होगा लेकिन बाप का फर्ज क्या है? रहम और कल्याण की भावना। इसीलिये बाप की महिमा में रहमदिल विशेष गाया हुआ है। चाहे देश में, चाहे विदेश में बाप के आगे

जायेंगे तो रहम दिल, मर्सीफुल कहेंगे। किसी भी चर्च में जायेंगे, कहीं भी जायेंगे तो मर्सीफुल कहते हैं ना। तो आप सभी भी रहमदिल हो ना। तो जो रहमदिल होगा वही कल्याण कर सकता है। और बाप को सबमें सागर कहते हैं। क्षमा का सागर, रहम का सागर..। सागर का अर्थ क्या है? अथाह, बेहदा तो इतना अथाह यानी बेहद का रहम है?

✚ वर्तमान के आगे भविष्य भी कुछ नहीं है। आप लोग गीत गाते हो ना कि स्वर्ग में क्या होगा और क्या नहीं होगा। और अभी का गीत क्या है? जो पाना था वो पा लिया.... वा पाना है? पा लिया। पाण्डवों ने पा लिया? गोपियों का तो गायन है ही। इस समय का गायन है कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। देवताओं के खज़ाने में नहीं, ब्राह्मणों के खज़ाने में। तो अभी ब्राह्मण हो ना? तो अनुभव करते हो कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु? और ये प्राप्तियाँ अविनाशी हैं, अल्पकाल की नहीं हैं।

✚ प्यूरिटी की सब्जेक्ट में वह बने बनाये और वह पुरुषार्थ की रेखा वाले हैं। बाकी टोटल सब सब्जेक्ट कीबात अलग है। यह एक सब्जेक्ट की बात है। वह 8 रत्नों की माला और वह 100 में पहले नम्बर। थर्ड क्लास तो इण्डिया गवर्मेण्ट भी कैन्सिल प्रजा है, थर्ड क्लास वाले तो सतयुग की पहली नामीग्रामी प्रजा है, जो रायल फैमली के सम्बन्ध में सदा रहेगी। अन्दर की प्रजा होगी। बाहर की नहीं। अन्दर वाले कनेक्शन में बहुत नजदीक होंगे, लेकिन मर्त्तबे से पीछे होंगे। लक्ष्य तो एयरकन्डीशन का है ना।

✚ आगे के लिए सदा स्वप्न मात्र भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता का खण्डन नहीं हो। अखण्ड पवित्रता- यह है बाल ब्रह्मचारियों का लक्ष्य और लक्षणा। अभी तक की मुबारक है लेकिन आगे भी बापदादा यही कहेंगे कि सदा अमर भव के वरदानी रहना ही है। अमर हैं ना! खण्डित तो नहीं ना! देखो खण्डित मूर्ति का कभी पूजन नहीं होता है, तो कोई भी व्रत अगर खण्डित

होता है तो वह अमर वरदानी आत्मा नहीं बन सकता है और ऐसा पूज्य जो द्वापर से कलियुग अन्त तक पूज्य बने, ऐसे इष्ट नहीं बन सकते, इसलिए सदा अमरभव।

✚ नॉलेजफुल बहुत बनते हो, पावरफुल कम बनते हो; तो बैलेन्स ठीक नहीं रहता। शक्तियों को और शक्ति को बैलेन्सड दिखाते हैं, आशीर्वाद देता हुआ दिखाते हैं। तो स्वयं अपने बैलेन्स में ठीक ना होंगे, अपने ऊपर ही बैलेन्स नहीं कर सकेंगे तो अनेकों के लिए मास्टर ब्लिसफुल कैसे बन सकेंगे? अभी तो इस चीज़ के सभी भिखारी हैं। ब्लिस के वरदानी वा महादानी शिव और शक्तियों के सिवाए कोई नहीं हैं। तो जिस चीज़ के वरदानी वा महादानी हो वह पहले स्वयं में सम्पन्न होंगी तभी तो दूसरों को दे सकेंगे ना।

✚ अभी साधारण और श्रेष्ठ दोनों चलते हैं या सिर्फ श्रेष्ठ चलते हैं? क्या होता है? थोड़ा-थोड़ा चलता है? तो सदैव मैं ऊंचे से ऊंची श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ - यह स्मृति इमर्ज रखो। देखो, जो आजकल के नामधारी ब्राह्मण हैं, उन ब्राह्मणों से भी कौन-सा कार्य कराते हैं? जहाँ कोई श्रेष्ठ कार्य होगा तो ब्राह्मणों को बुलाते हैं। तो यह आप लोगों के यादगार हैं ना। क्योंकि आप श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सदा श्रेष्ठ कार्य किया है, तभी अब तक भी यादगार में ब्राह्मण श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं।

✚ ज्ञान सरोवर में दो लक्ष्य हैं - एक तो विशेष सेवा, दूसरा ब्राह्मणों का एशलम। तो दोनों लक्ष्य के कारण इसी विधि से बनाया है। यहाँ पाण्डव भवन में सिवाए ब्राह्मणों के एलाउ नहीं करते लेकिन वहाँ अनेक सम्पर्क वाले नजदीक सम्बन्ध में आयेंगे। जो नाम है ईश्वरीय विश्वविद्यालय, तो जो नाम है विद्यालय उस नाम को भी प्रत्यक्ष करेंगे। तो डबल सेवा है ना? यहाँ ब्राह्मणों के हिसाब से बना हुआ है और वहाँ विश्व की सर्व आत्माओं के हिसाब से। इसलिये अन्तर हो गया ना, लक्ष्य में अन्तर हो गया।

✚ सिर्फ लव है इस तक नहीं रह जाना। लीन हो जाओ। इसी श्रेष्ठ स्थिति को लीन हो जाने को ही लोगों ने बहुत श्रेष्ठ माना है। अगर आप किसी को भी कहते हो हम तो जीवनमुक्ति में आयेंगे। तो वो समझते हैं कि ये तो चक्कर में आने वाले हैं और हम चक्कर से मुक्त हो करके लीन हो जाएंगे। क्योंकि लीन होना अर्थात् बंधनों से मुक्त हो जाना। इसलिए वे लीन अवस्था को बहुत ऊंचा मानते हैं। समा गये, लीन हो गये। लेकिन आप जानते हो कि वह जो लीन अवस्था कहते हैं, ड्रामा अनुसार प्राप्त किसको भी नहीं होती है।

✚ क्योंकि यह तो सब जानते हो कि यह छोटा सा संगमयुग चढ़ती कला का है। इस युग को वा समय को ड्रामानुसार वरदान मिला हुआ है - 'चढ़ती कला सर्व का भला' - और कोई भी युग को ऐसा वरदान प्राप्त नहीं है। यह विशेषता धर्माऊयुग भी है अर्थात् यथार्थ धर्म और यथार्थ कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्माएं इस धर्माऊयुग में पार्ट बजाती हैं। धर्म सत्ता, राज्य सत्ता, विज्ञान की सत्ता, सर्व सत्ताएं इस युग में ही अपना विशेष पार्ट दिखाती हैं अर्थात् इस समय ही यह तीनों सत्ताएं आत्माओं को प्राप्त होती हैं।

✚ बापदादा को एक बात पर बहुत हंसी आ रही है। कौन सी बात? हैं महावीर लेकिन जैसे शास्त्रों में हनुमान को महावीर भी कहा है लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है मैंपन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी इस मैं, मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं। ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना है?

✚ हरेक की महिमा एक दूसरे से महान है। क्योंकि फॉरेन से आवाज़ निकलना है। देहली में राजधानी बननी है और यू.पी. में यादगार बनने हैं। तो तीनों का महत्व अपना-अपना श्रेष्ठ हुआ ना। फॉरेन का आवाज़ अभी शुरू होने वाला है और देहली की पुरानी गद्दी अभी हिलने वाली है। और यू.पी. के भक्त सब अपने इष्ट देवों को ढूँढ भक्ति का फल लेने के लिए तड़प रहे हैं। भक्त भी तैयार हो रहे हैं अपने इष्ट देवों से मिलने के लिए। अभी, मास्टर भगवान तैयार हो जाओ। तो दर्शन का पर्दा खुले। दर्शन का पर्दा है - समय।

✚ [पूरी सरेन्डर थी, दो मास से यहाँ थी, लास्ट के तीन-चार दिन साइलेन्स में थी, अचानक तबियत खराब हुई और 2-3 दिन हॉस्पिटल में ट्रीटमेंट चली] ऐसे अच्छे-अच्छे ही चाहिए ना, जो वायब्रेशन से कार्य कर सकें। तो यह जाना नहीं कहेंगे, सेवा में आना कहेंगे। यह भी कई आत्माओं को बेहद का वैराग्य दिलाने के लिए निमित्त बनी है। इतने बड़े विशाल मेले से जाना यह भी बेहद मेले में बेहद का पार्ट बजाना है। तो आप कहेंगे क्या चली गई? नहीं, चली नहीं गई लेकिन भिन्न-भिन्न ड्रेस से भिन्न पार्ट बजाने आई।

✚ बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो। जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो। चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगाये अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

✚ तख्त पर नहीं बैठे लेकिन रॉयल फैमिली के साथी तो बनें। बापदादा ने पहले भी कहा है इसकी परख कैसे करो! जबसे आप आये हो जितनी आयु आपकी है ज्ञान की उतने समय में अगर

आप बापदादा के दिलतखतनशीन रहे हैं तो जो ज्यादा समय दिलतखत पर रहे हैं मिट्टी में पांव नहीं रखा है वह उस अनुसार रॉयल फैमिली में नजदीक सम्बन्ध में रहेंगे। रॉयल फैमिली वाले रहेंगे। तो प्यार है तो प्यार वाले साथ में निभाने में पीछे नहीं रहते। जो दिलतखतनशीन हैं वह द्वापर कलियुग के भी संबंध में रहेंगे। नजदीक रहेंगे।

✚ सभी को संकल्प होता है कि हमें कोई वरदान मिले। बापदादा बोले जब हैं ही वरदाता के बच्चे तो सर्व वरदान तो आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है। अभी तो क्या लेकिन जन्मते ही वरदाता ने वरदान दे दिये। विधाता ने भाग्य की अविनाशी लकीर जन्मपत्री में नूँध दी। लौकिक में भी जन्मपत्री नाम संस्कार के पहले बना देते हैं। भाग्य विधाता बाप ने, वरदाता बाप ने ब्रह्मा माँ ने जन्मते ही ब्रह्माकुमार वा कुमारी के नाम संस्कार के पहले सर्व वरदानों और अविनाशी भाग्य की लकीर स्वयं खींच ली। जन्मपत्री बना दी।

✚ कई सोचते हैं अन्त में विमान बन्द हो जायेंगे फिर हम कैसे जायेंगे? परमात्म प्यार में वह शक्ति है जो किसी की आंखों में ऐसा जादू कर देगी जो वह आपके भेजने लिए परवश हो जायेंगे लेकिन सिर्फ प्यार करने वाले नहीं, लेकिन निभाने वाले हों। निभाने वाली आत्माओं से बाप का भी वायदा है - अन्त तक हर समस्या को पार करने में प्रीति की रीति निभाते रहेंगे। कभी-कभी प्रीत करने वाले नहीं बनना। सदा निभाने वाले। प्रीत करना अनेकों को आता है लेकिन निभाना कोई-कोई को आता है इसलिए आप कोई में कोई हो।

✚ जब तीनों लोकों का चक्र लगा सकते हो, तो विश्व का चक्कर लगाना क्या बड़ी बात है! जैसे पहले के योग्य राजाएं सदा अपने राज्य का चक्र लगाते थे। प्रजा को सदा सुखी और संतुष्ट रखते थे। यह सब किससे सीखे? 'सब रीतिरस्म का फाउन्डेशन (Foundation; आधार) संगम समय है, और संगम निवासी ब्राह्मण हैं।' इसलिए ही अब तक भी कोई रस्म करने के

लिए ब्राह्मणों को ही बुलाया जाता है। तो आप लोगों से राजाएं रस्म सीखे हैं, आप सिखलाने वाले स्वयं तो अवश्य कर सकते हो इसलिए मास्टर रचता बन विश्व की रेखदेख करो।

✚ लेकिन पहला नम्बर विजयी रत्न और जो लास्ट का विजयी रत्न है उनमें कोई विशेष सब्जेक्ट (विषय) पर विजय का आधार है वा टोटल नम्बर पर आधार है। एक होता है विशेष सब्जेक्ट में। दूसरा होता है सब सब्जेक्ट के टोटल मार्क्स का अन्तर। तो इसकी गुह्यता क्या है अर्थात् विजय की गुह्य गति? इसमें बहुत कुछ रहस्य भरा हुआ है। युगल दाने की विशेष सब्जेक्ट कौन सी है और अष्ट रत्नों की कौन सी है। 100 रत्नों की कौन सी है? उसमें भी आगे और पीछे वालों में क्या अन्तर है? इस गुह्य गति को आपस में मनन करना।

✚ बापदादा के लिए और ही जो पीछे-पीछे आते हैं वह विशेष स्नेह के पात्र हैं। जैसे छोटे बच्चे होते हैं तो उनको एक्स्ट्रा प्यार दिया जाता है। आप तो छोटे नहीं हो, बड़े हो फिर भी बापदादा के पास सेवाधारियों के लिए सदा रिगार्ड है, क्योंकि साथी हैं ना! अगर आप लोग सेवा के निमित्त नहीं बनते तो बाप को कौन जानता! बापदादा - आप राइट हैण्डस के बिना स्थापना नहीं कर सकते। इसलिए तो देखो दूर-दूर से चुनकर राइट हैण्ड बना लिए। इसीलिए ब्रह्मा की भुजायें बहुत गाई हुई हैं। तो आप सब राइट हैण्डस हो ना?

✚ हरेक मणी अपने द्वारा बाप के गुणों और कर्तव्य को नम्बरवार प्रत्यक्ष कर रही है। हरेक मणी द्वारा बाप-दादा दिखाई देता है। इस विचित्र रंगत को भक्तों ने “जहाँ देखे वहाँ तू ही तू” कह दिया है। महारथी में भी बाप-दादा दिखाई देगा और लास्ट सो फास्ट में भी बापदादा ही दिखाई देता। हरेक के मुख से एक ही बाबा बाबा शब्द का गीत सुनाई देता। सर्व ब्राह्मण आत्माओं के नयनों में एक बाप नूर के समान समाया हुआ है - इसीलिए ब्राह्मण संसार में जहाँ देखे वहाँ तू ही तू का प्रैक्टिकल अनुभव होता है।

✚ रोज मिलन मनाना है। तीसरी बात- लेना और देना। लौकिक रीति से भी किसी मेले में जायेंगे तो पैसा देंगे और कोई चीज़ लेंगे। कुछ न कुछ लेते जरूर हैं। और लेने से पहले देना तो है ही। तो सदा लेते हो। एक दो में भी सदा हर एक की विशेषता वा गुणों को लेते ही हो। लेते हो ना सदा? जब लेते हो अर्थात् स्वयं में धारण करते हो। तो जब विशेषता धारण करेंगे उसके बदले साधारणता स्वतः ही खत्म हो जाती है। गुण को धारण करते हो तो उस गुण के धारणा की कमजोरी स्वतः ही समाप्त हो जाती है। तो यही देना हो जाता है।

✚ सबके मुख से अभी यह आवाज निकल रहा है कि अब क्या होगा? यह क्वेश्चन मार्क सबकी बुद्धि में स्पष्ट हो गया है। अब फिर यह बोल निकलेंगे कि जो होना था वह हो गया। बाप आ गया। क्वेश्चन मार्क्स समाप्त हो, फुल स्टॉप लग जाएगा। जैसे मथनी से मक्खन निकाला जाता है तो पहले हलचल होती है बाद में मक्खन निकलता है। अब तेजी से हलचल शुरू हो गई है। चारों ओर अब प्रत्यक्षता का मक्खन विश्व के आगे दिखाई देगा। लेकिन इस मक्खन को खाने वाले कौन? तैयार हो ना खाने के लिए? सभी आप फरिश्तों का आह्वान कर रहे हैं।

✚ सदा अपने को पुण्य आत्मा समझते हो? सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य है - बाप का सन्देश दे बाप का बनाना। ऐसा श्रेष्ठ कर्म करने वाली पुण्य आत्मा हो क्योंकि अब की पुण्य आत्मा सदाकाल के लिए पूज्य बन जाती है। पुण्य आत्मा ही पूज्य आत्मा बनती है। अल्पकाल का पुण्य भी फल की प्राप्ति कराता है लेकिन वह है अल्पकाल का, यह है अविनाशी पुण्य। क्योंकि अविनाशी बाप का बनाते हो। इसका फल भी अविनाशी मिलता है। जन्म-जन्म के लिए पूज्य आत्मा बन जायेंगे। तो सदा पुण्य आत्मा समझते हुए हर कर्म पुण्य का करते रहो।

✚ हर बात में “अब” हो। इतना परिवर्तन वाणी, कर्म और संकल्प में लाना है। संकल्प में भी अब यह न आये कि कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। नहीं। अब हो ही जायेगा। ऐसा परिवर्तन करना

है तब सर्विस की सफलता है। अगर स्वयं में ही कब होगा तो आप की प्रजा भी कहेगी कि अच्छा तो बहुत लगा कब कर लेंगे या कब हो जायेगा। कब पर छोड़ने वाले पिछली प्रजा के होते हैं। तो अब नजदीक की प्रजा बनानी है। नजदीक की प्रजा बनाने के लिए नाज़ुकपना छोड़ना पड़ेगा। नाजों से चलना छोड़ राजों से चलना है। अलबेलापन नाज़ुकपन होता है।

✚ विदेश वाले जैसे अभी निमन्त्रण देते हैं ना, आओ चक्कर लगाने आओ। दीदी आवे, दादी आवे, फलाने आवें, तो जैसे अभी चक्कर लगाने जाते हो-थोड़े टाइम के लिए, ऐसे ही भविष्य में भी चक्कर लगाने जायेंगे। सेकेण्ड में पहुँचेंगे। देरी नहीं लगेगी। क्योंकि एक्सीडेंट तो होगा नहीं। इसलिए स्पीड की कोई लिमिट की आवश्यकता नहीं। एक ही दिन में सारा चक्कर लगा सकते हो। सारा वर्ल्ड एक दिन में घूम सकते हो। यह एटम एनर्जा आपके काम में आनी है। रिफाइन करने में लगे हुए हैं ना! यह आप लोगों को कोई दुःख नहीं देगी।

✚ अभी दिन प्रतिदिन जितना आगे समय आयेगा उतना भक्तों के आह्वान का आवाज़, उन्हीं की भावनायें सब आपके पास स्पष्ट रूप में अनुभव होंगी। कौनसी इष्ट देवी वा देवता हो वो भी मालूम पड़ेगा। थोड़े पक्के हो जाओ फिर यह सब दिव्य बुद्धि की टचिंग द्वारा ऐसा अनुभव होगा जैसे दिव्य दृष्टि से स्पष्ट दिखाई देता है। अभी तो सज रहे हो इसलिए प्रत्यक्षता का पर्दा नहीं खुल रहा है। जब सज जायेंगे तब पर्दा खुलेगा। और स्वयं को भी देखेंगे। फिर सबके मुख से निकलेगा कि यह फलानी देवी भी आ गई। फलाना देवता भी आ गया।

✚ एक सेकेण्ड कितना बड़ा हुआ! तो कभी भी ऐसे नहीं समझना कि सिर्फ एक सेकेण्ड ही तो व्यर्थ हुआ! लेकिन एक सेकेण्ड अनेक जन्मों की कमाई या नुकसान का आधार है। गाया हुआ है ना-कदम में पद्यों की कमाई है। एक कदम उठाने में कितना टाइम लगता है? सेकेण्ड ही लगता है ना। सेकेण्ड गँवाना अर्थात् पद्मापद्म गँवाना। इस वैल्यु को सदा सामने रखते हुए

सफल करते जाओ। चाहे स्वयं के प्रति, चाहे औरों के प्रति-सफल करते जाओ तो सफल करने से सफलतामूर्त अनुभव करेंगे। सफलता समर्थ आत्मा के लिए जन्मसिद्ध अधिकार है।

✚ अपने को सदा जगे हुए दीपक समझते हो? आप विश्व के दीपक अविनाशी दीपक हो जिसका यादगार अभी भी दीपमाला मनाई जाती है। तो यह निश्चय और नशा रहता है कि हम दीपमाला के दीपक हैं? अभी तक आपकी माला कितनी सिमरण करते रहते हैं? क्यों सिमरण करते हैं? क्योंकि अंधकार को रोशन करने वाले बने हो। स्वयं को ऐसे सदा जगे हुए दीपक अनुभव करो। टिमटिमाने वाले नहीं। कितने भी तूफान आयें लेकिन सदा एकरस, अखण्ड ज्योति के समान जगे हुए दीपक। ऐसे दीपकों को विश्व भी नमन करती है और बाप भी ऐसे दीपकों के साथ रहते हैं।

✚ अभी जब थोड़ी-सी प्रत्यक्षता होगी ना कि एक ही बाप है, वही अल्लाह है, वही ईश्वर है। थोड़ा-सा प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा तो कैसे भी देश हो, कैसे भी धर्म हो, चाहे मुस्लिम देश हो फिर भी अल्लाह को तो मानते हैं ना। तो वो दिन भी आयेगा जो सब कहेंगे कि एक हैं, एक हैं, यही हैं, यही हैं, इस झण्डे के नीचे सभी आयेंगे। अभी थोड़ी-सी प्रत्यक्षता होने दो। अभी कहते हैं ये भी हैं। यही हैं, नहीं कहते हैं। ये भी हैं। अभी 'भी' निकल जाये, 'ये ही हैं'। इसको कहा जाता है प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना।

✚ आगे चल कर बहुत अच्छी सीन-सीनरियाँ आयेंगी। लेकिन वह सीन-सीनरियाँ आपका परिवर्तन ही नजदीक लायेगा। अपनी वैल्यू का भी पता पड़ेगा जब अपनी वैल्यू का पता पड़ेगा तब वह नशा चढ़ेगा। अभी कभी क्या वैल्यू रखते हो कभी क्या वैल्यू रखते हो। भाव में हेर-फेर होते हैं। जैसे कोई चीज निकलती है तो पहले भाव थोड़ा नीचे ऊपर होता है फिर फाइनल हो जाता है। अपनी वैल्यू का अभी फाइनल मालूम नहीं पड़ा है। कभी समझते हो बहुत वैल्यू

है, कभी कम समझते हो। लेकिन यथार्थ हर एक की वैल्यू क्या है - वह अभी जल्दी मालूम पड़ेगा।

✚ इसके लिए सर्व संगठित रूप का पुरूषार्थ कौन-सा है? जानते हो? उसी पुरूषार्थ का वर्णन और चित्र अब तक भक्ति में चल रहा है। कौन-सा? पुरूषार्थ का चित्र वा गायन क्या है? समाप्ति का चित्र क्या दिखाया है? स्थापना के वर्णन का चित्र भी वही है और समाप्ति का भी चित्र वही है। यज्ञ रचा तो स्थापना का चित्र भी यज्ञ रचा। और समाप्ति में भी यज्ञ में सर्व ब्राह्मणों के संगठित रूप में “स्वाहा” के दृढ़ संकल्प की आहुति पड़े तब यज्ञ समाप्त होना है अर्थात् विश्व-परिवर्तन का कार्य समाप्त होना है।

✚ क्योंकि बापदादा को ड्रामा में गरीब निवाज़ कहा जाता है तो विदेश गरीब नहीं है, भारत गरीब है और बाप को गरीब पसन्द हैं। इसीलिये गरीब से गरीब भारत में आया, लण्डन में नहीं आया। अमेरिका में भी नहीं आया। भारत अविनाशी है। अविनाशी खण्ड फिर भी भारत ही होगा। ये अमेरिका तो अभी निकली है, अभी खत्म हो जायेगी। बाप अविनाशी है तो अविनाशी खण्ड में ही आता है। भारत को नशा भी बहुत है। भारत को सबसे बड़ा नशा है कि हमने भगवान को भी अपने प्यार के रस्सी में बांध लिया है। देखो अभी भी भारत में आते हैं ना।

✚ यह ‘मैं-पन’ कमजोर करता है। बहुत अच्छे रॉयल रूप हैं। अपनी लाइफ में देखो-यही ‘मैं-पन’ संस्कार के रूप में, स्वभाव के रूप में, भाव के रूप में, भावना के रूप में, बोल के रूप में, सम्बन्ध-सम्पर्क के रूप में और बहुत मीठे रूप में आता है? शिवरात्रि पर यह ‘मैं’-‘मैं’ की बलि चढ़ती है। भक्त बेचारों ने तो बकरी के ‘मैं-मैं.....’ करने वाले को बलि चढ़ाया। लेकिन है यह ‘मैं-मैं’, इसकी बलि चढ़ाओ। यादगार तो आप लोगों का और रूप में मना रहे हैं। बलि चढ़ चुके हैं या अभी थोड़ी ‘मैं-पन’ की बलि रही हुई है?

- ✚ आदि में तो जगत अम्बा बच्चों को यही कहती थी तो कै-कै की भाषा नहीं करो। कै-कै ज्यादा कौन करता है? वह अच्छा लगता है? तो अभी क्यों क्यों की क्या नहीं लगाओ। हाँ जी, अच्छा जी, बहुत अच्छा, हम मिलके करेंगे, उड़ेंगे ऐसे बोल बोलो। हो सकता है भाषा परिवर्तन? कै-कै नहीं, यह क्या छोड़ दो तो वह क्या लगेगी। तो सभी ने बापदादा को, क्योंकि शिव के ऊपर अक के फूल ही चढ़ते हैं तो आज शिवरात्रि मना रहे हो, शिव का जन्म दिन मना रहे हो तो यह क्रोध का अक का फूल बापदादा को अर्पण कर दो तो आप दर्पण बन जायेंगे।
- ✚ आन्ध्रप्रदेश में गरीबी बहुत है ना। और आप फिर इतने ही साहूकार हो! चारों ओर गरीबी बढ़ती जाती है और आपके यहाँ साहूकारी बढ़ती जाती है क्योंकि ज्ञान का धन आने से यह स्थूल भी स्वतः ही दाल-रोटी मिलने जितना आ ही जाता है। कोई ब्राह्मण भूखा रहता है? तो स्थूल धन की गरीबी भी समाप्त हो जाती है क्योंकि समझदार बन जाते हैं। काम वरके स्वयं को खिलाने के लिए वा परिवार को खिलाने के लिए भी समझ आ जाती है। इसलिए डबल साहूकारी आ जाती है। शरीर को भी अच्छा और मन को भी अच्छा। दाल-रोटी आराम से मिल रही है ना।
- ✚ बाद में भी हर एक आत्मा के कई जन्म भारत भूमि में ही हुए हैं क्योंकि जो ब्रह्मा बाप के समीप आत्मायें हैं, समान बनने वाली आत्मायें हैं, वह ब्रह्मा बाप के साथ - साथ आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी का पार्ट भी साथ में बजाती हैं। द्वापर युग के पहले भक्त आप ब्राह्मण आत्मायें बनती हो। आदि स्वर्ग में इसी देश के वासी थे और अनेक बार भारत - भूमि के देशवासी हो। इसलिए ब्राह्मणों के अलौकिक संसार 'मधुवन' से अति प्यार है। यह मधुवन ब्राह्मणों का छोटा - सा संसार है। तो यह संसार बहुत अच्छा लगता है ना।

✚ तो जब तक फाइनल रिजल्ट आउट नहीं हुई है, तब तक बापदादा चाहे जानते भी हैं कि वर्तमान समय के प्रमाण लास्ट हैं लेकिन फिर भी लास्ट नहीं समझते। कभी भी लास्ट सो फर्स्ट बन सकता है, मार्जिन है। कभी - कभी क्या होता है - जो बहुत तेज चलते हैं, वह नजदीक टाइम पर थक जाते हैं; और जो धीरे - धीरे चलते हैं, कभी रूकते नहीं, तरीके से चलते हैं। तो वह रूक जाते हैं और वह पहुँच जाते हैं। इसलिए अभी बाप की नजर में सब नम्बरवन हैं। जब रिजल्ट आउट होगी, तब कहेंगे - यह लास्ट है, यह फर्स्ट है। अभी नहीं कह सकते।

✚ यह विजय माला क्या है? विजयी बने हैं, सफलतामूर्त बने हैं तो तो निशानी है ना! इस भावी को टाल नहीं सकते। कोई कितना भी सोचे कि अभी तो इतने तैयार नहीं हुए हैं, अभी तो खिट-खिट हो रही है-इसमें घबराने की जरूरत नहीं। कल्प-कल्प के सफलता की गारन्टी यह यादगार है। 'क्या होगा', 'कैसे होगा'-इस क्वेश्चन-मार्क की भी आवश्यकता नहीं है। होना ही है। निश्चित है ना। निश्चित भावी को कोई हिला नहीं सकता। अगर नाव और खिवैया मजबूत हैं तो कोई भी तूफान आगे बढ़ाने का साधन बन जाता है। तूफान भी तोहफा बन जाता है।

✚ ट्रस्टी बनकर के निभाने से सहज भी होगा और सफल भी होंगे। तो सब चिंता छोड़कर जाना। जिनके पास थोड़ी-बहुत हो, तो छोड़कर जाना, साथ नहीं ले जाना। वैसे तीर्थ पर कुछ छोड़कर आते हैं ना। तो यह भी महान तीर्थ है ना! तो सदा के लिए निश्चित, निश्चयबुद्धि। समझा? किचड़ा साथ में नहीं रखा जाता है। माताओं को आदत होती है-पुरानी चीज़ भी होगी तो गांठ बांधकर रख देंगी! तो यह भी गांठ बाँधकर नहीं जाना। मातायें गठरी बांधती हैं, पाण्डव जेब में रखते हैं। तो इसे छोड़कर निश्चित अर्थात् सदा अचल-अडोल स्थिति में रहना।

✚ जब यह झण्डा लहराया तो बच्चों को कितनी खुशी हो रही है। और जब विश्व में सभी के आगे झण्डा लहरेगा तो कितनी खुशियाँ होंगी! कितनी तालियाँ बजेंगी। झण्डा सदा ऊंचा रखते हैं

क्यों? ऊंचे का अर्थ है कि सबकी नज़र उस तरफ जाये तो जब प्रत्यक्षता का झण्डा लहरेगा तो सबकी नज़र उसी एक बाप के तरफ होगी। आपके दिलों में तो बाप का झण्डा याद का है ही लेकिन अभी दूसरों के दिलों में ये प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना है। ये तो कपड़े का झण्डा लहराया लेकिन प्रत्यक्षता का झण्डा सभी को मिलकर लहराना है और लहरना ही है।

✚ कितनी ही बार के विजयी हो? जो अनेक बार का विजयी है वह कितना निर्भय होगा? क्या वह डरेंगे? शक्तियों ने बाप को प्रत्यक्ष करने का नगाड़ा कौन-सा बजाया है? कुम्भकरण को जगाने के लिये बड़ा नगाड़ा बजाओ। छोटा नगाड़ा बजाती हो तो कुम्भकरण करवट तो बदलते हैं अर्थात् अच्छा-अच्छा तो करते हैं परन्तु फिर सो जाते हैं। तो उन्हीं के लिए अब छोटे-मोटे नगाड़े से काम न होगा, इसलिए बार-बार सम्पर्क बढ़ाना पड़े। उन्हीं का दोष नहीं, वह तो गहरी नींद में हैं। तुम्हारा काम है कोई विशेष प्रोग्राम बनाय उन्हीं को जगाना।

✚ बापदादा के पास हर एक बच्चे का आदि से अन्त तक सेवा का खाता है। और आटोमेटिकली उसमें जमा होता रहता है। एक-एक का एकाउन्ट नहीं रखना पड़ता हैं। एकाउन्ट रखने वालों के पास बहुत फाइल होती हैं। बाप के पास स्थूल फाइल कोई नहीं है। एक सेकण्ड में हर एक का आदि से अभी तक का रजिस्टर सेकण्ड में इमर्ज होता है। आटोमेटिक जमा होता रहता है। ऐसे कभी नहीं समझना हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है सब जमा होता है। फाइल नहीं है लेकिन फाइनल है।

✚ दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। अविनाशी लंगर लगाओ। क्योंकि समय कम है और सेवा आत्माओं की, वायुमण्डल की, प्रकृति की, भूत-प्रेत आत्माओं की, सबकी करनी है। उन भटकती हुई आत्माओं को भी ठिकाना देना है। मुक्तिधाम में तो भेजेंगे ना! उन्हीं को घर तो देंगे ना! तो अभी कितनी सेवा करनी है! कितनी संख्या है

आत्माओं की! हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति देनी ही है। सब कुछ सेवा में लगाओ तो श्रेष्ठ मेवा खूब खाओ। मेहनत का मेवा नहीं खाओ। सेवा का मेवा, मेहनत से छुड़ाने वाला है।

लेकिन लास्ट परिवर्तन है - एक है, एक है, एक है। वह होगा जब ब्राह्मण परिवार एकरस स्थिति वाले हो जायें। अभी स्थिति बदलती रहती है। एकरस स्थिति एक को प्रत्यक्ष करेगी। ठीक है ना! तो डबल फॉरिनर्स एकसैम्पल बनो। सम्मान देने में, स्वमान में रहने में एकसैम्पुल बनो, नम्बर ले लो। चारों ओर जैसे मोहजीत परिवार का दृष्टान्त बताते हैं ना, जो चपरासी भी, नौकर भी सब मोहजीत। वैसे कहाँ भी जाये अमेरिका जाये, ऑस्ट्रेलिया जाये, हर देश में एकरस, एकमत, स्वमान में रहने वाले, सम्मान देने वाले, इसमें नम्बर लो।

बापदादा अभी ऐसा ग्रुप चाहता है जो सदा मन्सा में, वाणी में, बोल में, सम्पर्क में जो ओटे सो अर्जुन। मैं अर्जुन हूँ। मैं जो करूँगा, ('मैं' बॉडी कॉन्सेस का नहीं, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ) मुझे देख और करेंगे। तो जो ओटे सो अर्जुन। जो गाया हुआ है, अव्वल नम्बर अर्थात् अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप बापदादा देखना चाहते हैं। बातों को नहीं देखें, दूसरों को नहीं देखें, दूसरे का व्यर्थ नहीं सुनें। बस, अलौकिक जन। संकल्प, बोल और कर्म सबमें अलौकिक, दिव्यता की झलक हो। इसको कहा जाता है अर्जुन, अलौकिक जन।

तो जो भी कोई ऐसी बात हो, बाबा हाजिरा हजूर है, उसको दे दो, और अगर वापस आवे तो अमानत समझके फिर दे दो। अमानत में ख्यानत नहीं की जाती है। क्योंकि आपने तो दे दी, तो बाप की चीज़ हो गई, बाप की चीज़ या दूसरे की चीज़ आपके पास गलती से आ जाए, आप अलमारी में रख देंगे? रख देंगे? निकालेंगे ना। कैसे भी करके, निकालेंगे, रखेंगे नहीं। सम्भालेंगे

तो नहीं ना। तो दे दो। बाप लेने के लिए आया है। और तो कुछ आपके पास है नहीं जो दो। लेकिन यह तो दे सकते हो ना। अक के फूल हैं, वह दे दो। सम्भालना अच्छा लगता है क्या?

✚ ड्रिल तो याद है ना। भूल तो नहीं गये हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं आगे का समय अति हाहाकार का होगा। आप सबको सकाश देनी पड़ेगी और सकाश देने में ही आपका अपना तीव्र पुरुषार्थ हो जायेगा। थोड़े समय में सकाश द्वारा सर्व शक्तियां देनी पड़ेगी और जो ऐसे नाजुक समय में सकाश देंगे जितनों को देंगे चाहे बहुतों को चाहे थोड़ों को उतने ही द्वापर और कलियुग के भक्त उनके बनेंगे। तो संगम पर हर एक भक्त भी बना रहे हैं क्योंकि दिया हुआ सुख और शान्ति उनके दिल में समा जायेगा और भक्ति के रूप में आपको रिटर्न करेंगे।

✚ अपने को विश्व के अन्दर सर्व आत्माओं से न्यारे और बाप के प्यारे विशेष आत्माएं समझते हो? तो साधारण आत्माएं और विशेष आत्माओं में अन्तर क्या होता है, इस अन्तर को जानते हो? विशेष आत्माओं की विशेषता यही प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देनी चाहिए जो सदा अपने को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करें। जो गायन है “अप्राप्त नहीं कोई वस्तु”... वह इस समय जब सर्व शक्तियों से अपने को सम्पन्न करेंगे तब ही भविष्य में भी सदा सर्व गुणों से भी सम्पन्न, सर्व पदार्थों से भी सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज को पा सकेंगे।

✚ बच्चों का लक्ष्य सूर्यवंश का है अर्थात् सदा विजयी का है, नम्बरवन सूर्यवंशी की निशानी है सदा विजयी। सूर्य की कलायें कम और ज्यादा नहीं होतीं। उदय होता है और अस्त होता है लेकिन चन्द्रवंशी मुआफक कलायें कम नहीं होतीं। तो सूर्यवंश की निशानी है सदा एकरस और सदा विजयी। चन्द्रवंश को क्षत्रिय कहा जाता है, क्षत्रिय जीवन में कभी हार होती, कभी जीत होती। कभी सफलतामूर्त्त और कभी मेहनत की मूर्त्त। युद्ध करना अर्थात् मेहनत करना। चन्द्रवंश की कलायें एकरस नहीं होतीं, इसलिए लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ।

✚ आप लोग ही सोचते हो और बार-बार पूछते हो कि एडवांस पार्टी की विशेष आत्मायें अब तक गुप्त क्यों? तो प्रत्यक्ष करने चाहते हो ना। समय प्रमाण कुछ एडवांस पार्टी की आत्मायें श्रेष्ठ योगबल की श्रेष्ठ विधि को आरम्भ करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान कर रही हैं। ऐसे आदि परिवर्तन के विशेष कार्य अर्थ आदिकाल वाली आदि रत्न आत्मायें चाहिए। विशेष योगी आत्मायें चाहिए। जो अपने योगबल का प्रयोग कर सकें। भाग्यविधाता बाप की भागीदार आत्मायें चाहिये। भाग्यविधाता ब्रह्मा को भी कहा जाता है। समझा क्यों बुलाया है।

✚ बाबा ने एक दृश्य दिखाया जैसे एक चक्र के अन्दर बहुत चक्र दिखाई पड़े। चक्र का ढंग ऐसे बनाया था कि उस चक्र से निकलने के 4-5 रास्ते दिखाई पड़े परन्तु निकल न पाये। सिर्फ ब्रह्मा बाबा का यह दिखाया कि चक्र में चलते-चलते प्याइन्ट (जीरो) पर खड़े हो गये, निकले नहीं। बाबा ने समझाया कि यह है ड्रामा का बन्धन। ब्रह्मा भी ड्रामा के सर्कल से निकल नहीं सकते। ड्रामा के बन्धन से कोई भी निकल नहीं सकते। उस जीरो प्याइन्ट तक पहुँच गये लेकिन फिर भी ड्रामा का मीठा बन्धन है। जिस मीठे बन्धन को खेल के रूप में दिखाया।

✚ तब बहुकाल के भविष्य प्रालब्धी भी बनेंगे। अन्त तक योद्धेपन की जीवन होगी तो क्या बनेंगे? चन्द्रवंशी बनाना पड़ेगा। सूर्यवंशी की निशानी - सदा खुशी की रास करने वाले। सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले। चन्द्रवंशी राम को कब झूले में नहीं झुलाते हैं। रास नहीं दिखाते हैं। युद्ध का तीर कमान ही दिखाते हैं। पीछे का राज्य भाग्य मिलेगा। आधा समय का राज्य बहुकाल तो नहीं हुआ ना! तो सदा झूले में झूलते रहो। सर्व से रास मिलाते हुए, खुशी की रास करते रहो। इसको कहा जाता है - संगमयुग की प्रालब्ध स्वरूप।

✚ जैसे हँस की निर्णय-शक्ति और परखने की शक्ति विशेष होती है। इसलिए ग्रहण करने की शक्ति भी विशेष है जो मोती और कंकड़ दोनों को परखता है और फिर निर्णय करता है, उसके बाद मोती ग्रहण करता है, कंकड़-पत्थर छोड़ देता है। तो परखना, निर्णय करना और ग्रहण करना अर्थात् धारण करना- तीनों शक्तियों की विशेषता के कारण संगमयुगी सरस्वती माँ की सवारी हँस दिखाया है। तो एक सरस्वती माँ का यादगार नहीं लेकिन माँ समान बनने वाली ज्ञान-वीणा वादिनी आप सभी हो। इस ज्ञान को धारण करने के लिए भी वह तीनों विशेषताएं अति आवश्यक है।

✚ अपने को घोड़ेसवार समझते हैं वह अपने को वारिस समझते हैं? वारिस का पूर्ण अधिकार लेना है वा नहीं? जब लक्ष्य पूरा वर्सा लेने का है तो घोड़ेसवार क्यों? अगर घोड़ेसवार हैं तो मालूम है नम्बर कहाँ जायेगा? सेकण्ड ग्रेड वाले कहाँ आयेंगे इतनी परवरिश लेने के बाद भी सेकण्ड ग्रेड। अगर बहुत समय से सेकण्ड ग्रेड पुरुषार्थ ही रहा तो वर्सा भी बहुत समय सेकण्ड ग्रेड मिलेगा। बाकी थोड़ा समय फर्स्ट ग्रेड में अनुभव करेंगे। सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे कहलाने वाले और व्यक्त-अव्यक्त द्वारा पालना लेने वाले फिर सेकण्ड ग्रेड।

✚ अमेरिका में जो सेन्टर खुला है इसमें भी रहस्य है, विशेष कार्य होना है। विनाश और स्थापना दोनों का साक्षात्कार साथसाथ होगा। उस तरफ विनाशकारी और इस तरफ पीस मेकर। साइन्स और साइलेन्स, दोनों शक्तियों का मुकाबला देखेंगे। चारों ओर से अमेरिका को परिवर्तन करने का घेराव डालो। महावीर का दिखाते हैं न कि वह सारी पहाड़ी की पहाड़ी को ले आया, तो आप अमेरिका को परिवर्तन कर साइलेन्स की शक्ति का नाम बाला करो। सदा याद रखो हम शान्ति के सागर के बच्चे शान्ति देवा हैं। जो भी सामने आये उसे पीस मेकर बन शान्ति का दान दो।

✚ समझो एयरकन्डीशन ग्रुप हो गया। फिर फर्स्टक्लास, उन्हों का सिर्फ थोडा सा अन्तर है। निजी संस्कार नहीं, संस्कार बनाना पड़ता है। अर्थात् मर जीवे जन्म के आदि में निमित्त मात्र नालेज के आधार पर अटेन्शन रखना पड़ा। जरा-सी पुरूषार्थ की रेखायें जन्म के आदि में दिखाई देती हैं, अभी नहीं। पहले आदि काल की बात है। एयरकन्डीशन अर्थात् बना बनाया था। और फर्स्टक्लास वालों ने आदि में स्वयं को बनाया। उसमें भी पुरूषार्थ सहज किया है। सहज पुरूषार्थ, तीव्र पुरूषार्थ, समर्थ पुरूषार्थ। लेकिन फिर भी पुरूषार्थ की रेखा है।

✚ सर्वशक्तिवान के आगे शक्ति बन जाते और पार्ट बजाने मे पाण्डव। सर्वशक्तिवान को शक्ति बन कर याद नहीं करेंगे तो मजा नहीं आयेगा। आत्मा सीता है और वह राम है। तो इस पार्ट में भी बहुत मजा है। यही पार्ट सबसे वन्डरफुल है संगम का, जो पाण्डव शक्तियाँ बन जाती और शक्तियाँ भाई बन जाती। इससे सिद्ध होता है कि देहभान भूल गये। आत्मा में दोनों ही संस्कार हैं, कभी मेल का कभी फिमेल का पार्ट तो बजाया है ना! संगम पर मजा है, आशिक बन माशुक को याद करना। शक्ति बनकर सर्वशक्तिवान को याद करना। सीता बनकर राम को याद करना।"

✚ (सतयुग में बाबा तो नहीं होंगे) ब्रह्मा बाप तो साथ ही होंगे। (शिवबाबा ऊपर क्या करेंगे?) बच्चों का खेल देखते रहेंगे। कोई तो साक्षी भी हो ना। न्यारा तो न्यारा ही रहेगा ना। प्यारा रहेगा लेकिन न्यारा रह करके प्यारा रहेगा। प्यारे का खेल तो अभी कर रहे हैं ना। सतयुग में न्यारापन ही अच्छा है। नहीं तो जब आप सभी गिरेंगे तो कौन निकालेगा! सतयुग में आना अर्थात् चक्र में आना। अच्छा - सतयुग में जब आप जन्म लो तो तब निमन्त्रण देना। आप अगर संकल्प इमर्ज करेंगी तो फिर आयेंगे। सतयुग में आना अर्थात् चक्र में आना।

✚ परिस्थिति श्रेष्ठ है या स्वस्थिति श्रेष्ठ है? कभी परिस्थिति वार कर लेती है? तो सोचो कि ये परिस्थिति पावरफुल या स्वस्थिति पावरफुल? तो इस स्थिति से कमज़ोर से शक्तिशाली बन

जायेंगे। आप तपस्वी आत्माओं की स्थिति का यादगार आजकल के तपस्वियों ने कॉपी की है लेकिन उल्टी की है। आप तपस्वी एकरस स्थिति में एकाग्र होते हो और आजकल के क्या करते हैं? एक टांग पर खड़े हो जाते हैं। तो कहाँ एकरस स्थिति और कहाँ एक टांग पर स्थित रहना, फर्क हो गया ना। आपका कितना सहज है! और उन्हीं का कितना मुश्किल है! तो सहजयोगी हो ना।

✚ स्मृति दिवस सिर्फ ब्रह्मा बाप के स्मृति का दिवस नहीं है लेकिन बापदादा कहते हैं आज और सदा यह याद रहे कि बापदादा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही आदि से अब तक क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं। वह स्मृतियों की माला याद करो, बहुत बड़ी माला बन जायेगी। सबसे पहली स्मृति सबको क्या मिली? पहला पाठ याद है ना! मैं कौन! इस स्मृति ने ही नया जन्म दिया, वृत्ति दृष्टि स्मृति परिवर्तन कर दी है। ऐसी स्मृतियां याद आते ही रूहानी खुशी की झलक नयनों में, मुख में आ ही जाती है। आप स्मृतियां याद करते और भक्त माला सिमरण करते हैं।

✚ पहले जलाना है फिर मनाना है। एक दिन जलाते हैं दूसरे दिन मनाते हैं। आप भी एक दिन होली अर्थात् 'पास्ट इज पास्ट' करते हो। अर्थात् पिछला सब जलाते हो। तब ही फिर गीत गाते हो - हम तो बापदादा के हो लिए। यह है खुशी में मनाना। यादगार की होली में भी मनाने के दिन देवताओं के रूप साँग के रूप में बनाते हैं। लेकिन उसमें भी विशेष मस्तक पर लाइट जलाते हैं। यह आपका यादगार है। जब मस्तक की ज्योति जगती तो देवता बन जाते हो। बाप के हो लिए तो देवता बन जाते हो। आपका यह अनुभव और उन्हीं का है- आपके अनुभव का यादगार मनाना।

✚ रोज अमृतवेले स्वयं को ब्राह्मण जीवन के स्मृति का तिलक लगाओ। जैसे भक्त लोग तिलक जरूर लगाते हैं तो आप स्मृति का तिलक लगाओ। वैसे भी देखो मातायें जो तिलक लगाती है वो साथ का तिलक लगाती हैं। तो सदा स्मृति रखो कि हम कम्बाइन्ड हैं तो इस साथ का

तिलक सदा लगाओ। अगर युगल होगा तो तिलक लगायेंगे, अगर युगल नहीं होगा तो तिलक नहीं लगायेंगे। यह साथ का तिलक है। तो रोज स्मृति का तिलक लगाती हो या भूल जाता है? कभी लगाना भूल जाता, कभी मिट जाता! जो सुहाग होता है, साथ होता है वह कभी भूलता नहीं। तो साथी को सदा साथ रखो।

✚ समय प्रमाण अभी अज्ञानी को ज्ञानी बनाने में कुछ समय लगता है। वह भी इसलिए, क्योंकि बनाने वाले अपने को अव्यक्त रूप बनाने में अभी तक बहुत समय ले रहे हैं। जैसे-जैसे बनाने वाले स्वयं एक सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त रूप में स्थित होने के अभ्यासी बनते जायेंगे, वैसे ही बनने वालों को भी इतना जल्दी बना सकेंगे। कोई देवता धर्म की आत्मा न भी हो, लेकिन एक सेकेण्ड में किसको मुक्ति, किसको जीवन्मुक्ति का वरदान देने के निमित्त बन जायेंगे। सर्व आत्माओं को मुक्ति का वरदान आप ब्राह्मणों द्वारा ही प्राप्त होना है।

✚ सबके मुख से, दिल से यही गीत बजेगा, आ गया, आ गया, हमारा बाप आ गया। सबकी दिल से खुशी की तालियां बजेंगी। इसलिए यह झण्डा तो निमित्त-मात्र है लेकिन बहुत ऊंचे ते ऊंचा बाप आ गया, आ गया, जो आना था वो आ गया। हम सबको ले जाने वाला आ गया, यही मन से झण्डा विश्व में लहरेगा। आप सब देखेंगे और आप सबको सफेद-सफेद फरिश्तों के रूप में देखेंगे। बाप के साथ आप सभी के भी गीत गायेंगे। हमारे पूज्य देवीदेवता यें आ गये, आ गये। सिर्फ आप थोड़ा जल्दी तैयार हो जाओ फिर बहुत जल्दी झण्डा लहरायेंगे। फिर सभी पेशानी से छूट जायेंगे।

✚ शिक्षक बनना बहुत सहज है। सप्ताह-कोर्स के बाद ही शिक्षक बन जाते हैं। तो क्षमा करनी है, रहमदिल बनना है। सिर्फ शिक्षक नहीं बनना है। क्षमा करेंगे-अभी से यह संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआए दे सकेंगे। और अभी से दुआए देने का संस्कार पक्का करेंगे तभी आपके जड़

चित्रों से भी दुआए लेते रहेंगे। चित्रों के सामने जाकर क्या कहते हैं? दुआ करो, मर्सा (रहम) दो....। आपके जड़ चित्रों से जब दुआए मिलती हैं तो चैतन्य में आत्माओं से कितनी दुआए मिलेंगी! दुआओं का अखुट खज़ाना बापदादा से हर कदम में मिल रहा है, लेने वाला लेवे।

✚ जैसे आजकल की विशेष आत्मायें अर्थात् पढ़े लिखे लोग जैसा कार्य होगा जैसा स्थान होगा वैसी अपनी ड्रेस चेन्ज करते हैं - आपके जड़ चित्रों का भी हर समय ड्रेस चेन्ज करते हैं। भविष्य देवताई रूप में भी हर कार्य की ड्रेस अलग-अलग होगी। यह संस्कार भविष्य का वर्तमान के आधार पर है - इस समय का फैशन वा रीति रसम सतयुग में तो चलेगी लेकिन आपके जड़ चित्रों में भी रस्म चली आ रही है - तो संगमयुग की रीति रसम कौन सी है? जैसा कार्य करते हो वैसे टाइटिल प्रमाण अपना स्वरूप याद रखो - सबसे ज्यादा फैशनेबुल संगमयुगी ब्राह्मण हैं।

✚ आप कहाँ रहते हो? बाप की भुजाओं में रहते हो ना, कि बाहर निकल जाते हो? जो प्यारे होते हैं वह सदा भुजाओं में ही रहते हैं। और भुजायें बनके सेवा में लग जाते हैं। कितने भाग्यवान हो, भगवान की भुजायें, तो भुजाओं को ही बाहुबल कहा जाता है। तो बाप की भुजायें अर्थात् बाप के बल की निशानी हो। इसीलिए देवियों को, देवताओं को ज्यादा भुजायें ही दिखाई हैं। टांगे नहीं दिखाई हैं, भुजायें दिखाई हैं। सिर भी रावण को दिखाये हैं। देवी-देवताओं को भुजायें दिखाई हैं क्योंकि भुजायें बल की निशानी हैं। तो कितनी भुजायें हैं, देखो।

✚ सभी ने बहुत-बहुत प्यार से बाप का बर्थ डे और अपना बर्थ डे मनाया, इसकी पदम पदम पदमगुणा मुबारक हो, बधाई हो। जैसे यह चिन्ह रूप का झण्डा लहराया और फूल बरसाये ऐसे ही हर एक आत्मा के दिल में बाप की याद का झण्डा, स्मृति का झण्डा लहराओ। आपके दिल में तो है ही लेकिन अभी सर्व के दिलों में बाप का झण्डा अर्थात् याद का झण्डा लहराओ तो

सारा विश्व फूलों का बगीचा बन जायेगा। कांटों का जंगल खत्म हो फूलों का बगीचा बन जायेगा। ऐसा संकल्प सदा दिल में इमर्ज करो, करना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है, सिर्फ निमित्त बनना है।

✚ आप लोगों का शुरू में था-शीतला देवी का पार्ट। अभी है-ज्वाला देवी का पार्ट। पहले स्नेह से, समीप सम्बन्ध में आये और अब फिर, शक्ति स्वरूप बनना है। अभी सिर्फ गुण और स्नेह का प्रभाव है या नॉलेज का प्रभाव है, लेकिन साक्षात्मूर्त अनुभव करें कि यह कोई साधारण शक्ति नहीं है। जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें। 'मैं विघ्न-विनाशक हूँ', इस स्मृति की सीट पर स्थित होकर कारोबार चलायेंगे तो विघ्न सामने तक भी नहीं आवेंगे।

✚ ' अपनी पढ़ाई, अमृत्वेला, सेवा जो भी दिनचर्या बनी हुई है, उसमें मन नहीं भी लगे लेकिन दिनचर्या में कुछ मिस नहीं करो। भारत में कहते हैं - 'जितना कायदा उतना फायदा। ' तो ये जो कायदे बने हुए है, नियम बने हुए है उसको कभी भी मिस नहीं करना है। देखो, आपके भक्त अभी तक आपका नियम पालन कर रहे हैं। चाहे मंदिर में मन नहीं भी लगे तो भी जायेंगे जरूर। यह किससे सीखे? आप लोगों ने सिखाया ना! सदैव यह अनुभव करो कि जो भी मर्यादायें वा नियम बने है, उसको बनाने वाले हम है। आपने बनाया है या बने हुए मिले है? लां-मेकर्स हो या नहीं?

✚ छोटे जो होंगे, वह बड़ों को अपना समझेंगे - 'मेरा है।' तो दिल तख्त नशीन बच्चे की यही निशानी होती जो हरेक उनको अपना बड़ा समझेंगे। अपनापन महसूस करेंगे। हमारे पूर्वज बड़े हैं, पूज्य हैं। यह शब्द कहने में भक्ति मार्ग के हैं, लेकिन जैसे पूर्वज का नशा होता है ना - यह हमारे पूर्वज पूज्य हैं, इसी रीति से हर आत्मा जो भी सम्पर्क में हैं वह ऐसे महसूस करेंगे कि यह

ही हमारे पूर्वज हैं, पूज्य हैं। अपनापन महसूस करेंगे। ऐसे दिल तख्त नशीन कितने बनेंगे? थोड़े ही होते। यही अष्ट रत्नों की विशेषता है, जो फिर 100 में नहीं होती।

✚ जब बाप के बच्चे बने तो बच्चा अर्थात् स्वतन्त्र। इसीलिए कहा जाता है स्टूडेंट लाइफ इज़ दी बैस्ट लाइफ। तो कौन हो आप - बच्चे हो या बूढ़े हो? बच्चा अर्थात् निर्बन्धन। अगर अपने को पास्ट जीवन वाले समझेंगे तो बन्धन है, मरजीवा हो गये तो निर्बन्धन। चाहे कुमार हो चाहे वानप्रस्थी हो लेकिन सब बच्चे हैं। स्थापना के कार्य में आदि से जो आत्मायें सहयोगी हैं, उन्हीं को विशेष सहयोग ड्रामा अनुसार किसी न किसी रूप से प्राप्त जरूर होता है। गारन्टी है। बाप-दादा यहाँ का यहाँ रिटर्न भी करते हैं और भविष्य के लिए भी जमा होता है।

✚ 'हमारा बाबा आ गया' - कम - से - कम यह आवाज कानों से सुनने, बुद्धि से जानने के अधिकारी तो बनें। कोई भी वंचित न रह जाये। विश्व का बाप है, तो विश्व की आत्माओं को इतनी अंचली तो देनी है ना। आपने सागर को हप किया लेकिन वह एक बूँद के प्यासे, उन्हीं को बूँद तो प्राप्त करायेंगे ना! इसके लिए क्या करना पड़े? हर कदम, हर बोल, बाप को प्रत्यक्ष करने वाले हों, तब यह आवाज गूँजेगा। तो ऐसे बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चों को ही दिलाराम के दिलरूबा कहते हैं, जिसकी दिल से एक ही बाप के साज बजते हैं। तो ऐसे दिलरूबा बने हो ना?

✚ आप (दादी, दादी जानकी) लोगों को देख करके और कोई बात याद आयेगी? बाप याद आयेगा, बाप के चरित्र याद आयेंगे। इसको कहते हैं - 'आप में बाप है, बाप में आप हैं'। इसी को ही लोगों ने कह दिया है कि बाप मेरे में है, अन्दर बैठा है। लेकिन समानता के कारण समान बन जाते हैं ना, इसलिए कहते हैं कि बाप बैठा है। तो आप लोगों का स्लोगन है - 'आप बाप

में, बाप आप में'। आप और बाप अलग हो ही नहीं सकते। जैसे बाप और दादा जुड़वें हो गये हैं ना। तो आप लोग क्या हो? जुड़वें हो या अलग हो? सेकण्ड भी अलग नहीं हो सकते। इसको कहते हैं - बाप समान।

✚ क्योंकि बापदादा तो बच्चों की हर रोज की दिनचर्या जब चाहे तब देख सकते हैं। एक एक के देखने का सारा दिन धन्धा नहीं करते। साकार ब्रह्मा बाप को देखा उनकी नजर स्वतः ही कहाँ पड़ती थी। चाहे आपका पत्र हो, चाहे पोतामेल हो, चाहे कोई चालचलन हो, चाहे कोई आठ पेज का पत्र हो लेकिन बाप की नज़र कहाँ पड़ती? जहाँ डायरेक्शन देना होगा, जहाँ आवश्यकता होगी। बापदादा देखते भी सब हैं, लेकिन नहीं भी देखते हैं। जानते भी हैं, नहीं भी जानते। जो आवश्यक नहीं - वह न देखते हैं, न जानते हैं। खेल तो बहुत अच्छे देखते हैं वह फिर कभी सुनायेंगे।

✚ उनके हर कदम में भी पद्म होंगे और वे हर कदम में भी पद्मों की कमाई जमा करेंगे। एक भी कदम पद्मों की कमाई से वंचित नहीं होगा। इसलिए डबल पद्म, एक पद्म कमल पुष्प को भी कहते हैं, अगर कमल पुष्प के समान नहीं तो भी अपने भाग्य को बना नहीं सकते। कीचड़ में फंसना अर्थात् भाग्य को गंवाना। तो पद्मापद्म भाग्य शाली अर्थात् पद्म समान रहना और पद्मों की कमाई करना, तो देखो यह दोनों ही निशानियाँ हैं! सदा न्यारे और बाप के प्यारे बने हैं! न्यारा पन ही बाप को प्यारा है। जितना जो न्यारा रहता है उतना स्वतः ही बाप का प्यारा हो जाता।

✚ जब पूज्य आत्माये बन गये तो पूज्य आत्माओं के नयन सदा निर्मल दिखाते हैं। अभियान या अपमान के नयन नहीं दिखाते। कोई भी देवी वा देवता के नयन निर्मल वा रूहानी होंगे। तो यह नयन किसके हैं? कभी किसी के प्रति कोई संकल्प भी आये तो याद रखो कि मैं कौन हूँ? मेरे

जड़-चित्र भी रूहानी नैनधारी है तो मैं तो चैतन्य कैसा हूँ? लोग अभी तक भी आपकी महिमा में कहते हैं - सर्वगुण संपन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी। तो आप कौन हो? सम्पूर्ण निर्विकारी हो ना! अंशमात्र भी कोई विकार न हो। सदैव यह स्मृति रखो कि मेरे भक्त मुझे इस रूप से याद कर रहे हैं।

✚ सारे बन्धन लगन की अग्नि से भस्म करने वाले। लगन अग्नि है। अग्नि में जो चीज़ डाले सब भस्म! ऐसी बन्धनमुक्त आत्मा उड़ने के सिवाए रह नहीं सकती। बन्धन फँसाता है, निर्बन्धन उड़ाता है। बन्धन का पिंजड़ा खुला तो पंछी उड़ेगा ना! कोई कितना भी गोल्डन पिंजड़ा लेकर आये उस पिंजड़े में भी फँसने वाले नहीं। यह माया सोने का रूप धारण करके आती है। 'सोना' माना आकर्षण करने वाला। यादगार में भी दिखाते हैं - सोना-हिरण बनकर आई। तो सोने का हिरण अच्छा तो नहीं लगता। जब उड़ता पंछी हो गये तो सोना हो या हीरा हो लेकिन पिंजड़े के पंछी नहीं बन सकते।

✚ बाइबिल में दिखाते हैं - अन्तिम समय में एण्टी क्राइस्ट का रूप होगा, इसका रहस्य क्या है? एण्टी क्राइस्ट का अर्थ है उस धर्म के प्रभाव को कम करने वाले। आजकल देखो उसी क्रिश्चियन धर्म में क्रिश्चियन धर्म की वैल्यू को कम समझते जा रहे हैं, उसी धर्म वाले अपने धर्म को इतना शक्तिशाली नहीं समझते और दूसरों में शक्ति ज्यादा अनुभव करते हैं, यही एण्टी क्राइस्ट हो गये। जैसे आजकल के कई पादरी ब्रह्मचर्य को महत्त्व नहीं देते और उन्हीं को गृहस्थी बनाने की प्रेरणा देने शुरू कर दी है तो यह उसी धर्म वाले जैसे एण्टी क्राइस्ट हुए।

✚ तो आप सदा शुभ कार्य में उपस्थित हो तो सदा गुणों के गहनों से सजायें हुए रहो। सिर्फ बुद्धि की तिजारी में बन्द कर नहीं रखो। सदा गुणों के गहनों से सजी सजाई हुई मूर्त, यही 16 श्रृंगार अर्थात् 16 कला संपन्न, सर्वगुण संपन्न बनो। ऐसे ऊँचे ते ऊँचे बाप के बच्चे सदा सुहागिन, सदा भाग्यवान आत्मायें बिगर श्रृंगार के कैसे सजेगी! सुहाग की निशानी भी श्रृंगार है और

राज्य कुल की निशानी भी श्रृंगार है। तो आप कौन हो? राजाओं का राजा बनाने वाले के कुल के हो और सदा सुहागिन हो। तो गुणों के गहनों से सजी सजाई रूहानी मूर्त सदा बनो।

✚ पर्सनल मुलाकात - 1- सहजयोगी बनने की विधि - सभी सहजयोगी आत्मायें हो ना। सदा बाप के सर्व सम्बन्धों के स्नेह में समाये हुए। सर्व सम्बन्धों का स्नेह ही सहज कर देता है। जहाँ स्नेह का सम्बन्ध है वहाँ सहज है। और जो सहज है वह निरंतर है। तो ऐसे सहजयोगी आत्मा बाप के सर्व स्नेही सम्बन्ध की अनुभूति करते हो? ऊधव के समान हो या गोपियों के समान? ऊधव सिर्फ ज्ञान का वर्णन करता रहा। गोपगोपि याँ प्रभु प्यार का अनुभव करने वाली। तो सर्व सम्बन्धों का अनुभव यह है विशेषता। इस संगमयुग में यह विशेष अनुभव करना ही वरदान प्राप्त करना है।

✚ ईश्वरीय बहन है इससे भी ऊपर शिव शक्ति रूप देखो। मातायें वा बहनें भी सदा अपने शिव शक्ति स्वरूप में स्थित रहें। मेरा विशेष भाई, विशेष स्टूडेंट नहीं। वह शिव शक्ति है और आप महावीर हो। लंका को जलाने वाले, पहले स्वयं के अन्दर रावण वंश को जलाना है। महावीर की विशेषता क्या दिखाते हैं? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? वह सदा दिल में क्या दिखाता है? - 'एक राम दूसरा न कोई'। चित्र देखा है ना। तो हर भाई महावीर है, हर बहन शक्ति है। महावीर भी राम का है, शक्ति भी शिव की है। किसी भी देहधारी को देख सदा मस्तक के तरफ आत्मा को देखो।

✚ जन्म भी इकट्ठा है और संगमयुग में रहना भी इकट्ठा है क्योंकि बाप और बच्चे कम्बाइन्ड हैं। विश्व कल्याण का कार्य भी इकट्ठा है, अकेला बाप भी नहीं कर सकता, बच्चे भी नहीं कर सकते, साथ-साथ है और बाप का वायदा है - साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ चलेंगे ना। वायदा है ना। इतना प्यार बाप और बच्चों का देखा है? देखा है वा अनुभव कर रहे हो? इसलिए इस

संगमयुग का महत्व है और इसी मिलन का यादगार भिन्न-भिन्न मेलों में बनाया हुआ है। इस शिव जयन्ती के दिन भक्त पुकार रहे हैं - आओ। कब आयेंगे, कैसे आयेंगे, यही सोच रहे हैं और आप मना रहे हैं।

✚ अगर समय पर पास न होने के संस्कार पड़ जाते हैं तो फाइनल में भी वह संस्कार फुल पास होने नहीं देते। तो पास होने वाले तो हैं लेकिन समय पर पास होने वाले नहीं। जो सदा समय पर फुल पास होता है, उसको कहते हैं पास-विद्-ऑनर। पास-विद्-ऑनर अर्थात् धर्मराज भी उसको ऑनर देगा। धर्मराजपुरी में भी सजायें नहीं होंगी, ऑनर होगा। गायन होगा कि यह पास-विद्-ऑनर हैं। तो पास-विद्-ऑनर होने के लिए विशेष अपने को कोई बात में, कोई भी संस्कार में, स्वभाव में, गुणों में, शक्ति में कमी नहीं रखना। सब बातों में कम्पलीट बनना अर्थात् पास-विद्-ऑनर बनना।

✚ पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमजोर है। और यह महा-महा-महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है कि यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है ऊँची स्मृति और ऊँची दृष्टि की। अगर वह ऊँचाई नहीं तो अच्छाई कौन सी है? यह भी सुनहरी मृगमाया का रूप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार-बार अटेन्शन रखो।

✚ जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी

विजयी होंगे ना? कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूँध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा।

✚ यह संकल्प कि मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं ठीक हूँ दूसरे नहीं जानते व दूसरे नहीं पहचानते, आखिर पहचान ही लेंगे व आगे चलकर देखना क्या होता है? यह भी ज्ञान स्वरूप, याद स्वरूप आत्मा के स्वयं को धोखे देने वाली अलबेलेपन की मीठी निद्रा है। ऐसे अल्पकाल के आराम देने वाले व अल्पकाल के लिये अपने दिल को दिलासा देने वाली माया की निद्रा के अनेक प्रकार हैं। जिस भी बातों में अपनी प्रालब्ध को व प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति को खोते हो तो अवश्य अनेक प्रकार की निद्रा में सोते हो। इसलिये कहावत है - 'जिन सोया तिन खोया।' तो खोना ही सोना है।

✚ हर बात में "छोड़ो तो छूटों", यह प्रैक्टिकल में लाते हो? यही पाठ ब्रह्मा बाप को नम्बरवन ले गया। शुरू से छोड़ा तो छूट गया ना! यह नहीं सोचा कि- साथी मुझे छोड़ें तो छूटूँ, सम्बन्धी छोड़ें तो छूटूँ। विघ्न डालने वाले विघ्न डालने से छोड़ें तो छूटूँ। भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ मुझे छोड़ें तो छूटूँ। यह कभी सोचा? सदा स्वयं को यही पाठ पक्का प्रैक्टिकल में दिखाया जैसे फालो फादर किया है? इसको कहा जाता है- जो ओटे सो अर्जुन। तो अर्जुन बन गया ना! अर्थात् बाप के अति समीप, समान, कम्बाइन्ड बन गये। जो आप सभी भी बापदादा कम्बाइन्ड बोलते हो ना?

✚ जैसे-मधुवन में आते तो अन्जान भी हैं, लेकिन क्या अनुभव करते हैं? यहाँ का वातावरण और यहाँ की आत्माएँ खुश रहने वाली हैं, वायुमण्डल में खुशी है-यह तो अनुभव करते हैं ना। तो

ऐसे आप सबके सम्बन्ध-सम्पर्क में अनुभव करें कि ये अलौकिक आत्माएँ हैं, भरपूर आत्माएँ हैं। ऐसा अनुभव करते हैं। चाहे देह-अभिमान के कारण कहें नहीं, लेकिन अन्दर तो जानते हैं ना। क्योंकि अगर बाहर से आपको कहें, तो खुद को भी बनना पड़े ना। इसीलिए कहेंगे नहीं लेकिन अन्दर में महसूस जरूर होगा। तो ऐसे श्रेष्ठ हो ना। इसलिए गायन है कि अगर अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो....।

✚ बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। जो भी देखे, जो भी सम्बन्ध में आये - वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे तब ही समय की समाप्ति होगी। सबके दिल से यह आवाज़ निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज़ निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज़ चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी साइंस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा - मेरा बाप आ गया।

✚ माताओं से - सभी शक्तियों के हाथ में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा है ना? शक्तियों को जैसे और शस्त्र दिये हैं, अब शक्तियों को बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना है। हरेक शक्ति द्वारा बाप प्रत्यक्ष हो जाए। तभी जय-जयकार हो जायेगी। शक्तियों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हुई है तभी सदा शिव-शक्ति इकट्ठा दिखाया है। जो शिव की पूजा करेंगे वह शक्ति की जरूर करेंगे। बाप और शक्तियों का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए पूजा साथ-साथ होती है। शक्तियों ने बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराया है तभी तो पूजा होती है। झण्डा लहराना अर्थात् ऊंचा आवाज़ हो।

✚ ऐसे नहीं कि कोई दुःख दे रहा है तो कहेंगे मैं क्या करूँ? मैंने नहीं दिया लेकिन उसने दिया। अपने को चेक करना है-क्या लेना है, क्या नहीं लेना है। लेने में भी होशियारी चाहिये ना। इसलिये ब्राह्मण आत्माओं का गायन है-सुख के सागर के बच्चे, सुख स्वरूप सुखदेवा हैं। तो सुख स्वरूप सुखदेवा आत्मायें हो। दुःख की दुनिया छोड़ दी, किनारा कर लिया या अभी तक एक पांव दुःखधाम में है, एक पांव संगम पर है? ऐसे तो नहीं कि थोड़ा-थोड़ा वहाँ बुद्धि रह गई है? पांव नहीं है लेकिन थोड़ी अंगुली रह गई है? जब दुःखधाम को छोड़ चले तो न दुःख लेना है न दुःख देना है।

✚ लेकिन इस संगमयुग में हर दिन ही मनाने का है, हर दिन मौज में रहने का है, हर दिन खुशी के झूले में झूलने का है वा खुशी में नाचने का है, अविनाशी गीत गाने का है। इसलिए ब्राह्मण जीवन का हर दिन मनाते रहते हो। हर दिन ब्राह्मणों के लिए उत्साह-उमंग बढ़ाने वाला उत्सव है। इसलिए यादगार रूप में भी भारत में अनेक उत्सव मनाते रहते हैं। यह प्रसिद्ध है कि भारत में साल के सभी दिन मनाने के हैं। और कहाँ भी इतने उत्सव नहीं होते जितने भारत में होते हैं। तो यह आप ब्राह्मणों के हर दिन मनाने का यादगार बना हुआ है। इसलिए नये वर्ष का दिन भी मना रहे हो।

✚ शक्तियों की पूजा बहुत धूमधाम से होती है। निराकार बाप व ब्रह्मा बाप की पूजा इतनी धूमधाम से नहीं होती। ब्रह्मा के मन्दिर भी बहुत गुप्त ही हैं। लेकिन शक्ति सेना भक्ति में भी नामीग्रामी है। इसलिए अन्त तक स्टेज पर विशेष बच्चों का पार्ट है। ब्रह्मा का भी गुप्त पार्ट है - अव्यक्त रूप अर्थात् गुप्त। ब्राह्मणों को तैयार किया और ब्रह्मा का पार्ट गुप्त हो गया। सर-स्वती को भी गुप्त दिखाते हैं क्योंकि उनका भी ड्रामा में गुप्त पार्ट चल रहा है। आदि ब्राह्मण आत्माएं सभी एक दो के समीप और शक्तिशाली हैं। शरीर भी कमजोर नहीं है, शक्तिशाली है।

✚ बापदादा समीप और समान सितारों को देख रहे हैं। बाप को सदा स्मृति रहती। जैसे बच्चे स्मृति स्वरूप हैं, वैसे ही बाप भी अपने समीप बच्चों के स्मृति स्वरूप हैं। जैसे बच्चे स्मृति स्वरूप होने से समर्थी स्वरूप का अनुभव करते हैं। बापदादा भी स्वयं समर्थी स्वरूप होते भी, समान बच्चों के सहयोग वा स्मृति से, स्वयं स्वरूप में और एडीशन (Addition; वृद्धि) हो जाती है। इसलिए साकार बाप ब्रह्मा को सहयोगी स्वरूप की निशानी 'हजार भुजाएं' दिखाई हैं। भुजाएं हैं सहयोग की निशानी। तो बाप के साथ-साथ जो सदा सहयोगी हैं उन्हीं की निशानी भुजाओं के रूप में हैं।

✚ राजनीति का दृश्य क्या नजर आता है? कल्प पहले के यादगार में एक खेल दिखाया हुआ है, जानते हो कौन-सा खेल? जो साकार बाप का भी प्रिय खेल था। चौपड़ का खेल। अभी-अभी किसके तरफ पऊं बारह, अभी-अभी फिर इतनी हार जो अपने परिवार को पालने की भी हिम्मत नहीं। अभी-अभी बेताज बादशाह और अभी-अभी वोट के भिखारी। ऐसा खेल देख रहे हो। नाम और शान के भूखे हैं। ऐसी आत्माओं को भी कुछ तो अंचली देंगे। इन्हों पर भी रहम दिल आत्मायें बन रहम की दृष्टि, दाता के स्वरूप से कुछ कणा दाना देकर सन्तुष्ट करेंगे ना। हर सेक्शन की सेवा अपनी-अपनी है। वह फिर विस्तार आप करना।

✚ मधुवन के आंगन में आज अनेक बच्चे फरिश्तों के रूप में हाजर-नाजर हैं। साकार रूप की सभा तो बहुत छोटी है लेकिन आकारी फरिश्तों की सभा बहुत बड़ी है। यह बड़ा हाल जो बना रहे हो वह भी छोटा है। सागर के बच्चों के आगे कितना भी बड़ा हाल बनाओ लेकिन सागर के समान हो जायेगा, फिर क्या करेंगे। आकाश और धरनी इसी बेहद के हाल में समा सकते हो। बेहद बाप के बच्चे चार दीवारों की हद में कैसे समा सकते हैं! ऐसा भी समय आयेगा जब बेहद के हाल में यह चार तत्व चार दीवारों का काम करेंगे। कोई मौसम के नीचे-ऊपर होने के कारण छत की वा दीवारों की आवश्यकता ही नहीं होगी।

✚ गुजरात-पूना ग्रुप:- सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना! जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम। दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अनुभवी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। और आगे चल कर वाणी द्वारा सबको परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे, तो क्या करेंगे?

✚ मर्यादा पुरुषोत्तम के संस्कार भरने का लक्ष्य रखने में अच्छे हैं। सच्ची सीतायें बन लकीर के अन्दर रहने के लक्ष्य में अच्छे हिम्मत-वान हैं। रावण की अट्रैक्शन में तो नहीं आते हो ना? रावण के बहुरूपों को अच्छी तरह से जान गये हो? रावण के भी नालेजफुल बन गये हो? नालेज कम होने के कारण ही वह (रावण) अपना बना सकता है। नालेजफुल के आगे वह नजदीक भी नहीं आ सकते। चाहे सोने का, चाहे हीरे का रूप धारण करे। आस्ट्रेलिया में रावण आता है? वार करने नहीं, सिखाने आता है ना। रावण को भी आप सब आधे कल्प के मित्र बड़े प्यारे लगते हो। इसलिए छोड़ने नहीं चाहता।

✚ सदा सफलता के चमकते हुए सितारे हैं, यह स्मृति रहती है? आज भी इस आकाश के सितारों को सब कितने प्यार से देखते हैं क्योंकि रोशनी देते हैं, चमकते हैं इसलिए प्यारे लगते हैं। तो आप भी चमकते हुए सितारे सफलता के हो। सफलता को सभी पसन्द करते हैं, कोई प्रार्थना भी करते हैं तो कहते - यह कार्य सफल हो। सफलता सब मांगते हैं और आप स्वयं सफलता के सितारे बन गये। आपके जड़ चित्र भी सफलता का वरदान अभी तक देते हैं, तो कितने महान हो, कितने ऊँच हो, इसी नशे और निश्चय में रहो। सफलता के पीछे भागने वाले नहीं लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सफलता स्वरूप।

✚ जिस धरनी को स्नेह का पानी मिलता है वहाँ के फल बड़े भी होते और स्वादिष्ट भी होते हैं। जैसे स्वर्ग में बड़े-बड़े फल और टेस्टी भी अच्छे होते हैं। विदेश में बड़े फल होते हैं लेकिन टेस्टी नहीं होते। फल की शकल बहुत अच्छी होती लेकिन टेस्ट नहीं। भारत के फल छोटे होते लेकिन टेस्ट अच्छी होती है। फाउण्डेशन तो सब यहाँ ही पड़ता। जिस सेन्टर पर स्नेह का पानी मिलता है वह सेन्टर सदा फलीभूत होता है। सेवा में भी और साथियों में भी। स्वर्ग में शुद्ध पानी शुद्ध धरती होगी। तब ऐसे फल मिलते हैं। जहाँ स्नेह है वहाँ वायुमण्डल अर्थात् धरनी श्रेष्ठ होती है।

✚ वैसे तो गोल्डन जुबली में भी सभी ने संकल्प किया कि समान बनेंगे। विघ्न विनाशक बनेंगे। समाधान स्वरूप बनेंगे। यह सब वायदे बाप के पास चित्रगुप्त के रूप में हिसाब के खाते में नूँधे हुए हैं। आज भी कई बच्चों ने दृढ़ संकल्प किया। समर्पण होना अर्थात् स्वयं को सर्व प्राप्ति में परिपक्व बनाना। समर्पणता का अर्थ ही है संकल्प बोल कर्म और सम्बन्ध इन चारों में ही बाप समान बनना। पत्र जो लिख कर दिया वह पत्र वा संकल्प सूक्ष्मवतन में बापदादा के पास सदा के लिए रिकार्ड में रह गया। सबकी फाइल्स वहाँ वतन में हैं। हर एक का यह संकल्प अविनाशी हो गया।

✚ सभी अपना कल्प पहले वाला चित्र देखते रहते हो? ऐसा कौन सा चित्र है जिस चित्र में बाप का साथ भी है और सेवा भी दिखाई है? गोवर्धन पर्वत उठाने का डः इस चित्र में बाप के साथ बच्चें भी हैं। और दोनों ही सेवा कर रहे हैं। पर्वत को अंगुली देना सेवा हुई ना! तो इस चित्र में आप सभी हो ना! खुशी खुशी से कहो कि हमारा ही यह चित्र है! मन में उमंग आता है ना कि सहयोगी बनने का भी यादगार बन गया है। अंगुली सहयोग की निशानी है। सभी बाप दादा के सहयोगी हो ना! जन्म ही किसलिए लिया है? सहयोगी बनने के लिए। तो सदा स्मृति में रखो कि हम जन्म से सहयोगी आत्मा हैं।

✚ माताओं से - अपनी महिमा को जानती हैं? अगर मातायें नहीं होती तो बाप 'गऊपाल' नहीं कहलाता। माताओं के कारण ही गऊपाल नाम पड़ा है। तो गऊपाल की प्यारी हो। सदा मुरली पर नाचने वाली हो। मुरली से बहुत प्यार है ना। मुरली के बिना रह नहीं सकती। जिसका मुरली से प्यार है। उसका मुरलीधर से भी प्यार है जिसका मुरलीधर से प्यार है उसका सेवा से भी प्यार है। जो मुरली में मस्त रहते उन्हें पुरानी दुनिया सहज ही भूल जाती हैं। जब सारी दुनिया सो रही है तब आप बच्चे मस्ती में मना रहे हो। अच्छा - माताओं में पढ़ाई का शौक अच्छा है। पढ़ाई के प्यार का सर्टिफिकेट है।

✚ अच्छा, शिव जयन्ती वा शिवरात्रि के सम्बन्ध से आपका कम्बाइन्ड रूप कौन-सा गाया जाता है? (शिवशक्ति)। ये पक्का है? या शक्ति अलग है, शिव अलग है? तो शिवशक्ति का अर्थ ही है कि कम्बाइन्ड हैं। अलग नहीं। फिर अलग कैसे करते हो? अलग हो सकता है? तो फिर कैसे होता है? जुड़ा हुआ तो है फिर अलग कैसे होता है? जुड़ा हुआ अलग नहीं होता है लेकिन सिर्फ माया फेस ऐसा कर देती है, घुमा देती है तो किनारा हो जाता है। तो मैं शिवशक्ति हूँ - ये स्मृति आज के शिव जयन्ती की यादगार है। और पाण्डव क्या हैं? आप भी शिवशक्ति हो या शिव पाण्डव हो? क्या हो? शक्ति तो हो ना?

✚ पाण्डवों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गए। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये। अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए। एक-एक पाण्डव अगर सम्पूर्ण समर्पण बनकर ही निकले तो बताओ क्या होगा? जब पाण्डव तैयार हो जावेगी तो कौरव और यादव मैदान में आ जायेंगे और फिर क्या होगा? आपका राज्य आपको प्राप्त हो जायेगा। जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे सो श्रीमत के बिना कुछ नहीं करेंगे। तब तक इस भट्टी से लाभ नहीं ले सकते हैं।

✚ सेकण्ड में स्थापना का कार्य अर्थात् सेकण्ड में दृष्टि दी और सृष्टि बन गई - ऐसी स्पीड है? तो सदा स्थापना के निमित्त आत्माओं को यह स्मृति रखनी चाहिए कि हमारी गति विनाशकारियों से तेज हो क्योंकि पुरानी दुनिया के विनाश का कनेक्शन नई दुनिया की स्थापना के साथ-साथ है। पहले स्थापना होनी है या विनाश? स्थापना की गति पहले तेज होनी चाहिए ना! स्थापना की गति तेज करने का विशेष आधार है - सदा अपने को पावरफुल स्टेज पर रखो। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल, स्टेज पर रखो। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल दोनों कम्बाइन्ड हो। तब स्थापना का कार्य तीव्रगति से होगा।

✚ स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके सामने सदैव स्पष्ट रहती है। जैसे बड़े आफिसर्स के सामने सारा प्लैन होता है, जिसको देखते हुए वह अपनी-अपनी कारोबार चलाते हैं। जैसे एरोप्लेन वा स्टीमर चलाने वालों के पास अपने-अपने प्लैन्स होते हैं जिससे वह रास्ते को स्पष्ट समझ जाते हैं। इसी प्रकार जो स्वयं को जानता है उससे संयम आटोमेटिकली चलते रहते हैं और समय की पहचान भी ऐसे स्पष्ट होती है। सारा दिन स्वयं जो है, जैसा है वैसी स्मृति रहती है। इसलिए गाया हुआ भी है - जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सभी करेंगे।

✚ वर्तमान समय बापदादा भी बच्चों के पुरुषार्थ और प्राप्ति के आधार पर नम्बरवार याद करते अर्थात् माला और यादगार रूप की विजय माला, जिसको वैजयन्ती माला कहते हैं। तो दोनों मालाओं में मेरा नम्बर कौन-सा है, यह जानते हो? अपने नम्बर को स्वयं ही जानते हो वा यह कहेंगे कि बापदादा सुनावें? बापदादा तो जानते ही हैं, लेकिन अपने आप को जानते जरूर हो। बाहर से वर्णन करो, न करो लेकिन अन्दर तो जानते हो ना? हाँ कहेंगे, वा न कहेंगे? अभी

अगर बापदादा माला निकलवायें तो क्या अपना नम्बर नहीं दे सकते? संकोच वश न सुनाओ वह दूसरी बात है। अगर नहीं जानते तो क्या कहेंगे?

✚ सभी कुमारियों ने अपनी तकदीर का फैसला कर लिया है या करना है? जितना समय अपने जीवन के फैसले में लगाती हो उतना प्राप्ति का समय चलता जाता है। इसलिए फैसला करने में समय नहीं गँवाना चाहिए। सोचा और किया - इसको कहा जाता है नम्बरवन सौदा करने वाले। सेकण्ड में फैसला करने वाले गोल्डन मैडल लेते हैं। सोच-सोचकर फैसला करने वाले सिलवर मैडल लेते और सोचकर भी फैसला नहीं कर पाते वह कापर वाले हो गये। आप सब तो गोल्डन मैडल वाले हो ना! जब गोल्डन एज में जाना है तो गोल्डन मैडल चाहिए ना। राम सीता बनने में कोई हाथ नहीं उठाते। लक्ष्मी नारायण तो गोल्डन एजड हैं ना।

✚ जगह बच जायेगी ना! अच्छा लगता है बापदादा सीन देखते हैं कैसे भारी-भारी अटैचियाँ घसीट कर ला रहे हैं! अच्छी सीन लगती है ना! संगम पर ये मेहनत भी थोड़े समय की है फिर तो प्रकृति भी आपकी दासी होगी तो दासियाँ भी बहुत होंगी। फिर आपको सामान उठाने की जरूरत नहीं। अभी अपना राज्य स्थापन हो रहा है, इस समय गुप्त वेश में हो, सेवाधारी हो फिर राज्य अधिकारी बनेंगे। तो सेवाधारियों को तो सब प्रकार की सेवा करनी पड़ती है। जितनी अभी तन, मन, धन और सम्पर्क से सेवा करते हो उतना ही वहाँ सेवाधारी मिलेंगे। सबसे पहले तो ये प्रकृति के पांच ही तत्व आपके सेवाधारी बनेंगे।

✚ संगमयुग से ही यह सभी रस्मरिवाज़ आरम्भ हो रही है। क्योंकि संगमयुग है सर्व बातों का बीज डालने का समय। जैसे बीज बोने का समय होता है ना। वैसे हर दैवी रस्म का बीज डालने का यह संगमयुग है। बीजरूप द्वारा सर्व बातों का बीज पड़ता है। उस बीजरूप के साथ-साथ आप सभी भी बीज डालने की मदद करना। आज के दिवस ऐसे ही साधारण फंक्शन नहीं हो रहा है। लेकिन सुनाया ना कि आप सभी लॉ-मेकर्स हो। यह रीति रस्म का बीज डालने का दिवस है।

इतना नशा है? इसकी सारी रस्म ब्राह्मणों द्वारा होती है। कितना बड़ा कार्य करने के निमित्त हो(विश्व को पलटाने के) कितने समय में विश्व पलटेंगे?

✚ अगर ड्रामा की प्वाइन्ट बुद्धि में क्लीयर है कि हू-ब-हू रिपीट होता है, तो उस निश्चय के प्रमाण हू-ब-हू जब रिपीट होता है, तो अनेक बार रिपीट हुआ है और अब रिपीट कर रहे हैं। लेकिन निश्चय की बात है। अगले कल्प में और कोई विजयी बने और इस कल्प में आप विजयी बनो-यह हो नहीं सकता। क्योंकि जब बना-बनाया ड्रामा कहते हैं, तो बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात् रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल-अडोल रहता है। अचलघर किसका यादगार है? ज्ञान के राजों में जो अचल रहता है उसका यादगार अचलघर है। तो यह नशा रहता है ना कि हम प्रैक्टिकल में अपना यादगार देख रहे हैं।

✚ शक्तियां हो ना, साधारण तो नहीं हो या घर में जाती हो तो साधारण मातायें बन जाती हो? नहीं, सदा यह याद रहे कि हम शक्तियां हैं। हद के नहीं हैं, बेहद के विश्व कल्याणकारी हैं। शक्तियां अर्थात् असुरों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाली। शक्तियों को कहते ही हैं - असुर संहारनी अर्थात् आसुरी संस्कार को संहार करने वाली। तो सभी शक्तियां ऐसी बहादुर हो? और पाण्डव अर्थात् विजयी। पाण्डव कभी यह नहीं कह सकते कि चाहते नहीं हैं लेकिन हार हो जाती है। क्योंकि आधा कल्प हार खाई, अभी विजय प्राप्त करने का समय है तो विजय के समय पर भी यदि हार खायेंगे तो विजयी कब बनेंगे?

✚ कोई-कोई बीज फल तब देता है जब नेचरल वर्षा होती है, पानी देने से नहीं निकलता। यह भी ड्रामा की नूँध है। अब अविनाशी बीज जो डाल रहे हो - कोई तो प्रत्यक्षफल दिखाई देंगे। कोई फिर नेचरल केलेमिटीज होंगी, जब ड्रामा का सीन बदलने वाला होगा तो वह नेचरल वायुमण्डल वातावरण उस बीज का फल निकालेगा। विनाश तो होगा यह तो गारण्टी है। जब

बीज ही अविनाशी है तो फल न निकले - यह तो हो नहीं सकता। लेकिन कोई नज़दीक आते हैं, कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी आयेंगे कैसे? वह फल भी पीछे देंगे। इसलिए कभी भी सर्विस करते यह नहीं देखना वा यह नहीं सोचना कि जो किया वह कोई व्यर्थ गया।

लेकिन संगमयुग की विशेषता है - एक कदम उठाओ और हजार कदम प्रालब्ध में पाओ। और कोई भी युग में एक का पद्मगुणा होकर मिलने का भाग्य है ही नहीं। यह भाग्य की लकीर स्वयं भाग्य विधाता बाप अभी ही खींचते हैं, ब्रह्मा बाप द्वारा। इसलिए ब्रह्मा को 'भाग्य विधाता' कहते हैं। गायन भी है ब्रह्मा ने जब भाग्य बाँटा तो सोये हुए थे क्या? संगमयुग की विशेषता - पुरूषार्थ और प्रालब्ध साथ-साथ की है। और ही सतयुगी प्रालब्ध से भी विशेष बाप की प्राप्ति की प्रालब्ध अभी है। अब की प्रालब्ध है - परमात्मा के साथ डायरेक्ट सर्व सम्बन्ध। भविष्य प्रालब्ध है देव आत्माओं से सम्बन्ध।

मान लेने की इच्छा से परे होने के कारण सर्व द्वारा श्रेष्ठ मान मिलने का पात्र बन जाता है - यह अनादि नियम है। जैसे स्वमान में रहने वालों का सिर्फ इस एक जन्म में मान नहीं होता, लेकिन सारे कल्प में - आधा कल्प अपने रॉयल राजाई फैमली (परिवार) द्वारा और प्रजा द्वारा मान प्राप्त होता है, और आधा कल्प भक्तों द्वारा मान प्राप्त होता है। इतने तक जो लास्ट जन्म में चैतन्य रूप में अपने प्राप्त हुए मान की प्रालब्ध को स्वयं ही देखते हो। चैतन्य अपने जड़ चित्रों को देखते हो ना। तो सारे कल्प में प्राप्त हुए मान का आधार क्या हुआ? अल्प काल के विनाशी मान का त्याग।

वैसे बापदादा दोनों जिम्मेवार हैं लेकिन फिर भी रचता साकार में ब्रह्मा है इसलिए साकार रचता को साकार रचना के लिए स्वतः ही स्नेह रहता है। पहले भी सुनाया था ना - बच्चे, माँ - बाप - दोनों के होते हैं लेकिन फिर भी माँ का विशेष स्नेह बच्चों से रहता है क्योंकि पालना के निमित्त माँ बनती है। बाप - समान बनाने वाली निमित्त माँ होती है। इसलिए माँ की ममता गाई हुई है।

यह शुद्ध ममता है, मोह वाली नहीं, विकार वाली नहीं। जहाँ मोह होता है, वहाँ परेशान होते हैं और जहाँ रूहानी ममता कहो, स्नेह कहो - वह होगा तो माँ को बच्चों के प्रति शान होती है, परेशान नहीं होती।

✚ कितना भी हंगामा हो लेकिन स्वयं अचल हो-ऐसे ग्रुप के हो? जैसे बाप अकेला तो नहीं है ना, परिवार वाला है। सबसे बड़े ते बड़ा परिवार बाप का है और जितना बड़ा परिवार उतना ही न्यारा और सर्व का प्यारा है। जितनी सेवा उतना न्यारा। तो फॉलो फादर करने वाले हो ना। इसीलिये आप सबका यादगार यहाँ अचलघर बना हुआ है। कितना भी कोई हिलावे, हिलेंगे नहीं। एक तरफ एक डिस्टर्ब करे, दूसरी तरफ दूसरा डिस्टर्ब करे-तो क्या करेंगे? कोई सैलवेशन नहीं मिले, फिर हलचल होगी? कोई इन्सल्ट कर दे, फिर हलचल होगी? अचल अर्थात् चारों ओर कितना भी कोई हिलाने की कोशिश करे लेकिन संकल्प में भी अचल।

✚ बाप का बच्चों प्रति इतना स्नेह है जो सारी सृष्टि की आत्मायें बच्चे होते हुए भी, जिन्होंने प्रीत की रीति निभाई है वा प्रीत-बुद्धि बने हैं, ऐसे प्रीत की रीति निभाने वालों से इतनी प्रीत की रीति निभाई है जो अन्य सभी आत्माओं को अल्पकाल का सुख प्राप्त होता है लेकिन प्रीत की रीति निभाने वाली आत्माओं को सारे विश्व के सर्व सुखों की प्राप्ति सदाकाल के लिए होती है। सभी को मुक्तिधाम में बिठाकर प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को विश्व का राज्य भाग्य प्राप्त कराते हैं। ऐसे स्नेही बच्चों के सिवाए और कोई से भी सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्ति का पार्ट नहीं।

✚ सिर्फ अपने भाग्य का ही सुमिरण करो तो क्या बन जायेंगे? भाग्य का सुमिरण करते-करते बाप से भी सर्व-श्रेष्ठ और बाप के भी सिर के ताज बन जायेंगे। अपनी सर्वश्रेष्ठ स्थिति का यादगार चित्र देखा है? आपके सर्वश्रेष्ठ भाग्य की निशानी का यादगार चित्र कौन-सा है कि जिससे सर्व से ऊंचे प्रसिद्ध होते हो? विराट् स्वरूप में ब्राह्मणों की सर्वश्रेष्ठ यादगार में चोटी दिखाई है।

चोटी से ऊंचा कुछ होता है क्या? शक्ति सेना भी ऐसे अपने को लक्की समझती है? यह (मीरा लण्डन की) सबसे अधिक अपने को लक्की समझती है, क्योंकि इसकी अपनी हम-जिन्स में तो यह एक ही विशेष रत्न है ना अभी।

✚ प्रभु परिवार का अभी भी सर्व आत्माओं को स्नेह है। उसी स्नेह के आधार पर अभी तक गायन और पूजन करते रहते हैं। प्रभु परिवार के चरित्रों का अभी भी कितना बड़ा यादगार शास्त्र - 'भागवत', प्यार से सुनते और सुनाते रहते हैं। प्रभु परिवार का शिक्षक और गाडली स्टूडेंट लाइफ का, पढ़ाई का यादगार शास्त्र - 'गीता', कितने पवित्रता से विधिपूर्वक सुनते और सुनाते हैं। प्रभु परिवार का यादगार आकाश में भी सूर्य, चन्द्रमा और लकी सितारों के रूप में मनाते और पूजते रहते हैं। प्रभु परिवार बाप के दिलतख्तनशीन बनते, ऐसा तख्त सिवाए प्रभु परिवार के और किसको भी प्राप्त हो नहीं सकता।

✚ तन-मन-धन सभी का जो 'तुरंत दान वह महापुण्य होता है'। देखा है ना -बलि भी चढ़ाते हैं तो महाप्रसाद वही होता जो तुरंत होता। एक धक से झाटकू बनते हैं उसको 'महाप्रसाद' कहा जाता है। जो बलि में चिल्लाते-चिल्लाते सोचते-सोचते रह जाते हैं वह महाप्रसाद नहीं। जैसे वह बकरे को बलि चढ़ाते हैं, वह बहुत चिल्लाता है। यहाँ क्या करते? सोचते हैं, ऐसा करें वा न करें। यह हुआ सोचना। चिल्लाने वाले को कभी भी महाप्रसाद के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं। ऐसे ही यहाँ भी तुरंत दान महापुण्य यह जो गायन है वह इस समय का है। अर्थात् सोचना और करना तुरंत हो। सोचते-सोचते रह नहीं जावें।

✚ प्रकृति सहयोग की ही माला पहनायेगी। जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। एक दो मकान के आगे नुकसान होगा लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है लेकिन

वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा, यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसलम बन जायेगा। तब सबके मुख से,"अहो प्रभु, आपकी लीला अपरमपार है" यह बोल निकलेंगे। "धन्य हो, धन्य हो। आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया।" यह आवाज चारों ओर से आयेगा।

✚ क्योंकि यहाँ से ही सर्व को सन्तुष्ट अर्थात् सर्व प्राप्ति कराने का संस्कार भरना है। तब ही, जब विश्व-महाराजन बनेंगे तो राज्य में कोई अप्राप्त वस्तु नहीं, सदा सन्तुष्ट, सर्व प्राप्ति स्वरूप होंगे। तो वह संस्कार कहां से भरेंगे? यहाँ से, इसी विश्व-चक्र की यादगार का समय भी बहुत महत्वपूर्ण गाया जा रहा है। नुमाशाम के समय को 'चक्र को समय' गाया जाता है तो यह यादगार कैसे बना? जब प्रैक्टिकल किया तब ही, अभी तक भी चक्र लगाने का यादगार कायम है। नुमाशाम अर्थात् परिवर्तन का समय, परिवर्तन का यह युग है ना। तो परिवर्तन का युग का यादगार परिवर्तन के समय पर बनाया है।

✚ सदा अपने को हर कदम में पद्यों की कमाई करने वाले भाग्यवान समझते हो? यह जो गायन है - हर कदम में पद्य...किसके लिए गायन है? सारे दिन में कितने पद्य इकट्ठे करते हो? संगमयुग बड़े-ते-बड़े कमाई के सीजन का युग है। तो सीजन के समय क्या किया जाना है? इतना अटेंशन रखते हो? हर समय यह याद रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आयेगी। एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गये? पद्य व्यर्थ गये! इसलिए हर घड़ी यह स्लोगन याद रहे - 'जो समय के महत्व को जानते है वह स्वतःही महान बनते है।' स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है। दोनों ही विशेष है।

✚ आज विशेष यादगार भूमि, जिसकी महिमा आज भी भक्त लोग कर रहे हैं ऐसे महान भूमि वा महान तीर्थ स्थान पर रहने वाले विशेष भाग्यशाली आत्माओं से मिलने आये हैं। जैसे भूमि

समर्थ है, जिस भूमि में आने से अनेक आत्माओं का व्यर्थ समाप्त हो जाता है - सब समर्थ बन जाते हैं, अनेक प्रकार के अनुभवों का खज़ाना सहज प्राप्त कर लेते - ऐसी भूमि जिस द्वारा जो वरदान चाहें वह वरदान याद और भूमि के आधार से सहज ही पा सकते हैं। ऐसी भूमि के निवासी स्वयं क्या होंगे! भक्त लोग इस दिव्य भूमि के वा श्रेष्ठ स्थान के दर्शन के लिए अब तक भी तड़पते रहते। ऐसे भूमि पर रहने वाले दर्शनीय मूर्त हैं?

✚ नया वर्ष अर्थात् नया उमंग और उत्साह, स्व परिवर्तन का उमंग है, सर्व प्राप्तिओं को स्वयं में प्राप्त देख दिल में उत्साह है। दुनिया वाले भी यह उत्सव मनाते हैं, उन्हीं के लिए एक दिन का उत्सव है और आप लकी लवली बच्चों के लिए संगमयुग का हर दिन उत्सव है क्योंकि खुशी का उत्साह है। दुनिया वाले तो बुझे हुए दीपक को जलाके वर्ष मनाते हैं और बापदादा और आप इतने सारे चारों ओर के जगे हुए दीपकों के साथ नया वर्ष का उत्सव मनाने आये हैं। यह तो रीति रसम मनाने की निमित्त मात्र करते हो लेकिन आप सभी जगे हुए दीपक हो। अपना चमकता हुआ दीप दिखाई देता है ना! जो अविनाशी दीप है।

✚ कई आत्मायें गुण को जानते हुए भी जन्म-जन्म की गन्दगी को देखने के अभ्यासी होने कारण गुण को न देख अवगुण ही देखती हैं। लेकिन अवगुण को देखना, अवगुण को धारण करना ऐसी ही भूल है जैसे स्थूल में अशुद्ध भोजन पान करना। स्थूल भोजन में अगर कोई अशुद्ध भोजन स्वीकार करता है तो भूल महसूस करते हो ना! लिखते हो ना कि खान-पान की धारणा में कमजोर हूँ। तो भूल समझते हो ना! ऐसे अगर किसी का अवगुण अथवा कमजोरी स्वयं में धारण करते हो तो समझो अशुद्ध भोजन खाने वाले हो। सच्चे वैष्णव नहीं, विष्णु वंशी नहीं। लेकिन राम सेना हो जायेंगे। इसलिए सदा गुण ग्रहण करने वाले - 'गुण मूर्त' बनो।

✚ जैसे पहले शुरू में याद का अभ्यास किया, सेवा के नये-नये प्लैन्स बनाये तो उससे इतनी वृद्धि हुई है ना। अभी जैसे पहली रचना हुई, मुख द्वारा डायरेक्ट, फिर हुई मन्सा संकल्प द्वारा ब्रह्मा द्वारा, अभी है शक्तियों द्वारा, जो कहते हैं कि शक्तियों ने बाण चलाये। तो यह बाण जो संकल्प द्वारा स्पष्ट आवाज़ पहुंच जाए, कोई बुला रहा है, कोई कुछ कह रहा है। जैसे कोई-कोई को स्वप्न पीछे पड़ जाता है, जब तक वह काम पूरा नहीं करता तो बार-बार स्वप्न उसको जागृत करता रहता। कई रिद्धि-सिद्धिवाले भी कुछ विधि से करते हैं। लेकिन योग की विधि द्वारा यह आवाज़ फैले। ऐसे सेवा के प्लैन बनाओ।

✚ जो भी सामने आये विशेष आप सबसे बाप के स्नेह का अनुभव करो। आप में बाप का चित्र और आपकी चलन से बाप का चरित्र दिखाई दे। अगर कोई पूछे कि बाप के चरित्र क्या हैं तो आपकी चलन चरित्र दिखाये। क्योंकि स्वयं बाप के चरित्र देखने और साथ-साथ चरित्र में चलने वाली आत्मायें हो। चरित्र जो भी हुए वह अकेले बाप के चरित्र नहीं हैं। गोपी वल्लभ और गोपिकाओं के ही चरित्र हैं। बाप ने बच्चों के साथ ही हर कर्म किया, अकेला नहीं किया। सदा आगे बच्चों को रखा। तो 'आगे रखना' यह चरित्र हुआ। ऐसे चरित्र आप विशेष आत्माओं द्वारा दिखाई दें। कभी भी 'मैं आगे रहूँ' यह संकल्प बाप ने नहीं किया।

✚ बहुतकाल के राज्य अधिकारी बनने के संस्कार बहुतकाल के भविष्य राज्य- अधिकारी बनायेंगे। अगर कभी अधिकारी, कभी वशीभूत हो जाते हो तो आधा कल्प अर्थात् पूरा राज्य- भाग्य का अधिकार प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आधा समय के बाद त्रेतायुगी राजा बन सकते हो, सारा समय राज्य अधिकारी अर्थात् राज्य करने वाले रॉयल फैमिली के समीप सम्बन्ध में नहीं रह सकते। अगर वशीभूत बारबार होते हो तो संस्कार अधिकारी बनने के नहीं लेकिन राज्य अधिकारियों के राज्य में रहने वाले हैं। वह कौन हो गये? वह हुई प्रजा। तो समझा, राजा कौन बनेगा, प्रजा कौन बनेगा? अपने ही दर्पण में अपने तकदीर की सूरत को देखो।

✚ हर घड़ी कहो अभी खुश हैं। आपका स्लोगन भी क्या है? अभी का स्लोगन है या कभी का है? अभी का है ना। तो जिस घड़ी कोई देखे, कोई मिले तो अभी-अभी खुशानसीब हैं ऐसे अनुभव करो। कभी-कभी खुश रहने वाले क्या कहलायेंगे? सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी? तो सूर्यवंशी हो या चन्द्रवंशी हो? सूर्यवंशी हो पक्का या यहाँ कहते हो सूर्यवंशी, वहाँ चन्द्रवंशी बन जायेंगे? सदा सूर्यवंशी हो ना। भगवान् के बनकर फिर भी चन्द्रवंशी बने तो क्या किया? गायन है ना कि जब भगवान् ने भाग्य बांटा तो सोये हुए थे क्या? अगर आधा लेते हैं तो आधा समय सोये हुए थे तभी नहीं लिया। तो पूरा भाग्य लेने वाले हो, आधा नहीं।

✚ देने में भी हैं मिट्टी के सूखे चावल लेकिन फिर भी कई बच्चे देने में भी नाज-नखरे बहुत करते हैं। आज कहेंगे दे दिया लेकिन सुदामा के मिसल वह भी कच्छ (बगल) में छिपाकर रखते हैं। बाप तो ले सकते हैं लेकिन देने वाले का बनेगा? अगर खींच कर ले लेंगे तो देकर के लेना, उसमें कमी पड़ जायेगी। एक देना और पद्म पाना। तो स्व-इच्छा अर्थात् दृढ़ संकल्प से एक देना पदम पाना। इसलिए देना आपको ही पड़ेगा। क्योंकि देने में ही कल्याण है। जब ऐसा मनाना, मिलना और लेना-देना हो जाता है, फिर क्या होता है? सदा बाप के साथ खुशी में खेलना। सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलना। तो ऐसा मेला मनाया?

✚ डबल विदेशियों से विशेष स्नेह क्यों है? ब्रह्मा बोले - विदेशी बच्चों का बहुत समय से आह्वान किया। कितने वर्षों से पहले बच्चों का आह्वान किया। उसी आह्वान से विदेश से बाप के पास पहुँचे। तो बहुत समय जिसका आह्वान किया जाए और बहुत समय के आह्वान के बाद वह बच्चे पहुँचे तो जरूर विशेष प्यार होगा ना। तो ब्रह्मा बाप ने बहुत स्नेह से साकार रूप में वारिस बनने का, आप सबको आह्वान किया। समझा। सुनते रहते हो ना कि कितने वर्ष पहले आपको जन्म दिया। गर्भ में तो आ गये थे पैदा पीछे हुए हो साकार रूप में। इसलिए ब्रह्मा बाप को विशेष स्नेह है और भविष्य की तकदीर जानते हुए स्नेह है।

✚ सेवा तो प्लैन प्रमाण करनी ही है और खूब करो। खुशी उमंग से करो लेकिन यह ध्यान जरूर रखो - जो सेवा की उसमें दुआयें प्राप्त हुई? या सिर्फ मेहनत की? जहाँ दुआयें होगी वहाँ मेहनत नहीं होगी। तो अभी यही लक्ष्य रखो कि जिससे भी सम्पर्क में आये उसकी दुआएं लेते जाएँ। जब सबकी दुआयें लेंगे तब आधाकल्प आपके चित्र दुआयें देते रहेंगे। आपके चित्र से दुआये लेने आते हैं ना। देवी या देवता के पास दुआयें लेने जाते हैं ना। तो अभी सर्व की दुआयें जमा करते हो तब चित्रों द्वारा भी देते रहते हो। फंक्शन करो, रैली करो.. बी.आई.पीज, आई पीज सर्विस करो, सब कुछ करो लेकिन दुआओं वाली सेवा करो।

✚ जो मुख्य निमित्त बने हुए महावीर हैं यदि उन को किसी भी बात में परिवर्तन लाने में समय लगता है, तो फाइनल परिवर्तन में भी अवश्य समय लगेगा। निमित्त बने हुए महावीर जो हैं वह हैं मानों समय की घड़ी। जैसे घड़ी समय स्पष्ट दिखाती है, इसी प्रकार महावीर जो बनते हैं, निमित्त बने हुए हैं, वह भी घड़ी हैं, तो घड़ी में समय नज़दीक दिखाई पड़ता है या दूर? स्वयं घड़ी हो और स्वयं ही साक्षी हो समय को चेक करने वाली हो, तो परिवर्तन की प्रगति फास्ट है? फाइनल परिवर्तन जिससे सृष्टि का भी फाइनल परिवर्तन हो। अभी तो थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन होता है, तो सृष्टि की हालतों में भी थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन है।

✚ लकीर लम्बी है, बीच-बीच में कट तो नहीं है। ऐसे यहाँ भी ऐसा ही है। अगर सदा श्रेष्ठ कर्म वाले हैं तो तकदीर की लकीर भी लम्बी और सदा के लिए स्पष्ट और श्रेष्ठ है। अगर कभी-कभी श्रेष्ठ, कभी साधारण तो लकीर में भी बीच-बीच में कट होता रहेगा। अविनाशी नहीं होगा। कभी रूकेंगे, कभी आगे चलेंगे। इसीलिए सदा श्रेष्ठ कर्मधारी। बाप ने तकदीर बनाने का साधन दे ही दिया है - श्रेष्ठ कर्म। कितना सहज है तकदीर बनाना। श्रेष्ठ कर्म करो और पदमापदम भाग्यशाली

की तकदीर प्राप्त करो। श्रेष्ठ कर्म का आधार है - श्रेष्ठ स्मृति। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप की स्मृति में रहना अर्थात् श्रेष्ठ कर्म होना।

✚ यह भी विशेषता हैं ना! उत्तर बहुत अच्छा देते हैं। इन्हों से पूछते हैं शक्तिशाली, विजयी हो? तो कहते हैं अभी से हैं! यह भी परिवर्तन की शक्ति तीव्र हुई ना। सिर्फ चींटी चूहे से घबराने का संस्कार है। महावीर बन चींटी को पांव के नीचे कर दो और चूहे की सवारी बना दो, गणेश बन जाओ। अभी से विघ्न विनाशक अर्थात् गणेश बनकर चूहे पर सवारी करने लग जाना। चूहे से डरना नहीं। चूहा शक्तियों को काट लेता है। सहनशक्ति खत्म कर लेता है। सरलता खत्म कर देता है। स्नेह खत्म कर देता। काटता है ना। और चींटी सीधे माथे में चली जाती है। टेन्शन में बेहोश कर देती है। उस समय परेशान कर लेती है ना।

✚ जैसे बाप से नम्बरवन प्यार है, ऐसे मुरली से भी प्यार है? जब से आये हो तब से कितनी मुरलियाँ मिस हुई होंगी? कभी कोई ऐसे बहाने से क्लास मिस किया है? जैसे बाप को याद करना मिस नहीं कर सकते, ऐसे पढ़ाई मिस न हो। इसमें भी नम्बरवन होना है। बाप के रूप में याद, शिक्षक के रूप में पढ़ाई और सतगुरु के रूप में प्राप्त वरदान कार्य में लगाना - यह तीनों में नम्बरवन चाहिए। वरदान तो सबको मिलते हैं ना लेकिन समय पर वरदान को कार्य में लगाना - इसको कहते हैं वरदान से लाभ लेना। तो यह तीनों ही बातें चेक करना कि आदि से अब तक इन तीनों बातों में कितना पास रहे, तब विजय माला के मणके बनेंगे।

✚ योगी वा प्रयोगी आत्मा के आगे ये पांच विकार, जो दूसरों के लिये जहरीले सांप है लेकिन आप योगी-प्रयोगी आत्माओं के लिये ये सांप गले की माला बन जाते हैं। आप ब्राह्मणों के और ब्रह्मा बाप के अशरीरी तपस्वी शंकर स्वरूप का यादगार अभी भी भक्त लोग पूजते और गाते रहते हैं। दूसरा यादगार-ये सांप आपके अधीन ऐसे बन जाते जो आपके खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं। जब विजयी बन जाते हैं तो क्या अनुभव करते हैं? क्या स्थिति होती है?

खुशी में नाचते रहते हैं ना। तो यह स्थिति स्टेज के रूप में दिखाई है। स्थिति को भी स्टेज कहा जाता है। ऐसे विकारों पर विजय हो-इसको कहा जाता है प्रयोगी।

✚ (विल करने से) विल करने की निशानी अपनी विल-पावर से समझ सकते हो? सर्व शक्तियों को विल किया तो बाप सर्व शक्तियाँ विल कर देते हैं। सर्वशक्तिवान साथी बन गये और सर्व शक्तियाँ साथी बन गयीं, तो फिर विजय ही विजय है। भक्ति-मार्ग में भी कोई कार्य करते हैं तो समझते है ना मालूम पूरा हो या न हो। इसलिए भगवान् के ऊपर छोड़ देते हैं कि - “हे भगवान्! आपका कार्य आप ही जानो”। तो यह जो भक्ति-मार्ग में संस्कार भरे वह अब प्रैक्टिकल किया है। भक्ति-मार्ग में कहने मात्र था। यहाँ ज्ञान मार्ग में किया है। ज्ञान-मार्ग में करने की शक्ति, भक्ति-मार्ग में कहने की शक्ति। रात दिन का फर्क है।

✚ सबसे बड़े-ते-बड़ी शक्ति वा अथॉर्टी सत्यता की ही है। सत् दो अर्थ से कहा जाता है। एक - सत् अर्थात् सत्या। दूसरा - सत् अर्थात् अविनाशी। दोनों अर्थ से सत्यता की शक्ति सबसे बड़ी है। बाप को सत् बाप कहते हैं। बाप तो अनेक हैं लेकिन सत् बाप एक है। सत् शिक्षक, सत्गुरु एक ही है। सत्य को ही परमात्मा कहते हैं अर्थात् परम आत्मा की विशेषता सत्य अर्थात् सत् है। आपका गीत भी है। सत्य ही शिव है...। दुनिया में भी कहते हैं - सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्। साथ-साथ बाप परमात्मा के लिए सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप कहते हैं। आप आत्माओं को सत्-चित्त-आनन्द कहते हैं। तो 'सत्' शब्द की महिमा बहुत गाई हुई है।

✚ इस ग्रुप में किसी को भी कहें कि यहाँ बैठ जाओ तो एवररेडी हो? कोई का पीछे का कोई बन्धन तो नहीं है। ऐसे भी होगा, जब समय आयेगा सभी को टिकेट कैन्सिल कराके यहाँ बिठा देंगे। ऐसे समय पर कोई सैलवेशन भी नहीं लेंगे। सभी को याद है - जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो वह 4 दिन कैसे बिताये? मकान बड़ा था? खाना बनाया था? फिर 4 दिन कैसे बीता था! विनाश के दिन भी ऐसे ही बीत जायेंगे। उस समय लवलीन थे ना। ऐसे ही लवलीन स्थिति में

समाप्ति होगी। फिर यहाँ की पहाड़ियों पर रहकर तपस्या करेंगे। तीसरी आँख से सारा विनाश देखेंगे। ऐसे निश्चिंत हो ना। कोई चिंता नहीं। न मकान की, न परिवार की, न काम की।

✚ एडवान्स पार्टी का सब पूछते हैं, कहाँ हैं, क्या करते हैं? क्यों नहीं प्रत्यक्ष होते हैं? तो वह आत्मायें कहती हैं हम प्रत्यक्ष होंगे तो क्या हम अकेले प्रत्यक्ष होंगे कि साथ-साथ होंगे? अगर मानों एडवान्स पार्टी का पार्ट प्रत्यक्ष होता है तो कौन हैं, यह क्या है, उसमें आप नहीं होंगे? क्या सिर्फ एडवान्स पार्टी प्रत्यक्ष होगी? वह भी आपका इन्तजार कर रहे हैं कि एक साथ ताली बजायें। दूसरे तरफ विनाश का समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप इन्तजार नहीं करो वह कर रहा है। समय तो आपकी रचना है, आप आर्डर करो तो वह तो सदा तैयार है। तो अभी अपने को अचल-अडोल बनाने की, बनने की तैयारी करो।

✚ जितना संगम का समय ज्यादा से ज्यादा तख्तनशीन होंगे उतना ही आधाकल्प सूर्यवंश की राजधानी में और चन्द्रवंश में भी सूर्यवंश के राज्य घराने में होंगे। अगर अभी संगम पर कभी-कभी तख्तनशीन होंगे तो सूर्यवंश के रॉयल फैमिली में इतना ही थोड़ा समय होंगे। तख्तनशीन चाहे टर्न बाई टर्न होंगे लेकिन रॉयल फैमिली, राज्य घराने की आत्माओं के सदा सम्बन्ध में होंगे। तो चेक करो - कि संगमयुग के आदि समय से अब तक चाहे 10 साल हुए हैं, चाहे 50, चाहे 66 साल हो गये, लेकिन जब से ब्राह्मण बनें तब आदि से अब तक कितना समय दिल तख्तनशीन स्वराज्य तख्त नशीन रहे? बहुतकाल रहा, निरन्तर रहा वा कभी-कभी रहा?

✚ जितना माननीय योग्य बनेंगे उतना ही वहाँ पूजनीय योग्य बनेंगे। यहाँ आपके कर्म को देखने वाले अगर श्रेष्ठ नहीं मानते हों, तो पूजने वाले भी श्रेष्ठ मानकर पुजारी कैसे बनेंगे? जितना माननीय उतना पूजनीय का हिसाब है। जो पूजनीय बनेंगे उनको देख हर्षित होते हैं। अब बनना है वा सिर्फ देखकर हर्षित होना है? जितना साज-युक्त हो उतना ही राजयुक्त बनो। साज बजाने

में होशियार हो ना? साज सुनने के इच्छुक भी कितने होंगे! इसमें तो पास हो ना? जितना साज-युक्त उतना राजयुक्त बनो। राजयुक्त जो होता है उनके हर कदम में राज भरा हुआ होता है। ऐसे राज-युक्त वा साज-युक्त दोनों का बैलेन्स ठीक रखना है।

✚ जितना औरों को भाग्यवान बनायेंगे अर्थात् भाग्य बांटेंगे उतना भाग्य बढ़ता जायेगा। गायन है ना-जब ब्रह्मा ने भाग्य बांटा तो सोये हुए थे क्या? तो ब्रह्मा ने भाग्य बांटा और ब्रह्माकुमार-कुमारी क्या करते? भाग्य बांटते हो ना। जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा। दूसरा धन खर्च करने से कम होता है और यह भाग्य जितना खर्चेंगे उतना बढ़ेगा। पाण्डव तो कमाने में होशियार होते हैं। क्योंकि जानते हो कि एक जन्म जमा का है और अनेक जन्म खाने के हैं। सतयुग में कमाई करेंगे क्या? आराम से खाते रहेंगे। एक जन्म का पुरुषार्थ और अनेक जन्म की प्रालब्ध। तो जन्म-जन्म के लिए इसी एक जन्म में इकट्ठा करना है।

✚ सत्यता की अथार्टी वाले का गायन भी सुना है, उसकी निशानी क्या होगी? सिन्धी में वहावत है - “सच ते बिठो नच”। और भी कहावत है - “सत्य की नाव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती”। आपको भी हिलाने की कोशिश तो बहुत करते हैं ना! यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता की महानता के नशे में सदा खुशी के झूल में झूलते रहते। खुशी में नाचते रहते हो ना। जितना वह हिलाने की कोशिश करते उतना ही क्या होता? आपके झूले को हिलाने से और ही ज्यादा झूलते हो। आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते। और ही उसको धन्यवाद दो कि हम बाप के साथ झूलें, आप झुलाओ। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है।

✚ जो हैं ही खुदाई खिदमतगार उन्हीं को सदा स्वतः ही खुदा और खिदमत अर्थात् बाप और सेवा दोनों साथ-साथ याद रहती ही हैं। वैसे भी आजकल की दुनिया में कोई किसका कार्य नहीं

करता वा सहयोगी नहीं बनता तो एक दो को कहते हैं - भगवान के नाम से यह काम करो। वा खुदा के नाम से यह काम करो। क्योंकि समझते हैं - भगवान के नाम से सहयोग मिल जायेगा और सफलता भी मिल जायेगी। कोई असम्भव कार्य वा होपलेस बात होती है तो भी यही कहते हैं - “भगवान का नाम लो तो काम हो जायेगा।” इससे क्या सिद्ध होता है? असम्भव से सम्भव, ना उम्मीद से उम्मीदवार कार्य बाप ने आकर किये हैं तब तो अब तक भी यह कहावत चलती आती है।

✚ बाप को सभी से प्यारे ते प्यारा काम है ही - बच्चों से मिलने का। चाहे अव्यक्त रूप से चाहे व्यक्त रूप में। बाप की दिनचर्या का विशेष कार्य सिकीलधे स्नेही बच्चों से मिलने का है। उन्हों को सजाने, पालना करने, समान बनाए विश्व के आगे निमित्त बनाना, यही कार्य है। इसी में बिजी रहते हैं। साइन्स वालों को प्रेरते हैं वह भी बच्चों के लिए। भक्तों को भावना का फल देते हैं तो भी बच्चों को ही आगे करते हैं। बिन्दु को तो कोई जानता नहीं। देवी-देवताओं को ही जानते हैं। भक्तों के आगे भी बच्चों को ही प्रत्यक्ष करते हैं। सबको मुक्ति में ले जाते तो भी आप बच्चों को सुख-शान्तिमय राज्य के लिए।

✚ (कब जाना है?) समय कभी भी बता के नहीं आयेगा, अचानक ही आयेगा। जब समझेंगे समीप है तो नहीं आयेगा। जब समझने से थोड़े अलबेले होंगे तो अचानक आयेगा। आने की निशानी अलबेलेपन वाले अलबेलेपन में आयेंगे, नहीं तो नम्बर कैसे बनेंगे? फिर तो सब कहें - हम भी अष्ट हैं, हम भी पास हैं। लेकिन थोड़ा बहुत अचानक होने से ही नम्बर होंगे। बाकी जो महारथी हैं उन्हों को टचिंग आयेगी। लेकिन बाप नहीं बतायेगा। टचिंग ऐसे ही आयेगी जैसे बाप ने सुनाया। लेकिन बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। एक सेकण्ड पहले भी नहीं कहेंगे कि एक सेकण्ड बाद होना है। यह भी नहीं कहेंगे। नम्बरवार बनने हैं, इसलिए यह हिसाब रखा हुआ है।

✚ जितने भी हो, चाहे चार लाख हो, चाहे 14 लाख हो, लेकिन ब्रह्मा बाप की भुजायें इतनी बड़ी हैं जो 14 लाख भी एक साथ भुजाओं में समा सकते हैं। इसीलिये परमात्मा का भक्ति मार्ग में विराट रूप दिखाते हैं, जिसमें सब समाये हुए हैं। तो सभी ब्रह्मा बाप की भुजाओं में समाये हुए हो। कुछ भी हो, जैसे छोटा बच्चा क्या करता है, अगर कोई उसको कुछ भी कहता है या कुछ भी होता है तो वह माँ या बाप की बाहों में समा जायेगा। ऐसे होता है ना! तो आप भी ऐसे करो। बच्चे हो ना कि अभी बड़े हो गये हो? 100 साल का भी बाप के आगे तो छोटा बच्चा ही है। तो आपको भी कुछ भी हो ना, बस ब्रह्मा बाप की बाहों में समा जाओ, बस।

✚ कोई-कोई अच्छा-अच्छा कहकर चले भी जायेंगे लेकिन वह अन्त में हलचल के समय इच्छुक होकर महसूसता शक्ति के साथ-साथ आयेंगे।e इसलिए सेवा करते रहना चाहिए।e फिर भी आपको इष्ट मानेंगे जरूर।e और कुछ नहीं तो कम-से-कम आपके भक्त तो बन जायेंगे।e अगर अन्त में यह भी कहा कि इन्होंने संदेश अच्छा दिया, संदेशी थे, पैगम्बर थे, यह भी सोचा तो भक्त बन जायेंगे।e लास्ट स्टेज भक्त है, वह भी तो चाहिए।e अभी जो आते हैं वह 7 दिन के कोर्स से, अपनी हिम्मत से चलने वाले कम हैं, लास्ट पूर है ना।e लास्ट पूर में ताकत नहीं होती।e इसलिए अभी की आत्माओं को स्वयं के शक्तियों के सहयोग द्वारा आगे बढ़ाने का समय है।e

✚ आज इस वर्ष के मिलन की अन्तिम टुब्बी है ना। सभी टुब्बी लगाने आये हो ना। जबकि भक्ति मार्ग में भी डुबकी लगाते हैं तो कोई न कोई संकल्प जरूर करते हैं, चाहे कुछ स्वाहा करते हैं, चाहे कुछ स्वार्थ रखते हैं। दोनों से संकल्प करते हैं। तो तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्म द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य करेंगे, और पुण्य की निशानी बताई कि पुण्य का प्रत्यक्षफल है हर आत्मा की दुआएं। हर संकल्प में पुण्य जमा हो। बोल में

दुआएं जमा हो। सम्बन्ध-सम्पर्क से दिल से सहयोग की शुक्रिया निकले - इसको कहते हैं तपस्या। ऐसी तपस्या विश्व परिवर्तन का आधार बनेगी।

✚ स्थिति धारण करना अर्थात् नये वस्त्र धारण करना। सतयुग में तो स्थूल में सदा नई ड्रेस पहनेंगे, विश्व-महाराजन् वा राज्यवंशी पहनी हुई ड्रेस नहीं पहनेंगे। तो यह संस्कार यहाँ से राज्य-अधिकारी आत्माओं के भरते हैं। हर समय की नई स्थिति और हर समय बाप-दादा द्वारा ज्ञान-विज्ञान द्वारा, नया श्रृंगार हो रहा है। जैसे सबसे ज्यादा सम्पत्तिवान, सदा नया-नया श्रृंगार करेंगे। तो सर्वश्रेष्ठ सम्पन्न बाप, आप श्रेष्ठ सम्पन्न बच्चों को रोज नया श्रृंगार करते हैं ना! तो रोज नया वर्ष हो गया ना! नये वस्त्र, नया श्रृंगार, नया उत्सव अर्थात् उत्साह और सदा मुख मीठा। निरन्तर ही मुख में मीठेपन की मिठाई।

✚ एक मैं है कामन, मैं आत्मा हूँ और यह मेरा शरीर है। दूसरा महीन मैं, जो सुनाया मैंने यह किया, मैं यह कर सकता हूँ, मैं ही ठीक हूँ, यह महीन मैं इसको खत्म करना है। यह देह अभिमान इस रूप में आता है। तो आज बापदादा ने यह महीन मैं जो कभी बाप की विशेषता को भी मेरा मानकर 'मैं' का भान रखते हैं, इसको समाप्त करना। देखो, यादगार जो बनाते हैं उसमें भी जब बलि चढ़ाते हैं तो खुद नहीं बलि चढ़ते हैं लेकिन किसको बलि चढ़ाते हैं? बकरे को। बकरे को क्यों ढूँढा? क्योंकि बकरा मे मे ही करता है। भक्तों ने कॉपी तो बहुत अच्छी की है। तो आज के दिन यह देह अभिमान का मैं क्या पुरूषार्थ करके समाप्त कर सकते हो?

✚ हँस की विशेषता स्वच्छता अर्थात् साफ है, इसलिए आप ब्राह्मण आत्माओं को होलीहँस' कहा जाता है। चेक करो कि मुझ होलीहँस आत्मा की चारों ही बातों में अर्थात् तन-मन-दिल और सम्बन्ध में स्वच्छता है? सम्पूर्ण स्वच्छता वा पवित्रता - यही इस संगमयुग में सबका लक्ष्य है। इसलिए ही आप ब्राह्मण सो देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र गाया जाता है। सिर्फ निर्विकारी

नहीं कहते लेकिन 'सम्पूर्ण निर्विकारी' कहा जाता है। १६ कल्प सम्पन्न कहा जाता है। सिर्फ १६ कल्प नहीं कहते लेकिन उसमें 'संपन्न'। गायन आपके ही देवता रूप का है लेकिन बने कब? बाह्य जीवन में वा देवता जीवन में? बनने का समय अब संगमयुग' है।

✚ एक बिजनेसमैन लाखों को आगे बढ़ा सकता है। क्योंकि एक बिजनेसमैन अनेकों के सम्पर्क में आते हैं। जितनों के सम्पर्क में आते हैं उनसे आधे भी सन्देश सुनने वाले निकले तो भी कितने हो जायेंगे! यह भी बिजनेस है। बिजनेसमैन को कितने शेयर्स मिलेंगे। सेवा का चांस बिजनेसमैन को अच्छा है। जितना बड़ा महत्व यज्ञ का है, उतना ही यज्ञ-सेवाधारियों का भी महत्व है। इसी सेवा का यादगार अब तक अनेक धर्मस्थानों में कायम है। जो भी पीछे वाले धर्म स्थान बनते हैं, उसी स्थानों की सेवा का भी महत्व समझते हैं। तो चैतन्य महायज्ञ के सेवाधारियों का कितना महत्व है। यह सेवा नहीं कर रहे हो लेकिन पद्मगुणा मेवा खा रहे हो।

✚ सुनने और सुनाने वाले को पुरुषार्थी कहेंगे या तीव्र पुरुषार्थी कहेंगे? सुनना और सुनाना, उसके बाद क्या होता है? तीव्र पुरुषार्थी किसको कहेंगे-सुनने वाले को या बनने वाले को? जो माला का 16108वां नम्बर है वह भी सुनता और सुनाता तो है ही। नहीं तो माला में कैसे आयेगा। लेकिन 108 की माला में कौन आयेंगे? 108 की माला का नाम है विजयी माला। 16000 वाली माला का नाम विजयी माला नहीं है। तो सुनना और सुनाना-यह मैजारिटी करते हैं। लेकिन सुना और बना-इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी 108 हैं और पुरुषार्थी 16108 हैं। तो अपने आपको चेक करो कि तीव्र पुरुषार्थी हैं या पुरुषार्थी हैं?

✚ आत्माओं का अल्पकाल का प्रभाव कहाँ-कहाँ पड़ जाता है-उन्हें को नोट करते हो यह कैसे करते हैं, यह कैसे बोलते हैं। इसी कारण अपनी अथॉरिटी का जो फोर्स होना चाहिए वह दूसरे तरफ दृष्टि जाने से कमजोर हो जाता है। क्योंकि यह भी बड़ा सूक्ष्म नियम है। जबकि वायदा है

कि वृत्ति में, सुनने में, देखने में, सोचने में एक के सिवाय और कोई नहीं। आत्माओं के प्रभाव को बुद्धि में रखते हुए वा आत्माओं के प्रभाव को देखते हुए करना - यह भी सूक्ष्म में लिंक टूट जाती है। जैसे शुरू-शुरू में मस्त फकीर रमतायोगी थे। अपनी नॉलेज की पावर को प्रत्यक्ष करने में समर्थ थे। वह समर्थी होने के कारण फर्स्ट रचना भी समर्थ हुई।

✚ अंची मंज़िल को प्राप्त करने वाले जो बोल और भाव को परिवर्तन कर दें अर्थात् निन्दा को भी स्तुति में परिवर्तन कर दें, ग्लानि को गायन में परिवर्तित कर दे, ठुकराने को सत्कार में परिवर्तित कर दें, अपमान को स्व-अभिमान में परिवर्तित कर दें व अपकार को उपकार में परिवर्तित कर दें व माया के विघ्नों को बाप की लगन में मग्न होने का साधन समझ परिवर्तित कर दें - ऐसे बाप समान 'सदा विजयी अष्ट रत्न' बनते हैं। और भक्तों के इष्ट बनते हैं। ऐसी स्थिति को पहुँचे हो? या सिर्फ स्नेही आत्माओं के प्रति सहयोगी आत्मायें बने हो? होपलेस केस में व ना-उम्मीदवार को उम्मीदों का सितारा बनाना-कमाल इसी बात में है।

✚ जैसे इसी पुरानी सृष्टि और हिस्ट्री में है - पहले जमाने में पंछियों द्वारा सन्देश भेजते थे। जो सन्देश देकर फिर वापिस आ जाते थे। आपकी सेवा कौन-सी है। वह पक्षियों द्वारा सन्देश भेजते थे आप संकल्प शक्ति द्वारा किसी भी आत्मा के प्रति सेवा कर सकते हो। संकल्प का बटन दबाया और वहाँ सन्देश पहुँचा। जैसे अन्तः वाहक शरीर द्वारा सहयोग दे सकते हैं वैसे संकल्प की शक्ति द्वारा अनेक आत्माओं की समस्या का हल कर सकते हैं। अपने श्रेष्ठ संकल्प के आधार से उन्हीं के व्यर्थ वा कमजोर संकल्प परिवर्तन कर सकते हो। यह विशेष सेवा समय प्रमाण बढ़ती रहेगी। समस्यायें ऐसी आयेंगी जो स्थूल साधन समाप्त हो जायेंगे।

✚ बोल, बोल, बोल, बोलते ही रहते हो। अगर बापदादा टेप भरकर आपको सुनाये ना तो आपको भी हंसी आयेगी। तो क्या पाठ पक्का किया है? बोल की इकॉनॉमी करो, अपने बोल की वैल्यु रखो। जैसे महात्माओं को कहते हैं ना-सत्य वचन महाराज तो आपके बोल सदा सत

वचन अर्थात् कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले वचन हों। किसको चलते-फिरते हंसी में कह देते हो - ये तो पागल है, ये तो बेसमझ है, ऐसे कई शब्द बापदादा अभी भूल गये हैं लेकिन सुनते हैं। तो ब्राह्मणों के मुख से ऐसे शब्द निकलना ये मानों आप सतवचन महाराज वाले, किसी को श्राप देते हो। किसको श्रापित नहीं करो, सुख दो। युक्तियुक्त बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो।

✚ तो संकल्प भी हर वर्ष से श्रेष्ठ करते हो लेकिन संकल्प और स्वरूप दोनों ही समान हो। यही महानता है। इस महानता में 'जो ओटे सो अर्जुन'। वह कौन बनेगा? सब समझते हैं हम बनेंगे। दूसरे अर्जुन बनते है या भीम बनते हैं उसको नहीं देखना है। मुझे नम्बरवन अर्थात् अर्जुन बनना है। हे अर्जुन ही गाया हुआ है। हे भीम नहीं गाया हुआ है। अर्जुन की विशेषता सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बनना है। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाला अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाला अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं - ऐसे बेहद की वैराग वृत्ति वाले अर्जुन कौन बनेंगे? बनना है कि सिर्फ बोलना है?

✚ आज बापदादा अपनी अनेक भुजाओं को देख रहे हैं। 1- भुजायें सदा प्रत्यक्ष कर्म करने का आधार हैं। हर आत्मा अपनी भुजाओं द्वारा ही कर्म करती हैं। 2-भुजायें सहयोग की निशानी भी कही जातीं। सहयोगी आत्मा को राइटहैण्ड कहा जाता है। तो हाथ भुजा का साधन है। 3- भुजाओं को शक्ति रूप में भी दिखाया जाता है। इसलिए बाहुबल कहा जाता है। भुजाओं की और विशेषता है 4- भुजा अर्थात् हाथ - स्नेह की निशानी है। इसलिए जब भी स्नेह से मिलते हैं तो आपस में हाथ मिलाते हैं। भुजाओं का विशेष स्वरूप पहला सुनाया - संकल्प को कर्म में प्रत्यक्ष करना। आप सभी बाप की भुजायें हो। तो यह चार ही विशेषतायें अपने में दिखाई देती हैं?

✚ सिर्फ साथ जायेंगे नहीं लेकिन साथ आयेंगे भी। पूज्य भी ब्रह्मा के साथ बनेंगे और पुजारी भी ब्रह्मा बाप के साथ बनेंगे। तो अनेक जन्मों का साथ है। लेकिन उसका आधार इस समय समान बन साथ चलने का है। इस वर्ष की विशेषता देखो - नम्बर भी 8, 8 हैं। आठ का कितना महत्त्व है! अगर अपना पूज्य रूप देखो तो अष्ट भुजाधारी, अष्ट शक्तियाँ उसी की ही यादगार है - अष्ट रत्न, अष्ट राजधानियाँ - अष्ट का भिन्न-भिन्न रूप से गायन है। इसलिए यह वर्ष विशेष बाप समान बनने का दृढ़ संकल्प का वर्ष मनाओ। जो भी कर्म करो बाप समान करो। संकल्प करो, बोल बोलो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ, 'बाप समान।' ब्रह्मा बाप समान बनना तो सहज है ना।

✚ जैसे भक्ति में भी कहा जाता है कि यह सिद्ध पुरुष है। तो यहाँ भी जिसका संकल्प और बोल सिद्ध होता है तो उस सिद्धि के आधार पर वह प्रसिद्ध बनता है। अगर सिद्ध नहीं तो प्रसिद्ध नहीं। भक्ति में कई देवियाँ व देवताएं प्रसिद्ध होते हैं, कई प्रसिद्ध नहीं होते। वे देवता व देवी तो माने जाते हैं लेकिन प्रसिद्ध नहीं होते। तो संकल्प और बोल सिद्ध होना यह आधार हैं प्रसिद्ध होने का। इससे ऑटोमेटिकली अव्यक्त फरिश्ता बन जायेंगे और समय बच जायेगा। वाणी में आना ऑटोमेटिकली समाप्त हो जायेगा क्योंकि साइलेन्स-होम अथवा शान्ति धाम में जाना है ना? तो वह साइलेन्स के व आकारी फरिश्तेपन के संस्कार अपनी तरफ खींचेंगे।

✚ सागर और नदियों के मिलन स्थान पर मिलन मना रहे हैं। सागर का कण्ठा पसन्द आता है ना! सिर्फ सागर नहीं लेकिन अनेक नदियों का सागर के साथ मिलन स्थान कितना श्रेष्ठ होगा। सागर को भी नदियों का मिलन कितना प्यारा लगता है। ऐसा मिलन मेला फिर किसी युग में होगा? इस युग का 'मिलन' सारा कल्प भिन्न-भिन्न रूप और रीति से गाया मनाया जायेगा। ऐसा मेला मनाने के लिए आये हो ना, यहाँ वहाँ से इसलिए भागे हो ना! सागर में समाए, समान मास्टर ज्ञान सागर बनने का अनुभव है ना! जब सागर में समा जाते हो तो नदी से मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हो अर्थात् बाप समान बेहद के स्वरूप में स्थित हो जाते हो। ऐसा बेहद का अनुभव करते हो?

✚ आप समझो कि अभी विनाश का समय कुछ तो पड़ा है। चलो 10 वर्ष ही सही। लेकिन 10 वर्ष के बाद फिर यह पुरूषार्थ नहीं कर सकेंगे। कितनी भी मेहनत करो, नहीं कर सकेंगे। कमजोर हो जायेंगे। फिर अन्त युद्ध में जायेगी। सफलता में नहीं। त्रेतायुगी तो नहीं बनना है न! मेहनत अर्थात् तीर कमान। और सदा मुहब्बत में रहना, खुशी में रहना अर्थात् मुरलीधर बनना, सूर्यवंशी बनना। मुरली नचाती है और तीर कमान निशाना लगाने के लिए मेहनत कराता है। तो कमान धारी नहीं, मुरली वाला बनना है। इसलिए पीछे कोई उल्हना नहीं देना कि थोड़ा-सा फिर से एक्स्ट्रा समय दे दो। चांस दे दो वा कृपा कर लो। यह नहीं चलेगा। इसलिए पहले से सुना रहें हैं।

✚ दो प्रकार के बच्चे हैं जो पहले वाले हैं वह हैं स्थापना के निमित्त बच्चे और आप लोग हो विशेष सेवा के आदि के बच्चे। यह (दादियां) हैं जड़ स्थापना वाले और आप सब (सेवा के आदि रत्न) हैं पहला-पहला तना। तो तना तो मजबूत होता है ना। तना पर ही सब आधार होता है। तना से ही सब शाखायें निकलती हैं। जड़ वाले तो सूक्ष्म में शक्ति देते हैं लेकिन जो प्रैक्टिकल में होता है, दिखाई देता है, वह तना दिखाई देता है। तो दादियां अभी गुप्त हो गई हैं, सकाश देने वाली और प्रैक्टिकल में स्टेज पर आने वाले आप निमित्त बनें, (सम्मान समारोह में आई हुई सभी बड़ी बहिनों से बापदादा ने हाथ उठवाया) इसीलिए बापदादा काम दे रहे हैं।

✚ पहला हरेक शिववंशी, दूसरा ब्रह्मावंशी, तीसरा देवता वंशी, चौथा इष्ट देव वंशी। हरेक के चार वंश का रूप बाप-दादा के आगे स्पष्ट है - भक्ति मार्ग में आप ही श्रेष्ठ आत्मायें भिन्न भिन्न रूप में भक्तों के इष्ट देव बनते हो। इस समय भी आप सबके भक्त आप इष्ट देवों को वा देवियों को पुकारते रहते हैं। जैसे प्रत्यक्षता का समय स्पष्ट और समीप आता जा रहा है वैसे आप सब के देव वंश अर्थात् राजवंश और इष्ट वंश की प्रत्यक्षता होती जायेगी। ऐसे अनुभव करते हो कि

हम ही इष्ट देव बनकर अनेक भक्त आत्माओं की मनोकामनायें पूर्ण करनेवाले हैं। जैसे राजवंश में नम्बरवार हैं, वैसे ही पूज्य रूप में भी नम्बरवार इष्ट बनते हो।

✚ तो मधुबन निवासियों की विशेषता है - सदा हर कर्म बाप के साथ अनुभव करने वाले। जो हर कर्म बाप के साथ करने वाले हैं, उनका हर कर्म श्रेष्ठ होगा ना। तो श्रेष्ठ कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। सदा इसी अनुभव में चलने वाले को ही मधुबन निवासी कहते हैं। जिस समय यह अनुभव नहीं होता तो मधुबन निवासी नहीं हुए। उस समय मधुबन में रहते भी मधुबन निवासी नहीं हैं और जो दूर रहते भी हर कर्म बाप के साथ करते, वह दूर रहते भी मधुबन निवासी है। मधुबन वाले हर चरित्र में साथ चलने वाले हैं। भागवत मधुबन का यादगार है, मधुबन में बाप के साथ हर चरित्र चलने वालों की कहानी है। ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं को देख सब खुश होते हैं।

✚ आज अनादि बाप और आदि बाप अनादि शालिग्राम बच्चों को और आदि ब्राह्मण बच्चों को डबल रूप से देख रहे हैं। शालिग्राम रूप में भी परम पूज्य हो और ब्राह्मण सो देवता स्वरूप भी गायन और पूजन योग्य हो। दोनों - आदि और अनादि बाप दोनों ही रूप से पूज्य आत्माओं को देख हर्षित हो रहे हैं। अनादि बाप ने आदि पिता सहित अर्थात् ब्रह्मा बाप और ब्राह्मण बच्चों को अपने से भी ज्यादा डबल रूप में पूज्य बनाया है। अनादि बाप की पूजा सिर्फ एक निराकार रूप में होती है लेकिन ब्राह्मा सहित ब्राह्मण बच्चों की पूजा "निराकार", "साकार", - दोनों रूप से होती है। तो बाप बच्चों को अपने से भी ज्यादा डबल रूप से महान मानते हैं।

✚ बापदादा, बाप और बच्चों का मेला देख हर्षित हो रहे हैं। द्वापर से जो भी 'मेले' विशेष रूप में होते हैं, कोई न कोई नदी के किनारे पर होते हैं वा कोई देवी वा देवता की मूर्ति के उपलक्ष में होते हैं। एक ही शिवरात्रि - बाप की यादगार में मनाते हैं। लेकिन परिचय नहीं। द्वापर के मेले भक्तों और देवियों वा देवताओं के होते हैं। लेकिन यह मेला महानदी और सागर के कण्ठे पर बाप और बच्चों का होता है। ऐसा मेला सारे कल्प में हो नहीं सकता। मधुबन में डबल मेला

देखते हो। एक बाप और दादा महानदी और सागर का मेला देखते। साथ साथ बापदादा और बच्चों का मेला देखते। तो मेला तो मना लिया ना! यह मेला वृद्धि को पाता ही रहेगा।

✚ ऐसा वी.आई.पी लाओ जो भारत की सरकार को उनका स्वागत करना पड़े। गवर्मेंट तक आवाज जाना अर्थात् आवाज बुलन्द होना। अभी सारे विदेश में से कोई भी स्थान ऐसी सेवा करे। न चाहते भी भारत वालों के कानों में जबरदस्ती भी आवाज पड़े। जैसे कुम्भकरण के चित्र में दिखाते हो ना, अमृत कान में डाल रहे हैं। तो ऐसी सेवा हो तब कहेंगे विदेश का आवाज भारत तक पहुँचा। अभी छोटी छोटी तूतारियाँ तक पहुँचे हो, बिगुल बजाना पड़ेगा। फिर आप सबको बापदादा बहुत अच्छी गिफ्ट देंगे। जब ऐसा आवाज निकलेगा तब जय-जयकार की शहनाइयाँ बजेंगी। नहीं तो भारत के कुम्भकरण ऐसे सहज जागने वाले नहीं हैं। अब तो सिर्फ “क्या” कह करके खर्राटे मारते रहते।

✚ आदि रत्न आदि स्थिति में आ गये ना। मध्य भूल गया ना। डालियाँ वगैरा सब छूट गई ना। आदि रत्न सभी उड़ते पंछी बनकर जा रहे हो ना। सोने हिरण के पीछे भी नहीं जाना। किसी भी तरह की आकर्षण वश नीचे नहीं आना। चाहे किसी भी प्रकार के सरकमस्टांस बुद्धि रूपी पाँव को हिलाने आवें लेकिन सदा अचल अडोल, नष्टोमोहा और निर्मान रहना। तभी उड़ते पंछी बन उड़ते और उड़ाते रहेंगे। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। न किसी व्यक्ति के, न किसी हद के प्राप्ति के प्यारे बनना। ज्ञानी तू आत्मा के आगे यह हद की प्राप्ति ही सोने हिरण के रूप में आती हैं। इसलिए, हे आदि रत्नो, आदि पिता समान ‘सदा निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी रहना’।

✚ बापदादा देखते हैं भक्त भी जो सच्चे भक्त हैं, स्वार्था भक्त नहीं, सच्चे भक्त, आज के दिन बड़े प्यार से व्रत रखते हैं। आप सबने भी व्रत तो लिया है, वह थोड़े दिनों का व्रत रखते हैं और आप

सबने ऐसा व्रत रखा है जो एक अभी का व्रत 21 जन्म कायम रहता है। वह हर वर्ष मनाते हैं, व्रत रखते हैं, आप कल्प में एक बार व्रत लेते हो जो 21 जन्म न मन से व्रत रखना पड़ता, न तन से व्रत रखना पड़ता है। व्रत तो आप भी लेते हो, कौन सा व्रत लिया है? पवित्र वृत्ति, दृष्टि, कृति, पवित्र जीवन का व्रत लिया है। जीवन ही पवित्र बन गई। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत की नहीं, लेकिन जीवन में आहार, व्यवहार, संसार, संस्कार सब पवित्र।

✚ शान्ति वालों को शान्ति और सुख वालों को सुख मिले, तब आपका गायन करेंगे, आपको पूर्वज मानेंगे, अष्टदेव समझेंगे और बारम्बार बाप की महिमा करेंगे। इसी आधार पर फिर द्वापर में भक्त और धर्मपिता के संस्कार इमर्ज होंगे। यह विशेष कार्य अब होने वाला है तब समझो लास्ट विजय का समय आ गया। सबको कुछ न कुछ मिलेगा, सिर्फ भातरवासी ही नहीं समझेंगे कि 'हमारा बाबा है', सभी समझेंगे हमारा है तब तो ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर (Great Great Grand Father) कहा जायेगा ना! दूसरे देश वाले अभी समझते हैं भारत के पिता का परिचय देते हैं, लेकिन जब कहा जाता गाड इज वन (God Is One; भगवान एक है) तो सभी वन (One; एक) का अनुभव तो करें ना।

✚ अपने चार्ट रूपी दर्पण में, जैसे अमृतवेले उठकर शरीर का श्रृंगार करते हो ना, वैसे पहले बाप द्वारा मिली हुई सर्व शक्तियों से आत्मा का श्रृंगार करो। जो श्रृंगार किये हुए होंगे वह संहारीमूर्त भी होंगे। सारे विश्व में सर्वश्रेष्ठ आत्मायें हो ना। श्रेष्ठ आत्माओं का श्रृंगार भी श्रेष्ठ होता है। आपके जड़ चित्र सदा श्रृंगारे हुए रहते हैं। शक्तियों वा देवियों के चित्र में श्रृंगारमूर्त और संहारीमूर्त दोनों हैं। तो रोज अमृतवेले साक्षी बन आत्मा का श्रृंगार करो। करने वाले भी आप हो, करना भी अपने आप को ही है। फिर कोई भी प्रकार की परिस्थितियों में डगमग नहीं होंगे, अडोल रहेंगे। ऐसे को होली हंस कहा जाता है।

✚ वर्तमान समय की स्थिति प्रमाण आप सभी का कौन-सा स्वरूप विश्व-कल्याण का कर्तव्य कर सकता है? उस स्वरूप को जानते हो? इस समय आवश्यकता है माइट हाउस के स्वरूप की। क्या ऐसा अनुभव करते हो कि ऑलमाइटी बाप की सन्तान हम भी माइट हाउस बने हैं? सर्व शक्तियाँ अपने में समाई हुई समझते हो? शक्तिवान् नहीं लेकिन सर्वशक्तिवान्। जिनका 'सर्वशक्तियाँ सम्पन्न' के लिए गायन है कि अप्राप्त कोई शक्ति नहीं ब्राह्मणों के खजाने में। जैसे देवताओं के लिये गायन है, अप्राप्त कोई वस्तु नहीं देवताओं के खजाने में, वैसे आप ब्राह्मणों का गायन है कि अप्राप्त नहीं कोई शक्ति ब्राह्मणों के खजाने में क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान् हैं।

✚ ऐसा नहीं कि बाप मेरा, मैं बाबा का, सब कुछ हो गया, बाबा से काम है, परिवार से क्या काम! लेकिन यह भी निश्चय की विशेषता है। चार ही बातों में निश्चय, विजय आवश्यक है। परिवार भी सभी को कई बातों में मजबूत बनाता है। सिर्फ परिवार में यह स्मृति में रहे कि सब अपने-अपने नम्बरवार धारणा स्वरूप हैं। वैरायटी है। इसका यादगार 108 की माला है। सोचो - कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर, क्यों बना? सब एक नम्बर क्यों नहीं बने? 16 हजार क्यों बना? कारण? वैरायटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, निभाना, यही सक्सेसफुल स्टेज है। चलना तो पड़ता ही है। परिवार को छोड़कर कहाँ जायेंगे। नशा भी है ना कि हमारा इतना बड़ा परिवार है।

✚ कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। ऐसी प्रतिज्ञा की है? भले सारे विश्व की आत्माएं मिलकर भी प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें, तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बनकर के ही दिखायेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का यादगार बना हुआ है - अचलघर। तो सदैव यह याद रखना कि जैसा हमारा यादगार है वैसा अब बनना ही है। यह तो सहज है ना। स्थूल निशानी को याद रखने से नशा और निशाना याद रहेगा। यह ज़रूर अपने को समझना है कि सारे विश्व से चुने हुए हम विशेष आत्मायें हैं।

जितनी विशेष आत्मायें उतनी उनके हर कर्म में विशेषता होती है। विशेष आत्मा हो ना। कम नहीं हो।

✚ प्कौन सा मंत्र भक्ति में बहुत ही प्रसिद्ध है, जिसकी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे? भक्ति में “हम सो, सो हम” का मंत्र बहुत प्रसिद्ध है, अभी आप बच्चे ‘हम सो’ का राज प्रैक्टिकल में अनुभव कर रहे हो। यह मंत्र जमारे लिए है, हम ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। हम ही सो देवता थे, सो देवता हम ब्राह्मण बने हैं। यह अभी पता चला। अब देवताओं के चित्र देखकर बुद्धि में आता - यह जमारे ही चित्र हैं। यही वन्दर हैं! इसी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे देवताओं के चित्र देखकर बुद्धि में आता - यह जमारे ही चित्र हैं। यही वन्दर हैं! इसी स्मृति में रहो तो खुशी के झूले में झूलते रहेंगे।

✚ इस समय को ड्रामा अनुसार वरदान है। भाग्य के भण्डारे भरपूर खुले हुए हैं। तन का भण्डारा, मन का, धन का, राज्य का, प्रकृति दासी बनने का, भक्त बनाने का, सब भाग्य के भण्डारे खुले हैं। किसी को भी विधाता द्वारा स्पेशल प्राप्ति का चांस नहीं मिलता है। सबको एक जैसा चांस है। कोई भी बातों का कारण भी बंधन के रूप में नहीं है। पीछे आने का कारण, प्रवृत्ति में रहने का कारण, तन के रोग का कारण, आयु का कारण, स्थूल डिग्री या पढ़ाई का कारण, किसी भी प्रकार के कारण का ताला भण्डारे में नहीं लगा हुआ है। दिन-रात भाग्य विधाता के भण्डारे भरपूर और खुले हुए हैं। कोई चौकीदार नहीं है। फिर भी देखो लेने में नम्बर बन जातें हैं।

✚ न कमज़ोर बनो, न मर्यादाओं की परहेज से वा मर्यादाओं की लकीर से बाहर आओ। अभी तक यही खेल करने है? विश्व-कल्याण के ठेकेदार इतने बड़े आक्यूपेशन वाले और यह बच्चों के खेल खेलते, यह कब तक? विश्व आपका इन्तजार कर रहा है कि शान्ति के दूत आये की आये। हमारे देव हमारे ऊपर शान्ति की आशीर्वाद वा कृपा करने के लिए आये कि आये। जोर-

जोर से चिल्ला के घण्टियाँ बजाते। कभी तो चिमटे भी बजाते हैं, नगाड़े बजाते हैं। आओ, आओ करके पुकारते हैं। ऐसी देव आत्मायें अगर अपने बचपन के खेल में रहेंगी तो उन्हीं की पुकार सुनेंगी कैसे! इसलिए पुकार सुनो और उपकार करो। समझा, क्या करना है। अच्छा बाप भी समय का ख्याल रखता, आप लोग नहीं रखते।

✚ अनेक चक्र से छूट कर एक स्वदर्शन चक्र ले लिया अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बन गये। कभी भी किसी भी प्रकार के तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क के चक्र में फँसते हो तो उसका कारण स्वदर्शन चक्र को छोड़ देते हो। स्वदर्शन चक्र सदा ही एक ही अंगुली पर दिखाते हैं। पाँच अंगुलियाँ वा दो अंगुलियाँ नहीं। एक अंगुली अर्थात् एक ही संकल्प - 'मैं बाप का और बाप मेरा'। एक इस संकल्प रूपी एक अंगुली पर स्वदर्शन चक्र चलता है। एक को छोड़ अनेक संकल्पों में जाते हो, अनेक चक्करों में फँसते हो। स्वदर्शन-चक्रधारी अर्थात् स्व का दर्शन करना और सदा के लिए प्रसन्नचित्त रहना। स्वदर्शन नहीं तो प्रसन्नचित्त के बजाए प्रश्नचित्त हो जाता।

✚ सत्यता की शक्ति से सारी विश्व आप सत्यता की शक्ति वालों का भक्तिमार्ग के आदि से अन्त तक अविनाशी गायन और पूजन करती आती है। अर्थात् गायन पूजन भी अविनाशी सत हो जाता है। सत अर्थात् सत्य। तो सबसे पहले क्या जाना? अपने आपको 'सत आत्मा' जाना। सत बाप के सत्य परिचय को जाना। इस सत्य पहचान से सत्य ज्ञान से सत्यता की शक्ति स्वतः ही सत्य हो जाती। सत्यता की शक्ति द्वारा असत्य रूपी अंधकार, अज्ञान रूपी अंधकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। अज्ञान सदा असत्य होता है। ज्ञान सत है, सत्य है। इसलिए भक्तों ने बाप की महिमा में भी कहा है "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्"। सत्यता की शक्ति सहज ही प्रकृति जीत, मायाजीत बना देती है।

✚ हरेक मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं ने सर्वशक्तियों को कहाँ तक अपने में धारण किया है? विशेष शक्तियों को अच्छी तरह से जानते हो और जानने के आधार पर चित्र बनाते हो। यह चित्र, चैतन्य स्वरूप की निशानी है - “श्रेष्ठता अथवा महानता।” हर कर्म श्रेष्ठ, महान है इससे सिद्ध है कि शक्तियों को चरित्र अर्थात् कर्म में लाया है। निर्बल आत्मा है वा शक्तिशाली आत्मा है, सर्वशक्ति सम्पन्न है वा शक्ति स्वरूप सम्पन्न है - यह सब पहचान कर्म से ही होती है क्योंकि कर्म द्वारा ही व्यक्ति और परिस्थिति के सम्बन्ध वा सम्पर्क में आते हैं। इसलिए नाम ही है - “कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्म-इन्द्रियां, कर्म भोग, कर्म योग”।

✚ गायन है दृष्टि से सृष्टि बनती है। कौन सी सृष्टि बनती है और कब बनती है? दृष्टि और सृष्टि का ही गायन क्यों है, मुख का गायन क्यों नहीं हैं? काम पर पहले-पहले क्या बदली करते हैं? पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो। भाई-भाई की दृष्टि अर्थात् पहले दृष्टि को बदलने से सब बातें बदल जाती हैं। इसलिए गायन है कि दृष्टि से सृष्टि बनती है। जब आत्मा को देखते हैं तब यह सृष्टि पुरानी देखने में आती है। पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज का ही है दृष्टि बदलने का। जब यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है। दृष्टि बदलने से गुण और कर्म आप ही बदल जाते हैं। यह आत्मिक दृष्टि नैचुरल हो जाये।

✚ कईयों की आदत होती है - खा लेंगे - ऐसे करते ताजे को सूखा फल बना देते हैं। ऐसे ही यहाँ भी कहते - यह होगा तो फिर करेंगे, यह ज्यादा सोचते हैं। सोचा, डायरेक्शन मिला और किया। यह न करने से डायरेक्शन को भी ताजे से सूखा बना देते हैं। फिर सोचते हैं कि किया तो डायरेक्शन प्रमाण लेकिन रिजल्ट इतनी नहीं निकली। क्यों? समय पकड़ने से वेला के प्रमाण रेखा बदल जाती है। कोई भी भाग्य की रेखा वेला के प्रमाण ही सुनाते वा बनाते हैं। इस कारण वेला बदलने से वायुमण्डल, वृत्ति, वायब्रेशन सब बदल जाता है। इसलिए गाया हुआ है - ‘तुरत दान महापुण्य’। डायरेक्शन मिला और उसी वेला में उसी उमंग से किया। ऐसी सेवा का ताजा मेवा मिलता है।

✚ देखो भक्ति मार्ग में भी ये निशानी है कि जब बलि चढ़ाते हैं तो अगर बलि का बकरा चिल्लाता है तो वो प्रसाद नहीं माना जाता। एक धक से बिना चिल्लाये स्वाहा हो जाता है तो प्रसाद हो जाता है। तो बलि के बकरे को भी कहते हैं चिल्लाये नहीं। और आप कहते हैं सहन किया, सहन किया तो क्या ये चिल्लाना नहीं हुआ? चाहे मन में, चाहे मुख से अगर थोड़ा भी चिल्लाते हैं तो प्रसाद नहीं हुआ। बाप को स्वीकार नहीं होता है तो दुआएं कैसे देगा? तो क्या करेंगे, थोड़ा-थोड़ा अन्दर चिल्लायेंगे? थोड़ा कोने में, बाथरूम में, छिपकर एक-दो आंसू बहायेंगे? थोड़ी तो छुट्टी मिलनी चाहिये! माताओं को बच्चे तंग करें तो क्या करेंगी? थोड़ा मन में तो रोयेंगी?

✚ मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी समय ही कहाँ है। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। शक्तियों की सवारी शेर पर दिखाते हैं। कौन सा शेर? यह माया जो शेरनी रूप में सामना करने आती है उनको अपने अधीन कर सवारी बनाना अर्थात् उनकी शक्ति को खत्म करना। ऐसी शक्तियां जिनकी शेर पर सवारी दिखाते हैं वही तुम हो ना। वह सभी का ही चित्र है। ऐसी शेरनी शक्तियां कभी माया से घबराती नहीं। लेकिन माया उनसे घबराती है। ऐसे माया जीत बने हो ना।

✚ यथार्थ क्या और यादगार क्या! (बड़े-बड़े लोग एक महामूर्ख सम्मेलन भी करते हैं।) यह भी राइट है। क्योंकि जब बाप आते हैं तो बड़े-बड़े लोग महामूर्ख ही बन जाते हैं, जितने बड़े उतने ही मूर्ख बनते। जो बाप को ही नहीं जान सकते तो महामूर्ख हुए ना! देखो बड़े-बड़े नेतायें जानते हैं? तो महामूर्ख हुए ना। यह भी अपनी कल्प पहले की महामूर्खता की यादगार मनाते हैं। सारा

उल्टा कार्य करते हैं। बाप कहते - मेरे को जानो, वह कहते - बाप हैं ही नहीं। तो उल्टे हुए ना! आप कहते हो - बाप आया है, वह कहते - हो ही नहीं सकता। तो उल्टा कार्य करते हैं ना। ऐसे तो बहुत कुछ विस्तार कर लिया है। लेकिन सार है - बाप और बच्चों के मंगल मिलन का यादगार।

✚ जैसे आपके यादगारों में भी दिखाया है कि पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की। लेकिन नशा क्या था? विजय का। तो आप भी गवर्मेन्ट सर्वेन्ट बनते हो ना, नौकरी करते हो। लेकिन नशा रहे-विश्व-कल्याणकारी हूँ। तो इस स्मृति से स्वतः ही समर्थ रहेंगे और सदा सेवा-भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। फल भी मिल जाये और बल भी मिल जाए-तो डबल फायदा है ना! ऐसे नहीं कि कपड़ा धुलाई कर रहे हैं तो कपड़े धोने वाले हैं। जब विश्व-कल्याणकारी का संकल्प रखेंगे तब आपकी यह भावना अनेक आत्माओं को फल देगी। गाया हुआ है ना कि भावना का फल मिलता है। तो आपकी भावना आत्माओं को फल देगी-शान्ति, शक्ति देगी। यह फल मिलेगा। ऐसी सेवा करते हो?

✚ बापदादा महावीर बच्चों की हिम्मत और उमंग-उल्लास देख पद्मगुणा से भी ज्यादा हर्षित होते हैं। हिम्मत रखी है, संगठन सदा स्नेह के सूत्र में रहा है इसलिए इसकी सफलता है। संगठन मजबूत है ना! छोटी माला मजबूत है। कंगन तो बना है। माला तो नहीं बने, कंगन तो है ना। इसलिए छोटी माला भी पूजी जाती है। बड़ी अच्छी तैयार हो रही है, वह भी हो जायेगी, होनी ही है। सुनाया था ना - बड़ी माला दाने तैयार है लेकिन दाने से दाना मिलने में थोड़ी सी मार्जिन है। लेकिन छोटी माला अच्छी तैयार है। इसी माला के कारण ही सफलता सहज है और सफलता सदा माला के मणकों के गले में पिरोई हुई है। विजयी का तिलक लगा हुआ है। बापदादा खुश है, पद्मगुणा मुबारक है।

✚ ऐसे सेवाधारी के संकल्प वा शुभ भावनाएं, शुभ कामनाएं, सूर्य की किरणों मुवाफिक चारों ओर फैलेंगी। जैसे सेवाधारियों के जड़ चित्र अल्पकाल के लिए अल्पकाल की कामनाएं पूर्ण करती है, ऐसे चैतन्य चरित्रवान सेवाधारी सदाकाल के लिए सर्व कामनाएं पूर्ण करते हैं। इसलिए 'कामधेनु' का गायन है। जैसे कोई खान सम्पन्न होती है तो जितना चाहे, उतना सम्पन्न हो सकता है। और ही हृद की खान से विशेषता होगी। हृद की खान से एक वस्तु मिलती। लेकिन यह विचित्र खान है जिसको जो चाहिए वह मिल सकता है। ऐसा सेवाधारी तड़फती हुई आत्माओं को सहज ही मंजिल का अनुभव कराता है। सदा हर्षित, सदा संतुष्ट इस प्राप्ति का वरदान, सेवाधारी को स्वतः ही प्राप्त होता है।

✚ वैसे भी स्नेह की निशानी विशेष यही गाई जाती कि दो, दो न रहें लेकिन दो मिलकर एक हो जाएँ। इसको ही समा जाना कहते हैं। भक्तों ने इसी स्नेह की स्थिति को समा जाना वा लीन होना कह दिया है। वो लोग लीन होने का अर्थ नहीं समझते। लव में लीन होना - यह स्थिति है लेकिन स्थिति के बदले उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त करना समझ लिया है। समा जाना अर्थात् समान बन जाना। जब बाप के वा रूहानी माशूक के मिलन में मग्न हो जाते हो तो बाप समान बनने अथवा समा जाने अर्थात् समान बनने का अनुभव करते हो। इसी स्थिति को भक्तों ने समा जाना कहा है। लीन भी होते हो, समा भी जाते हो। लेकिन यह मिलन के मुहब्बत के स्थिति की अनुभूति है।

✚ गुणों का दान सिवाय आप लोगों के अन्य कोई कर नहीं सकता। इसलिये स्वयं सर्व गुणों के अनुभव-स्वरूप होंगे तो अन्य को भी अनुभवी बना सकेंगे। कमल पुष्प के समान बने हो? अपने जीवन का ही चित्र दिखाया है ना। कि और कोई महारथियों के जीवन का चित्र है? हमारा चित्र है - ऐसे ही कहते हैं ना। चित्र क्यों बनाया जाता है? चरित्र का ही चित्र बनता है। तो ऐसे चरित्रवान हो तब तो चित्र बनाया है ना। यह एक ही चित्र स्मृति में रखकर हर कर्म में आओ तो सदैव और सर्व बातों में अलिप्त (न्यारा) रहेंगे। यह अल्पकाल के लिए रहते हो।

कितना भी, कैसा भी वातावरण हो, कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन सिर्फ यह चित्र भी याद रखो तो वायुमण्डल से न्यारे रहेंगे।

✚ बाप के साथ के नशे का कल्प पहले वाला यादगार भी अभी तक गाया जा रहा है। कौन सा? अक्षोणी सेना के सामने होते, बड़े-बड़े महावीर सामने होते भी पांडवों को किसका नशा था? बाप के साथ का। अक्षोणी सेना अर्थात् माया के अनेक भिन्न-भिन्न स्वरूप भी बाप के साथ से अक्षोणी नहीं लेकिन एक क्षण में भस्मी भूत हुए पड़े हैं। ऐसा नशा यादगार में भी गाया हुआ है। महावीर को महावीर नहीं समझा, लेकिन मरे हुए मुर्दे समझे। यह किसका यादगार है? बाप के साथ रहने वाले अनुभवी आत्माओं का। इस कारण कहा अनुभवी कभी धोखा नहीं खाते। मुश्किल अनुभव नहीं करते। अन्जान अनुभव नहीं करते। कल्प पहले के यादगार को प्रेक्टीकल अनुभव कर रहे हो वा सिर्फ वर्णन करते हो?

✚ अगर बहुतकाल के योद्धेपन के ही संस्कार रहे अर्थात् युद्ध करते-करते समय बिताया, आज जीत कल हारा। अभी- अभी जीत अभी-अभी हारा। सदा के विजयीपन के संस्कार नहीं तो इसको क्षत्रिय कहा जायेगा या ब्राह्मण? ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। क्षत्रिय तो फिर क्षत्रिय ही जाकर बनेगा। देवता की निशानी और क्षत्रिय की निशानी में देखो अन्तर है? यादगार चित्रों में उनको कमान दिखाया है, उनको मुरली दिखाई है। मुरली वाले अर्थात् मास्टर मुरलीधर बन विकारों रूपी सांप को विषैले बनने के बजाए विष समाप्त कर, शैया बना दी। कहाँ विष वाला सांप और कहाँ शैया! इतना परिवर्तन किससे किया? मुरली से। ऐसे परिवर्तन करने वाले को ही 'विजयी ब्राह्मण' कहा जाता है।

✚ लंदन ग्रुप से:- सदा रूहानी गुलाब बन औरों को भी खुशबू देने वाले अविनाशी बगीचे के पुष्प हो ना। सभी रूहानी गुलाब हो। जिस रूहानी गुलाब को देख सारी विश्व आकर्षित होती है।

एक-एक रूहानी गुलाब कितना वैल्युबुल है। अमूल्य है। जो अभी तक भी आप सबके जड़ चित्रों की भी वैल्यु हैं। एक-एक जड़ चित्र कितनी वैल्यु से लेते वा देते हैं। हैं तो साधारण पत्थर या चांदी या सोना लेकिन वैल्यु कितनी हैं। सोने की मूर्ति कितनी वैल्यु में देंगे। इतने वैल्युबुल कैसे बने! क्योंकि बाप का बनने से सदा ही श्रेष्ठ बन गये। इसी भाग्य के गीत सदा गाते रहो। वाह मेरा भाग्य और वाह भाग्य विधाता! और वाह संगमयुग! वाह मीठा ड्रामा! सबमें वाह-वाह आता है ना।

✚ जब मर गये, मरना अर्थात् परिवर्तन होना। तो ऐसा जीते जी मरना, उसके लिए कितने तैयार होंगे? कि सेन्टर पर जाकर के कहेंगे कि क्या करें, चाहते नहीं थे लेकिन हो गया? यहाँ तो जीते जी मरना मनाकर जाते हैं, फिर जब कोई बात सामने आती है तो जिंदा हो जाते हो। ऐसे नहीं करना। यादगार में भी दिखाते हैं कि रावण का एक सिर खत्म करते थे तो दूसरा आ जाता था। यहाँ भी एक बात पूरी होती तो दूसरी पैदा हो जाती, फिर समझते-हमने तो रावण को मार दिया, फिर यह कहाँ से आ गया? लेकिन मूल फाउन्डेशन को समाप्त न करने के कारण एक रूप बदल दूसरे रूप में आ जाते हैं। फाउन्डेशन को खत्म कर दो तो रूप बदलकर के माया वार नहीं करेगी, सदा के लिए विदाई ले जायेगी।

✚ हनुमान को महावीर कहते हैं ना! महावीर ने क्या किया? लंका को जला दिया। खुद नहीं जला, पूँछ द्वारा लंका जलाई। तो लंका को जलाने वाले महावीर हो ना! माया अधिकार समझकर आये लेकिन आप उसके अधिकार को खत्म कर अधीन बना दो। हनुमान की विशेषता दिखाते हैं कि वह सदा सेवाधारी था। अपने को सेवक समझता था। तो यहाँ जो सदा सेवाधारी हैं वही माया के अधिकार को खत्म कर सकते हैं। जो सेवाधारी नहीं वह माया के राज्य को जला नहीं सकते। हनुमान के दिल में सदा राम बसता था ना। एक राम दूसरा न कोई। तो बाप के सिवाए और कोई भी दिल में न हो। अपने देह की स्मृति भी दिल में नहीं। सुनाया ना कि देह भी पर है, जब देह ही पर हो गई तो दूसरा दिल में कैसे आ सकता?

✚ आपके आगे तो क्यू लगनी है ना। क्यू में इन्तजार करना होता है। इन्तजार की घड़ियां अब समाप्त हुईं। इन्तजार की घड़ियां हैं भक्तों की। ज्ञान अर्थात् प्राप्ति की घड़ियां, मिलन की घड़ियां। ऐसे निश्चयबुद्धि हो ना। ऐसे निश्चय बुद्धि आत्माओं की यादगार यहां ही दिखाई हुई है। अपनी यादगार देखी है? अचल घर देखा है? जो सदा सर्व संकल्पों सहित बापदादा के ऊपर बलिहार हैं उन्हीं के आगे माया कब वार नहीं कर सकती। ऐसे माया के वार से बचे हुए रहते हैं। बच्चे बन गये तो बच गये। बच्चे नहीं तो माया से भी बच नहीं सकते। माया से बचने की युक्ति बहुत सहज है। बच्चे बन जाओ, गोदी में बैठ जाओ तो बच जायेंगे। पहले बचने की युक्ति बताते हैं, फिर भेजते हैं।

✚ कोई नहीं कह सकता कि बाबा मुझे ज्यादा प्यार करता। अगर कोई कहता है तो कहो - मुझे आपसे भी ज्यादा करता! और करते हैं, ऐसे ही नहीं कहते। दिल खुश करते हैं। सिर्फ दिल खुश करने के लिए नहीं कहते। बाप तो जानते हैं कि कितने भटके हुए, थके हुए, उलझे हुए फिर से 5000 वर्ष के बाद मिले हैं! बाप ने ढूँढ - ढूँढ कर तो निकाला है। साऊथ, नार्थ, ईस्ट, वेस्ट - सबसे निकाला है। तो जिसको ढूँढ कर निकाला हो तो उससे कितना प्यार होगा! नहीं तो ढूँढते ही नहीं। और सागर के पास प्यार की कमी है क्या? यह तो दिलाराम जाने कि हर एक को दिल से प्यार कितना है! क्या भी हो लेकिन प्यार में सभी पास हो। बाप से प्यार का सर्टिफिकेट तो बाप ने पहले ही दे दिया है।

✚ पाण्डवों को क्या नशा है? पाण्डवों को अपना नशा है, अपनी खुशी है। पाण्डव सदा बाप के साथी दिखाते हैं। पाण्डवों ने कभी साथ नहीं छोड़ा, अन्त तक साथ निभाया। वही पाण्डव हो ना। पाण्डव दिल से गाते हैं कि हमारा साथी सदा भगवान् है। सदा साथ रहने वाले हैं। सदा साथ निभाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव हो ना? सदा साथ रहने वाली वरदानी आत्मायें हैं। जब वरदाता साथ है तो वरदान भी साथ है ना। वरदानों से सदा झोली भरी हुई है। वरदान भरते-भरते

इतने वरदानी बनते हो जो अनेक जन्म अनेक आत्माओं को वरदानी स्वरूप में दिखाई देते हो। आपके जड़ चित्रों से वरदान लेने आते हैं ना। ऐसे वरदानी आत्मायें बन गये। कभी वरदानों से अलग हो ही नहीं सकते। सदा भरपूर हैं।

✚ जब देखो कि माया हमारी बुद्धि की लगन को बाप से दूर करने की कोशिश करती है, तो अपने अन्दर बाप के गुण गाने हैं, महिमा करनी है। महान्! कर्तव्य करने लग जाओ, चिल्लाओ नहीं। भक्ति में भी गुणगान करते हैं ना। यह यादगार भी कब से बना? यह मन्सा का गुणगान करना वाचा में ला दिया है। यथार्थ रीति से गुणगान तो आप ही कर सकते हो ना। अब यथार्थ रूप में मन्सा संकल्प से, स्मृति-स्वरूप में गुणगान करते हो और भक्ति में स्थूलता में आते हैं तो मुख से गाने लग पड़ते हैं। सभी रीति-रस्म शुरू तो यहां से होती हैं ना। तो गुणगान करने लग जाओ। अपने को अधिकारी समझ सर्व शक्तियों को काम में लाओ। फिर कब भी माया आपकी बुद्धि की लगन को दूर नहीं कर सकेगी।

✚ जैसे सतयुग में मां-बाप पालना कर राजभाग के अधिकारी बनाकर, तख्तनशीन बनाकर राजतिलक दे अर्थात् ज़िम्मेवारी का तिलक दे स्वयं साक्षी हो देखते हैं। साथ होते भी साक्षी हो देखते हैं। तो यह विधान भी कहां से शुरू होगा? अब भी बापदादा इस विश्व सेवा के ज़िम्मेवारी का तिलक दे स्वयं साक्षी हो देखते हैं। साक्षी हैं ना। साथ होते भी साक्षी हैं। अभी का वर्ष और भी साक्षी बनने का है। यह अव्यक्त रूप का मिलन व्यक्त द्वारा भी कब तक! इसलिये इस नये वर्ष में अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने की वा अनुभव कराने की ड्रिल सिखला रहे हैं, जो अव्यक्त बन अव्यक्त बाप से अव्यक्त मिलन मना सकें। कोई भी पार्ट सदा एक जैसे नहीं चलता, बदलता है आगे बढ़ाने लिए।

✚ सन्तुष्टता में सर्टिफिकेट मिला है? मनपसन्दी के साथ-साथ लोक पसन्द बनना है। सर्टिफिकेट एक तो जो रेसपान्सिबुल हैं उन्होंने दिया तो लोकपसन्द हुए, रचना को भी सन्तुष्ट रखना है।

उन्हों की चलन से ही कैच करना है कि सन्तुष्ट हैं? जब कोई मधुबन में आते हैं तो निमित्त बनी हुई बहनों द्वारा अपना सर्टिफिकेट ले जावें। यह सभी सर्टिफिकेट धर्मराज पुरी में काम आयेंगे। जैसे रास्ते में कार चलाने वाले को सर्टिफिकेट होता है तो दिखा देने से रास्ता पार कर लेते हैं। ऐसे धर्मराजपुरी में भी यह सर्टिफिकेट काम में आयेगा। इसलिए जितना हो सके सर्टिफिकेट लेते जाओ। क्योंकि ट्रिब्युनल में भी यही महारथी बैठते हैं। इन्हों की सर्टिफिकेट काम में आयेगी।

✚ हर एक के मस्तक बीच त्रिशूल अर्थात् त्रिमूर्ति स्मृति की स्पष्ट निशानी दिखाई देती है। शक्ति की निशानी त्रिशूल दिखाते हैं। तो हरेक त्रिशूलधारी शक्ति सेना हो ना। बापदादा और आप। यह त्रिमूर्ति सदा स्पष्ट रूप में रहती है वा कभी मर्ज कभी इमर्ज होती है? बापदादा के साथ-साथ मैं श्रेष्ठ शक्तिशाली आत्मा हूँ, यह भी याद रहता है? इसी त्रिमूर्ति स्मृति से शक्ति में शिव दिखाई देगा। कई मन्दिरों में बापदादा के कम्बाइण्ड यादगार शिव की प्रतिमा के साथ उसी प्रतिमा में मनुष्य आकार भी दिखाते हैं। यह बापदादा का कम्बाइण्ड यादगार है। साथ-साथ शक्ति भी दिखाते हैं। तो इस त्रिमूर्ति स्मृति स्वरूप स्थिति से सहज ही साक्षात्कार मूर्त बन जायेंगे।

✚ जब सूर्य व्यक्त से अव्यक्त होता है तब सितारे स्पष्ट दिखाई देते हैं। तो बाप व्यक्त से अव्यक्त हुए हैं विश्व को सितारों की रिमझिम दिखाने के लिए। स्थूल सूर्य को कहते हैं अस्त हो गया लेकिन यह ज्ञान-सूर्य व्यक्त से अव्यक्त रूप है लेकिन सितारों के साथ है। साकार रूप से सदा साथी नहीं बन सकते। साकार में होते हुए भी सदा साथ में रहने के लिए अव्यक्त स्थिति और अव्यक्त साथी समझते थे। तो अब भी सदा साथ अव्यक्तरूप में ही हो सकता है। क्योंकि अव्यक्त रूप व्यक्त शरीर के बन्धन से मुक्त है। तो आप सभी को भी सदा साथ देने के लिए इस शरीर की स्मृति से दूर करने के लिए, यह अव्यक्त पार्ट चल रहा है। बापदादा तो हर समय सर्व बच्चों के साथ है ही।

- ✚ हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं। जैसे आत्मा के बिना भुजा कुछ नहीं कर सकती वैसे बाप-दादा कम्बाइन्ड (Combined) रूप की सोल (soul) के बिना भुजाएं रूपी बच्चे क्या कर सकते। हर कर्तव्य में अन्त तक पहले कार्य का हिस्सा ब्रह्मा का ही तो है। ब्रह्मा अर्थात् आदि देव। आदि देव अर्थात् हर शुभ कार्य की आदि करने वाला। बाप-दादा के आदि करने के बिना अर्थात् आरम्भ करने के बिना कोई भी कार्य सफल कैसे हो सकता। हर कार्य में पहले बाप का सहयोग है।
- ✚ ऐसे सैम्पल तैयार करो जिसको देखकर अन्य का पुरूषार्थ सिम्पल हो जाय - ऐसा झुण्ड तैयार है? ऐसी शक्तियों की ललकार करने वाला झुण्ड हो जो माया को भी ललकार करने वाला हो, चाहे वह माया किसी प्रकार की भी सत्ता वालों में ही क्यों न हो। जुआ में हार तो उन्हीं की है ही - कल्प पहले ही यादगार में भी जुआ दिखाया है लेकिन यथार्थ रूप नहीं दिखाया है। कौरव अपनी जुआ में लगे हुए हैं और धर्म सत्ता वाले अपनी जुआ में लगे हुए हैं, जुआ में हो उन्हीं की हार होनी है और पाण्डवों का झण्डा बुलन्द होना है - ऐसी ललकार करने वाले निर्भय, माया के तूफानों से भी नहीं डरने वाले, निरन्तर विजय का चैलेन्ज करने वाली इस सेना की इन्चार्ज बने तब और भी फॉलो करेंगे।
- ✚ इस समय की सम्पन्नता का गायन आप श्रेष्ठ आत्माओं के कारण स्थान का गायन सदा चलता आ रहा है। अब अन्त तक भी भारत भूमि का गायन विदेश में भी महान है। स्थान का महत्व आप चैतन्य महान आत्माओं के कारण है। आज तक भी आध्यात्मिक खजाने के लिए सबकी नज़र भारत के तरफ ही जाती है। स्थूल धन में गरीब माना जाता है लेकिन आध्यात्मिक खज़ाने अविनाशी सुख और शान्ति, शक्ति इन खज़ानों में भारत ही सबसे सम्पत्तिवान गाया जाता है - तो आपकी इस संगमयुगी की सम्पन्न स्थिति के कारण ही स्थान का गायन है। इतने खज़ानों

से सम्पन्न होते हो जो आधा कल्प वही प्राप्त खजाने चलते रहते हैं। इतना खज़ाना जमा होता जो अनेक जन्म खाते रहते। ऐसा कभी कोई सारे कल्प में नहीं बन सकता।

✚ देखो बापदादा स्थापना के समय से लेकर विदेश के सभी बच्चों को किसी न किसी रूप से याद करते रहे हैं। और बापदादा की याद से समय आने पर चारों ओर के बच्चे पहुँच गये हैं। लेकिन बापदादा ने आह्वाहन बहुत समय से किया है। आह्वाहन के कारण आप लोग भी चुम्बक की तरह आकर्षित हो पहुँच गये हो। ऐसे लगता है ना कि नामालूम कैसे हम बाप के बन गये! बन गये यह तो अच्छा लगता ही है, लेकिन क्या हो गया, कैसे हो गया यह कभी बैठकर सोचो, कहाँ से कहाँ आकर पहुँच गये हो तो सोचने से विचित्र भी लगता है ना! ड्रामा में नूँध नूँधी हुई थी। ड्रामा की नूँध ने सभी को कोने-कोने से निकालकर एक परिवार में पहुँचा दिया। अभी यही परिवार अपना लगने के कारण अति प्यारा लगता है।

✚ सदा पाण्डव यही समझें, कहाँ भी रहते हो चाहे सेन्टर पर रहते हो, चाहे घर में रहते हो लेकिन शक्तियों के रखवाले हो। कोई की भी कोई उल्टी सुल्टी नज़र न जाये। ऐसे सेवाधारी हो। और पाण्डव अगर नहीं आते तो जो इस श्रेष्ठ ज्ञान की विशेष नवीनता है कि यहाँ प्रवृत्ति में रहते न्यारे और प्यारे, परिवार में रहते न्यारे और प्यारे, मोहजीत नष्टोमोहा, वह पाण्डव नहीं होते, सिर्फ शक्तियां होती तो कैसे चलता! इसीलिए कहाँ शक्तियों की महिमा है, कहाँ पाण्डवों की है और इसका चित्र चतुर्भुज का चित्र है। पाण्डवों के बिना भी बाप का कार्य आगे नहीं बढ़ सकता और शक्तियों के बिना भी बाप का कार्य पूरा नहीं। इसीलिए परिवार के परिवार की आवश्यकता क्या, महत्व है।

✚ लेकिन आप सबका अविनाशी सुहाग है - जो कभी मिटने वाला नहीं। क्योंकि अविनाशी अमरनाथ ही आपका सुहाग है। जैसे वह अमर है वैसे आपका सुहाग भी अमर है। सुहागवती स्वयं को सदा दुनिया में श्रेष्ठ समझती हैं - सुहागवती सदा साथ के कारण स्वयं को सन्तुष्ट

समझती है। आजकल की दुनिया में जिसको श्रेष्ठ कार्य समझते हैं, उस श्रेष्ठ कार्य के निमित्त सुहागिन को ही रखते हैं। सुहागिन सदा श्रृंगार की अधिकारी होती है। सुहागिन नहीं तो श्रृंगार भी नहीं। सुहाग की निशानी तिलक और कंगन होती है। सुहागिन सदा सुहाग के कारण सुहाग के खजाने को सर्व खजाने अनुभव करती है अर्थात् अपने को सम्पन्न समझती है। ऐसे ही यह सब रीति-रसम अविनाशी सुहाग का यादगार चला आ रहा है।

✚ उन्होंने को तो एक दिन के लिए क्रिसमस फादर आकर गिफ्ट देते हैं लेकिन आपको सदा के लिए गॉड फादर गोल्डन वर्ल्ड की गिफ्ट देते हैं। जो एक दिन नहीं, थोड़े समय के लिए गिफ्ट नहीं है लेकिन अनेक जन्मों की जन्म-जन्म की गिफ्ट है। तो कितना बड़ा दिन हो गया! वा बड़ा युग हो गया! बड़े से बड़े युग का हर दिन बड़ा दिन है। और मनाते कौन है? बड़े से बड़े बाप के बड़े से बड़े बच्चे, बड़े दिल से, बड़े युग का, बड़ा दिन सदा मनाते रहे हैं। वर्ष के हिसाब से तो एक दिन का उत्सव मनाने का दिन है। कल्प के हिसाब से आप सबके लिए बड़ा युग मनाने का भाग्य है। यह सबसे बड़े से बड़ा उत्सव है। हर दिन उत्सव का दिन है। तो बड़ा युग हो गया ना! क्रिसमस के दिन वो नाचेंगे-गायेंगे-खायेंगे।

✚ दादी ने क्वेश्चन किया था कि अभी क्या ऐसा प्लैन बनायें जो जल्दीजल्दी प्रत्यक्षता हो जाए? तो बापदादा कहते हैं - प्रत्यक्षता तो सेकण्ड की बात है लेकिन प्रत्यक्षता के पहले बापदादा पूछते हैं स्थापना वाले एवररेडी हैं? पर्दा खोलें? कि कोई कान का श्रृंगार कर रहा होगा, कोई माथे का? तैयार हैं? हो जायेंगे, कब? डेट बताओ। जैसे अभी डेट फिक्स की ना! इस मास के अन्दर सन्देश देना है, ऐसे सभी एवररेडी, कम से कम 16 हजार तो एवररेडी हों, 9 लाख छोड़ो, उसको भी छोड़ दो। 16 हजार तो तैयार हों? हैं तैयार? बजायें ताली? ऐसे ही हाँ नहीं करना। एवररेडी हो जाओ तो बापदादा टच करेगा, ताली बजायेगा, प्रकृति अपना काम शुरू करेगी। साइंस वाले अपना काम शुरू कर देंगे।

✚ पुराने जमाने की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं कि ताली बजाने से वस्तु व व्यक्ति हाजिर हो जाते थे व परियाँ प्रत्यक्ष हो जाती थीं। यह परियों की कहानी प्रसिद्ध है। ये कहानियाँ किन के बारे में हैं? ज्ञान-परियाँ व तीनों लोकों में उड़ने वाली परियाँ कौन-सी हैं? अपने को समझती हो न? ज्ञान और याद के दोनों पंख लगे हुए हैं ना? आप ज्ञान और याद के बल से एक सेकेण्ड में, अर्थात् - इन पंखों के आधार से साकार लोक से निराकार लोक तक पहुँच जाते हो न? ऐसे फरिश्ते-समान परियों को एक सेकेण्ड में जिस शक्ति की आवश्यकता हो, संकल्प किया व आह्वान किया और वह शक्ति स्वरूप में आ जाये - ऐसी ताली बजानी आती है? ऐसी परियाँ बनी हो जिन्हों का हर कल्प गायन होता आया है।

✚ क्वेश्चन मार्क (Question Mark; प्रश्न चिन्ह) और महारथियों की निशानी होगी फुल स्टॉप (Fullstop; पूर्ण विराम) जैसे कोई भी सेना होती है तो उसमें फर्स्ट नम्बर है, यह सेकेण्ड है, उसकी निशानी होती है। तो अनादि ड्रामा में रूहानी सेना के सेनानियों को कोई मैडल नहीं देता है लेकिन ऑटोमेटिकली (AUTOMATICALLY; स्वतः) ड्रामानुसार उन्हों को स्थिति रूपी मैडल प्राप्त हो ही जाता है। क्योंकि अब जैसे समय समीप आ रहा है तो समीप समय के कारण माला स्वयं ही अपना साक्षात्कार करायेगी। स्थिति अपना नम्बर ऑटोमेटिकली प्रसिद्ध करती जा रही है। किसको पीछे का नम्बर है तो ऑटोमेटिकली समस्या वा बातें ऐसी सामने आयेगी जिस कारण स्वतः आगे बढ़ने की ठहरती कला हो जायेगी।

✚ जो स्वयं के संकल्पों के बन्धनों में है वह बहुत समय इसी में बिजी रहता है। जैसे आप लोग भी कहते हो ना कि हवाई किले बनाते हैं। किले बनाते और बिगाड़ते हैं। बहुत लम्बी दीवार खड़ी करते हैं। इसीलिए हवाई किला कहा जाता है। जैसे भक्ति में पूजा कर, सजा-धजा करके फिर डुबो देते हैं ना, ऐसे संकल्प के बन्धन में बंधी हुई आत्मा बहुत कुछ बनाती और बहुत कुछ बिगाड़ती है। स्वयं ही इस व्यर्थ कार्य से थक भी जाती है। दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। और कभी अभिमान में आकर अपनी गलती दूसरे पर भी लगाते रहते। फिर भी समय बीतने पर

अन्दर समझते हैं, सोचते हैं कि यह ठीक नहीं किया। लेकिन अभिमान के परवश होने के कारण, अपने बचाव के कारण, दूसरे का ही दोष सोचते रहते हैं।

✚ यह ब्रह्मा बाप के साथ सदा सम्बन्ध में आने का पक्का वायदा है और गैरन्टी है कि सदा भिन्न नाम, रूप, सम्बन्ध में 21 जन्म तक तो साथ रहेंगे ही। तो कितनी खुशी है, हिसाब कर सकती हो? इसका हिसाब निकालने वाला कोई नहीं निकला है। अभी ऐसे ही सदा सजे सजाये रहना, सदा ताजधारी रहना और सदा खुशी में हंसते-गाते रूहानी मौज में रहना। आज सभी ने दृढ़ संकल्प किया ना - कि कदम-कदम पर रखने वाले बनेंगे। वह तो स्थूल पाँव के ऊपर पाँव रखती है लेकिन आप सभी संकल्प रूपी कदम पर कदम रखने वाले! जो बाप का संकल्प वह बच्चों का संकल्प - ऐसा संकल्प किया? एक कदम भी बाप के कदम के सिवाए यहाँ वहाँ का न हो। हर संकल्प समर्थ करना अर्थात् बाप के समान कदम के पीछे कदम रखना।

✚ आज बापदादा उस भगत आत्मा, जिसने आपके इस विचित्र जन्म दिन मनाने को, आप ज्ञान और प्रेम रूप में मनाते और उस भगत आत्मा ने भावना, श्रद्धा के रूप में आपके मनाने की कापी अच्छी की है, तो आज उस बच्चे को मुबारक दे रहे थे कि कापी करने में अच्छा पार्ट बजाया है। देखो हर बात को कापी की है। कापी करने का भी तो अक्ल चाहिए ना! मुख्य बात तो इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हीं को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने क्या व्रत लिया? एक ही बार व्रत लेते हो, वर्ष-वर्ष व्रत नहीं लेते। एक ही बार व्रत लिया पवित्रता का। सभी ने पवित्रता का व्रत लिया है, पक्का लिया है?

✚ खुशी की निशानी, भाग्य की निशानी, संकट दूर होने की निशानी - 'तिलक' होता है। जब कोई किसी कार्य पर जाते हैं, कार्य सफल रहे उसके लिए परिवार वाले तिलक लगाकर भेजते हैं।

आप सबको तो तिलक लगा हुआ है ना। तिलकधारी, तख्तधारी, विश्वकल्पाण के ताजधारी बन गये हो ना। भविष्य का ताज और तिलक इसी जन्म के प्राप्ति की प्रालब्ध है। विशेष प्राप्ति का समय वा प्राप्तियों की खान प्राप्त होने का समय अभी है। अभी नहीं तो भविष्य प्रालब्ध भी नहीं। इसी जीवन का गायन है - दाता के बच्चों को, वरदाता के बच्चों को अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। भविष्य में फिर भी एक अप्राप्ति तो होगी ना। बाप का मिलन तो नहीं होगा ना। तो सर्व प्राप्तियों का जीवन ही - 'ईश्वरीय परिवार' है।

✚ तो आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में भाग्य की रेखायें देख रहे हैं। ऐसा भाग्य और इतना बड़ा भाग्य सारे कल्प में किसी को प्राप्त नहीं है क्योंकि आपको भाग्य देने वाला स्वयं भाग्य दाता है। हर एक के मस्तक में पहले तो चमकता हुआ सितारा का भाग्य चमक रहा है। मुख में मधुर वाणी की रेखा चमक रही है। होठों पर मधुर मुस्कान की रेखा चमक रही है। दिल में दिलाराम बाप के लवलीन की रेखा चमक रही है। हाथों में सर्व खजानों के श्रेष्ठता की रेखा चमक रही है। पांव में हर कदम में पदम की रेखा चमक रही है। अभी सोचो ऐसा भाग्य और किसका हुआ है! इसलिए आपके यादगार चित्रों का भी भाग्य वर्णन होता रहता है। और यह भाग्य स्वयं भाग्यविधाता ने हर एक बच्चे का बनाया है।

✚ जो विश्व-परिवर्तन के निमित्त बने हुए हैं उन की परिवर्तन की स्टेज भी औरों से ऊंची होगी तो यह चैकिंग (checking) होनी चाहिए। रात दिन का अन्तर दिखाई दे, इस पर ही लक्की स्टार्स का गायन है। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा तो अपने स्टेज पर हैं, लेकिन सम्पूर्ण परिवर्तन में लक्की स्टार्स का नाम बाला है। वर्तमान समय साकार रूप में फॉलो तो सभी आप लोगों को करते हैं ना? बुद्धि योग से शक्ति लेना, बुद्धियोग से श्रेष्ठ कर्म को फॉलो करना -- वह तो मात-पिता निमित्त हैं। लेकिन साकार रूप में अब किसको फॉलो करेंगे? जो निमित्त हैं। तो परिवर्तन का ऐसा उदाहरण बनो। वर्ष में एक दो बारी भी ऐसा संगठन हो जाये। हर समय के संगठन में अपनी चढ़ती कला का परिवर्तन है।

✚ हर बोल पर इतना अटेंशन रखो। आप लोग साधारण रीति से बोलेंगे लेकिन आप महान आत्माओं के बोल सत्य होने के कारण कई आत्माओं का अकल्याण हो जाता है। इसलिए भक्ति में भी वरदान के साथ-साथ आप का भी गायन है। आप देते नहीं हैं, लेकिन ऐसी व्यर्थ चलन व व्यर्थ बोल अकल्याण के निमित्त ऑटोमेटिकली बन जाते हैं। अर्थात् सुनने वाली व देखने वाली साधारण आत्मा आपके बोल और कर्म द्वारा गिरती कला में अर्थात् पुरुषार्थ हीन की स्थिति में चली जाती हैं। इस प्रकार वह आप द्वारा श्रापित हो जाती हैं। विश्व के कल्याण के निमित्त अगर आत्मायें न चाहते हुए व न सोचते हुए साधारण रीति से भी किसी आत्मा को श्रापित करने के कार्य में निमित्त बन जाती हैं, तो उसको क्या कहेंगे?

✚ जो सिद्धि प्राप्त आत्मायें होती हैं जिसको लोगों की भाषा में सिद्ध पुरुष कहा जाता है और आप कहेंगे सिद्धि स्वरूप आत्मा - तो उन्होंने क हर संकल्प अपने प्रति या दूसरों के प्रति जो भी करते हैं वह कर्म में सिद्ध हो जाते हैं, जो बोल बोलते हैं वह सिद्ध हो जाता है। जिसको कहते हैं सत-वचना। तो सबसे बड़े ते बड़ी सिद्धि स्वरूप आत्माएं आप हो ना। तो संकल्प और बोल सिद्ध होंगे ना, सिद्ध होना अर्थात् सफल होना। प्रत्यक्ष स्वरूप में आना यह है सिद्ध होना। तो सदैव यह स्मृति में रखो कि हम सभी सिद्धि स्वरूप आत्माएं हैं। हम सिद्धि स्वरूप आत्माओं का हर संकल्प, बोल, हर कर्म स्वयं को वा सर्व को सिद्धि प्राप्त होने वाला हो। व्यर्थ नहीं। कहा और किया तो सिद्ध हुआ।

✚ सभी रंगों में श्रेष्ठ रंग कौन सा है? बाप के श्रेष्ठ संग का रंग। ऐसा रंग जो सदा ही लाल-बाप, लाल-घर, लाल-बच्चे। ऐसे लाल रंग से सदा रंगे हुए हो? यह रंग तो लगाया है ना! इस लाल रंग के संग का रंग ऐसा लगाया है जो 21 जन्म तक नहीं उतरेगा। चाहे कितना भी भट्टी में डालो नहीं उतरेगा ना। ऐसी होली मना ली है या मनानी है? ऐसा होलीएस्ट बाप होली बच्चों से रूहानी होली मना रहे हैं। ऐसी होली जिससे सदा होली बन जाए। होली मनाना क्या लेकिन

होली बन गये। मनाना थोड़े समय का होता, बनना सदाकाल का होता। वह होली मनाते, आप बनते हो। ऐसी रूहानी होली मनाने वाले सभी होली बच्चों को मुबारक हो। हो गई होली, रंग पड़ गया ना। लाल हो गये ना! बाप के लाल बन गये तो लाल हो गये।

✚ वह भी किसी के प्रति प्रभावित होना, कामना अर्थात् काम विकार का अंश है। बिना कामना के प्रभावित नहीं हो सकते। वह कामना भी काम विकार है। महाशत्रु है। यह दो रूप में आता है। कामना या तो प्रभावित करेगी या परेशान करेगी। इसलिए जैसे नारे लगाते हो - काम विकार नर्क का द्वार। ऐसे अब अपने जीवन के प्रति यह धारणा बनाओ कि किसी भी प्रकार की अल्पकाल की कामना मृगतृष्णा के समान धोखेबाज है। कामना अर्थात् धोखा खाना। ऐसी कड़ी दृष्टि वाले इस काम अर्थात् कामना पर काली रूप बनो। स्नेही रूप नहीं बनो, विचारा है, अच्छा है, थोड़ा-थोड़ा है ठीक हो जायेगा। नहीं! विकर्म के ऊपर विकराल रूप धारण करो। दूसरों के प्रति नहीं अपने प्रति। तब विकर्म विनाश कर फरिश्ता बन सकेंगे।

✚ पुरुषों का यह रोब क्या जन्म-सिद्ध अधिकार है? हैं तो सब आत्मा ही ना? स्नेह की भी उत्पत्ति तब होगी जब समझेंगे कि मैं आत्मा हूँ। फिर तो भाई-भाई की दृष्टि में भी रोब नहीं रहेगा। यह तो कलियुगी जन्म-सिद्ध अधिकार है, न कि ईश्वरीय। न बहन देखो, न भाई। क्योंकि इसमें भी एक्सीडेण्ट (दुर्घटना) होते हैं। इसलिये सदा ही आत्मा देखो तभी इस दृष्टि की प्रैक्टिस (अभ्यास) कराई जाती है। मैं पुरुष हूँ इस स्मृति से पाण्डव गल गये। शरीर से गलने का अर्थ क्या है?-शरीर की स्मृति से गलना। पाण्डवों का गायन है कि सब गल गये। जैसे सोने को गलाओगे तो सोना फिर भी सोना ही रहेगा, लेकिन उसका रूप बदल जायेगा। तो यह भी गल गये अर्थात् परिवर्तित हुए। इसलिए यह रोब भी समाप्त।

✚ यह जो स्वयंवर का समारोह होता है, जो ताजपोशी में जो रीति-रस्म होती है वह सभी यहाँ संगम पर ही किस न किस रूप में होती है। मालूम है आज की दुनिया में क्या रीति रस्म है? कितने प्रकारों की रस्म है? एक ब्राहमणों द्वारा होती है, दूसरा कोर्ट द्वारा, तीसरा मंदिरों और गुरुओं द्वारा। इन तीनों रस्मों का किस न किस रूप में यहाँ बीज पड़ता है। यह मधुवन मंदिर भी है, चैतन्य मंदिर है। इस मंदिर के बीच आत्मा और परमात्मा की लगन होती है। साथ साथ कोर्ट का जो रिवाज़ है वह भी यहाँ से शुरू होता है। सुनाया ना कि आप लॉ-मेकर्स हो। इन्हों के आगे यह वायदा करेंगे तो यह कोर्ट हुई ना। तीनों ही रस्म इस संगम पर अलौकिक रूप से होती है। जिसका यादगार स्थूल रूप में चलता रहता है।

✚ दूसरा क्या देखा है कि आजकल जैसे भारत गरीब है ऐसे अब लास्ट समय नजदीक होने के कारण विदेशियों में भी सम्पन्नता में कमी आ गई है। जैसे वृक्ष जब हरा भरा होता है तो फल-फूल सब लगे हुए होते हैं लेकिन जब वृक्ष सूखने शुरू होता है तो सब फल फूल भी सूखने शुरू हो जाते हैं। तो यह देश की प्राप्ति रूपी विशेषता जिससे प्रजा सुखी रहे, खुश रहे, शान्ति का वातावरण रहे वह फल फूल सूखने लग गये हैं। अभी विदेश में भी नौकरी सहज नहीं मिलती। पहले कब विदेश में यह प्रॉब्लम सुनी थी? तो यह भी निशानी है सुख के साधन और शान्ति के फल सूख रहे हैं। भारत रूपी मुख्य तना सूख रहा है उसका प्रभाव मुख्य शाखाओं पर भी पड़ना शुरू हो गया है। यह क्रिश्चियन धर्म लास्ट की मुख्य बड़ी शाखा है।

✚ दादियों से- बेहद बाप की स्नेह की बाहें बहुत बड़ी हैं, उसी स्नेह की बाहों में वा भाकी में सभी समाये हुए हैं। सदा ही सभी बच्चे बाप की भुजाओं के अन्दर भुजाओं की माला के अन्दर हो तभी मायाजीत हो। ब्रह्मा के साथ-साथ जन्म लेने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो ना। तिथि में जरा भी अन्तर नहीं है इसीलिए ब्रह्मा के बहुत मुख दिखाये हैं। ब्रह्मा को ही पाँच मुखी वा तीन मुखी दिखाते हैं क्योंकि ब्रह्मा के साथ-साथ ब्राह्मण हैं। तो तीन मुख वाले में आप हो या पाँच मुख वाले में हो। मुख भी सहयोगी होता है ना। बाप को भी नशा है -कौन-सा? सारे विश्व में कोई

भी बाप ऐसे बच्चे ढूँढकर लाये तो मिलेंगे? (नहीं) बाप कहेंगे ऐसे बच्चे नहीं मिलेंगे, बच्चे कहते ऐसा बाप नहीं मिलेगा।

✚ सूर्य। सूर्य की किरणें भिन्न-भिन्न प्रकार की कमाल दिखायेंगी। यह सब आपके लिए तैयारियाँ हो रही हैं। गैस जलाने की, कोयले जलाने की, लकड़ी जलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। सबसे छूट जायेंगे। अच्छा-बहुत रंगत देखते जायेंगे। वह मेहनत करेंगे और आप फल खायेंगे। फिर यह वायर्स (तारें) वगैरा लगाने की भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बिना मेहनत के नैचुरल नेचर द्वारा नैचुरल प्राप्ति हो जायेगी। लेकिन इसके लिए, नेचर के सुख लेने के लिए भी अपनी आरिजनल नेचर को बनाओ। तब नेचर द्वारा सर्व सुखों को प्राप्त कर सकेंगे। नैचुरल नेचर अर्थात् आनदि संस्कार। सुनते हुए भी अच्छा लगता है तो जब प्रालब्ध में होंगे तो कितना अच्छा लगेगा! जैसे यहाँ पंछी उड़ते हैं, वैसे वहाँ विमान उड़ेंगे।

✚ मैं पतित-पावनी, आसुरी-पतित संस्कार संहारी हूँ। जो स्वयं संहारी हैं वह कब किसका शिकार नहीं बन सकते। इतना प्रैक्टिकल प्रभाव होना चाहिए जो कोई भी आपके सामने संकल्प करे और उनका संकल्प मूर्छित हो जाए। ऐसा काली रूप बनना है। एक सेकेण्ड में पतित संकल्प की बलि ले लेवें। ऐसी भलेवान बनी हो जो कोई की परछाई भी न पड़ सके? कोमल नहीं बनना है। कोमल जो होते हैं वह निर्बल होते हैं। शक्तियां कोमल नहीं होतीं। माया पर तरस कभी नहीं करना। तुम माया का तिरस्कार करने वाली हो। जितना माया का तिरस्कार करेंगी उतना भक्तों द्वारा या दैवी परिवार द्वारा सत्कार प्राप्त करेंगी। माया पर रोब दिखाना है, न कि रहम। कोई के पुरुषार्थ में मददगार बनने में तरस करना है, माया से नहीं।

✚ विदेश वाले विदेश के साधनों द्वारा विश्व में दोनों बाप को हाजर-नाज़र करेंगे। नाज़र अर्थात् इस नजर से देख सकें। तो ऐसे बाप को विश्व के आगे हाजर-नाज़र करेंगे। समझा विदेशियों को क्या करना है! अच्छा- कल तो सारी बारात जाने वाली है। आखिर वह भी दिन आयेगा - जो

हेलीकाप्टर भी उतरेंगे। सब साधन तो आपके लिए ही बन रहे हैं। जैसे सतयुग में विमानों की लाइन लगी हुई होती है। अभी यहाँ जीप और बसों की लाइन लगी रहती। आखिर विमानों की भी लाइन लगेगी। सभी डर कर भागेंगे और सब कुछ आपको देकर जायेंगे। वह डरेंगे और आप उड़ेगे। आपको मरने का डर तो है नहीं। पहले ही मर गये। पाकिस्तान में सैम्पल देखा था ना - सब चाबियाँ देकर चले गये। तो सब चाबियाँ आपको मिलनी हैं। सिर्फ सम्भालना।

✚ भविष्य चतुर्भुज स्वरूप। लक्ष्मी और नारायण का कम्बाइण्ड रूप क्योंकि आत्मा में इस समय लक्ष्मी और नारायण दोनों बनने के संस्कार भर रहे हैं। कब लक्ष्मी बनेंगे, कब नारायण बनेंगे। भविष्य प्रालब्ध का यह कम्बाइण्ड स्वरूप इतना ही स्पष्ट हो। आज फरिश्ता कल देवता। अभी-अभी फरिश्ता, अभी-अभी देवता। अपना राज्य, अपना राज्य स्वरूप आया कि आया। बना कि बना। ऐसे संकल्प स्पष्ट और शक्तिशाली हों क्योंकि आपके इस स्पष्ट समर्थ संकल्प के इमर्ज रूप से आपका राज्य समीप आयेगा। आपका इमर्ज संकल्प नई सृष्टि को रचेगा अर्थात् सृष्टि पर लायेगा। आपका संकल्प मर्ज है तो नई सृष्टि इमर्ज नहीं हो सकती। ब्रह्मा के साथ ब्राह्मणों के इस संकल्प द्वारा नई सृष्टि इस भूमि पर प्रत्यक्ष होगी।

✚ कई आत्माओं की इस समय के पार्ट में भी आवश्यकता है और नई दुनिया के आदि में भी आवश्यकता है। तो क्या करेंगे? ड्रामा तो चलना ही है ना! इसलिए जो भी गये हैं वा जा रहे हैं - विशेष आत्माओं की आदि में भी आवश्यकता है। यह नया चैप्टर (पाठ) शुरू करेंगे ना। योगबल की पैदाइश का नया चैप्टर शुरू करने के लिए कौन-सी आत्मायें चाहिए? योगी आत्माएं चाहिए ना! निमित्त बहाना कोई भी बन जाता है, लेकिन चुकू भी होना है और सेवा भी होनी है। अभी यह नहीं सोचना कि कृष्ण को जन्म कौन देगा, राधे को कौन जन्म देगा। इस विस्तार में नहीं जाना। यह कोई टापिक नहीं है। इसलिए कहा कि कर्मों की लीला 'वाह-वाह' है, बाकी जन्म कोई भी दे - इनमें नहीं जाना। आपको जाना है या सोचना है 'अच्छा!

✚ फाउन्डेशन प्योरिटी है इसलिए इस फाउन्डेशन के ऊपर सदा ही अटेन्शन रहे। सबका लक्ष्य बहुत अच्छा है। तो जैसे लक्ष्य है वैसे ही लक्षण स्वयं को भी अनुभव हों और दूसरों को भी अनुभव हों। क्योंकि अनेक अपवित्र आत्माओं के बीच में आप पवित्र आत्मायें बहुत थोड़े हो। तो थोड़ी सी पवित्र आत्माओं को अपवित्रता को खत्म करना है। तो कितनी पावर चाहिए! तो सदा चेक करो कि अपवित्रता का अंश मात्र भी न हो। क्योंकि आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गायन करते हैं। यह किसकी महिमा करते हैं? आपकी है या भारतवासियों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। यह पक्का निश्चय है ना कि यह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्योरिटी की रॉयल्टी में रहने वाले।

✚ जैसे पाँच विकारों के वश किये हुए कर्म, विकर्म या पाप कहे जाते हैं-यह हैं पापों का मोटा रूप। ऐसे ही महीन पुरुषार्थ अर्थात् महारथी के सामने, पाँच तत्व अपनी तरफ, भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर, महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों को समझना, और उन्हीं को जीतना, सहज है, लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरुषार्थ है। जब इन दस को जानकर इन्हों पर विजय प्राप्त करेंगे, तब ही सच्चा दशहरा होगा। विजयदशमी इस स्थिति का ही यादगार है। महारथियों की चैकिंग, महीन होनी चाहिये। अष्ट रत्न, ऐसे विजयी ही प्रसिद्ध होंगे। प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देने वाली, छोटी-छोटी गलतियाँ ऐसे महीन पुरुषार्थी के समक्ष क्या दिखाई देती हैं?

✚ भक्ति मार्ग में एक शंकर के लिए कह दिया है कि आँख खोली और परिवर्तन हो गया लेकिन यह गायन आप शिववंशी नूर जहान का है। यह जहान की आँखें जब अपनी सम्पूर्ण स्टेज तक पहुँचेंगी अर्थात् सम्पूर्णता की आँख खोलेंगी तो सेकेण्ड में परिवर्तन हो जायेगा। तो जहान के नूर, बताओ, सम्पूर्णता की आँख कब खोलेंगे? आँख खोली तो अब भी है लेकिन अभी बीच-बीच में माया की धूल पड़ जाती है तो आँखें हिलती रहती हैं। जैसे स्थूल आँखों में भी धूल पड़ जाती है तो आँख का क्या हाल होता है। एकाग्र रीति से दृष्टि नहीं दे सकेंगे। सारा विश्व

आप जहान के आँखों की एक सेकेण्ड की दृष्टि लेने के लिए इन्तज़ार में है कि कब हमारे इष्ट देवों वा देवियों की हमारे ऊपर दृष्टि पड़ेगी। जो हम नज़र से निहाल हो जायेंगे।

✚ डबल फॉरेनर्स लकी हैं जो उड़ती कला के टाइम पर आ गये। चढ़ने की मेहनत नहीं करनी पड़ी। विजय का तिलक सदा मस्तक पर चमक रहा है। यही विजय का तिलक औरों को खुशी दिलायेगा। क्योंकि विजयी आत्मा का चेहरा सदा ही हर्षित रहता है। तो आपके हर्षित चेहरे को देखकर सब खुशी के पीछे आकर्षित होते हैं। क्योंकि दुनिया की आत्माएं खुशी को ढूँढ रही हैं और आपके चेहरों पर जब खुशी की झलक देखते तो खुद भी खुश होते। वो समझते हैं इन्हों को कुछ प्राप्ति हुई है। आगे चलकर आपके चेहरे खुशी की आकर्षण से और नजदीक लायेंगे। किसी को सुनने का समय नहीं भी होगा तो सेकेण्ड में आपका चेहरा उन आत्माओं की सेवा करेगा। आप सभी भी प्यार और खुशी को देखकर ब्राह्मण बने ना। तो तपस्या वर्ष में ऐसी सेवा करना।

✚ पवित्रता सर्व प्राप्तियों की चाबी है। इसलिए आप सबका स्लोगन यही है - "पवित्र बनो, योगी बनो।" जो होली भी यादगार है, उसमें भी देखो पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। जलाने के बिना नहीं मनाते हैं। अपवित्रता को जलाना, योग के अग्नि द्वारा अपवित्रता को जलाते हो, उसका यादगार वह आग में जलाते हैं और जलाने के बाद जब पवित्र बनते हैं तो खुशियों में मनाते हैं। पवित्र बनने का यादगार मिलन मनाते हैं क्योंकि आप सभी भी जब अपवित्रता को जलाते हो, परमात्म संग के रंग में लाल हो जाते हो तो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना का मिलन मनाते हो। इसका यादगार मंगल मिलन मनाते हैं। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिलाते हैं कि सदा हर एक से दुआयें लो और दुआयें दो।

✚ प्रश्न करते हैं कि अब आगे क्या होने वाला है - विनाश होगा या नहीं होगा? विनाश ज्वाला प्रकट करने वाले इस हलचल में होंगे तो विनाश के निमित्त बनी हुई विनाशकारी आत्माओं के

बने हुए प्लैन में भी हलचल हो जाती है। जैसे निमित्त बनी हुई आत्मायें सोचती हैं कि होगा या नहीं होगा - अब होगा या कब होगा? वैसे ही विनाशकारी आत्मायें इसी हलचल में है अब करे या कब करें, करें या न करें? जैसे यादगार चित्र कलियुगी पर्वत को अंगुली देने का है, वैसे ही विनाश कराने के निमित्त बनी हुई सर्व आत्माओं के अन्दर यह संकल्प दृढ हो कि होना ही है। यह संकल्प रूपी अंगुली जब तक सभी की नहीं हुई है, तब तक विनाश का कार्य भी रूका हुआ है। इसी अंगुली से ही कलियुगी पर्वत खत्म होने वाला है।

✚ जो सदा छत्रछाया के अन्दर रहते हैं वे सर्व प्रकार के माया के विघ्नों से सेफ रहते हैं। किसी भी प्रकार से माया की छाया पड़ नहीं सकती। यह 5 विकार, दुश्मन के बजाए दास बनकर सेवाधारी बन जाते हैं। जैसे विष्णु के चित्र में देखा है - कि सांप की शय्या और सांप ही छत्रछाया बन गये। यह है विजयी की निशानी। तो यह किसका चित्र है? आप सबका चित्र है ना। जिसके ऊपर विजय होती है वह दुश्मन से सेवाधारी बन जाते हैं। ऐसे विजयी रत्न हो। शक्तियाँ भी गृहस्थी माताओं से, शक्ति सेना की शक्ति बन गई। शक्तियों के चित्र में रावण के वंश के दैत्यों को पाँव के नीचे दिखाते हैं। शक्तियों ने असुरों को अपने शक्ति रूपी पाँव से दबा दिया। शक्ति किसी भी विकारी संस्कार को ऊपर आने ही नहीं देगी।

✚ महिला विंग की मीटिंग है:- अच्छा है, माताओं का कल्याण तो जबसे बापदादा कार्य के लिए निमित्त बनें तो पहले ही माताओं के ऊपर कलष रखा। पाण्डव साथी हैं लेकिन फिर भी यह विशेषता आरम्भ हुई कि मातायें सेवा के निमित्त आगे बढ़ी और जब से बापदादा ने माताओं को मर्तबा दिया तो गवर्मेन्ट में भी आजकल मातायें सबमें, हर कार्य में सहयोगी बन कमाल कर रही हैं। तो संगमयुग की, बापदादा के कार्य की विशेषता या नवीनता मातायें हैं और अभी माताओं की विशेषता आगे आगे जैसे बापदादा के आगे बढ़ रही है ऐसे ही गवर्मेन्ट में या आज की दुनिया में माताओं की तरफ सभी की नजर है इसलिए यह प्रोग्राम धूमधाम से करो, माताओं

को ऐसा आगे बढ़ाओ जो सब देखें कि माताओं की शक्ति, माताओं की पालना कितनी ऊंची है।

✚ इसी आपके जन्म दिवस की यादगार द्वापर से अब तक भक्त भी मनाते रहते हैं। भक्त भी भावना में कम नहीं हैं। लेकिन भगत हैं, बच्चे नहीं हैं। वह हर वर्ष मनाते हैं और आप सारे कल्प में एक बार अवतरण का महत्त्व मनाते हो। वह हर वर्ष व्रत रखते हैं, व्रत रखते भी हैं और व्रत लेते भी हैं। आप एक ही बार व्रत ले लेते हो, कापी आपकी ही की है लेकिन आपका महत्त्व और उनके यादगार के महत्त्व में अन्तर है। वह भी पवित्रता का व्रत लेते हैं लेकिन हर वर्ष व्रत लेते हैं एक दिन के लिए। आप सभी ने भी जन्म लेते एक बार पवित्रता का व्रत लिया है ना! लिया है कि लेना है? ले लिया है। एक बार लिया, वह वर्ष-वर्ष लेते हैं। सभी ने लिया है? सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया है।

✚ अमानत में ख्यानत तो नहीं डालते हो? संकल्प द्वारा भी इस ब्राह्मण जीवन का एक श्वास भी और कोई कार्य में नहीं लगा सकते। इसलिए भक्ति में श्वासों-श्वास सुमिरण का यादगार चला आता है। निरन्तर के फरिश्ते हो वा अल्पकाल के फरिश्ते हो? जैसे भक्ति में भी नियम है कि दान दी हुई वस्तु वा अर्पण की हुई वस्तु कोई अन्य कार्य में नहीं लगा सकते। तो आप सबने ब्राह्मण जीवन में बापदादा से पहला वायदा क्या किया? याद है वा भूल गये हो? बाप के आगे पहला वायदा यह किया कि तन-मन-धन सब आपके आगे समर्पण है। जब सर्व समर्पण किया तो सर्व अर्थात् संकल्प, श्वास, बोल, कर्म, सम्बन्ध, सर्व व्यक्ति, वैभव, संस्कार, स्वभाव, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति - सबको अर्पण किया। इसको ही कहा जाता है समर्पण।

✚ सभी के गले में विजय माला पड़ी है लेकिन नम्बरवार। कोई के गले में बड़ी तो कोई के गले में छोटी। इसका कारण क्या है? जितना-जितना शुरू से लेकर मन्सा में, वाचा में, कर्मणा में आई

हुई समस्याओं या विघ्नों के ऊपर विजयी बने हैं, उस अनुसार विजय माला हरेक की बनती है। शुरू से लेकर देखो तो मालूम पड़ सकता है कि मेरी विजय माला कितनी बड़ी है! आजकल छोटी माला भी बनाते तो बड़ी भी बनाते हैं। जो जितना-जितना विजयी बनते हैं उतना ही बड़ी विजयमाला पहनते हैं। यह जो चतुर्भुज में विजय माला की निशानी है सिर्फ एक की नहीं, यह विजयी रत्नों की निशानी है। तो हरेक अपनी-अपनी विजय माला का साक्षात्कार कर सकते हो। जितना विजय माला पहनने के अधिकारी बनेंगे उतना ही ताज तख्त उस प्रमाण प्राप्त होगा।

✚ शुद्ध संकल्प की शक्ति को अभी कम पहचाना है। एक शुद्ध वा श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प क्या कमाल कर सकता है-इसकी अनुभूति इस वर्ष में करके देखो। पहले अभ्यास में युद्ध होगी, व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही खत्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को खत्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विजय का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्यर्थ स्वतः ही मर्ज हो जायेगा। व्यर्थ को समय देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम समय में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वायुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखायेगा।

✚ आप नहीं करेंगे तो और पीछे वाले करेंगे क्या! माला तो आपकी है ना! 16108 में तो आप पुराने ही आने हैं ना। नये तो पीछे-पीछे आयेंगे। हाँ कोई-कोई लास्ट सो फास्ट आयेंगे। कोई-कोई मिसाल होंगे जो लास्ट सो फास्ट जायेंगे, फर्स्ट आयेंगे। लेकिन थोड़े। बाकी तो आप ही हैं, आप ही हर कल्प बने हो, आप ही बनने हैं। चाहे कहाँ भी बैठे हैं, विदेश में बैठे हैं, देश में बैठे हैं लेकिन जो आप पक्के निश्चय बुद्धि बहुतकाल के हैं, वह अधिकारी हैं ही हैं। बापदादा का प्यार है ना, तो जो बहुतकाल वाले अच्छे पुरूषार्थी, सम्पूर्ण पुरूषार्थी नहीं, लेकिन अच्छे पुरूषार्थी रहे हैं उनको बापदादा छोड़ के जायेगा नहीं, साथ ही ले चलेगा। इसीलिए पक्का, निश्चय करो हम ही थे, हम ही हैं, हम ही साथ रहेंगे।

✚ पार्टियों से मुलाकात करते अमृतवेला हो गया देखो, दिन को रात, रात को दिन बना दिया। यही गोप गोपिकाओं का गायन है। महारास करते-करते रात से दिन हो गया - यह आप सबका गायन है ना। सदा बाप के स्नेह में समाये हुए, स्नेही आत्मायें हो ना। जितना बच्चे स्नेही हैं, उससे पद्मगुणा बाप स्नेही हैं। ऐसे अनुभव होता है ना। बस सेकण्ड में सोचो और बाबा हाजर हो जाते। अच्छा सेवाधारी है ना। सबसे क्विक सेवाधारी बाप हुआ ना। दूसरा आने में देरी लगायेगा, उठेगा, तैयार होगा, चलेगा तब पहुँचेगा। बाप तो सदा एवररेडी है। जब बुलाओ, सेकण्ड से भी कम टाइम पर पहुँच जायेगा। सभी की सेवा के लिए सदा हाजर है। कभी तंग नहीं करते। देखो, अभी भी जितना समय बैठे उतना समय स्नेह में समाये हुए बैठे या थक गये।

✚ सदैव महान् और मेहमान समझकर चलने से वर्तमान में और भविष्य में और फिर भक्ति-मार्ग में भी महिमा योग्य बन जायेंगे। अगर मेहमान वा महान् नहीं समझते तो महिमा योग्य भी नहीं बन सकते। महिमा सिर्फ भक्ति में नहीं होती लेकिन सारा कल्प किस-न-किस रूप में महिमा योग्य बनते हो। सतयुग में जो महान् अर्थात् विश्व के महाराजन वा महारानी बनते हैं, तो प्रजा द्वारा महिमा के योग्य बनते हैं। भक्ति-मार्ग में देवी वा देवता के रूप में महिमा योग्य बनते हैं और संगमयुग में जो महान् कर्तव्य करके दिखलाते हैं, तो ब्राह्मण परिवार द्वारा भी और अन्य आत्माओं द्वारा भी महिमा के योग्य बनते हैं। तो सिर्फ इस समय मेहमान और महान् आत्मा समझने से सारे कल्प के लिए अपने को महिमा योग्य बना सकते हो।

✚ हर एक यह अनुभव करता है कि मेरा सबसे ज्यादा स्नेह है और बाप का भी मेरे से ज्यादा स्नेह है। मेरे को ही बापदादा आगे बढ़ाता है। इसलिए भक्ति मार्ग वालों ने भी बहुत अच्छा एक चित्र अर्थ से बनाया है। करके गोपी के साथ 'गोपी-वल्लभ' है। सिर्फ एक राधे से वा सिर्फ 8पटरानियों के साथ नहीं। हर एक गोपी के साथ गोपीवल्लभ है। जैसे दिलवाला मन्दिर में जाते हो तो नोट करते हो ना कि यह मेरा चित्र है अथवा मेरी कोठी है। तो इस रास मण्डल में

भी आप सबका चित्र है। इसको कहते ही हैं - 'महारास'। इस महारास का बहुत बड़ा गायन है। बापदादा का हर एक से एक दो से ज्यादा प्यार है। बापदादा हरेक बच्चे के श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते हैं। कोई भी है लेकिन कोटो में कोई है। पद्मापद्म भाग्यवान है।

✚ जो महारथी हैं अर्थात् 'पास विद ऑनर' होने वाले हैं, तो उनकी नींद का टाइम भी योग-युक्त स्थिति में गिना जाता है। उनकी स्टेज ऐसी होगी, जैसे कि पार्ट समाप्त कर वह स्वयं परमधाम में हैं और उनको योग की ही महसूसता होगी। जैसे गायन् है ना कि ब्रह्मा से ब्राह्मण बने। यहाँ तो ब्राह्मण से देवता बनते हैं। लेकिन यह ब्रह्मा से ब्राह्मण अर्थात् रात को सोते समय बस यही संकल्प होगा, कि अब मैं अपना पार्ट पूरा कर कर्मइन्द्रियों से अलग होकर जाता हूँ अपने पारब्रह्म में और जब अमृत वेलें उठेंगे, तो महसूस करेंगे कि मैंने यह आधार लिया है, पार्ट बजाने के लिए, तो गोया ब्रह्म से ब्राह्मण बनकर आये हैं। यहाँ से तो जाकर वे सीधे देवता बनेंगे। लेकिन यह इस समय के ही अष्ट रत्नों का गायन है।

✚ अभी - अभी 18 - 19 वर्ष के अन्दर कितनी प्राप्ति हो रही है! सब आराम के साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्ति बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। यह साधन बढ़ते जायेंगे थोड़ा समय। लेकिन आराम में आते 'राम' को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना। क्योंकि यह साधन बिना साधना के यूज करेंगे तो स्वर्ण - हिरण का काम कर लेगा। इसलिए व्यक्ति और वैभव के लगाव और झुकाव से सदा अपने को सेफ रखना, नहीं तो बाप के स्नेही बनने के बजाए, सहजयोगी बनने के बजाए कभी सहयोगी, कभी सहजयोगी, कभी वियोगी - दोनों अनुभव करते रहेंगे। कभी याद, कभी फरियाद - ऐसी अनुभूति में रहेंगे और कम्पलेन भी कभी पूरी नहीं होगी।

✚ शक्ति सेना को देख बाप अति हर्षित होते हैं, शक्तियाँ सदा बाप की साथी हैं इसीलिए गायन ही है - 'शिव शक्ति'। शक्तियों के साथ बाप का भी यादगार है तो कम्बाइण्ड हो गई ना! शक्ति - शिव से अलग नहीं, शिव -शक्ति से अलग नहीं। ऐसे कम्बाइण्ड। एक-एक जगतजीत हो, कम नहीं हो। सारे जगत पर जीत पाती हो। जगत पर राज्य करना है ना! उस सेना में टुकड़ियाँ होती हैं, दो टुकड़ी, चार टुकड़ी। यहाँ बेहद है। बेहद बाप की सेना और बेहद के ऊपर विजया। बापदादा को भी खुशी होती है, एक-एक बच्चा हद का नहीं, बेहद का मालिक है। सभी बच्चे, बाप के मुख हो ना? बाप के मुख अर्थात् मुख द्वारा बाप का परिचय देने वाले। इसलिए 'गऊ मुख' का भी गायन है। सदा मुख द्वारा 'बाबा-बाबा' निकलता है, तो मुख का भी महत्व हो गया ना!

✚ तीली भी माचिस के सम्बन्ध बिना जलती नहीं। तो बाप के साथ सम्पर्क सम्बन्ध होगा, अभ्यास की तीली पर मसाला ठीक होगा तब सेकण्ड में संकल्प किया और बना। तो सब साधन ठीक चाहिए। सम्बन्ध भी चाहिए। अभ्यास भी चाहिए। सम्बन्ध है और अभ्यास कम है तो मेहनत के बाद सफलता मिलेगी। सेकण्ड में संकल्प का स्वरूप नहीं बन सकेंगे। बार-बार संकल्प करते-करते मेहनत के बाद सफलता होगी। आप सभी के मेहनत अर्थात् भक्ति का समय समाप्त हो गया ना! भक्ति का अर्थ ही है मेहनत! भक्ति का समय समाप्त हुआ अर्थात् मेहनत समाप्त हुई। अब भक्ति का फल लेने का समय है। भक्ति का फल है 'ज्ञान' अर्थात् मुहब्बत न कि मेहनत। इसलिए मेहनत के संस्कार, युद्ध के संस्कार वा संकल्प की पुरानी लकड़ियों को आग लगा दो। यही होली जलाओ।

✚ मेरा स्वभाव अर्थात् बाप का स्वभाव। माया के स्वभाव को मेरा कहना भी रांग है। 'मेरा' शब्द ही फेरे में लाता है अर्थात् चक्र में लाता है। आशिक, माशूक के आगे ऐसे नाज़-नखरे भी दिखाते हैं। जो बाप का सो मेरा। हर बात में भक्ति में भी यही कहते हैं - जो तेरा सो मेरा, और मेरा कुछ नहीं। लेकिन जो तेरा सो मेरा। जो बाप का संकल्प, वह मेरा संकल्प। सेवा के पार्ट बजाने के

बाप के संस्कार-स्वभाव, वह मेरे। तो इससे क्या होगा? हृद का मेरा, तेरा हो जायेगा। तेरा सो मेरा, अलग मेरा नहीं है। जो भी बाप से भिन्न हैं, वह मेरा है ही नहीं, वह माया का फेरा है। इसलिए इस हृद के नाज़-नखरे से निकल रूहानी नाज़ - मैं तेरी और तू मेरा, भिन्न-भिन्न सम्बन्ध की अनुभूति के रूहानी नखरे भल करो। परन्तु यह नहीं करो।

✚ फोटो निकालते समय अगर कोई भी हलचल होती है तो फोटो ठीक निकलेगा? ऐसे ही हर सेकण्ड ऐसे ही समझो कि हमारा फोटो निकल रहा है। फोटो निकालते समय सभी प्रकार का ध्यान दिया जाता है वैसे अपने ऊपर सदैव ध्यान रखना है। एक-एक सेकण्ड इस सर्वोत्तम वा पुरुषोत्तम संगमयुग का ड्रामा रूपी कैमरे में आप सभी का फोटो निकलता जाता है। जो वही चित्र फिर चरित्र के रूप में गायन होता आएगा। और अभी के भिन्न-भिन्न स्टेज के चित्र, भिन्न-भिन्न रूप में पूजे जायेंगे। हर समय यह स्मृति रखो कि अपना चित्र ड्रामा रूपी कैमरे के सामने निकाल रहा हूँ। अब के एक-एक चित्र एक-एक चरित्र गायन और पूजन योग्य बनने वाले हैं। जैसे यहाँ भी जब आप लोग कोई ड्रामा स्टेज पर करते हो और साक्षात्कार करते हो तो कितना ध्यान रखते हो।

✚ स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है। इसलिए सेवा का बल थोड़ा स्थिति से ऊँचा हो जाता है। बैलेन्स रखो और बापदादा की, सर्व सेवा करने वाले आत्माओं की, संबंध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लैसिंग लेते चलो। यह दुआओं का खाता बहुत जमा करो। अभी की दुआओं का खाता आप आत्माओं में इतना सम्पन्न हो जाए जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। अनेक जन्म में दुआयें देनी हैं लेकिन जमा एक जन्म में करनी हैं। इसलिए क्या करेंगे? स्थिति को सदा आगे रख सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्या होगा, यह नहीं सोचो। ब्राह्मण आत्माओं के लिए अच्छा है, अच्छा ही होना है। लेकिन बैलेन्स वालों के लिए सदा अच्छा है। बैलेन्स कम तो कभी अच्छा, कभी थोड़ा अच्छा।

✚ आप स्वदर्शन-चक्रधारी आत्मा किसी धोखे के चक्कर में नहीं आ सकती क्योंकि स्वदर्शन-चक्र अनेक चक्कर से छुड़ाने वाला है। न सिर्फ अपने को, लेकिन औरों को भी छुड़ाने के निमित्त बनते हैं। अनेक प्रकार के दुःख के चक्करों से बचने के लिए सोचते हैं - इस सृष्टि-चक्र से निकल जायें...। लेकिन सृष्टि चक्र के अन्दर पार्ट बजाते हुए अनेक दुःख के चक्करों से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं - यह कोई नहीं जानता है। आप चैलेन्ज करते हो कि हम आपको जीवन में मुक्ति डबल दिला सकते हैं - जीवन भी हो और मुक्ति भी हो, ऐसी चैलेन्ज की है ना? नशे से कहते हो कि जीवनमुक्ति आपका और हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् दुःख के चक्करों से मुक्त रहने वाले और मुक्त करने वाले।

✚ जैसे कि स्मृति स्वरूप बने तो स्मृति के रिटर्न में सामर्थी स्वरूप बने। समर्थ स्वरूप बन गये ना, कमजोर स्वरूप तो नहीं हो ना? और जो जितना स्मृति में रहते हैं, उतना समर्थियों का अधिकार स्वतः ही प्राप्त करते हैं। जहाँ स्मृति है वहाँ सामर्थी है ही है। थोड़ी भी विस्मृति है तो व्यर्थ है। चाहे व्यर्थ संकल्प हो चाहे बोल हों, कर्म हो। इसलिए बापदादा सभी बच्चों को किस दृष्टि से देखते हैं कि हर एक बच्चे स्मृति स्वरूप सो समर्थ है। आज तक भी अपना सिमरण भक्तों द्वारा सुन रहे हैं। अपने स्मृति में लाया ``मेरा बाबा'' तो भक्त आत्मा भी यही सिमरण करती मेरा इष्ट वा देवी। जैसे आपने अति प्यार से दिल से बाप को याद किया, उतना ही भक्त आत्माएं आप इष्ट आत्माओं को दिल से अति प्यार से याद करती है।

✚ जो हृद की डालियाँ बनाकर डालियों को पकड़ बैठ गये हो, अभी हे उड़ते पंछी, डालियों को छोड़ो। सोने की डाली को भी छोड़ो। सीता को सोने के हिरण ने शोक वाटिका में भेजा। यह मेरा मेरा है, मेरा नाम, मेरा मान, मेरा शान, मेरा सेन्टर यह सब - सोने की डालियाँ हैं। बेहद का अधिकार छोड़, हृद के अधिकार लेने में आ जाते हो। मेरा अधिकार यह है, यह मेरा काम है -

इस सबसे उड़ते पंछी बनो। इन हृद के आधारों को छोड़ो। तोते तो नहीं हो ना जो चिल्लाते रहो कि छुड़ाओ। छोड़ते खुद नहीं और चिल्लाते हैं कि छुड़ाओ। तो ऐसे तोते नहीं बनना। छोड़ो और उड़ो। छोड़ेंगे तो छूटेंगे ना! बापदादा ने पंख दे दिये हैं - पंखो का काम है उड़ना वा बैठना? तो उड़ते पंछी बनो अर्थात् उड़ती कला में सदा उड़ते रहो। समझा - इसको कहा जाता है सीजन का फल देना।

✚ आप सोचते होंगे कि लोग पूछेंगे कि आपका ब्रह्मा बाबा 100 वर्ष से पहले ही चला गया। यह तो बहुत सहज प्रश्न है कोई मुश्किल नहीं। 100 के नजदीक ही तो आयु थी यह जो 100 वर्ष कहे हुए हैं यह गलत नहीं है। अगर कुछ रहा हुआ है तो आकार द्वारा पूरा करेंगे। 100 वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है। वह तो 100 वर्ष पूरा होना ही है लेकिन बीच में ब्रह्मा के बाद ब्राह्मणों का जो पार्ट है वह अब चलना है। ब्रह्मा ने ब्राह्मण किसलिए रचे? क्या ब्रह्मा अपनी रचना को देखेंगे नहीं? क्या आपको अब काम पर जिम्मेवारी का ताज नहीं देंगे? तो सतयुग में देवता कैसे बनेंगे। यहाँ की जिम्मेवारी ही वहाँ की नींव डालती है। इसलिए जो भी आप बच्चों से प्रश्न करते हैं उन्हें यही उत्तर दो कि ब्रह्मा की स्थापना तो चलनी ही है।

✚ हर एक किस पोजीशन (position) तक पहुँचे हैं? ऑपोजीशन (Oposition) ज्यादा है अथवा पोजीशन की स्टेज ज्यादा है? दूसरा - पुरानी देह और पुरानी दुनिया से स्मृति को कहाँ तक ट्रान्सफर (Transfer) किया है? साथ-साथ ट्रान्सफर के आधार पर ट्रान्सपेरेन्ट (Transparent) कहाँ तक बने हैं? चारों ही सब्जेक्ट्स में कहाँ तक प्रैक्टिकल स्वरूप बने हैं? बाप-दादा के तीनों स्वरूप - साकार, आकार और निराकार द्वारा ली हुई पालना और पढ़ाई का रिटर्न (Return) कहाँ तक किया है? आदि से अब तक जो बाप-दादा से वायदे किये हैं, उन सब वायदों को निभाने का स्वरूप कहाँ तक है? जितना कायदा, उतना फायदा उठाया है?

ऐसी चेकिंग (Checking) हर-एक अपनी करते हो? चारों ही सब्जेक्ट्स की चेकिंग का सहज साधन आपकी गाई हुई महिमा से सिद्ध हो जाता है।

✚ यू.पी. में गंगा का महत्त्व क्यों है? क्योंकि और कोई नदी को पतित-पावनी नहीं कहते हैं, गंगा को ही पतित पावनी कहते हैं। जमुना नदी को पतित-पावनी नहीं कहते, उसे चरित्र-भूमि कहते हैं। पंजाब में भी नदियां बहुत हैं। नदी जहाँ से निकलेगी तो हरा-भरा कर देगी ना! हरियाली, खुशहाली। तो आप सबका भी काम है सबको हरा-भरा बनाना। जो आत्मायें सुख-शान्ति के रस से सूखे हुए हैं, ऐसे सूखे हुए को फिर से हरा बनाना, हरियाली लाना - यही आपका काम है। जहाँ सूखा होता है वहाँ मानव कंगाल बन जाता है और जहाँ हरियाली होती है वहाँ मानव खुशहाल हो जाता है। तो नई दुनिया हरियाली की दुनिया है और पुरानी दुनिया सूखी दुनिया है। आप सब तो बहती हुई भरपूर नदियां हो ना! तो चलते-फिरते अपने हर कदम से आत्माओं को हरा-भरा बनाओ।

✚ दादा विश्वरतन ने 26 फरवरी को अचानक अपना पुराना शरीर छोड़ दिया क्योंकि ड्रामा में कोई-कोई आत्मा को अचानक और एवररेडी का पाठ पक्का कराना है। देखो, जब चन्द्रमणी ने शरीर छोड़ा तो कुछ समय वह लहर अच्छी रही। सभी अचानक के पाठ में पक्के रहे, फिर धीरे-धीरे हल्का हो गया। फिर यह जो ड्रामा में पार्ट हुआ यह वायुमण्डल में अचानक और एवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बनें। विश्वरतन का निराकारी स्थिति का ध्यान अच्छा रहा, गुप्त में यह पाठ पक्का था। इसीलिए जल्दी सेकण्ड में पार्ट पूरा हो गया। यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बनता है। सभी थोड़ा थोड़ा अभी समझते हैं, अभी तो टाइम पड़ा है, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का भी अटेन्शन रहना चाहिए।

✚ पूर्वज को ही सब फॉलो करते हैं। तो जो संकल्प, जो कर्म आप करेंगे उसको स्थूल वा सूक्ष्म रूप में सब फॉलो करते हैं। इतनी बड़ी जिम्मेवारी समझते हुए संकल्प व कर्म करते हो? आप पूर्वज आत्माओं के आधार से सृष्टि का समय और स्थिति का आधार है। जैसे आप सतो प्रधान हैं। गोल्डन एज प्रकृति वा वायुमंडल सारे विश्व का सतो प्रधान है। तो समय और स्टेज का आधार, प्रकृति का आधार आप पूर्वज के ऊपर है। ऐसे नहीं समझो कि हमारे कर्म का आधार सिर्फ अपने कर्म के हिसाब से प्रालब्ध प्रति है। लेकिन पूर्वज आत्माओं के कर्मों की प्रालब्ध स्वयं के साथ-साथ सर्व आत्माओं के और सृष्टि चक्र के साथ सम्बन्धित हैं। ऐसे महान आत्माएं हो? ऐसी स्मृति में रहने से सदा स्वतः ही अटेंशन रहेगा। किसी भी प्रकार का अलबेलापन नहीं आयेगा।

✚ सभी आत्मायें अनुभव करेंगी कि हम सब आत्माओं के इष्ट देव वा इष्ट देवियाँ वा निमित्त बने हुए जो भी अनेक देवतायें हैं, सभी इस धरती पर अवतरित हो गए हैं। सतयुग में तो सब सद्गति में होंगे लेकिन इस समय जो भी आत्मायें है - सर्व के सद्गतिदाता हो। जैसे कोई भी ड्रामा जब समाप्त होता है तो अन्त में सभी एक्टर्स स्टेज पर सामने आते हैं। तो अभी कल्प का ड्रामा समाप्त होने का समय आ रहा है। सारी विश्व की आत्माओं को चाहे स्वप्न में, चाहे एक सेकण्ड की झलक में, चाहे प्रत्यक्षता के चारों ओर के आवाज द्वारा यह जरूर साक्षात्कार होना है कि इस ड्रामा के हीरो पार्टधारी स्टेज पर प्रत्यक्ष हो गये। धरती के सितारे, धरती पर प्रत्यक्ष हो गये। सब अपने-अपने इष्ट देव को प्राप्त कर बहुत खुश होंगे। सहारा मिलेगा।

✚ अपने को रूहानी दृष्टि से सृष्टि को बदलने वाला अनुभव करते हो? सुनते थे कि दृष्टि से सृष्टि बदल जाती है लेकिन अभी अनुभवी बन गये। रूहानी दृष्टि से सृष्टि बदल गई ना! अभी आपके लिए बाप संसार है, तो सृष्टि बदल गई। पहले की सृष्टि अर्थात् संसार और अभी के संसार में फर्क हो गया ना! पहले संसार में बुद्धि भटकती थी और अभी बाप ही संसार हो गया। तो बुद्धि का भटकना बंद हो गया, एकाग्र हो गई। क्योंकि पहले की जीवन में, कभी देह के सम्बन्ध में,

कभी देह के पदार्थ में - अनेकों में बुद्धि जाती थी। अभी यह सब बदल गया। अभी देह याद रहती या देही? अगर देह में कभी बुद्धि जाती है तो रांग समझते हो ना! फिर बदल लेते हो, देह के बजाय अपने को देही समझने का अभ्यास करते हो। तो संसार बदल गया ना! स्वयं भी बदल गये।

✚ स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे, इसलिए साइलेन्स। अगर सभी साथ होते तो जो अन्तिम कर्मातीत अवस्था का अनुभव था वह ड्रामा प्रमाण और होता। लेकिन था ही ऐसे इसलिए थोड़े ही सामने थे। सामने होते भी जैसे सामने नहीं थे। स्नेह तो वतन में भी है और रहेगा। अविनाशी है ना। लेकिन जो सुनाया कि स्नेह को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है। और यही साइलेन्स, शक्ति को लायेगी। फिर वहाँ साकार में मिलन होगा। अभी अव्यक्त रूप में मिलते हैं। फिर साकार रूप में सतयुग में मिलेंगे। वह सीन तो याद आती है ना। खेलेंगे, पाठ-शाला में आयेंगे, मिलेंगे।

✚ आज का विशेष संगठन गऊपाल की माताओं का है। इतने बड़े संगठन को देख गऊपाल भी खुश हो रहे हैं। बापदादा भी मीठी-मीठी माताओं को “वन्दे मात्रम्” कहते हैं। क्योंकि नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में ब्रह्मा बाप ने भी माता गुरु को सब समर्पण किया। इस ईश्वरीय ज्ञान की विशेषता वा नवीनता है ही शक्ति अवतार को आगे रखना। माता गुरु का सिलसिला स्थापन करना, यही नवीनता है। इसलिए यादगार में भी गऊ मुख का गायन पूजन है। ऐसे हृद की मातायें नहीं लेकिन बेहद की जगत मातायें हो, नशा है ना! जगत का कल्याण करने वाली हो, जगज्ज-कल्याणकारी अर्थात् विश्व-कल्याणकारी हो। सिर्फ घर कल्याणी तो नहीं हो ना। कब घर-कल्याणी का गीत सुना है क्या? विश्व-कल्याणी का सुना है। तो ऐसी बेहद की माताओं का संगठन, श्रेष्ठ संगठन हुआ ना।

✚ सदा अपने को 'राजऋषि' समझते हो? एक तरफ है राज्य, दूसरे तरफ है वैराग - दोनों का बैलेन्स हो। बेहद का वैराग, वैराग नहीं लेकिन प्राप्तिस्वरूप बना देता है क्योंकि पुरानी दुनिया से वैराग लाते हो और नई दुनिया के मालिक बन जाते हो। तो नाम वैराग है लेकिन मिलती प्राप्ति है। छोड़ने में ही लेना है। एक देते हो और पद्म लेते हो! तो बेहद का वैराग राज्य भाग्य दिलाने वाला है। एक जन्म के लिए वैराग अनेक जन्मों के लिए सदा श्रेष्ठ भाग्य। ऐसे राजऋषि हो? राजऋषि कुमार और कुमारियों का ही गायन है। ऐसी राजऋषि आत्माओं को विश्व की आत्मायें दिल से प्यार करती है। चैतन्य से भी ज्यादा आपके जड़ चित्रों को प्यार से याद करते हैं। क्योंकि त्याग का भाग्य प्राप्त हुआ है। तो ऐसे राजऋषि आत्मायें हैं - इस नशे में सदा रहो।

✚ यह अनुभव करो परिस्थिति बहुत नाजुक है लेकिन आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी। सामना नहीं करेगी। आसन नहीं छोड़ो, आसन में बैठने का अभ्यास ही सिंहासन प्राप्त करायेगा। अगर आसन पर बैठना नहीं आता है, कभी-कभी बैठना आता है तो सिंहासन में भी कभी-कभी बैठेंगे। आसन ही सिंहासन प्राप्त कराता है। अब आसन है फिर सिंहासन है। हलचल वाला आसन पर एकाग्र होकर बैठ नहीं सकता। इसीलिए कहा व्यर्थ समाप्त, अशुभ समाप्त - तो अचल हो जायेंगे और अचल स्थिति के आसन पर सहज और सदा स्थित हो सकेंगे। देखो आप सबका यादगार यहाँ अचलघर है। अचलघर देखा है ना? यह किसका यादगार है? आप सबके स्थिति का यादगार यह अचलघर है। अनुभव करो, ट्रायल करते जाओ, यूज करते जाओ।

✚ टीका सौभाग्य की निशानी है। जो बातें सुनी उन बातों में टिकने की निशानी टीका है। टीका भी मस्तक में टिक जाता है। तो बुद्धि में यह बातें टिक जाएँ इसलिए यह टीका दिया जाता है। और किसलिए है? (कईयों ने अपना विचार सुनाया) बापदादा जो सुनायेंगे वह और है। यह टीका (इंजेक्शन) सदा माया के रोगों से निवृत्त रहने का टीका है। सदा तंदुरुस्त रहने का भी टीका है। एक टीका जो आप सभी ने सुनाया और यह भी है। दोनों टीका लगाने हैं। एक है

शक्तिशाली बनने का और दूसरा है सदा सुहाग और भाग्य में स्थित रहने का। दोनों टीका बापदादा लगाते हैं। निशानी एक, राज़ दो हैं। निशानी तो स्थूल होती है लेकिन राज़ दो हैं। इसलिए ऐसे तिलक नहीं लगाना। तिलक लगाना अर्थात् सदाकाल के लिए प्रतिज्ञा करना। यह टीका एक प्रतिज्ञा की निशानी है।

✚ अभी सेवा बहुत रही हुई है। अभी किया ही क्या है? सोचो, साढ़े पाँच सौ करोड़ आत्मायें हैं, कम - से - कम एक बूँद ही दो लेकिन देना तो है। चाहे आपके भक्त बनें, चाहे आपकी प्रजा बनें। देवता बनेंगे तो भी देना ही है। भक्ति में देव बनके पूजे जायेंगे ना। तो देंगे तब तो देवता समझ पूजेंगे। प्रजा भी तब मानेगी जब कोई प्राप्ति होगी। ऐसे ही कैसे मानेगी कि आप मात - पिता हो? राजा भी मात - पिता ही हैं। दोनों ही रीति से 'दाता' के बच्चे दाता बन देना है। लेकिन देते हुए दाता की याद दिलानी है। समझा, क्या करना है? यह नहीं समझो विदेश में अथवा देश में इतने सेन्टर्स खुल गये, बहुत हो गया। लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे हो ना। सभी अपने प्यासे, भटकते हुए भाई - बहनों के ऊपर रहम करना है, किसी का उल्हना नहीं रहना चाहिए।

✚ एकदम प्लेन बनना है। साथ में बोझ नहीं लेना। पाण्डव पाँच हैं लेकिन मत एक है। कहते हैं ना कि हम सभी एक हैं। एक इज़ाम्पल कायम रखने के लिए यह फर्स्ट ग्रुप है। स्मृति-स्वरूप की एक-दो को हर समय स्मृति दिलाने से एक मत हो जायेंगे। पाँच पाण्डवों की एकमत की विशेषता भी है और हरेक की अपनी-अपनी विशेषता भी है। हरेक की अपनी विशेषता कौनसी है? जैसे फोर मस्केटियर्स (Four Musketeer; चार बंदूकधारी फौजी) का सुनाते हैं ना। तो एक-दो में मिल जुलकर हर कार्य को सफल बनाना है। हरेक अपने ऊपर विशेष एक ड्यूटी ले। हर एक अपने विशेष कार्य की ज़िम्मेवारी सुनाओ। एक-एक पाण्डव क्या विशेषता दिखायेंगे? आत्मा के नाते तो सभी पाण्डव हो और शक्तियाँ भी हो। अपनी विशेषता का मालूम है? अपना उमंग-उत्साह और एकरस अवस्था सदैव रहे।

✚ बच्चों को नयनों पर बिठा कर ही चलते हैं। अर्थात् नयनों में समाये हुए हैं। नयनों की महिमा बहुत गाई हुई है। अगर नयन नहीं तो मानव-जीवन के लिए जहान नहीं। जैसे शरीर में नयनों का महत्व है ऐसे तुम हरेक बच्चे जहान के नूर हो। आप नूरे-जहान के बिना भी जहान का कोई मूल्य नहीं। जहान के नूर अपनी इस स्थिति पर स्थित होते हैं तो जहान भी सुखमय बन जाता है, श्रेष्ठ बन जाता है। और जहान के नूर अपनी श्रेष्ठ स्थिति से नीचे आ जाते हैं तो जहान भी असार संसार बन जाता है। इतना आप सबके ऊपर आधार है। जैसे कहावत है आप जागे तो संसार जागा, आप सोये तो संसार सोया ऐसे संसार के आधार मूर्त हो। आपकी चढ़ती कला से सर्व की चढ़ती का सम्बन्ध है। आपकी गिरती कला से विश्व की गिरती कला का सम्बन्ध है। इतनी जिम्मेवारी हरेक के ऊपर है।

✚ अपने आपको भूलना - यह भी भूल है ना। जो अपने आपको भूलता है वह अनेक भूलों के निमित्त बन जाते हैं। इसलिए अपने मर्तबे को सदैव सामने रखो। जैसे सच्चे भक्त लोग जो होते हैं वह भी दुनिया की तुलना में, जो दुनिया वाले नास्तिक, अज्ञानी लोग विकर्म करते हैं, विकारों के वश होते हैं, उनसे काफी दूर रहते हैं। क्यों? कारण क्या होता है कि जो नवधा अर्थात् सच्चे भक्त हैं वह सदैव अपने सामने अपने इष्ट को रखते हैं। उनको सामने रखने कारण कई बातों में सेफ रह जाते हैं और कई आत्माओं से श्रेष्ठ बन जाते हैं। जब भक्त भी भक्ति द्वारा इष्ट को सामने रखने से नास्तिक और अज्ञानी से श्रेष्ठ बन सकते हैं, तो ज्ञानी तू आत्माएं सदा अपने श्रेष्ठ मर्तबे और कर्तव्य को सामने रखें तो क्या बन जाएंगी? श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएं।

✚ सर्व कर्मेन्द्रियाँ संतुष्ट है? प्रजा खुश है? कर्मेन्द्रियाँ शीतल, शान्त हो गई है? धोखा देने की चंचलता समाप्त हो गई है? अभी क्या बन गये हो? शीतला देवी। जो स्वयं शीतला होगी तो यथा राजा तथा प्रजा होगी। वह सब कर्मेन्द्रियाँ भी शीतल हो जायेंगी। शीतला देवी में कभी क्रोध नहीं आता है। कई कहते हैं - क्रोध नहीं है, थोड़ा रोब तो रखना पड़ता है। रोब भी क्रोध

का अंश है। तो जहाँ अंश होता है वहीं वंश पैदा हो जाता है। तो शीतला देवी और शीतला देव हो ना। संगम पर बाप, माताओं को आगे रखते हैं। इसलिए गायन शीतला देवी का है लेकिन पांडव भी शीतला देव है। तो रोब का संस्कार परिवर्तन हो गया वा कभी स्वप्न में भी रोब का टेस्ट करते हो? जैसा संस्कार होता है वैसे कर्म स्वतः ही होते हैं। तो संस्कार ही शीतल हो गये।

✚ चाहे अंजान आत्माएं बाप को न जानने के कारण अपने धर्म पिताओं वा गुरुओं को वा इष्ट देवों को मर्सीफुल समझकर पुकारते हैं लेकिन आप सब तो जानते ही हो कि इस समय एक सिवाए एक बाप परम आत्मा के और कसी भी आत्मा द्वारा मर्सी मिल नहीं सकती। भले बाप उन्हीं की इच्छा पूर्ण करने के कारण भावना का फले देने के कारण किसी भी इष्ट को वा महान आत्मा को निमित्त बना दे लेकिन दाता एक है - इसलिए वर्तमान समय के प्रमाण मर्सीफुल बाप बच्चों को भी कहते हैं कि बाप के सहयोगी साथी भुजाएं आप ब्राह्मण बच्चे हो। तो जिस चीज की आवश्यकता है, वह देने से प्रसन्न हो जाते हैं। तो मास्टर मर्सीफुल बने हो? आपके ही भाई-बहने हैं - चाहे सगे हैं वा लगे हैं लेकिन हैं तो परिवार के। अपने परिवार के अंजान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो।

✚ आज बापदादा जैसे यादगार में शिव परमात्मा की यादगार में अक के फूल चढ़ाते हैं गुलाब के नहीं और कोई फूल नहीं चढ़ाते अक के फूल चढ़ाते हैं। तो आज बापदादा आपको कौन सी बात अर्पण करो वह होमवर्क देने चाहते हैं। तैयार हो ना! अच्छा। यह तो बच्चों का बाप को बहुत अच्छा लगता है हाँ जी सब करते हैं। तो आज बर्थ डे पर बाप का यह संकल्प है कि सभी एक दो को उमंग उत्साह दिलाते हुए एक दो के सहयोगी बनते हुए व्यर्थ संकल्प का अक का फूल अर्पण करो। व्यर्थ संकल्प न करना है न सुनना है और न संग में आकर व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग लगाना है क्योंकि व्यर्थ संकल्प जहाँ होगा वहाँ याद का संकल्प ज्ञान के मधुर बोल जिसको मुरली कहते हो वह शुद्ध संकल्प स्मृति में नहीं रहेंगे। चाहे मुरली सुनते भी हो पढ़ते भी हो वह तो आवश्यक है।

✚ प्यार विदेशियों के लिए चुम्बक का काम करता है। फिर सुनने व मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। यह मरना तो पसन्द है ना। ये मरना अर्थात् स्वर्ग में जाना। इसलिए मरने वाले के लिए कहते हैं - स्वर्ग गया। वह मरने वाले नहीं जाते हैं, लेकिन संगम पर जो मरा, वह स्वर्ग गया। इसकी कॉपी करके जो देह से मरते हैं उसके लिए अखबार में डालते हैं कि फलाना स्वर्ग गया। तो मरना पसन्द है ना! अपनी मर्जा से मरे हो ना, मजबूरी से तो नहीं। यह सारी सभा मरजीवा बनने वालों की है। कहाँ साँस रूका हुआ तो नहीं है ना पुरानी दुनिया में। यही वन्दर है जो मरे हुए भी हँसते हैं। आप लोगों की क्रिश्चियन फिलासाफी में भी है कि मुर्दों में आकर जान डालते हैं। पहले मुर्दे बने फिर जान पड़ गई। नया जन्म हो गया। इस मरने में मजा है, डर नहीं है।

✚ ब्राह्मण आत्मायें हो, इसलिए स्वदर्शन-चक्रधारी हो। ब्राह्मणों को सदा चोटी पर दिखाते हैं। चोटी अर्थात् ऊँचा। ब्राह्मण अर्थात् सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले, ब्राह्मण अर्थात् सदा श्रेष्ठ धर्म (धारणाओं) में रहने वाले - ऐसे ब्राह्मण हो ना? नामधारी ब्राह्मण नहीं, काम करने वाले ब्राह्मण। क्योंकि ब्राह्मणों का अभी अन्त में भी कितना नाम है! आप सच्चे ब्राह्मणों का ही यह यादगार अब तक चल रहा है। कोई भी श्रेष्ठ काम होगा तो ब्राह्मणों को ही बुलायेंगे। क्योंकि ब्राह्मण ही इतने श्रेष्ठ हैं। तो किस समय इतने श्रेष्ठ बने हो? अभी बने हो, इसलिए अभी तक भी श्रेष्ठ कार्य का यादगार चला आ रहा है। हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म श्रेष्ठ करने वाले, ऐसे स्वदर्शन-चक्रधारी श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं - सदा इसी स्मृति में रहो।

✚ आज प्रवृत्ति में रहने वाले पाण्डव सेना की भट्टी का आरम्भ है। अपने को पाण्डव समझते हो? निरन्तर अपना पाण्डव-स्वरूप स्मृति में रहता है? वा कभी अपने को पाण्डव समझते हो और कभी प्रवृत्ति वाले समझते हो? निरन्तर अपने को पाण्डव अर्थात् पण्डे समझने से सदा यात्रा और मांजिल के सिवाय और कोई स्मृति रह सकती है? अगर कोई स्मृति रहती है तो उसका

कारण कि अपना पाण्डव-स्वरूप भूल जाते हो। स्मृति अर्थात् वृत्ति बदलने से कर्म भी बदल जाता है। कर्म का आधार वृत्ति है। प्रवृत्ति वृत्ति से ही पवित्र, अपवित्र बनती है। इसलिए पाण्डव सेना वृत्ति को सदा एक बाप के साथ लगाते रहें तो वृत्ति से अपनी उन्नति में वृद्धि कर सकते हो। वृद्धि का कारण वृत्ति है। वृत्ति में क्या करना है? अगर वृत्ति ऊंची है तो प्रवृत्ति ऊंची रहेगी।

✚ आज बापदादा सर्व मर्यादा पुरुषोत्तम बच्चों को देख रहे हैं। संगमयुग की मर्यादायें ही पुरुषोत्तम बनाती हैं। इसलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। इन तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायब्रेशन से बचने का सहज साधन यह 'मर्यादायें' हैं। मर्यादाओं के अन्दर रहने वाले सदा मेहनत से बचे हुए हैं। मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं। मर्यादायें हर कदम के लिए बापदादा द्वारा मिली हुई हैं - उसी प्रमाण पर कदम उठाने से स्वतः ही मर्यादा पुरुषोत्तम बन जाते हैं। अमृतवेले से लेकर रात तक मर्यादापूर्वक जीवन को अच्छी तरह से जानते हो! उसी प्रमाण चलना यही पुरुषोत्तम बनना है। जब नाम ही है पुरुषोत्तम है अर्थात् सर्व साधारण पुरुषों से उत्तम।

✚ सदा वतन-वासी बन जैसे बाप सेवा के लिए नीचे आते हैं, इसी रीति से बच्चे भी वतन से सेवा के प्रति नीचे आये हैं - ऐसे अनुभव कर सेवा करते चलो तो सदा ही न्यारे और बाप समान विश्व के प्यारे बन जायेंगे। ऊपर से नीचे आना माना अवतार बन अवतरित होकर सेवा करना। ऐसी सेवा करते हो? क्योंकि वर्तमान समय ऐसे अवतारों की ही आवश्यकता है। सभी चाहते हैं कि अवतार आयें और हमको साथ ले जायें। जो भी प्रार्थना करते हैं, उसमें क्या कहते हैं? क्राइस्ट को भी यही कहते हैं - 'आओ और साथ ले जाओ' तो सच्चे अवतार आप हो जो साथ ले जायेंगे मुक्तिधाम में। ऐसे अवतार बन सदा सेवा में आगे बढ़ते रहो। चलते-फिरते आप लोगों से ऐसे ही साक्षात्कार हो कि अवतार जा रहे हैं, अवतार बोल रहे हैं। तो उन्हीं की इच्छा पूर्ण हो जायेगी और खुश हो जायेंगे।

✚ विदेशियों द्वारा ही भारत के कुम्भकरण जागने हैं। अगर आप लोग भी सोचेंगे कि कर लेंगे तो वह भी कहेंगे - 'हाँ, जाग जायेंगे।' इसलिये जगाने वालों को फुलफोर्स से अपना पॉवरफुल प्लैन बनाना पड़े। जैसे जगाने वाले सोचते हैं - करना तो है, ऐसे वह भी सोचते हैं, जागना तो है अन्त में जाग जायेंगे। इसलिये विदेशियों का भविष्य क्या रहा? भारत के नामी-ग्रामियों को जगाना है। यह है विदेशियों का भविष्य। साधारण कुम्भकरण नहीं लेकिन नामी-ग्रामी कुम्भकरणों को जगाना है। जिस एक के जगाने से अनेक जग जायें उसको कहते हैं नामी-ग्रामी। धरणी अथवा स्टेज तो तैयार होती जा रही है। अब सिर्फ पार्टधारियों को पार्ट बजाना है लेकिन पार्ट भी हीरो पार्ट, साधारण पार्ट से नहीं होगा। हीरो पार्ट बजाने से कुम्भकरण भी जाग कर 'हिअर-हिअर' करेंगे।

✚ बच्चों का अधिकार है - 'मुरली'। मुरली द्वारा मिलना और अव्यक्त दृष्टि द्वारा, यह दोनों मिलन वरदान की अनुभूति करा सकते हैं। इसलिए अव्यक्त स्थिति में स्थित हो अब दृष्टि द्वारा वरदानों का अनुभव करो। दो गायन हैं- नजर से निहाल और मुरली का जादू! इसलिए अब दृष्टि द्वारा वरदान पाने के अधिकारी बनो। जितना स्वयं अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे उतना अव्यक्त दृष्टि की भाषा को कैच कर सकेंगे। यह दृष्टि का वरदान सदाकाल का परिवर्तन का 'वरदान' है। वाणी का वरदान कभी याद रहता कभी भूल जाता है। लेकिन अव्यक्त रूप बन अव्यक्त दृष्टि से प्राप्त हुआ वरदान सदा स्मृति स्वरूप समर्थ स्वरूप बनाता है। अभी दृष्टि से दृष्टि की भाषा को जानो। स्थापना में क्या हुआ? दृष्टि की भाषा से दृष्टि के जादू से स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ।

✚ विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-साथ है न? तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हीं को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को? शंकर समान ज्वाला-रूप बन कर प्रज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। जब कोई एक

अर्थी को भी जलाते हैं तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज़ किया जाता है, तो यह विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए निमित्त बनी हुई आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े-कैसे हिलावें? हाथ से व लाठी से? संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज़ करना पड़े, क्या ऐसा ज्वाला रूप बन, विनाश ज्वाला को तेज़ करने का संकल्प इमर्ज होता है या यह अपना कार्य नहीं समझते हो? ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है।

✚ जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नज़दीक होंगे उसी अनुसार भविष्य प्रालब्ध में भी राज अधिकारी होंगे। साथसाथ आदि भक्त जीवन में भी समीप सम्बन्ध में होंगे। पूज्य अथवा पुजारी दोनों जीवन में साकार बाप के समीप होंगे अर्थात् आदि आत्मा के सारे कल्प में सम्बन्ध वा सम्पर्क में रहेंगे। हीरो पार्टधारी आत्मा के साथ-साथ आप आत्माओं का भी भिन्न नाम रूप से विशेष पार्ट होगा। अब के सम्पूर्ण स्थिति के नज़दीक से अर्थात् बाप-दादा की समीपता के आधार से सारे कल्प की समीपता का आधार है इसलिए जितना चाहो उतना अपनी कल्प की प्रालब्ध बनाओ। समीपता का आधार श्रेष्ठता है। श्रेष्ठता का आधार अपने मरजीवा जीवन में विशेष दो बातों की चैकिंग करो- एक सदा पर उपकारी रहे हैं। दूसरा आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं।

✚ दादीजी से - बचपन से बाप ने ताजधारी बनाया है। आते ही सेवा की जिम्मेवारी का ताज पहनाया और समय प्रति समय जो भी पार्ट चला - चाहे बेगरी पार्ट चला, चाहे मौजों का पार्ट चला, सभी पार्ट में जिम्मेवारी का ताज ड्रामा अनुसार धारण करती आई हो। इसलिए अव्यक्त पार्ट में भी ताजधारी निमित्त बन गई। तो यह विशेष आदि से पार्ट है। सदा जिम्मेवारी निभाने वाली। जैसे बाप जिम्मेवार है तो जिम्मेवारी के ताजधारी बनने का विशेष पार्ट है। इसलिए अन्त में भी दृष्टि द्वारा ताज, तिलक सब देकर गये। इसलिए आपका जो यादगार है ना उसमें ताज जरूर होगा। जैसे कृष्ण को बचपन से ताज दिखाते हैं तो यादगार में भी बचपन से

ताजधारी रूप से पूजते हैं। और सब साथी हैं लेकिन आप ताजधारी हो। साथ तो सभी निभाते लेकिन समान रूप में साथ निभाना। इसमें अन्तर है।

✚ दुनिया के अन्तर में आप सभी अल्प हो, बहुत थोड़े हो लेकिन कल्प पहले के यादगार में भी अक्षौणी के सामने 5 पाण्डव ही दिखाये हैं। सबसे बड़े ते बड़ी अथार्टी आपके साथ है। साइन्स की अथार्टी, शास्त्रों की अथार्टी, राजनीति की अथार्टी, धर्मनीति की अथार्टी, अनेक अथार्टी वाले अपनी-अपनी अथार्टी प्रमाण दुनिया को परिवर्तन करने की ट्रायल कर चुके। कितने प्रयत्न किये हैं लेकिन आप सभी के पास कौन-सी अथार्टी है? सबसे बड़ी 'परमात्म अनुभूति की अथार्टी' है। अनुभव की अथार्टी से श्रेष्ठ और सहज किसी को भी परिवर्तन कर सकते हो। तो आप सबके पास यही विशेष अनुभव की अथार्टी है इसलिए फलक से, निश्चय से, नशे से, निश्चित भाव से कहते हैं और कहेंगे कि सहज रास्ता, यथार्थ रास्ता एक है। एक द्वारा ही प्राप्त होता है और सर्व को एक बनाता है।

✚ आज के दिन(नये वर्ष) का महत्व है। विदाई भी है और बधाई भी है। विदाई और बधाई का संगमयुग है। आज के दिन को कहेंगे संगम का दिन है। संगम की महिमा बहुत बड़ी है। आप सभी जानते हो कि संगमयुग की महिमा के कारण आजकल पुराने और नये वर्ष के संगम को कितना धूमधाम से मनाते हैं। संगमयुग की महिमा के कारण ही इस पुराने नये वर्ष के संगम की महिमा है। जहाँ दो नदियां मिलती हैं, संगम होता है, उनकी भी महिमा है। जहाँ नदी सागर का संगम होता है उसकी भी महिमा है। लेकिन सबसे बड़ी महिमा इस संगमयुग की है, पुरुषोत्तमयुग की है, जहाँ आप ब्राह्मण भाग्यवान आत्मायें बैठे हो। यह नशा है ना ! अगर आपसे कोई पूछे आप किस समय पर हो? क्या कलियुग में रहते हो, सतयुग में रहते हो? तो क्या फलक से कहेंगे? हम इस समय पुरुषोत्तम संगमयुग में रहते हैं।

✚ लक्ष्मी के साथ गणेश की भी पूजा करते हैं। गणेश बच्चा है ना! तो सिर्फ लक्ष्मी की पूजा नहीं लेकिन आप सब गणेश अर्थात् बुद्धिवान हो। तीनों कालों के नालेजफुल, इसको कहा जाता है - गणेश अर्थात् बुद्धिवान, समझदार। और गणेश को ही विघ्न-विनाशक कहते हैं। तो जो तीनों लोक और त्रिमूर्ति के नालेजफुल हैं वही विघ्न-विनाशक हैं। तो नालेजफुल भी हो और विघ्न-विनाशक भी हो, इसलिए पूजा होती है। तो आज आपके पूजा का दिन है। आप सबका दिन है ना! तो सदा किसी भी परिस्थिति में विघ्न रूप न बन, विघ्नविनाशक बनो। अगर और कोई विघ्न रूप बने तो आप विघ्न-विनाशक बन जाओ तो विघ्न खत्म हो जायेंगे। ऐसा वातावरण है, ऐसी परिस्थिति है इसलिए यह करना पड़ा, यह बोल विघ्न-विनाशक के नहीं। विघ्न-विनाशक अर्थात् वातावरण, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले।

✚ अल्पज्ञ आत्माओं को खुश कर लिया लेकिन सर्वज्ञ बाप की आज्ञा का उल्लंघन किया ना! तो पाया क्या और गंवाया क्या! जो लोक अब खत्म हुआ ही पड़ा है। चारों ओर आग की लकड़ियाँ बहुत जोर शोर से इकट्ठी हो गई हैं। लकड़ियाँ अर्थात् तैयारियाँ। जितना सोचते हैं इन लकड़ियों को अलग-अलग कर आग की तैयारी को समाप्त कर दें उतना ही लकड़ियों का ढेर ऊँचा होता जाता है। जैसे होलिका को जलाते हैं तो बड़ों के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी लकड़ियाँ इकट्ठी कर ले आते हैं। नहीं तो घर से ही लकड़ी ले आते। शौक होता है। तो आजकल भी देखो छोटे-छोटे शहर भी बड़े शौक से सहयोगी बन रहे हैं। तो ऐसे लोक की लाज के लिए अपने अविनाशी ब्राह्मण सो देवता लोक की लाज भूल जाते हो! कमाल करते हो! यह निभाना है या गंवाना है! इसलिए ब्राह्मण लोक की भी लाज स्मृति में रखो।

✚ बाप ने तो सबको एक ही सेकेण्ड में एक जैसा वरदान दिया। चाहे छोटा बच्चा हो चाहे वृद्ध हो, चाहे बड़े आक्वूपेशन वाले हों, चाहे साधारण हो, तन्दरूस्त हो वा बीमार हो, किसी भी धर्म के हों, किसी भी देश के हों, पढ़ा हुआ हो वा अनपढ़ हो सभी को एक ही वरदान दिया।

इसी वरदान को जीवन में लाना, स्मृति स्वरूप बनना इसमें नम्बर बन गये। कोई न निरंतर बनाया, कोई ने कभी-कभी का बनाया। इस अन्तर के कारण दो मालायें बन गईं। जो सदा वरदान के स्मृति स्वरूप रहे उनकी माला भी सदा सिमरी जाती है। और जिन्होंने वरदान को कभी-कभी जीवन में लाया वा स्मृति स्वरूप में लाया उन्होंने की माला भी कभी-कभी सिमरी जाती है। वह वरदानी स्वरूप अर्थात् इस पहले वरदान में सदा स्मृति स्वरूप रहे। जो स्वयं बाप का सदा बना हुआ होगा वही औरों को भी बाप का सदा बना सकेगा।

तीनों ही सितारे दिखाई दे रहे हैं। एक तो भविष्य का, दूसरा वर्तमान सौभाग्य का और तीसरा जो परम- धाम में आपकी आत्मा की सम्पूर्ण अवस्था होनी है, वह आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति का सितारा। तीनों ही सितारे दिखाई पड़ते हैं। इन तीनों सितारों को देखते रहना। कभी-कभी सितारों के बीच बादल आ जाते हैं। कभी-कभी सितारे जगह भी बदली करते हैं। कभी टूट भी पड़ते हैं। यहाँ भी ऐसे जगह भी बदली करते हैं। कभी टूट भी पड़ते हैं। कभी देखो तो बहुत ऊपर, कभी देखो तो बीच में, कभी देखो तो उससे भी नीचे। जगह भी अभी बदली नहीं करनी चाहिए। अगर बदली करो तो आगे भल बढ़ो। नीचे नहीं उतरो। अविनाशी सम्पूर्ण स्थिति में सदैव चढ़ते रहो। ऐसा सितारा बनना है। टूटने की तो यहाँ बात ही नहीं। सभी अच्छे पुरुषार्थी बैठे हुए हैं। बाकी जगह बदली की आदत को मिटाना है।

किसी राजयोगी के मस्तक पर तीन बिन्दियों का तिलक है। किसी के मस्तक पर दो बिन्दियों का तिलक है और किसी पर एक बिन्दी का भी तिलक है। वास्तव में नॉलेजफुल बाप द्वारा विशेष तीन स्मृतियों का तीन बिन्दियों के रूप में तिलक दिया हुआ है। उन तीन स्मृतियों को त्रिशूल के रूप में यादगार बनाया है। यह तीन स्मृतियाँ हैं - एक स्वयं की स्मृति, दूसरी बाप की स्मृति और तीसरी ड्रामा के नॉलेज की स्मृति। इन विशेष तीन स्मृतियों में सारे ही ज्ञान का विस्तार समाया हुआ है। नॉलेज के वृक्ष की यह तीन स्मृतियाँ हैं। जैसे वृक्ष का पहले बीज होता है, उस बीज द्वारा पहले दो पत्ते निकलते हैं, फिर वृक्ष का विस्तार होता है ऐसे मुख्य हैं बीज

बाप की स्मृति। फिर दो पत्ते अर्थात् विशेष स्मृतियाँ - आत्मा की सारी नॉलेज और ड्रामा की स्पष्ट नॉलेज।

✚ जब कोई भी सर्विस पर जाते हैं तो सदैव ऐसे समझो कि सर्विस के साथ-साथ अपने भी पुराने संस्कारों का अन्तिम- संस्कार करते हैं। जितना संस्कारों का संस्कार करेंगे उतना ही सत्कार मिलेगा। सभी आत्मायें आपके आगे मन से नमस्कार करेंगी। एक होता है हाथों से नमस्कार करना, दूसरा होता है मन से। मन ही मन में गुण गाते रहें। जैसे भक्ति भी एक तो बाहर की होती है, दूसरी होती है मानसिक। तो बाहर से नमस्कार करना- यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन मन से नमस्कार करेंगे, गुण गायेंगे बाप के कि इन्हों को बनाने वाला कौन? दूसरा, जो उन्हों के अपने दृढ़ विचार हैं उनको भी आपके सुनाये हुए श्रेष्ठ विचारों के आगे झुका देंगे। तो नमस्कार हुआ ना। बाहर के भक्त नहीं बनाना है। लेकिन मानसिक नमस्कार करने वाले बनाने हैं। वही भक्त बदल कर ज्ञानी बन जायें।

✚ लेकिन बताया ना कि अभी फिर भी कुछ समय रहमदिल का है, वरदान का है। अभी चित्रगुप्त, गुप्त है। फिर प्रत्यक्ष होगा। इसलिए फिर भी बाप को रहम आता है - चलो एक साल और दे दो, फिर भी बच्चे हैं। बाप चाहे तो क्या नहीं कर सकते। सबकी एक-एक बात एनाउन्स कर सकते हैं। कई भोलानाथ समझते हैं ना। तो कई बच्चे अभी भी बाप को भोला बनाते रहते हैं। भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है। अभी वह रूप बच्चों के आगे नहीं दिखाते हैं। नहीं तो सामने खड़े नहीं हो सकेंगे। इसलिए जानते हुए भी भोलानाथ बनते हैं, अन्जान भी बन जाते हैं। लेकिन किसलिए? बच्चों को सम्पूर्ण बनाने के लिए। समझा? बापदादा यह सब नजारे देख मुस्कराते रहते हैं। क्या-क्या खेल करते हैं - सब देखते रहते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को स्वयं में चेक करो और स्वयं को सम्पन्न बनाओ।

✚ बाप-दादा का एक प्रश्न है - कोई-कोई महारथियों के संस्कार ब्रह्मा स्मान ज्यादा हैं और कोई-कोई के विष्णु समान संस्कार हैं। कोई की जन्मपत्री में आदि से अन्त तक स्थापना के निमित्त बनने के संस्कार हैं और कोई-कोई के पालना के संस्कार हैं - इसका रहस्य क्या है? इस पर रूहरूहान करना। दोनों ही विशेष आत्मायें भी हैं- लेकिन अन्तर भी विशेष है। तो दोनों में नम्बर वन कौन हुए! और इसका भविष्य के साथ क्या सम्बन्ध है- वर्तमान दोनों की विशेष प्राप्तियाँ क्या हैं और दोनों के पूजन में भी अन्तर क्या है ? इस पर रूहरूहान करना, बड़ी टापिक हैं ना। इस टापिक से अपना पूज्य रूप भी समझ सकेंगे कि मेरा कौनसा रूप होगा ! वह भावना आयेगी। जैसे अभी आपको कोई आप के नाम से बुलाता है तो झट फील होता है ना कि मुझे बुला रहे हैं - ऐसे स्पष्ट भावना आयेगी।

✚ सदा मन में यही शुभ भावना रहती है कि सर्व का कल्याण हो। मनुष्यात्मायें तो क्या प्रकृति का भी कल्याण करने वाले। इसलिये प्रकृतिजीत, मायाजीत कहलाते हो। क्योंकि पुरुष हो ना, आत्मा पुरुष है तो आत्मा पुरुष प्रकृतिजीत बनती है। प्रकृति भी सुखदायी बन जाती है। इस समय देखो प्रकृति कितना दुःख देती है। थोड़ा सा भी तूफान आया, थोड़ा सा धरनी हलचल में आई कितनों को दुःख मिलता है। तो आपके लिये सुखदायी प्रकृति है और लोगों के लिये दुःखदायी। कोई भी दुःख की घटना देखते हो, सुनते हो तो दुःख की लहर आती है? कभी पोत्रा, धोत्रा दुःखी होता हो तो दुःख की लहर आती है? विश्व कल्याणकारी विश्व के राज्य अधिकारी बन सकते हो। अगर विश्व कल्याण की भावना नहीं तो विश्व राज्य का भी अधिकार नहीं। सम्बन्ध है ना। तो सदा सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो।

✚ अगर यहाँ कोई भी ताज अधूरा है, चाहे पवित्रता का, चाहे पढ़ाई वा सेवा का, तो वहाँ भी छोटे से ताज के अधिकारी वा एक ताजधारी अर्थात् प्रजा पद वाले बनना पड़ेगा। क्योंकि प्रजा को भी लाइट का ताज तो होगा अर्थात् पवित्र आत्मायें होंगी। लेकिन विश्वराजन् वा महाराजन् का ताज नहीं प्राप्त होगा। कोई महाराजन् कोई राजन् अर्थात् राजा, महाराजा और विश्व

महाराजा, इसी आधार पर नम्बरवार ताजधारी होंगे। अकाल तख्तनशीन निरन्तर होंगे अर्थात् सदाकाल होंगे तो दिलतख्तनशीन भी सदाकाल होंगे। दोनों का सम्बन्ध है। ब्राह्मण जीवन में कभी-कभी तख्तनशीन तो भविष्य में भी पूरा आधाकल्प तख्तनशीन अर्थात् रायल फैमली में नहीं आ सकते। क्योंकि रायल फैमली ही तख्तनशीन गाई जाती है। तो यहाँ के सदाकाल के तख्तनशीन सो भविष्य सदाकाल के राज्य अधिकारी अर्थात् तख्तनशीन।

✚ महान बनना। स्व को भी महान बनाना है, विश्व को भी महान बनाना है। और कर्नाटक वाले सदा नाटक में हीरो पार्ट बजाने वाले हैं। बनना भी हीरो है, बनाना भी हीरो है। आंध्रा अर्थात् अन्धियारा मिटाने वाले। सब प्रकार का अंधेरा। आंध्रा में गरीबी का अंधकार भी ज्यादा है। तो गरीबी को मिटाए सर्व को सम्पन्न बनाना है। तो आंध्रा वाले विश्व को सदा साहूकार बनाने वाले हैं। जो न तन की गरीबी, न धन की गरीबी, न मन के शक्तियों की गरीबी। तन-मन-धन तीनों ही गरीबी को मिटाने वाले। इस अंधकार को मिटाकर सदा रोशनी लाने वाले। तो आंध्रा निवासी हो गये - मास्टर ज्ञान सूर्य। मद्रास अर्थात् सदा रास में मगन रहने वाले। संस्कार मिलन की भी रास, खुशी की भी रास। और फिर स्थूल में भी रास करने वाले। मद - मगन को भी कहा जाता है। तो सदा इसी रास में मगन रहने वाले।

✚ बाप के बिना भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन परिवार की सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट इससे भी बहुत कुछ मिलता है। परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टिफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधाकल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं, पूज्य की प्रारब्ध भी अभी

बनती है। ऐसे नहीं समझो-हमारा तो बाप से ही काम चल जायेगा। नहीं। बाप का परिवार से कितना प्यार है। तो फॉलो फादर करो।

✚ वैसे मिलने के स्थान जो अतिप्रिय लगते हैं, वह कौन-से होते हैं? या फूलों के बगीचे में मिलन होता है वा सागर के किनारे पर मिलना होता है जिसको आप लोग बीच (समुद्र का किनारा) कहते हो। तो अब कहाँ बैठे हो? ज्ञान सागर के किनारे रूहानी मिलन के स्थान पर बैठे हो। रूहानी वा गॉडली गार्डन (अल्लाह का बगीचा) है। और तो अनेक प्रकार के बगीचे देखे हैं लेकिन ऐसा बगीचा जहाँ हरेक एक दो से ज्यादा खिले हुए फूल हैं, एक-एक श्रेष्ठ सुन्दरता से अपनी खुशबू दे रहे हैं - ऐसा बगीचा है। इसी बीच पर बापदादा वा माशूक मिलने आते हैं। वह अनेक बीच देखीं, लेकिन ऐसी बीच कब देखी जहाँ ज्ञान सागर की स्नेह की लहरें, शक्ति की लहरें, भिन्न-भिन्न लहरें लहराए सदा के लिए रिफ्रेश कर देती हैं? यह स्थान पसन्द है ना? स्वच्छता भी है और रमणीकता भी है। सुन्दरता भी है।

✚ बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं - आज कहेंगे बाबा, ओ मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं आप ही मेरा संसार हो, बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती, भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं - कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।

✚ अब संहारी बनो। अपने संस्कारों के भी संहारी और आत्माओं के तमोगुणी संस्कारों के भी संहारी। शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है, जिससे संहार करना है। कर्तव्य किया है, अब यह रूप दिखाओ। इस रूप को धारण करने से रिजल्ट क्या होगी? आपकी जो रचना है वह अनुभव करेगी कि दिन- प्रतिदिन एक्स्ट्रा लिफ्ट मिलती जा रही है। यथा शक्ति अपना फोर्स तो लगाया, अपनी मेहनत से अभी नहीं चल सकते, अभी उन्हीं को चाहिए वरदान की लिफ्ट। आज दिन तक जो बातें उन्हीं को मुश्किल पड़ती हैं, तो आप लोगों की इस पावरफुल सर्विस से उन्हीं के मुख से मुश्किल शब्द खत्म हो जाए, सब बात में सहज का अनुभव करें। यह जब अपनी रचना में देखेंगे तब समझना संहारी रूप बने हैं।

✚ पहली रचना 'ब्राह्मणों' की रचना है। उसकी पहली रचना में भी पहला नम्बर 'ब्रह्मा' को ही कहेंगे। पहली रचना का पहला नम्बर होने कारण ब्रह्मा को आदिदेव कहा जाता है। इसी नाम से इस आबू - पर्वत पर यादगार भी 'आदि - देव' नाम से ही है। आदि - देव अर्थात् आदि - रचता भी कहा जाता और साथ - साथ आदि - देव अर्थात् नई सृष्टि के आदि का पहला नम्बर का देव है। पहली देव आत्मा श्रीकृष्ण के रूप में ब्रह्मा ही बनते हैं, इसलिए नई सृष्टि के आदि का आदि - देव कहा जाता है। संगमयुग में भी आदि रचना का पहला नम्बर अर्थात् आदि देव कहो वा ब्राह्मण आत्माओं के रचता ब्रह्मा कहो। तो संगम पर और सृष्टि के आदि पर - दोनों समय के आदि हैं, इसलिए आदि - देव कहा जाता है। ब्रह्मा ही आदि कर्मातीत फरिश्ता बनता है। ब्रह्मा सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता - सबमें नम्बरवना।

✚ बापदादा अनेक बच्चों की खुशी देखकर खुश होते हैं! सेवा के लिए जहाँ भी जाओ, अनेक खज़ाने अनेकों को मिल जाते हैं। इसलिए ड्रामा में अब तक जाने का है, तो चल रहा है, स्टाप होगा तो सेकेण्ड में हो जायेगा। जैसे साकार में देखा, तैयारी की हुई भी थी, पार्ट समाप्त था तो तैयारी होते भी नहीं जा सके। ऐसे यह भी ड्रामा में समाप्त होगा तो सेकेण्ड में अचानक होगा।

अब तक तो जाना भी है, रिफ्रेश करना भी है। सबके दिल को खुश करना यह भी सबसे बड़ा पुण्य है। सबका आह्वान है ना! आह्वान में प्रत्यक्ष होना ही पड़ता है। जड़ चित्रों का भी आह्वान करते हैं तो उसमें भी जान अनुभव होती है। तो यह आह्वान करना भी शुरू यहाँ से ही होता है इसलिए सभी को यादप्यार देते हुए यही कहना कि अभी वाचा के साथ-साथ संकल्प शक्ति की सेवा जो ही अन्तिम पावर- फुल सेवा है, वह भी करो।

✚ वास्तव में सब उत्सव आपके जीवन का यादगार हैं। होली की विशेषता रंग लगाना, होली जलाना और फिर मंगल मिलन मनाना। जब बाप के संग के रंग में रंग गये, सबसे बड़े ते बड़ा, अच्छे ते अच्छा रंग है सदा बाप का संग। तो सदा संग है ना। तो सदा ही होली है। क्योंकि संग का रंग सदा ही है। और जब बाप के साथ रहते हो, संग रहते हो तो बुराइयाँ तो स्वतः ही जल जाती हैं। अपवित्रता को जलाना ये होली जलाना है। और जब रंग में रंग जाते हैं, बुराइयाँ जल जाती हैं तो क्या होता है? मंगल मिलन। सदा एक-दो से मिलते हो तो शुभ भावना सबके प्रति रखते हो, तो ये शुभ भावना से मिलना-ये है मंगल मिलन। सदा ही शुभ है। तो मंगल मिलन शुभ मिलन है। चाहे कैसी भी आत्मा हो लेकिन आप शुभ भावना से उनको भी परिवर्तन कर देते हो। तो सदा मंगल मिलन बाप से भी और अपने में भी मनाते ही रहते हो।

✚ होली मनाने आये हो ना! आप सभी ने अपने जीवन में पवित्रता की होली मनाई है, हर आध्यात्मिक रहस्य को दुनिया वालों ने स्थूल रूप दे दिया है। क्योंकि बाडी कान्सेस हैं ना। आप सोल कान्सेस वाले हैं, आध्यात्मिक जीवन वाले हैं और वह बाडी कान्सेस वाले हैं। तो सब स्थूल रूप ले लिया। आपने योग अग्नि द्वारा अपने पुराने संस्कार स्वभाव को भस्म किया, जलाया और दुनियावाले स्थूल आग में जलाते हैं। क्यों? पुराने संस्कार जलाने के बिना न परमात्म संग का रंग लग सकता, न परमात्म मिलन का अनुभव कर सकते। तो आपके जीवन की इतनी वैल्यु है जो एक-एक कदम आपका उत्सव के रूप में मनाया जाता है। क्यों? आपने

पूरा संगमयुग उत्साह उमंग की जीवन बनाई है। आपकी जीवन का यादगार एक दिन का उत्सव मना लेते हैं। तो सभी की ऐसी सदा उत्साह, उमंग, खुशी की जीवन है ना! है या कभी-कभी है?

✚ ब्राह्मण जीवन के पुरुषार्थ के नम्बर भी पवित्रता के आधार पर हैं। भक्ति मार्ग में यादगार पवित्रता के आधार पर हैं। कोई भी भक्त आपके यादगार चित्र को पवित्रता के बिना टच नहीं कर सकते। जिस दिन विशेष देवी व देवताओं का दिवस मनाते हैं, उस दिन का महत्व भी पवित्रता है। भक्ति का अर्थ ही है - अल्पकाल। ज्ञान का अर्थ है - सदाकाल। तो भक्त अल्पकाल के नियम पालन करते हैं। जैसे नवरात्रि मनाते हैं, जन्माष्टमी अथवा दीपमाला या कोई विशेष उत्सव मनाते हैं तो पवित्रता का नियम अल्पकाल के लिए जरूर पालन करते हैं। चाहे शरीर की पवित्रता व आत्मा के नियम, दोनों प्रकार की शुद्धि जरूर रखते हैं। आपकी यादगार 'विजय माला' - उनका भी सुमिरण करेंगे तो पवित्रता की विधि पूर्वक करेंगे। आप सिद्धि स्वरूप बनते हो, सिद्धि स्वरूप आत्माओं की पूजा भी विधि पूर्वक होती है।

✚ 'शुभ भावना' मन्सा-सेवा का बहुत श्रेष्ठ साधन है और 'श्रेष्ठ भाव' सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व के प्यारे बनने का सहज साधन है। जो सदा हर एक प्रति श्रेष्ठ भाव धारण करता वही माला का समीप मणका बन सकता है। क्योंकि माला सम्बन्ध-सम्पर्क में समीप और श्रेष्ठता की निशानी है। कोई किसी भी भाव से बोले वा चले लेकिन आप सदा हर एक प्रति शुभ भाव, श्रेष्ठ भाव धारण करो। जो इसमें विजयी होते हैं वही माला में पिरोने के अधिकारी हैं। चाहे सेवा के क्षेत्र में भाषण नहीं कर सकते, प्लैन नहीं बना सकते लेकिन जो हर एक से सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भाव रख सकते हैं, तो यह 'शुभ भाव' सूक्ष्म सेवा-भाव में जमा हो जायेगा। ऐसे शुभ भाव वाला सदा सभी को सुख देगा, सुख लेगा। तो यह भी सेवा है और यह सेवा-भाव आगे नम्बर लेने का अधिकारी बना देगा। इसलिए माला का मणका बन जायेंगे।

✚ मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी में आयेगा। जैसे भक्त अपने देवताओं वा देवियों के पीछे अन्धश्रद्धा वश भी कितने भाग-दौड़ करते हैं। वैसे चैतन्य स्वरूप में स्वमान में स्थित हुई आत्माओं के पीछे सर्व आत्माएं मान देने के लिए आयेंगी, दौड़ेंगी। भक्तों की भाग दौड़ देखी है? आप लोगों के यादगार जड़ चित्र हैं। उनमें भी चित्रकार मुख्य यही धारणा भरते हैं - एक तरफ शक्तियों का रूहाब भी फुल फोर्स में दिखाते हैं और साथ-साथ रहम का भी दिखाते हैं। एक ही चित्र में दोनों ही भाव प्रकट करते हैं ना। यह क्यों बना है? क्योंकि प्रैक्टिकल में आप रूहाब और रहमदिल-मूर्त बने हो। तो जड़ चित्रों में भी यही मुख्य धारणाएं दिखाते हैं। तो आप लोग अभी जब सर्विस पर हो तो सर्विस के प्रत्यक्षफल का आधार इन दो मुख्य धारणाओं के ऊपर है।

✚ तो जैसे स्थूल सहयोग के आधार पर सर्व की अंगुली लगने से हाल तैयार हो गया है। वैसे हाल के साथ वन्डरफुल चाल दिखाने के लिए ऐसा विशेष स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ। सिर्फ बुद्धि में संकल्प किया, यह नहीं। लेकिन जैसे इन्जीनियर के बुद्धि की मदद और मजदूरों के कर्म की मदद से कार्य सम्पन्न हुआ। इसी रीति मन के श्रेष्ठ संकल्प साथ-साथ हर कर्म द्वारा ही दिखाई देता है। तो ऐसे चलने और करने को संकल्प , वाणी हाथ वा पाँव द्वारा संगठित रूप में विचित्र स्वरूप से दिखाने का दृढ़ संकल्प किया है? ऐसी चाल का नक्शा तैयार किया है? सिर्फ 3 हजार की सभा नहीं लेकिन 3 हजार में सदा त्रिमूर्ति दिखाई दे। यह सब ब्रह्मा के समान कर्मयोगी, विष्णु के समान प्रेम और शक्ति से पालना करने वाले, शंकर के समान तपस्वी वायुम- ण्डल बनाने वाले हैं, ऐसा अनुभव हर एक द्वारा हो।

✚ स्थापना के कार्य में, सेवा के कार्य में कभी छोटे, कभी बड़े तूफान आये। जैसे यादगार शास्त्रों में महावीर हनुमान के लिए दिखाते हैं कि इतना बड़ा पहाड़ भी हथेली पर एक गेंद के समान ले आया। ऐसे, कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान हो, विघ्न हो लेकिन पहाड़ अर्थात् बड़ी बात को छोटा - सा खिलौना बनाए खेल की रीति से सदा पार किया वा बड़ी

भारी बात को सदा हल्का बनाए स्वयं भी हल्के रहे और दूसरों को भी हल्का बनाया। इसको कहते हैं - सहनशीलता। छोटे से पत्थर को पहाड़ नहीं लेकिन पहाड़ को गेंद बनाया। विस्तार को सार में लाना, यह है सहनशीलता। विघ्नों को, समस्या को अपने मन में वा दूसरों को आगे विस्तार करना अर्थात् पहाड़ बनाना है। लेकिन विस्तार में न जाये, 'नथिंग न्यू' के फुल स्टाप से बिन्दी लगाए बिन्दी बन आगे बढ़े - इसको कहते हैं विस्तार को सार में लाना।

✚ जैसे अभी सभी खूब खुशी में नाच रहे हैं, ऐसे अमर भव! जैसे यह झण्डा लहराया और पुष्पों की वर्षा हुई, ऐसे ही सदा अपने दिल में बाप की याद का यह झण्डा लहराता रहे। नीचे ऊपर नहीं हो। कभी भी याद का झण्डा नीचे नहीं हो, ऊँचा हो। तो दुनिया वाले अहो भाग्य, अहो बाप यह पुष्पों की वर्षा दुआओं के साथ आप सबके ऊपर करेंगे। तो एक तरफ याद का झण्डा लहराओ, दूसरे तरफ जो आज बाप का सन्देश मिला - एकानामी का अवतार बनो, तो ऐसे दृढ़ संकल्प का झण्डा अपने दिल में लहराना। और साथ में सेवा के प्रति सदा चारों ओर सर्व आत्माओं के आगे बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना। यह है झण्डे का महत्त्व। एक दिन आयेगा, आया-कि-आया जब सब लोग बाप की महिमा करते, प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे आयेंगे। सहारा लेंगे और आप सहारे दाता बाप के बच्चे, मास्टर सहारे दाता होंगे। आया-कि-आया।

✚ सेवाधारियों के साथ- सेवाधारी, किस स्थान के सेवाधारी हो? यह तो अच्छी तरह से जानते हो ना कि महायज्ञ के सेवाधारी हैं। जो महायज्ञ के सेवाधारी हैं उन्हों को यज्ञ से प्रसाद मिलता है। यज्ञ के प्रसाद का बहुत महत्त्व होता है ना! वैसे भी लौकिक में भी प्रसाद मिलने वाले को महान आत्मा, भाग्यवान आत्मा कहा जाता है। सबको प्रसाद नहीं मिलता है। भाग्यवान को मिलता है। तो यह है महायज्ञ का महाप्रसाद। महाप्रसाद क्या है? सदा कमाई जमा होना, सर्व खज़ाने प्राप्त होना यही महाप्रसाद है। क्योंकि देखो, यहाँ यज्ञ सेवा करने से जो सबसे श्रेष्ठ खज़ाना है- शक्तियों का, सुख का, शान्ति का वह सर्व खज़ानों की अनुभूति होती है ना! तो

यही यज्ञ-प्रसाद है। इसी प्रसाद द्वारा सदा प्रसन्न भी रहते हो और आगे भी सदा प्रसन्न रहेंगे। तो सबसे बड़ा खज़ाना वा प्रसाद प्रसन्नता की प्राप्ति।

✚ बाबा कहा दिल से और दिलाराम हाजर। इसीलिये ही कहते हैं हजूर हाजर है, हाजरा हजूर है। जहाँ भी हैं, जो भी हैं लेकिन हर स्थान पर हर के पास हाजर हो जाते हैं इसीलिये हाजरा हजूर हो गया। इस स्नेह की विधि को लोग नहीं जान सकते। यह ब्राह्मण आत्मायें ही जानती हैं। अनुभवी इस अनुभव को जानते हैं। आप विशेष आत्मायें तो हैं ही कम्बाइन्ड ना। अलग हो ही नहीं सकते। लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और आप कहते हो जो करते हैं, जहाँ जाते हैं बाप साथ ही है अर्थात् तू ही तू है। जैसे कर्तव्य साथ है तो हर कर्तव्य कराने वाला भी सदा साथ है। इसलिये गाया हुआ है करनकरावनहार। तो कम्बाइन्ड हो गया ना-करनहार और करावनहार। तो आप सबकी स्थिति क्या है? कम्बाइन्ड है ना। करनकरावनहार करनहार के साथ है ही, करावनहार अलग नहीं है। इसको ही कम्बाइन्ड स्थिति कहा जाता है।

✚ अभी की दोनों सत्तायें(एक धर्म सत्ता और दूसरी स्वराज्य सत्ता) प्राप्त करने वाले ही भविष्य में धर्म और राज्य सत्ता के अधिकारी बनते हैं। दोनों ही सत्तायें धारण की हैं? अपना चित्र देखा है? डबल विदेशियों का चित्र है या औरों का चित्र है? तो उस चित्र में दोनों सत्ताओं की निशानी देखी है? धर्म सत्ता की निशानी है-लाइट का ताज और राज्य सत्ता की निशानी है रत्न जड़ित ताज। तो ऐसा अपना चित्र देखा है? तो दोनों सत्ता धारण इस समय करते हो। जो आधाकल्प दोनों ही सत्तायें आप सबके, एक के हाथ में हैं। द्वापर से देखो तो धर्म सत्ता अलग हो गई और राज्य सत्ता अलग हो गई। इसीलिये धर्म पिताओं को आना पड़ा। तो धर्म पिता और राजा दोनों अलग-अलग रहे। लेकिन आपके राज्य में अलग होंगे क्या? हर एक के पास दोनों सत्तायें इकट्ठी होती हैं इसलिये अखण्ड निर्विघ्न राज्य चलता है।

✚ देखो, आजकल की भी जो महान् आत्मार्ये हैं, तो भक्त लोग उनके हर बोल के पीछे 'सत्य वचन महाराज' कहते हैं। चाहे व्यर्थ हो और चाहे गपोड़ा भी लगता हो फिर भी समझते हैं कि ये महान आत्माओं के बोल हैं, तो यह महत्व रखते हैं। 'सत्य वचन महाराज' का यह यादगार कब से आरम्भ हुआ? पहले यथार्थ प्रैक्टिकल में चलता है, फिर भक्तिमार्ग में सिर्फ यादगार रह जाता है, यथार्थ नहीं होता है, तो जब भक्तिमार्ग में भी हर बोल का महत्व इतना अभी तक भी है, जो अन्तिम घड़ी तक भी देख व सुन रहे हो तो ऐसे महत्व वाले बोल जिसमें सत्यता तथा विश्व का कल्याण हो, क्या ऐसे हर बोल निकलते हैं? दिन प्रतिदिन नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जो महारथी व महावीर बन रहे हैं, उन्हीं के मुख से निकलने वाले, हर बोल सत्य हो जावेंगे। अभी नहीं होते हैं, क्योंकि अभी तक व्यर्थ और साधारण बोल ज्यादा निकलते हैं।

✚ संगमयुग की सब घड़ियाँ गुडमोर्निंग ही हैं। क्योंकि संगमयुग पूरा ही अमृतवेला है। चक्र के हिसाब से संगमयुग अमृतवेला हुआ ना। तो संगमयुग का हर समय गुडमोर्निंग ही है। तो बापदादा आते भी गुडमोर्निंग में हैं, जाते भी गुडमोर्निंग में हैं। क्योंकि बाप आता है तो रात से अमृतवेला बन गया। तो आते भी अमृतवेले में हैं और जब जाते हैं तो दिन निकल आता है लेकिन रहता अमृतवेले में ही है, दिन निकलता तो चला जाता है। और आप लोग सवेरा अर्थात् सतयुग का दिन ब्रह्मा का दिन, उसमें राज्य करते हो। बाप तो न्यारे हो जायेंगे ना। तो पुरानी दुनिया के हिसाब से सदा ही गुडमोर्निंग है। सदा ही शुभ है और सदा शुभ रहेगा। इसलिए शुभ सवेरा कहें, शुभ रात्रि कहें, शुभ दिन कहें, सब शुभ ही शुभ है। तो सभी को कलियुग के हिसाब से गुडमोर्निंग और संगमयुग के हिसाब से गुडमोर्निंग तो गुडमोर्निंग।

✚ अच्छा, और कोई मुश्किल तो नहीं, कोई भी माया का रूप तंग तो नहीं करता है ना। यादगार में कहानी क्या सुनी है! सूर्पनखा उसको तंग करने आई तो क्या किया? माया का नाक काटने नहीं आता? यहाँ सब सहज हो जाता है, उन्होंने तो इन्ट्रेस्टिंग बनाने के लिए कहानी बना दी

है। माया पर एक बार वार कर लिया, बस। माया में कोई दम नहीं है, कमज़ोर है। सिर्फ बाहर का रूप शक्तिशाली बनाकर आती है। बाकी है अन्दर की कमज़ोरी। मरी पड़ी है। थोड़ा-सा रहा हुआ श्वास चल रहा है। इसको खत्म करना और विजयी बनना है। क्योंकि अन्तिम समय पर तो पहुँच गये हैं ना! सिर्फ विजयी बन विजय के हिसाब से राज्य भाग्य पाना है। इसलिए यह अन्तिम श्वास पर निमित्त मात्र विजयी बनना है। माया जीत जगतजीत हैं ना। विजय प्राप्त करने का फल - राज्य भाग्य है। इसलिए सिर्फ निमित्त मात्र यह माया से खेल है। युद्ध नहीं है।

✚ सभी गुण तो हैं ही लेकिन फिर भी कम से कम एक गुण की विशेषता से स्वयं को विशेष उसमें सम्पन्न बनाओ। जैसे डाक्टर्स होते हैं। जनरल बीमारियों की नॉलेज तो रखते ही हैं लेकिन साथ-साथ किसी में विशेष नॉलेज होती है। उस विशेषता के कारण नामीग्रामी हो जाते हैं। तो सर्वगुण सम्पन्न बनना ही है। फिर भी एक विशेषता को विशेष रूप से अनुभव में लाते सेवा में लाते आगे बढ़ते चलो। जैसे भक्ति में भी हर एक देवी की महिमा में, हर एक की विशेषता अलग-अलग गाई जाती है। और पूजन भी उसी विशेषता प्रमाण होता है जैसे सरस्वती को विशेष विद्या की देवी कह करके मानते हैं और पूजते हैं। है शक्ति स्वरूप लेकिन विशेषता विद्या की देवी कह करके पूजते हैं। लक्ष्मी को धन देवी कह करके पूजते हैं। ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ।

✚ सिद्धि स्वरूप की मुख्य बात कौन-सी अपनानी पड़े? जैसे कल्प पहले पाण्डवों का गायन है कि सेकेण्ड में जहाँ तीर लगाया वहाँ गंगा प्रगट हुई अर्थात् सेकेण्ड में असम्भव भी सम्भव प्रत्यक्ष फल के रूप में दिखाई दिया। इसको ही सिद्धि कहा जाता है। यह नहीं होता, क्योंकि प्रत्यक्ष-फल की प्राप्ति के लिए हर सेकेण्ड अपनी सम्पूर्ण सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप की स्मृति प्रत्यक्ष संकल्प रूप में नहीं रहती। मैं पुरुषार्थी हूँ, सम्पन्न हो ही जाऊंगा, होना तो ज़रूर है- नम्बरवार होना ही है। हमारा काम है मेहनत करना, वह तो यथाशक्ति कर ही रहे हैं - यह हर सेकेण्ड का संकल्प रूपी बीज सर्व शक्ति सम्पन्न नहीं होता है। उस समय के संकल्प में हो ही

जायेगा अर्थात् भविष्य का संकल्प भरा हुआ होता है। दृढ़ निश्चय व प्रत्यक्ष फल के रस का बल भरा हुआ न होने के कारण सिद्धि भी प्रत्यक्ष नहीं।

✚ बच्चों को संकल्प उठता है कि बाप वतन में क्या करते रहते हैं-ब्रह्मा बाप साकार रूप से भी अव्यक्त रूप में अभी दिन-रात सेवा में ज्यादा सहयोगी बनने का पार्ट बजा रहे हैं। क्योंकि अब बाप-समान जन्म-मरण से न्यारा कर्म-बन्धन से मुक्त, कर्मातीत हैं। सिद्धि स्वरूप है। इस स्टेज में हर संकल्प से सिद्धि प्राप्त होती है। जो संकल्प किया वह सत्। इसलिए चारों ओर संकल्प की सिद्धि रूप से सहयोगी हैं। वाणी से संकल्प की गति तीव्र होती है। साकार से आकार की गति तीव्र है। तो संकल्प से सेवा का पार्ट है - वह भी सत्-संकल्प। शुद्ध संकल्प। आपकी है ज्यादा वाणी द्वारा सेवा, मन्सा से भी है लेकिन ज्यादा वाणी से है, लेकिन ब्रह्मा बाप की अब सत्-संकल्प की सेवा है। तो तीव्र गति होगी ना? तो अभी सेवा का पार्ट ही चल रहा है। सेवा के बन्धन से मुक्त नहीं हैं, कर्म-बन्धन से मुक्त हैं।

✚ महारथी और सब बच्चे अमृतवेले जब रूह-रूहान करते हैं तो महारथियों की रूह-रूहान और मिलन-मुलाकात और अनेक आत्माओं के मिलन और रूह-रूहान में क्या अन्तर होता है? यह जो गायन है कि 'आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाती है', यह कहावत किस रूप में राँग है। क्योंकि एक शब्द बीच से निकाल दिया है। सिर्फ लीन शब्द नहीं है लेकिन लवलीन। एक शब्द है लीन। एक लव में लीन। जो कोई अति स्नेह से मिलते हैं, तो उस समय स्नेह के मिलन के शब्द क्या निकलते हैं? यह तो जैसे कि एक-दूसरे में समा गए हैं या दोनों मिलकर एक हो गए हैं। ऐसे-ऐसे स्नेह के शब्दों को उन्होंने इस रूप से ले लिया है। यह जो गायन है कि वे एक-दूसरे में समाकर एक हो गये यह है जैसे कि महारथियों का मिलन। बाप में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये। ऐसा पॉवरफुल अनुभव महारथियों को ज्यादा होगा। बाकी और जो हैं वह खींचते हैं।

✚ जीवन की अनेक समस्याओं का हल-तीर्थ स्थान की स्मृति- भाग्य विधाता की भूमि पर पहुँचना यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। यह कोई खाली स्थान नहीं है, महान तीर्थस्थान है। वैसे भी भक्ति मार्ग में मानते हैं कि तीर्थ स्थान पर जाने से पाप खत्म हो जाते हैं, लेकिन कब होते हैं, कैसे होते हैं, यह जानते नहीं हैं। इस समय तुम बच्चे अनुभव करते हो कि इस महान तीर्थस्थान पर आने से पुण्य आत्मा बन जाते हैं। यह तीर्थस्थान की स्मृति जीवन की अनेक समस्याओं से पार ले जायेगी। यह स्मृति भी एक तावीज का काम करेगी। जब भी याद करेगा तो यहाँ के वातावरण की शान्ति और सुख आपके जीवन में इमर्ज हो जायेगा। तो पुण्य आत्मा हो गये ना! इस धरनी पर आना भी भाग्य की निशानी है। इसलिए बहुत-बहुत भाग्यशाली हो। अब भाग्यशाली तो बन गये लेकिन सौभाग्यशाली बनना वा पद्मापद्म भाग्यशाली बनना यह आपके हाथ में है।

✚ ब्राह्मण जन्म ही विशेष जन्म है। जिसका जन्म ही विशेष है उसका जीवन क्या होगा? विशेष होगा या साधारण? ब्राह्मण जन्म भी श्रेष्ठ, ब्राह्मण धर्म भी श्रेष्ठ और ब्राह्मण कर्म भी श्रेष्ठ। क्योंकि ब्राह्मण जन्म दाता, ब्राह्मण धर्म स्थापक, सर्वश्रेष्ठ परम आत्मा और आदि आत्मा ब्रह्मा बाप है। तो जैसे रचता सर्वश्रेष्ठ तो रचना भी सर्वश्रेष्ठ अर्थात् विशेष है। ब्राह्मणों का कर्म विशेष क्यों है? क्योंकि कर्म में फॉलो करने के लिए आप सबके सामने आदि आत्मा ब्रह्मा बाप सेम्पल है। कर्म में फॉलो साकार ब्रह्मा बाप को करते हो। इसलिये भाग्य विधाता अर्थात् कर्म द्वारा भाग्य की रेखा श्रेष्ठ बनाने वाला ब्रह्मा गाया हुआ है। भाग्य की रेखा का कलम कर्म है। तो श्रेष्ठ कर्म का सहज सिम्बल ब्रह्मा बाप है। इसलिये आप सभी विशेष पुरुषार्थ का शब्द यही वर्णन करते हो कि बाप समान बनना है।

✚ जो नम्बर वन श्रेष्ठ पुरुषार्थी हैं उन्हीं का राज्य पद और पूज्य पद अति श्रेष्ठ और गुह्य रहस्य भरा है। पूज्य तो सब बनते हैं। सृष्टि के लिए सब पुरुषार्थी आत्माएं परम पूज्य हैं। अष्ट रत्न हैं वा 108 की माला है वा 16 हजार की माला है वा 9 लाख प्रजा पद वाले हैं, लेकिन सभी कोई

न कोई रूप में पूज्य अवश्य बनते हैं। अब तक भी अनेक अनगिनत सालिग्राम बना कर पूजा करते हैं। लेकिन अनेक सालिग्राम रूप की पूजा और विशेष इष्ट-देव के मन्दिर रूप की पूजा, उसमें अन्तर कितना होता है, उनको जानते हो ना? सालिग्राम रूप में अनेकों की पूजा होती है और अष्ट देव के रूप में नामीग्रामी कोई- कोई आत्मा की पूजा होती है। 16 हजार की माला भी कभी-कभी सुमिरण करते। 108की माला अनेक बार सुमिरण करते हैं, और अष्ट रत्नों को वा अष्ट देवों को वा देवियों को बाप के समान सदा अपने दिल में याद रखते हैं।

✚ कोई से भी पूछो कि आप अपने आप से सन्तुष्ट, अपने पुरुषार्थ से, अपनी सर्विस से वा अपने ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क से सन्तुष्ट हो; तो सोचते हैं। भले हां करते भी हैं लेकिन सोच कर करते हैं, फलक से नहीं कहते। अपने पुरुषार्थ में, सर्विस में और सम्पर्क में - तीनों में ही सर्व आत्माओं के द्वारा सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट मिलना चाहिए। ऐसे सर्व आत्माओं के सम्पर्क में अपने को सन्तुष्ट रखना वा सर्व को सन्तुष्ट करना इसी में ही जो विजयी बनते हैं वही अष्ट देवता विजयी रत्न बनते हैं। दो बातों में ठीक हो जाते, बाकी जो यह तीसरी बात है उसमें यथा शक्ति और नंबरवार हैं। हैं तो सभी बातों में नंबरवार लेकिन इस बात में ज्यादा हैं। अगर तीनों में सन्तुष्ट नहीं तो श्रेष्ठ वा अष्ट रत्नों में नहीं आ सकते। 'पास विद् ऑनर' बनने के लिए सर्व द्वारा सन्तुष्टता का पासपोर्ट मिलना चाहिए।

✚ महान् आत्माओं के हर्षितमूर्त्त, आकर्षण-मूर्त्त और अव्यक्त-मूर्त्त का मूर्त्ति के रूप में यादगार है। ऐसे अपने को देखो कि सारे दिन में जो हमारी-मूर्त्त व सीरत रहती है वह ऐसी है जो मूर्त्ति बन पूजन में आये और हमारे कर्म ऐसे हैं जो हमारे चरित्र रूप में गायन हों? यह लक्ष्य है ना? जब यहाँ सीखने व पढ़ने आती हो तो अन्तिम लक्ष्य क्या है? वा संगमयुग का लक्ष्य क्या है? यही है ना? संगम युग का कर्म ही चरित्र के रूप में गायन होता है। संगम युग के प्रैक्टिकल जीवन, देवता के रूप में पूजे जाते हैं। तो वह कब होगा? अभी का गायन है तो अभी ही होगा ना? क्या सतयुग में ऐसी बनेंगी? वहाँ तो सभी हर्षित होंगे तो यह हर्षित मुख हैं, यह भी कहेगा कौन?

यह तो अभी ही कहेंगे ना? जो सदा हर्षित नहीं रहते हैं वही वर्णन करेंगे कि यह हर्षितमुख हैं।
ऐसी मूर्त्त वा ऐसे कर्म प्रैक्टिकल में हैं?

✚ हिम्मते बच्चे मददे खुदा - इस राज को भूल जाते हैं। यह एक ड्रामा की गुह्य कर्मों की गति है। हिम्मते बच्चे मदद दे खुदा, अगर यह विधि विधान में नहीं होती तो सभी विश्व के पहले राजा बन जाते। एक ही समय पर सभी तख्त पर बैठेंगे क्या? नम्बरवार बनने का विधान इस विधि के कारण ही बनता है। नहीं तो, सभी बाप को उल्हना देवें कि ब्रह्मा को ही क्यों पहला नम्बर बनाया, हमें भी तो बना सकते? इसलिए यह ईश्वरीय विधान ड्रामा अनुसार बना हुआ है। निमित्त मात्र यह विधान नूँधा हुआ है कि एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम मदद का। मदद का सागर होते हुए भी यह विधान की विधि ड्रामा अनुसार नूँधी हुई है। तो जितना चाहे हिम्मत रखो और मदद लो। इसमें कभी नहीं रखते। चाहे एक वर्ष का बच्चा हो, चाहे 50 वर्ष का बच्चा हो, चाहे सरेण्डर हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हो - अधिकार समान है। लेकिन विधि से प्राप्ति है।

✚ एवररेडी जो होते हैं वह सदैव तैयार ही होते हैं। बुलावा हुआ और एक सेकेण्ड में अपना रहा हुआ सभी कुछ समेट भी सकते और जम्प भी दे सकते। प्रैक्टिकल में देखा भी ना कि ड्रामा के बुलावे पर कितना टाइम लगा? एक तरफ समेटना दूसरे तरफ हाई जम्प देना। यह दोनों सीन देखी - यह ड्रामा में किसलिए हुआ? सिखलाने के लिए। तो ऐसे एवररेडी बनना पड़ेगा। अभी एवररेडी की लाइन चालू हो गई है। इस लाईन के अन्दर किसका भी नम्बर आ सकता है। जो सभी के संकल्प में है वह कभी नहीं होना है। होगा फिर भी अनायास ही। यह ब्राह्मण कुल की रीति-रस्म चालू हो चुकी है। यह रीति-रस्म भी ड्रामा में क्यों बनी हुई है, उसका भी बहुत गुप्त रहस्य है। तो ऐसा पुरुषार्थ पहले से ही कर लो जो फौरन समेट भी सको और जम्प भी के सको। समेटने की शक्ति किसमें हो सकती है? जो सरल स्वभाव वाले होंगे उसमें समेटने की शक्ति सहज आ सकती है।

✚ वैसे तो बेगम बन गये अर्थात् यह देह रूपी घर भी अपना नहीं। बेगम हो गये ना। लेकिन बाप के सर्व खजानों के मालिक भी तो बन गये। स्वराज्य अधिकारी भी बन गये। ऐसा नशा वा खुशी रहती है? इसको ही कहा जाता है - 'बेगमपुर के बादशाह'। तो सभी बादशाह बैठे हो ना। बादशाही का हालचाल ठीक चल रहा है? सभी राज्य कारोबारी आपके आर्डर में चल रहे हैं? कोई भी आप बादशाहों को धोखा तो नहीं देता? जी हाजिर वा जी हजूर करने वाले सभी राज्य कारोबारी हैं? अपनी दरबार लगाते हो? राजाओं की तो दरबार लगती है - तो सभी दरबारी यथार्थ कार्य कर रहे हैं? खजानों से भण्डारे भरपूर हैं? इतने भण्डारे भरपूर हैं जो सदा महादानी बन दान करते रहो तो भी अखुट भण्डार हो। चेक करते हो? ब्रह्माकुमार तो बन ही गये, योगी तो बन ही गये, इस अलबेलेपन के नशे में चेकिंग तो नहीं भूल जाते हो? सदा अपने राज्य कारोबार की चेकिंग करो।

✚ आज अमृतवेले बापदादा सर्व ब्राह्मण कुल बच्चों में से उन विशेष आत्माओं को चुन रहे थे जो सदा सन्तुष्टता द्वारा स्वयं भी सदा सन्तुष्ट रहे हैं और औरों को भी सन्तुष्टता की अनुभूति अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति द्वारा सदा कराते आये हैं। तो आज ऐसी सन्तुष्टमणियों की माला पिरो रहे थे जो सदा संकल्प में, बोल में, संगठन के सम्बन्ध-सम्पर्क में, कर्म में सन्तुष्टता के गोल्डन पुष्प बापदादा द्वारा अपने ऊपर बरसाने का अनुभव करते और सर्व प्रति सन्तुष्टता के गोल्डन पुष्पों की वर्षा सदा करते रहते हैं। ऐसी सन्तुष्ट आत्मायें चारों ओर में से कोई-कोई नजर आई। माला बड़ी नहीं बनी, छोटी-सी माला बनी। बापदादा बारबार सन्तुष्टमणियों की माला को देख हर्षित हो रहे थे। क्योंकि ऐसी सन्तुष्टमणियाँ ही बापदादा के गले का हार बनती हैं, राज्य अधिकारी बनती हैं और भक्तों के सिमरण की माला बनती हैं।

✚ बड़े दिन वा खुशी के दिन पर विशेष सुहाग, भाग्य और बधाई की बिन्दी अर्थात् तिलक लगाते हैं। आप लोग भी विशेष याद की भट्ठी के दिन स्मृति की बिन्दी लगाते हो ना! क्यों लगाते हो? भट्ठी के दिन बिन्दी खास क्यों लगाते हो? दृढ़ संकल्प की निशानी बिन्दी लगाते हो कि आज का दिन सारा ही 'सहज योगी और श्रेष्ठ योगी' के स्वरूप में रहेंगे। तो आज भी जो थोड़ा सा कच्चा हो तो दृढ़ संकल्प द्वारा फुलस्टाप की बिन्दी लगाओ, दूसरी समर्थ स्वरूप की बिन्दी लगाओ। बिन्दी लगाने आती है? पाण्डवों को बिन्दी लगाने आती है? अच्छा, शक्तियों को बिन्दी लगाने आती है? अविनाशी बिन्दी। आज सुबह भी सभी ने क्या वायदा किया? समारोह मनाना है ना? (मैरेज समारोह मनाना है) अभी मैरेज की नहीं है क्या? बाल बच्चे पैदा नहीं किये हैं? मैरेज तो हो गई है लेकिन मैरेज का दिन मनाने आये हो। जिसकी मैरेज नहीं हुई है - वह हाथ उठाओ।

✚ थोड़े समय में जब अति और अन्त - दोनों ही अनुभव होगा तो चारों ओर अन्जान आत्मायें हृद के वैराग वृत्ति में आयेंगी और आप भाग्यवान आत्मायें बेहद के वैराग वृत्ति के अनुभव में होगी। अभी तो दुनिया वालों में भी वैराग नहीं है। अगर थोड़ी - बहुत रिहर्सल होती भी है तो और ही अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं कि यह तो होता ही रहता है। लेकिन जब 'अति' और 'अन्त' के नजारे सामने आयेंगे तो स्वतः ही हृद की वैराग वृत्ति उत्पन्न होगी और अति टेन्शन (तनाव) होने के कारण सभी का अटेन्शन (ध्यान) एक बाप तरफ जायेगा। उस समय सर्व आत्माओं की दिल से आवाज निकलेगी कि सब का रचयिता, सभी का बाप एक है और बुद्धि अनेक तरफ से निकल एक तरफ स्वतः ही जायेगी। ऐसे समय पर आप भाग्यवान आत्माओं के बेहद के वैराग वृत्ति की स्थिति स्वतः और निरन्तर हो जायेगी और हर एक के मस्तक से भाग्य की रेखायें स्पष्ट दिखाई देंगी।

✚ नया वर्ष बाप के साथ स्वीटहोम और स्वीट राजधानी में साथ रहने के वरदान प्राप्त करने का वर्ष है। क्योंकि अभी से सदा साथ रहेंगे। अभी का साथ रहना सदा साथ रहने का वरदान है।

नहीं तो बाराती बनेंगे और नजदीक वाले सम्बन्धी के बजाए दूर के सम्बन्धी बनेंगे। कभी-कभी मिलेंगे। कभी-कभी वाले तो नहीं हो ना? पहले जन्म में पहले राज्य का सुख और पहले नम्बर के राज्य अधिकारी विश्व महाराजा-विश्व महारानी के रायल सम्बन्ध, उसकी झलक और फलक न्यारी होगी! अगर दूसरे नम्बर विश्व महाराजा-महारानी की रायल फैमली में भी आ जाओ तो उसमें भी अन्तर है। एक जन्म का फर्क भी पड़ जायेगा। इसको भी साथ नहीं कहेंगे। कोई भी नई चीज़ एक बार भी यूज कर लो तो उसको यूज किया हुआ कहेंगे ना। नया तो नहीं कहेंगे। साथ चलना है, साथ आना है, साथ में पहले जन्म का राज्य भाग्य रायल फैमली बन करना है। इसको कहते हैं - 'समान बनना'।

✚ जो कहते हैं हम सदा उमंग-उत्साह में रहते भी हैं और दूसरे को भी उमंग-उत्साह दिलाते हैं वह हाथ उठाओ। कभी कभी नहीं सदा। सदा शब्द को अण्डरलाइन करते हो ना! लेकिन आपका यादगार जो भी आपकी स्थिति रही है उसका यादगार आपके भक्त उत्सव के रूप में मनाते हैं। आपने प्रभु के संग का रंग लगाया तो वह भी रंग लगाते हैं लेकिन बॉडीकान्सेस हैं ना तो स्थूल रंग लगा देते हैं। जिस रंग में खर्चा भी बहुत और फिर रिजल्ट भी कुछ अच्छी कुछ नहीं अच्छी ऐसे मनाते हैं। लेकिन आपके उत्साह का यादगार उत्सव जरूर मनाया है। आप परमात्मा का बनने के लिए पहले अपने पुराने संस्कारों को जलाते हो और फिर प्रभु के संग का रंग लगाने से सदा मनाते रहते हो। वह भी पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं लेकिन आपका मनाना और उन्हीं के मनाने में रात दिन का अन्तर है। वह बॉडीकान्सेस आप आत्म अभिमानी। वह देह भान में आप आत्मिक भान में।

✚ सदा नज़र चमकते हुए सितारे की तरफ जाये। जब ऐसी रूहानी नज़र सदा नैचुरल रूप में हो जायेगी तब विश्व की नज़र आप चमकते हुए धरती के सितारों पर जायेगी। अभी विश्व की आत्मायें ढूँढ रही हैं। कोई शक्ति कार्य कर रही है, ऐसी महसूसता, ऐसी टाचिंग अभी आने लगी है। लेकिन कहाँ है, कौन है, यह ढूँढते हुए भी जान नहीं सकते। भारत द्वारा ही आध्यात्मिक लाइट मिलेगी, यह भी धीरे-धीरे स्पष्ट होता जा रहा है। इस कारण विश्व की चारों तरफ से नज़र

हटकर भारत की तरफ हो गई है लेकिन, भारत में किस तरफ और कौन आध्यात्मिक लाइट देने के निमित्त हैं, अभी यह स्पष्ट होना है। सभी के अन्दर अभी यह खोज है कि भारत में अनेक आध्यात्मिक आत्मायें कहलाने वाली हैं, आखिर भी इनमें धर्मात्मा कौन और परमात्मा कौन है? यह तो नहीं है, यह तो नहीं है - इसी सोच में लगे हुए हैं। “यही है” इसी फैसले पर अभी तक पहुँच नहीं पाये हैं।

✚ विनाश की चिनगारी कहाँ से निकली? यूरोप से निकली ना! तो जैसे विनाश का साधन यूरोप से निकला तो स्थापना के कार्य में विशेष यूरोप से आत्मायें प्रख्यात होनी ही है। जैसे पहले बाम्बस अन्डरग्राउण्ड बने, पीछे कार्य में लाये गये। ऐसे ऐसी आत्मायें भी तैयार हो रही हैं, अभी गुप्त है, अन्डरग्राउण्ड हैं लेकिन प्रख्यात हो भी रही हैं और होती भी रहेगी। जैसे हर देश की अपनी- अपनी विशेषता होती है ना तो यहाँ भी हर स्थान की अपनी विशेषता है। नाम बाला करने के लिए यूरोप का यन्त्र काम में आयेगा। जैसे साइन्स के यन्त्र कार्य में आये, ऐसे आवाज बुलन्द करने के लिए यूरोप से यन्त्र निमित्त बनेंगे। नई विश्व तैयार करने के लिए यूरोप ही आपका मददगार बनेगा। यूरोप की चीज़ सदा मजबूत होती है। जर्मनी की चीज़ को सब महत्त्व देते हैं। तो ऐसे ही सेवा के निमित्त महत्त्व वाली आत्मायें प्रत्यक्ष होती रहेंगी।

✚ आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी, फुल स्टॉप। स्टॉप भी नहीं, फुल स्टॉप। इसको कहा जाता है होली। और इस होली से सदा बाप के संग के रंग की होली, मिलन होली मनाते रहेंगे। सबसे पक्का रंग कौन सा है? यह स्थूल रंग भल कितने भी पक्के हों लेकिन सबसे श्रेष्ठ और सबसे पक्का रंग है बाप के संग का रंग। तो इस रंग से मनाओ। आपका यादगार गोप गोपियों के होली मनाने का है। उस चित्र में क्या दिखाते हैं? बाप और आप दोनों संग संग होली खेलते हैं। एक-एक गोप वा गोपी के साथ गोपी वल्लभ दिखाते हैं। तो यह संग हो गया ना! साथ वा संग अविनाशी होली है बाप के संग के रंग की यादगार होली रास के साथ के रूप में दिखाई है। तो होली मनाने आती है ना? यह हो गया, क्या करूँ, चाहते नहीं है लेकिन हो

जाता है... आज से इसकी होली जलाओ, समाप्त करो। मास्टर सर्वशक्तिवान कभी संकल्प में भी यह सोच नहीं सकते।

✚ सदा शस्त्रधारी बन माया का सामना करते चल रहे हो? जो शस्त्रधारी होते हैं वह सदा निर्भय होते हैं। किससे? दुश्मन से। जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि - मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो यहाँ भी माया कितना भी सामना करे लेकिन शस्त्रधारी हैं तो माया से कभी घबड़ायेंगे नहीं, डरेंगे नहीं, हार नहीं खायेंगे, अर्थात् सदा विजयी होंगे। तो सर्व शस्त्र सदा कायम रहते हैं? एक भी कम हुआ तो हार हो सकती है। शस्त्र है शक्तियाँ, तो सर्व शक्तियाँ रूपी शस्त्र सदा कायम रहते हैं? संभालने आते हैं? पाण्डवों की बहादुरी को बहुत लम्बे चौड़े रूप में दिखा दिया है - शक्तियों की बहादुरी शस्त्र दिखाये हैं। पाण्डव सदा प्रभु के साथी थे और साथ के कारण विजयी हुए। आपको भी सदा बाप के साथ का अनुभव होता है?

✚ मैसेन्जर बन के मैसेज देने का पार्ट तो बजाया। लेकिन अभी क्या बनना है? शक्तियों को सदैव किस रूप में याद करते हैं? सब शक्ति सेना हो ना! शक्तियों को हमेशा 'माँ' के रूप में याद करते हैं, पालना लेने के संकल्प से याद करते हैं। मैसेज तो बहुत दिया और अभी और भी देने वाले तैयार हो गये, अभी चाहिए पालना वाले। जो विशेष निमित्त हैं उन्हीं का कार्य अभी हर सेकण्ड बाप की पालना में रहना और सर्व को बाप की पालना देना। जैसे छोटे बच्चे होते हैं तो सदा पालना में रहने के कारण कितने खुश रहते हैं। कुछ भी हो लेकिन पालना के नीचे होने के कारण कितने खुश रहते हैं। ऐसे आप सभी सर्व आत्माओं को प्रभु पालना के अन्दर चलने का अनुभव कराओ। वह समझें कि हम प्रभु की पालना के अन्दर चल रहे हैं। यह हमें प्रभु के पालना की दृष्टि दे रहे हैं। तो अभी पालना की आवश्यकता है। तो पालना करने वाले हो या मैसेन्जर हो?

✚ सदैव यह सोचो अनेक कल्प की विजयी आत्मा मैं हूँ। विजय की खुशी, विजय का नशा शक्तिशाली बना देगा। विजय आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए सदा साथी बन बंधी हुई है और कहाँ जायेगी? सिवाए पाण्डवों के, विजय ने किस को साथ दिया? वही पाण्डव हो ना! जब बाप साथी है तो विजय भी आपकी साथी है। सदा अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगा हुआ ही है यह देखो। जो प्रभु के गले का हार बन गये, उनकी हार कभी हो नहीं सकती। सम्पूर्ण विजयी के रूप में अपना यादगार विजय माला देख रहे हो ना? ऐसे तो गायन नहीं है ना - विजय और हार माला है! नहीं, विजय माला है। विजयी मणके तो आप हो ना! तो विजयी माला के मणके कभी हार नहीं खा सकते। हर एक ने जो संकल्प किया बाप-दादा ने सारी सीन देखी। अच्छे उमंग-उत्साह से, खुशी-खुशी से प्रतिज्ञा ली है। और आप चैतन्य सालिग्रामों ने प्रतिज्ञा ली है इस-लिए तो भक्त भी उसका यादगारा मनाते रहते हैं।

✚ बाप को इच्छा होती है? वह तो इच्छा से न्यारा इच्छा रहित है। फिर भी इच्छा क्यों? आप सभी इच्छा रहित बने तो बाप को इच्छा हुई। आप बच्चे जानते नहीं हो कि बाप किसी को कैसे सम्भालते थे? और सम्भाल भी रहे हैं। इतनी जवाबदारी कैसे रमज़ से सम्भाल कर बाप की भी इच्छा पूरी की तो अब बच्चों की अभी कर रहे हैं। इसको ही राझू-रमज़बाज कहा जाता है। बाप को तो हर एक बच्चे की इच्छा रखनी पड़ती है। रखकर फिर भी कहीं पर अपनी चलानी होती है। बच्चे की क्यों रखता है? बच्चे सभी नयनों के नूर हैं। इसलिए ही पहले बच्चे फिर बाप। सिरमौर को कभी सिर पर भी बिठाना पड़ता है। बच्चों को खुशी दिलानी होती है। पुरुषार्थ करते-करते ठण्डे पड़ जाते हो तो फिर पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने की कोशिश करो। तब प्रश्न पूछ रहे हैं कि कंगन पूरा बंधा हुआ है? धरत पड़े, पर धर्म न छोड़िये। आज के दिन तो विरोधी भी दुश्मन से दोस्त बन जाते हैं।

✚ मस्जिद में अल्लाह का नाम चिल्लाते हैं, चर्च में गॉड का... मन्दिरों में आओ, आओ कहते हैं लेकिन अब ऐसा समय आयेगा जो सभी मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च आदि से सबसे

मिलकर एक ही आवाज होगी कि “हमारा बाबा आ गया है।” फिर आप फरिश्तों को ढूँढेंगे कि कहाँ गये वह। चारों ओर फरिश्ते ही फरिश्ते उन्हों को नज़र आयेंगे। सारे वर्ल्ड में फरिश्ते छा जायेंगे। जैसे बादल छाये हुए होते हैं और सबकी नज़र पर आप एन्जिल और बाप की तरफ होगी। तो ऐसी स्टेज पर पहुँच गये हो - जो साक्षात्कार कराओ फरिश्ते का! अभी अगर थोड़ा-थोड़ा हिलते भी हो तो समय आने पर यह सब खत्म हो जायेगा। क्योंकि कल्प-कल्प के निश्चित फरिश्ते तो आप ही हो ना। आप के सिवाए और कौन हैं तो यह जो थोड़ा-थोड़ा हिलने का पार्ट वा खेल दिखाते हो यह सब समाप्त जल्दी हो जायेगा। फिर सभी के मुख से यही आवाज निकलेगी कि माया चली गई और हम मायाजीत बन गये।

✚ जैसे कोई बहुत पावरफुल चीज़ होती है तो दूसरी चीज़ों का इफेक्ट उसके ऊपर नहीं होता है। यहाँ भी अगर स्थूल स्टेज पर अपनी सूक्ष्म पावरफुल स्टेज है; तो दूसरे भले कितना भी पावरफुल बोलें लेकिन वायुमण्डल में उनका प्रभाव नहीं पड़ सकता। जैसे यादगार रूप में दिखाते हैं - स्थूल युद्ध का रूप, एक तरफ तीर आया और रास्ते में उसको कट दिया। तीर निकला और वहाँ ही खत्म कर दिया। यह वृत्ति से ही वायुमण्डल को पावरफुल बना सकते हो। अभी कहाँ-कहाँ अपनी स्टेज की कमी होने के कारण अपनी स्टेज पर अन्य आत्माओं का प्रभाव वायुमण्डल पर पड़ता है, क्यों? कारण क्या है? वृत्ति द्वारा आत्माओं को रूहानियत का घेराव नहीं डाल सकते हो। जैसे कोई भी आत्मा को पकड़ना होता है तो घेराव ऐसा डालते हैं जो निकल ही नहीं सकें। वृत्ति द्वारा रूहानियत का घेराव वायुमण्डल में डालने से कोई भी आत्मा रूहानी आकर्षण से बाहर नहीं निकल सकती।

✚ जबकि दुनिया वालों को सन्देश देते हो कि अब बहुत थोड़ा समय रह गया है, तो क्या यह थोड़ा-सा समय युद्ध करने की स्टेज वा युद्ध करने वाली चन्द्रवंशी स्टेज समाप्त कर सूर्यवंशी स्टेज नहीं बना सकते हो? सूर्यवंशी अर्थात् ज्ञान-सूर्य की स्टेज। सूर्य का कर्तव्य क्या होता है? सूर्य तो सभी को भस्म कर देता है। सूर्यवंशी स्टेज अर्थात् सर्व विकारों को भस्म कर सदा विजयी बनने की स्टेज। तो अब अपनी कौनसी स्टेज समझते हो? सूर्यवंशी हो वा चन्द्रवंशी

हो? अगर युद्ध करने में समय देना पड़ता है तो चन्द्रवंशी स्टेज कहेंगे। अब तक अपने आप प्रति ही समय देते रहेंगे तो बाप के मददगार बन प्रैक्टिकल में मास्टर विश्व-कल्याणकारी बनकर विश्व के कल्याण प्रति सारा समय कब देंगे? लास्ट स्टेज कौनसी है? विश्व-कल्याणकारी की है ना। अब यह प्रयत्न करो -- दिन-रात संकल्प, सेकेण्ड विश्व के कर्तव्य में वा सेवा में जाये।

✚ विदेशी कर्मातीत अवस्था को पाने वाले उमंग-उत्साह वाले हैं ना! तो डबल विदेशी बच्चों को ब्रह्मा बाप विशेष सूक्ष्म पालना दे रहे हैं। यह प्यार की पालना है, शिक्षा सावधानी नहीं। समझा! प्यार की पालना है। क्योंकि ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को विशेष आह्वान से पैदा किया। ब्रह्मा के संकल्प से आप पैदा हुए हो। कहते हैं ना - ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। ब्रह्मा के संकल्प से यह ब्राह्मणों की इतनी सृष्टि रच गई ना। तो ब्रह्मा के संकल्प से, आह्वान से रची हुई विशेष आत्मार्ये हो। लाडले हो गये ना। ब्रह्मा बाप समझते हैं कि यह फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट आने के उमंग-उत्साह वाले हैं। विदेशी बच्चों की विशेषताओं से विशेष श्रृंगार करने की बातें चल रही हैं। प्रश्न भी करेंगे, फिर भी समझेंगे भी जल्दी, विशेष समझदार हो। इसलिए बाप अपने समान सब बंधनों से न्यारे और प्यारे बनने के लिए इशारा दे रहे हैं।

✚ बाप आते ही तब है जब सब बच्चे बिल्कुल खाली हो जाते हैं। न तन की शक्ति, न मन की, न धन की। तन की शक्ति से खाली इसका यादगार शिव की बरात कैसी दिखाई है? और मन की शक्ति की समाप्ति की निशानी-"सदा की पुकार" की यादगार है। रोज पुकारते रहते हैं ना! धन से खाली की निशानी - अभी देखों जो थोड़ा बहुत सोना भी रहा है, उसके ऊपर भी सदा गवर्मेन्ट की आँख है। डर-डर के पहनते हैं। अगर धन है भी तो नाम क्या है? "काला धन"। जितना बड़ा धनवान नाम का, उतना 90 ब्लैकमनी होगी। तो नाम का धन रहा या काम का? तो जब सब तरफ से खाली हो जाते हो, सिर्फ सुदामे के सुखे चावल रह जाते हैं तब बाप आते हैं। तो सूखे चावल खाने से तो नुकसान हो जायेगा। सिर्फ चावल देते हो, वह भी सूखे और

लेते क्या हो? सर्वगुण, सर्व-शक्तियाँ, सर्व खजाने। 36 प्रकार से भी ज्यादा वैरायटी, तो लेना हुआ या देना हुआ? सूखे चावल भी मिट्टी वाले लाते हो।

✚ अपने जीवन से, कर्तव्य से, बाप का परिचय कराओ। इतनी हिम्मत है ना। कुमारियाँ क्या समझती हैं? जब दुर्गा की पूजा करते हैं तो अपने को भाग्यवान समझते हैं। यहाँ कितनी दुर्गायें हैं! एक-एक शिव शक्ति कमाल कर दिखाने वाली है ना। वो ही हो ना, जिन शक्तियों की घर-घर में पूजा कर रहे हैं। तो हे शिव शक्तियाँ! अपने भक्तों को फल तो दो। वो बेचारे फल चढ़ाते-चढ़ाते थक गये हैं। इतने जो फल चढ़ाये हैं उसका रिटर्न भक्ति का फल तो उन्हीं को देंगी ना! भक्तों पर तरस नहीं आता। पाण्डवों की भी पूजा हो रही है। आजकल एक महावीर हनुमान की बहुत पूजा होती है और दूसरा विघ्न विनाशक गणेश की पूजा हो रही है। सब शक्ति की इच्छा से ही भक्ति कर रहे हैं। ऐसे भक्त आत्माओं को सर्व शक्तियों का फल दो। सदा के लिए विघ्नों से पार करने का सहज रास्ता बताओ। सभी पुकार से छुड़ाए प्राप्ति स्वरूप बनाओ - ऐसी सेवा युवा वर्ग करके दिखाओ।

✚ अभी विदेश में भी जो निमित्त दादी गई है लेकिन किस लिए गई है? सर्व धर्म वालों को अपने पूर्वज की नज़र से देखेंगी। भासना आएगी, वायब्रेशन आयेगी कि यह आत्माएं हमारे सम्बन्धी हैं। हमारे हैं। लेकिन कैसे हैं, वह जब सम्पर्क में आयेंगे तो समझ सकेंगे। लेकिन वायब्रेशन जरूर आयेगा। हर स्थान पर ऊँची नज़र से ऊँच आत्माओं की भावना से वायब्रेशन द्वारा, दृष्टि द्वारा कुछ प्राप्त हो जाए, इस भावना से देखेंगे। जैसे बादलों के बीच छिपा हुआ चाँद आकर्षित कर रहा है। ऐसे बहुत श्रेष्ठ वस्तु वा श्रेष्ठ व्यक्ति हैं ऐसे अनुभव करेंगे। लेकिन नॉलेज न होने के कारण बादलों के बीच में अभी अनुभव करेंगे। बादलों के बीच थोड़ी किरणें थोड़ी शीतलता नज़र आयेगी और आकर्षण होंगे स्पष्ट पाने लिए। तो पूर्वजों की प्रत्यक्षता की सेवा अर्थ निमित्त बन रहे हैं - कोई साकार में कोई आकार में। लेकिन सदा एक दो के सहयोगी हैं - ऐसा है ना?

✚ जब है ही कागज़, पेपर ही तो है, चाहे डालर कहो, चाहे पौण्ड कहो, है तो पेपर ही, तो पेपर कहाँ तक चलेगा! सोने का मूल्य है, हीरे का मूल्य है, पेपर का क्या है? मनी डाउन तो होनी ही है। और आपकी मनी सबसे ज्यादा मूल्यवान है। जैसे शुरू में अखबार में डलवाया था ना कि ओम् मण्डली-रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। कमाई का साधन कुछ नहीं था। ब्रह्मा बाप के साथ एक-दो समर्पण हुए और अखबार में डाला रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। तो अभी भी जब चारों ओर ये स्थूल हलचल होगी फिर आपको अखबार में नहीं डालना पड़ेगा। आपके पास अखबार वाले आयेंगे और खुद ही डालेंगे, टी.वी. में दिखायेंगे कि ब्रह्माकुमारीज़ रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड। क्योंकि आपके चेहरे चमकते रहेंगे, कुछ भी हो जाये। दिन में खाने की रोटी भी नहीं मिले तो भी आपके चेहरे चमकते रहेंगे। तो चारों ओर होगा दुःख और आप खुशी में नाचते रहेंगे। इसी को ही कहते हैं मिरूआ मौत मलू का शिकार।

✚ लक्ष्य तो सभी का फर्स्ट का है ना? लास्ट में भी अगर आये तो क्या हर्जा, ऐसा लक्ष्य तो नहीं है ना? अगर यह लक्ष्य भी रखते हैं कि जितना मिला उतना ही अच्छा तो उसको क्या कहा जायेगा? ऐसी निर्बल आत्मा का टाइटल कौन-सा होगा? ऐसी आत्माओं का शात्रं में भी गायन है। एक तो टाइटल बताओ कौन-सा है, दूसरा बताओ उनका गायन कौन-सा है? ऐसी आत्माओं का गायन है कि जब भगवान् ने भाग्य बाँटा तो वे सोये हुए थे। अलबेलापन भी आधी नींद है। जो अलबेलेपन में रहते हैं, वह भी नींद में सोने की स्टेज है। अगर अलबेले हो गये तो भी कहेंगे कि सोये हुए थे? ऐसे का टाइटल क्या होगा? ऐसे को कहा जाता है - 'आये हुए भाग्य को ठोकर लगाने वाले'। भाग्यविधाता के बच्चे भी बने अर्थात् अधिकारी भी बने, भाग्य सामने आया अर्थात् बाप भाग्यविधाता सामने आया। सामने आये हुए भाग्य को बनाने की बजाय ठोकर मार दी तो ऐसे को क्या कहेंगे?-'भाग्यहीन'।

✚ ऐसा ताजाधारी बाप बनाते हैं जो जन्म-जन्म ताज मिलता रहे। ऐसे ताजधारी बच्चों को देख बापदादा तो हर्षित होते हैं। बापदादा ने ताजपोशी का दिन अभी से ही मना करके सदा की

रसम का नियम बना दिया है। सतयुग में भी ताजपोशी दिवस मनाया जायेगा। जो संगम पर ताजपोशी दिवस मनाया उसी का ही यादगार अविनाशी चलता रहेगा। स्वयं बाप साकार वतन से वानप्रस्थ हुए ना! अव्यक्त वतन में सेवाधारी हैं लेकिन साकार वतन से नो वानप्रस्थ हुए ना! साकार वतन से वानप्रस्थ हो बच्चों को ताज तख्त दे और स्वयं अव्यक्त वतन में चले। तो ताजपोशी का दिन हो गया ना! विचित्र ड्रामा है ना। अगर जाने के पहले बताते तो वण्डरफुल ड्रामा नहीं होता। ऐसा विचित्र ड्रामा है जिसका चित्र नहीं खींचा जा सकता। विचित्र बाप का विचित्र पार्ट है। जिसका चित्र बुद्धि में संकल्प द्वारा भी नहीं खींच सकते, इसको कहते हैं - 'विचित्र'। इसलिए विचित्र ताजपोशी हुई।

✚ जिसको कोई पसन्द नहीं करते उसको बाप पसन्द करते हैं! बाप की नज़र किसके ऊपर गई? आप लोगों के ऊपर। इतने नामीग्रामी लोगों पर नज़र नहीं गई। कहते हैं ना-तुम्हारी गत-मत तुम ही जानो, और कोई नहीं जानता। तो नशा है कि परमात्मा ने हमको पसन्द किया है। डबल विदेशी डबल नशे में रहते हैं। भारतवासियों को तो भारत में ही आकर चुना। लेकिन डबल विदेशियों को कहाँ से चुना? इतना दूर से बाप ने हमको चुना। तो डबल नशा है ना। जैसे आत्मा और शरीर साथ-साथ हैं और सदा साथ हैं, ऐसे यह नशा आत्मा के सदा साथ है। तो ऐसे नशे में रहने वाली श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्माएँ! सदा खुशी में नाचने वाले। कोई प्राप्ति होती है तो खुशी में नाचते हैं। आपको तो हर कदम में प्राप्ति ही प्राप्ति है। इतनी प्राप्ति है जो दिल कहता है कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु परमात्म-खज़ाने में। इस समय का यही गीत है-ब्राह्मणों के खज़ानों में सर्व प्राप्तियाँ हैं।

✚ परिवार की भी चिन्ता तो नहीं है? हरेक आत्मा अपना हिसाब किताब चुक्तु भी कर रही है और बना भी रही है इसमें हम क्या चिन्ता करें! कोई चिन्ता नहीं। पहले चिता पर जल रहे थे अभी बाप ने अमृत डाल जलती चिता से मरजीवा बना दिया। जिन्दा कर दिया। जैसे कहते हैं मरे हुए को जिन्दा कर दिया। तो बाप ने अमृत पिलाया और अमर बना दिया। मरे हुए मुर्दे के समान थे और अब देखो क्या बन गये। मुर्दे से महान बन गये। पहले कोई जान नहीं थी तो मुर्दे समान ही कहेंगे

ना। भाषा भी क्या बोलते थे, अज्ञानी लोग भाषा में बोलते हैं - मर जाओ ना। या कहेंगे हम मर जाए तो बहुत अच्छा। अब तो मरजीवा हो गये, विशेष आत्मायें बन गये। यही खुशी है ना। जलती हुई चिता से अमर हो गये, यह कोई कम बात है! पहले सुनते थे भगवान मुर्दे को भी जिन्दा करता है, लेकिन कैसे करता यह नहीं समझते थे। अभी समझते हो हम ही जिन्दा हो गये तो सदा नशे और खुशी में रहो।

✚ कल्प-कल्प के सफलता के अधिकारी विशेष आत्मायें हो। इसलिए सफलता जन्म सिद्ध अधिकार, हर कल्प का है। इसी निश्चय, नशे में सदा उड़ते चलो। सभी बच्चे याद और प्यार की मालायें हर रोज बड़े स्नेह की विधि पूर्वक बाप को पहुँचाते हैं। इसी की कापी भक्त लोक भी रोज माला जरूर पहनाते हैं। जो सच्ची लगन में मगन रहने वाले बच्चे हैं वह अमृतवेले बहुत बढ़िया स्नेह के श्रेष्ठ संकल्पों के रत्नों की मालायें, रूहानी गुलाब की मालायें रोज बापदादा को अवश्य पहनाते हैं, तो सभी बच्चों की मालाओं से बापदादा श्रृंगारे होते हैं। जैसे भक्त लोग भी पहला कार्य अपने ईष्ट को माला से सजाने का करते हैं। पुष्प अर्पण करते हैं। ऐसे ज्ञानी तू आत्मायें स्नेही बच्चे भी बापदादा को अपने उमंग उत्साह के पुष्प अर्पण करते हैं। ऐसे स्नेही बच्चों को स्नेह के रिटर्न में बापदादा पद्मगुणा स्नेह की, वरदानों की, शक्तियों की मालायें डाल रहे हैं।

✚ शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनैलिटी में रह सकता है, विश्व के आगे विशेष पर्सनैलिटी वाले बन सकते हैं। आजकल पर्सनैलिटी वाली आत्मायें सिर्फ नामीग्रामी बनती हैं अर्थात् नाम बुलन्द होता है लेकिन आप रूहानी पर्सनैलिटी वाले सिर्फ नामीग्रामी अर्थात् गायन-योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजनीय योग्य भी बनते हो। कितने भी बड़े धर्म-क्षेत्र में, राज्य-क्षेत्र में, साइंस के क्षेत्र में पर्सनैलिटी वाले प्रसिद्ध हुए हैं लेकिन आप रूहानी पर्सनैलिटी समान 63 जन्म पूजनीय नहीं बने हैं। इसलिये यह शुभ-चिन्तक बनने की विशेषता है। सर्व को जो प्राप्ति होती है - खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की - यह प्राप्ति की दुआयें,

आशीर्वादों को किसको अधिकारी बच्चे बना देती हैं और कोई भक्त आत्मा बन जाते हैं। इसलिये अनेक जन्म के पूज्य बन जाते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् बहुतकाल की पूज्य आत्माएं।

✚ दीपमाला आप सबकी तीन विशेषताओं का यादगार है। एक है समीपता- समीपता में स्नेह समाया हुआ है। अगर माला में स्नेह का, समीपता का आधार न हो तो माला नहीं बन सकती। मणका मणके से वा दीपकदीपक से जब स्नेह से समीप आता है तब ही माला कहलाई जाती है। स्नेह अर्थात् 'समीपता'। स्नेह की निशानी समीपता ही होती है। एक समीपता। दूसरी - सम्पन्नता। दीपमाला सम्पन्नता की निशानी है। सिर्फ एक लक्ष्मी धन की देवी नहीं है लेकिन आप सभी धन से सम्पन्न देवियाँ हो। धन देवी होने के कारण धन्य देवी भी गाये जाते हैं। तो धन देवी-धन्य देवी यह सम्पन्नता की निशानी है। तीसरी बात सम्पूर्णता। सम्पूर्णता अर्थात् सदा जगे हुए दीपक। बुझे हुए दीपकों की दीपमाला नहीं कही जाती। जगे हुए दीपक की दीपमाला कही जाती। तो सदा एक रस जगे हुए दीपकों की निशानी - सम्पूर्णता है। तो दीपमाला समीपता, सम्पन्नता और सम्पूर्णता की विशेषताओं का यादगार है।

✚ इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। उसके अन्दर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है जिस स्नेह के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं। इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता। चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है। उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आप के चरणों में गिरेंगे। स्नेह की एक बूँद की प्यासी हो चरणों में गिरेंगे। आप लोगों ने स्नेह के सागर को अपने में समाया है। वह एक बूँद के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा सौभाग्य किसका हो सकता है? सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊँच भाग्य को सदैव सामने रखना। सामने रखने से रिटर्न देना आप ही याद आयेगा।

✚ बापदादा भी रोज अमृतवेले अपने माला के मणकों को देखते और विशेष मिलन मनाते हैं। तो आप सभी अपने को माला के मणकों में समझते हो। है तो दूसरी माला भी 16 हजार की लेकिन फिर भी सेकण्ड माला हो गई। विशेष माला जो गायन और पूज्यनीय योग्य बनती है वह पहली माला है। तो आज बापदादा उन मणकों को देख रहे थे क्योंकि ब्रह्मा बाप के साथ विशेष राज्य अधिकारी साथी वही बनते हैं। तो आज ब्रह्मा बाप अपने अब के तीव्र पुरुषार्थी और भविष्य के राज्य अधिकारी तख्त पर तो दो ही बैठते हैं लेकिन राज्य के साथी उन्हीं की पहली माला है। तो अपने को चेक किया है। बापदादा के साथ तो चलेंगे क्योंकि अभी आप सबकी रिटर्न जरनी है। जब जाना ही है बाप के साथ जाना है अकेला नहीं जाना है। तो साथ जाने वाले नजदीक के मणके कौन होंगे? जो बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी होंगे। पुरुषार्थी नहीं कब-कब वाले नहीं। बहुतकाल के बाप समान ही राज्य अधिकारी बनेंगे।

✚ ऐसा समय अभी आयेगा जो सभी भिखारी रूप में आप लोगों से यह भीख माँगेंगे। तो उन्हीं को नहीं देंगे? इतना जमा करना पड़ेगा ना। जो आज अपने को भरपूर समझते हैं वह भी भिखारी के रूप में आप सभी से भीख माँगेंगे। तो भीख कैसे दे सकेंगे? जब जमा होगा ना। दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे। आप सभी के एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे रहेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रख पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आयी हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये। साकार में क्या करके दिखाया? कोई भी आत्मा असन्तुष्ट होकर न जाये। भल कैसी भी आत्मा हो लेकिन सन्तुष्ट होकर जाये। तो ऐसी बातें सोचनी चाहिए। सिर्फ अपने लिए नहीं। अभी आप रचयिता हो। आप के एक-एक रचना के पीछे फिर रचना भी है। माँ-बाप को जब तक बच्चे नहीं होते हैं, माँ-बाप की कमाई अपने प्रति ही होती है। जब रचना होती है तो फिर रचना का भी पूरा ध्यान रखना पड़ता है।

✚ साक्षात्कार मूर्त वह बन सकेंगे जो सदैव साक्षी की स्थिति में स्थित होंगे। उनके नयन प्रोजेक्टर का काम करेंगे। उनका मस्तक सदैव चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा। होली के बाद सांग बनाते

हैं ना। देवताओं को सजाकर मस्तक में बल्ब जलाते हैं। यह सांग क्यों बनाते हैं? यह किस समय का प्रैक्टिकल रूप है? इस समय का। जो फिर आपके यादगार बनाते आते हैं। तो एक-एक के मस्तक में लाइट देखने में आये। विनाश के समय भी यह लाइट रूप आपको बहुत मदद देगी। कोई किस भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेंगे। वह इस देह को न देख आपके चमकते हुए इस बल्ब को देखेंगे। जो बहुत तेज़ लाइट होती है और उसको जब देखने लगते हैं तो दूसरी सारी चीज़ छिप जाती है। वैसे ही जितनी-जितनी आप सभी की लाइट तेज़ होगी उतना ही उन्हीं को आपकी देह देखते हुए भी नहीं देखने आएगी। जब देह को देखेंगे ही नहीं तो तमोगुणी दृष्टि और वृत्ति स्वतः ही ख़त्म हो जाएगी। यह परीक्षाएं आनी हैं।

✚ जैसे जिस्मानी मिलिट्री वाले एक सेकेण्ड में अगर निशाना नहीं बना सकते तो हार खा लेते, निशाना ठीक होता है तो विजयी बन जाते हैं। ऐसे अपनी बुद्धि को इस निशाने पर एक सेकेण्ड में ठीक टिका सकते हो? ऐसे एवररेडी बने हो कि मेहनत करने बाद निशाने पर स्थित हो सकते हो? ऐसे प्रयत्न करते-करते विजय का सेकेण्ड तो बीत जायेगा, फिर विजय माला के मणके कैसे बन सकेंगे? इसलिए जैसे निरन्तर याद में रहना है वैसे निरन्तर विजयी बनो। ऐसी चेकिंग करो कि आज सारे दिन में संकल्प, वचन, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, स्नेह, सहयोग और सेवा में विजयी कहाँ तक बने? अगर बहुत समय से सदा के विजयी, हर कदम के विजयी, हर संकल्प के विजयी रहेंगे तब ही विजय माला में समीप के मणके बन सकेंगे। इतनी सर्विस के बाद भी 108 ही विजयी क्यों बने? कैसे बने? इस पुरुषार्थ से ऐसे श्रेष्ठ बने। तो बहुत समय से सदा के विजयी बनेंगे तभी बहुत समय से यादगार बना सकेंगे।

✚ आज के दिन ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रूप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसलिए इस दिवस को बच्चों के प्रत्यक्षता का दिन कहा जाता है, समर्थ दिवस कहा जाता है, विल पावर देने का दिवस कहा जाता है। ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। यह अव्यक्ति दिवस बच्चों के

कार्य को तीव्र गति में लाने का दिवस है। अभी भी हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं। जैसे माँ बच्चों के लिए छत्रछाया होती है ऐसे ही अमृतवेले से लेकर ब्रह्मा माँ चारों तरफ के बच्चों की रेख-देख करते रहते हैं। साकार में निमित्त बच्चे हैं लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति, हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।

✚ आजकल की जो भी अल्पसुख भोगने वाली आत्मायें प्रकृति दासी के शो में दिखाई देती हैं, उन्हीं के शो को देखकर स्थिति क्या रहती है? यह आत्मायें इस तरीके वा इस रीति-रस्म में प्रकृति दासी के रूप में स्टेज पर प्रख्यात हुई हैं, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए वा हमें भी इन्हीं के प्रमाण अपने में परिवर्तन करना चाहिए - यह संकल्प भी अगर आया तो उनको क्या कहेंगे? क्या दाता के बच्चे भिखारियों की कॉपी करते? आप के आगे कितने भी पाप्म शो में आने वाली आत्माएं हों लेकिन होवनहार प्रत्यक्ष रूप के भिखारी हैं। इन सभी आत्माओं ने बापदादा के बच्चों से थोड़ी-बहुत शक्ति की बूंदों को धारण किया है। आप लोगों के शक्ति की अंचली लेने से आजकल इस अंचली के फल, प्रकृति दासी के फलरूप में देख रहे हैं। लेकिन अंचली लेने वाले को देख सागर के बच्चे क्या हो जाते हैं? प्रभावित। यह सभी थोड़े समय में ही आप लोगों के चरणों में झुकने लिए तड़पेंगे।

✚ पाण्डवों का चित्र भी ग्वालों के रूप में दिखाते हैं। सदा ग्वालबाल साथ रहते थे। चैतन्य अपना जड़ यादगार देख रहे हैं - यह वन्दरफुल बात है ना। शक्तियों का या गोपिकाओं का यादगार है, 'खुशी में नाचना।' पांव में घुंघरू डालकर नाचते हुए दिखाते हैं। जो सदा खुशी में रहते उनके लिए कहते - खुशी में नाच रहा है। नाचते हैं तो पांव ऊपर रखते हैं। ऐसे ही जो खुशी में नाचने वाले होंगे उनकी बुद्धि ऊपर रहेगी। देह की दुनिया व देहधारियों में नहीं, लेकिन आत्माओं की दुनिया में, आत्मिक स्थिति में होंगे। ऐसे खुशी में नाचते रहो। सदा खुशी किसको रहेगी? जो अपने को गोपिका समझेंगे। गोपिका का अर्थ है - जिसकी लगन सदा गोपी वल्लभ के साथ

हो। अपने को गृहस्थी माता नहीं लेकिन 'गोपिका' समझो, गृहस्थी शब्द ही अच्छा नहीं लगता। गोपिकाओं का नाम लेते ही सब खुश हो जाते हैं। जब नाम लेने से दूसरे खुश हो जाते तो स्वयं गोपिकाएं कितना खुश होंगी!

✚ अभी तैयारी तो करनी पड़े ना! जायेंगे, यह नहीं सोचो लेकिन सबको ले जायेंगे, यह सोचो। सबको साक्षात्कार कराके, तृप्त करके प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाके फिर जायेंगे। पहले क्यों जायें! अब तो बाप के साथ-साथ जायेंगे। प्रत्यक्षता की भी वण्डरफुल सीन अनुभव करके जायेंगे ना! यह भी क्यों रह जाए! यह मानसिक भक्ति, मानसिक पूजा, प्रेम के पुष्प यह अन्तिम दृश्य बहुत वण्डरफुल है। एडवान्स पार्टी में किसका पार्ट है वह दूसरी बात है। बाकी यह सीन देखना तो बहुत आवश्यक है। जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया। इसलिए बाप अन्त में आता तो सब कुछ कर लिया ना! तो क्यों नहीं बाप के साथ-साथ यह वण्डरफुल सीन देखते हुए साथ चलो। यह भी कोई-कोई का पार्ट है। तो जाने का संकल्प नहीं करो। चले गये तो भी अच्छा। रह गये तो बहुत अच्छा। अकेले जायेंगे तो भी एडवांस पार्टी में सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए जाना है यह नहीं सोचो - सबको साथ ले जाना है, यह सोचो।

✚ अपने को परिवर्तन में लाते-लाते सृष्टि का भी परिवर्तन हो जायेगा क्योंकि अपने परिवर्तन के आधार से ही सृष्टि को परिवर्तन में लाने का कार्य कर सकेंगे। यहाँ यही श्रेष्ठता है जो दूसरे लोगों में नहीं है। वह तो सिर्फ दूसरों को परिवर्तित करने के यत्न में हैं। यहाँ स्वयं के आधार पर सृष्टि में तुम परिवर्तन करते हो। तो जो आधार है उसके लिये अपने ऊपर इतना अटेन्शन देना है। अब सदैव यह स्मृति रहे कि हमारे हर संकल्प के पीछे विश्व-कल्याण का सम्बन्ध है। जो आधार मूर्त है, यदि उनके संकल्प समर्थ (सामर्थ्य) नहीं तो उनके समय के परिवर्तन में भी कमजोरी पड़ जाती है। इस कारण आप जितनाजितना स्वयं समर्थ बनें, उतना ही सृष्टि को परिवर्तन करने का समय समीप ला सकेंगे। ड्रामा-अनुसार समय भले ही निश्चित है, लेकिन वह ड्रामा भी

किसके आधार से बना है? आखिर आधार तो होगा ना? उसके आधार-मूर्त तो आप हो। अभी तो आप सभी की नज़रों में हो।

✚ बाबा ने चार स्टेजेस की एक सीढ़ी दिखाई। पहली स्टेज दिखाई - ज्ञान सुनना, सोचना-समझना और निश्चय करना। कोई सोच करता है, कोई मंथन करता है। दूसरी स्टेज बताई - कि अन्त समय कैसे विनाश हो रहा है। कहाँ बाढ़ से डूब रहे हैं, कहाँ क्या हो रहा है लेकिन शक्ति दल और पाण्डव बिल्कुल अडोल खड़े थे। तीसरी स्टेज दिखाई कि आत्मायें जैसे निकल कर परमधाम में गुब्बारे माफिक जा रही हैं। फिर परमधाम की सीन भी बाबा ने दिखाई। चौथी सीन - स्वर्ग की दिखाई। स्वर्ग में आत्मायें कैसे छोटे-छोटे बच्चों में प्रवेश हो रही हैं। तो यह सभी स्टेजेस सीढ़ी के चित्र के रूप में दिखाई। यह सीढ़ी दिखाने का रहस्य बताते हुए बाबा ने कहा, बच्चों की बुद्धि में यह घूमता रहे कि अब हमारी क्या स्टेज है। जो अन्तिम स्टेज धारण करनी है वह लक्ष्य पहले से ही बुद्धि में रखेंगे तो पुरुषार्थ तेज चलेगा। विनाश के समय की जो सीन दिखाई उसमें आप बच्चों की अडोल अवस्था रहे।

✚ भक्ति मार्ग में विद्या की देवी, सरस्वती को कौन सा आसन दिखाया है? (1) उसका 'विशेष गुण' भी नॉलेजफुल का ही दिखाया है ना। राइट और रांग (RIGHT And Wrong; सत्य और असत्य) को जानने वाला यह भी नॉलेज हुई ना। तो नॉलेजफुल का आसन भी नॉलेज वाला ही दिखाया है। विशेष नॉलेज है 'राइट और रांग को जानने' की (2) दूसरी बात, आपकी स्थिति का यादगार भी आसन के रूप में दिखाया है। सदा शुद्ध संकल्प का भोजन बुद्धि द्वारा ग्रहण करने वाला, सदा की सर्व आत्माओं द्वारा वा रचना द्वारा गुण धारण करने वाला, उसी को मोती चुगने वाला दिखाया है। (3) तीसरी बात, 'स्वच्छता'। स्वच्छता की निशानी सफेद रंग दिखाया है। 'स्वच्छता अर्थात् पवित्रता'। तो सदा नॉलेजफुल स्थिति में स्थित ही रहने की निशानी 'हंस का आसन' दिखाया जाता है। सरस्वती को, सदा सेवाधारी रूप की निशानी, बीन बजाते हुए दिखाया है। यह ज्ञान की वीणा सदा बजाते रहना अर्थात् सदा सेवाधारी रहना।

✚ युद्ध में ही समय नहीं गँवाना है। अगर युद्ध में ही समय गँवाया तो अन्त-मति भी युद्ध में रहेंगे। फिर क्या बनना पड़ेगा? चन्द्रवंश में जायेंगे वा सूर्यवंशी में? युद्ध वाला तो चन्द्रवंश में जायेगा। चल रहे हैं, कर रहे हैं, हो ही जायेंगे, पहुँच जायेंगे - अभी तक ऐसा लक्ष्य नहीं रखो। अब नहीं तो कब नहीं। बनना है तो अब, पाना है तो अब - ऐसा उमंग-उत्साह वाले ही समय पर अपनी सम्पूर्ण मंज़िल को पा सकेंगे। त्रेता में राम सीता बनने के लिए तो कोई भी तैयार नहीं है। जब सतयुग सूर्यवंश में आना है, तो सूर्यवंश अर्थात् सदा मास्टर विधाता और वरदाता, लेने की इच्छा वाला नहीं। मदद मिल जाए, यह हो जाए तो बहुत अच्छा, पुरुषार्थ में अच्छा नम्बर ले लेंगे - नहीं। मदद मिल रही है, सब हो रहा है - इसको कहते हैं - 'स्वराज्य अधिकारी बच्चे'। आगे बढ़ना है या पीछे आये हैं तो पीछे ही रहना है? आगे जाने का सहज रास्ता है - सहजयोगी, स्वतःयोगी बनो।

✚ विशेष सूक्ष्मवतन की कारोबार शुद्ध संकल्प के आधार पर चलती है। जो गाया हुआ है - ब्रह्मा ने संकल्प किया और सृष्टि रची तो संकल्प किया और इमर्ज हुआ। मर्ज और इमर्ज का खेल है। रूप-रेखा इशारे की है लेकिन विशेष आकारी रूप की कारोबार मनोबल कहो या संकल्प कहो, इसी आधार पर चलती है। बाप-दादा संकल्प का स्वीच ऑन करते हैं तो सब इमर्ज हो जाता है। सुनाया ना उनकी कारोबार है दूर-दूर तक वायरलेस द्वारा और यहाँ तीनों लोक तक वाइसलेस की शक्ति द्वारा कनेक्शन कर सकते हैं। बुद्धियोग बिल्कुल रिफाइन हो। सूक्ष्मवतन तक संकल्प पहुँचने के लिए महीन, सर्व सम्बन्धों के सार वाली याद चाहिए। यह है सबसे पावरफुल तार। इसमें बीच में माया इन्टरफेयर (Interfere) नहीं कर सकती। बाप-दादा के वहाँ रौनक बहुत है। इस दुनिया मुआफिक नहीं (बिजली घड़ी- घड़ी चली जाती थी) सारे कल्प के अन्दर सूक्ष्मवतन इस समय इमर्ज होता है। इसलिए सूक्ष्मवतन की रौनक भी अभी है।

✚ जैसी स्मृति वैसा स्वरूप स्वतः बन जाता है। तो सदा ज्ञान का मनन करते रहो। मनन करने से शक्ति भरती है। अगर मनन नहीं करते, सिर्फ सुनते सुनाते तो शक्ति स्वरूप नहीं। लेकिन सुनाने वाले स्पीकर बनेंगे। आप बच्चों के मनन का चित्र भक्ति में भी दिखाया है। कैसे मनन करो वह चित्र याद है! विष्णु का चित्र नहीं देखा है? आराम से लेटे हुए हैं और मनन कर रहे हैं, सिमरण कर रहे हैं। सिमरण कर, मनन कर हर्षित हो रहे हैं। तो यह किसका चित्र है? शैया देखो कैसी है! सांप को शैया बना दिया अर्थात् विकार अधीन हो गये। उसके ऊपर सोया है। नीचे वाली चीज़ अधीन होती है, ऊपर मालिक होते हैं। मायाजीत बन गये तो निश्चिंता। माया से हार खाने की, युद्ध करने की कोई चिन्ता नहीं। तो निश्चिन्त और मनन करके हर्षित हो रहे हैं। ऐसे अपने को देखो, मायाजीत बने हैं। कोई भी विकार वार न करे। रोज नई नई पाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मजा आयेगा, मौज में रहेंगे।

✚ सुख के सागर के बच्चे, बेगमपुर के बादशाह फिर दुख की लहर कहाँ से आई! अवश्य सुख के संसार की बाउन्ड्री से बाहर चले जाते हैं। कोई न कोई आर्टीफिशल आकर्षण वा नकली रूप के पीछे आकर्षित हो जाते हैं। जैसे कल्प पहले के यादगार कथाओं में दिखाते हैं - सीता आकर्षित हो गई और मर्यादा की लकीर अर्थात् सुख के संसार की बाउन्ड्री पार कर ली, तो कहाँ पहुँच गई? शोक वाटिका में। जब बाउन्ड्री के अन्दर हैं तो जंगल में भी मंगल है। त्याग में भी भाग्य है। बिन कोड़ी होते बादशाह हैं। बेगरी जीवन में भी प्रिन्स की जीवन है। ऐसा अनुभव है ना! संसार से परे मधुवन में आते हो तो क्या अनुभव करते हो? है छोटे से स्थान पर कोने में लेकिन पहुँचते ही कहते हो कि सतयुगी स्वर्ग से भी श्रेष्ठ संसार में पहुँच गये हैं। तो जंगल में मंगल अनुभव करते हो ना। सूखे पहाड़ों को हीरे जैसा श्रेष्ठ सुख का संसार अनुभव करते हो। संसार ही बदल गया, ऐसा अनुभव करते हो ना।

✚ बहुत सहज ही सम्पन्न बन सकते हो, लेकिन द्वापर से मिक्स करने के संस्कार बहुत रहे हैं। पहले पूजा में मिक्स किया, देवताओं को बन्दर का मुँह लगा दिया। शास्त्रों में मिक्स किया जो बाप की जीवन-कहानी में बच्चे की जीवन-कहानी मिक्स की। ऐसे ही गृहस्थी में पवित्र प्रवृत्ति के बजाए अपवित्रता मिक्स कर दी। अभी भी श्रीमत में मन मत मिक्स कर देते हो। इसलिए मिक्स होने के कारण, जैसे रीयल सोना हल्का होता है और जब उसमें मिक्स करते हैं तो भारी हो जाता है ऐसे ही श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ मत बनाती हैं। मनमत मिक्स होने से भारी हो जाते हो। इसलिए चलने में मेहनत लगती है। अतः श्रीमत में मिक्स नहीं करो। सदा हल्के रहने से वतन की सभी सीन-सीनरियाँ यहाँ रहते हुए भी देख सकेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इस दुनिया की कोई भी सीन स्पष्ट दिखाई देती है। सिर्फ संकल्प शक्ति अर्थात् मन और बुद्धि सदा मनमत से खाली रखो। मन को चलाने की आदत बहुत है ना।

✚ कुमारियों ने अपने आपको आफर किया? जहाँ भी सेवा में भेजें वहाँ जायेंगी? पक्का सौदा किया है या कच्चा? पक्का सौदा है तो जहाँ बिठाओ, जो कराओ...ऐसे तैयार हो? अगर कोई भी बन्धन है तो पक्का सौदा नहीं। अगर खुद तैयार हो तो कोई रोक नहीं सकता। बकरी को बाँध कर बिठाते हैं, शेर को कोई बाँध नहीं सकता। तो शेरनी किसके बंधन में कैसे आ सकती! वह जंगल में रहते भी स्वतन्त्र है। तो कौन हो? शेरनी! शेरनी माना मैदान में आने वाली। जब एक बल एक भरोसा है तो 'हिम्मत बच्चों की, मदद बाप की'। कैसा भी कड़ा बन्धन है लेकिन हिम्मत के आधार पर वह कड़ा बन्धन भी सहज छूट जाता है। जैसे दिखाते हैं - जेल के ताले भी खुल गये तो आपके बन्धन भी खुल जायेंगे। तो ऐसे बनो। अगर थोड़ा सा भी बन्धन है तो उसको योग अग्नि से भस्म कर दो। भस्म हो जायेगा तो नाम-निशान गुम। तोड़ने से फिर भी गाँठ लगा सकते। इसलिए तोड़ो नहीं लेकिन भस्म करो तो सदा के लिए मुक्त हो जायेंगी।

✚ हठयोगी अपनी किसी कर्मेन्द्रिय को, कोई टाँग को या बाँह को एकाग्र करने के लिए कोई टाइम निश्चित करते हैं कि इतना समय एक टाँग व एक हाथ नीचे करेंगे व ऊपर करेंगे, सिर नीचे

करेंगे अथवा ऊपर करेंगे। लेकिन यह राँग कापी की है। बाप ने सिखाया है बुद्धि में एक संकल्प धारण करके बैठो। उसकी उल्टी काँपी कर एक टाँग ऊपर कर लेते हैं। बाप कहते हैं कि एक संकल्प में स्थित हो जाओ, वह फिर एक टाँग पर स्थित हो जाते हैं। बाप कहते हैं कि सदा ज्ञान-सूर्य के सम्मुख रहो, विमुख न बनो। वह फिर स्थूल सूर्य की तरफ मुख कर बैठते हैं। तो उल्टी काँपी कर ली ना? यथार्थ बुद्धि-योग का अभ्यास अभी तुम सीख रहे हो। वह हठ से करते, आप अधिकार से करते हो। इसलिये वह मुश्किल है, यह सहज है। अभी उसके अभ्यास को बढ़ाते जाओ। एक सेकेण्ड में सब एक मत हो जायें। जब संगठन का एक संकल्प, एक स्मृति होगी, और सबका एक स्वरूप होगा तब इस संगठन की जय-जयकार का नाम बाला होगा।

✚ आज दीदी भी याद आ रही है। गुप्त गंगा हो गई ना। वैसे भी 3 नदियों में एक नदी गुप्त ही दिखाते हैं। अभी दीदी तो दादी में समाई हुई है ना। सूक्ष्म रूप में वह भी अपनी भासना दे रही है। क्योंकि कर्मबन्धनी आत्मा नहीं है। सेवा के सम्बन्ध से पार्ट बजाने गई है। कर्मबन्धनी आत्माएँ जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं। और कर्मातीत आत्माएँ एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं। क्योंकि कर्मातीत हैं। इसलिए दीदी भी आप सबके साथ है। कर्मातीत आत्मा को डबल पार्ट बजाने में कोई मुश्किल नहीं। स्पीड बहुत तीव्र होती है। सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती है। विशेष आत्माएँ अपना विशेष पार्ट सदा बजाती हैं। इसलिए ही हवा के मुआफिक चली गई ना। जैसे अनादि अविनाशी प्रोग्राम बना हुआ ही था। यह भी विचित्र पार्ट था। शुरू से लेकर दीदी का विचित्र ट्रांस का पार्ट रहा। अन्त में भी विचित्र रूप के ट्रांस में ही ट्रांसफर हो गई।

✚ जितना बच्चे याद करते उसका रिसपान्ड तो देंगे ना! याद करने का रिटर्न तो देना पड़ेगा ना। तो सेकेण्ड भी बच्चों के सिवाय रह नहीं सकते। ऐसा भी कभी वण्डर नहीं देखा होगा जो साथ ही रहें। बाप बच्चों से अलग ही न हों। ऐसी बाप बेटे की जोड़ी कभी नहीं देखी होगी। बहुत अच्छा बगीचा तैयार हुआ है। आप सबको भी बगीचा अच्छा लगता है ना। एक-एक की खुशबू न्यारी

और प्यारी है। इसलिए अल्लाह का बगीचा गाया हुआ है। सभी आदि रत्न हो, एक-एक रत्न की कितनी वैल्यु है और हरेक रत्न की हर समय हर कार्य में आवश्यकता है। तो सभी श्रेष्ठ रत्न हो। जिन्हों की अभी भी रत्नों के रूप में पूजा होती है। अभी अनेक आत्माओं के विघ्न विनाशक बनने की सेवा करते हो तब यादगार रूप में एक-एक रत्न की वैल्यु होती है। एक-एक रत्न की विशेषता होती है। कोई विघ्न को नाश करने वाला रत्न होता, कोई कौन-सा! तो अभी लास्ट तक भी स्थूल यादगार रूप सेवा कर रहा है। ऐसे सेवाधारी बने हो।

✚ जबकि तन, मन और धन सभी बाप को समर्पण कर दिया, तो देने के बाद फिर मेरा विचार, मेरी समझ और मेरा स्वभाव यह शब्द ही कहाँ से आया? क्या मेरा अभी तक है या मेरा सो तेरा हो गया? जब कहा- 'मेरा सो तेरा' -तो मेरा मन समाप्त हो गया ना? मन और तन बाप की अमानत है। आपकी तो नहीं है न? 'मेरा मन चंचल है'-यह कहना कहाँ से आया? क्या अभी तक मेरा-पन नहीं छूटा? मेरा-पन किसमें होता है? बन्दर में, वह खुद मर जायेगा लेकिन उसका मेरा-पन नहीं मरेगा। इसलिये चित्रकारों ने महावीर को भी पूँछ की निशानी दे दी है। हैं महावीर लेकिन पूँछ ज़रूर है। तो यह पूँछ कौन-सी है? लगाव और स्वभाव की। जब तक इस पूँछ को आग नहीं लगाई है, तब तक लंका को आग नहीं लग सकती। तो विनाश की वार्निंग की सहज निशानी कौन-सी हुई? इसी पूँछ की आग लगानी है। जब सभी महावीरों की लगन की आग लग जायेगी तो क्या यह पुराना विश्व रहेगा? इसलिये अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त करो।

✚ महावीर बच्चे सदा ही तन्दुरूस्त हैं। क्योंकि मन तन्दुरूस्त है, तन तो एक खेल करता है। मन में कोई रोग होगा तो रोगी कहा जायेगा अगर मन निरोगी है तो सदा तन्दुरूस्त है। सिर्फ शैया पर विष्णु के समान ज्ञान का सिमरण कर हर्षित होते। यही खेल है। जैसे साकार बाप विष्णु समान टांग पर टांग चढ़ाए खेल करते थे ना। ऐसे कुछ भी होता है तो यह भी निमित्त मात्र खेल करते। सिमरण कर मनन शक्ति द्वारा और ही सागर के तले में जाने का चांस मिलता है। जब

सागर में जायेंगे तो जरूर बाहर से मिस होंगे। तो कमरे में नहीं हो लेकिन सागर के तले में हो। नये-नये रत्न निकालने के लिए तले में गये हो। कर्मभोग पर विजय प्राप्त कर कर्मयोगी की स्टेज पर रहना इसको कहा जाता है - 'विजयी रत्न'। सदा यही स्मृति रहती कि यह भोगना नहीं लेकिन नई दुनिया के लिए योजना है। फुर्सत मिलती है ना, फुर्सत का काम ही क्या है? नई योजना बनाना। पलंग भी प्लैनिंग का स्थान बन गया।

✚ जब वर्ल्ड आलमाइटी बाप आप का हो गया तो वर्ल्ड की जो भी अथार्टीज हैं वह आपकी हो गई। ऐसे लिस्ट निकालो। वर्ल्ड के आदि मध्य अन्त के नालेज की अथार्टी, जिस नालेज के यादगार शास्त्र बाइबिल वा कुरान आदि सब हैं। इसलिए गीता ज्ञान को सर्व शास्त्र वा बुक्स का माई बाप कहते हैं। शिरोमणी कहा जाता है। डायरेक्ट गीता कौन सुन रहा है? तो अथार्टी हो गये ना। इसी प्रकार सर्व धर्मों में से नम्बरवन धर्म किसका है? (ब्राह्मणों का) आपके ब्राह्मण धर्म द्वारा ही सब धर्म पैदा होते हैं ब्राह्मण धर्म तना है। और भी इस धर्म की विशेषता है। ब्राह्मण धर्म डायरेक्ट परमपिता का स्थापन किया हुआ है। और धर्म, धर्मपिताओं के हैं और यह धर्म परमपिता का है। वह बच्चों द्वारा हैं। सन आफ गाड कहते हैं। वह गाड नहीं हैं। तो डायरेक्ट परमपिता द्वारा श्रेष्ठ धर्म की स्थापन हुआ, उस धर्म की अथार्टी हो। आदि पिता ब्रह्मा के डायरेक्ट मुख वंशावली की अथार्टी वाले हो।

✚ जब 5 तत्व भी आप विधाता के आगे दासी बन जाते हैं, प्रकृति जीत मायाजीत बन जाते हो, उसके आगे यह हद की इच्छायें ऐसी हैं जैसे सूर्य के आगे दीपक। जब सूर्य बन गये तो इन दीपकों की क्या आवश्यकता है? चाहिए की तृप्ति का आधार है, जो चाहिए वह ज्यादा से ज्यादा देते जाओ। मान दो, लो नहीं। रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो। तो आपका नाम स्वतः ही हो जायेगा। देना ही लेने का आधार है। जैसे भक्ति मार्ग में भी यह रसम चली आई है, कोई भी चीज़ की कमी होगी तो प्राप्ति के लिए उसी चीज़ का दान कराते हैं। तो वह देना लेना हो जायेगा। ऐसे आप भी दाता के बच्चे देने वाले देवता बनने

वाले हो। आप सबकी महिमा देने वाले देवा, शान्ति देवा, सम्पत्ति देवा, कहा करते हैं। लेवा कहकर महिमा नहीं करते हैं। तो आज यह चार्ट देख रहे थे। देवता बनने वाले कितने हैं और लेवता (लेने वाले) कितने हैं। लौकिक आशायें, इच्छायें तो समाप्त हो गईं।

✚ हरेक की विशेषता, उड़ती कला की बहुत तीव्र विधि बन जायेगी। सेवा में लगाना, अभिमान में नहीं आना क्योंकि संगम पर हर विशेषता ड्रामा अनुसार परमात्म देन है। परमात्म देन में अभिमान नहीं आयेगा। जैसे प्रसाद होता है ना उसको कोई अपना नहीं कहेगा कि मेरा प्रसाद है, प्रभु प्रसाद है। ये विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं। प्रसाद सिर्फ अपने प्रति नहीं यूज किया जाता है, बांटा जाता है। बांटते हो, महादानी हो, वरदानी भी हो। पाण्डव भी वरदानी, महादानी हैं, शक्तियां भी महादानी हैं? एक दो घण्टे के महादानी नहीं, खुला भण्डार। इसीलिए बाप को भोला भण्डारी कहते हैं, खुला भण्डार है ना। आत्माओं को अंचली देते जाओ, कितनी बड़ी लाइन हैं भिखारियों की। और आपके पास कितना भरपूर भण्डार है? अखुट भण्डार है, खुटने वाला है क्या? बांटने में एकानामी तो नहीं करते? इसमें फ्राख दिली से बांटो। व्यर्थ गंवाने में एकानामी करो लेकिन बांटने में खुली दिल से बांटो।

✚ अभी तो बाप का भी, बाप और शिक्षक का पार्ट विशेष रूप में चल रहा है इसलिए बच्चों के रूप में कभी-कभी बाप को भी नाज़ और नखरे देखने पड़ते हैं। शिक्षक के रूप में बार-बार एक ही पाठ याद कराते रहते हैं। सतगुरू के रूप में 'गति-सद्गति का सर्टीफिकेट', फाइनल वरदान सेकण्ड में मिलेगा। मास्टर सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पूर्ण फालो करने वाले। सतगुरू के वचन पर सदा सम्पूर्ण रीति चलने वाले - ऐसा स्वरूप अब प्रैक्टिकल में बाप का और अपना अनुभव करेंगे। सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पन्न, समान बनाकर साथ ले जाने वाले। सतगुरू के स्वरूप में मास्टर सतगुरू भी नज़र से निहाल करने वाले है। मत दी और गति हुई। इसलिए 'गुरू मंत्र' प्रसिद्ध है। सेकण्ड का मंत्र लिया और समझते हैं, गति हो गई। मंत्र अर्थात् श्रेष्ठ मत।

ऐसी पावरफुल स्टेज से श्रीमत देंगे जो आत्मायें अनुभव करेंगे कि हमें गति सद्गति का ठिकाना मिल गया। ऐसी शक्तिशाली स्थिति को अब से अपनाओ।

✚ अगर समय सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा समय राज्य अधिकारी बनेंगे। अगर कभी-कभी सफल करेंगे तो राज्य अधिकारी भी कभी-कभी बनेंगे। समय सफल की प्रालब्ध यह है। श्वास सफल कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते हार्टफेल नहीं होगी। किसकी हार्ट रूक जाती, किसकी नलियां बन्द हो जाती, वह नहीं होगी। ज्ञान के खज़ाने को भी सफल करो तो ज्ञान का अर्थ है समझ, वहाँ इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मन्त्रियों की जरूरत नहीं है। आजकल तो देखो शपथ लेते ही पहले मन्त्रीमण्डल बनाते हैं। वहाँ साथी होंगे लेकिन मन्त्री नहीं होंगे। रायल फैमिली हर एक दरबार में बैठने वाले ताजधारी होंगे। राँयल फैमिली कम नहीं होगी, चाहे तख्त पर नहीं भी बैठे लेकिन मर्तबा एक ही जैसा होगा। इसलिए यह नहीं सोचो कि तख्तनशीन बहुत थोड़े बनेंगे लेकिन आप लोग भी राज दरबार में राज्य अधिकारी के रूप में होंगे। आपके सिर पर भी ताज होगा और आपका पूरा अधिकार होगा।

✚ जागती-ज्योति बनने के लिये मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनने की। जब थकावट होती है तो नींद आती है - साकार बाप में अथक-पन की विशेषता सदा अनुभव की। ऐसे फॉलो फादर करने वाले सदा जागती-ज्योति बनते हैं। यह भी चेक करो कि चलते-चलते कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं देती? इसीलिये कल्प पहले की यादगार में भी निद्राजीत बनने का विशेष गुण गाया हुआ है। अनेक प्रकार की निद्रा से निद्राजीत बनो। यह भी लिस्ट निकालना कि किस-किस प्रकार की निद्रा निद्राजीत बनने नहीं देती जैसे निद्रा में जाने से पहले निद्रा की निशानियाँ दिखाई देती है उस नींद की निशानी है उबासी और अज्ञान नींद की निशानी है उदासी। इसी प्रकार निशानियाँ भी निकालना - इसकी दो मुख्य बातें हैं। एक आलस्य, दूसरा अलबेलापन। पहले यह निशानियाँ आती हैं - फिर नींद का नशा चढ़ जाता है। इसलिये इस पर अच्छी तरह से चैकिंग (जाँच) करना। चैकिंग के साथ चेन्ज (परिवर्तन) करना।

✚ दृष्टि से सृष्टि बदलती है -यह भी अभी की कहावत है। कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मायें आयें, लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति बदल जाये, उनकी वृत्ति बदल जाये। आगे चलकर यह अनुभव बहुत आत्मायें करेंगी। जैसे यादगार दिखाया हुआ है कि तीनों लोकों का साक्ष्कार कराया। यह भी अभी का गायन है। आप लोगों के सामने आने से दृष्टि द्वारा उन्हों को तीन लोक तो क्या अपनी पूरी जीवन कहानी का मालूम पड़ जाये। जैसे शुरू में स्थापना के समय ज्ञान की सर्विस इतनी नहीं थी, नज़र से निहाल करते थे। तो अन्त में भी ज्ञान की सर्विस करने का मौका नहीं मिलेगा। जो आदि हुआ है वही अन्त में आप लोगों द्वारा चलना है। जैसे वृक्ष का पहले बीज प्रत्यक्ष रूप में होता है, बीच में वह बीज मर्ज हो जाता है, फिर अन्त में वही बीज प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है। तो आप आदि आत्माओं में भी जो पहला फाउन्डेशन पड़ा हुआ है वही सर्विस अन्त में भी होनी है।

✚ क्योंकि हरेक रतन की अपनी-अपनी विशेषता है। सर्व की विशेषताओं द्वारा ही विश्व का कार्य सम्पन्न होना है। जैसे कोई स्थूल चीज़ भी बनाते हैं, उसमें अगर सब चीज़ें न डालो, साधारण मीठा या नमक भी न डालो तो चाहे कितनी भी बढ़िया चीज़ बनाओ लेकिन वह खाने योग्य नहीं बन सकती। तो ऐसे ही विश्व के इतने श्रेष्ठ कार्य के लिए हरेक रतन की आवश्यकता है। सबकी अंगुली चाहिए। चित्र में भी सबकी अंगुली दिखाते हैं ना। सिर्फ महारथियों की नहीं, सबकी अंगुली से ही विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होना है। सब अपनी-अपनी रीति से महारथी हैं। बापदादा भी अकेले कुछ नहीं कर सकते। बापदादा बच्चों को आगे रखते हैं, निमित्त आत्मायें भी सबको आगे रखती हैं। तो सभी बहुत-बहुत आवश्यक और श्रेष्ठ रतन हो। बापदादा के स्वीकार किये हुए रतन हो। यादगार में तो दिखाते हैं - भगवान की पत्थर पर भी नजर पड़ जाए तो पत्थर भी पारस बन जाता है, आप तो उनके स्वीकार किये हुए श्रेष्ठ रतन हो।

✚ गायन योग्य कौन बनते हैं और पूजन योग्य कौन बनते हैं? एक ही बात से दोनों योग्य बनते हैं या दोनों के लिए दो विशेष बातें हैं? कई ऐसी भी देवियाँ हैं जिनका गायन बहुत है पूजन कम है। और कई देवियों का दोनों होता है। तो जो कब कैसे, कब कैसे रहते हैं उनका पूजा एकरस नहीं रहता और जो सदा पानी स्थिति में रहते तो उनका पूजन भी सदा रहता है। एकरस रहनेवाले का पूजन एकरस होता है। पुरुषार्थ में कब शब्द नहीं रहना चाहिए। तीव्र पुरुषार्थी की निशानी है जो कब न कह अब कहते हैं। जो पुरुषार्थ में कब कहेंगे तो उनकी पूजा भी कम। इसलिए कोई भी बात में कब देखेंगे, नहीं। लेकिन अब दिखाऊंगा। इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी। सम्पूर्ण स्थिति जो होती है उसमें सर्व शक्तियां संपन्न होती हैं। सर्व शक्ति संपन्न बनने से सर्व गुण संपन्न बनेंगे। भविष्य में बनना है सर्वगुण संपन्न, अब बनना है सर्व शक्ति संपन्न। जितना सर्व शक्ति संपन्न उतना सर्व गुण संपन्न बनेंगे।

✚ जितने थोड़े समय की पहचान उतने ही थोड़े समय के लिए प्राप्ति। आप सब बहुकाल के साथी हो और बहुकाल के राज्य अधिकारी हो। अन्त की कमजोर आत्माओं को महादानी वरदानी बन अनुभव का दान और पुण्य करो। यही सेकेण्ड का शक्तिशाली स्थिति द्वारा किया हुआ पुण्य आधाकल्प के लिए पूजनीय और गायन योग्य बना देगा। क्योंकि अन्तिम काल में आत्माओं के अन्तिम समय में आप सम्पूर्ण आत्माओं द्वारा प्राप्ति के अनुभव और सम्पूर्ण स्वरूप के प्रत्यक्षता का सम्पन्न स्वरूप, यही अन्तिम अनुभव का संस्कार लेकर आत्माएँ आधाकल्प के लिए अपने घर में विश्रामी होंगीं। कुछ प्रजा बनेंगी, कुछ भक्त बनेंगी इसलिए अन्त काल जो अन्त मती सो द्वापर में भक्तपन की गति में अर्थात् श्रेष्ठ भक्त माला के शिरोमणि आत्मायें बन जायेंगीं। कोई विश्व अधिकारी के रूप में देखेंगे, कोई प्रजा बनने के संस्कार कारण आपके राज्य में प्रजा बन जायेंगीं। कोई अति पूज्य स्वरूप में देखेंगे तो भक्त आत्मायें बन जायेंगे।

✚ जैसे स्थूल रीति में भी कोई को भी बिना कोई यादगार-सौगात के नहीं भेजते हो ना। कुछ-न-कुछ निशानी देते हो। यह स्थूल रस्म भी क्यों चली? सूक्ष्म कर्तव्य के साथ सहज स्मृति दिलाने के लिए एक सहज साधन बनाया हुआ है। तो जैसे यह सोचते हो कि कोई भी स्थूल सौगात के सिवाए न जावे, वैसे ही सदा यह भी लक्ष्य रखो कि कम से कम थोड़ा-बहुत भी लेकर जावे। तब तो आपके विश्व के राज्य में आयेंगे। ऐसे सदाचारी और सदा महादानी दृष्टि, वृत्ति और कर्म से भी बनने वाले ही विश्व के मालिक बनते हैं। तो सदा ऐसी स्थिति रहे अर्थात् सदा सम्पत्तिवान समझ कर चलें, इसके लिये तीन शब्द याद रखने हैं। जिन तीन शब्दों को याद करने से सदा और स्वतः ही यह वृत्ति रहती, वह तीन शब्द कौन से? सदा निराकारी, अलंकारी और कल्याणकारी। अगर यह तीन शब्द याद रहें तो सदा अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना सकते हो। चाहे मन्सा, चाहे कर्मणा में, चाहे सेवा में - तीनों ही स्थिति में अपनी ऊंची स्थिति बना सकते हो।

✚ होली के दिन देखो जलाने में भी एक बहुत अच्छी बात बताते हैं कोकी को धागा बांध के पकाते हैं तो जब कोकी पक जाती है और निकालते हैं तो कोकी पक जाती लेकिन धागा नहीं जलता है। यह निशानी भी आपने पहला पाठ जो पढ़ा है कि आत्मा अविनाशी है और शरीर विनाशी है। तो बापदादा अपने यह त्योहार या शास्त्र बनाने वाले है तो बाप के बच्चे ही लेकिन आप हो सिकीलथे लेकिन बापदादा देखते हैं कि उन्हों की भी कमाल कम नहीं है। आटे में नमक है लेकिन बनाया बड़ा रमणीक है। हर त्योहार का आप देखो यादगार बनाया है लेकिन कई बातें जो सूक्ष्म है उसको स्थूल रूप दे दिया है। लेकिन यादगार तो बनाया है ना! भक्ति में भी कम तो नहीं किया भक्ति ने द्वापर कलियुग में फिर भी कुछ न कुछ स्मृति की बातें रखी। अति विकारी बनने से बचाया। तो बापदादा यह सामग्री त्योहार या शास्त्र बनाने वालों को भी उनका फल देता है। फिर भी भक्ति में कुछ तो याद करते हैं विकारों से थोड़े टाइम के लिए बच जाते हैं।

✚ सभी रूहानी शक्ति सेना, पाण्डव सेना, रूहानी सेना सदा विजय के निश्चय और नशे में रहते हैं न, और कोई भी सेना जब लड़ाई करती है तो विजय की गैरन्टी नहीं होती है। निश्चय नहीं होता कि - विजय निश्चित ही है। लेकिन आप रूहानी सेना, शक्ति सेना सदा इस निश्चय के नशे में रहते कि न सिर्फ अब के विजयी है लेकिन कल्प-कल्प के विजयी हैं। अपने कल्प पहले के विजय की कथायें भी भक्ति मार्ग में सुनते आये हो। पाण्डवों की विजय की यादगार कथा अभी भी सुन रहे हो। अपने विजय के चित्र अब भी देख रहे हो। भक्ति में सिर्फ अहिंसक के बजाए हिंसक दिखा दिया है। रूहानी सेना को जिस्मानी साधारण सेना दिखा दिया है। अपना विजय का गायन अभी भी भक्तों द्वारा सुन हर्षित होते हो। गायन भी है - 'प्रभु-प्रीत बुद्धि विजयन्ति'। 'विपरीत बुद्धि विनशन्ति'। तो कल्प पहले का आपका गायन कितना प्रसिद्ध है! विजय निश्चित होने के कारण निश्चयबुद्धि विजयी हो। इसलिए माला को भी 'विजय माला' कहते हैं।

✚ क्रिसमस मना लिया कि अभी मनायेंगे? क्रिसमस का अर्थ ही है फादर द्वारा गिफ्ट लेना। वो क्रिसमस फादर है और यह गॉड फादर है। तो क्रिसमस फादर क्या देता है? छोटी-छोटी गिफ्ट देंगे। और गॉड फादर क्या गिफ्ट देता है? जन्म-जन्म के लिये सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति के अधिकारी बना देते हैं। स्वर्ग हाथ में दे देते हैं। स्वर्ग आपके हाथ में है? यह आपका चित्र है या सिर्फ ब्रह्मा बाप का है? क्योंकि चित्र में तो एक ही दिखाया जाता है? लेकिन अधिकारी सभी बनते हैं। ये नशा है? ये बड़ा दिन कहकर मनाते हैं लेकिन आपका हर घड़ी बड़ी घड़ी हो गई। क्योंकि एक सेकण्ड में कितनी कमाई करते हो तो बड़ी हो गई ना! और क्रिसमस की निशानी क्या दिखाते हैं? (क्रिसमस ट्री) तो संगम पर आपको भी ट्री का नॉलेज मिला है ना। आपकी ट्री कितनी बड़ी है! तो आप कहाँ बैठे हो? कल्प ट्री के अन्दर बैठे हो। यह संगमयुग की यादगार एक दिन करके मनाते हैं। तो क्रिसमस की मुबारक मिली? ये मिलना ही मुबारक है।

✚ पहले अपने प्रति समय दिया लेकिन अब की स्टेज मास्टर रचयिता की है। सिर्फ एक-दो की बात नहीं, पूरे विश्व की आत्मायें दुःखी, अशान्त, रोगी, परेशान हैं, भिखारी हैं। बेहद रचना

अर्थात् सारे विश्व को कल्याणकारी बन सदाकाल के लिए सुखी और शान्त बनाना है तो बेहद रचयिता का अटेन्शन होना चाहिए। विश्व कल्याण में होना चाहिए वा अब तक भी अपने में ही अपने प्रति बहुत समय दिया, युद्ध करने में बहुत समय लगाया? अब ऐसे ही समझो कि यह जो थोड़ा समय रह गया है वह है विश्व के कल्याण प्रति। भक्ति-मार्ग में जो महादानी-कल्याणकारी वृत्ति वाले सेवाधारी होते हैं वह कोई भी दान आदि अपने प्रति नहीं करेंगे, सर्व आत्माओं प्रति ही संकल्प करेंगे। तो यह रीति-रस्म आप श्रेष्ठ अथवा कल्याणकारी आत्माओं से शुरू हुई है, जो भक्ति में भी रस्म चली आती है। ज़रूर प्रैक्टिकल में हुई है तब तो यादगार रूप में रस्म चल रही है। प्रैक्टिकल का नया यादगार बनता है क्या? तो अब यह परिवर्तन लाओ।

✚ सदा अपने को कल्प पहले वाले विजयी पाण्डव समझते हो? जब भी पाण्डवों के यादगार चित्र देखते हो तो ऐसे लगता है कि यह हमारा यादगार है? तो पाण्डव अर्थात् सदा मजबूत रहने वाले। इसलिए, पाण्डवों के शरीर लम्बे चौड़े दिखाते हैं, कभी कमज़ोर नहीं दिखाते। आत्मा बहादुर हैं, शक्तिशाली हैं, उसके बदले में शरीर शक्तिशाली दिखाये हैं। पाण्डवों की विजय प्रसिद्ध है। कौरव अक्षौहिणी होते भी हार गये और पाण्डव पाँच होते भी जीत गये। क्यों विजयी बनें? क्योंकि पाण्डवों के साथ बाप है, पाण्डव शक्तिशाली हैं, आध्यात्मिक शक्ति है। इसलिए, अक्षौहिणी कौरवों की शक्ति उनके आगे कुछ भी नहीं है! ऐसे हो ना? कोई भी सामने आए, माया किस भी रूप में आये, तो भी वह हार खाकर जाए, जीत न सके। इसको कहते हैं - 'विजयी पाण्डव'। मातायें भी पाण्डव सेना में हो ना। या घर में रहने वाली हो? जो कमज़ोर होता है वह घर में छिपता है, बहादुर मैदान में आता है। तो कहाँ रहती हो, मैदान में या घर में?

✚ अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! थोड़ा सा अलबेले के, आलस्य के, ढीले पुरुषार्थ के डनलप के तकियें में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। लेकिन बापदादा ऐसे बच्चों को

सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भकरण के नींद का अंश है। बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। फिर उसको क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बच सका ना! तो अन्त समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे। समझा! कभी कैसी रूहरूहान करते हो, कभी बहुत हिम्मत की भी करते हो, कभी नाज़-नखरे की करते हो और कभी खिटपिट की करते हो।

✚ कई बच्चे समझते वा कहते बहुत हैं कि हमारा यह भी जमा है, यह भी जमा है, बाहर से जमा का खाता बहुत वर्णन करते हैं लेकिन बाप के जमा के खाते में जो जितना कहते हैं, समझते हैं उससे बहुत कम जमा है। क्यों? वही पहला पाठ "मैं और मेरा-पन"। मैंने किया, मेरी यह सेवा है, मेरा यह कार्य है। तो जमा करते समय, वह समझते हैं कि जमा कर रहे हैं लेकिन वह ऑटोमेटिक जमा के खाते से निकल, व्यर्थ के खाते में जमा हो जाता है। यह ऑटोमेटिक सूक्ष्म मशीनरी है। बाबा ने कराया, बाबा की सेवा है, मेरी सेवा नहीं है। मैंने किया, नहीं। वर्णन नहीं करो, मैंने यह किया, मैं यह करती हूँ, मैं यह करता हूँ...यह मैं-मैं नहीं। बाबा, बाबा बोलो तो पदमगुणा जमा होगा। और मैं मेरा बोलेंगे तो ट्रांसफर होकर व्यर्थ के खाते में जमा हो जायेगा। यह ऑटोमेटिक मशीनरी बहुत फास्ट है, आप लोगों को पता भी नहीं पड़ता है। इसकी चेकिंग भी बहुत सच्चे दिल से, मैं-पन से न्यारे होकर करने वाले कर सकते हैं।

✚ कभी भी कमज़ोर संकल्पों को बार-बार न वर्णन करो न सोचो। बार-बार सोचने से भी स्वरूप बन जाते हैं। सदा यह सोचो कि मैं बाबा का नहीं बनूँगा तो और कौन बनेगा! मैं ही था वा मैं ही थी। मैं ही हूँ। कल्प-कल्प मैं ही बनूँगी - यह संकल्प तन्दरूस्त, मायाजीत बना देंगे। कमज़ोरी पीछे आती है। आप उसको न पहचान सत्य समझ लेते हो तो माया अपना बना देती है। जैसे

सीता का ड्रामा दिखाते हो ना। भिखारी था नहीं लेकिन सीता ने भिखारी समझ लिया। वह तो सिर्फ ट्रायल करने आया और उसे सच समझ लिया। इसलिए उसने उनका भोलापन देख अपना बना लिया। यह भी व्यर्थ संकल्प, कमजोर संकल्प माया का रूप बन आते हैं। ट्रायल करने के लिए, लेकिन भोले बन जाते हो इसलिए वह अपना बना देती है। “मैं हूँ ही ऐसी”, ऐसे करते-करते माया अपना स्थान बना देती है। ऐसे कमजोर हो नहीं। समर्थ हो। मास्टर सर्वशक्तिवान हो। बापदादा के चुने हुए कोटों में कोई हो। ऐसे कमजोर कैसे हो सकते! यह सोचना ही माया को स्थान देना है।

✚ आजकल के समय प्रमाण सबसे अमूल्य श्रेष्ठ खज़ाना है - पुरुषोत्तम संगम का समय क्योंकि इस संगम पर ही सारे कल्प की प्रालब्ध बना सकते हो। इस छोटे से युग का एक सेकण्ड प्राप्तियों और प्रालब्ध के प्रमाण एक सेकण्ड की वैल्यु एक वर्ष के समान है। इतना यह अमूल्य समय है। इस समय के लिए ही गायन है - अब नहीं तो कब नहीं क्योंकि इस समय ही परमात्म पार्ट नून्धा हुआ है। इसलिए इस समय को हीरे तुल्य कहा जाता है। सतयुग को गोल्डन एज कहा जाता है। लेकिन इस समय, समय भी हीरे तुल्य है और आप सब बच्चे भी हीरे तुल्य जीवन के अनुभवी आत्मायें हो | इस समय ही बहुतकाल की बिछुड़ी हुई आत्मायें परमात्म मिलन, परमात्म प्यार, परमात्म नॉलेज, परमात्म खज़ानों के प्राप्ति के अधिकारी बनते हैं। सारे कल्प में देव आत्मायें, महान आत्मायें हैं लेकिन इस समय परमात्म ईश्वरीय परिवार है। इसलिए जितना इस वर्तमान समय का महत्व है, इस महत्व को जान, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे उतना बना सकते हैं।

✚ अब देखो आप लोग क्या कहते हैं कि हमने विश्व-कल्याण का संकल्प उठाया है; लोग आपको क्या कहते हैं? तो कल्याण का इतना बड़ा कार्य आपकी ऐसी स्पीड से होगा? विश्व-कल्याण का कार्य अब तक तो बहुत थोड़ा किया है। विश्व तक कैसे पहुंचावेंगे? अभी प्रैक्टिकल नहीं है ना। फिर चारों ओर जहां-जहां से मास्टर बुद्धिवानों की बुद्धि बन सूक्ष्म मशीनरी द्वारा सभी की

बुद्धियों को टच करेंगे तो आवाज फैलेगा कि कोई शक्ति, कोई रूहानियत अपने तरफ आकर्षित कर रही है। दूँदेंगे मिलने लिए वा एक सेकेण्ड सिर्फ दर्शन करने लिये तड़पेंगे जिसकी निशानी जड़ चित्रों की अब तक चलती आती है। जब कोई ऐसा उत्सव होता है जड़ मूर्तियों का तो कितनी भीड़ लग जाती है! कितने भक्त उस दिन उस घड़ी दर्शन करने लिये तड़पते हैं वा तरसते हैं। अनेक बार दर्शन करते हुए भी उस दिन के महत्व को पूरा करने लिये बेचारे कितने कठिन प्रयत्न करते हैं! यह निशानी किसकी है? प्रैक्टिकल होने से ही तो यह यादगार निशानियां बनी हैं।

✚ कई बच्चे पूछते हैं हम भविष्य में कहाँ आयेंगे? क्या बनेंगे? तो बाप कहते हैं जितना समय से आये हो उतने समय में चेक करो कि मेरा पांव जितना समय हुआ है उतना ही समय झूलों में या तख्त पर रहा है? उतना ही भविष्य में रॉयल घराने में रहेंगे। रॉयल प्रजा में भी नहीं आयेंगे रॉयल घराने में ही आयेंगे। तो यह हिसाब हर एक अपने आप अपना निकालो। दूसरे को नहीं देखना अपना हिसाब निकालना। हर एक चाहता क्या है? रॉयल घराने राज्य घराने में ही रहें। तो अब भी जितना समय मिलता है क्योंकि समाप्ति तो अचानक होनी है। तो जब तक समाप्ति हो तब तक अब भी चेक करेंगे तो जितना समय ज्यादा बाप की गोदी में तख्त पर झूले में रहेंगे उतना समय रॉयल फैमिली में रॉयल घराने में भाग्य प्राप्त करेंगे। बापदादा तो हर बच्चे को सारा समय 21 जन्म ही रॉयल घराने में चाहे सूर्यवंशी चाहे चन्द्रवंशी दोनों युग में रॉयल फैमिली में रहने का अधिकार दे रहा है। लेकिन अधिकार लेना यह हर बच्चे के ऊपर अधिकार है।

✚ आगे चल कर जितने सर्विस के साधनों द्वारा सर्विस को बढ़ावेंगे व मैदान में प्रसिद्ध होते जावेंगे, वैसे हर प्रकार के लोग आपकी हर बात को मन्त्रों द्वारा व अपनी सिद्धियों द्वारा चैक करने की चैलेन्ज करेंगे। संकल्पों को व कर्मों को भी करने के लिए आपके पीछे सी.आई.डी. (गुप्तचर) होंगे। ऐसे ही सहज थोड़े ही मानेंगे? बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिये तैयार नहीं होते। चैलेन्ज करने के साथ-साथ व सर्विस के स्थूल साधनों के साथ-साथ क्या ऐसी

तैयारी कर रहे हो? माइण्ड-कन्ट्रोल (मस्तिष्क नियन्त्रण) का एग्जैमिनेशन (परीक्षा) लेंगे। ऐसे नहीं योग में बैठते समय चैक करेंगे, विशेष परिस्थिति के समय माइण्ड-कन्ट्रोल व स्थिति की चैकिंग करेंगे। माया के सी.आई.डी. ऑफिसर कम नहीं होते। तो ऐसी तैयारी करने की ज़िम्मेवारी व स्वरूप बन सैम्पल रूप में आगे आने की ज़िम्मेवारी इस ग्रुप की है। तब तो पाण्डवों की यादगार ऊंची दिखाई है। ऊंची स्थिति का प्रमाण-यादगार है।

✚ इसी का यादगार आप सबके गायन में अब तक भी भक्त हर कर्म इन्द्रिय के प्रति महिमा में नयन-कमल, मुख-कमल, हस्त-कमल कह कर गायन करते हैं। तो यह किस समय की स्थिति का आसन है? इस ब्राह्मण जीवन का। अपने आपसे पूछो, हर कर्म इन्द्रिय कमल समान बनी है? नयन कमल बने हैं? हस्त कमल बने हैं? कमल अर्थात् कर्म करते हुए भी विकारी बन्धनों से मुक्त। देह को देख भी रहे हैं लेकिन देखते हुए भी नयन कमल वाले, देह के आकर्षण के बन्धन में नहीं आयेंगे। जैसे कमल जल में रहते हुए जल से न्यारा अर्थात् जल के आकर्षण के बन्धन से न्यारा, अनेक भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से न्यारा रहता है। कमल के सम्बन्ध भी बहुत होते हैं। अकेला नहीं होता है, प्रवृत्ति मार्ग की निशानी का सूचक है। ऐसे ब्राह्मण अर्थात् कमल पुष्प समान बनने वाली आत्माएं प्रवृत्ति में रहते, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक साथ-साथ किचड़े अर्थात् तमोगुणी पतित वातावरण रहते हुए भी न्यारे। जो गुण रचना में है तो मास्टर रचता में वही गुण है।

✚ इतनों की अंगुली भी मिल गई है फिर भी पहाड क्यों नहीं उठता? कल्प पहले का जो यादगार है वह सफल तब हुआ है जब सभी का संगठित रूप में बल मिला है, इसलिये थोड़ा उठता है फिर बैठ जाता है। हरेक अपनी-अपनी अंगुली लगा रहे हैं परन्तु अब आवश्यकता है संगठित रूप में। स्वयं की अंगुली दी है लेकिन अब संगठन में शक्ति तब भरेगी जब वह बल आयेगा। अब शक्ति दल की प्रत्यक्षता होनी है। सभी फूल तो बने हैं लेकिन अब गुलदस्ते में संगठित रूप में आना है। अभी कोई पुष्प कहाँ-कहाँ अपनी लात दिखा रहे हैं, कोई अपनी खुशबू दे रहा है

कोई अपना रूप दिखा रहा है। लेकिन रूप, रंग, खुशबू जब सब प्रकार के गुलदस्ते के रूप में आ जायेंगे तब दुनिया के आगे प्रत्यक्ष होंगे। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो संगठित रूप में कोई नवीनता दुनिया के आगे दिखाओ। एक-एक अलग होने के कारण मेहनत भी ज्यादा करनी पड़ती है। लेकिन संगठन में मेहनत कम सफलता जास्ती होगी। जब संगमयुग के संगठन को सफल बनायेंगे तब सर्विस की सफलता होगी।

✚ कुमारों का सदा प्योर और सतोगुणी रहने का यादगार कौनसा है, मालूम है? सनंतकुमार। उन्हीं की विशेषता क्या दिखाते हैं? उन्हीं को सदैव छोटा कुमाररूप ही दिखाते हैं। कहते हैं - उन्हीं की सदैव 5 वर्ष की आयु रहती है। यह प्योरिटी का गायन है। जैसे 5 वर्ष का छोटा बच्चा बिल्कुल प्योर रहता है ना। सम्बन्धों के आकर्षण से दूर रहता है। भल कितना भी लौकिक परिवार हो लेकिन स्थिति ऐसी हो जैसे छोटा बच्चा प्योर होता है। वैसे ही प्योरिटी का यह यादगार है। कुमार अर्थात् पवित्र अवस्था। उसमें भी सिर्फ एक नहीं, संगठन दिखलाया है। दृष्टान्त में तो थोड़े ही दिखाये जाते हैं। तो यह आप लोगों का संगठन प्योरिटी का यादगार है। ऐसी प्योरिटी होती है जिसमें अपवित्रता का संकल्प वा अनुभव ही नहीं हो। ऐसी स्थिति यादगार समान बनाकर जानी है। भट्टी में इसीलिए आये हो ना। बिल्कुल इस दुनिया की बातों से, सम्बन्ध से न्यारे बनेंगे तब दैवी परिवार के, बापदादा के और सारी दुनिया के प्यारे बनेंगे।

✚ प्रकृति के भी ज्ञानी बनो। ज्ञान सिर्फ आत्मा का नहीं। आत्मा, परम आत्मा और प्रकृति। उसमें ड्रामा भी आ जाता है। तीनों का ज्ञान चाहिए। कहाँ जा रहे हैं और अपने लिए क्या अटेन्शन चाहिए, यह प्रकृति का भी अगर नॉलेज नहीं है तो नॉलेजफुल नहीं है। स्थान का, व्यक्ति का, स्थिति तीनों का ज्ञान रखो। सिर्फ भावुक नहीं बनो, जाना ही है, लाना ही है। ज्ञान स्वरूप माना दूरादेशी, त्रिकालदर्शी, तीनों का ज्ञान अगर स्पष्ट है तो सफलता मिलती है। अगर कोई अपनी गलती से बार-बार बीमार होता है तो बापदादा उसको ज्ञान योगी नहीं कहते। ज्ञान का अर्थ है समझ। अपनी स्थिति को भी समझो, अपने शरीर को भी समझो। आत्मा की स्थिति, शरीर

की सथिति, वायुमण्डल का सब ज्ञान बुद्धि में है तो नॉलेजफुल हैं। इसीलिए सिर्फ भावना पर राजी नहीं हो जाओ। आने वाले, लाने वाले, दोनों को नॉलेजफुल होना चाहिए। जो होता है वह तो मीठा ड्रामा ही कहेंगे। हलचल में तो नहीं आयेंगे ना - अचल। लेकिन आगे के लिए अटेन्शन।

✚ जो भी श्रेष्ठ आत्माएं बनती हैं उनके हर कर्म के ऊपर सभी का अटेन्शन रहता है, क्योंकि उनके हर कर्म में कला भरी हुई है। तब तो हर कर्म के कला का मंदिरों में पूजन होता है। जो बड़े-बड़े मंदिर होंगे उनके उठने के चरित्र का दर्शन अलग होगा, सोने का अलग होगा, खाने का अलग, नहाने का अलग होगा। बहुत थोड़े मन्दिर जहाँ सभी कर्मों के दर्शन होते हैं। उसका कारण क्या है? क्योंकि हर कार्य कला के रूप में किया, इसलिए यादगार चलता है। साकार में भी हर कर्म को देखने की रूचि क्यों होती है? इतने वर्ष साथ रहते हुए, जानते हुए, समझते हुए, देखते हुए भी फिर-फिर देखने की रूचि क्यों होती है? एक कर्म भी देखना मिस नहीं करना चाहते थे। जैसे जादूगर कला दिखाते हैं तो समझते हैं - एक बात भी मिस की तो बहुत कुछ मिस होगा। क्योंकि उनके हर कर्म की कला है। इस रीति यह भी देखने की इच्छा रहती थी कि देखें कैसे सोये हुए हैं। सोने में भी कला थी। हर कर्म में कला थी। इसको कहते हैं 16 कला सम्पूर्णा।

✚ स्नेह के साथ-साथ सेवा भी विशेष सब्जेक्ट है - इसलिए स्नेह से तो समझते हैं यहाँ ही बैठ जाँ। लेकिन सेवा के हिसाब से चारों ओर जाना ही पड़े। हाँ, ऐसा भी सयम आयेगा जो जाना नहीं पड़ेगा लेकिन एक ही स्थान पर बैठे-बैठे चारों ओर के परवाने स्वतः शमा पर आयेंगे। यह तो छोटा सा सैम्पुल देखा कि आबू हमारा ही है। अभी तो किराये पर मकान लेने पड़े ना! फिर भी थोड़ी सी रौनक देखी। ऐसा समय आयेगा जो चारों ओर फरिश्ते नजर आयेंगे। अभी मुख द्वारा सेवा का पार्ट चल रहा है और अभी कुछ रहा हुआ है इसलिए दूर-दूर जाना पड़ता है। अभी श्रेष्ठ संकल्प की शक्तिशाली सेवा जो पहले भी सुनाई है, अन्त में वही सेवा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। हमें कोई बुला रहा है कोई दिव्य बुद्धि द्वारा, शुभ संकल्प का बुलावा हो रहा है,

ऐसे अनुभव करेंगे। कोई दिव्य दृष्टि द्वारा बाप और स्थान को देखेंगे। दोनों प्रकार के अनुभवों द्वारा बहुत तीव्रगति से अपने श्रेष्ठ ठिकाने पर पहुँच जायेंगे। इस वर्ष क्या करेंगे?

✚ सूक्ष्म शरीर की गति इस दुनिया के सबसे तीव्रगति के साधनों से तेज है। एक ही सेकण्ड में उसी समय अनेकों को अनुभव करा सकते हो। जो सब कहेंगे कि हमने इस समय बाप को देखा या बाप से मिले, हर एक समझेगा कि मैंने रूह - रूहान की, मैंने मिलन मनाया, मेरे को मदद मिली। क्योंकि तीव्रगति के कारण एक ही समय पर हर एक को ऐसा अनुभव होता है जैसे मैंने किया। तो फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। भल सेवा का बन्धन है, लेकिन इतना फास्ट गति है जो जितना भी करे, उतना करते हुए भी सदा फ्री है। जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा। कराते सबसे हैं लेकिन कराते हुए भी अशरीरी फरिश्ता होने के कारण सदा ही स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव होता है क्योंकि शरीर और कर्म के अधीन नहीं है। आप लोगों को भी अनुभव है - जब फरिश्ते स्थिति से कोई कार्य करते हो तो बन्धनमुक्त अर्थात् हल्कापन अनुभव करते हो ना। और जो है ही फरिश्ता; लोक भी वह, तो शरीर भी वह, तो क्या अनुभव होता होगा, जान सकते हो ना! अच्छा!

✚ आपकी यादगार का आधार किस बात पर है? जितनी-जितनी याद है उतनी-उतनी सबकी यादगार बनी हुई है। अब तक भी कायम है। आपकी याद के आधार पर सबकी यादगार बनी हुई है। अगर याद कम है तो यादगार भी ऐसा ही होगा। अगर यादगार कायम रखने का प्रयत्न करना है तो पहले याद कायम रखो। फिर उस आधार पर यादगार बनना है। हर एक के विशेष गुण पर हर एक का ध्यान जाना चाहिए। एकएक का जो विशेष गुण है वो हर एक अगर अपने में धारण करे तो क्या बन जायेंगे? सर्वगुण सपन्ना। जैसे आत्मा रूप को देखते हो ना। तो फिर जब कर्म में आते हो तो हर एक के विशेष गुण तरफ देखो। तो फिर और बातें भूल जायेंगी। गुणों को ही अपने में भरने का प्रयत्न करना है। आज माताओं को चंद्रमा का टीका लगाया है। चंद्रमा के जो गुण हैं वो अपने में धारण तो करने ही हैं परन्तु चंद्रमा का सूर्य के साथ सम्बन्ध भी

गहरा होता है। तो चंद्रमा जैसा सम्बन्ध और गुण धारण करने हैं। और चंद्रमा का कर्तव्य कौन-सा है? शीतलता के साथ-साथ रोशनी भी देता है।

✚ दीदी से बातचीत - सदा सुहागिन का गायन शास्त्रों में किस रूप में है! सदा सुहागिन का गायन पटरानियों के रूप में है - फिर पटरानियों में भी नम्बर हैं - कोई सदा साथ रहती है और कोई कभी-कभी। उन्होंने देहधारी की कहानी बना दी है - लेकिन हैं आत्माओं और परमात्मा की कहानी। जो एक ही समय पर सभी से मिलन मना सकते हैं जो भी आह्वान करे। तो पटरानियाँ तो सब बनती हैं लेकिन उनमें भी नम्बर है। प्राप्ति में भी अन्तर है और पूजन में भी अन्तर है। राधे और गोपियों में भी अन्तर है। पूजन में भी अन्तर है तो प्राप्ति में भी अन्तर है। राधे की प्राप्ति अपनी - गोपियों की अपनी। कोई विशेषता राधे के पार्ट में है और कोई विशेषता पटरानियों वा गोपियों के पार्ट में है। इसका भी गुह्य रहस्य है। मिलन मेला मनाने वाले कौन? सर्व सुखों का अनुभव परमात्म पार्ट से है - यह भी सबसे विशेष भाग्य है। इसका भी आत्माओं के विशेष पार्ट से सम्बन्ध है। संगमयुग पर विशेष यही चैक करना है कि सर्व प्राप्ति की है।

✚ मधुबन निवासियों की महिमा आज दिन तक भक्त भी गा रहे हैं और बाह्यण भी गाते हैं क्योंकि जो मधुबन धरती की महिमा है तो धरती पर रहने वालों की महिमा स्वतः ही महान हो जाती है। मधुबन में भी 4 धाम विशेष बनाये हैं। जिसकी परिक्रमा लगाते हो, तो भक्तों ने भी 4 धाम का महत्व रखा है। जैसे आज के दिन आप परिक्रमा लगाते हो, वैसे भक्तों ने फालो किया है। आप लोग भी क्यू बनाकर जाते हो, भक्त भी क्यू लगाए दर्शन के लिए इन्तजार करते हैं। जैसे भक्ति में सत वचन महाराज कहते हैं वैसे संगम पर सत वचन के साथ-साथ आपके सत कर्म महान हो जाते हैं। अर्थात् यादगार बन जाते हैं। संगमयुग की यह विशेषता है। भक्त, भगवान के आगे परिक्रमा लगाते हैं लेकिन भगवान अब क्या करते हैं? भगवान बच्चों के पीछे परिक्रमा लगाते हैं। आगे बच्चों को करते पीछे खुद चलते हैं। सब कर्म में चलो बच्चे- चलो बच्चे कहते रहते

हैं। यह विशेषता है ना। बच्चों को मालिक बनाते, स्वयं बालक बन जाते, इसलिए रोज मालेकम् सलाम कहते हैं।

✚ सुनने समय ही सब के चेहरे चेन्ज हो गये हैं तो जब सदा के लिए हो जायेंगे तो क्या हो जायेगा? सभी चलते फिरते अव्यक्त वतन के फरिश्ते नजर आयेंगे। फिर संगमयुग फरिश्तों का युग हो जायेगा। इसी फरिश्तों द्वारा फिर देवताय प्रगट होंगे। फरिश्तों का देवतायें भी इन्तजार कर रहे हैं। वह भी देख रहे हैं कि हमारे आने के लिए योग्य स्टेज तैयार है। फरिश्ता और देवता दोनों का लास्ट घड़ी मेल होगा। देवतायें आप सब फरिश्तों के लिए वरमाला लेकर के इन्तजार कर रहे हैं फरिश्तों को वरने लिए। आपका ही देवपद इन्तजार कर रहा है। देवताओं की प्रवेशता सम्पन्न शरीर में होगी ना। वह इन्तजार कर रहे हैं कि यह 16कला सम्पन्न बनें और वरमाला पहनें। कितनी कला तैयार हुई है। सूक्ष्मवतन में सम्पन्न फरिश्ते स्वरूप और देवताओं के मिलन का दृश्य बहुत अच्छा होता है। फरिश्तों के बजाए जब पुरुषार्थी स्वरूप होता तो देवतायें भी दूर से देखते रहते। समय के प्रमाण समीप आते-आते भी सम्पन्न न होने के कारण रह जाते हैं।

✚ विशेष आत्माओं के हर कदम में पद्यों की कमाई है। बड़ों का सहयोग भी छत्रछाया बन चार चांद लगा देता है। जहाँ भी जाओ वहाँ सभी को एक-एक के नाम से यादप्यार स्वीकार कराना। नाम की माला तो भक्ति में बच्चों ने बहुत जपी। अभी बाप यह माला शुरू करेंगे तो बड़ी माला हो जायेगी। इसलिए जो भी जहाँ भी बच्चे (विशेष आत्मायें) जाते हैं - वहाँ विशेष उमंग-उत्साह बढ़ जाता है। विशेष आत्माओं का जाना अर्थात् सेवा में और विशेषता आना। यहाँ से शुरू होता है - सिर्फ धरनी में चरण घुमाकर जाना। तो चरण घुमाना माना चक्र लगाना। यहाँ सेवा में चक्र लगाते हो, वहाँ भक्ति में उन्होंने चरण रखने का महत्व बनाया है। लेकिन शुरू तो सब यहाँ से ही होता है। चाहे आधा घण्टा, एक घण्टा भी कहाँ जाते हो तो सब खुश हो जाते हैं। लेकिन यहाँ सेवा होती है। भक्ति में सिर्फ चरण रखने से खुशी अनुभव करते हैं। सब स्थापना यहाँ से ही हो रही है। पूरा ही भक्ति मार्ग का फाउण्डेशन यहाँ से ही पड़ता है, सिर्फ रूप बदली जो जायेगा।

✚ बाकी दादियां पूछती हैं - बापदादा का प्रोग्राम क्या होगा? यही क्वेश्चन है ना! तो बापदादा कहते हैं जैसे अब तक प्रोग्राम चल रहा है, उसी विधि से चलना ही है। बाकी कभी आवश्यकता हुई तो दादियों की दिल पूरी करेंगे, लेकिन आवश्यकता हुई तो। दादी समझती है बाप का आना तो बहुत सहज है ना। क्यों नहीं बापदादा आवे। लेकिन रथ को भी तो देखो। 33 वर्ष पार्ट बजाना भी आफरीन है। इतनी बड़ी शक्तियों को धारण करना, छोटी बात नहीं है। दादी क्या करती है बतायें, कोई भी बात होगी कहेगी अभी-अभी जाओ, सन्देश लेके आओ। तो बच्ची कहती है दादी अभी तो दिन है, रात को जायेंगे। नहीं, नहीं, अभी-अभी जाओ। मरना तो पड़ता है ना। शरीर से तो मरना पड़ता है ना। चाहे सन्देश हो, चाहे बापदादा की पधरामनी हो। पधरामनी तो बड़ी बात है लेकिन सन्देश में भी अशरीरी, मीठा मरना है लेकिन मरना तो है ना! इसलिए फिर भी बापदादा का दादियों के लिए बहुतबहुत- बहुत रिगार्ड और प्यार है। प्यार की रस्सी में बांधना अच्छी तरह से आता है।

✚ आज मिलने के लिए बुलाया है। यह अव्यक्त मिलन अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर ही मना सकते हो। समझ सकते हो? आज देख रहे हैं - कौन-कौन कितने शक्ति-स्वरूप बने हैं? आप लोगों के चित्रों में नम्बरवार शक्तियों का यादगार दिखाया हुआ है। शक्तियों की परख किन चित्रों द्वारा कर सकते हैं, मालूम है? आपको अपने शक्तियों को परखने का चित्र मालूम नहीं है! भिन्न-भिन्न नम्बरवार शक्तियों का यादगार बना हुआ है। अपना चित्र भूल गये हो! शक्तियों के चित्रों में भिन्न-भिन्न रूप से और फिर भुजाओं के रूप में नम्बरवार शक्तियों का यादगार है। उन चित्रों में कहाँ कितनी भुजायें, कहाँ कितनी दिखाते हैं। कोई अष्ट शक्तियों को धारण करने वाली बनती हैं, कोई उससे अधिक, कोई उससे कम। कहाँ 4 भुजाएं, कहाँ 8 भुजाएं, कहाँ 16 भी दिखाते हैं, नम्बरवार। तो आज देख रहे हैं - हरेक ने कितनी शक्तियों की धारणा की है। मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हैं ना। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् सर्व शक्तियों को धारण करने वाले।

✚ संगमयुग पर तो दिलतख्त के अधिकारी सबको बाप बनाते हैं। भविष्य में राजे-महाराजे तो बनेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर वाला तख्त जो फर्स्ट लक्ष्मी नारायण वाला होगा उसके तख्तनशीन कौन होंगे? छोटे-छोटे तख्त और राज्य दरबार तो लगेगी लेकिन विश्व-महाराजन के तख्त का विशेष आधार है- हर बात में, हर सब्जेक्ट में बाप को पूरा फालो करने वाले। अगर एक भी सब्जेक्ट में फालो करने में कमी पड़ गई तो फर्स्ट तख्त के अधिकारी नहीं बन सकते। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी पद पा लेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर का ताज और तख्त उसके लिए बापदादा दोनों को हर बात में फालो करना पड़े। तब तख्त भी फालो में मिलेगा। हर बात में, हर संस्कार में, हर संकल्प में फालो फादर करना है। इसके आधार पर नम्बर भी बनेंगे। तख्त वहीं मिलेगा लेकिन उसमें भी नम्बर होंगे। सेकेण्ड लक्ष्मी-नारायण और आठवाँ लक्ष्मी-नारायण अन्तर तो होगा ना। यह फालो में अन्तर पड़ जाता है। इसमें भी गुह्य रहस्य है। महाराजा बनना और महारानी बनने का भी रहस्य है।

✚ पवित्र आत्मा होने के कारण अभी बापदादा को प्रिय हो और अपने राज्य में सर्व के प्रिय होंगे। द्वापर में भक्तों के प्रिय देव आत्मायें बनेंगे। इस समय हो 'परमात्मा-प्रिय ब्राह्मण आत्मायें'। और सतयुग त्रेता में होंगे राज्य अधिकारी परम श्रेष्ठ दैवी आत्मायें और द्वापर से अब कलियुग तक बनते हो पूज्य आत्मायें। तीनों में से श्रेष्ठ हो इस समय - परमात्मा प्रिय ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्मायें। इस समय की श्रेष्ठता के आधार पर सारा कल्प श्रेष्ठ रहते हो। देख रहे हो कि इस लास्ट जन्म तक भी आप श्रेष्ठ आत्माओं का भक्त लोग कितना आह्वाहन कर रहे हैं। कितना प्यार से पुकार रहे हैं। जड़ चित्र जानते भी आप श्रेष्ठ आत्माओं की भावना से पूजा करते, भोग लगाते, आरती करते हैं। आप डबल विदेशी समझते हो कि हमारे चित्रों की पूजा हो रही है! भारत में बाप का कर्तव्य चला है इसलिए बाप के साथ आप सबके चित्र भी भारत में ही हैं। ज्यादा मन्दिर भारत में बनाते हैं। यह नशा तो है न कि हम ही पूज्य आत्मायें हैं।

✚ भले मधुबन का वातावरण अपना है लेकिन महारथी जहाँ जाते वहाँ भी मधुबन का वातावरण बनाते हैं। जंगल को मंगल बना सकते तो सेन्टर को मधुबन नहीं बना सकते! मधुबन की तो अविनाशी महानता है वह कभी कम नहीं हो सकती। क्योंकि यहाँ महान आत्मा और परम-आत्मा के बहुतकाल की शक्तिशाली वायब्रेशनस कण-कण में भरे हुए हैं। कण-कण में परमात्मा नहीं लेकिन वायब्रेशनस भरे हुए हैं। मधुबन की महानता और भी बढ़ती जायेगी। जैसे अमेरिका का व्हाइट हाउस मशहूर है। तो यह विश्व का पीस हाउस-मधुबन प्रसिद्ध होगा। सभी की नजर इस तरफ जायेगी। चाहे पहुँच न भी सकें लेकिन अटेन्शन जरूर जायेगा। आकर्षण होगी, बुद्धि द्वारा भी अनुभव करने की कोशिश करेंगे। ऐसे समय पर यह शक्तियाँ काम आयेंगी। उन्हीं को संकल्प की शक्ति का सहयोग दे, संकल्प शक्ति के विमान द्वारा मधुबन पहुँचा सको। आपसे इस विमान की माँगनी करेंगे। इतनी शक्ति शुभ श्रेष्ठ संकल्पों की जमा करो जो कईयों का पर-उपकार कर सको। बहुत काल के वरदान का पूरा-पूरा लाभ उठाना।

✚ सच्ची सीता वह, जिसकी नस-नस में राम के स्मृति का आवाज हो- अपने को सच्ची सीता समझते हो? सच्ची सीता अर्थात् हर कदम श्रीमत की लकीर के अन्दर। तो सदा लकीर के अन्दर रहते हो ना? राम एक है, बाकी सब सीतायें हों। सीता को लकीर के अन्दर ही बैठना है। सदा बाप की याद, सदा बाप की श्रीमत- ऐसी लकीर के अन्दर रहने वाली सच्ची सीता। एक कदम भी बिना श्रीमत के नहीं। जैसे ट्रेन को पटरी पर खड़ा कर देते हैं तो आटोमेटिकली रास्ते पर चलती रहती है, ऐसे ही रोज अमृततवेले याद की लकीर पर खड़े हो जाओ। अमृतवेला है फाउन्डेशन। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन ठीक हो जायेगा। प्रवृत्ति में रहने वालों का विशेष अमृतवेले का फाउन्डेशन पक्का होना चाहिए तो सारा दिन स्वतः सहयोग मिलता रहेगा। लौकिक प्रवृत्ति में रहते भी सदा एक बाप की सच्ची सीता बनकर रहो। सीता को सदा राम ही याद रहे। नस-नस में राम के स्मृति की आवाज हो- ऐसी सच्ची सीताएं हो ना! इसी को कहा जाता है न्यारा और प्यारा। जितना न्यारे उतना बाप के प्यारे।

✚ जो भी सेकेण्ड-सेकेण्ड कदम चलता है वह तुम्हारा संस्कार आपको जो भक्त और प्रजा है, उनमें भरता जायेगा। जैसे माँ के पेट में गर्भ होता है तो कितनी सम्भाल करते हैं। क्योंकि माँ जो करेगी जो खायेगी वह संस्कार बच्चे में भरेंगे। तो आप सभी को भी इतना ध्यान रखना है जो कर्म हम करेंगे हमको देख हमारी प्रजा और हमारे द्वापर से कलियुग तक के भक्त भी ऐसे बनेंगे। मंदिर भी ऐसा बनेगा। मूर्ति भी ऐसी बनेगी, मंदिर को स्थान भी ऐसा मिलेगा। इसलिए हमेशा लक्ष्य रखो कि हम अभी अकेले नहीं हैं। हम मास्टर रचयिता के साथ रचना भी है। माँ बाप जब अकेले होते हैं तो जो भी करें। लेकिन अपनी रचना के सामने होते हैं तो कितना ध्यान देते हैं। तो आप भी रचयिता हो! जो रचयिता करेंगे वही रचना करेगी। जब अपने ऊपर जिम्मेवारी समझेंगे तो जिम्मेवारी पड़ने से अलबेलापन और आलस्य खत्म हो जायेगा। कौन सी जिम्मेवारी? जो कर्म हम करेंगे। हरेक सितारे को अपनी दुनिया की परख रखनी है। फिर कोई की छोटी दुनिया है, कोई की बड़ी दुनिया है।

✚ यह श्रेष्ठ गति सिर्फ संगमयुग पर ही आप ब्राह्मणों को प्राप्त है। इसलिए कहते हैं - 'जैसी मत वैसी गत'। वो लोग तो समझते हैं मरने के बाद गति मिलेगी, इसलिए 'अंत मति सो गति' कहते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए इस अंतिम मरजीवा जन्म में हर कर्म की सफलता का फल अर्थात् गति प्राप्त होने का वरदान मिला हुआ है। वर्तमान और भविष्य - सदा गति-सदगति है ही है। भविष्य की इंतजार में नहीं रहते हो। संगमयुग की प्राप्ति का यही महत्व है। अभी-अभी कर्म करो और अभी-अभी प्राप्ति का अधिकार लो। इसको कहते हैं - एक हाथ से दो, दूसरे हाथ से लो। कभी मिल जायेगा वा भविष्य में मिल जायेगा, यह दिलासे का सौदा नहीं है। 'तुरंत दान महापुण्य', ऐसी प्राप्ति है। इसको कहते हैं - झटपट का सौदा। भक्ति में इंतजार करते रहो - मिल जायेगा, मिल जायेगा। भक्ति में है कभी और बाप कहते हैं - अभी लो। आदि स्थापना में भी आपकी प्रसिद्धता थी कि यहां साक्षात्कार झटपट होता है। और होता भी था। तो आदि से झटपट का सौदा हुआ।

✚ शुभभावना और शुभकामना की सूक्ष्म सेवा सभी बच्चे बाप के विश्व-कल्याण के कार्य में निमित्त बने हुए साथी हैं। सभी के मन में सदा यही एक संकल्प है कि विश्व की परेशान आत्माओं का कल्याण हो जाये। चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते मन में यही शुभभावना है। भक्ति-मार्ग में भी भावना होती है। लेकिन भक्त आत्माओं की विशेष अल्पकाल के कल्याण प्रति भावना होती है। आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों की ज्ञानयुक्त कल्याण की भावना आत्माओं के प्रति सदाकाल और सर्वकल्याणकारी भावना है। आपकी भावना वर्तमान और भविष्य के लिए है कि हर आत्मा अनेक जन्म सुखी हो जाए, प्राप्तिओं से सम्पन्न हो जाए। क्योंकि अविनाशी बाप द्वारा आप आत्माओं को भी अविनाशी वर्षा मिला है। आपकी भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है और आगे चल प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा। आप आत्माओं की श्रेष्ठ भावना इतना श्रेष्ठ फल प्राप्त कराने वाली है! इसलिए विश्व-कल्याणकारी आत्माएं गाई जाती हो। इतना अपनी शुभभावना का महत्त्व जानते हो?

✚ सबसे अच्छा पार्ट संगमयुग का कहेंगे। लेकिन आपका देव आत्मा का पार्ट भी विश्व में सारे चक्र की आत्माओं से श्रेष्ठ है। चाहे धर्म आत्मायें, महान आत्मायें भी पार्ट बजाती हैं लेकिन वो आत्मा और शरीर दोनों से पवित्र नहीं हैं और आप देव आत्मायें शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हैं, जो सारे कल्प में और कोई आत्मा ऐसी नहीं। तो पवित्रता का फाउण्डेशन सिवाए आपके और कोई भी आत्मा का श्रेष्ठ नहीं है। आपको देव आत्मा का पार्ट याद है? पाण्डवों को याद है? देव आत्मा की पवित्रता नेचुरल रूप में रही है। महान आत्मायें, आत्माओं को पवित्र बनाती हैं लेकिन बहुत पुरुषार्थ से, नेचुरल नहीं। न नेचुरल है न नेचर रूप में है। और आपकी आधा कल्प पवित्रता की जीवन नेचुरल भी है और नेचर भी है। कोई पुरुषार्थ वहाँ नहीं है। यहाँ का पुरुषार्थ वहाँ नेचुरल हो जाता है। क्योंकि वहाँ अपवित्रता का नाम-निशान नहीं, मालूम ही नहीं कि अपवित्रता भी होती है। इसलिए आपके पवित्रता का प्रैक्टिकल स्वरूप देवता अर्थात् दिव्यता का है।

✚ जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुँच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। लेकिन एक बात वृत्ति द्वारा सेवा करने में रूकावट डाल रही है, वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलता है। आपके जड़ चित्र अब तक, लास्ट जन्म तक वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं ना! देखा है ना! मन्दिर देखे हैं ना! डबल फारेनर्स ने मन्दिर देखे हैं? नहीं देखे हों तो देख लेना क्योंकि आपके ही मन्दिर हैं ना! कुमारियां आपके मन्दिर हैं या इन्डिया वालों के मन्दिर हैं? सभी के मन्दिर हैं, अच्छा। मुबारक हो। मन्दिर की मूर्तियां प्रत्यक्ष रूप में वायब्रेशन द्वारा सेवा कर रहे हैं अर्थात् आप आत्मायें मन्दिर की मूर्तियां सेवा कर रही हैं। कितने भक्त वायब्रेशन द्वारा अपनी सर्व इच्छायें पूर्ण कर रहे हैं। तो हे चैतन्य मूर्तियां, अब अपने शुभ भावना की वृत्ति, शुभ कामनाओं की वृत्ति से वायुमण्डल में वायब्रेशन फैलाओ। लेकिन, लेकिन कहना अच्छा नहीं लगता लेकिन कहना पड़ता है।

✚ माला के मणके आपको ही बनना है या औरों का इंतजार कर रहे हो? फर्स्ट डिवीजन में आना है ना कि सेकण्ड भी चलेगा? तो यह दृढ़ संकल्प अर्थात् व्रत लो कि जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। और जो खुश रहेगा वो खुशी की मिठाई बांटता रहेगा। उस मिठाई से तो सिर्फ मुख मीठा होता है और इससे मन, तन, दिल सब खुश हो जाते हैं। तो यह मीठा बांटना है। और गीत सदा क्या गाते हो? मीठा बाबा, प्यारा बाबा, मेरा बाबा-यही गीत गाते हो ना सदा यह गीत ऑटोमेटिक बजता रहे। ऐसे नहीं, सेल खत्म हो जाये तो गीत खत्म हो जाये। बैटरी स्लो हो जाये। नहीं। जब बैटरी स्लो होती है, तो पता है कैसे गीत गाते हो? सबको अनुभव तो है ना। फिर क्या होता है? मेरा है तो बाबा, तो तो आ जाता है। सिर्फ मेरा बाबा नहीं कहेंगे, मेरा है तो बाबा। मिक्स हो गया ना। बैटरी स्लो होती है तो आवाज स्लो हो जाता है और उसमें तो तो शब्द एड हो जाता है। मेरा बाबा फलक से नहीं, मेरा है तो बाबा। तो शिवरात्रि मनाना अर्थात् ये दृढ़ व्रत लेना। ऐसी शिवरात्रि मनाई ना?

✚ स्वप्न में भी मैं-पन न हो, इसको कहा जाता है, अश्वमेध यज्ञ में मैंपन के अश्व को स्वाहा करना। यही अन्तिम आहुति है। और इसी के आधार पर ही अन्तिम विजय के नगाड़े बजेंगे। संगठन रूप में इस अन्तिम आहुति का दिल से आवाज़ फैलाओ। फिर यह पांचों तत्व सदा सब प्रकार की सफलताओं की माला पहनायेंगे। अब तक तो तत्व भी सेवा में कहीं-कहीं विघ्न रूप बनते हैं। लेकिन स्वाहा की आहुति देने से आरती उतारेंगे। खुशी के बाजे बजायेंगे। सब आत्मायें अपनी बहुत काल की इच्छाओं की प्राप्ति करते हुए महिमा के घुंघरू पहन नाचेंगी। तब तो अन्तिम भक्ति के संस्कार मर्ज होंगे। ऐसी भक्त आत्माओं को भक्त-पन का वरदान भी अभी ही आप इष्टदेव आत्मा द्वारा मिलेगा। कोई को भक्त तू आत्मा का वरदान, कोई को आत्मज्ञानी भव का वरदान। सर्व आत्माओं को अभी वरदानी बन वरदान देंगे। साकारी राज्य करने वालों को राज्यपद का वरदान देंगे। ऐसे वरदानीमूर्त्त कामधेनु आत्मायें बने हो? जो आत्मा जो मांगे तथास्तु। ऐसी आत्माओं को सदा समीप और साथी कहा जाता है।

✚ विश्व के महाराजन् जो बनने वाले हैं, उन्हीं की अभी निशानी क्या होगी? यह भी ब्राह्मणों का विश्व है अर्थात् छोटा सा संसार है तो जो विश्व महाराजन् बनने हैं उन्हीं का इस विश्व अर्थात् बाह्यणकुल की हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। जो यहाँ इस छोटे से परिवार, सर्व के सम्बन्ध में आयेंगे वह वहाँ विश्व के महाराजन बनेंगे। जब स्नेह के फूल यहाँ बरसेंगे तब इतने जड़ चित्रों पर भी फूल बरसेंगे। तो यहाँ भी अपने को देखो कि मुझ आत्मा के ऊपर कितने स्नेह के पुष्पों की वर्षा हो रही है। वह छिप नहीं सकेंगे। जितने स्नेह के पुष्प उतने द्वापर में पूजा के पुष्प चढ़ेंगे। कहाँ-कहाँ कोई पुष्प चढ़ाने लिये कभी-कभी जाते हैं और कहाँ तो हर रोज और बहुत पुष्पों की वर्षा होती है। मालूम है? इसका कारण क्या? तो यही लक्ष्य रखो कि सर्व के स्नेह के पुष्प पात्र बने। स्नेह कैसे मिलता है? एक-एक को अपना सहयोग देंगे तो सहयोग मिलेगा। और जितने के यहाँ सहयोगी बनेंगे उतने के स्नेह के पात्र बनेंगे। और ऐसा ही फिर विश्व के महाराजन् बनेंगे।

✚ हरेक अपने आपको जानते हो कि हम कौनसा रत्न हैं? कितने प्रकार के रत्न होते हैं? (8 रत्न हैं) आप कितने नम्बर के रत्न हो? हीरे के संग रह हीरे समान नहीं बने हो? रत्न तो सभी हो लेकिन एक रत्न है, जिनको कहते हैं नूर-ए-रत्न। तो क्या सभी नूर-ए-रत्न नहीं हो? एक तो नूर-ए-रत्न, दूसरे हैं गले की माला के रत्न। तीसरी स्टेज क्या है, जानते हो? तीसरे हैं हाथों के कंगन के रत्न। सभी से फर्स्ट नम्बर हैं नूर-ए-रत्न। वह कौन बनते हैं? जिनके नयनों में सिवाय बाप के और कुछ भी देखते हुए भी देखने में नहीं आता है। वह हैं नूर-ए-रत्न। और जो अपने मुख से ज्ञान का वर्णन करते हैं लेकिन जैसा पहला नम्बर सुनाया कि सदैव नयनों में बाप की याद, बाप की सूरत ही सभी को दिखाई दे-उसमें कुछ कम हैं, वह गले द्वारा सर्विस करते हैं, इसलिए गले की माला का रत्न बनते हैं। और तीसरा नम्बर जो हाथ के कंगन का रत्न बनते हैं उनकी विशेषता क्या है? किस-न-किस रूप से मददगार बनते हैं। तो मददगार बनने की निशानी यह बांहों के कंगन के रत्न बनते हैं।

✚ अब समय है इसलिए बापदादा कहते हैं पहले स्व को मुक्ति दो, फिर विश्व की सर्व आत्माओं को प्राप्ति, मुक्ति देने की अंचली दो। वह पुकार रहे हैं, आपको क्या दुःखियों की पुकार का आवाज नहीं आता? अगर अपने में ही बिजी होंगे तो आवाज सुनने नहीं आता। बार-बार गीत गा रहे हैं - दुःखियों पर कुछ रहम करो...। अभी से दयालु, कृपालु, मर्सीफुल संस्कार बहुतकाल से नहीं भरेंगे तो आपके जड़ चित्र में मर्सीफुल का, कृपा का, रहम का, दया का वायब्रेशन कैसे भरेगा। डबल फॉरेनर्स समझते हैं, आप भी द्वापर में मर्सीफुल बनके सबको मर्सी देंगे ना! जड़ चित्रों द्वारा। चित्रों के पास जाके क्या माँगते हैं? मर्सी, मर्सी की धुन लगा देते हैं। तो अभी संगम पर आप अपने द्वापर कलियुग के समय के लिए जड़ चित्रों के वायुमण्डल भरेंगे तब आपके जड़ चित्रों के द्वारा अनुभव करेंगे। भक्तों का कल्याण तो होगा ना! भक्त भी हैं तो आपकी वंशावली ना। आप सभी ग्रेट ग्रेट ग्रैंड फादर की सन्तान हो तो भक्त हैं, चाहे दुःखी हैं, लेकिन हैं तो आपकी ही वंशावली।

✚ पुरुषोत्तम आत्माओं का कर्तव्य भी सर्वश्रेष्ठ है। उठा, खाया-पीया, काम किया-यह साधारण कर्म नहीं, साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ स्थिति हो। जो देखते ही महसूस करे कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। जैसे-जो असली हीरा होगा वह कितना भी धूल में छिपा हुआ हो लेकिन अपनी चमक जरूर दिखायेगा, छिप नहीं सकता। तो आपकी जीवन हीरे तुल्य है ना। कैसे भी वातावरण में हों, कैसे भी संगठन में हों लेकिन जैसे हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता, ऐसे पुरुषोत्तम आत्माओं की श्रेष्ठ झलक सबको अनुभव होनी चाहिए। तो ऐसे है या दफ्तर में जाकर, काम में जाकर आप भी वैसे ही साधारण हो जाते हो? अभी गुप्त में हो, काम भी साधारण है। इसीलिए पाण्डवों को गुप्त रूप में दिखाया है। गुप्त रूप में राजाई नहीं की, सेवा की। तो दूसरों के राज्य में गवर्नेट-सर्वेन्ट कहलाते हो ना। चाहे कितना भी बड़ा आफीसर हो लेकिन सर्वेन्ट ही है ना। तो गुप्त रूप में आप सब सेवा-धारी हो लेकिन सेवाधारी होते भी पुरुषोत्तम हो। तो वह झलक और फलक दिखाई दे।

✚ शक्तियों के मुख्य दो गुण गाये जाते हैं। शक्तियों की विशेषता यह होती है कि जितना ही प्रेममूर्त उतना ही संहारीमूर्त होती है। शक्तियों के नयन सदैव प्रेममूर्त होते हैं, लेकिन जितना ही प्रेममूर्त उतना ही विकराल रूप भी होते हैं। एक सेकंड में किसको भी प्रेममूर्त भी बना सकती तो एक सेकंड में किसका विनाश भी कर सकती हैं। तो ऐसे ही दोनों गुण अपने में देखती हो? दोनों गुण प्रत्यक्ष रूप में आते हैं व गुप्त रूप में? प्रेमरूप प्रत्यक्ष और शक्ति रूप गुप्त है। जैसे स्थूल खजाने को व्यर्थ नहीं करते हो वैसे शिव शक्तियाँ जिनकी मूर्त में दोनों गुण प्रत्यक्ष रूप में हैं उन्हीं का एक भी संकल्प व्यर्थ नहीं होता। एक-एक संकल्प से स्वयं का और सर्व का कल्याण होता है। एक सेकंड में, एक सेकंड से भी कल्याण कर सकते हैं। इसलिए शक्तियों को कल्याणी कहते हैं। जैसे बापदादा कल्याणकारी है वैसे बच्चों का भी कल्याणकारी नाम प्रसिद्ध है। अब तो इतना हिसाब देखना पड़े। हमारे कितने सेकंड में, कितने संकल्प सफल हुए, कितने असफल हुए।

✚ अब कौन हो? अब मास्टर रचयिता, जगत्-माताएं नहीं बनी हो? विश्व के उद्धार मूर्त नहीं बनी हो? विश्व के आधार मूर्त नहीं बनी हो? जैसे शक्तियों का गायन है कि एक सेकेण्ड की दृष्टि से असुर संहार करती है। तो क्या अपने से आसुरी संस्कार वा अपवित्रता को सेकेण्ड में संहार नहीं किया है? वा दूसरों प्रति संहारनी हो, अपने प्रति नहीं? अब तो माया अगर सामना भी करे तो उसकी क्या हालत होनी चाहिए? जैसे छुईमुई का वृक्ष देखा है ना। अगर कोई भी मनुष्य का ज़रा भी हाथ लगता है तो शक्तिहीन हो जाती है। उसमें टाइम नहीं लगता। तो आप के सिर्फ एक सेकेण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया छुईमुई माफिक मूर्च्छित हो जानी चाहिए। ऐसी स्थिति नहीं आई है? अब तो यही सोचो कि विश्व के कल्याण प्रति ही थोड़ा-सा समय रहा हुआ है। नहीं तो विश्व की आत्माएं आप लोगों को उलहना देंगी कि - आप लोगों ने 35 वर्षों में इतनी पालना ली, फिर भी कहती हो 'योगी भव', 'पवित्र भव' बन रहे हैं, और हमको कहती हो 4 वर्ष में वर्सा ले लो। फिर आपका ही उलहना आपको देंगे।

✚ जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे यह सभी का वायदा है और बाप की गारन्टी है कि चलायेंगे। तो बुद्धि को क्या आर्डर दिया हुआ है? बुद्धि को बाप ने क्या कार्य दिया है - उसको जानते हो ना? बुद्धि के बैठने का स्थान बाप के पास में है। कर्तव्य विश्व सेवा का है। तो जो वायदा किया है जहाँ बिठायेंगे जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे। शरीर से या बुद्धि से? तन के साथ मन भी दिया है या सिर्फ तन दिया है? तन और बुद्धि से जहाँ बिठायें, जैसे चलायें, जो करायें, जो खिलायें, वहीं करेंगे - यह वायदा किया हुआ है ना? तो बुद्धि का भोजन है - शुद्ध संकल्प। जो खिलाएं वही खायेंगे - यह वायदा है तो फिर व्यर्थ संकल्प का भोजन क्यों करते हो? जैसे मुख द्वारा तमोगुणी भोजन, अशुद्ध भोजन नहीं खा सकते हो, ऐसे ही बुद्धि द्वारा व्यर्थ संकल्प वा विकल्प का अशुद्ध भोजन कैसे खा सकते हो? जो खिलायेंगे, वह खायेंगे फिर तो यह राँग हो जाता है। कहना और करना समान करने वाले हो ना? तो मन बुद्धि के लिए सदा यह भी वायदा याद रखो तो सहज योगी बन जावेंगे।

✚ जैसे शुरू-शुरू में जोश था कि जिन्होंने हमको गिराया है उन्हीं को ही संदेश देना है। बीच में प्रजा के विस्तार में चले गये। लेकिन जो आदि में था वह अंत में भी आना है। जैसे माया की जंजीरों से छुड़ाने के लिए मेहनत करते हैं। वैसे यह भी बड़ी जंजीर है और अब तो दिन-प्रतिदिन यह जंजीरें मोहिनी रूप लेते हुए अपनी तरफ खिंचती जा रही हैं वा अल्पकाल की बुद्धि द्वारा प्राप्ति कराते हुए अपनी जंजीर में फंसाते जाते हैं। उन्हीं से सभी को कब छुड़ायेंगे? अंतिम प्रभाव का साधन यही है जिसका गायन भी है कि चींटी महारथी को भी गिरा देती है। गायन तो कमालियत का होता है ना। साधरण जनता को सुनाते रहते हो, वह क्या बड़ी बात है। यह तो वह मिलावट वाले भी करते हैं। झूठे लोग भी अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। लेकिन जो अपने को महारथी समझते हैं उन्हीं के पोल खोल दो। उन्हीं को झुकाओ तब कमाल है। ऐसी कमाल दिखाने के लिये कुछ बुद्धि चलती है? असत्य को असत्य सिद्ध करो तब तो सत्य की जय हो। जय-जयकार होगी ही तब। फिर इतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं।

✚ क्योंकि संगमयुग के पुरुषार्थ के अनुसार पूज्य बनेंगे। पूज्य के हिसाब से नम्बरवार पुजारी बनेंगे। पुजारी भी नम्बरवन बनते हो। फिर लास्ट जन्म भी देखो कितना अच्छा रहा। जो अच्छे पुरुषार्थी है उनका लास्ट जन्म भी इतना अच्छा रहा तो आगे क्या होगा। यह तो सुख के हिसाब से दुःख कहा जाता है। जैसे कोई साहुकार हो और थोड़ा गरीब बन जाए तो कहने में तो आता है ना। कोई बड़े आदमी को थोड़ा आधा डिग्री भी बुखार हो तो कहेंगे फलाने को बुखार आ गया लेकिन अगर गरीब को 5 डिग्री भी ज्यादा बुखार हो जाए तो कोई पूछता भी नहीं। तो आप भी इतने दुःखी होते नहीं हो लेकिन अति सुखी के हिसाब से दुःखी कहा जाता है। लास्ट जन्म में भी भिखारी तो नहीं बने ना! दर-दर दो रोटी माँगने वाले तो नहीं बने। इसलिए कहा - पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है और प्रारब्ध का समय बहुत बड़ा है। प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ है और कितने समय के लिए यह स्मृति में रहे तो क्या स्टेज हो जायेगी? श्रेष्ठ हो जायेगी ना! तो सेवाधारी बनना अर्थात् पूरे कल्प मेवे खाने के अधिकारी बनना।

✚ शक्तियाँ अपने शक्ति स्वरूप, सदा शस्त्रधारी, सदा निर्भय, सर्व आसुरी संस्कारों का संहार करने वाली तथा प्रकृति और मायाजीत बनने वाली - ऐसे अपने स्वभाव में सदा स्थित रहती हैं? शक्तियों के यादगार चित्र में मायाजीत की निशानी है - शस्त्र और लाइट का क्राउन और प्रकृति जीत की निशानी है-शेर की सवारी। यह पशु-पक्षी आदि प्रकृति की निशानी हैं। प्रकृति के तत्व भी शक्ति-स्वरूप को भयभीत नहीं कर सकते। प्रकृति पर भी सवारी अर्थात् अधिकार। प्रकृति भी उनकी दासी बन गई अर्थात् उनका सत्कार कर रही है। ऐसे सदा विजयी हो? सदा सुजाग की निशानी तिलक गाया हुआ है-जो सदा बाप के साथ हैं - वह सदा विजय का तिलक अपने माथे पर लगाता रहेगा। स्मृति में रहना अर्थात् तिलक लगाना। सदा यह स्मृति रहे कि मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, अभी की नहीं। पहले बेहोश थे - बेहोश अर्थात् जिसको अपना होश नहीं। मैं हूँ कौन यह भी पता नहीं तो बेहोश हुआ ना? अब तो सुरजीत हो। सुरजीत कभी बाप को भूल नहीं सकते। यही सदा याद रखो कि 'मैं हूँ ही सदा विजयी।' अच्छा।

✚ तो बापदादा तपस्या जो कह रहे हैं - वह सिर्फ दिन रात बैठे-बैठे तपस्या के लिए नहीं कह रहे हैं। तपस्या में बैठना भी सेवा ही है। लाइट हाउस, माइट हाउस बन शान्ति की, शक्ति की किरणों द्वारा वायुमण्डल बनाना है। तपस्या के साथ मन्सा सेवा जुड़ी हुई है। अलग नहीं है। नहीं तो तपस्या क्या करेंगे! श्रेष्ठ आत्मा - ब्राह्मण आत्मा तो हो गये। अब तपस्या अर्थात् स्वयं सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन दृढ़ स्थिति, दृढ़ संकल्प द्वारा विश्व की सेवा करना। सिर्फ वाणी वी सेवा, सेवा नहीं है। जैसे 'सुख-शान्ति-पवित्रता' का आपस में सम्बन्ध है वैसे 'त्याग-तपस्या-सेवा' का सम्बन्ध है। बापदादा तपस्वी रूप अर्थात् शक्तिशाली सेवाधारी रूप बनाने के लिए कहते हैं। तपस्वी रूप की दृष्टि भी सेवा करती। उनका शान्त स्वरूप चेहरा भी सेवा करता, तपस्वी मूर्त के दर्शन मात्र से भी प्राप्ति की अनुभूति होती है। इसलिए आजकल देखो जो हठ से तपस्या करते हैं, उनके दर्शन के पीछे भी कितनी भीड़ हो जाती है। यह आपकी तपस्या के प्रभाव का यादगार अन्त तक चला आ रहा है।

✚ बम्बई में जास्ती पूजा किसकी होती है? गणेश की। उसको विघ्न-विनाशक कहते हैं, गणेश का अर्थ है मास्टरनॉलेज- फुल, विद्यापति। मास्टर नॉलेजफुल कभी हार नहीं खा सकते। क्योंकि नॉलेज को ही लाइट-माइट कहते हैं। फिर मंज़िल पर पहुँचना सहज हो जाता है। मंज़िल पर पहुँचने के लिए लाइट माइट दोनों चाहिए। अपनी सूरत को ऐसा करना है - जो आपकी सूरत से बापदादा दोनों दिखाई दें। जो भी कर्म करते हो वह हर कर्म में बापदादा के गुण प्रत्यक्ष हों। बापदादा के मुख्य गुण कौन से वर्णन करते हो? ज्ञान, प्रेम, आनन्द, सुख-शान्ति का सागर। जो भी कर्म करो वह सब ज्ञान सहित हों। हर कर्म द्वारा सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति, आनंद का अनुभव हो। इसको कहते हैं बाप के गुणों की समानता। आपको समझाने की आवश्यकता नहीं। आपके कर्म देख उन्होंने के दिल में संकल्प उठे कि यह किसके बच्चे, किस द्वारा ऐसे बने। स्टूडेंट भी अगर पढ़ने में अच्छा स्कॉलरशिप लेने वाला होता है तो उनको देख टीचर की याद आती है। इसलिए कहावत है स्टूडेंट शोज़ टीचर यह भी सर्विस करने का तरीका है।

✚ अभी तक इन पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनियाँ से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से वैराग्य नहीं हुआ है। कहाँ भी जाना होता है तो जिन चीजों को छोड़ना होता है उनसे पीठ करनी होती है। तो अभी पीठ करना नहीं आता है। एक तो पीठ नहीं करते हो, दूसरा जो साधन मिलता है उसकी पीठ नहीं करते हो। सीता और रावण का खिलौना देखा है ना। रावण के तरफ सीता क्या करती है? पीठ करती है ना। अगर पीठ कर दिया तो सहज ही उनके आकर्षण से बच जायेंगे। लेकिन पीठ नहीं करते हो। जैसे श्मशान में जब नज़दीक पहुँचते हैं तो पैर इस तरफ और मुँह उस तरफ करते हैं ना। तो यह भी पीठ करना नहीं आता है। फिर मुँह उस तरफ कर लेते हैं, इसलिए आकर्षण में कहाँ फँस जाते हैं। तो दोनों ही प्रकार की पीठ करने नहीं आती है। माया बहुत आकर्षण करने के रूप रचती है। इसलिए न चाहते हुए भी पीठ करने के बजाय आकर्षण में आ जाते हैं। उसी आकर्षण में पुरुषार्थ को भूल, आगे बढ़ने को भूल रूक भी जाते हैं; तो क्या होगा? मंज़िल पर पहुँचने में देरी हो जायेगी।

✚ सभी के सिर पर कितना सुन्दर लाइट का ताज चमक रहा है। इसी लाइट के क्राउन के बीच आत्मा की निशानी कितनी चमकती हुई मणि मुआफिक चमक रही है। अपना ताजधारी स्वरूप देख रहे हो! हरेक दिव्य गुणों के शृंगार से कितने सुन्दर सजी-सजाई मूर्त हो। ऐसा सुन्दर शृंगार, जिससे विश्व की सर्व आत्मायें आपके तरफ न चाहते हुए भी स्वतः ही आकर्षित होती हैं। ऐसा श्रेष्ठ अविनाशी शृंगार किया है? जो इस समय के शृंगार का यादगार आपके जड़ चित्रों को भी सदा ही भक्त लोग सुन्दर से सुन्दर सजाते रहेंगे। अभी का शृंगार, आधा कल्प चैतन्य देव-आत्मा के रूप में शृंगारे जायेंगे और आधा कल्प जड़ चित्रों के रूप में शृंगारे जायेंगे। ऐसा अविनाशी शृंगार बापदादा द्वारा सर्व बच्चों का अभी हो गया है! बापदादा आज हर बच्चे के तीनों ही स्वरूप वर्तमान और अपने राज्य का देव आत्मा का और फिर भक्ति मार्ग में यादगार चित्र, तीनों ही स्वरूप हरेक बच्चे के देख हर्षित हो रहे हैं। आप सब भी अपने तीनों रूपों को जान गये हो ना! तीनों ही अपने रूप नालेज के नेत्र द्वारा देखे हैं ना!

✚ आज भारत के बच्चों के मेले का प्रोग्राम प्रमाण लास्ट दिन है। तो मेले की अन्तिम टुब्बी है। इसका महत्व होता है। इस महत्व के दिन जैसे उस मेले में जाते हैं तो समझते हैं - जो भी पाप हैं वह भस्म करके खत्म करके जाते हैं। तो सबको 5 विकारों को सदा के लिए समाप्त करने का संकल्प करना, यही अन्तिम टुब्बी का महत्व है। तो सभी ने परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प किया? छोड़ना नहीं है लेकिन बदलना है। अगर दुश्मन आपका सेवाधारी बन जाए तो दुश्मन पसन्द है या सेवाधारी पसन्द है? तो आज के दिन चेक करो और चेन्ज करो तब है मिलन मेले का महत्व। समझा क्या करना है? ऐसे नहीं सोचना - चार तो ठीक हैं बाकी एक चल जायेगा। लेकिन एक चार को भी वापस ले आयेगा। इन्हों का भी आपस में साथ है इसलिए रावण के शीश साथ-साथ दिखाते हैं। तो दशहरा मना के जाना है। प्रकृति जीत, विकार जीत 10 हो गये ना। तो विजय दशमी मना के जाना। खत्म कर जलाकर राख साथ नहीं ले जाना। राख भी ले जायेंगे तो फिर से आ जायेंगे। भूत बनकर आ जायेंगे। इसलिए वह भी ज्ञान सागर में समाप्त करके जाना।

✚ फिर मैं-मन में मोह वश होकर चलते हो। तो मैं-पन लाना या मेरा समझना यह भी झूठ हुआ ना? कहना तेरा और करना मेरा - झूठ हुआ ना? वायदा करते हो तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैटूँ, तुम्हीं से बोलूँ और तुम्हीं से सर्व- सम्बन्ध निभाऊँ - लेकिन प्रैक्टिकल में अन्य आत्माओं से भी सम्बन्ध व सम्पर्क रखते हो। बाप की स्मृति के बजाय अन्य स्मृति भी साथ-साथ रखते हो। तो यह भी खून हुआ ना? वायदा है कि मेरा तो एक बाप, दूसरा न कोई। अगर वह नहीं निभाते तो यह भी झूठ हुआ। ऐसे ही धोखा और ठगी कौनसी करते हो? सबसे बड़ा धोखा स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित कर देते हो - यह हुआ स्वयं को धोखा देना। धोखे की निशानी है जिससे दुःख की प्राप्ति होती है। साथ-साथ ब्राह्मण परिवार में भी धोखा देते हो। कहना एक और करना दूसरा, अपनी कमजोरी को छिपाकर बाहर से अपना नाम बाला करना या अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना। यह एक दूसरे को धोखा देते हो। कोई भी गलती करके छिपाना यह भी धोखा देना है व ठगी करना है।

✚ ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मा मुख वंशावली। हर ब्राह्मण आत्मा के भाग्य को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। हर ब्राह्मण आत्मा को जन्मते ही स्वयं ब्रह्मा बाप द्वारा मस्तक में स्मृति का तिलक लगता है। स्वयं भगवान तिलकधारी बनाते हैं। साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को पवित्रता के महामन्त्र द्वारा लाइट का ताज धारण कराते हैं और साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को विश्व-कल्याणकारी आत्मा बनाए जिम्मेवारी का ताज धारण कराते हैं। डबल ताज है और भगवान स्वयं अपने दिल तख्तनशीन बनाते हैं। तो जन्मते ही तिलक, ताज और तख्तधारी बन जाते हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में कोई आत्मा का नहीं हो सकता। तो इतने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति रहती है कि हम ब्राह्मण जन्मते ही ऐसे भाग्यवान बनते हैं? आप ब्राह्मणों की निशानी दुनिया वालों ने कृष्ण रूप में दिखा दी है। लेकिन वह विश्व का राजकुमार है इसलिए राज्य की निशानी तिलक, ताज, तख्त देते हैं। फिर भी उसको छोटे-पन में तिलक ताज, तख्त नहीं मिलता लेकिन आप ब्राह्मणों को तिलक, ताज और तख्त तीनों ही प्राप्त होता है।

✚ मनजीत अर्थात् मन के व्यर्थ संकल्प, विकल्प जीत है। ऐसे जीते हुए बच्चे विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं। इसलिए 'मन जीते जगतजीत' गाया हुआ है। जितना इस समय संकल्प-शक्ति अर्थात् मन को स्व के अधिकार में रखते हो उतना ही विश्व के राज्य के अधिकारी बनते हो। अभी इस समय ईश्वरीय बालक हो और अभी के बालक ही विश्व के मालिक बनेंगे। बिना बालक बनने के मालिक नहीं बन सकते। जो भी हृद के मालिकपन का हृद का नशा है उसे समाप्त कर हृद के मालिकपन से बालकपन में आना है तब ही 'बालक सो मालिक' बनेंगे। इसलिए भक्ति मार्ग में भी कितना कोई भी देश का बड़ा मालिक हो, धन का मालिक हो, परिवार का मालिक हो लेकिन बाप के आगे सब "बालक तेरे" कह कर ही प्रार्थना करते हैं। मैं फलाना मालिक हूँ ऐसे कभी नहीं कहेंगे। तुम ब्राह्मण बच्चे भी बालक बनते हो तब ही अभी भी बेफकर बादशाह बनते हो और भविष्य में विश्व के मालिक या बादशाह बनते हो। "बालक सो मालिक हूँ" यह स्मृति सदा निर-अंहकारी, निराकारी स्थिति का अनुभव कराती है। बालक बनना अर्थात् हृद के जीवन का परिवर्तन होना।

✚ कई बच्चों को क्वेश्चन भी उठता है कि यही रथ निमित्त क्यों बना? दूसरे तो क्या इनको (गुल्जार बहिन को) भी उठता है। लेकिन जैसे ब्रह्मा भी अपने जन्मों को नहीं जानते थे ना, यह भी अपने वरदान को भूल गई है। यह विशेष साकार ब्रह्मा का आदि साक्षात्कार के पार्ट समय का बच्ची को वरदान मिला हुआ है। ब्रह्मा बाप के साथ आदि समय एकान्त के तपस्वी स्थान पर इस आत्मा के विशेष साक्षात्कार के पार्ट को देख ब्रह्मा बाप ने बच्ची के सरल स्वभाव, इनोसेन्ट जीवन की विशेषता को देख यह वरदान दिया था कि जैसे अभी इस पार्ट में आदि में ब्रह्मा बाप की साथी भी बनी और साथ भी रही ऐसे आगे चल बाप के साथी बनने की, समान बनने की ड्यूटी भी सम्भालेगी। ब्रह्मा बाप के समान सेवा में पार्ट बजायेगी। तो वो ही वरदान तकदीर की लकीर बन गये और ब्रह्मा बाप समान रथ बनने का पार्ट बजाना यह नूँध नूँधी गई। फिर भी बापदादा इस पार्ट बजाने के लिए बच्ची को भी मुबारक देते हैं। इतना समय इतनी शक्ति को एडजस्ट करना, यह एडजस्ट करने की विशेषता की लिफ्ट के कारण एक्स्ट्रा गिफ्ट है।

✚ देखो, अगर आप डबल विदेशी नहीं बनते तो सेवा में भाषाओं की कितनी प्रॉब्लम होती! एक खास स्कूल बनाना पड़ता सब भाषाएँ सीखने के लिए। अभी सहज सेवा तो हो रही है ना। तो सेवा अर्थ विदेश में पहुँच गये हो। राज्य भारत में करना है ना। विश्व ही भारत बन जायेगा। अमेरिका आदि सब भारत बन जायेगा। अभी तो टुकड़ा-टुकड़ा हो गया है। सभी ने महा-भारत से अपना-अपना टुकड़ा ले लिया है। जो लिया है वो देना पड़ेगा ना। क्योंकि भारत महादानी है, इसलिए सबको टुकड़ा- टुकड़ा दे दिया है। आपको कहना नहीं पड़ेगा कि हमको टुकड़ा दे दो, आपेही देंगे। तो सदैव बेहद का नशा रखो कि हम सभी बेहद के राज्य-अधिकारी हैं! स्व-राज्य की स्थिति द्वारा विश्व के राज्य की अपनी तकदीर को जान सकते हैं। अगर अभी स्वराज्य ठीक नहीं है तो समझ लो-विश्व का राज्य भी पहले नहीं मिलेगा, पीछे मिलेगा। तो सभी के पास दर्पण है ना। नारद को आड़ना दिया ना कि-''देखो मैं कौन हूँ? लक्ष्मी को वरने वाला हूँ?'' तो यह स्वराज्य की स्थिति दर्पण है। इस दर्पण में आप स्वयं ही देख सकते हैं कि क्या बनने वाला हूँ?

✚ महाकाली स्वरूप शक्तियों का संगठन चाहिये जो अपने योग-अग्नि के प्रभाव से इस वातावरण को परिवर्तन करे। अभी तो ड्रामा अनुसार हर एक चलन रूपी दर्पण में अन्तिम रिजल्ट स्पष्ट होने वाली है। आगे चल कर महारथी बच्चे अपने नॉलेज की शक्ति द्वारा हर एक के चेहरे से उन्हीं की कर्म-कहानी को स्पष्ट देख सकेंगे। जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं की वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होगी। इसका यन्त्र है बुद्धि की लाइन क्लियर। जिसका यह यन्त्र पॉवरफुल होगा वह सहज जान सकेंगे। शक्तियों व देवताओं के जड़ चित्रों में भी यह विशेषता है, जो कोई भी पाप-आत्मा अपना पाप उन्हीं के आगे जाकर छिपा नहीं सकती। आपेही यह वर्णन करते रहते हैं कि हम ऐसे हैं! यह स्वतः ही वर्णन करते रहते। तो जड़ यादगार में भी अब अन्तकाल तक यह

विशेषता दिखाई देती है। चैतन्य रूप में शक्तियों की यह विशेषता प्रसिद्ध हुई है, तब तो यादगार में भी है। यह है मास्टर जानीजाननहार की स्टेज, अर्थात् नॉलेजफुल की स्टेज।

✚ अपने राज्य में प्रकृति आप सबकी दासी होगी। वैसे भी दासियाँ बहुत होंगी और प्रकृति के पांचों ही तत्व सदा आज्ञाकारी सेवाधारी होंगे। लेकिन अपना राज्य स्थापन करने के लिए पुराने को ही नया बनाना है। पुरानी में सेवाधारी बनना ही पड़ता है। अभी की यह सेवा जन्म-जन्मान्तर की सेवा से मुक्त कर देती है। इस सेवा के फलस्वरूप प्रकृति और चैतन्य सेवाधारी आपके चारों ओर घूमते रहेंगे। हाजिर मालिक, हाँ जी मालिक, यही सदा मीठा-मीठा साज सुनते रहेंगे। इसलिए सदाकाल की सर्व प्राप्ति के आगे यह थोड़ा बहुत सहन करना भी सहन करना नहीं लगता। श्रेष्ठ सेवा के नशे और खुशी में सहन करना एक चरित्र रूप में बदल जाता है। भागवत आप सबके सहन शक्ति के चरित्रों का यादगार है। तो सहन करना नहीं लेकिन यादगार चरित्र बन रहे हैं। अभी तक भी यही गायन सुन रहे हो कि भगवान के बच्चों ने बाप के मिलन के स्नेह में क्या-क्या किया। गोपी वल्लभ के गोप गोपिकाओं ने क्या-क्या किया। तो यह सहन करना नहीं लेकिन सहन ही शक्तिशाली बना रहे हैं। सहन शक्ति से मास्टर सर्वशक्तिवान बनते हो।

✚ देख रहे हो उनकी तैयारियाँ जैसे भक्त लोग देवियों की, देवताओं की, शक्तियों की, सालिग्राम रूप की पूजा करते हुए जोर शोर से आह्वान कर रहे हैं - अपनी प्यारी निद्रा को भी त्याग चिल्ला-चिल्ला कर आप सबका आह्वान कर रहे हैं कि कहीं हमारी वरदानी, महादानी आत्मायें व हमारे इष्ट देव हमारी भी सुन लें। अप्राप्ति से प्राप्ति ज़रा दे। ऐसे ही अब समय समीप होने के कारण भक्तों के साथ-साथ प्रकृति भी आपका आह्वान कर रही है, कि कब हमारे सतोप्रधान मालिक हमारे ऊपर राजी हो राज्य करेंगे और प्रकृति भी सतोप्रधान चोला धारण करेगी। इनके आह्वान के साथ दूसरी ओर बापदादा भी आह्वान कर रहे हैं कि समान और सम्पूर्ण बन कर सूक्ष्म वतन निवासी फरिश्ता बनकर बाप के साथ घर चलें। चलना है या संगम ज्यादा भाता है? क्या एवर-रेडी बन गये हो? जहाँ बिठायें, जिस रूप में बिठायें और जब तक बिठायें ऐसे

वायदे में सदा स्थित रहते हो? लास्ट ऑर्डर रूहानी मिलिट्री को कितने समय में मिलेगा? एक सेकेण्ड का ऑर्डर होगा। एक घण्टा पहले इतला नहीं होगी। तब तो आठ रत्न निकलते हैं।

✚ शिव जयन्ती अर्थात् परमात्म जयन्ती को महाशिवरात्रि क्यों कहते हैं? सिर्फ शिव रात्रि नहीं कहते लेकिन महाशिवरात्रि कहते हैं क्योंकि इस अवतरित दिवस पर शिव बाप ब्रह्मा दादा और ब्राह्मणों ने महान संकल्प का व्रत लिया कि विश्व को पवित्रता के व्रत से महान श्रेष्ठ बनायेंगे। विशेष आदि देव ब्रह्मा अपने निमित्त ब्राह्मण आदि बच्चों के साथ इस महान व्रत लेने के निमित्त बने, तो महान बनाने के व्रत लेने का दिव्य दिवस है। इसलिए महा शिवरात्रि कहा जाता है। और आप ब्राह्मण बच्चों ने यह महान व्रत लिया इसके यादगार स्वरूप में आज तक भी भक्त लोग व्रत रखते हैं। यह महान जयन्ती प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। एक तरफ प्रत्यक्ष होने की जयन्ती है, दूसरी तरफ प्रतिज्ञा लेने की जयन्ती है। आदि समय में आप सभी जो भी निमित्त बने, आदि देव के साथ आदि रत्न निकले उन्हीं की प्रतिज्ञा का प्रत्यक्ष फल आप सभी प्रत्यक्ष हुए। देखो कहाँ कहाँ कोनों में चले गये थे। कितने कोने में चले गये लेकिन बाप ने मिट्टी में छिपे हुए अपने हीरे-तुल्य बच्चों को ढूँढ लिया ना।

✚ यही उमंग और निश्चय हरेक में होना आवश्यक है कि हम सम्पूर्ण बने और सर्व को बनायेंगे। यही उमंग-उत्साह सदा कायम रहे तो अवश्य ही लक्ष्य की प्राप्ति हो जायेगी। और बाप-दादा को निश्चय है ऐसे सम्पूर्ण ही इस यज्ञ कुण्ड से निकलेंगे। कुण्ड का यादगार देखा है? यह तो जो भी स्थान है सभी यह ही है लेकिन फिर भी यज्ञ कुण्ड का महत्व होता है। वैसे भी देखा होगा गंगा और यमुना दोनों का महत्व है लेकिन फिर भी काम का महत्व ज्यादा है। वहाँ नहाना श्रेष्ठ माना जाता है। गंगा-यमुना तो बहुत स्थानों पर होती है लेकिन फिर भी विशेष काम पर नहाने क्यों जाते हैं? उनका विशेष महत्व क्या है? काम के महत्व को अच्छी तरह से जानते हो ना। जैसे विशेष स्थानों का विशेष महत्व होता है, इसी प्रकार मधुवन की भट्टी का भी विशेष महत्व है। इस भट्टी से सम्पूर्णता की सौगात बाप द्वारा मिलती है। यह मिलन का अर्थात् संगम का

विशेष सौभाग्य बच्चों को मिलता है, यह मिलन ही सम्पूर्णता की सौगात के रूप में है। इस मिलन का ही यह काम यादगार है। तो यह मिलना ही सम्पूर्णता की सौगात है।

✚ परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई सतोप्रधान पवित्रता कितनी शक्तिशाली होगी। इस श्रेष्ठ पवित्रता की शक्ति के आगे अपवित्रता झुकी हुई नहीं लेकिन आपके पांव के नीचे हैं। अपवित्रता रूपी आसुरी शक्ति, शक्ति स्वरूप के पांव के नीचे दिखाई हुई है। जो पांव के नीचे हारी हुई है, हार कैसे खिला सकती है! ब्राह्मण जीवन और हार खाना इसको कहेंगे नामधारी ब्राह्मण। इसमें अलबेले मत बनो। ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है - पवित्रता की शक्ति। अगर फाउण्डेशन कमजोर है तो प्राप्ति की 21 मंजिल वाली बिल्डिंग कैसे टिक सकेगी? यदि फाउण्डेशन हिल रहा है तो प्राप्ति का अनुभव सदा नहीं रह सकता अर्थात् अचल नहीं रह सकते। और वर्तमान युग को वा जन्म की महान प्राप्ति का अनुभव भी नहीं कर सकते। युग की, श्रेष्ठ जन्म की महिमा गाने वाले ज्ञानी-भक्त बन जायेंगे। अर्थात् समझ है लेकिन स्वयं नहीं हैं, इसको कहते हैं - ज्ञानी- भक्त। अगर ब्राह्मण बनकर सर्व प्राप्ति का, सर्व शक्तियों का वरदान या वर्सा अनुभव नहीं किया तो उसको क्या कहेंगे? वंचित आत्मा वा ब्राह्मण आत्मा?

✚ लवली भी हूँ और लक्की भी हूँ - यह दोनों ही स्मृति में रहने से कब माया का लॉक नहीं लग सकता। इसलिये अपने कल्प पहले के यादगारों को फिर से याद में रह कर रिपीट करें। अब भी देखो अगर कोई यादगार युक्तियुक्त नहीं बनाते हैं तो ऐसे यादगार को देख कर संकल्प आवेगा कि यह युक्तियुक्त नहीं बना हुआ है। कोई देवियों वा शक्तियों का चित्र युक्तियुक्त नहीं बनाते हैं तो देखते हुए सभी को संकल्प आता है कि यह ठीक नहीं है। ऐसे ही, अपने कर्मों को देखो, अपने हर समय के रूप वा रूहाब को देखो कि इस समय के मेरे रूप और रूहाब का यादगार क्या बनेगा? क्या युक्तियुक्त यादगार बनेगा? जब युक्तियुक्त यादगार चित्र होता है तो उसचित्र की भी कितनी वैल्यु होती है। तो ऐसे देखो हमारे हर समय के हर चरित्र की वैल्यु है? अगर नहीं तो यादगार चित्र भी वैल्युएबल भले नहीं बन सकता। समझा? तो ऐसा समय समीप आ गया

है जो आपके हर संकल्प के चरित्र रूप में यादगार बनेंगे, आपके एक-एक बोल सर्व आत्माओं के मुख से गायन होंगे। तो अपने को ऐसे पूजनीय और गायन योग्य समझ कर हर कर्म करें।

✚ जैसे आत्म-ज्ञानियों को भी यह सिद्धि होती है कि जबान से कोई बोल न भी बोले लेकिन वह क्या बोलना चाहते हैं वह समझ जाते हैं, क्या करने वाला है उनको पहले परख लेते हैं। तो यहाँ भी यह परखने की शक्ति सिद्धि के रूप में प्राप्त होगी। लेकिन सिर्फ इन शक्तियों को यथार्थ रीति से कार्य में लाना है -- न व्यर्थ गँवायें, न व्यर्थ कार्य में लगायें। फिर यह सिद्धि व शक्ति बहुत कल्याण के निमित्त बनती है। यह भी आयेगी। जिसको देखते हुए सबके मुख से शक्तियों की महिमा जो भक्ति में निकली है - आप यह हो, यह हो! यह सब महिमा पहले प्रत्यक्ष रूप में होगी। जो फिर यादगार में चलती आयेगी। यह भी स्टेज होनी है लेकिन थोड़े समय के लिए और थोड़ों की। इसलिए कहते हैं कि जो अन्त तक होंगे उनको यह सब नज़ारे देखने और अनुभव होने के प्राप्त होंगे। अन्त तक अंगुली देने लिये पार्ट भी ऐसे शक्तियों के होंगे ना? शक्ति व पाण्डव। लेकिन शक्ति स्वरूप के होंगे, कमज़ोरों के नहीं। बिल्कुल साथ-साथ होगा। एक तरफ हाहाकार और दूसरी तरफ जयजयकार। वह भी अति में और यह भी अति में होगा।

✚ आप सोचेंगे कि हमने पाप तो किया ही नहीं, किसको दुःख तो दिया ही नहीं लेकिन अगर व्यर्थ चला, समय गया, संकल्प गया, सन्तुष्टता गई तो आपके पवित्रता की फाइनल स्टेज के डिग्री में फर्क पड़ जायेगा। 16 कला नहीं बन सकेंगे। 15 कला, 14 कला, साढ़े पन्द्रह कला..... नम्बरवार हो जायेगा। तो अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो। निकल गया, बोलना नहीं था लेकिन बोल लिया, तो इसको क्या कहेंगे? मालिक हैं? इसीलिये अमृतवेले से लेकर रात तक अपने संकल्प, बोल, कर्म, सेवा-सबको चेक करो। मोटे रूप से नहीं चेक करो। अगर मोटे रूप से चेक करेंगे तो देखो चन्द्रवंशी को मोटी निशानी तीर-कमान दिया है और सूर्यवंशी को कितनी छोटी-सी मुरली दे दी है। मुरली कितनी हल्की

है! और तीर कमान कितना मेहनत का है। पहले तो निशाना लगाते रहो, दूसरा बोझ उठाते रहो! और मुरली देखो-नाचो, गाओ, हंसो, खेलो। तो इसीलिये मोटे-मोटे रूप न पुरुषार्थ का रखो, न चेकिंग का रखो। अभी महीन बुद्धि बनो।

✚ वर्तमान संगम समय पर और साथ-साथ भविष्य में भी आपके राज्य में सहयोग देने वाले विज्ञानी आत्मायें, वह भी कितनी मेहनत कर रहे हैं। क्या-क्या इन्वेन्शन निकाल रहे हैं। अभी भी आप जो सुन रहे हो, वैज्ञानियों के सहयोग (माइक, हैडफोन आदि) कारण सुन रहे हो। रिफाइन इन्वेन्शन तैयार कर आप श्रेष्ठ आत्माओं को गिफ्ट में दे चले जायेंगे। इन आत्माओं का भी कितना त्याग है! कितनी मेहनत है! कितना दिमाग है! मेहनत खुद करते और प्रालब्ध आपको देते। इन आत्माओं को भी आफरीन और थैंक्स तो देंगे ना! विश्व कल्याणकारी इन आत्माओं के कल्याण की भी विधि संकल्प में आती है? वा यह समझकर छोड़ देते कि यह तो नास्तिक हैं, यह क्या जानें? लेकिन नास्तिक हैं वा आस्तिक हैं, फिर भी बच्चे तो हैं ना! आपके भाई तो हैं! ब्रदरहुड के नाते से भी इन आत्माओं को भी किसी प्रकार से वर्सा तो मिलेगा ना! विश्व-कल्याणकारी के रूप में इस तरफ आपके कल्याण की नजर नहीं तो जायेगी! वा इन आत्माओं के तरफ कल्याण की नजर नहीं डालेंगे? यह भी अधिकारी हैं। हरेक के अधिकार लेने का रूप अपना-अपना है।

✚ पहले भी सुनाया था कि हरेक अपनी स्टेज के अनुसार, अपने हिसाब से नम्बर वन तो बनेंगे ना! उनके लिए तो वही नम्बर वन गोल्डन स्टेज होगी ना! सबसे श्रेष्ठ नम्बर वन स्टेज, उसके हिसाब से तो अन्त में बन ही जायेंगे ना! अपने हिसाब से सम्पन्न और सम्पूर्ण तो बनेंगे ही ना! सारे कल्प के अन्दर उस आत्मा की नम्बरवन श्रेष्ठ स्टेज तो वही होगी ना! उस हिसाब में नम्बरवार होते भी नम्बरवन बन जायेंगे। हरेक आत्मा की अपनी सम्पूर्ण स्टेज है। जैसे ब्रह्मा की पुरुषार्थी और सम्पूर्ण स्टेज दोनों देखी और अनुभव भी कर रहे हो कि सम्पूर्ण स्टेज पर पहुँचने से क्या-क्या विशेषताएं अव्यक्त रूप में भी पार्ट में ला रहे हैं। जैसे ब्रह्मा बाप की सम्पूर्ण स्टेज

और पुरुषार्थी स्टेज, दोनों का अन्तर अनुभव कर रहे रहो वैसे हर एक ब्राह्मण आत्मा का भी सम्पूर्ण स्टेज का स्वरूप है। जो अव्यक्त वतन में बापदादा इमर्ज कर देखते रहते हैं और दिखा भी सकते हैं। उसी सम्पूर्ण स्वरूप को देखते हुए बापदादा देख रहे हैं कि हरेक के सम्पूर्ण स्वरूप कितने रूहानी और झलक और फलक वाले हैं।

✚ भक्ति मार्ग में बिना समझ के भी कहावत है और उनकी मान्यता भी है अगर पत्ता भी हिल रहा है उस पत्ते को हिलाने वाला भी बाप है। लेकिन इस रहस्य को आप जानते हो कि उन पत्तों को बाप नहीं हिलाता लेकिन ड्रामा अनुसार यह सब चल रहा है। यह गायन कोई स्थूल पत्तों से नहीं लगता, लेकिन कल्प वृक्ष के आप सब पहले पत्ते हो। संगमयुगी आप सब गोल्डन एजेड पत्ते जो बाप द्वारा लोहे से पारस बन गये हो, इन चैतन्य पत्ते को इस समय डायरेक्ट बाप चला रहे हैं। बाप की डायरेक्शन है कि संकल्प भी जो बाप का हो, वह आपका संकल्प हो। हर संकल्प बाप-समान, हर बोल बापसमान, हर कर्म बाप-समान हो अर्थात् इसी श्रीमत के आधार पर आप सभी का संकल्प चलता है। तो इस समय आप सभी पत्तों को श्रीमत के आधार पर हर समय बाप चला रहे हैं। पत्ते-पत्ते को हिला रहा है अर्थात् चला रहा है। अगर श्रीमत के सिवाए संकल्प भी करते हो तो वह व्यर्थ संकल्प हो जाता है तो यह जो कहावत है, वह भक्ति के समय की नहीं लेकिन संगम समय का गायन है। तो आप सभी पत्ते बाप की श्रीमत पर ही हिल रहे हो अर्थात् चल रहे हो ना।

✚ तो आपको राज्य प्राप्ति का राज्य-तिलक भी है और सदा श्रेष्ठ कार्य और सफलता है, इसलिए भी सदा तिलक है। सदा बाप के साथ का सुहाग है, इसलिए भी तिलक है। तो अविनाशी तिलक है। कभी मिट तो नहीं जाता है? जब अविनाशी बाप मिला तो अविनाशी बाप द्वारा तिलक भी अविनाशी मिल गया। सुनाया था ना-अभी स्वराज्य का तिलक है और भविष्य में विश्व के राज्य का तिलक है। स्वराज्य मिला है कि मिलना है? कभी गंवा भी देते हो? सदैव फलक से कहो कि हम कल्प-कल्प के अधिकारी हैं ही! इस समय स्वराज्य अधिकारी और

भविष्य में हैं विश्व-राज्य अधिकारी और फिर द्वापर-कलियुग में पूजनीय के अधिकारी बनेंगे, इसलिए पूज्य अधिकारी। आप सबकी पूजा होगी। अपने मन्दिर देखे हैं? डबल विदेशियों का मन्दिर है? दिलवाला मन्दिर में आप बैठे हो? क्योंकि जो ब्राह्मण बनते हैं वो ब्राह्मण देवता बनेंगे और देवताओं की पूजा होगी। अगर पक्के ब्राह्मण हो तो पक्का ही पूजन होगा। कच्चे ब्राह्मण हैं तो शायद पूजन होगा। डबल विदेशी सभी पक्के हो? पक्के थे, पक्के हैं और पक्के रहेंगे-ऐसे है ना। अच्छा! सभी पक्के हो?

✚ बार-बार विघ्नों के वश जो होते उन्हीं का फाउण्डेशन कच्चा हो जाता है और बहुत काल की निर्विघ्न आत्मायें फाउण्डेशन पक्का होने के कारण स्वयं भी शक्तिशाली, दूसरों को भी शक्तिशाली बनाती हैं। कोई भी चीज़ टूटी हुई चीज़ को जोड़ने से वह कमज़ोर हो जाती है। बहुतकाल की शक्तिशाली आत्मा, निर्विघ्न आत्मा अन्त में भी निर्विघ्न बन पास विद आनर बन जाती है या फर्स्ट डिवीजन में आ जाती है। तो सदा यही लक्ष्य रखो कि बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति का अनुभव अवश्य करना है। ऐसे नहीं समझो - विघ्न आया, मिट तो गया ना। कोई हर्जा नहीं। लेकिन बार-बार विघ्न आना और मिटाना इसमें टाइम वेस्ट जाता है। एनर्जी वेस्ट जाती है। वह टाइम और एनर्जी सेवा में लगाओ ते एक का पदम जमा हो जायेगा। इसलिए बहुतकाल की निर्विघ्न आत्मायें, विघ्न विनाशक रूप से पूजी जाती हैं। 'विघ्न विनाशक' टाइटिल पूज्य आत्माओं का है। 'मैं विघ्न विनाशक पूज्य आत्मा हूँ' - इस स्मृति से सदा निर्विघ्न बन आगे उड़ती कला द्वारा उड़ते चलो और उड़ाते चलो। समझा। अपने विघ्न विनाश तो किये लेकिन औरों के लिए विघ्न विनाशक बनना है।

✚ विजय की निशानी होती है त्रिशूल। त्रिशूल मन, वाणी, कर्म तीनों में सफलता की निशानी, विजय की निशानी है। शक्तियों के चित्रों में भी त्रिशूल दिखाते हैं। तो हरेक के मस्तक में यह विजय की निशानी त्रिशूल है। त्रिशूल के ऊपर दूसरी रेखा व निशानी है बिन्दी। तीसरी रेखा फिर है त्रिशूल के नीचे जो लम्बी लाइन होती है, वह निशानी है लाइन क्लीयर और केयरफुल

की। केयरफुल भी और क्लीयर भी। मार्ग के बीच में कोई भी रूकावट न आये। तो तीसरी निशानी है सीधा मार्ग पर एकरस हो चलने वाले। तीनों ही रेखायें वा निशानियाँ हरेक के मस्तक पर देख रहे हैं। रेखायें सभी की होती हैं लेकिन कोई की स्पष्ट होती हैं, कोई की स्पष्ट नहीं होती हैं। तो आपने अपनी लकीरें देखीं? त्रिशूल है, लाइन क्लीयर भी है और आत्मिक स्थिति की बिन्दी भी है। भक्त लोग भी मस्तक में तिलक की निशानी रखते हैं। आप लोगों को मस्तक में लगाने की आवश्यकता नहीं है। सदैव अपने मस्तक की इन रेखाओं से अपनी स्थिति को परख सखते हो। तीनों ही रेखायें तेज होनी चाहिए, तब ही साक्षात्कारमूर्त बन सकते हो वा अपने कर्तव्य को सफल कर सकते हो।

✚ यह होली का उत्सव आप पावन आत्माओं के पावन बनने की विधि का यादगार है। क्योंकि आप सभी नम्बरवार पावन आत्मायें बाप के याद की लग्न की अग्नि द्वारा सदा के लिए अपवित्रता को जला देते हो। इसलिए पहले जलाने की होली मनाते हैं, फिर रंग की होली वा मंगल - मिलन मनाते हैं। जलाना अर्थात् नाम - निशान समाप्त करना। वैसे किसको नाम - निशान से खत्म करना होता है तो क्या करते हो? जला देते हैं। इसलिए रावण को भी मारने के बाद जला देते हैं। यह आप आत्माओं का यादगार है। अपवित्रता को जला दिया अर्थात् पावन 'होली' बन गये। बापदादा सदैव सुनाते ही हैं कि ब्राह्मणों का होली मनाना अर्थात् होली (पवित्र) बनाना। तो यह चेक करो कि अपवित्रता को सिर्फ मारा है या जलाया है? मरने वाले फिर भी जिन्दा हो जाते हैं, कहाँ - न - कहाँ श्वास छिपा रह जाता है। लेकिन जलना अर्थात् नाम - निशान समाप्त करना। कहाँ तक पहुँचे हैं, अपने आप को चेक करना पड़े। स्वप्न में भी अपवित्रता का छिपा हुआ श्वास फिर से जीवित नहीं होना चाहिए। इसको कहते हैं - श्रेष्ठ पावन आत्मा। संकल्प से स्वप्न भी परिवर्तित हो जाते हैं।

✚ कोई न कोई एसी वन्डरफुल (Wonderfull) बात होगी जिसके आधार पर आप सबकी उम्मीदें पूरी हो जावेंगी। अष्ट रत्नों की विशेषता एक विशेष बात से है। अष्ट रतन प्रैक्टिकल

(practical) में जैसे यादगार हैं विशेष तो जो अष्ट शक्तियाँ हैं वह हर शक्ति उनके जीवन में प्रैक्टिकल दिखाई देगी। अगर एक शक्ति भी प्रैक्टिकल जीवन में कम दिखाई देती तो जैसे अगर मूर्ति की एक भुजा खण्डित हो तो पूजनीय नहीं होती इसी प्रकार से अगर एक शक्ति की भी कमी दिखाई देती तो अष्ट देवताओं की लिस्ट (List) में अब तक फिक्स नहीं कहे जायेंगे। दूसरी बात अष्ट देवताएं भक्तों के लिए विशेष इष्ट माने जाते हैं। इष्ट अर्थात् महान पूज्य। इष्ट द्वारा हर भक्त को हर प्रकार की विधि और सिद्धि प्राप्त होती है। यहाँ भी जो अष्ट रतन होंगे वह सर्व ब्राह्मण परिवार के आगे अब भी इष्ट अर्थात् हर संकल्प और चलन द्वारा विधि और सिद्धि का मार्ग दर्शन करने वाले सबके सामने अब भी ऐसे ही महानमूर्त माने जायेंगे। तो अष्ट शक्तियाँ भी होंगी और परिवार के सामने इष्ट अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, महान आत्मा, वरदानी आत्मा के रूप में होंगी।

✚ बापदादा के लिये गुलदस्ता पार्टी है। उसमें देखना है कि मैं कौन-सा फूल हूँ, गुलाब हूँ या चमेली हूँ? हर एक की विशेषता को तो आप जानते हो ना? कमल और गुलाब में क्या अन्तर है? कमल का पुष्प कमाल करने में प्रवीण। अनुभव करने में गुलाब का फूल है। यहाँ बापदादा स्वयं ही फूलों में सर्व विशेषताएं भर रहे हैं। साइंस (साइंस) वाले भी एक में कई चीजें पैदा करते हैं ना? यह कहाँ से सीखा? यहाँ एक-एक में अनेक प्रकार के फूलों का रस भरना। जो गायन है 'तुम्हारी गत-मत तुम्हीं जानो' क्या से क्या बना देना यही गत है ना? एक-एक में सब रस भर देना, सर्व-पुष्पों की जो भी विशेषताये हैं उनमें सर्व पुष्पों की विशेषता भरना है तभी तो कहा जाता है- सर्वगुण सम्पन्न, सर्व रसना सम्पन्न, न कि चौदह कला। सर्व-पुष्पों की रसना समान सम्पन्न बनना यही बाप को प्यारा लगता है। बागवान भी बगीचे को देख हर्षित होते हैं। जहाँ देखो, जो सुनो, और जो बोलो उसमें विशेषता। अपने में हर बात की विशेषता भरो। जब हर बात में विशेषता भरेंगे तो क्या बन जायेंगे? विशेष आत्मा कभी कीचड़ में नहीं फँसती। सदैव हर्षित रहती है।

✚ अपनी जन्मपत्री को देखना चाहिए कि आदि से लेकर अर्थात् जन्मते ही मेरी तकदीर की लकीर कैसी है? जिनको जन्म होने से ही तकदीर प्राप्त है; तकदीर बनाके आए हैं आदि समय की, उसी आधार पर पीछे भी उनको लिफ्ट मिलती है। शुरू से ही सहज प्राप्ति हुई है ना? मेहनत कम और प्राप्ति ज्यादा। यह लॉटरी मिली हुई है। एक रूपये की लाटरी में, लाखों मिल जायें तो मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा हुई ना? कोई भी बात में, अगर एक बार समय पर, बिना कोई संकल्प के, आज्ञा समझ कर जो सहयोगी बन जाते हैं, ऐसे समय के सहयोगियों को बाप-दादा भी अन्त तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है। एक बार का सहयोग देने का अन्त तक सहयोग लेने का अधिकारी बनाता है। एक का सौ गुना मिलने से मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा होती है। चाहे मन से, चाहे तन से अथवा धन से। लेकिन समय पर सहयोग दिया, तो बाप-दादा अन्त तक सहयोग देने के लिये बाँधा हुआ है। जिसको दूसरे शब्दों में भक्त लोग अन्ध-श्रद्धा कहते हैं। ऐसा अगर कोई एक बार भी जीवन में बाप-दादा के कार्य में सहयोग दिया है, तो अन्त तक बाप-दादा सहयोगी रहेगा। यह भी एक हिसाब-किताब है। समझा।

✚ चाहे ब्रह्मा बाप को फॉलो करो चाहे शिव बाप को फॉलो करो। लेकिन शब्द वही है - 'फॉलो फादर'। इसलिए ब्रह्मा की महिमा "ब्रह्मा वन्दे जगतगुरु" कहते हैं। क्योंकि फॉलो करने के लिए साकार रूप में ब्रह्मा ही साकार जगत के लिए निमित्त बने। आप सभी भी अपने को शिवकुमार शिवकुमारी नहीं कहलाते हो। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पल 'ब्रह्मा' ही बनता है। इसलिए सतगुरु शिव बाप को कहते, गुरु सिखलाने वाले को भी कहते हैं। जगत के आगे सिखलाने वाले 'ब्रह्मा' ही निमित्त बनते हैं। तो हर कर्म में फॉलो करना है। ब्रह्मा को इस हिसाब से जगतगुरु कहते हैं। इसलिए जगत ब्रह्मा की वन्दना करता है। जगतपिता का टाइटिल भी ब्रह्मा का है। विष्णु को वा शंकर को प्रजापति नहीं कहते। वह मालिक के हिसाब से पति कह देते हैं। लेकिन है पिता। जितना ही जगत का प्यारा उतना ही जगत से न्यारा बन अभी अव्यक्त रूप में फॉलो अव्यक्त स्थिति भव का पाठ पढ़ा रहे हैं। समझा, किसी भी आत्मा का ऐसा इतना न्यारापन नहीं होता। यह न्यारेपन की ब्रह्मा की कहानी फिर सुनायेंगे।

✚ एक सेकेण्ड में कितना दूर से दूर जा सकते हो, हिसाब निकाल सकते हो? जैसे मरने के बाद आत्मा एक सेकेण्ड में कहाँ पहुँच जाती है! ऐसे आप भी अन्तःवाहक शरीर द्वारा; अन्तःवाहक शरीर जो कहते हैं उसका भावार्थ क्या है? आप लोगों का जो गायन है कि अन्तःवाहक शरीर द्वारा बहुत सैर करते थे, उसका अर्थ क्या है? यह गायन सिर्फ दिव्य-दृष्टि वालों का नहीं है लेकिन तुम सभी का है। यह लोग तो अन्तःवाहक शरीर का अपना अर्थ बताते हैं। लेकिन यथार्थ अर्थ यही है कि अन्त के समय की जो आप लोगों की कर्मातीत अवस्था की स्थिति है वह जैसे वाहन होता है ना। कोई न कोई वाहन द्वारा सैर किया जाता है। कहाँ का कहाँ पहुँच जाते हैं! वैसे जब कर्मातीत अवस्था बन जाती है तो यह स्थिति होने से एक सेकेण्ड में कहाँ का कहाँ पहुँच सकते हैं। इसलिए अन्तःवाहक शरीर कहते हैं। वास्तव में यह अन्तिम स्थिति का गायन है। उस समय आप इस स्थूल स्वरूप के भान से परे रहते हो, इसलिए इनको सूक्ष्म शरीर भी कह दिया है। जैसे कहावत है -- उड़ने वाला घोड़ा। तो इस समय के आप सभी के अनुभव की यह बातें हैं जो कहानियों के रूप में बनाई हुई हैं।

✚ ऐसे अटल-अचल आत्माएँ अटल राज्य के अधिकारी बनती हैं। सतयुग-त्रेता में अटल राज्य है, कोई उस राज्य को टाल नहीं सकता। कोई और राजा लड़ाई करके राज्य छीन ले-यह हो ही नहीं सकता। इसलिए यह अविनाशी अटल राज्य गाया हुआ है। अनेक जन्म यह अटल-अखण्ड राज्य करते हो। लेकिन कौन अधिकारी बनता? जो यहां संगम पर अचल-अखण्ड रहते हैं, खण्डित नहीं होते। आज निश्चय है, कल निश्चय डगमग हो जाए-उसको कहते हैं खण्डित। तो खण्डित चीज कभी पूज्य नहीं होती। अगर मूर्ति भी कभी खण्डित हो जाए तो पूजा नहीं होगी। म्युजियम में भले रखें लेकिन पूजा नहीं होगी। तो अखण्ड निश्चयबुद्धि आत्माएँ। ऐसे निश्चयबुद्धि सदा ही विजय की खुशी में रहते हैं, उनके अन्दर सदा खुशी के बाजे बजते रहते हैं। आज की दुनिया में भी जब विजय होती है तो बाजे बजते हैं ना। तो ऐसे सदा निश्चयबुद्धि आत्मा के मन में सदा खुशी के बाजे-गाजे बजते रहते हैं। बार-बार बजाने नहीं पड़ते, आटोमेटिक बजते रहते

हैं। ऐसे अनुभव करते हो? या कभी बाजे-गाजे बन्द हो जाते हैं? भक्ति में कहते हैं अनहद गीत-जिसकी हद नहीं होती, आटोमेटिक बजता रहे। तो अनहद गीत बजते रहें।

✚ तख्तनशीन तो अपने तख्त को जानते हो ना? बाप के दिल-तख्तनशीन। इस दिल-तख्त की यादगार निशानी देखी है? दिल ही तख्त है। इसकी यादगार निशानी कौन-सी है? जहाँ बैठे हो वही यादगार है। दिलवाला है ना। यह दिलवाला ही दिल लेने और देने वालों का यादगार है। दिल-तख्तनशीन कौन हो सकता है? जो दिलाराम को दिल देने वाला और बाप का दिल लेने वाला है। सिर्फ देना नहीं, जिस को लेना और देना दोनों आता है वह है दिल-तख्तनशीन। बाप का दिल कैसे लेंगे? कोई की भी दिल कैसे ली जाती है? जो उनके दिल का श्रेष्ठ संकल्प हो, उस संकल्प को पूरा करना अर्थात् दिल लेना। तो बाप का दिल लेना अर्थात् विश्व-कल्याणकारी बनना और विश्व के प्रति सर्वशक्तियों का दाता बनना। फिर लेना भी आता है या सिर्फ देकर ही खुश हो गये? देना सहज है वा लेना सहज है? कौनसा सस्ता सौदा है? वास्तव में अगर देना आता है तो लेना ऑटोमेटिकली आ जाता है। दिल दिया बापदादा को, तो जिसको दे दिया उसकी दिल हो गई न? जो चीज दे देते हैं तो वह चीज किसकी रहती हैं-आपकी या जिसको दी उनकी? दे तो दी ना? फिर वापिस भी लेते रहते हो। कुछ दिल का टुकड़ा रखते रहते हो।

✚ वह आवाज़ जल्दी पहुँचावे, वह राजधानी जल्दी तैयार करें और वह भक्तों की प्यास जल्दी पूर्ण करें। तब जय-जय कार हो जावेगी। समझा, तीनों नदियों को क्या करना है। फॉरेन को फौरन करना है। फॉरेन वालों ने पुरूषार्थ अच्छा किया है। गहने तो तैयार कर लिए हैं। अभी तो क्या करना है? अभी जेवरों के बीच हीरे लगाने हैं। हीरो तथा हीरोइन पार्ट बजाने वाले। अच्छा, यू.पी. क्या करेगी? जैसे यू.पी. में गली-गली में मन्दिर हैं ऐसे यू.पी. में गली-गली में सेवाकेन्द्र हों। तब भक्ति और ज्ञान का मुकाबला होगा। भक्ति, ज्ञान के आगे नमस्कार करेगी। देहली क्या

करेगी? जमुना के किनारे पर अभी राजयोग महल बनेंगे तब जमुना के किनारे पर फिर महल बनेंगे। अभी राजयोग प्लेस बनाओ फिर पैलेस बनेंगे। फाउन्डेशन तो अभी डालना है ना। अभी राजयोग भवन बनेगा। यू.पी. को धर्म युद्ध का खेल दिखाना चाहिए। सुनाया ना, अभी तो सिर्फ धर्म नेताए जो ऊंची आँखे करके सामना करते थे, अभी आँखें नीचे की हैं। लेकिन अब सिर झुकाना है। अब आप लोगों की स्टेज पर आते हैं। लेकिन अपनी स्टेज पर आपको चीफ गेस्ट कर बुलावें, तब कहेंगे कि सिर झुकाया है।

✚ अब के समय की सफलता का प्रालब्ध पूरा समय ही प्राप्त होगा। श्वास को सफल करने से भविष्य में भी देखो आपके श्वास सफलता का परिणाम भविष्य में सभी आत्मायें पूरा समय स्वस्थ रहती हैं। बीमारी का नाम नहीं। डाक्टर्स की डिपार्टमेंट ही नहीं क्योंकि डाक्टर्स क्या बन जायेंगे? राजा बन जायेंगे ना! विश्व के मालिक बन जायेंगे। लेकिन इस समय आप श्वास सफल करते हो और सर्व आत्माओं को स्वस्थ रहने का प्रालब्ध प्राप्त होता है। ऐसे ही ज्ञान का खज़ाना, उसका फल स्वरूप स्वर्ग में आपके अपने राज्य में इतने समझदार, शक्तिवान बन जाते जो वहाँ कोई वजीर से राय लेने की आवश्यकता नहीं, स्वयं ही समझदार शक्तिवान होते हैं। शक्तियों को सफल करते हो, उसकी प्रालब्ध वहाँ सब शक्तियां विशेष धर्म सत्ता, राज्य सत्ता दोनों ही विशेष शक्तियां, सत्तायें वहाँ प्राप्त होंगी। गुणों का खज़ाना सफल करते हो तो उसकी प्रालब्ध देवता पद का अर्थ ही है दिव्यगुणधारी और साथ-साथ अभी लास्ट जन्म में आपकी जड़ मूर्ति का पूजन करते हैं तो क्या महिमा करते हैं? सर्वगुण सम्पन्न। तो इस समय की सफलता का प्रालब्ध स्वतः ही प्राप्त हो जाती।

✚ कभी-कभी सोचते हो ना कि अभी तो 9 लाख पूरे नहीं हुए हैं। अन्त तक 33 करोड़ देवतायें हैं - उसकी तो बात ही छोड़ो। 9 लाख तो अच्छी आत्मायें चाहिए। पहली राजधानी में अच्छी आत्मायें चाहिए। प्रजा भी अच्छी नम्बर वन चाहिए। क्योंकि वन-वन-वन शुरू होगा। तो उसमें

जो भी प्रकृति होगी, व्यक्ति होंगे, वैभव होंगे - वे सब नम्बर वन होंगे। तो अभी नम्बर वन प्रजा 9 लाख बनाई है? कितने लाख तैयार किये हैं? आप जो रिपोर्ट बनाते हो उसमें तो कभी-कभी वाले भी एड करते हो ना। लेकिन अभी तो आधा भी नहीं हुआ है। नम्बर वन प्रजा भी कम से कम बाप के स्नेह का अनुभव अवश्य करेगी। सहयोग में रहते हैं, वह पहला कदम है। लेकिन दूसरा कदम है सहयोगी, स्नेही बनेंगे। समर्पण नहीं हो, वह दूसरी बात है लेकिन सदा बाप का स्नेह रहे। सिर्फ परिवार वा भाई-बहिनों का स्नेह नहीं। अभी यहाँ तक पहुँचे हैं - जो सेवा करते हैं उन्हीं प्रति स्नेही बनते। लेकिन बाप के स्नेह की अनुभूति करें। उन्हीं के भी दिल से बाबा निकले तब तो प्रजा बनेंगे। ब्रह्मा की प्रजा, पहले विश्व-महाराजन की बनेगी। जिसकी प्रजा बननी है, उसका स्नेह तो अभी से चाहिए ना।



विनाश में आस्ट्रेलिया सारा एक ही टापू बन जाएगा। कुछ पानी में आ जाएगा कुछ ऊपर रह जाएगा। आप लोग सेफ रहेंगे। विनाश के पहले ही आप लोगों को आवाज पहुँचेगा। जब तुम सभी सेफ स्थान पर पहुँच जायेंगे फिर विनाश होगा। जैसे गायन है भट्टी में बिल्ली के पूंगरे सेफ रहे...तो जो बच्चे बाप की याद में रहने वाले हैं, वह विनाश में विनाश नहीं होंगे लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोड़ेंगे, न कि विनाश के सरकमस्टान्सेज के बीच में छोड़ेंगे। इसके लिए एक बुद्धि की लाइन क्लियर हो और दूसरा अशरीरी बनने का अभ्यास बहुत हो। कोई भी बात हो तो आप अशरीरी हो जाओ। अपने आप शरीर छोड़ने का जब संकल्प होगा तो संकल्प किया और चले जायेंगे। इसके लिए बहुत समय से प्रैक्टिस चाहिए। जो बहुत समय के स्नेही और सहयोगी रहते हैं उनको अन्त में मदद जरूर मिलती है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे स्थूल वस्त्र उतार रहे हैं। ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे। सारा दिन में चलते-चलते बीच-बीच में अशरीरी बनने का अभ्यास जरूर करो। जैसे ट्रैफिक कंट्रोल का रिकार्ड बजता है तो वैसे वहाँ कार्य में रहते भी बीच-बीच में अपना प्रोग्राम आपे ही सेट करो तो लिंक जुटा रहेगा।

✚ हर एक स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी है। वर्तमान चक्रधारी और भविष्य में छत्रधारी। चक्रधारी नहीं तो छत्रधारी भी नहीं। जिन बच्चों का इस संगम युग का यह थोड़ा-सा अमूल्य समय, निरन्तर सदाकाल चक्र चलता रहता है अर्थात् अविनाशी चक्रधारी हैं, वही आत्मायें सदाकाल छत्रधारी बन सकती हैं। चक्रधारी बनने वाली आत्मा सदा माया अधिकारी होगी-माया अधिकारी आत्मायें ही बाप के बेहद वर्से की अधिकारी बनती हैं - अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी बनती हैं। सदैव चक्र और छत्र दिखाई देता है? चक्रधारी अब भी लाइट के छत्रधारी दिखाई देंगे। चक्र की निशानी लाईट का चक्र दिखाई देगा। ऐसा चक्रधारी सदैव माया के अनेक प्रकार के चक्रों से मुक्त होगा। जैसे अपनी देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार के आकर्षण के चक्र से वह सदैव मुक्त होगा। सिवाय स्वदर्शन चक्र के वह और कोई चक्र में आ नहीं सकेगा। अन्य आत्माओं को भी बाप से प्राप्त हुई शक्तियों द्वारा अनेक चक्करों से सहज ही छुड़ा देगा।

✚ क्योंकि आदि पिता ब्रह्मा के ब्राह्मण बच्चे सदा ही पूज्य गाये जाते हैं? अभी लास्ट जन्म में भी देखो तो सभी से उँच वर्ण कौन - सा गाया जाता है? ब्राह्मण वर्ण कहते हैं ना। उँचा नाम और उँचे श्रेष्ठ काम के लिए भी ब्राह्मण को ही बुलाते हैं, किसके कल्याण के लिए भी ब्राह्मणों को ही बुलाते हैं। तो लास्ट जन्म तक भी ब्राह्मण आत्माओं का उँचा नाम, उँचा काम प्रसिद्ध है। परम्परा से चल रहा है। सिर्फ नाम से भी काम चला रहे हैं। काम आपका है लेकिन नाम वालों का भी काम चल रहा है। इससे देखो कि सच्चे ब्राह्मण आत्माओं की कितनी महिमा है और कितने महान हैं! “ब्राह्मण” - नाम भी अविनाशी हो गया है। अविनाशी प्राप्ति वाली जीवन हो गई है। ब्राह्मण जीवन की विशेषता है - मेहनत कम, प्राप्ति ज्यादा। क्योंकि मुहब्बत के आगे मेहनत नहीं है। अब लास्ट जन्म में भी ब्राह्मण मेहनत नहीं करते, आराम से खाते रहते हैं। अगर “नाम” का भी काम करते हैं तो भूखे नहीं रह सकते हैं। तो इस समय के ब्राह्मण जीवन की

विशेषताओं की अब तक निशानियाँ देख रहे हो। इतनी श्रेष्ठ विशेष आत्मा हो! समझा? वर्तमान समय पूज्य तो भविष्य के पूज्य।

✚ बापदादा बच्चों के सब प्लैन, प्रोग्राम वतन में बैठे भी देखते रहते हैं। हर एक बच्चे की याद और सेवा का रिकार्ड बापदादा के पास हर समय का रहता है। जैसे आपकी दुनिया में रिकार्ड रखने के कई साधन हैं। बाप के पास साइन्स के साधनों से भी रिफाइन साधन है, स्वतः ही कार्य करते रहते। जैसे साइन्स के साधन जो भी कार्य करते, वह लाइट के आधार से करते। सूक्ष्मवतन तो है ही लाइट का। साकार वतन के लाइट के साधन फिर भी प्रकृति के साधन हैं। लेकिन अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति के साधन नहीं हैं। और प्रकृति रूप बदलती है, सतो, रजो, तमो में परिवर्तन होती है। इस समय तो है ही तमोगुणी प्रकृति, इसलिए यह साधन आज चलेंगे, कल नहीं चलेंगे। लेकिन अव्यक्त वतन के साधन प्रकृति से परे हैं, इसलिए वह परिवर्तन में नहीं आते। जब चाहो, जैसे चाहो सूक्ष्म साधन सदा ही अपना कार्य करते रहते हैं। इसलिए सब बच्चों के रिकार्ड देखना बापदादा के लिए बड़ी बात नहीं है। आप लोगों को तो साधनों को सम्भालना ही मुश्किल हो जाता है ना। तो बापदादा याद और सेवा का - दोनों ही रिकार्ड देखते हैं क्योंकि दोनों का बैलेन्स एकस्ट्रा ब्लैसिंग दिलाता है।

✚ तिलक सदा मस्तक पर लगाया जाता है। तो मस्तक की विशेषता क्या है? याद या स्मृति। तो विजय के तिलकधारी अर्थात् 'सदा विजय भव' के वरदानी। जो स्मृतिस्वरूप हैं वे सदा वरदानी हैं। वरदान आपको मांगने की आवश्यकता नहीं है। वरदान दे दो-मांगते हो? मांगना क्या चाहिए-यह भी आपको नहीं आता था। क्या मांगना चाहिए-वह भी बाप ही आकर सुनाते हैं। मांगना है तो पूरा वर्सा मांगो। बाकी हद का वरदान-एक बच्चा दे दो, एक बच्ची दे दो, एक मकान दे दो, अच्छी वाली कार दे दो, अच्छा पति दे दो.....-यही मांगते रहे ना। बेहद का मांगना क्या होता है-वो भी नहीं आता था। इसीलिए बाप जानते हैं कि इतने नीचे गिर गये जो मांगते भी हद का हैं, अल्पकाल का हैं। आज कार मिलती है, कल खराब हो जाती है,

एक्सीडेन्ट हो जाता है। फिर क्या करेंगे? फिर और मांगेंगे-दूसरी कार दे दो! आप तो अधिकारी बन गये। बेहद के बाप के बेहद के वर्से के अधिकारी बन गये। अभी स्वतः ही वरदान प्राप्त हो ही गये। जब दाता के बच्चे बन गये, वरदाता के बच्चे बन गये-तो वरदान का खज़ाना बच्चों का हुआ ना। तो जब वरदानों का खज़ाना ही हमारा है तो मांगने की क्या आवश्यकता है!

✚ एक दृश्य दिखाया - जिसमें तीन संगठन थे। एक तो देखा लाल-लाल चीटियाँ जो आपस में गेंद के माफिक इकट्ठी हो जा रही थी। दृश्य ऐसा था जो ब्रह्मा बाबा ने शुरू-शुरू में देखा था - दूसरा संगठन था मूलवतन में आत्मायें शमा रूप में थी तीसरा संगठन - हम ब्राह्मणों का था। जो सभी सर्किल रूप में बैठे थे और बीच में बापदादा थे। वह ऐसे लग रहा था जैसे फूल के बीच में बूर होता है और चारों ओर पत्ते होते हैं। इसका रहस्य बाबा ने बताया - कि बच्ची जब प्रत्यक्षता शुरू हुई तो भी संगठन में देखा। अन्त में भी आत्माओं को संगठन रूप में ही रहना है और अब मध्य में भी संगठन है। संगठन की शक्ति है तो कोई भी हिला नहीं सकता। देखो, बापदादा ने कहाँ-कहाँ से चुन-चुनकर संगठन बनाया है। तो बच्चे भी जब संगठन में चलेंगे तो माया का वार नहीं होगा। जैसे गुलाब का फूल वा कोई भी फूल होता है तो उनको योग्य स्थान पर रखेंगे और अकेला पत्ता होगा तो हाथ से जल्दी मसल देंगे। तो बच्चों का भी संगठन रूपी गुलदस्ता होगा तो विजय प्राप्त करते रहेंगे। कोई वार नहीं कर सकेगा। ऐसे कहते बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को कहना कि संगठन ही सेफ्टी का साधन है।

✚ जो गाया हुआ है देवताओं के आगे प्रकृति हीरे रतनों की थालियाँ भर कर आये। पृथ्वी और सागर यह आपके लिए चारों ओर फैला हुआ सोना और मोतीहीरे, एक स्थान पर इकट्ठा करने के निमित्त बनेंगे। इसी को कहा जाता है - थालियाँ भरकर आये। थाली में बिखरी हुई चीज़ इकट्ठी हो जाती हैं ना। तो यह भारत और आसपास, यह स्थान थाली बन जायेंगे। सेवक बनकर विश्व के मालिकों के लिए तैयारी कर आपके आगे रखेंगे। ऐसे ही देवताओं के लिए सर्व रिद्धि-सिद्धियाँ भी सेवाधारी बनती हैं। यह जो भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सफलता अर्थात् सिद्धि को प्राप्त करते हैं यह सब सिद्धियाँ अर्थात् साइन्स का भी रिफाइन रूप, सफलता रूप

सिद्धि के रूप में आपके सेवाधारी बनेंगे। अभी तो एक्सीडेंट भी है और प्राप्ति भी है। लेकिन रिफाइन सिद्धि रूप में दुःख का कारण समाप्त हो सदा सुख और सफलता रूप बन जायेंगे। यह जो भिन्न-भिन्न डिपार्टमेन्ट वाले हैं वे अपनी-अपनी नॉलेज की सिद्धि, इन्वेन्शन की सिद्धि आपकी सेवा में लायेंगे। इसको कहा जाता है प्रकृति भी दासी और सर्व रिद्धिसिद्धि की प्राप्ति। आर्डर किया और कार्य हुआ। इसको कहा जाता है - 'सिद्धि स्वरूप'।

✚ जैसे सतयुगी शहजादियों की आत्मायें जब आती थीं तो वह भविष्य के रूप प्रैक्टिकल में देखते हुए आश्चर्य खाती थीं ना कि इतने बड़े महाराजे और कार्य क्या कर रहे हैं। विश्व महाराजा और भोजन बना रहे हैं। वैसे ही आने वाली आत्मायें यह वर्णन करेंगी कि हमारे इतने श्रेष्ठ पूज्य ईष्ट देव और यह कार्य कर रहे हैं! चलते-फिरते ईष्टदेव या देवी का साक्षात्कार स्पष्ट दिखाई दे। अन्त में पूज्य स्वरूप प्रत्यक्ष देखने लगेंगे फरिश्ता रूप प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा। जैसे कल्प पहले का भी गायन है अर्जुन का - साधारण सखा रूप भी देखा लेकिन वास्तविक रूप का साक्षात्कार करने के बाद वर्णन किया कि आप क्या हो! इतना श्रेष्ठ और वह साधारण सखा रूप! इसी रीति आपके भी साक्षात्कार होंगे चलतेफिरते। दिव्य दृष्टि में जाकर देखें वह बात और है। जैसे शुरू में चलते-फिरते देखते रहते थे। यह ध्यान में जाकर देखने की बात नहीं। जैसे एक साकार बाप का आदि में अनुभव किया वैसे अन्त में अभी सबका साक्षात्कार होगा। यह साधारण रूप गायब हो जावेगा, फरिश्ता रूप या पूज्य रूप देखेंगे। जैसे शुरू में आकारी ब्रह्मा और श्रीकृष्ण का साथ-साथ साक्षात्कार होता था।

✚ अगर कोई बहुत समय भटकता रहे और उसको कोई द्वारा ठिकाना मिल जाये तो ठिकाना दिखाने वाले को कितनी दुआएं देगा! तो आप भी जब आत्माओं को रोशनी द्वारा ठिकाना दिखाते हो, दिखाने का अनुभव कराते हो तो आत्माओं द्वारा कितनी दुआएं निकलती हैं और जिसको दुआएं मिलती हैं वह सदा आगे बढ़ता जाता है। उसकी हर बात में प्रोग्रेस होती है क्योंकि दुआएं लिफ्ट का काम करती हैं। सदा सहज आगे बढ़ते जायेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। इसलिए भक्ति मार्ग में भी जब भटकते-भटकते थक जाते हैं तो बाप को कहते हैं - अभी

कोई दुआ करो, कृपा करो। तो अनेक आत्माओं की दुआएं आप आत्माओं को सहत उड़ती कला का अनुभव करायेंगी। एक बाप की दुआएं और आत्माओं की भी दुआएं मिलती हैं। माँ-बाप बच्चों को दुआएं करते हैं - उड़ते रहो, बढ़ते रहो। लेकिन दुआएं लेने वाले पात्र होने चाहिए। बाप सभी को देता है लेकिन लेने वाले पात्र हैं तो अनुभव करते हैं और पात्र नहीं है तो दाता देता है लेकिन लेने वाला नहीं लेता। पात्र बनने का आधार है स्वच्छ बुद्धि। स्वच्छ मन और स्वच्छ बुद्धि। जिसकी स्वच्छ बुद्धि स्वच्छ मन है वह हर समय बाप की, आत्माओं की दुआएं स्वतः ही अनुभव करते हैं।

✚ सब आना और साथ जाना। ऐसे सदा अपनी बुद्धि क्लीयर हो और कहाँ अटेन्शन गया तो बाप का आवाज़, बाप का आह्वान मिस हो जायेगा। यह सब होना ही है। टीचर्स सोच रहीं हैं - हम तो पहुँच जायेंगे। यह भी हो सकता है कि आपको वहाँ ही बाप डायरेक्शन दें। वहाँ कोई विशेष कार्य हो। वहाँ कोई औरों को शक्ति देनी हो। साथ ले जाना हो। यह भी होगा लेकिन बाप के डायरेक्शन प्रमाण रहें। मनमत से नहीं। लगाव से नहीं। हाय मेरा सेन्टर; यह याद न आये। फलाना जिज्ञासु भी साथ ले जाऊँ, यह अनन्य है, मददगार है। ऐसा भी नहीं। किसी के लिए भी अगर रूके तो रह जायेंगे। ऐसे तैयार हो ना! इसको कहते हैं एवररेडी। सदा ही सब कुछ समेटा हुआ हो। उस समय समेटने का संकल्प नहीं आवे। यह कर लूँ, यह कर लूँ। साकार में याद है ना - जो सर्विसएबुल बच्चे थे उन्हीं की स्थूल बैग बैगेज सदा तैयार होती थी। ट्रेन पहुँचने में 5 मिनट हैं और डायरेक्शन मिलता था कि जाओ। तो बैग बैगेज तैयार रहते थे। एक स्टेशन पहले ट्रेन पहुँच गई है - और वह जा रहे हैं। ऐसे भी अनुभव किया ना। यह भी मन की स्थिति में बैग बैगेज तैयार हो। बाप ने बुलाया और बच्चे जी हाजर हो जाएँ। इसको कहते हैं एवररेडी।

✚ तो पहले नम्बर के रॉयल फैमिली में आना ये भी श्रेष्ठ पुरूषार्थ है। कोई को तख्त मिलता और किसको रॉयल फैमिली मिलती है। इसके भी गुह्य रहस्य हैं। जो सदा संगम पर बाप के दिल तख्तनशीन स्वतः और सदा रहता है, कभी-कभी नहीं, जो सदा आदि से अन्त तक स्वप्न मात्र

भी, संकल्प मात्र भी पवित्रता के व्रत में सदा रहा है, स्वप्न तक भी अपवित्रता को टच नहीं किया है, ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें तख्तनशीन हो सकती हैं। जिसने चारों ही सब्जेक्ट में अच्छे मार्क्स लिये हैं, आदि से अन्त तक अच्छे नम्बर से पास हुए हैं, उसी को ही पास विद् ऑनर कहा जाता है। बीच-बीच में मार्क्स कम हुई हैं फिर मेकप किया है, मेकप वाला नहीं लेकिन आदि से चारों ही सब्जेक्ट में बाप के दिल पसन्द हैं वो तख्त ले सकता है। साथ-साथ जो ब्राह्मण संसार में सर्व के प्यारे, सर्व के सहयोगी रहे हैं, ब्राह्मण परिवार हर एक दिल से सम्मान करता है, ऐसा सम्मानधारी तख्त नशीन बन सकता है। अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है तो वो नम्बरवार रॉयल फैमिली में आ सकता है। चाहे पहली में आवे, चाहे आठवीं में आए, चाहे त्रेता में आए। तो अगर तख्तनशीन बनना है तो इन सभी बातों को चेक करो।



फर्स्ट क्लास वालों में भी दो प्रकार थे - एक जन्म से ही प्यूरिटी के ब्यूटी की पाँचों ही निशानियाँ जन्म सिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त किये हुए थे। प्राप्त करना नहीं पड़ा लेकिन प्राप्त किया हुआ है। उन्हीं के चेहरे पर अपवित्रता के नालेज की रेखायें नहीं हैं। निजी संस्कार नैचुरल लाइफ है। संस्कार परिवर्तन करने की मेहनत नहीं। स्वप्न में भी संकल्प मात्र अपवित्रता का वार नहीं। अर्थात् प्यूरिटी की ब्यूटी में जरा भी महीन दाग नहीं। दूसरे जन्म से नालेज की लाइट और माइट के आधार पर सदा प्यूरिटी की ब्यूटी वाले। अन्तर यह रहा जो पहले वाले सुनाये उन्हीं के लास्ट जन्म के पिछले संस्कार का भी दाग नहीं। इसलिए पिछले जन्म के संस्कारों को मिटाने के मेहनत की रेखा नहीं। नालेज है कि पिछले जन्म का बोझ आत्मा पर है लेकिन चौरासिवें जन्म के पास्ट का ड्रामा अनुसार अपवित्रता के संकल्प का अनुभव नहीं। इसलिए यह भी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। इसलिए निजी संस्कार के रूप में सहज महान आत्मा हैं। जैसे सहज योगी वैसे सहज पवित्र आत्मा। बी होली नहीं, वह हैं ही होली। उन्हीं के लिए यह स्लोगन नहीं है कि "बी होली"। वह बने बनाये हैं।

✚ भक्ति में आप स्मृति-स्वरूप आत्माओं के यादगार रूप में भक्त भी हर समय सिमरण करते रहते हैं। आप स्मृतिस्वरूप आत्माओं के हर कर्म की विशेषता का सिमरण करते रहते हैं। भक्ति की विशेषता ही सिमरण अर्थात् कीर्तन करना है। सिमरण करतेकरते मस्ती में कितना मग्न हो जाते हैं। अल्पकाल के लिए उन्हीं को भी, और कोई सुध-बुध नहीं रहती। सिमरण करते-करते उसमें खो जाते हैं अर्थात् लवलीन हो जाते हैं। यह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना प्यारा और न्यारा होता है! यह क्यों होता? क्योंकि जिन आत्माओं का सिमरण करते हैं, यह आत्मायें स्वयं भी बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, बाप की सर्व प्राप्तियों में सदा खोई हुई रही हैं। इसलिए, ऐसी आत्माओं का सिमरण करने से भी उन भक्तों को अल्पकाल के लिए आप वरदानी आत्माओं द्वारा अंचली रूप में अनुभूति प्राप्त हो जाती है। तो सोचो, जब सिमरण करने वाली भक्त आत्माओं को भी इतना अलौकिक अनुभव होता है तो आप स्मृति-स्वरूप, वरदाता, विधाता आत्माओं को कितना प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव प्राप्त होता है! इसी अनुभूतियों में सदा आगे बढ़ते चलो। हर कदम में भिन्न-भिन्न स्मृति-स्वरूप का अनुभव करते चलो।

✚ स्नेह और सहयोग दोनों जब आपस में मिलते हैं तो शक्ति की प्राप्ति होती है। जिस शक्ति से फिर सफलता प्राप्त होती है। इसलिए इन दोनों बातों का ध्यान रखना, जो आपके जड़ चित्रों का गायन है कि देवियाँ एक नज़र से असुरों का संहार कर देती। वैसे एक सेकेण्ड में कोई भी आसुरी संस्कार का संहार काने वाली संहारकारी मूर्त बनना है। अब यह बात देखना कि जहाँ संहार करना है वहाँ रचना नहीं रच लेना, और जहाँ रचना रचनी है वहाँ संहार नहीं का लेना। जहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है वहाँ मास्टर शंकर नहीं बनना। यह बुद्धि में ज्ञान चाहिए। कहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है, कहाँ मास्टर शंकर बनना है। अगर रचना करने बदली विनाश कर देते तो भी रांग और अगर विनाश के बदली रचना रच लेते तो भी रांग। कहानी सुनी हैं ना जब उल्टा कार्य किया तो तो बिच्छू टिन्डन पैदा हुए। तो यही भी अगर संहार के बजाए उल्टी रचना रच ली तो व्यर्थ संकल्प बिच्छू टिन्डन मिसल बन पड़ेंगे। तो ऐसी रचना नहीं रचना जो स्वयं को भी काटें और दूसरों को भी काटें। ऐसी रचना रचने से सावधान रहना। जिस समय जिस कर्तव्य की

आवश्यकता है उस समय वह कर्तव्य करना है। समय चला गया तो फिर सम्पूर्ण बन नहीं सकेंगे।

✚ सारे कल्प में सबसे रॉयल आप श्रेष्ठ आत्माएं ही हो। अनादि आत्मिक स्वरूप में भी सबसे श्रेष्ठ रॉयल आत्मायें हो और आदि स्वरूप देव आत्माओं के रूप में भी रॉयल राज्य अधिकारी रॉयल फैमली हो। पूज्य रूप में भी आप देव आत्माओं की कितनी रॉयल्टी से पूजा होती रहती है और किसी भी अन्य धर्म आत्मा वा राजनीतिक आत्माओं की ऐसी रॉयल पूजा नहीं होती। तो तीनों रूपों में - अनादि, आदि और पूज्य स्वरूप ऐसे रॉयल और कोई भी नहीं हैं। क्योंकि आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो, और किसी भी धर्म आत्माओं की महिमा में ऐसी महिमा नहीं गाई जाती है। सिर्फ देव आत्माओं के श्रेष्ठ कीर्ति अर्थात् श्रेष्ठ पवित्रता की ही कीर्तन होता है। और कोई भी धर्म में कीर्तन नहीं होता है। साजों और बाजों से कीर्तन का रिवाज देव आत्माओं में ही है वा संगमयुग के शक्ति स्वरूप में है। यह सम्पूर्ण पवित्रता के विधि की सिद्धि है। इसलिए आप जैसी रूहानी रॉयल्टी और किसी आत्मा की नहीं है।

✚ बापदादा की लास्ट मुरली में जो शिक्षा मिली है कि यह ध्यान दीदार ज्यादा चलाना समय व्यर्थ गंवाना है। इसलिए यह नहीं होना चाहिए। ऐसे न हो सन्देशियों द्वारा सेन्टर पर जो पार्ट चले, उसे आप चेक न कर पाओ। जैसे पिछाड़ी की मुरली में यह भी डायरेक्शन था कि भोग के समय बैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है। क्योंकि यह घूमना फिरना अब शोभता नहीं। अब तो निरन्तर याद की यात्रा और जो शिक्षा मिली है उसे प्रैक्टिकल लाइफ में धारण करने का सबूत देना है। अगर ब्रह्मा बाबा के साथ स्नेह है तो स्नेह की निशानी क्या है? स्नेह यह नहीं कि दो आंसू बहा दियो। परन्तु स्नेह उसको कहा जाता है - जिस चीज से उसका स्नेह था उससे आपका हो। उसका स्नेह था सर्विस से। पिछाड़ी में भी सर्विस का सबूत दिया ना। तो

स्नेह कहा जाता है सर्विस से प्यार, उसकी आज्ञाओं से प्यार। बाकी कोई भी ऐसा न समझे कि ना मालूम बिना हम बच्चों की छुट्टी के साकार बाबा को वतन में क्यों बुलाया। लेकिन छुट्टी दिलाते तो आप देते? इसीलिए ड्रामा में पहले भी देखा कि जो भी गये छुट्टी लेकर नहीं गये। इसलिए यह समझो कि ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रसम है। जो ड्रामा में नून्धी हुई है वह रसम चली।

✚ जितना सेवा की सीट में नजदीक हो उतना ही राज्य सिंहासन में भी नजदीक हैं। यहाँ तपस्या और सेवा का आसन और वहाँ राज्य भाग्य का सिंहासन। तो जो सदा तपस्या और सेवा के आसन पर हैं वह सदा सिंहासनधारी हैं। जितना यहाँ सेवा के सदा सहयोगी उतना वहाँ राज्य के सदा साथी। जैसे यहाँ हर कर्म में बापदादा की याद में साथी हैं, वैसे वहाँ हर कर्म में बचपन से लेकर राज्य करने के हर कर्म में साथी हैं। आयु में भी हमशरीक हैं, इसीलिए पढ़ाई में, खेल में, सैर में, राज्य में, हर कर्म में हमशरीक साथी हैं। अगर यहाँ कोई-कोई कर्म में याद से साथी बनते हैं, तो वहाँ भी सर्व कर्म में साथी नहीं बनेंगे। कोई-कोई कर्म में साथ होंगे, कोई में अलग। कोई में नजदीक होंगे, कोई में दूर। जो सदा समीप, सदा साथी, सदा सहयोगी, सदा तपस्या और सेवा के आसन पर रहते हैं वह वहाँ भी सदा साथ रहते हैं। तो स्मृति में आता है ना! जैसे यहाँ अलौकिक जीवन में, आध्यात्मिक जीवन में, किशोर जीवन से लास्ट तक साथी रहे हो ना, बचपन के साथी और अन्त तक के साथी, वैसे ही ब्रह्मा के रूप में जो आदि से अन्त हर कर्म में, हर चरित्र में, हर सेवा के समय में साथी रहे हैं, वह भविष्य में भी साथी रहेंगे।

✚ स्वयं जब लाइट-रूप में स्थित होंगे, आपके लाइट रूप के प्रभाव से ही उनको साक्षात्कार होगा। जिसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा, तो वह उड़ गई, साक्षात्-रूपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार हो, तो ऐसा अनुभव होगा कि मानो यह देवी द्वारा आकाशवाणी हो रही है। वह सुनने को इच्छुक होंगे कि यह देवी या शक्ति मेरे प्रति क्या आकाशवाणी करती है। आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण

बोल नज़र न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो। इसलिये कहा कि अब ज्वालामुखी बनने का समय है। अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रूप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं, वह कराते हैं। अभी इस समय, कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और उल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फर्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं-और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए है।

✚ माताओं ने दुःख बहुत सहन किये हैं। इसलिए पुकारा भी ज्यादा माताओं ने है। तो बहुत दुःख सहन करने के कारण, मारें सहन करने के कारण, थकी हुई होने के कारण बाप स्नेह से पांव दबाते हैं। गायन है ना - माताओं के पांव दबाये। पांव कोई स्थूल नहीं, लेकिन माताओं के विशेष स्नेह के पांव दबाते हैं। इन्हों को स्नेह और साहस देना है। भोली मातायें हैं। यही मातायें अगर मैदान पर आ जायें तो यह अपने को आज जो शेर समझते हैं वह बकरी बन आपके चरणों में आ जायें। क्योंकि जिस बात में वह कमज़ोर वा कायर हैं उस बात की आप प्रत्यक्ष प्रमाण हो। आपके प्रत्यक्ष प्रमाण को देखकर शर्मशार होंगे। तो गोया बकरी बन जायेंगे ना। मातायें इतनी श्रेष्ठ सर्विस कर सकती हैं, जो एक सेकेण्ड में शेर को बकरी बना सकती हैं। ऐसी जादूगरनी हो। जादू से शेर को बकरी, बकरी को शेर बनाते हैं ना। तुम मातायें भी ऐसी जादूगरी दिखा सकती हो। सिर्फ शेरनी बन जाओ, फिर वह शेर बकरी बनेंगे। तो यह अन्त का जो धर्मयुद्ध दिखाया हुआ है, आवाज़ बुलन्द होना है। तुम्हारी इस सर्विस से जब शेर बकरी बन जायेंगे फिर उनके फालोअर्स तो पीछे-पीछे हैं ही। सिर्फ एक शेर को भी बकरी बनाया तो अनेक शेर जाल में आ जायेंगे।

✚ कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाप वतन में क्या करते हैं? हम तो यहाँ सेवा करते रहते और ब्रह्मा बाप वहाँ वतन में क्या करते? लेकिन बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बना के साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।

✚ तो मरजीवा बने हो या मर रहे हो? कितने साल मरेंगे? भक्ति मार्ग में भी जड़ चित्र को प्रसाद कौनसा चढ़ता है? जो झाटकू होता है। चिलचिलाकर मरने वाला प्रसाद नहीं होता। बाप के आगे प्रसाद वही बनेगा जो झाटकू होगा। एक धक से चढ़ने वाला। सोचा, संकल्प किया, 'मेरा बाबा, मैं बाबा का' तो झाटकू हो गया। संकल्प किया और खत्म! लग गई तलवार! अगर सोचते, बनेंगे, हो जायेंगे... तो गें...गें अर्थात् चिलचिलाना। गें गें करने वाले जीवनमुक्त नहीं। बाबा कहा - तो जैसा बाप वैसे बच्चे। बाप सागर हो और बच्चे भिखारी हों, यह हो नहीं सकता। बाप ने आफर किया - मेरे बनो तो इसमें सोचने की बात नहीं। आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए जो गायन है कि राज्य सत्ता और धर्म की सत्ता - दोनों सत्ता एक के हाथ में रहती है। यह महिमा आपके भविष्य प्रालब्ध रूप की गाई हुई है। लेकिन भविष्य प्रालब्ध का आधार वर्तमान श्रेष्ठ जीवन है। बापदादा चारों ओर के बच्चों को देख रहे हैं कि राज्य सत्ता और धर्म सत्ता दोनों कहाँ तक प्राप्त की हैं! संस्कार सब इस समय ही आत्मा में भरते हैं। अब के राजे वही

भविष्य में राज्य अधिकारी बन सकते हैं। अब की धारणा स्वरूप आत्मायें ही धर्म सत्ता प्राप्त कर सकती हैं।

स्नेह और मिलन की भावना इन दो शक्तियों के आधार पर निराकार और आकार बाप को आप समान साकार रूप में, साकारी सृष्टि में लाने के निमित्त बन जाते हो। बाप को भी बच्चे स्नेह और भावना के बन्धन में बांध लेते हैं। मैजारटी अभी भी माताओं की है। माताओं का ही चरित्र और चित्र दिखाया है - भगवान को भी बांधने का। किस वृक्ष से बांधा? इस बेहद के कल्प वृक्ष के अन्दर स्नेह और भावना की रस्सी से कल्प पहले भी बांधा था और अब भी रिपीट हो रहा है। बाप दादा ऐसे बच्चों को स्नेह के रेसपान्ड में, जिस रस्सी से बाप को बांधते हो, इन स्नेह और भावना की दोनों रस्सियों को दिलतख्त का आसन दे, झूला बनाए बच्चों को दे देते हैं। इस कल्प वृक्ष के अन्दर पार्ट बजाने वाले इसी झूले में सदा झूलते रहो। सभी को झूला मिला हुआ है ना! आसन से हिल तो नहीं जाते हो? स्नेह और भावना की रस्सियाँ सदा मजबूत है ना! नीचे ऊपर तो नहीं होते! झूला झुलाता भी है, ऊंचा उड़ाता भी है और अगर जरा भी नीचे ऊपर हुए तो ऊपर से नीचे गिराता भी है। झूला तो बापदादा ने सभी को दिया है। तो सदा झूलते रहते हो! माताओं को झूलने और झुलाने का अनुभव होता है ना! जिस बात के अनुभवी हो वह ही बातें बापदादा कहते हैं।

फाइनल की डेट कौनसी है? अगर पहले से नहीं होगी तो आप लोगों के भक्त और प्रजा आपके सम्पूर्ण स्वरूपों का साक्षात्कार कैसे करेंगे? फिर नहीं तो आप के चित्र भी टेढ़े-बांके बनायेंगे! अगर आपके सम्पूर्णता का, फाइनल स्टेज का साक्षात्कार नहीं करेंगे तो चित्र क्या बनायेंगे? चित्र भी रिफाइन नहीं बनायेंगे। तो पहले से ही अपना सम्पूर्ण साक्षात्कार कराना है। अभी आपके भक्तों में गुणगान करने के संस्कार भरेंगे तो द्वापरयुग में उतरते ही आपके चित्रों के आगे गुणगान करेंगे। सब आत्माओं में सर्व रीति-रस्म के संस्कार तो अभी से ही भरने हैं ना, भरने का समय है। फिर है प्रैक्टिकल करने का समय। जैसे-जैसे आप आत्मा में सारे कल्प के पूज्य और

पुजारीपन के दोनों ही संस्कार अभी भर रहे हैं। जितना पूज्य बनेंगे उसी प्रमाण पुजारीपन की स्टेज भी आटोमेटिकली बनती जायेगी। तो जैसे आप आत्माओं में सारे कल्प के संस्कार भरते हैं। वैसे ही आपके भक्तों में भी अभी ही संस्कार भरेंगे। तो जैसे आपका स्वरूप होगा वैसे ही संस्कार भरेंगे। इसलिए अभी जल्दी-जल्दी अपने को फाइनल स्टेज पर ले जाओ। ऐसी फाइनल स्टेज बनाओ जो अब भी फाइन न पड़े। जो डबल रिफाइन हो जायेंगे उनको फाइन नहीं पड़ेगा।

✚ ब्रह्मा बाप की विशेषता क्या देखी! यही देखी ना - तुरंत दान...कभी सोचा कि क्या होगा! पहले सोचूँ पीछे करूँ, नहीं। तुरंत दान महापुण्य के कारण नम्बरवन महान आत्मा बनें। इसलिए देखो नम्बरवन महान आत्मा बनने के कारण कृष्ण के रूप में नम्बरवन पूजा हो रही है। एक ही यह महान आत्मा है जिसकी बाल रूप में भी पूजा है। बाल रूप भी देखा है ना। और युवा रूप में राधे कृष्ण के रूप में भी पूजा है। और तीसरा गोप गोपियों के रूप में भी गायन पूजन है। चौथा लक्ष्मी नारायण के रूप में। एक यह ही महान आत्मा है जिसके भिन्न-भिन्न आयु के रूप में भिन्न-भिन्न चरित्र के रूप में गायन और पूजन है। राधे का गायन है लेकिन राधे को बाल रूप में कभी झूला नहीं झुलायेंगे। कृष्ण को झुलाते हैं। प्यार कृष्ण को करते हैं। राधे का साथ के कारण नाम जरूर है। फिर भी नम्बर दो और एक में फर्क तो होगा ना। तो नम्बरवन बनने का कारण क्या बना? - “महा पुण्य”। महान पुण्य आत्मा सो महान पूज्य आत्मा बन गई। पहले भी सुनाया था ना कि आप लोगों की पूजा में भी अन्तर होगा। कोई देवी देवताओं की पूजा विधिपूर्वक होती है और कोई की ऐसे काम चलाऊ भी होती है। इसका तो फिर बहुत विस्तार है। पूजा का भी बहुत विस्तार है।

✚ होली में पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। तो आपने क्या किया? योग अग्नि से अपने कमज़ोरियों को, संस्कारों को जो अनेक जन्मों के उल्टे संस्कार हैं उसको योग अग्नि से जलाया है ना! जलाया है कि अभी भी जला रहे हैं? जलाया है? जो समझते हैं हमने योग अग्नि से अपने पहले के संस्कार जलाया है, जल गये वह हाथ उठाओ। जल गये कि अभी भी आते हैं? थोड़ा-थोड़ा तो आते हैं? बापदादा के पास जब अपना चार्ट भेजते हैं ना तो कहते हैं बहुत तो चले

गये, चतुर हैं ना कहने में। कहते हैं बहुत तो खत्म हो गये, कभी-कभी थोड़ा इमर्ज हो जाता है। लेकिन जलना माना जलना। जलने के बाद नाम निशान ही नहीं रहता। मारने के बाद शरीर का यादगार तो दिखाई देता है, लेकिन जलने के बाद समाप्त हो जाता है। जैसे रावण को भी देखो सिर्फ मारा नहीं जलाया भी। जो बिल्कुल नाम निशान खत्म। तो आप भी सब अपने को नोट करो संस्कारों को मारा है या जलाया है? भस्म किया है? पुराने संस्कार को अगर जलाया नहीं, तो बीच-बीच में इमर्ज हो जाते हैं। लेकिन भक्तों ने कॉपी सब की है। आप जलाते हो वह भी जलाते हैं फिर मनाते हैं। बिना जलाने के मनाते नहीं हैं। तो आप तो संस्कारों को जलाते हुए होली बन गये हो। कोई बन रहे हो, कोई बन गये हो।

✚ साधन तो बहुत हैं लेकिन सदा साधनों में शक्ति होनी चाहिए। अगर बिना शक्ति के साधन यूज करते हैं तो जो सेवा की रिजल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती है। पुराने समय में जो वीर लोग होते थे वह सदैव अपने शस्त्रों को देवताओं के आगे अर्पण कर उसमें शक्ति भरकर फिर यूज करते थे। तो आप सभी भी कोई भी साधन जब यूज करते हो तो उसे यूज करने के पहले उसी विधिपूर्वक कार्य में लगाते हो? अभी जो भी साधन कार्य में लगाते हो उससे थोड़े समय के लिए लोग आकर्षित होते हैं। सदाकाल के लिए प्रभावित नहीं होते। क्योंकि इतनी शक्तिशाली आत्मायें जो शक्ति द्वारा परिवर्तन कर दिखायें, वह नम्बरवार हैं। सेवा तो सभी करते हो, सभी का नाम है टीचर्स। सेवाधारी हो या टीचर हो लेकिन सेवा में अन्तर क्या है? प्रोग्राम भी एक ही बनाते हो, प्लैन भी एक जैसा करते हो। रीति रसम भी एक जैसी बनती है फिर भी सफलता में अन्तर पड़ जाता है, उसका कारण क्या? शक्ति की कमी। तो साधन में शक्ति भरी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं हो तो तलवार, तलवार का काम नहीं देती। ऐसे साधन हैं तलवार लेकिन उसमें शक्ति का जौहर चाहिए। वह जितना अपने में भरते जायेंगे उतना सेवा में स्वतः ही सफलता मिलेगी। तो शक्तिशाली सेवाधारी बनो।

✚ शक्तियों के चित्र में शक्तियों की निशानी क्या दिखाते हैं? एक तो वह अलंकारी हैं, दूसरा संहारी भी हैं। अलंकार किस लिए हैं? संहार करने के लिए। ऐसे ही अलंकारी संहारकारी मूर्त अपने को समझकर चलते चलो। जब यह स्मृति में रहेगा कि मैं संहार मूर्त हूँ तो वे माया के वश कभी नहीं होंगे। सदैव यह चेक करना है कि अलंकार सभी ठीक रीति से धारण किये हुए हैं! कोई भी अलंकार अगर धारण नहीं किये हुए हैं तो विजयी नहीं बन सकते हैं। जैसे सुहागिन होती है, वह सदैव अपने सुहाग की निशानी को कायम रखती है। जैसे देखो कभी भी अपना स्थूल श्रृंगार कम हो जाता है, नीचे ऊपर होता है तो उसको बार-बार ठीक करते हैं। इसलिए कोई भी अलंकार रूपी श्रृंगार बिगड़ा हुआ है तो उसको ठीक करना है। जो अति पुराने होते हैं उनको पूरा अधिकार लेकर जाना है। अधिकार लेने के लिए ही अपने ऊपर छाप लगाने लिए मधुबन में आते हैं। यह मधुबन है फाइनल ठप्पा वा छाप लगाने का स्थान। जैसे पोस्ट आफिस होती है, उसमें जब फाइनल ठप्पा लगाते हैं तब चिट्ठी जाती है। यह भी स्वर्ग के अधिकारी बनने का छाप मधुबन है। मधुबन में आना अर्थात् करोड़ गुणा कमाई करना। जो विघ्न-विनाशक होते हैं वह विघ्नहार नहीं बन सकते। कम्बाइन्ड अपने को समझो।

✚ स्वयं सम्पूर्ण हो जावेंगे तो कार्य भी सम्पूर्ण होगा कि सिर्फ स्वयं सम्पूर्ण होंगे? एडवांस पार्टी का कार्य चल रहा है। आप लोगों के लिये सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, ना जाओ, लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिये वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसी पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन न्यू-ब्लड का रिगार्ड ज्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे उतना छोटों की बुद्धि जो काम करेगी वह बूढ़ों की नहीं, यह चेंज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं वह समझते हैं - “हम तो पुराने जमाने के हैं, यह हैं आजकल के। उन्हीं को रिगार्ड ना देंगे, बड़ा समझ न चलायेंगे तो काम न चलेगा।” पहले बच्चों को रोब से चलाते थे, अभी ऐसे नहीं। बच्चे को भी मालिक समझ चलाते हैं। तो यह भी ड्रामा है। छोटे ही कमाल कर दिखायेंगे। एडवांस पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है। लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवांस में जाने लिये रूके हुए हैं। उनका कार्य ही आपके कनेक्शन से चलना है। सारे

कार्य का आधार विशेष आत्माओं के ऊपर है। चलते-चलते ठंडाई हो जाती है। आग लगती है, फिर शीतल हो जाते हैं।

✚ 30 वर्ष वाले तो बहुत मौज में हैं ना! (1000 आये हैं) देखो बापदादा कहेंगे उठ जाओ, तो मातायें इसके बजाए आगे आ जायेंगी, इसलिए उठाते नहीं हैं। सेरीमनी वाले हाथ खड़ा करो। बापदादा को इस ग्रुप के लिए बहुत-बहुत-बहुत दिल से सम्मान है क्यों? यही पाण्डव हैं, यही मातायें हैं जिन्होंने सेवा की स्थापना में, सेन्टर्स स्थापन करने में जब बेगरी लाइफ थी, बेगरी लाइफ में सेन्टर खुले हैं, ऐसे आईवेल के समय इस सेना ने अपने तन-मन-धन से निमित्त बन के सेवास्थान स्थापन किये हैं। आईवेल के समय जो सहयोगी बनता है उनका आठ आना, आठ करोड़ बन जाते हैं। बापदादा को याद है - खुद बांधेली होते हुए भी एक कटोरी में आटा, एक कटोरी में चीनी, एक कटोरी में घी, ऐसे कटोरी-कटोरी करके लाती थी। तो सोचो कितने सच्ची दिल वाले रहे। अपने घर खर्चों से बापदादा के सेन्टर चलाये हैं, अपने पर्सनल जमा खाते से, अपने खर्चों से बचत करके सेन्टर स्थापन किये हैं, तो कितना भाग्य है इन्हीं का! ऐसे समय पर सहयोगी आत्माओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। इन्हीं के अनुभव बहुत अच्छे हैं, सारा भागवत इन्हीं का है। इसलिए बापदादा खुश हैं और सभी बहुत उमंग-उत्साह से प्रयत्न कर पहुंच गये हैं, उसके लिए भी बापदादा खुश हैं।

✚ अमृतवेला ब्रह्म-मुहूर्त भी क्यों कहते हैं? ब्रह्मा-मुहूर्त है वा ब्रह्म-मुहूर्त है? ब्रह्मा- मुहूर्त भी राइट है, क्योंकि सभी ब्रह्मा समान नये दिन का आरम्भ, स्थापना करते हो। वह भी राइट है, लेकिन ब्रह्म-मुहूर्त का अर्थ क्या है? उस समय का वायुमण्डल ऐसा होता है जो आत्मा सहज ही ब्रह्म-निवासी बनने का अनुभव कर सकती है। दूसरे समय में पुरुषार्थ करके अवाज से, वायुमण्डल से अपने को डिटैच करते हो या मेहनत करते हो। लेकिन उस समय इस मेहनत की आवश्यकता नहीं होती। जैसे ब्रह्म घर शान्तिधाम हे वैसे ही अमृतवेले के समय में भी आटोमेटिकली साइलेंस

रहती है। साइलेंस के कारण शान्तस्वरूप की स्टेज वा शान्तिधाम निवासी बनने की स्टेज को सहज ही धारण कर सकते हो। तो जो श्रीमत मिली हुई है, इसको ब्रह्म-मुहूर्त के समय स्मृति में लायेंगे तो ब्रह्म-मुहूर्त वा अमृतवेला के समय स्मृति भी सहज आ जायेगी। देखो, पढ़ाई पढ़ने वाले भी पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते हैं, क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है। तो अपनी स्मृति को भी समर्थवान बनाना है वा स्वतः स्मृतिस्वरूप बनना है तो अमृतवेले की मदद से वा श्रीमत का पालन करने से सहज ही स्मृति को समर्थीवान बना सकते हो।

✚ बापदादा देख रहे हैं कि दुनिया के हिसाब से आत्मायें कितनी साधारण हैं लेकिन भाग्य कितना श्रेष्ठ है! जो सारे कल्प में, चाहे कोई धर्म आत्मा हो, महान आत्मा हो, लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य न तो किसी को प्राप्त है, न हो सकता है। तो अति साधारण और अति श्रेष्ठ भाग्यवान! बापदादा को साधारण आत्मायें ही पसन्द हैं - क्यों? बाप स्वयं भी साधारण तन में आते हैं। कोई राजा के तन में या रानी के तन में नहीं आते। कोई धर्मात्मा, महात्मा के तन में नहीं आते। साधारण तन में स्वयं भी आते हैं और बच्चे भी साधारण ही आते हैं। आज का करोड़पति भी साधारण है। साधारण बच्चों में भावना है। और बाप को भावना चाहिये, देह भान वाले नहीं चाहिए। जितना बड़ा होगा उतना भावना नहीं होगी लेकिन भान होगा। तो बाप को भावना का फल देना है और भावना साधारण आत्माओं में होती है। नामीग्रामी आत्माओं के पास न भावना है, न समय है। तो बाप देख रहे हैं कि कितने साधारण और कितने श्रेष्ठ भावना का फल प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये ड्रामानुसार संगमयुग में साधारण बनना- ये भी भाग्य की निशानी है। क्योंकि संगम पर ही भाग्यविधाता भाग्य की श्रेष्ठ लकीर खींच रहे हैं और साथ-साथ भाग्य की लकीर खींचने का कलम भी बच्चों को दे दिया है।

✚ सिर्फ ब्रह्मचारी बनना भविष्य पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ 'ब्रह्मा आचार्य' भी चाहिए। शिव आचार्य भी चाहिए। अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला। शिव बाप

के उच्चारण किये हुए बोल पर चलनेवाला। फुट स्टैप अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले। इसको कहा जाता है - 'ब्रह्मा आचार्य'। तो ऐसी सूक्ष्म रूप से चैंकिंग करो कि सदा पवित्रता की प्राप्ति, सुख-शांति की अनुभूति हो रही है? सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शांति स्वरूप में विराजमान रहते हो? यह ब्रह्मा आचार्य का चित्र है। सदा सुख की शैय्या पर सोई हुई आत्मा के लिए यह विकार भी छत्रछाया बन जाता हैं - दुश्मन बदल सेवाधारी बन जाते हैं। अपना चित्र देखा है ना! तो 'शेष शय्या' नहीं लेकिन 'सुख-शय्या'। सदा सुखी और शान्त की निशानी है - सदा हर्षित रहना। सुलझी हुई आत्मा का स्वरूप सदा हर्षित रहेगा। उलझी हुई आत्मा कभी हर्षित नहीं देखेंगे। उसका सदा खोया हुआ चेहरा दिखाई देगा और वह सब कुछ पाया हुआ चेहरा दिखाई देगा। जब कोई चीज खो जाती है तो उलझन की निशानी क्यों, क्या, कैसे ही होता है। तो रूहानी स्थिति में भी जो भी पवित्रता को खोता है, उसके अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है।



आज बापदादा विश्व की तकदीर बनाने वाले तकदीर-वान बच्चों की तस्वीर देख रहे हैं। किस-किस आत्मा में कौन-कौन सी तकदीर की लकीरें दिखाई देती हैं और कौन-कौनसी अब स्पष्ट होने वाली है? हर एक के तकदीर की लकीर अपनी-अपनी दिखाई दे रही है। तकदीर की रेखाओं में मुख्य चार सब्जेक्ट्स की चार रेखायें दिखाई देती हैं। बहुत थोड़े बच्चे हैं जिनकी चारों की चारों ही रेखायें स्पष्ट हैं अर्थात् चारों ही सब्जेक्ट्स में तदबीर द्वारा अपनी ऊंची तकदीर बनाई है। इस प्रमाण पास विद् ऑनर्स और फर्स्ट क्लास अर्थात् फर्स्ट डिवीज़न में ऐसे तकदीरवान ही आयेंगे जिन्हों की चारो ही तकदीर की लकीरें स्पष्ट हैं। पास विद् ऑनर्स की तकदीर की लकीरें चारों ही ओर एक समान चमकती हुई स्पष्ट दिखाई देती हैं। जो हैं 'अष्ट रत्न।' दूसरे नम्बर में फर्स्ट डिवीज़न वाले सौ रत्न, जिनकी चारों ही लकीरें दिखाई देती हैं लेकिन समान स्पष्ट रूप नहीं हैं। कोई ज्यादा तेज हैं, कोई कुछ कम। सेकेण्ड डिवीज़न सोलह हजार। उन सोलह हजार में से पहले दो तीन हजार की रेखाओं में चार सब्जेक्ट्स में से तीन सब्जेक्ट्स 50% मार्क्स में पास हैं और एक सब्जेक्ट्स में 25% में पास हैं अर्थात् न के बराबर हैं। ऐसे सर्व तकदीरवानों की तकदीर देखी।

✚ तो मेरेपन को और मैं-पन को समर्पण करना इसको ही कहते हैं - 'बलि चढ़ना'। बलि चढ़ना अर्थात् - महाबली बनना। तो यह समर्पण होने की निशानी है। तो बनाया अच्छा है ना भक्तों को आप भी दिल से शाबास तो देते हो ना! फिर भी आप सबके भक्त हैं। ऐसे आता है ना कि यह हमारे भक्त हैं। या समझते हो कि यह बापदादा के भक्त हैं। बाप के भी हैं, आपके भी हैं। जैसे कहते हो हमारा राज्य आने वाला है। तख्त पर तो एक लक्ष्मी नारायण बैठेंगे! एक समय पर तो एक ही तख्तनशीन होंगे ना लेकिन फिर भी आप लोग क्या कहेंगे? आधाकल्प हमारा राज्य है। ऐसे नहीं कहेंगे कि लक्ष्मी नारायण का राज्य है। हमारा कहेंगे ना ऐसे ही जो बाप के भक्त वह आपके भी भक्त हैं। साक्षी होकर देखो तो बहुत मजा आयेगा। हम क्या कर रहे हैं और हमारे भक्त क्या कर रहे हैं! प्रैक्टिकल क्या है और यादगार क्या है! फिर भी बापदादा भक्तों को एक बात की आफरीन देते हैं। किसी भी रूप से भारत में वा हर देश में उत्साह की लहर फैलाने के लिए उत्सव बनाये तो अच्छे हैं ना। चाहे दो दिन के लिए हो या एक दिन के लिए हो लेकिन उत्साह की लहर तो फैल जाती हैं ना। इसलिए 'उत्सव' कहते हैं। फिर भी अल्पकाल के लिए विशेष रूप से बाप के तरफ मैजारिटी का अटेन्शन तो जाता है ना।

✚ लौकिक दुनिया में भी 'हैप्पी न्यू ईयर' कहते हैं। वैसे एवर हैपी होते नहीं हैं लेकिन कहेंगे हैपी न्यू ईयर। अब आप सभी रीयल रूप में कहेंगे 'हैपी न्यू ईयर' तो क्या लेकिन - 'हैपी न्यू युग'। सारा ही युग खुशी का युग है। हैपी न्यू ईयर कहते हो तो बधाई देने के समय क्या करते हो? पहले तो फॉरेन का रिवाज है हाथ से हाथ जरूर मिलायेंगे। बापदादा हाथ से हाथ कैसे मिलाते? स्थूल हाथ तो एक सेकण्ड के लिए मिलाते हैं, लेकिन बापदादा सारा ही युग हाथ मिलाते अर्थात् एक ही 'श्रेष्ठ मत' रूपी हाथ दे, हाथ में हाथ मिलाए अन्त में भी साथ में ले जाते हैं। श्रीमत का हाथ सदा आप सबके साथ है। इसलिए सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चल रहे हो। हाथ छोड़ा तो क्या हो जायेगा? किनारा हो जायेगा ना। इसलिए सच्चे आशिक सदा हर कदम हाथ में हाथ देकर चलते हैं। हाथ में हाथ देकर चलना यह स्नेह की भी निशानी है और सहयोग की भी निशानी है। कभी भी कोई चलते-चलते थक जाते हैं तो दूसरा उसका हाथ पकड़कर ले

जाते हैं ना। रूहानी माशूक आशिकों का हाथ कभी नहीं छोड़ते। अन्त तक वायदा है, हाथ और साथ सदा ही रहेगा। सभी आशिकों ने हाथ तो पक्का पकड़ लिया है ना! ढीला तो नहीं है! छोड़ने वाले तो नहीं हो ना! जो छोड़ते और लेते रहते हैं, वह हाथ उठाओ।

✚ शक्तियों का पूजन देखकर क्या स्मृति में रहता है? अपने को चेक करते हो-जैसे शक्तियों को अष्ट भुजाधारी दिखाते हैं तो हम भी अष्ट शक्तिवान, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ। ये अष्ट तो निशानी मात्र हैं लेकिन हैं तो सर्व शक्तियाँ। शक्तियों का नाम सुनते, शक्तियों का पूजन देखते सर्व शक्तियों की स्मृति आती है या सिर्फ देखकर के खुश हो? जड़ चित्रों में कितनी कमाल भर देते हैं! तो चैतन्य का ही जड़ बनता है ना। तो चैतन्य में हम कितने कमाल के बने हैं अर्थात् श्रेष्ठ बने हैं! तो यह खुशी होती है कि यह हमारा यादगार है! या देवियों का है? देवियों के साथ गणेश की भी पूजा होती है ना। तो प्रैक्टिकल में ऐसे बने हैं तब तो यादगार बना है। सदैव अपने को चेक करो कि सर्व शक्तियाँ अनुभव होती हैं? बाप ने तो दी लेकिन मैंने कितनी ली, धारण की और धारण करने के बाद समय पर वो शक्ति काम में आती है? अगर समय पर कोई चीज काम में नहीं आये तो वह होना, न होना, एक ही बात है। कोई भी चीज़ रखते ही हैं समय पर काम में आने के लिये। अगर समय पर काम में नहीं आई तो क्या कहेंगे? है वा नहीं है, एक ही बात हुई ना। तो बाप ने दी लेकिन हमने कितनी ली-यह चेक करो। जब प्रैक्टिकल में काम में आये तब कहेंगे मास्टर सर्वशक्तिवान।


✚ सिर्फ अपने लिए शक्तियाँ जमा करने का समय नहीं है। लेकिन अपने साथ औरों के प्रति भी शक्तियाँ इतनी जमा करनी हैं जो औरों को भी सहयोग दे सको। सिर्फ सहयोग लेने वाले नहीं लेकिन देने वाले बनना है। जिन्हों को दो वर्ष भी हो गया है उन्हों के लिए दो वर्ष भी कम नहीं हैं। थोड़े टाइम में सब अनुभव करना है। जैसे वृक्ष में दिखाते हो ना, लास्ट आने वाली आत्मायें भी 4 स्टेजेस से पास जरूर होती हैं। फिर चाहे 10-12 जन्म भी हों या कितने भी हों। तो पीछे आने वालों को भी थोड़े समय सर्वशक्तियों का अनुभव करना ही है। स्टूडेंट लाइफ का भी

और साथ-साथ सेवाधारी का भी अनुभव करना है। सेवाधारी को सिर्फ कोर्स कराना या भाषण करना नहीं है। सेवाधारी अर्थात् सदा उमंग-उत्साह का सहयोग देना। शक्तिशाली बनाने का सहयोग देना। थोड़े समय में सर्व सबजेक्ट्स पास करनी हैं। इतना तीव्रगति से करेंगे तब तो पहुँचेंगे ना। इसलिए एक दो का सहयोगी बनना है। एक दो के योगी नहीं बनना। एक दो से योग लगाना नहीं शुरू करना। सहयोगी आत्मा सदा सहयोग से बाप के समीप और समान बना देती है। आप समान नहीं लेकिन बाप समान बनाना है। जो भी अपने में कमजोरी हो उनको यहाँ ही छोड़ जाना। विदेश में नहीं ले जाना। शक्तिशाली आत्मा बन शक्तिशाली बनाना है।

✚ हम सभी पूज्य और पूर्वज आत्मायें हैं - इतना नशा रहता है? आप सभी इस सृष्टि रूपी वृक्ष की जड़ में बैठे हो ना? आदि पिता के बच्चे आदि रतन हो। तो इस वृक्ष के तना भी आप हो। जो भी डाल-डालियाँ निकलती है वह बीज के बाद तना से ही निकलती हैं। तो सबसे आदि धर्म की आप आत्माएं हो और सभी पीछे निकलते हैं इसलिए पूर्वज हो। तो आप फाउन्डेशन हो। जितना फाउन्डे-शन पक्का होता है उतनी रचना भी पक्की होती है। तो इतना अटेन्शन अपने उपर रखना है। पूर्वज अर्थात् तना होने के कारण डायरेक्ट बीज से कनेक्शन है। आप फलक से कह सकते हो कि हम डायरेक्ट परमात्मा द्वारा रचे हुए हैं। दुनिया वालों से पूछो कि किसने रचा? तो सुनी-सुनाई कह देंगे कि भगवान ने रचा। लेकिन कहने मात्र हैं और आप डायरेक्ट परम आत्मा की रचना हो। आजकल के ब्राह्मण भी कहते हैं कि हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। लेकिन ब्रह्मा के बच्चे प्रैक्टिकल में आप हो। तो यह खुशी है कि हम डायरेक्ट रचना है। कोई महान आत्मा, धर्म आत्मा की रचना नहीं, डायरेक्ट परम आत्मा की रचना हैं। तो डायरेक्ट कितनी शक्ति है! दुनिया वाले ढूँढ़ रहे हैं कि कोई वेष में भगवान आ जायेगा और आप कहते मिल गया। तो कितनी खुशी हैं! तो इतनी खुशी रहती है कि आपको देख करके और भी खुश हो जाएं।

✚ सिर्फ एक दिन नहीं, लेकिन सारा वर्ष हर दिन, हर घण्टा, हर सेकण्ड, हर संकल्प जो बीता उससे और रूहानी नवीनता लाने वाला हो। नया दिन, नई रात तो सब कहते हैं लेकिन श्रेष्ठ

आत्माओं का नया सेकण्ड, नया संकल्प हो तब ही आने वाली नई दुनिया की नई झलक विश्व की आत्माओं को स्वप्न के रूप में वा साक्षात्कार के रूप में दिखाई देगी। अब तक विश्व की आत्मायें जानने की इच्छुक हैं कि विनाश के बाद क्या होगा? नई दुनिया में क्या होगा? लेकिन इस वर्ष सर्व आधार स्वरूप आत्माओं का हर सेकण्ड, और हर संकल्प, नये ते नया, ऊँचे ते ऊँचा, अच्छे ते अच्छा रहे तो चारों ओर से नई दुनिया की झलक देखने का आवाज फैलेगा और क्या होगा इसके बजाये 'ऐसे होगा'। ऐसी वन्दरफुल दुनिया जल्दी आवे और जल्दी तैयारी करें - इसमें जुट जायेंगे। जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अन्त में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेंगी। चारों ओर से "यही है, यही है", यही आवाज गूजेंगी और यह आवाज अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। एक से अनेक दीपक जग जायेंगे। सच्ची दीपमाला मनाने की तैयारी करनी है। पुरानी बातें, पुराने संस्कार का दशहरा मनाओ। क्योंकि दशहरे के बाद ही दीपमाला होगी।

 बापदादा ने बच्चों का इतना श्रृंगार किया है तो क्या बच्चे इतना श्रृंगार धारी नहीं बने हैं? एक दिन ऐसा समय आयेगा जो इस बापदादा के श्रृंगार को याद करेंगे। तो अभी वह समय है। पहले तो वह अपने को निरहंकारी, नम्रचित कहते हुए कई बच्चों को यह सुनाते थे कि मैं भी अभी सम्पूर्ण नहीं बना हूँ। मैं भी अभी निरन्तर देही अभिमानी नहीं बना हूँ। लेकिन आपने अपने अनुभव के आधार से तीन चार मास के अन्दर ध्यान दिया होगा, सन्मुख मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा तो अनुभव किया होगा कि यह ब्रह्मा अब साकारी नहीं लेकिन अव्यक्त आकारी रूपधारी है। कुछ वर्ष पहले ब्रह्मा छोटी-छोटी बातें सुनते थे, समय देते थे लेकिन अब क्या देखा? इन छोटी-छोटी बातों को न सुनने का कारण क्या था कि यह समय निरन्तर याद में बीते। क्या आप बच्चों ने उनके तन द्वारा कभी नोट नहीं किया कि उनके मस्तक में सितारा चमकता हुआ नजर आता था? अव्यक्त स्थिति में जो होंगे उन्होंने अव्यक्त मूर्त को जाना, पहचाना। जो खुद नहीं अव्यक्त अवस्था में रहते थे उन्होंने अमूल्य रतन को पूरी रीति नहीं

पहचाना। अभी भी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है न कि हमारा। अभी भी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।

✚ रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वह अब भी हैं। दो तीन दिन पहले मीठे-मीठे बाबा से रूह-रूहान चल रही थी। रूह-रूहान क्या है, मालूम है? बाबा ने बोला, वतन का अनुभव करने के लिए तैयार हो? क्या जवाब दिया होगा? यही कहा कि जो बाप की आज्ञा। जैसे चलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे जिस रूप में बिठायेंगे। बच्चों के अन्दर यही संकल्प होगा कि बापदादा ने छुट्टी क्यों नहीं ली? बाबा को भी यह कहा। बाबा ने कहा अगर सभी बच्चों को बिठाकर छुट्टी दिलाऊँ तो छुट्टी देंगे? आप भी बच्चों को देख, सर्विस को देख बच्चों के स्नेह में आ जायेंगे। इसलिए जो बाप ने कराया वही ड्रामा की भावी कहेंगे। व्यक्त रूप में नहीं, तो अव्यक्त रूप से मुलाकात कर ही रहे हैं। सर्विस की वृद्धि वैसे ही है, बच्चों की याद वैसे ही है लेकिन अन्तर यह है कि वह व्यक्त में अव्यक्त था और यह अव्यक्त ही है। जो नयनों की मुलाकात जानते होंगे वह नयनों से इस थोड़ी सी मुलाकात में अपने प्रति शिक्षा डायरेक्शन ले लेंगे। आप सभी को वतन में तो आना ही है। बच्चों से मुलाकात करने के लिए हर वक्त, हर समय तैयार ही रहते हैं। अब जहाँ तक बच्चों की जितनी बुद्धि क्लीयर होगी, उसी अनुसार ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेंगे। #1

✚ संजय ने क्या किया था? सभी को दृष्टि दी थी ना! तो यह नॉलेज की दृष्टि दे रहे हो। यही दिव्य दृष्टि है, नॉलेज ही दिव्य है ना। नॉलेज की दृष्टि सबसे शक्तिशाली है, यह भी वरदान है। नहीं तो इतनी बड़ी विश्व विद्यालय का क्या नॉलेज है उसका पता कैसे चलता? सुनते तो बहुत कम है ना! लिटरेचर द्वारा स्पष्ट हो जाता है। यह भी एक वरदान मिला हुआ है। यह भी एक विशेष आत्मा की विशेषता है। हर संस्था की सब साधनों से विशेषता प्रसिद्ध होती है। जैसे भाषणों से, सम्मेलनों से, ऐसे ही यह लिटरेचर, चित्र जो भी साधन हैं, यह भी संस्था या विश्व विद्यालय की एक विशेषता को प्रसिद्ध करने का साधन हैं। यह भी तीर है जैसे तीर पंछी को ले आता है

ना - ऐसे यह भी एक तीर है जो आत्माओं को समीप ले आता है। यह भी ड्रामा में पार्ट मिला है। लोगों के क्वेश्चन तो बहुत उठते हैं, जो क्वेश्चन उठते हैं - उसके स्पष्टीकरण का साधन जरूरी है। जैसे सम्मुख भी सुनाते हैं लेकिन यह लिटरेचर भी अच्छा साधन है। यह भी जरूरी है। शुरू से देखो ब्रह्मा बाप ने कितनी रूचि से यह साधन बनाये। दिन रात स्वयं बैठकर लिखते थे ना। कार्ड बना बनाकर आप लोगों को देते रहे ना - आप लोग उसे रत्न जड़ित करते रहे। तो यह भी करके दिखाया ना। तो यह भी साधन अच्छे हैं।

✚ वैष्णव अर्थात् कोई भी मलेच्छ चीज़ को टच नहीं करने वाला। आजकल के वैष्णव तो स्थूल तामसी चीजों से वैष्णव हैं। लेकिन आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो। अगर कोई संकल्प वा संस्कारों को टच किया अर्थात् धारण किया तो सच्चे वैष्णव हुए? और जो सच्चे वैष्णव नहीं बनते हैं, वह विष्णु के राज्य में विश्व के मालिक नहीं बन सकते हैं। तो अपने आपको देखो - कहां तक सदाकाल के वैष्णव बने हैं? वैष्णव कुल के जो होते हैं वह कोई भी मलेच्छ को कब अपने से टच करने भी नहीं देते, मलेच्छ से किनारा कर लेते हैं। वह हुई स्थूल की बात। जो सच्चे वैष्णव बनते हैं वह कोई भी पुरानी बातें, पुरानी दुनिया वा पुरानी दुनिया के कोई भी व्यक्ति वा वैभव को अपनी बुद्धि से टच करने नहीं देंगे, किनारे रहेंगे। तो ऐसे वैष्णव बनो। जैसे उन्हों को अगर कारणे-अकारणे कोई टच भी कर देते हैं तो नहाते हैं ना। अपने को शुद्ध बनाने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार अगर अपनी कमजोरी के कारण कोई भी पुराना तमोगुणी संस्कार वा संकल्प भी टच कर देते हैं तो विशेष रूप से ज्ञान-स्नान करना चाहिए अर्थात् बुद्धि में विशेष रूप से बाप की याद अथवा बाप से रूह-रिहान करनी चाहिए।

✚ बापदादा इस दिवस को स्मृति दिवस के साथ-साथ समर्थी दिवस कहते हैं। क्योंकि ब्रह्मा बाप ने अपने साकार स्वरूप में सर्व कार्य करने की समर्थियाँ अर्थात् शक्तियाँ साकार रूप में बच्चों को अर्पण किया। इस दिवस को सन शोज़ फादर के वरदान का दिन कहा जाता है। साकार रूप में बच्चों को आगे किया और फरिश्ता रूप में अपने बच्चों की और विश्व की सेवा आरम्भ

किया। ये 18 जनवरी का दिवस ब्रह्मा बाप के सम्पूर्ण नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप का रहा। जैसे गीता के 18 अध्याय का सार है - भगवान ने अर्जुन को नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनाया। तो ये 18 का यादगार है कि ब्रह्मा बाप कितना ही बच्चों के प्रति अति स्नेही रहे, जो बच्चे अनुभवी हैं कि सदा सेवा के निमित्त बच्चों को कितना याद करते - अनुभव है ना! मोह नहीं रहा लेकिन दिल का प्यार रहा। क्योंकि मोह उसको कहा जाता है जिसमें अपना स्वार्थ हो। तो ब्रह्मा बाप का अपना स्वार्थ नहीं रहा, लेकिन बच्चों में सेवा अर्थ अति स्नेह रहा। फिर भी साथ रहते, बच्चों को सामने देखते भी कोई देह के रूप में याद सताई नहीं। एकदम न्यारा और प्यारा रहा। इसलिए कहा जाता है स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा। कोई मेरापन नहीं रहा, देहभान से भी नष्टोमोहा। तो ये दिवस ऐसे फॉलो फादर का पाठ पढ़ाने का दिवस रहा।



जितना इस जीवन में 'समय' सफल करते हो, तो समय की सफलता के फलस्वरूप राज्य-भाग्य का फुल (Full) समय राज्य-अधिकारी बनते हो। हर श्वास सफल करते हो, इसके फलस्वरूप अनेक जन्म सदा स्वस्थ रहते हो। कभी चलते-चलते श्वास बन्द नहीं होगा, हार्ट फेल नहीं होगा। एक गुणा का हजार गुणा सफलता का अधिकार प्राप्त करते हो। इसी प्रकार से सर्व खजाने सफल करते रहते हो। इसमें भी विशेष ज्ञान का खजाना सफल करते हो। ज्ञान अर्थात् समझ। इसके फलस्वरूप ऐसे समझदार बनते हो जहाँ भविष्य में अनेक वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ती, स्वयं ही समझदार बन राज्य-भाग्य चलाते हो। दूसरा खजाना है-सर्व शक्तियों का खजाना। जितना शक्तियों के खजाने को कार्य में लगाते हो, सफल करते हो उतना आपके भविष्य राज्य में कोई शक्ति की कमी नहीं होती। सर्व शक्तियाँ स्वतः ही अखण्ड, अटल, निर्विघ्न कार्य की सफलता का अनुभव कराती हैं। कोई शक्ति की कमी नहीं। धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता - दोनों ही साथ-साथ रहती हैं। तीसरा है-सर्व गुणों का खजाना। इसके फलस्वरूप ऐसे गुणमूर्त बनते हो जो आज लास्ट समय में भी आपके जड़ चित्र का गायन 'सर्व गुण सम्पन्न देवता' के रूप में हो रहा है। ऐसे हर एक खजाने की सफलता के फलस्वरूप का मनन करो। समझा? आपस में इस पर रूहरिहान करना।

✚ ब्राह्मण बनना अर्थात् खाता जमा करना। क्योंकि इस एक जन्म के जमा किये हुए खाते के प्रमाण 21 जन्म प्रालब्ध पाते रहेंगे। न सिर्फ 21 जन्म प्रालब्ध प्राप्त करेंगे लेकिन जितना पूज्य बनते हो अर्थात् राज्य पद के अधिकारी बनते हो, उसी हिसाब अनुसार आधाकल्प भक्तिमार्ग में पूजा भी राज्य भाग्य के अधिकार के हिसाब से होती है। राज्य पद श्रेष्ठ है तो पूज्य स्वरूप भी इतना ही श्रेष्ठ होता है। इतनी संख्या में प्रजा भी बनती है। प्रजा अपने राज्य अधिकारी विश्व-महाराजन वा राजन को मात पिता के रूप से प्यार करती है। इतना ही भक्त आत्मायें भी ऐसे ही उस श्रेष्ठ आत्मा को वा राज्य अधिकारी महान आत्मा को अपना प्यारा ईष्ट समझ पूजा करते हैं। जो अष्ट बनते हैं वह ईष्ट भी इतने ही महान बनते हैं। इस हिसाब प्रमाण इसी ब्राह्मण जीवन में राज्य-पद और पूज्य-पद पाते हो। आधा कल्प राज्य-पद वाले बनते हो और आधा कल्प पूज्य-पद को प्राप्त करते हो। तो यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। इसलिए आप सभी का एक स्लोगन बना हुआ है, याद है? - 'अब नहीं तो कब नहीं'। यह इस समय के इसी जीवन के लिए ही गाया हुआ है। ब्राह्मणों के लिए भी यह स्लोगन है तो अज्ञानी आत्माओं के लिए भी सुजाग करने का यह स्लोगन है।

✚ शक्तिशाली आत्माओं को देख बापदादा मुस्कराते हुए रूह-रूहान कर रहे थे कि ब्रह्मा की रचना दो प्रकार की गई हुई है। एक ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। और दूसरी रचना - ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची। तो ब्रह्मा बाप ने कितने समय से श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प किया! है तो बाप दादा दोनों ही। फिर भी रचना के लिए शिव की रचना नहीं कहेंगे। शिव वंशी कहेंगे। शिवकुमार शिवकुमारी नहीं कहेंगे। ब्रह्माकुमार-कुमारी कहेंगे। तो ब्रह्मा ने विशेष श्रेष्ठ संकल्प से आह्वाहन किया अर्थात् रचना रची। तो यह ब्रह्मा के शक्तिशाली संकल्प से आह्वाहन से साकार में पहुँच गये हैं। संकल्प की रचना भी कम नहीं हैं। जैसे संकल्प शक्तिशाली है तो दूर से भिन्न पदों के अन्दर से बच्चों को अपने परिवार में लाना था, श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प ने प्रेर कर समीप लाया। इसलिए यह शक्तिशाली संकल्प की रचना भी शक्तिशाली है। कईयों का अनुभव भी है - जैसे बुद्धि को विशेष कोई प्रेर कर समीप ला रहा है। ब्रह्मा के शक्तिशाली

संकल्प के कारण ब्रह्मा के चित्र को देखते ही चैतन्यता का अनुभव होता है। चैतन्य सम्बन्ध के अनुभव से आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा रचना को देख हर्षित हो रहे हैं। अभी आगे और भी शक्तिशाली रचना का प्रत्यक्ष सबूत देते रहेंगे।

✚ जो बच्चे साकार के बाद में आये हैं वो सोचते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने अपना साकार पार्ट इतना जल्दी क्यों पूरा किया? हम तो देखते ना! हम तो मिलते ना! सोचते हो ना? लेकिन कल्प पहले का भी गायन है कि कौरव सेना के निमित्त बने हुए महावीर का कल्याण किस द्वारा हुआ? शक्ति द्वारा हुआ ना! तो शक्तियों का पार्ट ड्रामा में साकार रूप में नूँधा हुआ है। और सब मानते भी हैं कि मातृ शक्ति के बिना इस विश्व का कल्याण होना असम्भव है। तो ब्रह्मा बाप फरिश्ता क्यों बना? साकार पार्ट परिवर्तन क्यों हुआ? अगर ब्रह्मा बाप फरिश्ता रूप नहीं धारण करता तो आप इतनी आत्मायें यहाँ पहुँच नहीं पाती। क्योंकि वायुमण्डल की भ्रान्तियाँ इस विश्व क्रान्ति के कार्य को हल्का कर रही थी। तो ब्रह्मा बाप का फरिश्ता बनना आप ज्यादा से ज्यादा बच्चों के भाग्य खुलने का कारण रहा। अभी फरिश्ते रूप में जो सेवा की फास्ट गति है वो देख रहे हो ना! फास्ट गति हुई या कम हुई है? फास्ट हुई है ना! तो फास्ट गति हुई तभी आप यहाँ पहुँचे हो। नहीं तो सोये हुए थे अच्छी तरह से। तो आज का दिवस ऐसा नहीं है जैसे लोग मनाते हैं - चला गया, चला गया। लेकिन उमंग-उत्साह आता है कि फॉलो फादर, हम भी ऐसे स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा बनें। ये प्रैक्टिकल पाठ पढ़ने का दिवस है।

✚ ऐसी कोई सभा होगी जो सब मुस्कराते रहें? और सतसंग में जाओ तो कोई का चेहरा कैसा होगा, कोई का कैसा होगा? और यहाँ सबके चेहरे देखो तो क्या हैं? मुस्कराते हुए। ब्राह्मणों के मुस्कान की निशानी देवताओं के चित्र में भी दिखाते हैं। वो किसके चित्र हैं? आपके हैं ना? कि बड़ी दादियों के हैं? आपके मन्दिर हैं? कौन-सी देवी या देवता हो? मालूम है? गणेश हो, हनूमान हो, देवियाँ हो, क्या हो? कोई भी देवी-देवता हो लेकिन दिव्यगुणधारी आत्मा देवता है। फिर कोई हनूमान कहे या गणेश कहे या देवी कहे, लेकिन दिव्यगुणधारी देव आत्मा हो।

अच्छा - (दादियों से) आप लोगों को मालूम पड़ता है कि आपके भक्त किस समय प्रार्थना करते हैं? जिस समय भक्त पुकारते हैं तो आप लोगों को मालूम पड़ता है? कि अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं? बिचारे भक्त ऐसे ही चिल्लाते हैं! फील होता है ना! भक्तों के पुकार की फीलिंग जरूर आती है। तब तो शुभ भावना, शुभ कामनायें देते हो ना! वायुमण्डल में शान्ति क्यों फैलाते हो, लाइट हाउस, माइट हाउस क्यों बनते हो? सर्व भक्त आत्मायें या अन्य आत्मायें सन्तुष्ट, खुश रहे, शान्त रहे। (दादी जानकी से) विश्व के गोले पर खड़ी हो ना! कि लण्डन के गोले पर खड़ी हो? विश्व के गोले पर हैं ना! मधुबन के गोले पर नहीं, विश्व के गोले पर।



बाप से मिलाने के योग्य बनाने में आप निमित्त शक्ति के रूप में ऐसा पवित्र प्रेम और अपनी प्राप्तियों द्वारा श्रेष्ठ पालना दो, योग्य बनाओ अर्थात् योगी बनाओ। मास्टर रचयिता बनना तो सबको आता है। अल्पकाल प्राप्ति कराने वाले नामधारी जो महान आत्मायें हैं, वे भी रचना तो बहुत रच लेते हैं, प्रेम भी देते हैं लेकिन पालना नहीं दे सकते हैं। इसलिए फालोअर्स बन जाते हैं लेकिन पालना से बड़ा कर बाप से मिलायें अर्थात् पालना द्वारा बाप के अधिकारी योग्य आत्मा बनायें, यह नहीं कर सकते हैं। इसलिए फालोअर्स ही रह जाते, बच्चे नहीं बनते। बाप के वर्से के अधिकारी नहीं बनते हैं। ऐसे ही आप ब्राह्मण आत्माओं में भी रचना बहुत जल्दी रच लेते हो अर्थात् निमित्त बनते हो लेकिन प्रेम और पालना द्वारा उन आत्माओं को अविनाशी वर्से के अधिकारी बनाना, इसमें बहुत कम योग्य आत्मायें हैं। जैसे लौकिक जीवन में माँ बच्चे को पालना द्वारा शक्तिशाली बनाती है, जिससे वह सदा किसी भी समस्या का सामना कर सके। सदा तन्दुरूस्त रहे, सम्पत्तिवान रहे। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें जगत माता बन एक दो आत्माओं की माँ नहीं, 'जगत माँ', बेहद की माँ बन, मन से ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो सदा आत्मायें अपने को विघ्न विनाशक, शक्ति सम्पन्न, हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

✚ अगर अपने आराम के लिए कमाते वा जमा करते हैं तो यहाँ भले आराम करेंगे लेकिन वहाँ औरों को आराम देने लिए निमित्त बनेंगे! दास-दासियाँ क्या करेंगे! रायल फैमली को आराम देने के लिए होंगे ना! यहाँ के आराम से वहाँ आराम देने के लिए निमित्त बनना पड़े। इसलिए जो मुहब्बत से सच्ची दिल से कमाते हो, सेवा में लगाते हो, वही सफल कर रहे हो। अनेक आत्माओं की दुआयें ले रहे हो। जिन्हों के निमित्त बनते हो वही फिर आपके भक्त बन आपकी पूजा करेंगे। क्योंकि आपने उन आत्माओं के प्रति सेवा की तो सेवा का रिटर्न वह आपके जड़ चित्रों की सेवा करेंगे! पूजा करेंगे! 63 जन्म सेवा का रिटर्न आपको देते रहेंगे। बाप से तो मिलेगा ही लेकिन उन आत्माओं से भी मिलेगा। जिनको सन्देश देते हो और अधिकारी नहीं बनते हैं तो फिर वह इस रूप से रिटर्न देंगे। जो अधिकारी बनते वह तो आपके सम्बन्ध में आ जाते हैं। कोई सम्बन्ध में आ जाते। कोई भक्त बन जाते। कोई प्रजा बन जाते। वैराइटी प्रकार की रिजल्ट निकलती है। समझा! लोग भी पूछते हैं ना कि आप सेवा के पीछे क्यों पड़ गये हो। खाओ-पियो मौज करो। क्या मिलता है जो इतना दिन-रात सेवा के पीछे पड़ते हो? फिर आप क्या कहते हो? जो हमको मिला है वह अनुभव करके देखो। ‘अनुभवी ही जाने इस सुख को’। यह गीत गाते हो ना! अच्छा –

✚ यह अलौकिक जन्म(शिव जयन्ती) बाप का भी न्यारा है तो आप बच्चों का भी न्यारा और प्यारा है। यह एक ही बाप है जिसका ऐसा जन्म वा जयन्ती है जो और किसी का भी ऐसे जन्म दिन न हुआ है, न होना है। निराकार और फिर दिव्य जन्म; और सभी आत्माओं का जन्म अपने-अपने साकार शरीर में होता है लेकिन निराकार बाप का जन्म परकाया प्रवेश से होता है। सारे कल्प में ऐसा इस विधि से किसका जन्म हुआ है? एक ही बाप का ऐसा न्यारा जन्म दिन होता है जिसको शिव जयन्ती के रूप में भगत भी मनाते आते हैं। इसलिए इस दिव्य जन्म के महत्व को आप जानते हो, भगत भी जानते नहीं हैं लेकिन जो सुना है उसी प्रमाण ऊंचे ते ऊंचा समझते हुए मनाते आते हैं। आप बच्चे सिर्फ मनाते नहीं हो लेकिन मनाने के साथ स्वयं को बाप समान बनाते भी हो। अलौकिक दिव्य जन्म के महत्व को जानते हो। और किसी भी बाप के साथ बच्चे का, साथ-साथ जन्म नहीं होता लेकिन शिव जयन्ती अर्थात् बाप के दिव्य जन्म के साथ

बच्चों का भी जन्म है, इसलिए डायमण्ड जुबली मनाई ना। तो बाप के साथ बच्चों का भी दिव्य जन्म है। सिर्फ इसी जयन्ती को हीरे तुल्य जयन्ती कहते हो लेकिन हीरे तुल्य जयन्ती मनाते स्वयं भी हीरे तुल्य जीवन में आ जाते हो। इस रहस्य को सभी बच्चे अच्छी तरह से जानते भी हो और औरों को भी सुनाते रहते हो।

✚ ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के बच्चे हो, तो आपका तो एक-एक सेकण्ड का टाइमटेबुल फिक्स होना चाहिए। क्यों नहीं बिन्दी लगती, उसका कारण क्या? ब्रेक पावरफुल नहीं है। शक्तियों का स्टॉक जमा नहीं है इसीलिए सेकण्ड में स्टॉप नहीं कर सकते। कई बच्चे कोशिश बहुत करते हैं, जब बापदादा देखते हैं मेहनत बहुत कर रहे हैं, यह नहीं हो, यह नहीं हो... कहते हैं नहीं हो लेकिन होता रहता है। बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। कारण यह है, जैसे देखो रावण को मारते भी हैं, लेकिन सिर्फ मारने से छोड़ नहीं देते हैं, जलाते हैं और जलाके फिर हड्डियाँ जो हैं, वह आजकल तो नदी में डाल देते हैं। कोई भी मनुष्य मरता है तो हड्डियाँ भी नदी में डाल देते हैं तभी समाप्ति होती है। तो आप क्या करते हो? ज्ञान की प्वाइंट्स से, धारणा की प्वाइंट्स से उस बात रूपी रावण को मार तो देते हो लेकिन योग अग्नि में स्वाहा नहीं करते हो। और फिर जो कुछ बातों की हड्डियाँ बच जाती हैं ना - वह ज्ञान सागर बाप के अर्पण कर दो। तीन काम करो - एक काम नहीं करो। आप समझते हो पुरूषार्थ तो किया ना, मुरली भी पढ़ी, 10 बारी मुरली पढ़ी फिर भी आ गई क्योंकि आपने योग अग्नि में जलाया नहीं, स्वाहा नहीं किया। अग्नि के बाद नाम निशान गुम हो जाता है फिर उसको भी बाप सागर में डाल दो, समाप्त।

✚ कब कायर नहीं बनना। कमज़ोरी नहीं दिखाना। काली का पूजन देखा है? जैसे का काली दल है ना। वैसे इस सारे ग्रुप को फिर काली दल बनना है। एक-एक काली रूप जब बनेंगी तब समस्याओं का सामना कर सकेंगी। विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना

है। शीतला भी किस रूप में बनना है वह अर्थ भी तो समझती हो। लेकिन जब सर्विस पर हो, कर्तव्य पर हो तो काली रूप चाहिए। काली रूप होगी तो काली भी किस पर बलि नहीं चढ़ेगी। लेकिन अनेकों को अपने ऊपर बलि चढ़ायेंगी। कोई पर भी स्वयं बलि नहीं चढ़ना। लेकिन उसको अपने ऊपर अर्थात् जिसके ऊपर आप सभी बलि चढ़ी हो उन पर ही सभी को बलि चढ़ाना है। ऐसी काली अगर बन गई तो फिर अनेकों की समस्याओं को हल कर सकेंगी। बहुत कड़ा रूप चाहिए। माया का कोई विघ्न सामने आने का साहस न रख सके। जब कुमारियाँ काली रूप बन जाये तब सर्विस की सफलता हो। तो इन सभी कालीपन का लक्षण सुनाना। सदैव एकरस स्थिति रहे और विघ्नों को भी हटा सकें इसके लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखनी है। जैसे एक आँख में मुक्ति दूसरी आँख में जीवनमुक्ति रखते हैं। वैसे एक तरफ़ विनाश के नगाड़े सामने रखो और दूसरे तरफ़ अपने राज्य के नज़ारे सामने रखो, दोनों ही साथ में बुद्धि में रखो। विनाश भी, स्थापना भी। नगाड़े भी नज़ारे भी। तब कोई भी विघ्न को सहज पार कर सकेंगी।

✚ बाप साथ हो, बस बाबा आपके साथ सो रहे हैं, यह है गोली। ऐसा भी फिर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयाँ नहीं चलती थी। याद है ना। शुरू में कितनी समय दवाईयाँ नहीं थी। हाँ, थोड़ा मलाई मक्खन खा लिया। दवाई नहीं खाते थे। तो जैसे आदि में प्रैक्टिस कराई है ना। थे तो पुराने शरीर। अन्त में फिर वह आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना - एक बार साक्षात्कार हो जाए। लास्ट तक जो पक्के होंगे उन्हीं को साक्षात्कार होंगे फिर वही संगठन की भट्टी होगी। सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ तहाँ बिखर गये हो! फिर नदियाँ सब सागर में समा जायेंगी। लेकिन समय नाजुक होगा। साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिए बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए। जो टच हो जाए कि अभी क्या करना है। एक सेकण्ड भी देरी की तो गये। जैसे वह भी अगर बटन दबाने में एक सेकण्ड भी देरी की तो क्या रिजल्ट होगी? यह भी अगर एक सेकण्ड टचिंग होने में देरी हुई तो फिर पहुँचना मुश्किल होगा। वह लोग भी कितना अटेन्शन से बैठे रहते हैं। तो यह बुद्धि की टचिंग। जैसे शुरू में घर बैठे आवाज़ आया, बुलावा हुआ कि आओ, पहुँचो। अभी

निकलो। और फौरन निकल पड़े। ऐसे ही अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया।

✚ माया भी बड़ी चतुर है। कभी भी वार करने के लिए पहले साथ और हाथ छोड़ा कर अकेला बनाती है। जब अकेले कमजोर पड़ जाते हो तब माया वार करती है। वैसे भी अगर कोई दुश्मन किसी के ऊपर वार करता है तो पहले उनको संग और साथ से छोड़ते हैं। कोई ना कोई युक्ति से उनको अकेला बना कर फिर वार करते हैं। तो माया भी पहले साथ और हाथ छोड़ा कर फिर वार करेगी। अगर साथ और हाथ छोड़ो ही नहीं तो फिर सर्वशक्तिवान साथ होते माया क्या कर सकती है? मायाजीत हो जायेंगे। तो साथ और हाथ को कब छोड़ो नहीं। ऐसे सदा मास्टर सर्वशक्तिवान बनकर के चलो। भक्ति में भी पुकारते हैं ना - एक बार हाथ पकड़ लो। तो बाप हाथ पकड़ते हैं, हाथ में हाथ देकर चलाना चाहते हैं फिर भी हाथ छोड़ देते हैं तो भटकना नहीं होगा तो क्या होगा? तो अब अपने आपको भटकाने के निमित्त भी स्वयं ही बनते हो। जैसे कोई भी योद्धा युद्ध के मैदान पर जाने से पहले ही अपने शस्त्र को, अपनी सामग्री को साथ में रख करके फिर मैदान में जाते हैं। ऐसे ही इस कर्मक्षेत्र रूपी मैदान पर कोई भी कर्म करने अथवा योद्धे बन युद्ध करने के लिए आते हो; तो कर्म करने से पहले अपने शस्त्र अर्थात् यह अष्ट शक्तियों की सामग्री साथ रख कर फिर कर्म करते हो? वा जिस समय दुश्मन आता है उस समय सामग्री याद आती है? तो फिर क्या होगा? हार हो जाएगी।

✚ जैसे अभी आपके जड़ चित्रों के आगे, कोई मन्दिरों में जाकर प्रार्थना कर सुख शान्ति मांगते हैं। कोई तीर्थ स्थानों पर जाकर मांगते हैं। कोई घर बैठे मांगते हैं। जिसकी जहां तक शक्ति होती वहां तक पहुँचते हैं, लेकिन यथाशक्ति यथाफल की प्राप्ति करते हैं। कोई दूर बैठे भी दिल से करते हैं और कोई मूर्ति के सामने तीर्थ स्थान वा मन्दिरों में जाकर भी दिखावे मात्र करते हैं। स्वार्थ वश करते हैं। उन सब हिसाब अनुसार जैसा कर्म, जैसी भावना वैसे फल मिलता है। ऐसे अब समय प्रमाण आप चैतन्य महादानी वरदानी मूर्तियों के आगे प्रार्थना करेंगे। कोई सेवा

स्थान रूपी मन्दिरों में पहुँचेंगे। कोई महान तीर्थ मधुवन तक पहुँचेंगे। और कोई घर बैठे साक्षात्कार करते दिव्य बुद्धि द्वारा प्रत्यक्षता का अनुभव करेंगे। सम्मुख न आते भी स्नेह और दृढ़ संकल्प से प्रार्थना करेंगे। मंसा में आप चैतन्य फरिश्तों का आह्वान कर मुक्ति से वर्से की अंचली मांगेंगे। थोड़े समय में सर्व आत्माओं को वर्सा दिलाने का कार्य तीव्रगति से करना होगा। जैसे विनाश के साधन रिफाइन होने के कारण तीव्रगति से समाप्ति के निमित्त बनेंगे ऐसे आप वरदानी महादानी आत्मायें अपने कर्मातीत फरिश्ते स्वरूप के सम्पूर्ण शक्तिशाली स्वरूप द्वारा सर्व की प्रार्थना का रेसपाण्ड मुक्ति का वर्सा दिलायेंगी।

✚ अब से अकाल-तख्त-नशीन होने का अभ्यास चाहिए। जब चाहे अशरीरीपन का अनुभव कर सकें, बुद्धियोग द्वारा जब चाहे तब शरीर के आधार में आयें। “अशरीरी भव!” का वरदान अपने कार्य में अब से लगाओ। ऐसे समय में श्रीमत कैसे लेंगे? टेलीफोन व टेलीग्राम से वायरलेस (बिना तार के विद्युत-चुम्बकीय तरंगों द्वारा समाचार भेजने का यंत्र) सेट है- चाहिये तो वायरलेस लेकिन सेट है? वायरलेस की सेटिंग कैसे होगी? बिल्कुल वाइसलेस (पाप-रहित) वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। जरा अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिये महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे। यही प्रकृति वार करने के बजाय बधाई के नजारे सामने लायेगी। चारों ओर जयज यकार की शहनाइयाँ बजायगी। और बापदादा के विजय माला के मणके विश्व के बीच प्रसिद्ध होंगे। सारा विश्व “अमर भव!” का नारा लगायेगा। ऐसे समय के लिये तैयार हो? अथवा समय आपको तैयार करेगा कि आप समय का आह्वान करेंगे? समय पर जागने वाले को क्या टाइटल देते हैं? समय पर कौन जागा? अगर समय पर जागेंगे या यह सोचेंगे कि समय तैयार कर ही देगा या समय पर हो ही जायेगा तो ब्राह्मण वंश की बजाय क्षत्रिय वंश के हो जायेंगे।

✚ तो आज बापदादा ने देखा कि एक तो सभी पूर्वज हैं और दूसरा सबसे बड़े ते बड़े पूज्य आत्मायें भी आप हो। आप जैसी पूजा सारे कल्प में किसकी नहीं होती। तो पूर्वज भी हो और पूज्य भी।

लेकिन पूज्य भी नम्बरवार हैं। जो भी ब्राह्मण बनते हैं उनकी पूजा होती जरूर है लेकिन किसकी विधिपूर्वक होती है और किसकी काम चलाऊ होती है। तो जो ब्राह्मण यहाँ भी योग में बैठते हैं लेकिन काम चलाऊ, कुछ नींद किया, कुछ योग किया, कुछ व्यर्थ सोचा और कुछ शुभ सोचा। तो यह काम चलाऊ हुआ ना! सफेद बत्ती जल गई, काम पूरा हो गया। ऐसे धारणा में भी काम चलाऊ बहुत होते हैं। कोई भी सरकमस्टांस आयेगा तो कहेंगे अभी तो ऐसे करके चलाओ, पीछे देखा जायेगा। तो ऐसों की पूजा काम चलाऊ होती है। देखो लाखों सालग्राम बनाते हैं लेकिन क्या होता है? विधिपूर्वक पूजा होती है? काम चलाऊ होती है ना! पाइप से नहला दिया और तिलक भी कटोरी भरके पण्डित लोग ऐसे-ऐसे कर देते हैं। (छिड़क देते हैं) तिलक लग गया। तो ये क्या हुआ? काम चलाऊ हुआ ना। पूज्य सभी बनते हो लेकिन कैसे पूज्य बनते हो वो नम्बरवार है। किसकी हर कर्म की पूजा होती है। दातन (दातून) का भी दर्शन होता है, दातन हो रहा है। मथुरा में जाओ तो दातन का भी दर्शन कराते हैं, इस समय दातन का समय है। तो काम चलाऊ नहीं बनना। नहीं तो पूजा भी ऐसी होगी।



आज बड़े ते बड़े बाप, ग्रैन्ड फादर अपने ग्रैन्ड चिल्ड्रेन लवली बच्चों से मिलने आये हैं। ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा गाया हुआ है। निराकार बाप ने साकार सृष्टि की रचना के निमित्त ब्रह्मा को बनाया। मनुष्य सृष्टि का रचयिता होने के कारण, मनुष्य सृष्टि का यादगार वृक्ष के रूप में दिखाया है। बीज गुप्त होता है, पहले दो पत्ते, जिससे तना निकलता है - वो ही वृक्ष के आदि देव आदि देवी माता पिता के स्वरूप में वृक्ष का फाउण्डेशन ब्रह्मा निमित्त बनता है। उस द्वारा ब्राह्मण तना प्रकट होता है। और ब्राह्मण तना से अनेक शाखायें उत्पन्न होती हैं। इसलिए ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा गाया हुआ है। ब्रह्मा का अवतरण होना अर्थात् बुरे दिन खत्म हो बड़े दिन शुरू होना। रात खत्म हो ब्रह्मा मुहूर्त शुरू हो जाता वास्तव में है ब्रह्मा मुहूर्त, कहने में ब्रह्म मुहूर्त आता है। इसलिए ब्रह्मा का बुजुर्ग रूप दिखाया है। ग्रैन्ड फादर निराकारी बाप ग्रैन्ड चिल्ड्रेन को इतनी सौगात देते जो 21 जन्म लिए खाते रहते। दाता भी है तो विधाता भी है। ज्ञान रत्नों की थालियाँ भर भरकर दे देते हैं। शक्तियों की गोल्डन गिफ्ट अनगिनत स्वरूप में दे देते हैं। गुणों के

गहने बाक्स भर-भर कर देते हैं। कितने शृंगार बाक्स हैं आपके पास! रोज नया शृंगार करो तो भी अनगिनत हैं।

✚ समय प्रति-समय जो भी वी.आई.पी.ज. वा पेपर्स वाले आये हैं उन्हीं को सेवा की स्टेज पर लाते रहो तो मुख से बोलने से भी वह मुख का बोल उन आत्माओं के लिए ईश्वरीय बन्धन में बन्धने का साधन बन जाता है। एक बार बोला कि बहुत अच्छा है और फिर सम्बन्ध से दूर हो गये, तो भूल जाते हैं। लेकिन बार-बार बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहते रहें, अनेकों के सामने, तो वह बोल भी उन्हीं को अच्छा बनने का उत्साह बढ़ाता है। और साथ-साथ सूक्ष्म नियम भी है कि जितनों को अनेक बोल द्वारा परिचय मिलता है अर्थात् उनके नाम द्वारा, बोल द्वारा जितनों पर प्रभाव पड़ता है उन आत्माओं का शेयर उनको मिल जाता है। अर्थात् उन्हीं के खाते में पुण्य की पूंजी जमा हो जाती है। और वही पुण्य की पूंजी अर्थात् पुण्य का श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ बनने के लिए उन्हीं को खींचता रहेगा। इसलिए जो अभी डायरेक्ट बाप की भूमि से कुछ न कुछ ले गये हैं चाहे थोड़ा, चाहे बहुत लेकिन उन्हीं से दान कराओ। अर्थात् सेवा कराओ। तो जैसे स्थूल धन का फल सकामी अल्पकाल का राज्य मिलता है वैसे इस ज्ञान धन वा अनुभव के धन दान करने से भी नये राज्य में आने का पात्र बना देगा। बहुत अच्छे प्रभावित हुए, अब उन प्रभावित हुई आत्माओं द्वारा सेवा कराए उन आत्माओं को भी सेवा के बल द्वारा आगे बढ़ाओ और अनेकों के प्रति निमित्त बनाओ।

✚ सदा अपने को श्रेष्ठ भाग्यवान अनुभव करते हो? जिसका बाप ही भाग्यविधाता हो वह कितना न भाग्यवान होगा! भाग्यविधाता बाप है तो वह वसें में क्या देगा? जरूर श्रेष्ठ भाग्य ही देगा ना! सदा भाग्यविधाता बाप और भाग्य दोनों ही याद रहें। जब अपना श्रेष्ठ भाग्य स्मृति में रहेगा तब औरों को भी भाग्यवान बनाने का उमंग उत्साह रहेगा। क्योंकि दाता के बच्चे हो। भाग्य विधाता बाप ने ब्रह्मा द्वारा भाग्य बाँटा, तो आप ब्राह्मण भी क्या करेंगे? जो ब्रह्मा का काम, वह ब्राह्मणों का काम। तो ऐसे भाग्य बाँटने वाले। वे लोग कपड़ा बाँटेंगे, अनाज बाँटेंगे, पानी बाँटेंगे लेकिन

श्रेष्ठ भाग्य तो भाग्य विधाता के बच्चे ही बाँट सकते। तो भाग्य बाँटने वाली श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मायें हो। जिसे भाग्य प्राप्त है उसे सब कुछ प्राप्त है। वैसे अगर आज किसी को कपड़ा देंगे तो कल अनाज की कमी पड़ जायेगी, कल अनाज देंगे तो पानी की कमी पड़ जायेगी। एक-एक चीज़ कहाँ तक बाँटेंगे। उससे तृप्त नहीं हो सकते। लेकिन अगर भाग्य बाँटा तो जहाँ भाग्य है वहाँ सब कुछ है। वैसे भी कोई को कुछ प्राप्त हो जाता है तो कहते हैं - वाह मेरा भाग्य! जहाँ भाग्य है वहाँ सब प्राप्त है। तो आप सब श्रेष्ठ भाग्य का दान करने वाले हो। ऐसे श्रेष्ठ महादानी, श्रेष्ठ भाग्यवान। यही स्मृति सदा उड़ती कला में ले जायेगी।

✚ पहले जब स्वयं में अनुभव होगा तब दूसरों को करा सकेंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे भी जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना! फिर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है, तब तो जाते हैं। कैसे प्राप्ति होती है? उनकी दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख कर वायब्रेशन लेते हैं। कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ देखेंगे। हरेक का अटेन्शन सूरत की तरफ जाता है। क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलते हैं, नयनों के द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियाँ हैं। आप सबने चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना - यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइंस की शक्ति का प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं। लेकिन साइंस की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही निकली है ना! जब साइंस की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। पद्मगुणा तो इतनी शक्ति जमा करो। बाप की दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तब समय पर दे सकेंगे।

✚ पवित्रता की शक्ति कितनी महान है, यह तो जानते हो ना! पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। सम्पूर्ण पवित्रता ऐसी श्रेष्ठ शक्ति है! अंत में जब सब

संपूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। योग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे- धीरे सेवा नहीं होगी। सोचा और हुआ - इसको कहते हैं 'विहंग मार्ग की सेवा'। अभी अपने में भर रहे हो, फिर कार्य में लगायेंगे। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह किस समय का यादगार है? अभी का है ना। तो ऐसे ज्वालामुखी बनो। आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव- सब-कुछ भस्म करो। अपने तो कर लिये हैं ना या अपने भी कर रहे हो? सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा। अभी तो व्यक्तियों को ही संदेश नहीं पहुँचा है, प्रकृति वी तो बात पीछे है। तो स्पीड तेज करो। गली-गली में सेंटर हों। क्योंकि सरकमस्टांस प्रमाण एक गली से दूसरी गली में जा नहीं सकेंगे, एक-दो को देख भी नहीं सकेंगे। तो घर-घर में, गली-गली में हो जायेगा ना।



प्रजा के संस्कार हैं? वा स्टेट के राज्य अधिकारी के संस्कार हैं अर्थात् हद के राज्य अधिकारी के संस्कार हैं वा बेहद विश्व महाराजन के संस्कार हैं वा उनसे भी लास्ट पद दास-दासी के संस्कार हैं? साकार में भी सुनाया था कि दास-दासी बनने की निशानी क्या है? जो किसी भी समस्या वा संस्कार के अधीन बन उदास रहता है तो उदास वा उदासी ही निशानी है -दास दासी बनना। तो मैं कौन? यह स्वयं ही स्वयं को चैक करो। कहाँ किसी भी प्रकार की उदासी की लहर तो नहीं आती? उदास अर्थात् अभी भी दास हैं तो ऐसे को राज्य अधिकारी कैसे कहेंगे? इसी तरह से साहूकार प्रजा भी होगी। तो यहाँ भी कई राजे नहीं बने हैं लेकिन साहूकार बने हैं क्योंकि ज्ञान रत्नों का खजाना बहुत है, सेवा कर पुण्य का खाता भी जमा बहुत है। लेकिन समय आने पर स्वयं को अधिकारी बनाकर सफलतामूर्त्त बन जाएं, वह कन्ट्रोलिंग पावर और रूलिंग पावर नहीं है अर्थात् नालेजफुल हैं लेकिन पावरफुल नहीं हैं। शस्त्रधारी हैं लेकिन समय पर कार्य में नहीं ला सकते हैं। स्टाक है लेकिन समय पर न स्वयं यूज कर सकते और न औरों को यूज करा सकते हैं। विधान आता है लेकिन विधी नहीं आती। ऐसे भी संस्कार वाली

आत्माएं हैं अर्थात् साहूकार संस्कार वाली हैं। जो राज्य अधिकारी आत्माओं के सदा समीप के साथी जरूर होते हैं लेकिन स्व अधिकारी नहीं होते।

✚ बाप ने हरेक बच्चे को महान बना दिया। विश्व में आपसे महान और कोई है? सबसे नीचे भारतवासी गिरे और उसमें भी जो 84 जन्म लेने वाली ब्राह्मण आत्मायें हैं, वह नीचे गिरी। तो जितना नीचे गिरे उतना अभी ऊँचा उठ गये। इसलिए कहते हैं ब्राह्मण अर्थात् ऊँची चोटी। जो ऊँचाई का स्थान होता है उसको चोटी कहा जाता है। पहाड़ों की ऊँचाई को भी चोटी कहते हैं। तो यह खुशी है कि क्या-से-क्या बन गये! पांडवों को ज्यादा खुशी है या शक्तियों को? (शक्तियों को) क्योंकि शक्तियों को बहुत नीचे गिरा दिया था। द्वापर से लेकर पुरुष तन ने ही कोई-न-कोई पद प्राप्त किया। धर्म में भी अभी-अभी फीमेल्स भी महामण्डलेश्वरियाँ बनी हैं। नहीं तो महामण्डलेश्वर ही गाये जाते थे। जब से बाप ने माताओं को आगे किया है तब से उन्होंने 2-4 मण्डलेश्वरियाँ रख दी हैं। नहीं तो धर्म के कार्य में माताओं को कभी भी आसन नहीं देते थे। इसीलिए माताओं को ज्यादा खुशी है और पांडवों का भी गायन है। पांडवों ने जीत प्राप्त कर ली। नाम पांडवों का आता है लेकिन पूजन ज्यादा शक्तियों का होता है। पहले गुरुओं का कर चुके हैं, अभी शक्तियों का करते हैं। जागरण गणेश वा हनुमान का नहीं करते, शक्तियों का करते हैं। क्योंकि शक्तियाँ अभी खुद जग गई हैं। तो शक्तियाँ अपने शक्ति रूप में रहती हैं ना! या कभी-कभी कमज़ोर बन जाती हैं?

✚ रुह का रूहानी मिलन वाणी द्वारा होता है या वाणी से परे रूहानी मिलन होता है? अन्तिम स्टेज वाणी से परे एक सेकेण्ड में रूहानी नजर की झलक से होती है। यह जो गाया हुआ है कि झलक दिखा दो, वह नयनों द्वारा मस्तक मणि का गायन है। अन्तिम समय नजर से निहाल करने का ही गायन है। आप हरेक लाइट हाउस और माइट हाउस की स्थिति में होंगे तो एक स्थान पर स्थित होते हुए भी विश्व के चारों ओर अपनी लाइट और माइट देने का कर्तव्य करेंगे। इसमें भी विश्व-महाराजन् बनने वाले लाइट और माइट हाउस होंगे। राजपद पाने वालों के

सम्पर्क में आने वाले साहूकार व प्रजा लाइट हाउस नहीं होगी, बल्कि लाइट स्वरूप होगी। लाइट और माइट हाउस दोनों में अन्तर है। विश्व महाराजन् बनने के लिए जब तक विश्व सेवक नहीं बने हैं तब तक विश्व महाराजन् नहीं बन सकते। विश्व महाराजन् बनने के लिए तीन स्टेजिस से पार करना पड़ता है। पहली स्टेज एक सेकेण्ड में बेहद का त्यागी - सोच करते समय गंवाने वाले नहीं, लेकिन झट से और एक धक से बाप पर बलिहार जाने वाले। दूसरी बात - बेहद के निरन्तर अथक सेवाधारी और तीसरी बात-सदैव बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले। बेहद के त्यागी, बेहद के सेवाधारी और बेहद के वैरागी। इन तीनों स्टेजिस से पार करने वाले ही विश्व-महाराजन् बन सकते हैं। साथ ही अन्त में लाइट हाउस और माइट हाउस बन सकते हैं।



इसलिए जो विशेष आत्माएं हैं उन्हीं का ही समय के साथ बहुत सम्बन्ध है जैसे ब्रह्मा की आत्मा का समय के साथ गहरा कनेक्शन है, ब्रह्मा का जन्म और संगम का होना। अगर ब्रह्मा का पार्ट नहीं होता तो संगम भी नहीं होता। ब्रह्मा के साकार पार्ट की समाप्ति और अन्य पार्ट का आरम्भ होना, यह भी समय को समीप लाने का एक आधार है। ब्रह्मा का समाप्त अर्थात् संगम युग समाप्त। तो जैसे ब्रह्मा की आत्मा का समय के साथ गहरा सम्बन्ध है, वैसे ही जो फॉलो करने वाली समीप आत्माएं हैं, उन्हीं के हर कार्य का भी समय के साथ उतना ही समीप सम्बन्ध है। वह जैसे समय की घड़ी बन जाते हैं। जैसे देखो, आप लोग जो निमित्त बने हुए हो, उन्हीं के संकल्पों को रीड (Read) करते हैं। सब समय की तुलना करते हैं कि इन लोगों की स्टेज यहाँ तक पहुँच गई है। तो समय क्या दिखाता है, चैक तो करते हो ना? जैसे आप लोगो के सामने समय की घड़ी 'साकार बाप' था। उनकी स्टेज को देखते आप लोग भी समझते थे जैसे कि कुछ होने वाला है। समीपता लग रही थी। जैसा फरिश्ता रूप! साकार नहीं है - ऐसा फील (Feel; अनुभव) होता था। तो समय की घड़ी हो गए ना। ऐसे आप लोग भी जो निमित्त हैं वह भी समय की घड़ी हो। उस नज़र से ही आप लोगों को देखते हैं कि घड़ी क्या दिखा रही है? यह जो विदेश जाने का पार्ट है, यह भी जैसे विशेष घंटी बजी है - ऐसा अनुभव होगा।

✚ अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है। बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है। कई बच्चे गफलत करते हैं जो उन्हीं के स्नेह में आ जाते हैं। वह स्नेह वृद्धि होकर कमजोर कर देता है, इसलिये अब शक्तिरूप की आवश्यकता है। अन्तिम नारा भी भारत माता शक्ति अवतार का गायन है। गोपी माता थोड़ेही कहते हैं। अब शक्ति रूप का पार्ट है। गोपीकाओं का रूप साकार में था। अब अव्यक्त रूप से शक्ति का पार्ट है। हरेक जब अपने शक्तिरूप में स्थित होंगे तो इतने सभी की शक्ति मिलाकर कमाल कर दिखायेगी। यादगार रूप में अन्तिम चित्र कौन सा दिखाया हुआ है? पहाड़ को अंगुली देने का। अंगुली, यह शक्ति की देनी है। इससे ही कलियुगी पहाड़ खत्म होगा। इसमें हरेक की अंगुली की दरकार है। अभी वह अंगुली पुरी रीति नहीं है। उठाते जरूर हैं परन्तु कोई की कभी सीधी कोई की कभी टेढ़ी हो जाती है। जब पूरी अंगुली होगी तब प्रभाव निकलेगा। एक जैसे अंगुली देनी है। साकार के साथ स्नेह है तो जल्दी-जल्दी इस पुरानी दुनिया से चलने की तैयारी करो। आप कहेंगे अभी सर्विस कहाँ हुई है लेकिन सर्विस भी किसके लिये रुकी है? अगर आप हरेक शक्तिरूप में स्थित हो जाओ तो आप के जो भूले भटके भक्त हैं, न चाहते भी चकमक (चुम्बक) के आगे आ जायेंगे, देरी नहीं लगेगी।

✚ सूक्ष्म शक्तियों के ऊपर कंट्रोल करने की पावर अर्थात् मन-बुद्धि को, संस्कारों को जब चाहें, जहाँ चाहे, जैसे चाहें, जितना समय चाहें - ऐसे कंट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर आई है? क्योंकि इस ब्राह्मण-जीवन में मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी बनते हो। इस समय की प्राप्ति सारा कल्प राज्य रूप और पुजारी के रूप में चलती रहती है। जितना ही आधा कल्प विश्व की राज्य-सत्ता प्राप्त करते हो, उस अनुसार ही जितना शक्तिशाली राज्य पद वा पूज्य पद मिलता है, उतना ही भक्ति-मार्ग में भी श्रेष्ठ पुजारी बनते हो। भक्ति में भी श्रेष्ठ आत्मा की मन-बुद्धि-संस्कारों के ऊपर कंट्रोलिंग पावर रहती है। भक्तों में भी नंबरवार शक्तिशाली भक्त बनते हैं। अर्थात् जिस इष्ट की भक्ति करने चाहें, जितना समय चाहें, जिस विधि से करने चाहें - ऐसी भक्ति का फल, भक्ति की विधि प्रमाण संतुष्टता, एकाग्रता, शक्ति और खुशी को प्राप्त करता है। लेकिन राज्य-पद और भक्ति की शक्ति की प्राप्ति का आधार यह ब्राह्मण जन्म है। तो इस संगमयुग का छोटा-सा

एक जन्म सारे कल्प के सर्व जन्मों का आधार है! जैसे राज्य करने में विशेष बनते हो वैसे ही भक्त भी विशेष बनते हो, साधारण नहीं। भक्त-माला वाले भक्त अलग हैं लेकिन आप आपेही पूज्य आपेही पुजारी आत्माओं की भक्ति भी विशेष है। तो आप बापदादा बच्चों के इस मूल आधार जन्म को देख रहे थे।

✚ जैसे ड्रामा करते हो तो नकली फेस लगा देते हो ना! जैसा गुण जैसा कर्तव्य वैसा ही फेस लगा देते हैं। तो नकली स्वरूप पर हँसी आती है ना। ऐसे माया भी नकली गुण और कर्तव्य का स्वरूप बना देती है। किसको क्रोधी, किसको लोभी बना देती है। किसको दुःखी, किसको अशान्त। लेकिन असली स्वरूप इन बातों से परे है। तो सदा उसी स्वरूप में स्थित रहो। अच्छा - जैसे भक्ति में लास्ट टुब्बी होती है ना। उसका भी महत्व होता है। तो यहाँ भी सभी सागर में टुब्बी (डुबकी) लगाने आये हैं वा समाने के लिए आये हैं। सब रीति रसम अभी से शुरू कर रहे हैं। संगम है ही मिलन युग, आज बेहद का दिन है। गुजरात अर्थात् जहाँ रात गुजर गई (अर्थात् बीत गई) सदा दिन है। सदा रोशनी ही रोशनी है। अन्धकार मिट गया। य पी की विशेषता वहाँ चीनी बहुत बनती है। यू पी में सदा चारों ओर स्थूल और सूक्ष्म मीठा ही मीठा है। राजस्थान तो है ही विश्व के नये राज्य का फाउन्डेशन डालने वाला। राजस्थान में ही महान तीर्थ है। राजस्थान की विशेषता है क्योंकि राजस्थान ही बापदादा की कर्म भूमि, चरित्रभूमि है। राजस्थान की महिमा सदा सर्वश्रेष्ठ है। पंजाब वाले सदा अकाल तख्तनशीन हैं। पंजाब वालों को अकालतख्त कब भूलता नहीं। सदा अकालमूर्त्त बाप के साथ अकाल स्वरूप रहते हैं। दिल्ली है दिलाराम की दिल लेने वाली। नाम भी दिल्ली है - दिल ली।

✚ माया आयेगी जरूर लेकिन अब की स्टेज अनुसार, समय अनुसार विदाई लेने अर्थ आनी चाहिए, न कि ऐसे रूप में आये। नमस्कार करने आये। शक्तियों को सभी अनुभव करना है। बापदादा इसका भी त्याग कर यह भाग्य पाण्डवों और शक्तियों को वरदान में देते हैं। इसलिए शक्तियों की पूजा बहुत होती है। अभी से ही शक्तियों को भक्तों ने पुकारना शुरू कर दिया है। आवाज़ सुनना आता है? जितना आगे चलते जायेंगे उतना ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई मूर्ति

के आगे भक्त लोग धूप जलाते हैं वा गुणगान करते हैं, वह प्रैक्टिकल खुशबू अनुभव करेंगे और उनकी पुकार ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि सम्मुख पुकार। जैसे दूरबीन द्वारा दूर का दृश्य कितना समीप आ जाता है। वैसे ही दिव्य स्थिति दूरबीन का कार्य करेगी। यही शक्तियों की स्मृति की सिद्धि होगी और इस अन्तिम सिद्धि को प्राप्त होने के कारण शक्तियों के भक्त शक्तियों द्वारा रिद्धि-सिद्धि की इच्छा रखते हैं। जब सिद्धि देखेंगे तब तो संस्कार भरेंगे ना। तो ऐसा अपना स्मृति की सिद्धि का स्वरूप सामने आता है? जैसे सन शोज़ फादर है, वैसे ही रिटर्न में फादर का शो करते हैं? बापदादा प्रत्यक्ष रूप में यह पार्ट नहीं देखते, लेकिन शक्तियों और पाण्डवों का यह पार्ट है। तो इतना वफादार और फरमानबरदार बनना है जो एक सेकेण्ड भी, एक संकल्प भी फरमान के सिवाय न चले। इसको कहते हैं फरमानब- रदार।

बने हुए को बना रहे हो इसलिए कहा जाता है बनाबना या-बना रहे हैं, बना हुआ है लेकिन फिर रिपीट कर बनाया है। पहले भी पदमा पदम भाग्यशाली बने थे अब भी बन रहे हो। ऐसे सहयोगी हो। उनकी निशानी तथा रहन-सहन का चित्र कौन-सा दिखाया है? विष्णु की शेष शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह अधीन हो गए वह अधिकारी हो गए। नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता, साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गये। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गये अर्थात् शैया बन गये तो निश्चिन्त हो गये ना। जो विजयी होते हैं वह सदा निश्चिन्त विष्णु के समान सदा हर्षित रहते हैं। हर्ष भी तब होगा जब ज्ञान का सुमिरण करते रहेंगे। तो यह चित्र आप का ही है ना। जो भी बाप के बच्चे बने और विजयी हो रहे हैं, उन सब का यह चित्र है। सदा सामने देखो कि विकारों को अधीन किया हुआ अधिकारी हूँ। आत्मा सदा आराम स्थिति में रहे। शरीर को सोने का आराम नहीं, वह तो सेवा में हि·याँ देनी हैं लेकिन आत्मा की निश्चिन्त स्थिति - यह है आराम? मातायें सभी गोपिकायें, गोपी वल्लभ के साथ झूले में झूलने वाली हो ना? आधा कल्प जड़ चित्रों को बहुत प्यार से झुलाया अब झुलाना खत्म हुआ झूलना शुरू हो गया। कभी सुख के झूले में, कभी शान्ति के झूले में...अनेक झूले हैं, जिसमें चाहो झूलो, नीचे नहीं आओ। माताओं के झूला अच्छा लगता है।

✚ डबल विदेशी बताओ - आपका इस आबू पर्वत पर कौन सा यादगार है? अच्छा भारतवासी सुनाओ आपका यादगार कौन सा है? अच्छा - भारतवासियों का यादगार अचलगढ़ है और डबल विदेशियों का यादगार दिलवाला है? या देनों ही यादगार देनों के हैं? अचलगढ़ कौन बन सकता है? जिसने दिलाराम को अपना बना लिया, वही अचल बन सकता है। इसलिए देनों ही यादगार बहुत कायदे प्रमाण बने हुए हैं। अगर दिलवाला बाप को अपना नहीं बनाया तो अचल की बजाए हलचल होती है। कोई भी चीज में हलचल होती रहे तो वह टूट जायेगी और जो अचल होगी वो सदा कायम रहेगी। तो सदैव ये स्मृति में रखो कि हम दिलवाला बाप को दिल देने वाली अचल आत्मायें हैं। ये मेरा यादगार है - हरेक अनुभव करो। ऐसे नहीं - ये ब्रह्मा बाप का या महारथियों का है। नहीं, मेरा यादगार है। देखो ड्रामानुसार अपने यादगार स्थान पर ही पहुँच गये। नहीं तो पाकिस्तान से आबू में आना - यह तो स्वप्न में भी नहीं आ सकता था। लेकिन ड्रामा में यादगार यहीं था तो कैसे पहुँच गये हैं। अपने ही यादगार को देख हर्षित होते रहते हो। अचल रहना - कोई मुश्किल बात नहीं है। कोई भी चीज को हिलाते रहो तो मेहनत भी और मुश्किल भी। सीधा रख दो तो वह सहज है। ऐसे ही मन-बुद्धि द्वारा हलचल में आना कितना मुश्किल होता है और मन बुद्धि एकाग्र हो जाती है तो कितना सहज होता है। अभी हलचल में आना पसन्द ही नहीं करेंगे।

✚ सेवा में और प्रभावशाली होना है, अभी यह लहर फैलाओ जो कहें कि हम भी अच्छा बनें। आप बहुत अच्छे हो, यह भक्त माला बन रही है लेकिन अभी विजय माला अर्थात् स्वर्ग के अधिकारी बनने की माला पहले तैयार करो। पहले जन्म में ही 9 लाख चाहिए। भक्त माला बहुत लम्बी है। राज्य के अधिकारी, राज्य करने की नहीं। राज्य में आने के अधिकारी वह भी अभी चाहिए। तो अभी ऐसी लहर फैलाओ। जो अच्छा कहने वाले अच्छा बनने में सम्पर्क वाले, कम से कम प्रजा के सम्बन्ध में तो आ जाएँ। फिर भी आपके सम्पर्क में आते हैं। स्वर्ग के अधिकारी तो बनायेंगे ना। ऐसा सेवा में प्रभावशाली बनो। यह वर्ष प्रभावशाली बनने और प्रभाव द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने की विशेषता से विशेष रूप से मनाओ। स्वयं नहीं प्रभावित

होना। लेकिन बाप पर प्रभावित करना। समझा। जैसे भक्ति में कहते हो ना कि यह सब परमात्मा के रूप हैं। वह उल्टी भावना से कह देते हैं। लेकिन ज्ञान के प्रभाव से आप सबके रूप में बाप का रूप अनुभव करें। जिसको भी देखें तो परमात्म स्वरूप की अनुभूति हो। तब नवयुग आयेगा। अभी पहले जन्म की प्रजा तैयार नहीं की है। पिछली प्रजा तो सहज बनेगी। लेकिन पहले जन्म की प्रजा। जैसे राजा शक्तिशाली होगा वैसे पहली प्रजा भी शक्तिशाली होगी। तो संकल्प के बीज को सदा फल स्वरूप में लाते रहना। प्रतिज्ञा को प्रत्यक्षता के रूप में सदा लाते रहना।

✚ अपनी नई दुनिया में कृष्ण के साथ झूला कौन झूलेगा? झूलने का मजा है। झूलाने वालों का तो पार्ट ही और है। जो यहाँ अपने जीवन में, जीवन के आदि से अन्त तक बाप के साथ रहे हैं अर्थात् बुद्धियोग से साथ रहे हैं - साकार रूप में साथ रहना यह तो लक्क है। लेकिन साकार के साथ होते हुए भी बुद्धि का साथ यदि सदा रहा है, जीवन के आदि से अन्त तक साथ रहे हैं, वही वहाँ भी हर जीवन के आयु के भिन्नभिन्न पार्ट में, बचपन में भी साथ रहेगे, पढ़ाई में भी साथ रहेगे, खेलने में भी और फिर राज्य करने में भी साथ रहेगे। तो यहाँ सदा साथ रहने वाले वहाँ भी सदा साथ रहेगे। जैसे उस फर्स्ट आत्मा को नशा और खुशी होगी वैसे साथ रहने वाली आत्माओं को भी वैसा ही नशा और खुशी होगी। जो अभी बाप-समान बनते हैं उन्हीं को वहाँ भी समान नशा होगा। तो सर्व-स्वरूप से साथ रहना - यह भी विशेष पार्ट है। बाल, युवा और वानप्रस्थ सब अवस्थाओं में साथ। इसका आधार यहाँ के जीवन के आदि, मध्य और अन्त तक साथ निभाने का है। मज़ा तो इसमें है ना? जो फर्स्ट में साथ रहते हैं, वह फिर 84 जन्मों में ही, भक्ति काल में अल्पकाल के राजे बनने में व कोई भी पार्ट बजाने में भी कोई-न-कोई साथ का सम्बन्ध कायम करते रहेगे। भक्ति भी साथ-साथ शुरू करेंगे। चढ़ेंगे भी साथ, पर गिरेंगे भी साथ। तो अभी का साथ निभाने का आधार सारे कल्प के साथ का आधार बन जाता है।

✚ घर समझेंगे तो मेरा-पन रहेगा। सेन्टर को भी घर बना देते। तब मेरा-पन आता है। सेन्टर समझें तो मेरा-पन नहीं रहे। घर बन जाता, आराम का स्थान बन जाता तब मेरा-पन रहता है। तो अपने

घर से आये हो। यह जो कहावत है - 'अपना घर दाता का दर'। यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो 'मधुबन' है ना। अपने घर में अर्थात् दाता के घर में आये हो। घर अथवा दर कहो बात एक ही है। आने घर में अपने से आराम मिलता है ना। मन का आराम। तन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ इससे भी आराम मिल जाता, थाली में बना बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मंदिर में घण्टी बजाते है ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगायेंगे तो भी घण्टी बजायेंगे। आपकी भी घण्टी बजती है ना। आजकल फैशनेबल हैं तो रिकार्ड बजता है। रिकार्ड से सोते हो, फिर रिकार्ड से उठते हो तो ठाकुर हो गये ना। यहाँ का ही फिर भक्तिमार्ग में कापी करते हैं। यहाँ भी 3, 4 बार भोग लगता है। चैतन्य ठाकुरों को 4 बजे से भोग लगाना शुरू हो जाता है। अमृतवेले से भोग शुरू होता। चैतन्य स्वरूप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते हैं, यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। यह निश्च सदा ही खुशी में झुलाता रहेगा। समझा।

✚ तपस्वा अर्थात् याद की यात्रा और सर्विस के बिना भी जीवन नहीं बन सकती। इन दोनों बातों की सफलता त्याग के बिना नहीं हो सकती। इसलिए तीन बातें छोड़नी है और तीन बातें धारण करनी है। अगर इन तीनों बातों की धारणा हुई तो क्या बन जायेंगे? जो आपका गायन है ना वही स्वरूप बन जायेंगे। यहाँ आबू में भी आपका गायन है किस रूप में और कौन सा रूप यादगार का है? तपस्या के साथ-साथ और भी कोई मुख्य रूप का यादगार है? जिन्होंने देलवाड़ा मन्दिर ध्यान से देखा होगा उन्हें याद होगा। जैसे तपस्वी हैं, तो त्रिनेत्री भी हैं। तपस्वा के साथ-साथ याद त्रिमूर्ति की है। तो जैसा यादगार है त्रिनेत्री का, ऐसा बनना है। तीसरा नेत्र कौन सा है? ज्ञान का। ज्ञान का तीसरा नेत्र ही यादगार के रूप में दिखाया है। तपस्वी और त्रिनेत्री। तीसरा नेत्र कायम होगा तब ही तपस्वी बन सकेंगे। अगर ज्ञान का नेत्र गायब हो जाता है तो तपस्या भी नहीं रह सकती। इसलिए अब त्रिमूर्ति शब्द को भी याद करके धारणा में चलेंगे

तो वह बन जायेंगे। जो शक्तियों का गायन है, जो प्रभाव है वह देखने में आयेगा। अभी गुप्त है। अभी तक शक्तियाँ गुप्त क्यों हैं? क्योंकि अभी तक अपने स्वमान, अपनी सर्विस और अपनी श्रेष्ठतायें अपने से ही गुप्त हैं। अपने से ही गुप्त होने कारण सृष्टि से भी गुप्त हैं। जब अपने में प्रत्यक्षता आयेगी तब सृष्टि में भी प्रत्यक्षता होगी।

✚ संकल्प शक्ति अर्थात् मन द्वारा एक स्थान पर होते हुए भी चारों ओर वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बना सकते हो। थोड़े से समय की इस जन्म में मन द्वारा सेवा करने से 21 जन्म मन सदा सुख-शान्ति की मौज में होगा। लेकिन आधाकल्प भक्ति द्वारा, चित्रों द्वारा मन की शान्ति देने के निमित्त बनेंगे। चित्र भी इतना शान्ति का, शक्ति का देने वाला बनेगा। तो एक जन्म के मन की सेवा सारा कल्प चैतन्य स्वरूप से वा चित्र से शान्ति का स्वरूप बनेगा। ऐसे धन द्वारा सेवा के निमित्त बनने वाले 21 जन्म अनगिनत धन के मालिक बन जाते हैं। साथ-साथ द्वापर से अब तक भी ऐसे आत्मा कभी धन की भिखारी नहीं बनेंगी। 21 जन्म राज्य भाग्य पायेंगे। जो धन मिट्टी के समान होगा। अर्थात् इतना सहज और अकीचार होगा। आपकी प्रजा की भी प्रजा अर्थात् प्रजा के सेवाधारी भी अनगिनत धन के मालिक होंगे। लेकिन 63 जन्मों में किसी जन्म में भी धन के भिखारी नहीं बनेंगे। मजे से दाल-रोटी खाने वाले होंगे। कभी रोटी के भिखारी नहीं होंगे। तो एक जन्म दाता के प्रति धन लगाने से, दाता भी क्या करेगा? सेवा में लगायेगा। आप तो बाप के भण्डारी में डालते हो ना और बाप फिर सेवा में लगाते हैं। तो सेवा अर्थ वा दाता के अर्थ धन लगाना अर्थात् पूरा कल्प भिखारी पन से बचना। जितना लगाओ उतना द्वापर से कलियुग तक भी आराम से खाते रहेंगे। तो तन-मन-धन और समय सफल करना है।

✚ जैसे सूर्य के रोशनी में सितारे छिपे हुये होते हैं। जब सूर्य दूसरे किनारे चला जाता है तो सितारों की चमक प्रत्यक्ष होती है। तो अब ज्ञान-सूर्य व्यक्त किनारा छोड़ अव्यक्त वतन में खड़े हैं तो आप व्यक्त देश में सितारों की प्रत्यक्षता देखने में आती है। पहले से अभी एक दो को ज्यादा पहचानते हो ना। जैसे कहते हैं ना एक-एक स्टार में दुनिया है। लेकिन यह पता नहीं है कि एक-

एक स्टार की कौन सी दुनिया है। इस आकाश के सितारों में कोई दुनिया नहीं है। लेकिन यह धरती के चैतन्य सितारों में एक-एक दुनिया है। अपनी दुनिया का साक्षात्कार होता जाता है? थोड़े समय में ही देखेंगे जो संगम का सम्पूर्ण रूप आप सभी का है। मालूम है संगम का सम्पूर्ण रूप कौनसा है? शक्तियों और पाण्डवों के रूप में। तो यह संगम का जो सम्पूर्ण स्वरूप है वह अब प्रत्यक्ष आप सभी को अपने में महसूस होगा। मालूम पड़ेगा हमारे कौन से भक्त हैं, कौन सी प्रजा है। जो प्रजा होगी वह तो नजदीक आयेंगे और जो भक्त होंगे वह आखरीन पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे। तो हरेक सितारे के अन्दर जो राजधानी अथवा दुनिया बनी हुई है, वह अब प्रत्यक्ष रूप लेगी। जब वह प्रत्यक्षता होगी तब सभी अहो प्रभु का नारा लगायेंगे। अब यह समय नजदीक आ रहा है। इसलिए अब जल्दी परिवर्तन को लाना है। आप रचयिता हो ना! जैसा रचयिता होगा वैसी रचना होगी। रचयिता को अपने रचना का ध्यान रखना है।



सिर्फ मुख से नहीं कहो कि बाप से बहुत प्यार है, क्या वर्णन करें। लेकिन ब्रह्मा बाप सिर्फ कहने से खुश नहीं होते, बनने से होते हैं। कहने वाले तो भक्त भी बहुत हैं। कितने प्यार के गीत गाते हैं। इतने प्यार के गीत गाते हैं जो अनेकों को हँसा भी देवे तो रूला भी देवे। वह सब है कहने वाले और आप हो बनने वाले। अगर सिर्फ कहते रहते हैं तो समझो अभी भक्ति का अंश रहा हुआ है। ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा नहीं कहेंगे, लेकिन भक्त योगी आत्मा कहेंगे। अब क्या करेंगे? कोई नवीनता दिखायेंगे या जैसे इस वर्ष किया वहीं करेंगे? ऐसा भी समय आयेगा जो बापदादा उन्हीं से ही मिलेंगे जो करने वाले हैं, जो बनने वाले हैं, सिर्फ कहने वाले नहीं। अभी तो सभी को एलाउ कर देते हैं, भावना वाले भी आ जाओ, ज्ञानी योगी तू आत्मा भी आ जाओ, लेकिन समय परिवर्तन होना ही है। इसलिए अपने ऊपर और दस गुणा अन्डरलाइन करके कैसे हसेगा, ऐसे क्यों किया। आप पुरुषार्थ में स्ट्रिक्ट नहीं होते हो तो बाप को स्ट्रिक्ट होना ही पड़ेगा। अभी तो बाप के प्यार स्वरूप से चल रहे हो, पल रहे हो। लेकिन सतगुरु का रूप धर्मराज नहीं। सतगुरु की आज्ञा सिर माथे गाया हुआ है। अभी तो बापदादा मीठे बच्चे,

प्यारे बच्चे कह करके चला रहे हैं। अगर प्यार है, मिलन की प्यास है, तो समान बनकर मिलो। महान अन्तर में नहीं मिलो। समान बनकर मिलन में बहुत मज़ा है। ये मज़ा और है।

✚ दुनिया वाले क्रिसिमस मनाने के लिए कहाँ-कहाँ जाते हैं। और यह विशेष विदेशी वा भारत के बच्चे स्वीट होम में पहुँचे हैं। बड़ा दिन, बड़े ते बड़े बाप से बड़ी दिल से मनाने के लिए। यह बड़ा दिन विशेष 'बाप और दादा' दोनों के यादगार निशानी का दिन है। एक दाता रूप से शिवबाबा की निशानी और बुढ़ा स्वरूप ब्रह्मा बाप की निशानी। कभी भी युवा रूप नहीं दिखायेंगे। क्रिसिमस फादर बूढ़ा ही दिखाते हैं। और दो रंग भी जरूर दिखायेंगे। सफेद और लाल। तो बाप और दादा दोनों की यह निशानी है। बापदादा छोटे बच्चों को जो उन्हीं की इच्छा है - उससे भरपूर कर देता है। छोटे-छोटे बच्चे बड़े स्नेह से इस विशेष दिन पर अपनी दिल पसन्द चीज़ें क्रिसिमस फादर से माँगते हैं वा संकल्प रखते हैं। और निश्चय रखते हैं कि वह जरूर पूर्ण करेगा। तो यह यादगार भी आप बच्चों का है। चाहे पुराने शूद्र जीवन के कितने भी बुजुर्ग हो लेकिन ब्राह्मण जीवन में छोटे बच्चे ही हैं। तो सभी छोटे बच्चे जो भी श्रेष्ठ कामना करते वह पूर्ण होती हैं ना। इसलिए यह याद निशानी लास्ट धर्म वालों में भी चली आ रही है। आप सभी को इस संगमयुग के बड़े दिन की बहुत-बहुत सौगातें बापदादा द्वारा मिल गई हैं ना। विशेष यह बड़ा दिन सौगातों का दिन है। तो बापदादा सबसे बड़ी सौगात - स्वराज्य और स्वर्ग का राज्य देता है। जिसमें अप्राप्त कोई वस्तु रह नहीं जाती। सर्व प्राप्ति स्वरूप बन जाते हो।

✚ आत्म-अभिमानि हो याद की यात्रा में बैठे हो? याद की यात्रा में भी मुख्य किस गुण में स्थित हो? याद की यात्रा में होते हुए भी मुख्य किस गुण स्वरूप हो? इस समय आप का मुख्य गुण कौन सा है? (सभी ने अपना-अपना विचार सुनाया) इस समय तो सभी विशेष प्रेम स्वरूप की स्थिति में हैं। लेकिन प्रेम के साथ-साथ वर्तमान समय की परिस्थितियों के प्रमाण जितना ही प्रेम स्वरूप उतना ही शक्ति स्वरूप भी होना चाहिए। देवियों के चित्र देखे हैं - देवियों के चित्र में मुख्य क्या विशेषता होती है? अपने चित्रों को कब ध्यान से देखा नहीं है? जब देवियों के चित्र बनाते हैं। काली के सिवाए बाकी जो भी देवियाँ हैं उन्हीं के नयन हमेशा गीले दिखाते हैं।

प्रेम में जैसे डूबे हुए नयन दिखाते हैं और साथ-साथ जो उनका चेहरा आदि बनाते हैं तो उनकी सूरत से ही शक्ति के संस्कार देखने में आते हैं। लेकिन नयनों में प्रेम, दया, शीतलता देखने में आती है। मातापन के प्रेम के संस्कार इन नयनों से दिखाई पड़ते हैं। उन्हों के ठहरने का ढंग वा सवारी अस्त्र-शस्त्र दिखाते हैं, वह शक्ति रूप प्रगट करता है। तो ऐसे ही आप शक्तियों में भी दोनों गुण समान होने चाहिए। जितना शक्ति स्वरूप उतना ही प्रेम स्वरूप। अभी तक दोनों नहीं हैं। कभी प्रेम की लहर में कभी शक्ति रूप में स्थित रहते हो। दोनों ही साथ और समान रहे। यह है शक्तिपन की अन्तिम सम्पूर्णता की निशानी।


✚ बापदादा सर्व बच्चों को अन्तिम स्टेज अर्थात् सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज-इसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव कराते हैं। जिस स्थिति में सदा मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर ज्ञानसागर, सर्व गुणों में सम्पन्न, हर संकल्प में, हर श्वास में हर सेकेण्ड सदा साक्षी-द्रष्टा और सदा बाप के साथीपन का, सर्व ब्राह्मण परिवार की श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेह, सहयोग के साथीपन का सदा अनुभव होगा। ऐसे अनु- भूति होगी जैसे साइंस के साधनों द्वारा दूर की वस्तु समीप अनुभव करते हैं। ऐसे दिव्य बुद्धि द्वारा कितनी ही दूर रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे। जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्मा को स्पष्ट देखते, बोलते, सहयोग देते और लेते हो, ऐसे चाहे अमेरिका में बैठी हुई आत्मा हो लेकिन दिव्य-दृष्टि, दिव्य दृष्टि ट्रान्स नहीं लेकिन रूहानियत भरी दिव्य दृष्टि- जिस दृष्टि द्वारा नैचुरल रूप में आत्मा और आत्माओं का बाप भी दिखाई देगा। आत्मा को देखूँ यह मेहनत नहीं होगी, पुरुषार्थ नहीं होगा लेकिन हूँ ही आत्मा, हैं ही सब आत्मायें। शरीर का भान ऐसे खोया हुआ होगा जैसे द्वापर से आत्मा का भान खो गया था। सिवाए आत्मा के कुछ दिखाई नहीं देगा। आत्मा चल रही है, आत्मा कर रहीं है। सदा मस्तक मणी के तरफ तन की आँखे वा मन की आँखे जायेंगी। बाप और आत्माएं- यही स्मृति निरन्तर नैचुरल होगी।


✚ लण्डन ग्रुप - सभी स्नेह के सूत्र में बंधे हुए बाप के माला के मणके हो ना! माला का इतना महत्व क्यों बना है? क्योंकि स्नेह का सूत्र सबसे श्रेष्ठ सूत्र है। तो स्नेह के सूत्र में सब एक बाप के बने हैं, इसका यादगार माला है। जिसका 'एक बाप दूसरा न कोई है' वही एक ही स्नेह के सूत्र में माला के मणके बन पिरोये जाते हैं। सूत्र एक है और दाने अनेक हैं। तो यह एक बाप के स्नेह की निशानी है। तो ऐसे अपने को माला के मणके समझते हो ना। यह समझते हो 108 में तो बहुत थोड़े आयेंगे। क्या समझते हो? यह तो 108 का नम्बर निमित्त मात्र है। जो भी बाप के स्नेह में समाये हुए हैं वह गले की माला के मोती हैं ही। जो ऐसे एक ही लगन में मगन रहने वाले हैं तो मगन अवस्था निर्विघ्न बनाती है और निर्विघ्न आत्माओं का ही गायन और पूजन होता है। सबसे ज्यादा गायन कौन करता है? बाप करता है ना! आप सभी एक बाप का गायन करते और बाप कितनों का करता? तो सबसे ज्यादा कौन करता? अगर एक बच्चे का भी गायन न करे तो बच्चा रूठ जायेगा। इसलिए बाबा हरेक बच्चे का गायन करते हैं। क्योंकि हरेक बच्चा अपना अधिकार समझता है। अधिकार के कारण हरेक अपना हक समझता है। बाप की गति इतनी फास्ट है जो और कोई इतनी फास्ट स्पीड वाला है ही नहीं। एक ही सेकण्ड में अनेकों को राजी कर सकता है। तो बाप बच्चों से बिजी रहते और बच्चे बाप में बिजी रहते। बाप को बिजनेस ही बच्चों का है।

✚ इस लक्ष्य से चेक करना - हर दिन अपने आपको चेक करना है कि सफलतामूर्त बन समय, श्वास, खज़ाने, शक्तियां, गुण सब सफल किया? क्योंकि अभी की सफलता से भविष्य भी जमा होता है। 21 जन्म जो भी सफल अभी किया, उसका फल जमा होता है। जानते हो ना, पहले भी सुनाया है कि अगर आप समय सफल करते हो तो भविष्य में भी आपको राज्य भाग्य का फुल समय, राज्य भाग्य की प्राप्ति होती है। श्वास सफल करते हो तो 21 जन्म स्वस्थ रहेंगे। कभी भी कोई भी स्वास्थ्य में कमी नहीं रहेगी और साथ में जो खज़ाने जमा करते हो, सबसे बड़ा खज़ाना है ज्ञान का, ज्ञान का अर्थ है समझ। तो ज्ञान का खज़ाना सफल करने से भविष्य में आप ऐसे समझदार बन जाते हैं जो आपको कोई वजीरों की राय नहीं लेनी पड़ती है। स्वयं

ही राज्य अखण्ड, अटल चलाते हो और आपके राज्य में कोई विघ्न नहीं। निर्विघ्न अखण्ड, अटल है। यह है ज्ञान का खज़ाना जमा करने का फल। एक जन्म सफल किया और अनेक जन्म सफलता का फल खाते हो। ऐसे ही शक्तियां जो प्राप्त हैं उनको स्व प्रति वा दूसरों के प्रति सफल करते हो तो भविष्य में आपके राज्य में सर्व शक्तियां हैं, कभी शक्ति कम नहीं होती। कोई भी शक्ति की कमी नहीं है। ऐसे ही अगर गुण दान करते हो तो आपका अन्तिम जन्म, 84 जन्म जो जड़ चित्र बनाते हैं उसमें लास्ट तक आपकी महिमा क्या करते हैं? सर्वगुण सम्पन्न। तो एक-एक सफलता की प्राप्ति के अनेक जन्म के अधिकारी बन जाते हो।

✚ सदा यह स्मृति में रहे कि - 'मैं रूहानी गुलाब हूँ।' रूहानी गुलाब अर्थात् सदा रूहानी खुशबू फैलाने वाले। जैसे रूहे गुलाब अपनी खुशबू देता है, उसका रंग रूप भी अच्छा, खुशबू भी अच्छी सबको अपने तरफ आकर्षित भी करता है ऐसे आप भी बाप के बगीचे के रूहानी गुलाब हो। गुलाब सदा पूजा में अर्पण किया जाता है। रूहानी गुलाब भी बाप के आगे आर्पित होते हैं। यह यज्ञ-सेवाधारी बनना भी अर्पण होना है। अर्पण होना यह नहीं कि एक स्थान पर रहना। कहाँ भी रहें लेकिन श्रीमत पर रहें। अपनापन जरा भी मिक्स न हो। ऐसे अपने को भाग्यवान खुशबूदार रूहानी गुलाब समझते हो ना! सदा इसी स्मृति में रहो कि 'हम अल्लाह के बगीचे के रूहानी गुलाब' - यही नशा सदा रहे। नशे में रहो और बाप के गुणों के गीत गाते रहो। इस ईश्वरीय नशे में जो भी बोलेंगे उससे भाग्य बनेगा। सदा अपने को विजयी पाण्डव समझ कर चलो। पाण्डवों की विजय कल्पकल्प की प्रसिद्ध है। 5 होते भी विजयी थे। विजय का कारण - बाप साथी था! जैसे बाप सदा विजयी है वैसे बाप का बनने वाले भी सदा विजयी। यही स्मृति में रहे कि हम सदा विजयी रत्न हैं तो यह बात भी बड़ा नशा और खुशी दिलाती है। जब पाण्डवों की कहानी सुनते हो तो क्या लगता है? यह हमारी कहानी है! निमित्त एक अर्जुन कहने में आता है, दुनिया के हिसाब से 5 हैं, लेकिन हैं सदा विजयी। यही स्मृति सदा ताजी रहे। ऐसी स्पष्ट स्मृति हो जैसे कल की बात है।


 अपने को सारी दुनिया के बीच चमकता हुआ विशेष लक्की सितारा अनुभव करते हो? ऐसे लक्की जिन्हों का स्वयं बाप गायन करते हैं! इससे श्रेष्ठ भाग्य और किसी का हो सकता है? सदा ऐसी खुशी रहती है, जो अपनी खुशी को देखते हुए देखने वालों के गम के बादल व दुःख की घटायें समाप्त हो जायें, दुःख को भूल सुख के झूले में झूलने लग जायें! ऐसे अपने को अनुभव करते हो? जैसे गायन है - पारस के संग में लोहा भी पारस बन जाता है; ऐसे आप पारसमणियों के संग से अन्य आइरन-एजड आत्मायें गोल्डन बन जायें, ऐसी अवस्था अनुभव करते हो? कोई भी आत्मा भिखारी बन कर आये और वह मालामाल हो कर जाये, ऐसे अपने तकदीर की तस्वीर रोज अपने दर्पण में देखते हो? किस समय देखते हो? क्या अमृतवेले? देखने का टाइम निश्चित है अथवा चलते-फिरते जब आता है तब देखते रहते हो? सारे दिन में कितनी बार देखते हो? बार-बार देखते हो या एक ही बार? आजकल का फैशन है कि बार-बार अपना चेहरा देखते हैं। वह देखते हैं अपने फीचर्स और आप देखते हो अपना फ्यूचर आपका फीचर्स तरफ अटेन्शन नहीं है लेकिन हर समय अपने फ्यूचर को श्रेष्ठ बनाने का ही अटेन्शन है। तो अपने तकदीर की तस्वीर देखते हो कि हमारी तस्वीर में कहाँ तक रूहानियत बढ़ती जा रही है? जैसे वे लोग लौकिक दृष्टि से रूप में व शक्ल में अपनी लाली को देखते हैं कि कहाँ तक 'लाल' हुए हैं; और आप सब अलौकिक तस्वीर देखते हुए 'रूहानियत' रूपी लाली को देखते हो।


 लेकिन निरन्तर आत्माभिमानी, जिससे कर्मइन्द्रियों के ऊपर विजय हो जाए, हरेक कर्मइन्द्रिय सतोप्रधान स्वच्छ हो जाए - इस सब्जेक्ट में अर्थात् देह के पुराने संस्कार और सम्बन्ध से सम्पूर्ण मरजीवा हो जाए, इस पुरुषार्थ में नम्बर बनते हैं। कोई पुरुषार्थी की कर्म इन्द्रियों पर विजय हो जाती है अर्थात् कर्मइन्द्रिय जीत बन जाते हैं और कोई-कोई आँख के धोखे में, मुख द्वारा अनेक रस लेने के धोखे, इसी प्रकार कोई न कोई कर्मइन्द्रिय के धोखे में आ जाते हैं। अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्व इन्द्रिय जीत नहीं बन पाते हैं। इसी कारण ऐसे कर्म इन्द्रिय पर हार खाने वाले कमजोर पुरुषार्थियों की, ऊँच ते ऊँच बाप के बच्चे बनने के कारण, ऊँच बाप के संग के

कारण, पढ़ाई और पालना के कारण विश्व के अन्दर श्रेष्ठ आत्माएं होने के कारण, आत्मा अर्थात् सालिग्राम रूप में पूजे जाते हैं। लेकिन सर्व कर्मइन्द्रिय जीत न होने के कारण साकार रूप में देवी और देवता के रूप में पूजा नहीं होती है। सम्पूर्ण पवित्र न बनने के कारण सम्पूर्ण निर्विकारी, महिमा योग्य देवी वा देवता रूप की पूजा नहीं होती है। सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन न बनने के कारण वा सदा दिल में एक दिल लेने वाले बाप की याद वा सदा दिल पर दिलवाला की याद नहीं रहती। इसलिए भक्त आत्माएं भी अष्ट देव के रूप में दिल में नहीं समाती हैं। निरन्तर याद नहीं तो सदा काल का मन्दिर रूप में यादगार भी नहीं।



“कदमों में पदमों की सेवा समाई हुई है। चक्रवर्ती बन चक्र लगाए अपने यादगार स्थान बना लिए। कितने तीर्थ बने! महावीर बच्चों का चक्र लगाना माना यादगार बनना। हर चक्र में अपनी-अपनी विशेषता होती है। इस चक्र में भी कई आत्माओं के दिलों की आशा पूर्ण करने की विशेषता रही। यह दिल की आशा पूर्ण करना अर्थात् वरदानी बनना। वरदानी भी बनी और महादानी भी बनी। ड्रामा अनुसार जो प्रोग्राम बनता है उसमें कई राज भरे हुए होते हैं। राज उड़ाके ले जाते हैं। जानकी दादी से:- आप सभी को नाम का दान देती हो! नाम का दान क्या है? आपका नाम क्या है! नाम का दान देना अर्थात् ट्रस्टी बनकर वरदान देना। आपका नाम(रजा जनक) लेते ही सबको क्या याद आयेगा? - सेकण्ड में जीवन मुक्ति। ट्रस्टी बनना। यह आपके नाम की विशेषता है। इसलिए नामदान भी दे दो तो किसका भी बेडा पार हो जायेगा। बाप ने अभी आपके ट्रस्टीपन की विशेषता का गायन किया है, वही यादगार, है। वही ‘जनक’ अक्षर उनको मिल गया होगा। एक ही जनक की दो कहानियाँ हैं। जनक जो सेकण्ड में विदेही बन गया। दूसरा जनक जो सेकण्ड में ट्रस्टी बन गया। मेरा नहीं - ‘तेरा’। त्रेता वाला जनक भी दिखाते हैं। लेकिन आप तो बाप की जनक हो, सीता वाली नहीं। नाम दान का महत्व क्यों हैं, इस पर क्लास कराना। नाम की नईया द्वारा भी पार हो जाते हैं। और कुछ समझ में न भी आये लेकिन ‘शिवबाबा शिवबाबा’ भी कहा तो स्वर्ग की गेट पास तो मिल जाती है।

 जैसे अन्तिम समय समीप आ रहा है, वैसे सर्व आत्माओं के भक्ति की शक्ति भी समाप्त हो रही है। द्वापर से रजोगुणी आत्माओं में फिर भी दान-पुण्य, भक्ति की शक्ति अपने खातों में जमा थी। इसलिए अपने आत्म-निर्वाह के लिए कुछ न कुछ शान्ति के साधन प्राप्त थे। लेकिन अब तमोगुणी आत्मायें इस थोड़े समय के सुख के आत्म-निर्वाह के साधनों से भी खाली हो गई हैं। अर्थात् भक्ति के फल को भी खाकर खाली हो गई हैं। अब नामधारी भक्ति है। फलस्वरूप भक्ति नहीं है। भक्ति का वृक्ष विस्तार को पा चुका है। वृक्ष की रंग-बिरंगी रंगत की रौनक जरूर है। लेकिन शक्तिहीन होने के कारण फल नहीं मिल सकता। जैसे स्थूल वृक्ष जब पूरा विस्तार को प्राप्त कर लेता, जड़जड़ीभूत अवस्था तक पहुँच जाता है तो फलदायक नहीं बन सकता है। लेकिन छाया देने वाला बन जाता है। ऐसे भक्ति का वृक्ष भी दिल खुश करने की छाया जरूर दे रहा है। गुरू कर लिया, मुक्ति मिल जायेगी। तीर्थयात्रा दान-पुण्य किया, प्राप्ति हो जायेगी। यह दिल खुश करने के दिलासे की छाया अभी रह गई है। “अभी नहीं तो कभी मिल जायेगा!” इसी छाया में बिचारे भोले भक्त आराम कर रहे हैं लेकिन फल नहीं है। इसलिए सबके आत्म-निर्वाह के खाते खाली हैं। तो ऐसे समय पर आप भरपूर आत्माओं का फर्ज है अपने जमा किये हुए हिस्से से ऐसी आत्माओं को हिम्मत हुल्लास दिलाना। जमा है या अपने प्रति ही कमाया और खाया! कमाया और खाया उसको राजयोगी नहीं कहेंगे।

 श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल और वातावरण को शुद्ध करने के लिये मन दिया है, ऐसे ईश्वरीय देन को अर्थात् ईश्वर द्वारा दी गई वस्तु को यदि व्यर्थ में लगाते हो तो बोझा नहीं चढ़ेगा? आजकल भी जड़ मूर्तियों द्वारा व मन्दिरों में जो थोड़ा-सा प्रसाद भी मिलता है तो उसको कब व्यर्थ नहीं गँवाते हैं। अगर जरा-सा कणा भी पाँव में गिर जाता है, तो पाप समझ मस्तक से लगाकर स्वीकार करते हैं। अनेकों के मुख में डाल प्रसाद को सफल करने का पुरूषार्थ करेंगे और उसे व्यर्थ नहीं गँवायेंगे। यह स्वयं बाप द्वारा मिली हुई जो वस्तु मन व तन परमात्म-प्रसाद हो गया, क्या इसको व्यर्थ करने का बोझ नहीं चढ़ेगा? जैसे समय की गति गहन होती जा रही है तो वैसे ही अब पुरूषार्थ की प्राप्ति और बोझ की गति भी गहन होती जा रही है। इसको ही कहा जाता है कि कर्मों की गति अति गुह्य है। तो आज कर्मों की गुह्य गति सुना रहे हैं कि जिससे

ही सद्गति पा सकेंगे। अब समझा, कि निशाने के समीप की निशानियाँ क्या हैं? वा निशाने के समीप जाने की विधि क्या है? बाप-दादा को भी रहम पड़ता है कि सभी को अभी से सम्पूर्ण बना देवे। लेकिन रचयिता भी मर्यादाओं व ईश्वरीय नियमों में बँधा हुआ है। बाप भी मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं कर सकते। 'जो करेगा, वह पावेगा', यह मर्यादा बाप को पूर्ण करनी पड़ती है। हाँ इतनी मार्जिन है कि जो एक का सौ गुणा दे देते हैं। हिम्मत करने पर मदद कर सकते हैं, बाकी और कुछ नहीं कर सकते हैं।

✚ हर एक के नयनों द्वारा सिर्फ इस संसार के ही नहीं लेकिन तीनों लोकों के दर्शन करेंगे। ऐसे फरिश्तों के मस्तक में चमकती हुई मणि आत्माओं को सर्च-लाइट व लाइट हाऊस के समान स्वयं का स्वरूप, स्व-मार्ग और श्रेष्ठ मंज़िल का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगी। ऐसे फरिश्तों के युक्ति-युक्त बोल अर्थात् अमूल्य बोल, हर भिखारी आत्मा की रत्नों से झोली भरपूर करेंगे। जो गायन है देवताएं भी भक्तों पर प्रसन्न हो फूलों की वर्षा करते हैं - ऐसे आप श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा विश्व की आत्माओं के प्रति सर्व-शक्तियों, सर्वगुणों तथा सर्व वरदानों की पुष्प-वर्षा सर्व के प्रति होगी। तब ही आप सब को देवता अर्थात् देने वाला समझ कर भक्त-गण द्वापर युग से देवताओं का गायन और पूजन करते आ रहे हैं, क्योंकि अन्त समय सर्व आत्माएँ, विशेषकर वे भारतवासी आत्माएँ देवता धर्म की अन्त तक वृद्धि पाने वाली आत्मायें जो सतयुग में आपके देवताई रूप की पालना तो नहीं लेंगी बल्कि बाद में इस धर्म की वृद्धि होने के समय से लेकर अन्त तक के समय में आपका देवता रूप, दाता रूप अथवा वरदाता रूप अनुभव करेंगी। आपके अन्तिम देवता रूप की अनेक प्राप्तियों के संस्कार व स्मृतियाँ सर्व आत्माओं में मर्ज रहती हैं अर्थात् समाई हुई रहती हैं। इस कारण प्रैक्टिकल रूप में सतयुगी सृष्टि में न आते हुए भी द्वापर में सृष्टि-मंच पर आते ही देवता स्वरूप की प्राप्ति की स्मृति इमर्ज हो जाती है और गायन-पूजन करते रहते हैं।

✚ हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम, ऐसे बच्चे सदा हर सेकेण्ड हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं। जो अभी बाप से वायदा निभाते हैं कि तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से हर सेकेण्ड हर कर्म में साथ निभाऊँ, ऐसे वायदे को निभाने वाले सपूत बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मान्तर साथी भव का वरदान अभी देते हैं। साकार बाप के साथ भिन्न नाम रूप से पूज्य में भी साथी और पुजारीपन में भी साथी। ज्ञानी तू आत्मा बनने में भी साथी और भक्त आत्मा बनने में भी साथी। ऐसे सदा साथी का वा तत्वम् का वरदान ऐसी विशेष आत्माओं को अभी प्राप्त होता है। अभी की स्टेज (अवस्था) और भविष्य स्टेज में और हर सेकेण्ड साथीपन का अनुभव जन्म-जन्मान्तर भी नाम रूप सम्बन्ध से साथ के अनुभव के निमित्त बनेंगे। विकर्माजीत बनने में भी साथी और राजा विक्रम (विक्रमादित्य) बनने के समय भी साथी। हर पार्ट में हर वर्ण में साथ-साथ होंगे। इसका ही गायन है साथ जियेंगे साथ मरेंगे अर्थात् साथ चढ़ेंगे साथ गिरेंगे। चढ़ती कला, उतरती कला दिन और रात, दोनों में निरन्तर योगी, निरन्तर साथी। जितना अभी संगम पर साथ निभाने में सम्पूर्ण हैं उतना ही समीप के सम्बन्धी बनने में भी समीप होते हैं। विश्व की नम्बरवन श्रेष्ठ आत्मा का भी ड्रामा के अन्दर महत्व है। ऐसे नम्बरवन आत्मा के सदा सम्बन्ध में रहने वाली आत्माओं का भी महत्व हो जाता है।

✚ अगर बेहद की जिम्मेवारी नहीं निभाते, अपनी लौकिक प्रवृत्ति वा अलौकिक प्रवृत्ति में ही कभी उड़ती कला, कब चढ़ती कला, कब चलती कला, कब रूकती कला, इसी कलाबाजी में ही समय लगाते, वह ब्राह्मण नहीं लेकिन क्षत्रिय आत्मायें हैं। पुरुषार्थ की कमाल पर यह करेंगे, ऐसे करेंगे-करेंगे के तीर निशान-अन्दाजी करते रहते हैं। निशान-अन्दाजी और निशान लग जाए इसमें अन्तर है। वह निशान का अन्दाज करते रह जाते। अब करेंगे, ऐसे करेंगे। यह निशान का अन्दाज करते। उसको कहते हैं - क्षत्रिय आत्मायें। ब्राह्मण आत्मायें निशान का अन्दाजा नहीं लगातीं। सदा निशान पर ही स्थित होती हैं। सम्पूर्ण निशाना सदा बुद्धि में है ही है। सेकण्ड के संकल्प से विजयी बन जाते। बापदादा - ब्राह्मण बच्चे और क्षत्रिय बच्चे दोनों का खेल देखते रहते हैं। ब्राह्मणों का विजय का खेल और क्षत्रियों को सदा तीर कमान के बोझ उठाने

का खेल। हर समय पुरुषार्थ की मेहनत का कमान है ही है। एक समस्या को समाधान करते ही हैं तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाती। ब्राह्मण समाधान स्वरूप हैं। क्षत्रिय बार-बार समस्या को समाधान करने में लगे हुए रहते। जैसे साकार रूप में हँसी की कहानी सुनाते थे ना। क्षत्रिय क्या करत भये! इसकी कहानी है ना - चूहा निकालते तो बिल्ली आ जाती। आज धन की समस्या कल मन की, परसों तन की वा सम्बन्ध सम्पर्क वालों की। मेहनत में ही लगे रहते हैं। सदा कोई न कोई कम्पलेन्ट जरूर होगी। चाहे अपनी हो, चाहे दूसरों की हो।

✚ आप अपने को देखो कितने सुख और खुशी की, दाल रोटी मिल रही है। जो गायन भी है - 'दाल रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ'। ऐसे गायन की हुई दाल रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है - ब्राह्मण बच्चा दाल रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा लेकिन दाल रोटी जरूर मिलेगी। दाल रोटी भी है, परिवार भी ठीक है और नाम कितना बाला है! इतना आपका नाम बाला है जो आज लास्ट जन्म तक आप पहुँच गये हो। लेकिन आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मायें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं। काम अपना सिद्ध करते हैं। इतना नाम बाला है। एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है। तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो। बाप के सम्पर्क में आने से आपका भी श्रेष्ठ सम्पर्क बन गया है। आपका ऐसा श्रेष्ठ सम्पर्क है जो आपके जड़ चित्रों की सेकण्ड के सम्पर्क की भी प्यासी हैं। सिर्फ दर्शन के सम्पर्क के भी कितने प्यासे हैं! सारी-सारी रातें जागरण करते रहते हैं। सिर्फ सेकण्ड के दर्शन के सम्पर्क के लिए पुकारते रहते हैं। चिल्लाते रहते वा सिर्फ सामने जावें उसके लिए कितना सहन करते हैं! हैं चित्र और ऐसे चित्र घर में भी होते हैं फिर भी एक सेकण्ड के सम्मुख सम्पर्क के लिए कितने प्यासे हैं! एक बेहद के बाप के बनने के कारण सारे विश्व की आत्माओं से सम्पर्क हो गया। बेहद के परिवार के हो गये। विश्व की सर्व आत्माओं से सम्पर्क बन गया।

✚ कुमार निर्विघ्न हो गये तो सबको निर्विघ्न बना सकते हैं। कुमारों का टाइटल ही है - विघ्न-विनाशक। किसी भी प्रकार का विघ्न - मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, किसी भी विघ्न के

वशीभूत न हों। इसलिए बच्चों का ही टाइटल है - विघ्न-विनाशक। गणेश बच्चा है ना! तो आपके यादगार में विघ्न-विनाशक नाम प्रसिद्ध है। प्रैक्टिकल बने हो तब यादगार बना है। विघ्न-विनाशक बनने से स्वतः ही मंसा द्वारा भी सेवा होती रहेगी। वायुमण्डल भी निर्विघ्न बनता जायेगा। जैसे तत्वों से मौसम बदलती है वैसे विघ्न-विनाशक बच्चों से वायुमण्डल बदल जायेगा। तो चारों ओर विघ्न-विनाशक की लहर फैल जाए। सदा यही स्मृति में रखो कि हमें विजयी वायुमण्डल बनाना है। जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलसता है, ऐसे ही शक्तिवान बनो। कुमारों को कोई न कोई काम जरूर चाहिए, कुमार अगर फ्री हुए ता खिटखिट हो जायेगी। कुमार बिजी रहे तो स्व का भी कल्याण, विश्व का भी कल्याण। तो विघ्न-विनाशक बन वायुमण्डल बनाने में बिजी रहो। अपनी विशेषता को इस कार्य में लगाओ। एक-एक कुमार अनेकों को संजी-वनी बूटी देने वाले महावीर अर्थात् मूर्छित को महावीर सुरजीत करने वाले हो। तो सदा अपना यह आक्युपेशन याद रखो। जैसे लौकिक आक्युपेशन नहीं भूलता ऐसे यह अलौकिक आक्युपेशन भी सदा याद रहे। संगमयुग पर बाप द्वारा जो भी टाइटल मिले हैं उनकी स्मृति में रहो। टाइटल याद आने से स्वतः ही ज्ञान और ज्ञानदाता दोनों की याद आ जायेंगी।



कोई भी चीज़ को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर एक साइड भी थोड़ा-सा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय। ये चार ही तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हैं लेकिन चलते नहीं हैं तो विजय डगमग होती है। चेक करने का अर्थ ही है सेकण्ड में चेंज होना। लेकिन चेक करो और चेंज नहीं करो तो बहुत काल से स्वयं में दिलशिकस्त के संस्कार पक्के होते जायेंगे और जो बहुतकाल के संस्कार हैं वही अन्त में अवश्य सामना करते रहेंगे। कोई सोचे अन्त में तो मैं सिवाए बाप के और कुछ नहीं सोचूंगा। लेकिन हो नहीं सकता। बहुतकाल का अभ्यास चाहिये। नहीं तो एक सेकण्ड सोचेंगे- शिवबाबा शिवबाबा शिवबाबा.... और दूसरे सेकण्ड माया कहेगी-नहीं, तुम्हारे में शक्ति नहीं है, तुम हो ही कमज़ोर, तो युद्ध चलती रहेगी। यदि निश्चिन्त नहीं होंगे तो ब्राह्मण जीवन के अन्तकाल का जो लक्ष्य वर्णन करते हो वो सहज कैसे होगा और अगर अन्त तक ये व्यर्थ

संकल्प होंगे तो वही भूतों के, यमदूतों के रूप में आयेंगे। और कोई यमदूत नहीं आते हैं, ये व्यर्थ संकल्प अपनी कमजोरियाँ, यही यमदूत के रूप में आते हैं। यमदूत क्या करते हैं? डराते हैं। और दूसरों के लिये कहेंगे विमान में जायेंगे अर्थात् उड़ती कला से पार हो जायेंगे। कोई विमान आदि नहीं हैं लेकिन उड़ती कला का अनुभव है। इसलिये पहले से ही चेक करके चेंज करो।

✚ जब साइंस बहुत कुछ करके दिखा रही है; तो क्या साइलेन्स में वह शक्ति नहीं है? जितना-जितना स्वयं राजयुक्त, योगयुक्त बनते जायेंगे, उतना-उतना औरों को भी बिना साज के राजयुक्त बना सकते हो। इतनी सारी प्रजा कैसे बनायेंगे? इसी स्पीड से इतनी प्रजा बन सकेगी! पिछली प्रजा के ऊपर भी इतनी मेहनत करेंगे? जैसे ठप्पे बने हुए होते हैं, तो एक सेकेण्ड में लगाते जाते हैं। वैसे ही एक सेकेण्ड की पावरफुल स्टेज ऐसे रहेगी जो बिगर बोले, बिगर मेहनत करते दैवी घराने की आत्मा का छाप लगा देंगे। यह ही सर्वशक्तिवान् का गायन है। वरदानी बन एक सेकेण्ड में भक्तों को वरदान देना। वरदान देने में मेहनत नहीं लगती, वर्सा पाने में मेहनत है। वर्सा पाने वाले मेहनत कर रहे हैं, मेहनत ले रहे हैं। लेकिन वरदानी मूर्ति जब बन जायेंगे फिर मेहनत लेने वाले न लेंगे, न देने वाले मेहनत करेंगे। तो तुम्हारी लास्ट स्टेज है वरदानीमूर्ति। जैसे लक्ष्मी के हस्तों से स्थूल धन देते हुए दिखाते हैं। यह तुम्हारा लास्ट शक्ति रूप का है, न कि लक्ष्मी का। शक्ति रूप से सर्वशक्ति- वान् का वरदान देते हुए का यह चित्र है, जिसको स्थूल धन के रूप में दिखाते हैं। तो ऐसा अपना स्वरूप सदा वरदानी अपने आप को साक्षात्कार होता है? इससे ही समय का अन्दाज़ लगा सकते हो। फिर वरदानीमूर्त शक्तियों के आगे सभी आयेंगे। इसके लिए एक तरफ वरदान का बीज़ पड़ेगा। तो अपने में सर्व शक्ति जमा करनी हैं। ऐसे वरदानीमूर्त बनते और बनाते जाओ। आवाज़ से परे जाना है।

✚ आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके

नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र रूप। आधा कल्प प्रजा आपको नाम गायेगी, आधा कल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक-आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्त्तव्य और चरित्र - यह सब सत् हो गये। कर्त्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्त्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अथार्टी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना! ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अथार्टी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फलक से बोलो।

✚ 5,000 वर्ष पहले भी आये थे, यह अनुभव है? स्मृति आती है? स्पष्ट स्मृति की निशानी क्या है? स्पष्ट स्मृति की निशानी यह है - कि किससे मिलेंगे तो अपनापन महसूस होगा और अपने स्थान पर पहुँच गया हूँ, यह वही स्थान है, जिसको ढूँढ़ रहा था। जैसे कोई चीज़ ढूँढ़ने के बाद मिलती है, इस रीति से यह भासना आये कि असली परिवार से मिले हैं और अपनापन का अनुभव हो। इसको कहते हैं स्पष्ट अनुभव। दूसरी बात कि जो बात सुनेगा वह उनको सहज स्पष्ट समझ में आयेगी। जैसे पवित्रता की बात लोगों को मुश्किल लगती है परन्तु जो कल्प पहले वाले होंगे, अधिकारी वह तो समझते हैं कि हमारा स्वधर्म ही है। उनको सहज लगेगा। भविष्य संस्कार इस स्वरूप में प्रत्यक्ष दिखाई देते थे। तो आप सभी ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि बस यह शरीर छोड़ा और वह तैयार है। बुद्धिबल द्वारा इतना स्पष्ट अनुभव होगा। अभी दिन प्रतिदिन

अपनी सर्विस से अपने सहयोगीपन से और अपने संस्कारों को मिटाने की शक्ति से अपने अन्तिम स्वरूप और भविष्य को जान जायेंगे। पहले कहते थे ऐसा समय आयेगा जो नज़दीक वाले और दूर वाले स्पष्ट दिखाई देंगे। लेकिन अब वह समय चल रहा है। जो दैवी परिवार की आत्मायें हैं वह समझ सकती हैं - कौन-कौन समीप रत्न हैं। जिनको जितना समीप आना है वह सरकमस्टांस अनुसार भी इतना समीप आयेंगे। जिनको कुछ दूर होना है तो सरकमस्टांश भी बीच में निमित्त बन जायेंगे, जो चाहते हुए भी आ नहीं सकेंगे। यह सभी भविष्य का साक्षात्कार अभी प्रैक्टिकल सर्विस चल रही है।

✚ अभी समय जास्ती और काम कम करते हो। आगे चल करके तो समय ऐसा आने वाला है। जो कि आप सभी की जीवन तो बहुत बिजी हो जायेगी। और समय कम देखने में आयेगा। यह दिन और रात दो घण्टे के समान महसूस करोगे। अब से ही यह प्रैक्टिस करो कि कम समय में काम बहुत करो। समय को सफल करना भी बहुत बड़ी शक्ति है। जैसे अपनी इनर्जी वेस्ट करना ठीक नहीं है। वैसे ही समय को भी वेस्ट करना ठीक नहीं है। एक-एक की प्रजा प्रख्यात होगी। जब प्रजा प्रख्यात होगी तब पद भी प्रख्यात होगा, हर एक की प्रजा और भक्त प्रख्यात होंगे। भविष्य पद के पहले संगम की सर्विस में सफलता स्वरूप का यादगार प्रख्यात होगा। भविष्य पद प्रख्यात होगा। ऐसा समय आने वाला है जो कि आप अपनी कमाई नहीं कर सकोगे परन्तु दूसरों के लिये बहुत बिजी हो जाओगे। अभी अपनी कमाई का बहुत थोड़ा समय है। फिर दूसरों की सर्विस करने में अपनी कमाई होगी। अभी यह जो थोड़ा समय मिला है उसका पूरा-पूरा लाभ उठाओ। नहीं तो फिर यह समय ही याद आयेगा इसलिए ही जैसे भी हो जहाँ पर भी हो, परिस्थितियां नहीं बदलेंगी। यह नहीं सोचना कि मुसीबतें हल्की होंगी फिर कमाई करेंगे, यह तो दिन प्रति दिन और विशाल रूप धारण करेंगी परन्तु इनमें रहते हुए भी अपनी स्थिति की परिपक्वता चाहिए। इसलिए ही समय का ध्यान और अपने स्वरूप की स्मृति और इसके बाद फिर स्थिति। इसका ध्यान रखना है अच्छा जिम्मेवारी का ताज बताया तो तख्त कौन सा था? नम्रचित्त का तख्त। जिस पर ही विराजमान होने से सारे काम ठीक कर सकेंगे।

✚ आप लोग कहते हो ना - मुख में गुलाब! बापदादा कहते मुख के बोल में अविनाशी वरदान हो। आज से सिर्फ एक शब्द याद रखना - “नया”। जो भी संकल्प करो, बोल बोलो, कर्म करो यही चेक करो याद रखो कि नया है? यही पोतामेल चौपड़ा, रजिस्टर आज से शुरू करो। दीपमाला में चौपड़े पर क्या करते हैं? स्वास्तिका निकालते हैं ना। गणेश। और चारों ही युग में बिन्दी जरूर लगाते हैं। क्यों लगाते हैं? किसी भी कार्य को प्रारम्भ करते समय स्वास्तिका वा गणेश नमः जरूर कहते हैं। यह किसकी यादगार है। स्वास्तिका को भी गणेश क्यों कहते? स्वास्तिका - स्वस्थिति में स्थित होने का और पूरी रचना की नॉलेज का सूचक है। गणेश अर्थात् नॉलेजफुल। स्वास्तिका के एक चित्र में पूरी नॉलेज समाई हुई है। नॉलेजफुल की स्मृति का यादगार गणेश वा स्वास्तिका दिखाते हैं। इसका अर्थ क्या हुआ? कोई भी कार्य की सफलता का आधार है -नॉलेजफुल अर्थात् समझदार, ज्ञान स्वरूप बनना। ज्ञान स्वरूप समझदार बन गये तो हर कर्म श्रेष्ठ और सफल होगा ना! वो तो सिर्फ कागज पर निशानी यादगार को लगा देते हैं लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं नॉलेजफुल बन हर संकल्प करेंगी तो संकल्प और सफलता दोनों साथ-साथ अनुभव करेंगे। तो आज से यह दृढ़ संकल्प के रंग द्वारा अपने जीवन के चौपड़े पर हर संकल्प, संस्कार नया ही होना है। होगा, यह भी नहीं। होना ही है। स्वस्थिति में स्थित हो यह श्रीगणेश अर्थात् आरम्भ करो। स्वयं श्रीगणेश बन करके आरम्भ करो। ऐसे नहीं सोचो यह तो होता ही रहता है।

✚ सुनाया ना - आपकी इस दुनिया में यथा शक्ति, यथा समय होता है। यथा और तथा। और वतन में तो यथा-तथा की भाषा ही नहीं है। यहाँ दिन भी तो रात भी देखना पड़ता। वहाँ न दिन, न है रात; न सूर्य उदय होता, न चन्द्रमा। दोनों से परे है। आना तो वहाँ ना। बच्चों ने रूह-रूहान में कहा ना कि कब तक? बापदादा कहते हैं कि आप सभी कहो कि हम तैयार हैं तो ‘अभी’ कर लेंगे। फिर ‘कब’ का तो सवाल ही नहीं है। ‘कब’ तब तक है जब तक सारी माला तैयार नहीं हुई है। अभी नाम निकालने बैठते हो तो 108 में भी सोचते हो कि यह नाम डालें वा नहीं? अभी 108 की माला में भी सभी वही 108 नाम बोलें। नहीं, फर्क हो जायेगा। बापदादा तो

अभी घड़ी ताली बजावे और ठकाठक शुरू हो जायेगी - एक तरफ प्रकृति, एक तरफ व्यक्तियों। क्या देरी लगती। लेकिन बाप का सभी बच्चों में स्नेह है। हाथ पकड़ेंगे, तब तो साथ चलेंगे। हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् समान बनना। आप कहेंगे - सभी समान अथवा सभी तो नम्बरवन बनेंगे नहीं। लेकिन नम्बरवन के पीछे नम्बर टू होगा। अच्छा, बाप समान नहीं बनें लेकिन नम्बरवन दाना जो होगा वह समान होगा। तीसरा दो के समान बने। चौथा तीन के समान बने। ऐसे तो समान बनें, तो एक दो के समीप होते-होते माला तैयार हो। ऐसी स्टेज तक पहुँचना अर्थात् समान बनना। 108 तैयार हो जायेगी। नम्बरवार तो होना ही है। समझा? बाप तो कहते - अभी कोई है गैरन्टी करने वाला कि हाँ, सब तैयार हैं? बापदादा को तो सेकण्ड लगता। दृश्य दिखाते थे ना - ताली बजाई और परियाँ आ गई।

✚ संगम युग की विशेषताओं को तो स्वयं अब अनुभव कर ही रहे हो। सारे कल्प की विशेषताओं को सदा स्मृति में रखते हुए सदा अलौकिक विचित्र रास करते रहते हो। गोप-गोपियों की रास तो प्रसिद्ध ही है। तो निरन्तर रास करते हो अथवा प्रोग्राम से? यह है हुल्लास का रास। लेकिन इस रास में सम्पूर्ण पूर्णमासी की रास प्रसिद्ध है। इसका रहस्य क्या है? पूर्णमासी अर्थात् उसमें सम्पूर्णतः की निशानी गाई हुई है। इस रास की विशेषतायें अब तक वर्णन करते रहते हैं। वह कौन-सी विशेषतायें? उस समय गोप-गोपियों की विशेषता क्या थी? आपकी ही बातें हैं ना? मुख्य विशेषता क्या थी, तीन बातें सुनाओ? एक विशेषता रात को दिन बनाया हुआ था। दिन अर्थात् हर एक गोप-गोपी के जीवन में सतोप्रधानता का सूर्य उदय था। लोगों के लिये कुम्भकरण के नींद की रात थी अर्थात् तमोप्रधानता थी। दूसरी विशेषता सारा समय जागती ज्योति थे। माया एक संकल्प-रूप में भी आ नहीं पाती थी। मायावी लोग अर्थात् माया मूर्छित थी और बेहोश थी। क्योंकि सर्व जागती ज्योति निरन्तर बाप के साथ लगन में मग्न थे। तीसरी विशेषता सर्व का हाथ में हाथ मिला हुआ था और ताल से ताल मिला हुआ था अर्थात् संस्कार मिले हुए थे। स्नेह और सहयोग का संगठन था। रास में सार्किल अर्थात् चक्र लगाते हैं ना? सार्किल अर्थात् चक्र - यह शक्ति स्वरूप प्रकृति और माया को घेराव डालने की व किले की

निशानी है। यह है विशेषतायें इसलिये इस रास का विशेष महत्व गाया हुआ है। यह हुआ संगमयुग की विशेषताओं का गायन।

✚ जब कोई समस्या या कोई बड़ा कार्य भी सामने आता है तो कभी-कभी बच्चों के चेहरे पर थोड़ा सा समस्या वा कार्य की लहर दिखाई देती है। थोड़ा सा चेहरा बदल जाता है। फिर अगर कोई कहता है क्या हुआ? तो कहते हैं काम ही बहुत है ना! विघ्न-विनाशक के आगे विघ्न न आवे तो विघ्न-विनाशक टाइटल कैसे गाया जायेगा? थोड़ा सा चेहरे पर थकावट या थोड़ा सा मूड बदलने के चिन्ह नहीं आने चाहिए। क्यों? आपके जड़ चित्र जो आधाकल्प पूजे जायेंगे उसमें कभी थोड़ा सा भी थकावट या मूड बदलने के चिन्ह दिखाई देते हैं क्या? जब आपके जड़ चित्र सदा मुस्कुराते रहते हैं तो वह किसके चित्र हैं? आपके ही हैं ना? तो चैतन्य का ही यादगार चित्र है इसलिए थोड़ा सा भी थकावट वा जिसको कहते हो चिड़चिड़ापन, वह नहीं आना चाहिए। सदा मुस्कुराता चेहरा बापदादा को और सभी को भी पसन्द आता है। अगर कोई चिड़चिड़ेपन में है तो उसके आगे जायेंगे? सोचेंगे अभी कहें या नहीं कहें। तो आपके जड़ चित्रों के पास तो भगत बहुत उमंग से आते हैं और चैतन्य में कोई भारी हो जाए तो अच्छा लगता है? अभी बापदादा सभी बच्चों के चेहरे पर सदा फरिश्ता रूप, वरदानी रूप, दाता रूप, रहमदिल, अथक, सहज योगी वा सहज पुरुषार्थी का रूप देखने चाहते हैं। यह नहीं कहो बात ही ऐसी थी ना। कैसी भी बात हो लेकिन रूप मुस्कुराता हुआ, शीतल, गम्भीर और रमणीकता दोनों के बैलेन्स का हो। कोई भी अचानक आ जाए और आप समस्या के कारण वा कार्य के कारण सहज पुरुषार्थी रूप में नहीं हो तो वह क्या देखेगा? आपका चित्र तो वही ले जायेगा।

✚ भक्ति मार्ग में साक्षात्कार द्वारा वरदान प्राप्त होता है क्योंकि वह आत्माएं इतनी निर्बल होती हैं जो ज्ञान धारण नहीं कर सकतीं स्वयं पुरुषार्थी नहीं बन सकतीं। इसलिए वरदान की इच्छा रखती हैं, और वरदान रूप में उनको कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। इस रीति जो कमजोर आत्माएं

आपके सामने आती हैं, जिन आत्माओं की इच्छा को देखकर तरस की, रहम की भावना आती है। रहमदिल बन अपनी सभी शक्ति की मदद दे उनको ऊंचा उठाना - यह है वरदान का रूप। अभी ज्यादा सर्विस चलनी है नॉलेज के विधातापन की। अन्त में नॉलेज देने की सर्विस कम हो जायेगी, वरदान देने की सर्विस ज्यादा होगी। इसलिए अन्त के समय वरदान लेने वाली आत्माओं में वही संस्कार मर्ज हो जायेंगे और वही मर्ज हुए संस्कार द्वापर में भक्त के रूप में इमर्ज होंगे। अभी यह सर्विस कम करते हो, फिर ज्यादा करनी होगी। अभी वारिस बनाने की सर्विस है, फिर होगी सिर्फ प्रजा बनाने की सर्विस। परन्तु थोड़े समय में इतनी प्रजा बनाने के लिए वरदाता मूर्त बनने के लिए मुख्य क्या अटेन्शन रखना पड़े? वरदातामूर्त बन थोड़े समय में अनेक आत्माओं को वरदान दे सकें, उसके लिए क्या करना पड़े? वरदाता बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ यही करना पड़े, बार-बार जो भक्ति मार्ग में गायन किया है कि वारी जाऊं। यह गायन अगर प्रैक्टिकल में कर लो तो जिसके ऊपर वारी जाते हो वह आपको भी सर्व वरदान देकर वरदातामूर्त बना देते हैं। तो हर समय, हर कर्म में, हर संकल्प में यह सोचो कि 'वारी जाऊं' का जो वचन दिया था वह पालन कर रही हूँ।

✚ एक 'परदर्शन' दूसरा 'परचिन्तन'। परचिन्तन में व्यर्थ चिन्तन भी आ जाता है। यही दो बातें संग के रंग में स्वच्छ हीरे को दागी बना देती हैं। इसी परदर्शन, परचिन्तन की बातों पर कल्प पहले का यादगार 'रामायण' की कथा बनी हुई है। गीता ज्ञान भूल जाता है। गीता ज्ञान अर्थात् स्वचिन्तन। स्वदर्शन चक्रधारी बनना। नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनना। गीता ज्ञान के सार को भूल कर रामायण की कथा प्रैक्टिकल में लाते हैं। सीता भी वह बनते हैं जो मर्यादा की लकीर से बाहर निकल गई। सीता के दो रूप दिखलाये हैं। एक सदा साथ रहने वाली और दूसरा शोक वाटिका में रहने वाली। तो संगदोष में आकर शोक वाटिका वाली सीता बन जाते हैं। वह एक है फरियाद का रूप और दूसरा है याद का रूप। जब फरियाद के रूप में आ जाते हैं तो फर्स्ट स्टेज से सेकण्ड में आ जाते हैं। इसलिए सदा बेदाग सच्चा हीरा, चमकता हुआ हीरा, अमूल्य हीरा बनो। इन दो बातों से सदा दूर रहो तो धूल और दाग लग नहीं सकता। चाहते नहीं हो लेकिन कर लेते हो, बातें बड़ी नई-नई रमणीक बताते हो। अगर वह बातें सुनावें तो बहुत लम्बा चौड़ा

शास्त्र बन जायेगा। लेकिन कारण क्या है? अपनी कमजोरी। लेकिन अपनी कमजोरी को सफेदी लगा देते हो और छिपाने के लिए दूसरों के कारणों की कहानियाँ लम्बी बना देते हो। इसी से परदर्शन, परचिन्तन शुरू हो जाता है। इसलिए इस विशेष मूल आधार को, मूल बीज को समाप्त करो। ऐसा विदाई का बधाई समारोह मनाओ। मेले में समारोह मनाते हो ना! इसी समारोह मनाने को ही मिलना अर्थात् बाप समान बनना कहा जाता है।

✚ स्वमान की स्मृति दिलाने के लिए आये हैं। बच्चे, सदैव अपने को सौभाग्यशाली समझें। सदा सौभाग्यशाली उनको कहा जाता है जिनका बाप, टीचर और सतगुरू से पूरा कनेक्शन, पूरी लगन है। कन्या की सगाई के बाद क्या होता है? पति के साथ लगन लग जाती है। तब उनको कहते हैं सदा सुहागिन। परन्तु वह कहाँ तक सुहागिन है? अन्दर में क्या भरा पड़ा है! कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम गिनी जाती है। सगाई करने के बाद अशुद्ध बनने कारण आन्तरिक अभागिन है। यह किसको भी पता नहीं है। बाप ही बतलाते हैं सदा सुहागिन कौन है। सदा के लिए परमात्मा से पूरी लगन रहे, वो सदा सुहागिन है। यह तो अभी पढ़ाई का समय है, बाप अपना कर्तव्य कर रहे हैं, डायरेक्शन देते पढ़ाते हैं। जब तक पढ़ाना है, पढ़ाते रहेंगे। विनाश सामने खड़ा है, उसका कनेक्शन बाप के साथ है। ऐसे मत समझो बाप की जुदाई है। जुदाई भी नहीं विदाई भी नहीं। जब तक विनाश नहीं तब तक बाप साथ है। वतन में बाप गया है कोई कार्य के लिए। समय अनुसार वह सब कुछ होता रहेगा। इसमें न कोई विदाई है, न जुदाई, जुदाई लगती है? तुमने विदाई दी थी? अगर विदाई दी होगी तो जुदाई भी होगी। विदाई नहीं दी होगी तो जुदाई भी नहीं होगी। यह ड्रामा के अन्दर पार्ट चलता रहता है। बाप का खेल चल रहा है। खेल में खेल चलता रहेगा। आगे तो बहुत ही खेल देखने हैं। इतनी हिम्मत है? जब हिम्मत रखेंगे तब बहुत देखेंगे। आगे बहुत कुछ देखना है। परन्तु कदम को सम्भाल-सम्भाल कर चलाना है। अगर सम्भल कर नहीं चलेंगे तो कहाँ खड़्डा भी आ जायेगा। एक्सीडेंट भी हो पड़ेंगे।

✚ जैसे विदेश में अल्पकाल के सुख के साधनों की मस्ती में सदा मस्त रहते थे - ऐसे भारतवासियों ने भी विदेशी सुख के साधनों को खूब अपने प्रति कार्य में लाया। और अब भी कर रहे हैं। भारत वालों ने अल्पकाल के साधनों की कापी की और कापी करने के कारण अपनी असली शक्ति को खो दिया। रूहानियत से किनारा कर लिया और विदेशी सुख के साधनों का सहारा ले लिया। और विदेश ने क्या किया? समझदारी का काम किया। भारत की असली रूहानी शक्ति ने उन्हों को विदेश में आकर्षित किया। इसका परिणाम हरेक नामधारी रूहानी शक्ति वाले के पास अथवा निमित्त गुरूओं के पास विदेशी फालोअर्स ज्यादा देखने में आयेंगे। विदेशी आत्मायें नकली साधनों को छोड़कर असलियत की तरफ, रूहानियत की तरफ ज्यादा आकर्षित हो रही हैं और भारतवासी नकली साधनों में मस्त हो गये हैं। अपनी चीज को छोड़ पराई चीज के तरफ जा रहे हैं और विदेशी आत्मायें असली चीज को ढूँढ़ने, परखने और पाने की ज्यादा इच्छुक हैं। तो आज बापदादा देश-विदेश का सैर कर रहे थे। उस सैर में यही देखा कि भारतवासी क्या कर रहे हैं और विदेशी क्या कर रहे हैं? भारतवासियों को देख बापदादा को तरस आ रहा था कि इतने ऊँचे कुल की नम्बरवन धर्म की आत्मायें, पीछे के धर्म वालों की छोड़ी हुई चीजों को अपनाने में ऐसे मस्त हो गये हैं जो अपनी विशेष वस्तु को भूल गये हैं। इस कारण भारत रूपी घर में बैठे हुए, भारत रूपी घर में आये हुए श्रेष्ठ मेहमान बाप को भी नहीं जानते और विदेश की आत्मायें दूर बैठे भी सिर्फ सन्देश सुनते ही पहचान कर और पहुँच गई हैं।

✚ आज ज्ञान दाता, भाग्य विधाता, सर्वशक्तियों के वरदाता, सर्व खजानों से भरपूर करने वाले भोलानाथ बाप अपने अति स्नेही, सदा सहयोगी, समीप बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। यह मिलन ही सदाकाल का उत्सव मनाने का यादगार बन जाता है। जो भी भिन्न-भिन्न नामों से समय प्रति समय उत्सव मनाते हैं - वह सभी इस समय बाप और बच्चों के मधुर मिलन, उत्साह भरा मिलन, भविष्य के लिए उत्सव के रूप में बन जाता है। इस समय आप सर्वश्रेष्ठ बच्चों का हर दिन, हर घड़ी सदा खुशी में रहने की घड़ियाँ वा समय है। तो इस छोटे से संगमयुग के

अलौकिक जीवन, अलौकिक प्राप्तियाँ, अलौकिक अनुभवों को द्वापर से भक्तों ने भिन्न-भिन्न नाम से यादगार बना दिये हैं। एक जन्म की आपकी यह जीवन, भक्ति के 63 जन्मों के लिए याद का साधन बन जाती है। इतनी महान आत्मायें हो! इस समय की सबसे वन्दरफुल बात यही देख रहे हो - जो प्रैक्टिकल भी मना रहे हो और निमित्त उस यादगार को भी मना रहे हो। चैतन्य भी हो और चित्र भी साथ-साथ हैं। पाँच हजार वर्ष पहले हर एक ने क्या-क्या प्राप्त किया, क्या बने, कैसे बने- यह 5 हजार वर्ष का पूरा अपना यादगार चित्र और जीवन पत्री सभी स्पष्ट रूप में जान गये हो। सुन रहे हो और देख-देख हर्षित हो रहे हो कि यह हमारा ही गायन-पूजन हमारे जीवन की कथायें वर्णन कर रहे हैं। डबल फारेनर्स ने अपना यादगार चित्र देखा है ना! तो चित्रों को देखकर ऐसे अनुभव करते हो कि यह मेरा चित्र है! ओरीजनल आपका चित्र तो बना नहीं सकते हैं। इसलिए भावनापूर्वक जो भी टच हुआ वह चित्र बना दिया है।

✚ सम्पूर्ण स्वतन्त्र अर्थात् जब चाहो इस देह का आधार लो, जब चाहो इस देह के भान से ऐसे न्यारे हो जाओ जो जरा भी यह देह अपनी तरफ खींच न सके। ऐसे अपनी देह के भान अर्थात् देह के लगाव से स्वतन्त्र, अपने कोई भी पुराने स्वभाव से भी स्वतन्त्र, स्वभाव से भी बन्धायमान न हो। अपने संस्कारों से भी स्वतन्त्र। अपने सर्व लौकिक सम्पर्क वा अलौकिक परिवार के सम्पर्क के बन्धनों से भी स्वतन्त्र। ऐसे स्वतन्त्र बने हो? ऐसे को कहा जाता है- 'सम्पूर्ण स्वतन्त्र'। ऐसी स्टेज पर पहुंचे हो वा अभी तक एक छोटी-सी कर्मेन्द्रिय भी अपने बंधन में बाँध लेती है? अगर छोटी-सी चींटी शेर को अथवा महारथी को हैरान कर दे तो ऐसे महारथी व शेर को क्या कहेंगे? शेर कहेंगे? एक व्यर्थ संकल्प मास्टर सर्वशक्तिमान को हैरान कर दे या एक पुराने 84 जन्मों का जड़जड़ी भूत संस्कार, मास्टर सर्वशक्तिवान, महावीर, विघ्न-विनाशक, त्रिकालदर्शी, स्वद-र्शन चक्रधारी को परेशान कर ले, पुरूषार्थ में कमजोर बना दे, ऐसे मास्टर सर्व-शक्तिवान को क्या कहेंगे? जिस समय इस स्थिति में होते हो उस समय अपने ऊपर आश्चर्य नहीं लगता? यह शब्द निकलना कि मुझे व्यर्थ संकल्प आते हैं वा पुराने संस्कार वा स्वभाव अपने वशीभूत बना लेते हैं वा बाप की याद का अनुभव नहीं है, बाप द्वारा कोई प्राप्ति नहीं है

वा छोटे-से विघ्न से घबरा जाते हैं, निरन्तर अति इन्द्रिय सुख वा हर्ष नहीं रहता, खुशी का अनुभव नहीं होता, क्या वह बोल ब्राह्मण कुल भूषण के हैं ऐसे ब्राह्मणों को कौन से ब्राह्मण कहेंगे - 'नामधारी ब्राह्मण'।

✚ अपने को वृक्षपति की सन्तान समझते हो? वृक्ष की निशानी भक्ति-मार्ग में भी चली आती है। जब तपस्वी तपस्या करते हैं तो वृक्ष के नीचे तपस्या करते हैं। इसका रहस्य क्या है? वृक्ष के नीचे तपस्या क्यों करते हैं? उसका कारण क्या है, यह शुरू क्यों हुआ, इसका बेहद का रहस्य क्या है इस सृष्टि रूपी वृक्ष में भी आप लोगों का निवास स्थान कहां है? वृक्ष के नीचे जड़ में बैठे हो ना। चित्र जो अभी ज्ञान सहित बनाये जाते हैं वही फिर यादगार भक्ति-मार्ग में चलता रहता है। वृक्ष के चित्र में दूर से क्या दिखाई देता है? तपस्वी तपस्या कर रहे हैं, जैसे वृक्ष के नीचे तपस्वी बैठे हैं। वृक्ष के नीचे बैठने से आटोमेटिकली वृक्ष की सारी नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। वृक्ष के नीचे बैठेंगे तो न चाहते हुए भी फल, फूल, पत्तों आदि में अटेंशन जाता ही है। तो यह भी जब कल्पवृक्ष के नीचे फाउन्डेशन में बैठते हो, तो सारे वृक्ष का नॉलेज बुद्धि में आटोमेटिकली रहता है। जैसे बीज में वृक्ष की सारी नॉलेज रहती है, इसी रीति अपने को इस कल्पवृक्ष का फाउन्डेशन अथवा वृक्ष के नीचे जड़ में अपने को समझते हो तो सारे वृक्ष की नॉलेज आटोमेटिकली बुद्धि में आ जाती है। यह जो आपकी स्टेज है, उसका यादगार भक्ति-मार्ग में चलता आया है। यह है प्रैक्टिकल, तपस्या कर रहे हो। भक्ति-मार्ग में फिर स्थूल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं। देखो, शुरू-शुरू में आपको नशा रहता था कि हम वृक्ष के ऊपर बैठे हैं। सारा वृक्ष नीचे है, हम ऊपर हैं। ऊपर भी ठहरे ना। अगर वृक्ष को उलटा कर देंगे तो ऊपर हो जायेंगे।


✚ जैसे महादानियों के पास सदैव भिखारियों की भीड़ लगी हुई होती है, वैसे आप सभी के पास भी भिखारियों की भीड़ लगने वाली है। आपके पास प्रदर्शनी में जब भीड़ होती है तो फिर क्या


करते हो? क्यू-सिस्टम में शार्ट में सिर्फ संदेश देते हो। रचना की नॉलेज नहीं दे सकते हो, सिर्फ रचयिता बाप का परिचय और सन्देश दे सकते हो। वैसे ही जब भिखारियों की भीड़ होगी तो सिर्फ यही सन्देश देंगे। लेकिन वह एक सेकेण्ड का सन्देश पावरफुल होता है, जो वह सन्देश उन आत्माओं में संस्कार के रूप में समा जाता है। सर्व धर्म की आत्मायें भी यह भीख मांगने के लिए आयेंगी। कहते हैं ना कि क्राइस्ट भी बेगर रूप में है। तो धर्म-पितायें भी आप लोगों के सामने बेगर रूप में आयेंगे। उनको क्या भिक्षा देंगे? यही सन्देश। ऐसा पावरफुल सन्देश होगा जो इसी सन्देश के पावरफुल संस्कारों से धर्म स्थापन करने के निमित्त बनेंगे। वह संस्कार अविनाशी बन जायेंगे। क्योंकि आप लोगों के भी अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज के समय अविनाशी संस्कार होते हैं। अभी संस्कार अविनाशी बना रहे हो। इसलिए अब जिन्हों को सन्देश देते हो और मेहनत करते हो, तो अभी वह सदाकाल के लिए नहीं रहता है। कुछ समय रहता है फिर ढीले हो जाते हैं। लेकिन अन्त के समय आप लोगों के संस्कार ही अविनाशी हो जाते हैं। तो अविनाशी संस्कारों की शक्ति होने के कारण उन्हों को भी ऐसी शिक्षा वा सन्देश देते हो जो उनके संस्कार अविनाशी बन जाते हैं। तो अविनाशी संस्कार बनाने का तीव्र पुरुषार्थ करना है। यह तब होगा जब मास्टर त्रिकालदर्शी बन संकल्प को कर्म में लायेंगे।

✚ आज के दिन(शिवरात्रि) भक्त आत्माओं के पास बाप के बिन्दु रूप की विशेष स्मृति रहती हैं। शिव जयन्ति वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है। लेकिन निराकार बाप ज्योति - बिन्दु जिसको 'शिवालिंग' के रूप में पूजते हैं, उस बिन्दु का महत्त्व है। आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहती है। तो आप भी बिन्दु और बाप भी बिन्दु तो आज के दिन भारत में हर एक भक्त आत्मा के अन्दर विशेष बिन्दु रूप का महत्त्व रहता है। बिन्दु जितना ही सूक्ष्म है, उतना ही शक्तिशाली है। इसलिए बिन्दु बाप को ही शक्तियों के, गुणों के, ज्ञान के सिन्धु कहा जाता है। जैसे आप बच्चों ने विशेष सेवा अर्थ वा स्नेह स्वरूप बन बाप का झण्डा लहराया, बाप ने कौन - सा झंडा लहराया? आप सभी ने तो शिवबाबा का झण्डा लहराया, बाप क्या यह झण्डा लहरायेंगे? यह सेवा के साकार रूप की जिम्मेवारी बच्चों को दे दी। बाप ने भी झण्डा लहराया लेकिन कौन सा और कहाँ लहराया? बापदादा ने अपने दिल

में सभी बच्चों की विशेषताओं के स्नेह का झण्डा लहराया। कितने झण्डे लहराये होंगे? एक - एक बच्चे की विशेषता का झण्डा बापदादा के दिल में लहरा रहा है। सिर्फ आप सबने झण्डा नहीं लहराया लेकिन बापदादा ने भी लहराया। यह झण्डा लहराते हो तो उस समय क्या होता है? फूलों की वर्षा। बापदादा भी जब बच्चों की विशेषता का, स्नेह का झण्डा लहराते हैं तो कौन - सी वर्षा होती है? हर एक बच्चे के ऊपर 'अविनाशी भव', 'अमर भव', 'अचल - अडोल भव' - इन वरदानों की वर्षा होती है। यह वरदान ही बापदादा के अविनाशी अलौकिक पुष्प हैं।

✚ बापदादा देख रहे थे कि मधुवन पावर हाउस से चारों ओर कितने कनेक्शन्स गये हुए हैं। जैसे स्थूल पावर हाउस से अनेक तरफ लाइट के कनेक्शन जाते हैं। ऐसे इस पावर हाउस से कितने तरफ कनेक्शन गये हैं। विश्व के कितने कोनों में लाइट के कनेक्शन गये हैं और कितने कोनों में अभी कनेक्शन नहीं हुआ है। जैसे आजकल की गवर्नमेंट भी यही कोशिश करती है कि अपने राज्य में सभी कोनों में सभी गाँवों में चारों तरफ लाइट और पानी का प्रबन्ध जरूर हो। तो पाण्डव गवर्नमेंट क्या कर रही है! ज्ञान गंगाएँ चारों ओर जा रही हैं। पावर हाउस से चारों ओर लाइट का कनेक्शन जा रहा है। जैसे ऊपर से किसी भी शहर को या गाँव को देखो तो कहाँ- कहाँ रोशनी है। नज़दीक में रोशनी है या दूर-दूर है, वह दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है। बापदादा भी वतन से दृश्य देख रहे थे कि कितने तरफ लाइट है और कितने तरफ अभी तक लाइट नहीं पहुँची है। रिजल्ट को तो आप लोग भी जानते हो कि देश विदेश में अभी तक कई स्थान रहे हुए हैं जहाँ अभी कनेक्शन्स देने हैं। जैसे लाइट और पानी बिगर उस स्थान की वैल्यु नहीं होती। ऐसे जहाँ आध्यात्मिक लाइट और ज्ञान जल की पूर्ति नहीं हुई है वहाँ की चैतन्य आत्माएँ किस स्थिति में है! अंधकार में प्यास में भटक रहीं हैं, तड़प रहीं हैं। ऐसे आत्माओं की वैल्यु क्या बताते हो? चित्र बनाते हो ना कौड़ी तुल्य और हीरे तुल्य! लाइट और ज्ञान जल मिलने से कौड़ी से हीरा बन जाते हैं। तो वैल्यु बढ़ जाती है ना। बापदादा देख रहे थे कि आये हुए देश-विदेश से बच्चे, पावर हाउस से विशेष पावर लेकर अपने अपने स्थान पर जा रहे हैं।

 कोटों में कोई निकले लेकिन ऐसा आवाज़ निकले जो चारों ओर पेपर्स में यह धूम मच जाए कि यह ब्र.कु. दुनिया से नया ज्ञान देती हैं। ज्ञान क्या देती हैं, उसका आधार क्या मानती हैं, उनको सिद्ध कैसे करती हैं यह जब अखबारों में आये तब समझो ज्ञान दाता का नगाड़ा बजा। समझा? ज्ञान के प्रभाव में प्रभावित हों। ज्ञान के प्रभावशाली और प्रेम के प्रभावशाली में क्या अन्तर है? ब्राह्मणों में भी दो भाग देखे ना। ब्राह्मण तो बने हैं लेकिन कोई प्यार के आधार पर, कोई ज्ञान और प्यार दोनों के आधार पर। तो दोनों में स्थिति का अन्तर है ना। जो प्यार को भी ज्ञान से समझते हैं, वह निर्विघ्न चलेंगे। जो सिर्फ प्यार के आधार पर चलते वह शक्तिशाली आत्मा नहीं होंगे। ज्ञान का बल जरूर चाहिए। जिनका पढ़ाई से प्यार है, मुरली से प्यार है और जिनका सिर्फ परिवार से प्यार है, उन्हीं में कितना अन्तर है! ब्राह्मण जीवन अच्छी लगी, पवित्रता अच्छी लगी, इसी आधार पर आने वाले और ज्ञान की शक्ति के आधार पर आने वाले, उनमें कितना अन्तर है। ज्ञान की मस्ती, अलौकिक, निराधार रहने वाली मस्ती है। वैसे प्रेम भी एक शक्ति है लेकिन प्रेम की शक्ति वाले आधार के बिना चल नहीं सकते। कोई न कोई आधार जरूर चाहिए। मनन शक्ति - ज्ञान की शक्ति वाले की होगी। जितनी मनन शक्ति होगी उतनी बुद्धि के एकाग्रता की शक्ति आटोमेटिकली आयेगी। और जहाँ बुद्धि की एकाग्रता है वहाँ परखने की और निर्णय करने की शक्ति स्वतः आती है। जहाँ ज्ञान का फाउण्डेशन नहीं होगा वहाँ परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति कमजोर होगी। क्योंकि एकग्रता नहीं।

 दुनिया वाले तो सिर्फ मुबारक देते हैं। क्या कहते हैं? हैप्पी हो, हेल्दी-वेलदी हो... कह देते हैं। लेकिन बन तो नहीं जाते हैं ना। बाप तो ऐसी मुबारक देते जो सदा के लिए हेल्थ-वेलथ हैपी वरदानों के रूप में साथ रहती है। सिर्फ मुख से कह करके खुश नहीं करते है, लेकिन बनाते हैं और बनना ही मनाना है क्योंकि अविनाशी बाप की मुबारक भी अविनाशी होगी ना। तो मुबारक वरदान बन जाती है। आप तना से निकले हुए हो। यह सब शाखायें हैं, यह सभी धर्म आपकी शाखायें हैं ना! कल्प-वृक्ष की शाखायें हैं। इसलिए वृक्ष की निशानी क्रिसमस ट्री दिखाते हैं। क्रिसमस ट्री कभी सजी हुई देखी है? इसमें क्या करते हैं? (स्टेज पर दो क्रिसमस

वृक्ष सजे रखे हैं) इसमें क्या दिखाया है? विशेष चमकते हुए, जगे हुए बल्ब दिखाते हैं। छोटे-छोटे बल्बों से ही सजाते हैं। इसका अर्थ क्या है? कल्प-वृक्ष की आप चमकती हुई आत्मायें हो और जो भी धर्म पितायें आते हैं वह भी अपने हिसाब से सतोप्रधान होते हैं। इसलिए गोल्डन एजेड आत्मा चमकती हुई होती है। इसलिए यह कल्प-वृक्ष की निशानी - अन्य धर्म की शाखाएं भी हर वर्ष निशानी मनाते रहते हैं। सारे वृक्ष का ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर है ना। कौन-सा बाप ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर है? बाप ने ब्रह्मा को आगे रखा है। साकार सृष्टि की आत्माओं का आदि पति, आदिनाथ ब्रह्मा है। इसलिए ग्रेट ग्रेट ग्रैंड फादर है। आदि देव के साथ आप भी हो ना, कि अकेले आदि देव है? आप आदि आत्मायें अभी आदि देव के साथ हो और आगे भी साथ रहेंगी, इतना नशा है? खुशी के गीत सदा गाते रहते हो ना या सिर्फ आज गायेंगे?



यह परमात्म जयन्ती जिसको शिव रात्रि भी कहते हैं। रात्रि अर्थात् अंधकार। अंधकार में जो व्यक्ति वा वस्तु जैसी होती है वैसी दिखाई नहीं देती है। होते हुए भी दिखाई नहीं देती। जब बाप अवतरित होते हैं तो आप भी जो आप हैं, जो हैं, जैसे हैं, न अपने आपको देख सकते थे, न बाप को देख वा जान सकते थे। मैं आत्मा हूँ यह होते हुए भी ज्ञान व अनुभव के नेत्र द्वारा देख नहीं सकते थे। नेत्र होते हुए भी अंधकार में थे। नेत्र यथार्थ कार्य नहीं करते थे। स्पष्ट दिखाई नहीं देता। तो आप भी अंधकार में थे ना। अपने को ही नहीं देख सकते थे। इसलिए बाप पहले इस अंधकार को मिटाते हैं। तो शिवरात्रि अर्थात् अंधकार को मिटाए यथार्थ का प्रकाश प्रज्ज्वलित होना। इसलिये शिवरात्रि कहकर मनाते हैं। भक्ति मार्ग की विधियाँ भी आपकी यथार्थ विधियों का यादगार है। एक तरफ भक्तों की विधि और दूसरे तरफ है बच्चों की सम्पूर्ण विधि। दोनों ही देख बाप हर्षित होते हैं। आप लोग भी हर्षित होते हो ना कि हमारे भक्त फालो करने में कितने होशियार हैं। लास्ट जन्म तक भी अपनी भक्ति की विधियाँ निभाते आते हैं। यह सब है बाप और आप बिन्दु रूप की कमाल। शिव बाबा के साथ सालिग्राम भी साथ-साथ पूजे जाते हैं। आप सभी बिन्दु स्वरूप के महत्व को जानते हो। इसलिए आज तक भक्तों में शिव अर्थात् बिन्दु स्वरूप का महत्व है। वह सिर्फ बिन्दु रूप को जानते हैं, यथार्थ नहीं जानते हैं, अपने रूप से

जानते हैं। लेकिन आप बाप को सिर्फ बिन्दु रूप से नहीं लेकिन बिन्दु के साथ जो सर्व खजानों का सिन्धु है, तो बिन्दु के साथ सिन्धु रूप को भी जानते हो।

✚ इन्दौर जोन ग्रुप:- बापदादा की श्रेष्ठ मत ने श्रेष्ठ गति को प्राप्त करा लिया - ऐसा अनुभव करते हो ना! जैसी मति वैसी गति होती है। तो बाप की श्रेष्ठ मत है तो गति भी श्रेष्ठ होगी ना! कहते हैं कि जैसी अन्त मते वैसी गते ... यह क्यों गाया हुआ है? क्योंकि बाप चक्र के अंत में ही आकर श्रेष्ठ मत देता है। तो अंत समय पर श्रेष्ठ मत लेते हो और अनेक जन्म सद्गति को प्राप्त करते हो। इस समय बेहद की “अंत मते सो गते” श्रेष्ठ हो जाती है। तो इस समय का ही यादगार भक्ति में चला आता है। एक जन्म की श्रेष्ठ मत से कितने जन्म तक श्रेष्ठ गति प्राप्त करते हो! सब यादगार इस संगमयुग के ही हैं। यादगार क्यों बने? क्योंकि इस समय याद में रहकर कर्म करते हो। हर कर्म का यादगार बन गया। आप अमृतवेले विधिपूर्वक उठते हो। तो देखो, आपके यादगार चित्रों में भी विधिपूर्वक उठाते हैं, कितना प्यार से उठाते हैं। हैं जड़ चित्र लेकिन कितने दिल से, स्नेह से उठाते हैं! उठाते भी हैं तो खिलाते, सुलाते भी हैं क्योंकि आप इस समय सब याद के विधिपूर्वक करते हो। खाना भी विधिपूर्वक खाते हो। भोग लगाकर खाते हो ना या जैसे हैं वैसे ही खा लेते हो? ऐसे तो नहीं - किसी को खाना देना है, इसलिए जल्दी-जल्दी में भोग नहीं लगाया। अगर किसको देना भी है, कोई मजबूरी है - तो भी पहले अलग हिस्सा जरूर निकालो। ऐसे नहीं - किसी को खिलाकर पीछे भोग लगाओ। विधिपूर्वक खाने से सिद्धि प्राप्त होती है, खुशी होती है, निरंतर याद सहज रहती है। तो अमृतवेले से लेकर रात तक जो भी कर्म करो, याद के विधिपूर्वक करो। तब हर कर्म की सिद्धि मिलेगी।

✚ विशेष आत्माओं को विशेष कार्य करना है। बापदादा विशेष दिनों पर विशेष रूप से बच्चों की और भक्तों की तीनों ही रूप से सेवा करते हैं। विशेष आत्माओं को खास अपने यादगार के दिन साक्षात्कारमूर्त बन, साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना

से, अपने रूहानी स्नेह के स्वरूप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरना चाहिए। जैसे अव्यक्त रूप में बापदादा चारों ओर बच्चों की सेवा करते हैं। वह समझते हैं कि बापदादा ने मेरे से मुलाकात की, मेरी याद का रेस्पान्स दिया वा मेरी याद का प्रत्यक्ष फल मैंने अनुभव किया अथवा भक्त भी अनुभव करते हैं कि हमारे प्यार वा भावना का फल भगवान् ने पूरा किया, यह अनुभव प्रैक्टिकल रूप में होता रहता है। ऐसे विशेष आत्माओं को अपने अव्यक्त स्थिति में, अपनी रूहानी लाइट और माइट की स्थिति द्वारा लाइट-हाउस और माइट-हाउस बन एक स्थान पर रहते हुए भी चारों ओर अलौकिक रूहानी सर्विस की भावना और वृत्ति द्वारा सर्विस करनी चाहिए। इसको कहते हैं बेहद की सर्विस। ऐसे अनुभव वा महसूस होना चाहिए कि मेरी प्रजा वा भक्त आज विशेष रूप से यादगार के दिन मुझ विशेष आत्मा को याद कर रहे हैं। अल्पकाल के ऋद्धि-सिद्धि वाले एक स्थान पर रहते हुए अपने भक्तों को अपने रूप का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करा सकते हैं, तो क्या विशेष आत्माएं अपने लाइट और माइट द्वारा भक्तों को वा प्रजा को अपनी सेवा द्वारा अनुभव नहीं करा सकते हैं? तो जब ऐसे विशेष यादगार के दिन आते हैं तो विशेष आत्माओं को ऐसी विशेष सर्विस पर अनुभव करना चाहिए। ऐसी सर्विस की? अच्छा, यह रही सर्विस।



विश्व के राजनेताओं के प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश - विश्व के हर एक राज्य नेता अपने देश को वा देशवासियों को प्रगति की ओर ले जाने की शुभ भावना, शुभ कामना से अपने-अपने कार्य में लगे हुए हैं। लेकिन भावना बहुत श्रेष्ठ हैं, प्रत्यक्ष प्रमाण जितना चाहते हैं उतना नहीं होता - यह क्यों? क्योंकि आज की जनता वा बहुत से नेताओं के मन की भावनार्यें सेवा भाव, प्रेम भाव के बजाए स्वार्थ भाव, ईर्ष्या भाव में बदल गई हैं। इसलिए इस फाउण्डेशन को समाप्त करने के लिए प्राकृतिक शक्ति, वैज्ञानिक शक्ति, वर्ल्डली नॉलेज की शक्ति, राज्य के अथॉरिटी की शक्ति द्वारा तो अपने प्रयत्न किये हैं लेकिन वास्तविक साधन स्पिच्युअल पावर है, जिससे ही मन की भावना सहज बदल सकती है, उस तरफ अटेन्शन कम है। इसलिए बदली हुई भावनाओं का बीज नहीं समाप्त होता। थोड़े समय के लिए दब जाता है। लेकिन

समय प्रमाण और ही उग्र रूप में प्रत्यक्ष हो जाता है। इसलिए स्प्रिच्युअल बाप का स्प्रिच्युअल बच्चों, आत्माओं प्रति सन्देश है कि सदा अपने को स्प्रिट (सोल) समझ स्प्रिच्युअल बाप से सम्बन्ध जोड़ स्प्रिच्युअल शक्ति ले अपने मन के नेता बनो तब राज्य नेता बन औरों के भी मन की भावनाओं को बदल सकेंगे। आपके मन का संकल्प और जनता का प्रैक्टिकल कर्म एक हो जायेगा। दोनों के सहयोग से सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव होगा। याद रहे कि सेल्फ रूल अधिकारी ही सदा योग्य राजनेता के रूल अधिकारी बन सकते हैं। और स्वराज्य आपका स्प्रिच्युअल फादरली बर्थ राइट है। इस बर्थ राइट की शक्ति से सदा राइटियस की शक्ति भी अनुभव करेंगे और सफल रहेंगे।

✚ अस्थियों को नहीं देखना स्थिति को देखना। यह अस्थियाँ स्थिति स्वरूप हैं। एक एक रग में स्थिति थी। तो बाहर से वह अस्थियों को रखा है। परन्तु इसका अर्थ भक्ति मार्ग का नहीं उठाना। इन अस्थियों में जो स्थिति भरी हुई है, हमेशा उसको देखना है। साधारण मनुष्यों को यह बातें इतना समझ में नहीं आयेगी। बच्चों का स्नेह है और सदा रहेगा, 21 जन्म तक रहेगा। आप सभी सतयुगी दुनिया में साथ नहीं चलेंगे? राज्य साथ नहीं पायेंगे? साथ ही हैं, साथ ही रहेंगे- जन्म जन्मान्तर तक। अभी भी ऐसा नहीं समझना, बाप है दादा नहीं या दादा है तो बाप नहीं। हम दोनों एक दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही आप अपने को त्रिमूर्ति ही समझो। इसीलिए कहते हैं त्रिमूर्ति का बैज हमेशा साथ रखो। जब ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीन को देखते हो तो आपके भी त्रिमूर्ति की याद अर्थात् अपना स्वरूप और बापदादा की याद, त्रिमूर्ति की स्थिति मशहूर है। इसमें ही आप सभी बच्चों का कल्याण है। कल्याणकारी बाप जो कहते हैं, जो कराते हैं, उसमें ही कल्याण है। इसमें एक एक महावाक्य में, एक-एक नजर में बहुत कल्याण है। लेकिन स्थूल को परखने वाले कोई कोई अनन्य और महारथी बच्चे हैं। अब आप भी इतना ही शीघ्र कर्मातीत स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ करो। जैसे यहाँ हर समय बापदादा के साथ व्यतीत करते थे वैसे ही हर कर्म में, हर समय अपने को साथ ही रखा करो। बच्चे, यही शिक्षा याद रखना, कभी नहीं भूलना। सम्बन्ध, स्नेह, स्मृति स्वरूप, साथ-साथ

सरलता स्वरूप, समर्पण और एक दो के सहयोगी बन सफलता को पाते रहना। सफलता आप सभी बच्चों के मस्तक के बीच चमक रही है।

हर एक अपने तीन रूपों से कम्बाइन्ड रूप जानते हो? एक है अनादि कम्बाइन्ड (संयुक्त) रूप, दूसरा है संगमयुगी कम्बाइन्ड रूप और तीसरा है भविष्य कम्बाइन्ड रूप - इन तीनों को जानते हो? आप मनुष्यात्माओं का अनादि कम्बाइन्ड रूप कौन-सा है? पुरुष और प्रकृति कहो या आत्मा और शरीर कहो। यह अनादि कम्बाइन्ड रूप इस अनादि ड्रामा में नूँधा हुआ है। भविष्य कम्बाइन्ड रूप कौन-सा है? विष्णु चतुर्भुज। संगमयुगी कम्बाइन्ड रूप आपका कौन-सा है? शिव और शक्ति। शक्ति शिव के सिवाय कुछ कर नहीं सकती और शिव बाप भी शक्तियों के बिना कुछ कर नहीं सकते। तो संगमयुगी कम्बाइन्ड रूप सबका है - शिव-शक्ति। सिर्फ माताओं का ही नहीं है, पाण्डव भी शक्ति स्वरूप हैं। यादगार के रूप में आजकल के जगद्गुरु भी आपके कम्बाइन्ड रूप शिव-शक्ति का पूजन करते आ रहे हैं। तो सदा यह स्मृति रहनी चाहिए कि हम हैं ही कम्बाइन्ड शिव-शक्ति। जब है ही कम्बाइन्ड तो भूल सकते हैं क्या? फिर भूलते क्यों हो? अपने को अकेला समझते हो इसलिए भूल भी जाते हो। कल्प पहले की यादगार में भी अर्जुन को जब बाप का साथ भूल जाता था, अर्थात् जब वह सारथी को भूल जाता था, तो क्या बन जाता था? निर्बल कहो व कायर कहो और जब स्मृति आती थी, कि मेरा साथी और सारथी बाप है तो विजयी बन जाता था। निरन्तर सहज याद की सहज युक्ति एक ही है कि सदा अपने कम्बाइन्ड रूप को सदा साथ रखो व स्मृति में रखो तो कभी भी कमजोरी के संकल्प भी क्या स्वप्न भी नहीं आयेंगे। जागते-सोते कम्बाइन्ड रूप हो। जबकि बाप स्वयं बच्चों से सदा साथ रहने का वायदा कर रहे हैं और निभा भी रहे हैं तो वायदे का लाभ उठाना चाहिए।

जैसे आजकल साइंस वाले अपनी साइंस की नॉलेज (विद्या) के आधार पर कैसे भी दुःख के समय एक इन्जेक्शन द्वारा अल्पकाल के रेस्ट (आराम) का अनुभव कराते हैं ना? वैसे ही कितनी भी आवाज़ और कितना भी तमोगुणी वातावरण हो, लेकिन साइलेन्स की शक्ति से वेस्ट

(व्यर्थ) समाप्त होने के कारण बेस्ट (श्रेष्ठ) स्थिति में स्थित होने से सदा रेस्ट (आराम) अनुभव करोगे, अर्थात् सदा अपने को सुख और शान्ति की शैया पर आराम करता हुआ अनुभव करोगे। जैसे यादगार का चित्र भी है -- सागर में जहाँ लहरों की हलचल होती है तो सागर में होते हुए, साँपों की शैया होते हुए भी अर्थात् वातावरण व परिस्थिति दुःखमय होते हुए भी (साँप तो दुःखदाई अर्थात् काटने वाला होता है ना) आराम का अनुभव करोगे। तो इसका भाव यह है कि ऐसी परिस्थितियाँ, ऐसा वातावरण जो काटने वाला हो, हिलाने वाला हो और अपने विष द्वारा मूर्च्छित करने वाला हो लेकिन ऐसे वातावरण को भी सुख-शान्ति की शैया बना दे। अर्थात् आराम का स्थान बना दे, अर्थात् आत्मा सदा अपने रेस्ट में रहे। तो जैसा यादगार चित्र है, क्या वैसे ही प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव करते हो? शीतलता में शीतल रहना कोई बड़ी बात नहीं है, आराम के साधनों में आराम से रहना-यह भी साधारण बात है लेकिन बे-आरामी में आराम से रहना इसको कहा जाता है-"पद्मापद्म भाग्यशाली"। तो ऐसे विषय सागर के बीच रहते हुए पाँच विकारों को अपने आराम व सुख और शान्ति की शैया बनाना है। अर्थात् क्या अभी से विकारों के ऊपर सदा विजयी बन सदा ज्ञान के मनन और बाप के मिलन में मग्न रहते हो? जो ऐसी स्थिति में स्थित है, अर्थात् सदा मग्न है, वह ही सदा निर्विघ्न है।


✚ ब्रह्मा बाप के बाद साकार रूप में 9 रत्नों की पूज्य आत्मायें सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष हुई तो 9 रत्न वा आठ की माला सदा एक दो के सहयोगी हैं। कौन हैं आठ की माला? जो ओटे सेवा में वह अर्जुन अर्थात् अष्ट माला है। तो सेवा की स्टेज पर अष्ट रत्न, 9 रत्न अपना पार्ट बजा रहे हैं। और पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। तो अष्ट रत्न हैं - आपस में सदा के स्नेही और सदा के सहयोगी। इसलिए सदा आदि से सेवा के सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग का पार्ट बजाती रहेंगी। समझा। और क्या क्वेश्चन है? बताया क्यों नहीं, यह क्वेश्चन है? बतलाते तो दीदी के योगी बन जाते। ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। और अभी भी इस विशेष आत्मा का पार्ट, अभी तक जो आत्मायें


गई हैं, उन्हीं से न्यारा और प्यारा है। हर एक क्षेत्र में इस श्रेष्ठ आत्मा का साथ, सहयोग की अनुभूति करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप का अपना पार्ट है, उन जैसा पार्ट नहीं हो सकता। लेकिन इस आत्मा की विशेषता सेवा के उमंग उत्साह दिलाने में, योगी, सहयोगी और प्रयोगी बनाने में सदा रही है। इसलिए इस आत्मा का यह विशेष संस्कार समय प्रति समय आप सबको भी सहयोगी रहने का अनुभव कराता रहेगा। यह भी हर एक आत्मा का अपना अपना विचित्र पार्ट है। मधुवन में आये, स्नेह का स्वरूप दिखाया उसके लिए यह भी विश्व में सेवा के निमित्त पार्ट बजाया। यह आप सबका आना विश्व में स्नेह की लहरें, स्नेह की खुशबू, स्नेह की किरणों फैलाना है। इसलिए भले पधारे।

✚ बेगमपुर का बादशाह अर्थात् सर्व खुशियों के खज़ाने का मालिक। खुशियों का खज़ाना ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार के कारण ही आज श्रेष्ठ आत्माओं के नाम और रूप का सत्कार होता रहता है। ऐसे बेगमपुर के बादशाह, जिन्हों का नाम लेने से ही अनेक आत्माओं के अल्पकाल के लिए दुःख दूर हो जाते हैं, जिनके चित्रों को देखते चरित्रों का गायन करते हैं और दुःखी आत्मा खुशी का अनुभव करने लगती हैं, ऐसे चैतन्य आप स्वयं बेगमपुर के बादशाह हो? अपने खज़ानों को जानते हो? सर्व खज़ानों को स्मृति में रखते हुए सदा हर्षित अर्थात् सदा प्रकृति और पाँच विकारों के आक्रमण से परे। इसी खुशी के खज़ानों से सम्पन्न-स्वरूप “एक बाप दूसरा न कोई “ - ऐसा अनुभव करते हो? खज़ानों की चाबी तो मजबूत रखते हो ना? चाबी को खो तो नहीं देते हो? समय और समय के प्रमाण आत्माओं की सूक्ष्म पुकार सुनने में आती है वा अपने में ही सदा बिजी रहते हो? कल्प पहले वाले आप के भक्त आत्मायें अपने-अपने इष्ट का आह्वान कर रही हैं। “आ जा, आ जा” की धुन लगा रही हैं। दिन-प्रतिदिन अपनी पुकार साजों से सजाते हुए अर्थात् खूब गाजे बाजे बजाते हुए जोर शोर से प्कारना शुरू करते हैं। आप सभी को राजी करने के अनेक साधन अपनाते रहते हैं। तो चैतन्य में गुप्त रूप में सुनते हुए, देखते हुए रहम नहीं आता वा अब तक अपने ऊपर रहम करने में बिजी हो? विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी स्वरूप में स्थित होने से ही रहम आयेगा।

स्वयं को जगत्-माता व जगत पिता के स्वरूप में अनुभव करने से ही रहम उत्पन्न होगा। किसी भी आत्मा का दुःख व भटकना सहन नहीं होगा। लेकिन इस स्वरूप में बहुत कम समय ठहरते हो।

✚ भारत देश की महानता किसके कारण है? आप लोगों के कारण है। क्योंकि देश महान बनता है महान आत्माओं द्वारा। तो भारत की सर्व महान आत्माओं में से महान कौन? आप हैं कि दूसरे हैं? इतनी महान आत्मायें हैं जो अब चक्कर के समाप्ति में भी भारत महान, आप महान आत्माओं के कारण गाया जाता है। और कोई भी देश में इतनी महान आत्माओं का गायन या पूजन नहीं होता। चाहे कितने भी नामीग्रामी धर्मात्माएं हो गई हों या राजनेतायें होकर गये हों वा आजकल के जमाने के हिसाब से वैज्ञानिक भी नामीग्रामी हैं लेकिन किसी भी देश में उस देश की इतनी महान आत्माओं के मन्दिर हों, यादगार हों, पूजन हो, गायन हो - वह कहाँ भी नहीं होगा। चाहे विज्ञान में विदेश बहुत आगे है लेकिन गायन और पूजन में नहीं है। वैज्ञानिकों का या राजनीतिज्ञों का गायन भी होता है लेकिन उस गायन और देवात्माओं के गायन में कितना अन्तर है! ऐसा गायन वहाँ नहीं होता। तो इतनी भारत की महा-नता बढ़ाने वाले हम महान आत्मायें हैं - यह नशा कितना श्रेष्ठ है! यहाँ गली- गली में मन्दिर देखेंगे। तो इतना नशा सदा स्मृति में रखो। सुनाया ना आज कि कभी-कभी का भी शब्द समाप्त करो। अगर कभी-कभी बहुत अच्छे और कभी-कभी हलचल, तो आपके यादगार का पूजन भी कभी-कभी होगा। कई मन्दिरों में हर समय पूजन होता है, हर दिन होता है और कहाँ-कहाँ जब कोई तिथि-तारीख आती है तब होता है। तो कभी-कभी हो गया ना। लेकिन किसका सदा होता है, किसका कभी-कभी, क्यों होता है? क्योंकि इस समय के पुरुषार्थ में जो कभी-कभी लाता है उसका पूजन भी कभी-कभी होता है। जितना यहाँ विधिपूर्वक अपना श्रेष्ठ जीवन बनाते हैं उतना ही विधिपूर्वक पूजा होती है।

 चाहे प्रजा है, चाहे रॉयल फैमिली है लेकिन प्रजा, प्रजा नहीं, प्रजा भी एक परिवार है। परिवार की नीति-यह है सतयुग-त्रेता की राजनीति। राजा कहलाते हैं लेकिन राजा होते भी परमप्रिय पिता का स्वरूप है। परिवार की विधि से राजनीति चलती है। चाहे राज्य कारोबार भिन्न-भिन्न हाथों में होगी लेकिन परिवार के स्नेह की विधि से कारोबार होगी। ऐसे नहीं कि राजा के पास बहुत धन-दौलत हो और प्रजा में कोई को खाने-पीने के लिये भी नहीं हो। द्वापर-कलियुग की राजनीति में लॉ एण्ड ऑर्डर चलता है। लेकिन विश्व-राज्य, देव-राज्य के समय यही नीति चलती है, लॉ नहीं लेकिन स्नेह और सम्बन्ध की नीति चलती है। कोई भी आत्मा 'दुःख' शब्द को भी नहीं जानती। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा हो लेकिन दुःख-अशान्ति का नाम-निशान नहीं। दुःख क्या चीज होती है-उसका अज्ञान है, ज्ञान ही नहीं है। जैसे इस समय स्वराज्य के समय भी आपको बापदादा किस नीति से चलाते हैं? स्नेह और श्रीमत्ता। श्रीमत्ता पर चलते रहते तो कोई भी सख्त ऑर्डर करने की आवश्यकता नहीं है। अगर नीति को भूलते हैं तो स्वयं, स्वयं को कलियुगी नीति में चलाते हैं। तो विश्व के राज्य की नीति भी बहुत प्यारी है। क्योंकि अनेकता नहीं है, एक राज्य है और अखुट खज़ाना है! प्रजा भी इतनी सम्पन्न होगी-आजकल के जो बड़े-बड़े पद्मपति हैं, उन्हों से भी ज्यादा! अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं। लेकिन इसका आधार क्या? स्वराज्य। इस समय सम्पन्न बनते हो, इसलिए परमात्म-सम्पत्ति की सम्पन्नता सतयुग-त्रेता के अनेक जन्म प्राप्त होती है। इसलिए कहा-नम्बरवन राज्य है स्वराज्य, फिर है विश्व-राज्य और तीसरा है द्वापर-कलियुग का अलग-अलग स्टेट का राज्य।

 अपने आप से पूछो कि - हम कौन से पूज्य बनते हैं? अगर कोई भी सब्जेक्ट में विजयी नहीं बने, तो जैसे खण्डित मूर्ति का पूजन नहीं होता, पूज्य से साधारण पत्थर बन जाता, कोई मूल्य नहीं रहता, ऐसे अगर कोई भी सब्जेक्ट में सम्पूर्ण विजयी नहीं बनते तो 'परम पूज्य' नहीं बन सकते। पूज्य बनेंगे और गायन योग्य बनेंगे। गायन योग्य क्यों बनते? क्योंकि बाप के बच्चे बनने के कारण, बाप के साथ-साथ पार्ट बजाने के कारण, बाप की महिमा के गुणगान करने के कारण, यथा शक्ति त्याग करने के कारण, वा यथा शक्ति याद में रहने के कारण बनती हैं।

और पूजन का रहस्य है - एक पवित्रता के कारण पूजा है, दूसरा श्रेष्ठ आत्माओं के सर्व शक्तिवान बाप द्वारा जो शक्तियों की धारणा की है, उन शक्तियों के भी भिन्न रूप से यादगार रूप में पूजा होती है, जैसे जिन आत्माओं ने विद्या अर्थात् ज्ञान धारण करने की शक्ति सम्पूर्ण रूप में धारण की है तो ज्ञान अर्थात् नॉलेज की शक्ति का यादगार 'सरस्वती' के रूप में हैं। संहार करने की शक्ति का यादगार दुर्गा के रूप में हैं। ज्ञान धन को देने वाली महादानी का, सर्व खजानों के धन को देने वाली लक्ष्मी के श्रेष्ठ रूप में पूजे जाते हैं। हर विघ्न पर विजय प्राप्त करने का यादगार - विघ्न विनाशक रूप में पूजा जाता है। मायाजीत अर्थात् माया के विकराल रूप को भी सहज और सरल बनाने की शक्ति का पूजन, महावीर के रूप में है। तो श्रेष्ठ आत्माओं की हर शक्ति और श्रेष्ठ कर्म का भी पूजन होता है। शक्तियों का पूजन हर देवी देवता की पूजा के रूप में दिखाया हुआ है तो ऐसे पूज्य, जिन्हों के हर श्रेष्ठ कर्म और शक्तियों का पूजन है उसको कहा जाता है - परम पूज्य।

❖ दीपावली में क्या करते हो? दीप जलाते हो। आजकल तो लाइट जलाते हैं। और लाइट पर कौन आते हैं? परवाने। और परवाने की विशेषता क्या होती है? फिदा होना। तो दीपावली मनाने का अर्थ क्या हुआ? तो फिदा हो गये हो या आज होना है? हो गये हो या होना है? (हो गये हैं) तो दीपावली तो मना ली, फिर क्यों मनाते हो? जब फिदा हो गये तो दीपावली मना लिया। कि बीच-बीच में चक्कर लगाने जाते हो? फिदा हो गये हैं लेकिन थोड़े पंख अभी हैं, उससे थोड़ा चक्कर लगा लेते हो। तो चक्कर लगाने वाले तो नहीं हो ना। चक्कर लगाना अर्थात् किसी न किसी माया के रूप से टक्कर खाना। माया से टक्कर खाते हो या माया को हार खिलाते हो? वा कभी विजय प्राप्त करते हो, कभी टक्कर खाते हो? दीपमाला-यह अपना ही यादगार मनाते हो। आपका यादगार है ना? कि मुख्य आत्माओं का यादगार है, आप देखने वाले हो? आप सबका यादगार है, इसीलिए आजकल बहुत अंदाज़ में दीपक के बजाए छोटे-छोटे बल्ब जगा देते हैं। दीपक जलायेंगे तो संख्या फिर भी उससे कम हो जायेगी। लेकिन आपकी संख्या तो बहुत है ना। तो सभी की याद में अनेक छोटे-छोटे बल्ब जगमगा देते हैं। तो

अपना यादगार मना रहे हैं। जब दीपक देखते हो तो समझते हो यह हमारा यादगार है? स्मृति आती है? यही संगमयुग की विशेषता है जो चैतन्य दीपक अपना जड़ यादगार दीपक देखते हो। चैतन्य में स्वयं हो और जड़ यादगार देख रहे हो। ऐसे तो जिस दिन दीपावली मनाओ उस दिन ही वास्तविक तिथि है। यह तो दुनिया वालों ने तिथि फिक्स की है, लेकिन आपकी तिथि अपनी है। इसलिए जिस दिन आप ब्राह्मण मनाओ वही सच्ची तिथि है। इसलिए कोई भी तिथि फिक्स करते हैं तो किससे पूछते हैं? ब्राह्मणों से ही निकालते हैं।

✚ तो पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापटी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है। इसीलिए भक्त लोग भी एक दिन पवित्रता का व्रत रखते हैं। यह आपकी कॉपी की है। दूसरा व्रत लेते हैं - खाने-पीने का। खाने पीने का व्रत भी आवश्यक होता है। क्यों? आप ब्राह्मणों ने भी खाने-पीने का व्रत पक्का लिया है ना! जब मधुबन आने का फार्म सबसे भराते हो, तो यह भी फार्म में भराते हो ना - खाना-पीना शुद्ध है? भराते हो ना! तो खाने-पीने का व्रत पक्का है? है पक्का कि कभी-कभी कच्चा हो जाता है? डबल विदेशियों का तो डबल पक्का होगा ना! डबल विदेशियों का डबल पक्का है या कभी थक जाते हो तो कहते हो अच्छा आज थोड़ा खा लेते हैं। थोड़ा ढीला कर देते हैं, नहीं। खाने-पीने का पक्का है, इसीलिए भक्त लोग भी खाने-पीने का व्रत लेते हैं। तीसरा व्रत लेते हैं जागरण का - रात जागते हैं ना! तो आप ब्राह्मण भी अज्ञान नींद से जागने का व्रत लेते हो। बीच-बीच में अज्ञान की नींद तो नहीं आती है ना! भक्त लोग आपको कॉपी कर रहे हैं, तो आप पक्के हैं तभी तो कॉपी करते हैं। कभी भी अज्ञान अर्थात् कमजोरी की, अलबेलेपन की, आलस्य की नींद नहीं आये। या थोड़ा-थोड़ा झुटका आवे तो हर्जा नहीं है? झुटका खाते हो? ऐसे अमृतवेले भी कई झुटके खाते हैं। लेकिन यह सोचो कि हमारे यादगार में भक्त लोग क्या-क्या कॉपी कर रहे हैं! वह इतने पक्के रहते हैं, कुछ भी हो जाए, लेकिन व्रत नहीं तोड़ते हैं।

✚ कभी भी यह नहीं सोचना कि जो हम कर रहे हैं, जो हो रहा है वह बापदादा नहीं देखते हैं। इसमें कभी अलबेले नहीं होना। अगर कोई भी बच्चा अपने दिल का चार्ट पूछे तो बापदादा बता सकते हैं लेकिन अभी बताना नहीं है। बापदादा हर एक महारथी, घोड़ेसवार... सबका चार्ट देख रहे हैं। कई बार तो बापदादा को बहुत तरस आता है, हैं कौन और करते क्या हैं? लेकिन जैसे ब्रह्मा बाप कहते थे ना - याद है क्या कहते थे? गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। शिव बाबा जाने और ब्रह्मा बाबा जाने क्योंकि बापदादा को तरस बहुत पड़ता है लेकिन ऐसे बच्चे बापदादा के रहम के संकल्प को टच नहीं कर सकते, कैच नहीं कर सकते। इसीलिए बापदादा ने कहा - भिन्न-भिन्न प्रकार का रॉयल अलबेलापन बाप देखते रहते हैं। आज बापदादा कह ही देते हैं कि तरस बहुत पड़ता है। कई बच्चे ऐसे समझते हैं कि सतयुग में तो पता ही नहीं पड़ेगा कौन क्या था, अभी तो मौज मना लो। अभी जो कुछ करना है कर लो। कोई रोकने वाला नहीं, कोई देखने वाला नहीं। लेकिन यह गलत है। सिर्फ बापदादा नाम नहीं सुनाते, नाम सुनायें तो कल ठीक हो जाएं। आज धुरिया मना रहे हैं ना। धुरिये में एक-दो को जो भी होता है स्पष्ट दे देते हैं। तो समझा क्या करना है, पाण्डव समझा कि नहीं समझा! चल जायेगा? चलेगा नहीं क्योंकि बापदादा के पास हर एक की हर दिन की रिपोर्ट आती है। बाप-दादा आपस में भी रूहरूहान करते हैं। तो बापदादा सभी बच्चों को फिर से इशारा दे रहे हैं कि समय सब प्रकार से अति में जा रहा है। माया भी अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे समय पर ब्राह्मण बच्चों का अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में चाहिए।


✚ वर्तमान समय तक रिजल्ट क्या देखने में आती है, उसको जानते हो? पाण्डव तीव्र पुरुषार्थ की लाइन में हैं या शक्तियाँ? मैजॉरिटी तीव्र पुरुषार्थ की लाइन में कौन हैं? सभी पाण्डव मैजॉरिटी शक्तियों को वोट देते हैं। लेकिन पुरुषार्थ के हिसाब से पाण्डव भी शक्तिरूप हैं। सर्व शक्तिवान की सब शक्ति हैं। बापदादा तो पाण्डवों की तरफ लेते हैं। अगर पाण्डवों को आगे


नहीं करेंगे तो शक्तियों के आगे शिकार कैसे लायेंगे? इसलिये पाण्डवों को विशेष ब्रह्मा बाप की हमजिन्स के नाते पुरुषार्थ में फालो फादर करना चाहिए। पाण्डव लौकिक जिम्मेवारी उठाने में भी आगे रहते हैं। सिर्फ लौकिक जिम्मेवारी के बजाय बेहद विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी उठानी है। कमाई करने की लगन जैसे हृद की जानते हो वैसे बेहद की कमाई की लगन में मगन हो जाओ। कमाई के पीछे स्वयं के सुख के साधनों का त्याग करने के भी अनुभवी हो तो बेहद की कमाई के पीछे देह की सुध-बुध त्याग करना व देह की स्मृति का त्याग करना क्या बड़ी बात है? इसलिये पाण्डवों को तीव्र पुरुषार्थ की लाइन में नम्बर वन लेना चाहिए, समझा? पीछे नहीं रहना! अगर शक्तियों से पीछे रह गये तो ब्रह्मा बाप के हम-जिन्स और बाप की लाज नहीं रखी - तो क्या यह शोभता है? इसलिये इसी वर्ष में - दूसरे वर्ष का इन्तज़ार नहीं करना - इसी वर्ष में नम्बर वन लेना है। शक्तियाँ सोचती होंगी कि हम नम्बर दो हो जायेंगी क्या? शक्तियों के बिना तो शिव बाप की भी कोई चाल नहीं चल सकती। चल सकती है? शक्तियों को इसमें भी त्याग करना चाहिए, शक्तियों का त्याग पूजा जाता है। जो त्याग करता है उसका भाग्य स्वतः बनता है। इसलिये दोनों ही भाई-भाई के रूप में तीव्र पुरुषार्थ करो।

✚ वृक्ष के चित्र में आदि से विशेष शक्ति के रूप में अमेरिका दिखाया हुआ है। जब से स्थापना हुई है तो अमेरिका को बाप ने याद किया है। विशेष पार्ट है ना। जैसे एक विनाश की शक्ति श्रेष्ठ है - दूसरी क्या विशेषता है? विशेषतायें तो स्थान की हैं ही। लेकिन अमेरिका की विशेषता यह भी है - एक तरफ विनाश कि तैयारियाँ भी ज्यादा हैं। दूसरी तरफ फिर विनाश को समाप्त करने की यू.एन. भी वहाँ है। एक तरफ विनाश की शक्ति। दूसरे तरफ है सभी को मिलाने की शक्ति। तो डबल शक्ति हो गई ना। वहाँ सभी को मिलाने के लिए प्रयत्न करते हैं, तो वहाँ से ही फिर यह रूहानी मिलन का भी आवाज बुलन्द होगा। वह लोग तो अपनी रीति से सभी को मिलाकर शांति का प्रयत्न करते हैं लेकिन यथार्थ रीति से मिलाना तो आप लोगों का ही कर्तव्य है ना। वह मिलाने की कोशिश करते भी हैं लेकिन कर नहीं पाते हैं। वास्तव में सभी धर्म की आत्माओं को एक परिवार में लाना यह है - आप ब्राह्मणों का वास्तविक कार्य। यह विशेष करना है। जैसे विनाश की शक्ति वहाँ श्रेष्ठ है ऐसे ही स्थापना की शक्ति का आवाज बुलन्द हो। विनाश और

स्थापना साथ-साथ दोनों झण्डे लहरावें। एक साइंस का झण्डा और एक साइलेन्स का। साइन्स की शक्ति का प्रभाव और साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव दोनों जब प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना। जैसे कोई वी.आई.पी. किसी भी देश में जाते हैं तो उनका स्वागत करने के लिए झण्डा लगा लेते हैं ना। अपने देश का भी लगाते हैं और जो आता है उनके देश का भी लगाते हैं। तो परमात्म-अवतरण का भी झण्डा लहरावें। परमात्म-कार्य का भी स्वागत करें। बाप का झण्डा कोने-कोने में लहरावे तब कहेंगे विशेष शक्तियों को प्रत्यक्ष किया।

✚ तब पहले स्वयं में प्रत्यक्ष होंगे, फिर सम्बन्ध में प्रत्यक्ष होंगे फिर विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष होंगे। तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। जैसे आपके यादगार में कहते हैं - शंकर ने तीसरी आंख खोली और विनाश हो गया। तो शंकर अर्थात् अशरीरी तपस्वी रूप। विकारों रूपी सांप को गले का हार बना दिया। सदा ऊंची स्थिति और ऊंचे आसनधारी। यह तीसरी आंख अर्थात् सम्पूर्णता की आंख, सम्पन्नता की आंख। जब आप तपस्वी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्थिति से विश्व परिवर्तन का संकल्प करेंगे तो यह प्रकृति भी सम्पूर्ण हलचल की डांस करेगी। उपद्रव मचाने की डांस करेगी। आप अचल होंगे और वह हलचल में होगी क्योंकि इतने सारे विश्व की सफाई कौन करेगा? मनुष्यात्माएं कर सकती हैं? यह वायु, धरती, समुद्र, जल - इनकी हलचल ही सफाई करेगी। तो ऐसी सम्पूर्णता की स्थिति इस तपस्या से बनानी है। प्रकृति भी आपका संकल्प से आर्डर तब मानेगी जब पहले आपके स्वयं के, सदा के सहयोगी कर्मेन्द्रियाँ मन-बुद्धि-संस्कार आर्डर मानें। अगर स्वयं के, सदा के सहयोगी आर्डर नहीं मानते तो प्रकृति क्या आर्डर मानेगी? इतनी पॉवरफुल तपस्या की ऊंची स्थिति हो जो सर्व के एक संकल्प, एक समय पर उत्पन्न हो। सेकेण्ड का संकल्प हो - "परिवर्तन", और प्रकृति हाजिर हो जाये। जैसे विश्व की ब्राह्मण आत्माओं का एक ही टाइम वर्ल्ड पीस का योग करते हो ना। तो सभी का एक समय और एक ही संकल्प यादगार रहता है। ऐसे सर्व के एक संकल्प से प्रकृति हलचल की डांस शुरू कर देगी। इसलिए कहते ही हो - स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। यह पुरानी दुनिया से नई दुनिया परिवर्तन कैसे होगी? आप सर्व के शक्तिशाली संकल्प से संगठित रूप से सबका एक संकल्प उत्पन्न होगा।

 सबके अन्दर संकल्प है की तिथि तारीख का मालूम पड़ जाये कि नई दुनिया कब आने वाली है? तिथि तारीख मालूम पड़ेगा? मालूम होना तो ज़रूर चाहिए जबकि त्रिकालदर्शी हैं अर्थात् तीनों कालों को जानने वाले हैं तो भविष्य का जानना भी ऐसे ही होगा जैसे वर्तमान को जानना और भविष्य को जानने का आधार भी वर्तमान होगा। नई दुनिया में आने वाले भी तो ब्राह्मण ही हैं। तो नई दुनिया में जो आने वाले हैं उन्हीं की वर्तमान से ही भविष्य की तिथि तारीख ऑटोमेटिकली सिद्ध हो ही जायेगी। जब नई दुनिया कहते हैं तो नई दुनिया की अधिकारी आत्माओं में भी नयापन होना चाहिए। कोई भी पुराना संस्कार व संकल्प व बोल व कोई एक्टिविटी पुरानेपन की न हो। जैसे अभी भी एक-दो में पुरानी चाल देख कर कहते हो ना कि यह इनकी पुरानी चाल है अथवा अब तक यह पुरानी आदत व चाल इनकी गई नहीं है। किसी भी बात में पुरानापन न हो। संकल्प भी पुराने स्वभाव व संस्कार के वश न हो। जब मैजारिटी व मुख्य आत्माओं में ऐसी नवीनता दिखाई दे तब नई दुनिया के आने की तिथि तारीख स्पष्ट हो जायेगी। जो निमित्त हैं उन मुख्य आत्माओं में नवीनता का और परिवर्तन का अनुभव होगा। उन्हीं के परिवर्तन के आधार पर विश्वपरिवर्तन की तारीख प्रत्यक्ष होगी। विश्व-परिवर्तन होने के पहले विश्व की सर्व-आत्माओं में वैराग्य वृत्ति होगी। और वैराग्य वृत्ति से ही बाप के परिचय को धारण कर सकेंगे कि हाँ हम आत्माओं का बाप आ चुका है। तो जैसे विश्व की आत्माओं में वैराग्य-वृत्ति ही परिवर्तन का आधार होगा वैसे ही जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हीं में भी सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार बेहद का वैराग्य बनेगा। तो संगठन में भी बेहद के वैराग्य-वृत्ति को लाने का पुरूषार्थ करो।

 अन्त में सब पार्टधारी इकट्ठे स्टेज पर आयेंगे। चाहे इस शरीर द्वारा सेवाधारी, चाहे भिन्न-भिन्न शरीर द्वारा सेवाधारी। सब इकट्ठे पार्टधारी स्टेज पर आना अर्थात् जयजयकार हो समाप्ति होना क्योंकि उन्हीं का है ही गुप्त रूप में स्थापना के सहयोगी का पार्ट। आप प्रत्यक्ष रूप में हो। वह गुप्त रूप में अपना स्थापना का पार्ट बजा रहे हैं, अभी प्रत्यक्ष नहीं होंगे क्योंकि पर्दा उठने का समय तब आये जब सब एवररेडी हो जाएँ। सम्पन्न हो जाएँ। पर्दा उठा फिर तो समाप्ति होगी ना। ऐसे सब तैयार हैं? पर्दा उठने की तैयारी है? अभी वारिस क्वालिटी की माला तैयार हुई है?

108 भी सम्पन्नता के काफी समीप हों, बिल्कुल सम्पन्न हो जाएं। समय के हिसाब से भी सम्पूर्णता के नजदीक हों। ऐसे समझते हो? उसकी निशानी क्या होगी? माला की विशेषता क्या होगी? माला तैयार है उसकी विशेष निशानी क्या दिखाई देगी? एक के साथ एक दाना मिला हुआ है। यह माला की निशानी है। माला की विशेषता है - एक दो के संस्कारों के समीप। दाने से दाना मिला हुआ। वह तैयारी है? जिसको भी देखें, चाहे 108वाँ नम्बर हो लेकिन दाना मिला हुआ, तो वह भी है ना! ऐसे जुड़े हुए हैं। सभी को यह महसूसता आवे कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं। ऐसे नहीं - संस्कार सबके वैरायटी हैं तो नजदीक कैसे होंगे? नहीं। वैरायटी संस्कार होते भी समीप दिखाई दें। वैरायटी के आधार पर नम्बर हो गये लेकिन दाने तो नजदीक हैं ना - एक दो के। जब तक एक दूसरे से न मिलें तब तक माला बन नहीं सकती। एक भी दाना निकल जाए तो माला खण्डित हो जाए। पूज्य माला नहीं कही जायेगी। दूर भी रह जाए तो भी कहेंगे यह पूज्यनीय माला नहीं। 108 वाँ नम्बर भी अगर थोड़ा दूर है तो माला रेडी नहीं हो सकती।

✚ इसलिए बाप-दादा कभी भी अकेले नहीं हैं। सदा बच्चों के साथ है। अकेले कहीं भी रह नहीं सकते। इसलिए यादगार में भी देखो पुरुषार्थी, दिलवाला मन्दिर में अकेले हैं? बच्चों के साथ हैं ना। और लास्ट की रिजल्ट विजय माला - उसमें भी अकेले नहीं हैं। कभी किसको कभी किसको सदा साथ में रखते हैं। बाप आपके सम्पूर्ण फरिश्ते रूप को इमर्ज करते हैं। वह टचिंग आपको भी आती है। रोज आती है वा कभी-कभी आती है? आप सूक्ष्मवतन को यहाँ लाते हो और बाप आपको सूक्ष्मवतन में लाते हैं। कभी बाप आपके पास आ जाते हैं कभी आपको अपने पास बुला लेते हैं। यही सारा दिन धन्धा करते हैं। कभी खेल करते और कराते हैं, कभी अपने साथ सेवा में लगाते हैं। कभी अपने साथ साक्षात्कार कराने ले जाते हैं और कभी साक्षात्कार कराने भेजते हैं। क्योंकि कोई-कोई भक्त ऐसे जिद्दी होते हैं जो अपने इष्ट देव से साक्षात्कार बिना सन्तुष्ट नहीं होते हैं। चाहे बाप भी उनके आगे प्रत्यक्ष हो जाए लेकिन वह अपने इष्ट देव को ही पसन्द करते हैं। इसलिए भिन्न-भिन्न इष्ट देव और देवियों को भक्तों के पास भेजना ही पड़ता है, और क्या करते हैं? कभीकभी विशेष स्नेही व सहयोगी बच्चों को विशेष

कान में शक्ति का मन्त्र भी देते हैं। क्यों देते? क्योंकि कोई-कोई कार्य ऐसे आते हैं जिसमें विशेष आत्मायें व मुरबी बच्चे निमित्त होने के कारण हिम्मत, हुल्लास और अपनी प्राप्त हुई शक्तियों से कार्य करने के लिए आ ही जाते हैं। फिर भी कहाँ-कहाँ जैसे राकेट को बहुत ऊँचा जाना होता है तो एक्स्ट्रा फोर्स से ऊपर चले जाते हैं। फिर निराधार हो जाते हैं। तो कहाँ-कहाँ कोई ऐसे कार्य आते हैं जहाँ सिर्फ सेकेण्ड के इशारे की आवश्यकता होती है। वह टचिंग होना अर्थात् कान में शक्ति का मन्त्र देना।

✚ होली में कई बातें करनी होती है। जलाया भी जाता है और साथ-साथ श्रृंगारा भी जाता है। और कुछ मिटाना भी होता है। जो भी बातें होली में करनी है वह सभी इस समय चल रही है। जलाना क्या है, मिटाना क्या है, रंगना क्या है और श्रृंगारना क्या है? यह सभी कर लेना इसको कहा जाता है मनाना। अगर इन चारों बातों में से कुछ कमी है तो मनाना नहीं कहेंगे। होली के दिनों में बहुत सुन्दर सजते हैं। कैसे सजते हैं? देवताओं के समान। आप सभी सजे हुए हैं? सजावट में कोई कमी तो नहीं है। सजावट में मुख्य होली का श्रृंगार कौनसा होता है? सांग जो बनाते हैं उन्हीं को पहले-पहले मस्तक में बल्ब लगाते हैं। यह भी इस समय की कॉपी की हुई है। आप का भी काम का मुख्य श्रृंगार है मस्तक पर आत्मा का दीपक जलाना। इसकी निशानी बल्ब जलाते हैं। लेकिन यह सभी बातें होने लिए होली का अर्थ याद रखना है। "होली " जो कुछ हुआ वह हो गया। हो लिया। जो सीन हुई होली अर्थात् बीत चुकी। वर्तमान समय जो प्याइन्ट ध्यान में रखनी है वह है यह होली की अर्थात् ड्रामा के ढाल की। जब ऐसे मजबूत होंगे तब वह रंग भी पक्का लग सकेगा। अगर होली का अर्थ जीवन में नहीं लायेंगे तो रंग कच्चा हो जाता है। पक्का रंग खाने के लिए हर वक्त सोचो हो ली। जो बीता हो ही गया। ऐसी होली मना रहे हो? वा कभी-कभी ड्रामा की सीन देखकर कुछ मंथन चलता है। ज्ञान का मंथन दूसरी बात है। लेकिन ड्रामा की सीन पर मंथन करना क्यों, क्या, कैसे। वह किस चीज का मंथन किया जाता। दही को जब मंथन किया जाता है तब मक्खन निकलता है। अगर पानी को मंथन करेंगे तो क्या निकलेगा? कुछ भी नहीं। रिजल्ट में यही होगा एक तो थकावट, दूसरा टाइम वेस्ट। इसलिए यह हुआ पानी का मंथन। ऐसा मंथन करने के बजाये ज्ञान का मंथन करना है।

✚ स्लोगन यही याद रखना – “ मिटायेंगे लेकिन सर्व के सहयोगी बनेंगे” आपका यादगार चित्र जो कल्प पहले वाला है वह याद है? गोवर्धन पर्वत का यादगार रूप क्या बनाते हैं? कब देखा है? आजकल के भक्तिमार्ग के गोवर्धन पर्वत की पूजा जब करते हैं तो क्या बनाते हैं? (गोबर का बनाते हैं) पहाड़ को ऊंगली देना अर्थात् पुराने संस्कारों को मिटाने में ऊंगली देना। पहले यह पहाड़ उठाना । तब यह कलियुगी दुनिया बदल फिर नहीं दुनिया बनेगी। कोई भी स्लोगन स्मृति में रखो। यह भी अच्छा है। लेकिन स्लोगन का स्वरूप बनना ही है। यह तो एक साधन है लेकिन साधन से स्वरूप बनना अच्छा है। माला के मणके कौन सी विशेषता से बनते हैं? मणकों की विशेषता यही है जो एकमत होकर एक ही धागे में पिरोये जाते हैं। एक की ही लगन एकरस स्थिति और एकमत तो सब एक ही एक। एक जैसे मणके हैं तो एक धागे में पिरोये जाते हैं ना। यो एक ही मत पर चलने वाले और आपस में भी एकमत हो। संकल्प भी एक से। दो मत होती हैं तो वह दूसरी अर्थात् 16000 की माला के दाने बन जाते हैं। एक मत के लिए ऐसा वातावरण बनाना है। वातावरण तब बनेगा जब समाने की शक्ति होगी। मानो कोई बात में भिन्नता हो जाती है क्योंकि यथा-योग्य यथा शक्ति तो है ना। तो उस भिन्नता को समाओ। समाने की शक्ति चाहिए। तो ऐसी आपस में एकता से ही समीप आयेंगे। सर्व के आगे दृष्टान्त रूप बन जायेंगे। सबमें अपनी-अपनी विशेषता होती है। कोई भी हो उसकी विशेषताओं को देखो विशेष आत्मा बन जायेंगे। कमी को तो बिल्कुल देखना ही नहीं है। जैसे चंद्रमा अथवा सूर्य को ग्रहण लगता है ना कि नहीं देखना चाहिए। नहीं तो ग्रहचारी बैठ जाएगी। तो किसकी भी कमी ग्रहण है। भूल से भी कोई ने देख लिया तो समझो ग्रहचारी बैठ जाएगी। तो सच्चा सोना बनना है।

✚ विधाता के बच्चे विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी एसलम लेने वाले भी स्वतः ही नम्बरवार होंगे। जो अब से अन्त तक वा स्थापना के आदि से अब तक भी सहयोग भाव में रहे हैं, विरोध भाव में नहीं रहे हैं, मानना न मानना अलग बात है लेकिन ईश्वरीय कार्य में वा ईश्वरीय परिवार के प्रति विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव, कार्य अच्छा है वा कार्यकर्ता अच्छे

हैं, यही कार्य परिवर्तन कर सकता है, ऐसे भिन्न-भिन्न सहयोगी भावना यें वाले, ऐसे आवश्यकता के समय इस भावना का फल नजदीक नम्बर में प्राप्त करेंगे अर्थात् एसलम के अधिकारी नम्बरवन बनेंगे। बाकी इस भावना में भी परसेन्टेज वाले उसी परसेन्ट प्रमाण एसलम की अंचली ले सकेंगे। बाकी देखने वाले देखते ही रह जायेंगे। जो अभी भी कहते हैं - देख लेंगे तुम्हारा क्या कार्य है वा देख लेंगे आपको क्या मिला है! जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय की इन्तजार करने वाले, एसलम के इन्तजाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे। जमारी बारी कब आती है, इसी इन्तजार में ही रहेंगे और आप दूर में इन्तजार करने वाली आत्माओं को भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन, शुभ भावना, श्रेष्ठ बनने के कामना की किरणें चारों ओर की आत्माओं पर विश्व-कल्याणकारी बन डालेंगे। फिर-कितनी भी विरोधी आत्मायें हैं, अपने पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जलता हुआ, बेचैन अनुभव करेंगी। और आप शीतला देवियाँ बन रहम, दया, कृपा की शीतल छीटों से विरोधी आत्माओं को भी शीतल बनायेंगी। अर्थात् सहारे के गले लगायेंगी। उस समय आपके भक्त बन “ओ माँ, ओ माँ” पुकारते हुए विरोधी से बदल भक्त बन जायेंगे। यह हैं आपके लास्ट भक्त। तो विरोधी आत्माओं को भी अन्त में भक्तपन की अंचली जरूर देंगे। वरदानी बन ‘भक्त भव’ का वरदान देंगे।

✚ दूसरी विधि - दीपमाला में कोने-कोने में सफाई करते हैं। चारों कोनों में सफाई करते हैं, दो वा तीन कोने में नहीं करते। क्योंकि स्वच्छता महानता है। देव-पद का आह्वान करने के लिए चार कोने की स्वच्छता क्या है? वो स्थूल चार कोनों की सफाई करते, आपकी स्वच्छता कौनसी है? - ‘पवित्रता’। चारों प्रकार की स्वच्छता (पवित्रता) हो। उस दिन सुनाया था ना। इसी विधि से दैवी-पद की प्राप्ति करते हो। अगर एक भी प्रकार की स्वच्छता नहीं है तो श्रेष्ठ दैवी-पद की प्राप्ति भी नहीं होती अर्थात् जो ऊँच ते ऊँच बनने की इच्छा रखते हो, वह पूर्ण नहीं हो सकती। तो चारों ही प्रकार की स्वच्छता - यह है दूसरी विधि। इस विधि को अपनाया है? सुनाया ना - मनाना अर्थात् बाप समान बनना। ब्रह्मा बाप को देखा, पुराना खाता खत्म किया ना, चारों प्रकार की स्वच्छता हर कर्म में देखी ना। ब्रह्मा ने सबूत बन करके दिखाया, इसलिए नम्बरवन

सपूत बने और नम्बरवन पद की प्राप्ति की। तो फॉलो फादर है ना। ब्रह्मा बाप ने सेकण्ड में संकल्प किया, पुराना खाता खत्म। उसके लिए दीपमाला पर यह विधि अपनाई जाती है। दीपमाला के दिवस पुराना खाता खत्म किया, समर्पित हुए, पुराना सब स्वाहा किया? दृढ़ संकल्प की तीली से आतिशबाजी कौन-सी जलाई? उड़ती कला की बाजी लगाई? इसलिए यह इस दिन का यादगार चला आ रहा है। इन विधियों को अपनाना अर्थात् दिवाली मनाना। तो दिवाली मनाई या मनाने वालों को देखकर खुश हुए? मनाना अर्थात् बनना। ब्रह्मा बाप समान बनना - यही दिवाली मनाना हुआ। देखो - एक तरफ बारूद जलाना, दूसरे तरफ दीपक जगाना, तीसरे तरफ मनाना, मिठाई खाना, नये वस्त्र पहनना और चौथे तरफ सफाई करना। तो जलाना भी है, मनाना भी है और सफाई भी करना है। चारों प्रकार करना है। करना अर्थात् कर्म में करना।



कल वतन में एडवांस पार्टी इमर्ज हुई थी। बापदादा से रूहरिहान कर रहे थे और बापदादा से पूछ रहे थे कि हमें जिस सेवा के अर्थ निमित्त बनाकर भेजा है, वह सेवा कब शुरू होगी? बापदादा ने क्या जवाब दिया होगा? वह बार-बार यही कह रहे थे कि हमें एडवांस पार्टी में जो जन्म दिलाया है, वह विशेष कार्य के लिए दिलाया है और मैजारिटी अच्छे ते अच्छे योगी तू आत्मायें, ज्ञानी तू आत्मायें, महावीर भी बहुत एडवांस पार्टी में गये हैं और जो दूसरे साथ में गये हैं, उन्हीं में भी मैजारिटी ऐसी आत्मायें गई हैं जो स्नेही और गुप्त योगी हैं। मिक्स तो सबमें होते हैं लेकिन आपके हिसाब से जिसको महारथी नहीं कहें, मैजारिटी साधारण कहते हो, वह भी स्नेह के कारण योग में अच्छे पावरफुल रहे हैं। और विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें, योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी। तो वह पूछ रहे थे कि कब हमारी सेवा शुरू होगी? इसमें भी कुछ आत्माओं का, जो गई हैं अलग पार्ट भी है। सभी का एक जैसा नहीं है लेकिन मैजारिटी का नई सृष्टि के स्थापना का पार्ट बना हुआ है। तो रूहरिहान चल रही थी। बापदादा ने तो मुस्कराते हुए उन्हीं को दूसरी-दूसरी बातों में बिज़ी कर दिया क्योंकि कब का रेस्पान्ड बापदादा को अकेला नहीं करना है, आप सभी को करना

है। जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हीं की सेवा आरम्भ होगी। इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एकजैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी को)। है तो सब ड्रामा अनुसार लेकिन कोई विशाल सेवा का एकजैम्पल भी बनता है।

✚ हर एक दीपक दीपराज की याद में चमक रहे हैं। बापदादा भी हर दीपक को बहुत बहुत बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं। हर दीप बहुत स्नेही और दिल में समाने वाले हैं। चारों ओर की रोशनी कितनी दिल को लुभाने वाली है। सबके दिल से क्या निकल रहा है? वाह!वाह! वाह! यह चैतन्य दीपक जिनका यादगार विश्व में मना रहे हैं। आप लोगों का ही यादगार विश्व में मना रहे हैं। और आप चैतन्य दीपक दीपराज से मिलन मना रहे हो। यह मिलन भी बहुत प्यारा और न्यारा है। कितने भक्त चारों ओर आप दीपकों को याद कर रहे हैं और चैतन्य दीप रूप में आप दीपराज से मिलन मना रहे हो। यह मिलन का दिन दीवाली के रूप में मना रहे हैं। आप सबको भी अपना यादगार देख खुशी होती है दिल में कि वाह दीपराज वाह!हर साल का यादगार बना दिया है। आप समझ सकते हैं कि यह दीप की ज्वाला क्या है! रोशनी क्या है! भक्त तो कोई न कोई रोशनी जगा देता है। लेकिन आप सच्चे दीपक जानते हो कि दीपराज और दीपकों का मिलन हो रहा है। विश्व में चैतन्य दीपकों को नहीं जानते हैं तो स्थूल दीपक जगाते हैं।वह तो सिर्फ दीपमाला जगाते हैं लेकिन बापदादा जगे हुए दीपकों की सभा देख रहे हैं, संगठन देख रहे हैं।एक-एक चैतन्य दीपक अपनी ज्योति को जान सकते हैं। बापदादा स्वरूप में देख रहे हैं और बच्चे बुद्धि द्वारा जान सकते हैं। वाह दीपक बच्चे वाह! आप लोग भी अभी-अभी जगे हुए रूप से अनेक अपने भक्तों को साक्षात्कार करा रहे हैं। द्वापर से लेके आपके भक्त भी कितने होंगे! चाहे आपके रूप को जानें न जानें लेकिन उन्हीं को ड्रामा दिखा रहा है, हमारे दीपक राजे आ गये हैं। आप यहाँ साधारण रूप में बैठे हो लेकिन आपके भक्त आपको दीप के रूप में देख रहा है और बापदादा वाह बच्चे वाह के स्वरूप में देख रहे हैं। दीपराज और दीपकों का मिलन कितना सुन्दर है।

✚ श्रेष्ठ संकल्प की भाषा होगी। भाषण करने वाले नहीं, आत्मिक आकर्षण करने वाले होंगे। बोलने से नहीं लेकिन स्थिति के द्वारा, श्रेष्ठ जीवन के दर्पण द्वारा सहज ही स्वरूप अनुभव करायेंगे। मुख के बजाए नयन ही स्वरूप अनुभव कराने के साधन बन जायेंगे। नयनों की भाषा संकल्प की भाषा है। संकल्प शक्ति आपके मुख के आवाज की गति से भी तेज गति से कार्य करेगी। इसलिए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति को ऐसे स्वच्छ बनाओ जो जरा भी व्यर्थ की अस्वच्छता भी न हो। जिसको कहा जाता है लाइन क्लीयर। इस संकल्प शक्ति द्वारा बहुत ही कार्य सफल होने की सिद्धि के अनुभव करेंगे। जिन आत्माओं को, जिन स्थूल कार्यों को वा सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के संस्कारों को, मुख द्वारा वा अन्य साधनों द्वारा परिवर्तन करते हुए भी सम्पूर्ण सफलता नहीं अनुभव करते, वे सब उम्मीदें संकल्प शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सफल ऐसे हो जायेंगी जैसे हुई पड़ी थीं। चारों ओर जैसे स्थूल आकाश में भिन्न-भिन्न सितारे देखते हो ऐसे विश्व के वायुमण्डल के आकाश में चारों ओर सफलता के सितारे चमकते हुए देखेंगे। वर्तमान समय उम्मीदों के तारे और सफलता के तारे दोनों दिखाई देते हैं लेकिन अन्तिम समय, अन्तिम स्थिति, बाप के अन्त में खोये हुए श्रेष्ठ स्थिति में सफलता के सितारे ही होंगे। यह रूहानी नयन, यह रूहानी मूर्त ऐसे दिव्य दर्पण बन जायेगी- जिस दर्पण में हर आत्मा बिना मेहनत के आत्मिक स्वरूप ही देखेगी। सेकेण्ड में इस दर्पण द्वारा आत्मिक स्वरूप का अनुभव करने के कारण बाप की तरफ आकर्षित हो, अहो प्रभू के गीत गाते, देहभान से सहज अर्पण हो जायेंगे। अहो आपका भाग्य! ओहो मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति के कारण देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग कर देंगे क्योंकि भाग्य के आगे त्याग करना अति सहज है।

✚ बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज - सभी में समानता का मेला लगेगा। जब आत्माएं बाप की समानता के मेले को मनावेंगी तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आवेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लावेगी। मेला लगने के बाद क्या होता है? अति शांति। तो आत्माएं भी मेला मनावेंगी,

फिर वानप्रस्थ में चली जावेंगी। वानप्रस्थ कहो अथवा कर्मातीत कहो, लेकिन पहले यह मेला होगा। सभी विधाता, विधान और विधि को अच्छी रीति से जान चुके हो? अगर विधाता को जाना तो विधान और विधि स्वतः ही बुद्धि में वा कर्म में आ जाती है। विधाता द्वारा आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं विधान बनाने वाली बनी हो, ऐसा अपने को समझ कर हर कर्म करते हो? क्योंकि इस समय तुम ब्राह्मणों का जो श्रेष्ठ कर्म है वही विश्व के लिये सारे कल्प के अंदर विधान बन जाता है। आप ब्राह्मणों के कर्म इतने महत्वपूर्ण हैं! ऐसे अपने हर कर्म को महत्वपूर्ण समझ कर करते हो? अपने को विधान के रचयिता समझ करके हर कर्म करना है। सभी रीति-रस्म कब से और किन्हीं द्वारा शुरू होते हैं, जो फिर सारे कल्प में चलते आते हैं? इस समय आप ब्राह्मणों की जो रीति-रस्म, रिवाज प्रैक्टिकल जीवन के रूप में चलता है वह सदा के लिये अनादि विधान बन जाता है, ऐसे समझ कर हर कर्म करने से कभी भी अलबेलापन नहीं आवेगा। इस विधिपूर्वक स्मृतिस्वरूप होकर चलना है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी समझ कर कर्म करना है-यह स्मृति रहती है? संगमयुग की यही विशेषता है जो हरेक श्रेष्ठ आत्मा को जिम्मेवारी मिली हुई है। ऐसे नहीं कि किन्हीं विशेष आत्माओं की जिम्मेवारी है, हम उन्हीं के बनाये हुये विधान पर चलने वाले हैं। नहीं, हरेक आत्मा विधान बनाने वाली है, इस निश्चय से हर कर्म की सम्पूर्ण सिद्धि को पा सकेंगे।

✚ महारथियों के हर कदम में सेवा है। चाहे बोलें, चाहे नहीं बोलें लेकिन हर कर्म, हर चलन में सेवा है। सेवा बिना एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। चाहे मन्सा सेवा में हों, चाहे वाचा सेवा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से - लेकिन निरन्तर योगी भी हैं तो निरन्तर सेवाधारी भी हैं। अच्छा है - जो मधुवन में खज़ाना जमा किया वह सभी को बांटके खिलाने लिए जा रही हो। महारथियों का स्थान पर रहना भी अनेक आत्माओं का स्थूल सहारा हो जाता है। जैसे बाप छत्रछाया है, ऐसे बाप समान बच्चे भी छत्रछाया बन जाते हैं। सभी देख करके कितने खुश होते हैं! तो यह वरदान है सभी महारथियों को। आंखों का वरदान, मस्तक का वरदान कितने वरदान हैं! हर कर्म करने वाली निमित्त कर्मेन्द्रियों को वरदान है। नयनों से देखते हो तो क्या समझते हैं? सभी

समझते हैं ना कि बाप की नजर का इन आत्माओं की नजर से अनुभव होता है। तो नयनों को वरदान हो गया ना। मुख को वरदान है, इस चेहरे को वरदान है, कदम-कदम को वरदान है। कितने वरदान हैं, क्या गिनती करेंगे! औरों को तो वरदान देते हैं लेकिन आपको पहले से ही वरदान मिले हुए हैं। जो भी कदम उठाओ, वरदानों से झोली भरी हुई है। जैसे लक्ष्मी को दिखाते हैं ना - उसके हाथ से धन सभी को मिलता ही रहता है। थोड़े समय के लिए नहीं, सदा सम्पत्ति की देवी बन सम्पत्ति देती ही रहती है। तो यह किसका चित्र है? तो कितने वरदान हैं! बाप तो कहते हैं - कोई वरदान रहा ही नहीं। तो फिर क्या दें? वरदानों से ही सजे हुए चल रहे हो। जैसे कहते हैं ना - हाथ घुमाया तो वरदान मिल गया। तो बाप ने तो 'समान भव' का वरदान दिया, इससे सब वरदान मिल गये। जब बाप अव्यक्त हुए तो सभी को 'समान भव' का वरदान दिया ना। सिर्फ सामने वालों को नहीं, सभी को दिया। सूक्ष्म रूप में सब महावीर बाप के सामने रहे और वरदान मिला।



यह चेक करना है कि एक भी कदम पद्म समान स्थिति में रहते हुए पद्मों की कमाई के बगैर न उठे। इस समय ऐसे पद्मापति अर्थात् अविनाशी सम्पत्तिवान बनते हो जो सारा कल्प सम्पत्तिवान गाये जाते हो। आधा कल्प स्वयं विश्व के राज्य के, अखण्ड राज्य के निर्विघ्न राज्य के, अधिकारी बनते हो और फिर आधा कल्प भक्त लोग आपके इस स्थिति के गुणगान करते रहते हैं। कोई भी भक्त को जीवन में किसी भी प्रकार की कमी का अनुभव होता है तो किसके पास आते हैं? आप लोगों के यादगार चित्रों के पास। चित्रों से भी अल्पकाल की प्राप्ति करते हुए अपनी कमी वा कमजोरियों को मिटाते रहते। तो सारा कल्प प्रैक्टिकल में वा यादगार रूप में सदा सम्पत्तिवान, शक्तिवान, गुणवान, वरदानी-मूर्त बन जाते हो। तो जब एक कदम भी उठाते हो वा एक संकल्प भी करते हो तो ऐसी स्मृति में रहते हुए, ऐसे अपने श्रेष्ठ स्वरूप में स्थित होते हुए चलते हो? जैसे कोई हद का राजा जब अपनी राजधानी के तरफ देखेंगे तो किस स्थिति और दृष्टि से देखेंगे? किस नशे से देखेंगे? यह सभी मेरी प्रजा है वा बच्चों के समान हैं! ऐसे ही आप लोग भी जब अभी सृष्टि के तरफ देखते हो वा किसी भी आत्मा के प्रति नजर

जाती है तो क्या समझ करके देखते हो? ऐसे समझकर देखते हो कि यह हमारी विश्व, जिसके हम मालिक थे, वह आज क्या बन गई है और अभी हम विश्व के मालिक के बालक फिर से विश्व को मालामाल बना रहे हैं, सम्पत्तिवान बना रहे हैं, सदा सुखदाई बना रहे हैं। इस नशे में स्थित होकर के उसी रूप से, उसी वृत्ति से, उसी दृष्टि से हर आत्मा को देखते हो? कोई भी आत्मा को किस स्थिति में रहकर देखते हो? उस समय की स्थिति वा स्टेज कौन-सी होती है? (हरेक ने सुनाया) जो भी सुनाया, है तो सभी यथार्थ क्योंकि अभी जबकि अयथार्थ को छोड़ चुके तो जो भी अब बोलेंगे वह यथार्थ ही बोलेंगे।

✚ बड़े दिन की छुट्टी क्यों मनाते हैं? जो भी बड़े दिन आते हैं उसमें छुट्टी मनाते हैं। और छुट्टी की खुशी होती है। हर मास के कैलेन्डर में पहले सब क्या देखते हैं? बड़े दिन कितने हैं, छुट्टियाँ कितनी हैं? तो बड़ा दिन अर्थात् छुट्टी का दिन। मेहनत से छुट्टी का दिन। मेहनत से छुट्टी का दिन और मुहब्बत के मजे में रहने का दिन। जब कमज़ोरियों को वा माया को छुट्टी दे देते हो तो मेहनत खत्म और मजे के दिन शुरू हो जाते हैं। बड़ा दिन अर्थात् छुट्टी का दिन। इसलिए यादगार रूप में भी छुट्टी मनाई जाती है। छुट्टी के दिन क्या करते हैं? मौज मनाते हैं ना। छुट्टी का दिन आराम का दिन होता है। आपका आराम क्या है? आप आराम करते हो? या आ-राम करते हो? आराम नहीं 'आ राम-आ राम' करते हो ना। इसी को ही वास्तविक 'आराम' कहते हैं। दीपमाला में और क्या करते हो? मुबारक, बधाईयाँ देते हो ना! कोई भी उत्सव आता है, जब एक दो से मिलते हैं तो बधाई देते हो ना! यह रिवाज भी क्यों चला है? जब भी कोई को मुबारक देते हो तो कैसे देते हो? गले मिलते, हाथ भी मिलते, मिठाई खिलाते, खुशी मनाते हैं। अपनी याद और प्यार देना और लेना इसमें भी मुबारक मानते हैं। तो संगम पर अर्थात् बड़े दिनों पर आप सभी सदाकाल के लिए माया के विदाई की बधाई मनाते हो। विजयी बनते हो। इसलिए विजयी बच्चों को बापदादा सदा मुबारक देते हैं। यादप्यार देते अर्थात् मुबारक देते। बापदादा रोज मुबारक देते हुए बापदादा हर रोज बच्चों को कौन-सा शब्द कहते हैं? 'मीठेमीठे' कह मुख मीठा कर देते हैं। बापदादा रोज मीठे-मीठे शब्द ही कहते हैं। मीठा का यादगार है। मुख मीठा

करते रहते हो। ऐसी दीपमाला मनाने वाले हो वा आपकी दीपमाला मनाई जा रही है। आपने बाप के साथ मनाई है, इसलिए विश्व आपकी यादगार मनाता, समझा दीपमाला का अर्थ क्या है - बनना ही मनाना है।



पाण्डवों के लिये जो कल्प पहले का गायन है, क्या वह सब विशेषतायें वर्तमान समय जीवन में अनुभव होती हैं? यह जो गायन है कि उन्होंने पहाड़ों पर स्वयं को गलाया-इसका रहस्य क्या है? किस बात में गलाया? सूक्ष्म बात का ही यादगार स्थूल रूप में होता है। जैसे चैतन्य का यादगार स्थूल में होता है, वैसे ही सूक्ष्म को स्पष्ट करने के लिये दृष्टान्त दिया जाता है। स्वयं को सफलता मूर्त बनाने के निमित्त पुरुषार्थियों के पुरुषार्थ में जो विघ्न सामने आते हैं, उन विघ्नों के कारण क्या स्वयं को सफलतामूर्त नहीं बना सकते हैं? या बार-बार उसी स्वभाव व संस्कार के कारण असफलता होती है जिसको निजी संस्कार व नेचर कहा जाता है। तो ऐसे निजी संस्कारों को गलाना अर्थात् स्वयं को गलाना कि देखने या सम्पर्क में आने वाले यह महसूस करें कि इस आत्मा ने स्वयं को गलाया है। इसमें सफलता है! ड्रामा प्रमाण जितना सहजयोगी, श्रेष्ठ योगी और सफलतामूर्त बनने की सेल्वेशन प्राप्त है, उतना ही रिटर्न दिया है? वातावरण की भी सेल्वेशन है तो इसका रिटर्न वातावरण को पॉवरफुल बनाकर रखने में, सहयोगी बनने में रिटर्न दो। साथ-साथ श्रेष्ठ संग है, यह भी सेल्वेशन है तो जो भी आत्मायें अपना भाग्य प्राप्त करने के लिए आती हैं उन्हीं को भी अपने संग की श्रेष्ठता का अनुभव हो। यह है रिटर्न। सब अनुभव करें कि यह सब आत्मायें संग के रंग में रंगी हुई हैं। श्रेष्ठ बनेंगे रूहानी संग से और अपने चरित्रों द्वारा। अपने कर्मयोगी की स्टेज द्वारा और अपने गुणमूर्त स्वरूप द्वारा आने वाली आत्माओं का इग्जॉम्पल बन, साधन बन उनकी सहज प्राप्ति का साधन बन जाओ। आपका प्रैक्टिकल साकार स्वरूप का सैम्पल देख उनमें विशेष उमंग उत्साह रहे। सदैव हर बात में यही संकल्प रखना चाहिए कि हर कार्य में, हर प्रैक्टिकल सबूत के पहले हम सैम्पल है।

✚ चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टिफीशियल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है। बाप से और अपने आप से छिप नहीं सकता। दूसरों से छिप सकता है। चाहे अलबेलेपन के कारण अपने आप को भी कभी-कभी महसूस होते हुए भी चला लेवे फिर भी सत्यता की शक्ति मन में उलझन के रूप में, उदासी के रूप में, व्यर्थ संकल्प के रूप में आती जरूर है। क्योंकि सत्यता के आगे असत्य टिक नहीं सकता। जैसे भक्ति मार्ग में चित्र दिखाया है - सागर के बीच साँप के ऊपर नाच रहे हैं। है साँप लेकिन सत्यता की शक्ति से साँप भी नाचने की स्टेज बन जाते हैं। कैसी भी भयानक परिस्थिति हो, माया के विकराल रूप हों, सम्बन्ध सम्पर्क वाले परेशान करने वाले हों, वायुमण्डल कितना भी जहरीला हो लेकिन सत्यता की शक्ति वाला इन सबको खुशी में नाचने की स्टेज बना देता है। तो यह चित्र किसका है? आप सभी का है ना! सभी कृष्ण बनने वाले हैं। इसी में हाथ उठाते हैं ना। राम के चरित्रों में ऐसी बातें नहीं हैं। उसका अभी-अभी वियोग अभी-अभी खुशी है। तो कृष्ण बनने वाली आत्मायें ऐसी स्थिति रूपी स्टेज पर सदा नाचती रहती हैं। कोई प्रकृति वा माया वा व्यक्ति, वैभव उसे हिला नहीं सकता। माया को ही अपनी स्टेज वा शैया बना देगा। यह भी चित्र देखा है ना। साँप को शैया बना दिया अर्थात् विजयी बन गये। तो सत्यता की शक्ति की निशानी सच तो नच यह चित्र है। सत्यता की शक्ति वाले कभी भी डूब नहीं सकते। सत्य की नईया डगमग खेल कर सकती है लेकिन डूब नहीं सकती। डगमगाना भी खेल अनुभव करेंगे। आजकल खेल भी जान बूझ कर उफर नीचे हिलने के बनाते हैं ना। है गिरना लेकिन खेल होने के कारण विजयी अनुभव करते। कितनी भी हलचल होगी लेकिन खेल करने वाला यह समझेगा कि मैंने जीत प्राप्त कर ली।

✚ सदा अपने को शिव-शक्ति वा अष्ट भुजाधारी अथवा अष्ट शक्तिधारी समझने से एक तो सदा साथीपन का अनुभव करेंगे और दूसरा सदा अपनी स्टेज साक्षीपन की अनुभव करेंगे। एक साथी और दूसरा साक्षी, यह दोनों अनुभव होंगे, जिसको दूसरे शब्दों में साक्षी अवस्था अर्थात् बिन्दु रूप की स्टेज कहा जाता है और साथीपन का अनुभव अर्थात् अव्यक्त स्थिति का अनुभव

कहा जाता है। अष्ट शक्ति की धारणा होने से इन दोनों स्थिति का अनुभव सदा सहज और स्वतः करेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई साकार में साथ होता है तो फिर कब भी अपने में अकेलापन वा कमजोरीपन अनुभव नहीं होती है। इस रीति से जब सर्वशक्तिवान शिव और शक्ति दोनों की स्मृति रहती है तो चलते-फिरते बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में साथ हैं और हाथ में हाथ है। गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रूपी हाथ अनुभव करेंगे। जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति-रूप हो कोई भी मुश्किल कार्य करने को तैयार हो जाता है। इसी रीति जब श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करेंगे, तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। इसके लिए चित्रों में भक्त और भगवान् का रूप क्या दिखाते हैं? शक्तियों का चित्र भी देखेंगे तो वरदान का हाथ भक्तों के ऊपर दिखाते हैं। मस्तक के ऊपर हाथ दिखाते हैं। इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात् बुद्धि में सदैव श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ होने कारण सदा विजयी हैं। ऐसा सदैव साथ और हाथ का अनुभव करते हो? कितनी भी कमजोर आत्मा हो लेकिन साथ अगर सर्वशक्तिवान है तो कमजोर आत्मा में भी स्वतः ही भले भर जाता है। कितना भी भयानक स्थान है लेकिन साथी शूरवीर है तो कैसा भी कमजोर शूरवीर हो जाएगा।



ऐसा रूहानी बगीचा बापदादा को भी कल्प में एक बार मिलता है। ऐसा रूहानी बगीचा रूहानी खुशबूदार फूलों की रौनक और किसी भी समय मिल नहीं सकती। चाहे कितना भी नामीग्रामी बगीचा हो लेकिन इस बगीचे के आगे वो बगीचे क्या अनुभव होंगे! यह हीरे तुल्य वो कौड़ी तुल्य। ऐसे चैतन्य ईश्वरीय बगीचे का रूहानी पुष्प हूँ - ऐसा नशा रहता है? जैसे बापदादा हरेक फुल के रंग, रूप और खुशबू तीनों को देखते हैं ऐसे अपने रंग, रूप और खुशबू को जानते हो? रंग का आधार है - ज्ञान की सबजेक्ट। जितना-जितना ज्ञान स्वरूप होंगे उतना रंग आकर्षण करने वाला होगा। जैसे स्थूल फूलों के रंग देखते हो, भिन्नभिन्न रंग देखते हुए कोई-कोई रंग विशेष दूर से ही आकर्षित करता है। देखते ही मुख से यह महिमा जरूर निकलेगी कि कितना सुन्दर फूल है! और सदा दिल होगी कि देखते रहें। ऐसे ही ज्ञान के रंग में रंगे हुए फूल कितने

सुन्दर लगेंगे। ऐसे ही रूप और खुशबू का आधार है - याद और दिव्य गुण मूर्त। सिर्फ रंग हो और रूप न हो तो भी आकर्षण नहीं होगी। और रंग रूप हो लेकिन खुशबू न हो तो भी आकर्षित नहीं करेंगे। कहा जाता है - यह नकली है, यह असली है। सिर्फ रंग रूप वाले पुष्प डैकोरेशन के लिए ज्यादा काम आते हैं लेकिन खुशबूदार पुष्प मानव अपने समीप रखेंगे। खुशबूदार पुष्प सदा ही स्वतः ही सेवा का स्वरूप है। तो अपने से पूछो - कि मैं कौन-सा पुष्प हूँ? कहाँ भी हैं लेकिन स्वतः सेवा होती रहती है अर्थात् रूहानी वायुमण्डल बनाने के निमित्त बने हुए हैं। नजदीक आने से अर्थात् सम्पर्क में आने से खुशबू पहुँचती है वा दूर से ही खुशबू फैलाते हैं! अगर सिर्फ ज्ञान सुन लिया, योग लगाने के अभ्यासी बन गये लेकिन ज्ञान स्वरूप वा योगी जीवन वाले वा प्रैक्टिकल दिव्यगुण मूर्त न बने तो सिर्फ डैकोरेशन अर्थात् प्रजा बन जायेंगे। राजा की प्रजा डैकोरेशन ही है।



प्रभाव डालने के लिए पहले अपने को परिवर्तन में लाओ। अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति को, सम्पत्ति को, समय को परिवर्तन में लाओ तब दुनिया को प्रिय लगेंगे। क्योंकि जब सम्पूर्ण हो गये तो उसके बाद फिर क्या करना है? बोलना-चलना कैसे हो वह बता रहे हैं। जैसे अपकी यादगार शास्त्रों में बताते हैं - सम्पूर्ण समर्पण किसने और किसको कराया और कितने में कराया? यादगार की याद आती है? (राजा जनक का मिसाल) उनको तो बच्चों ने कराया। लेकिन बाप ने कराया ऐसा भी यादगार है। बतलाते हैं ना कि वामन अर्थात् छोटा। सभी से छोटा रूप किसका है? आत्मा और परमात्मा का, तो बाप ने आकर माया बली, जो बलवान है उससे तीन पैर में सभी कुछ लिया अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण बनाया। आप लोगों को भी सम्पूर्ण समर्पण करना है अर्थात् जो भी माया का बल है वह सभी कुछ त्यागना है। माया का बली नहीं बनना है लेकिन ईथरीय शक्ति में बलवान बनना है। तो जैसे वह तीन पैर दिखाते हैं। यह कौन सी तीन बातें सुनाई जाती हैं जिससे सम्पूर्ण समर्पण आ जाता है। मन्सा, वाचा और कर्मणा के लिए शिक्षा कौनसी है? अगर वह तीन बातें याद रखेंगे तो सम्पूर्ण समर्पण हो ही जायेंगे। वह तीन बातें कौनसी? एक तो देह सहित सभी सम्बन्धों का त्याग। मामेकमू याद करो। यह तो हो गया मन्सा। वाचा के लिए क्या शिक्षा मिलती है? हर समय जैसे मोती चुगते हैं, इस रीति मुख

से रत्न ही निकले। एक दो को पत्थर नहीं लेकिन ज्ञान रत्नों का दान देना है। और कर्मणा के लिए यही याद रखो कि जो कर्म मैं करूँगा मुझे देख सभी करेंगे। दूसरी बात कि जो करेंगे सो पायेंगे। यह दोनों बातें याद रहने से कर्मणा में बल मिलता है अर्थात् जो सभी के सम्पर्क में आते हैं उसमें बल मिलता है। समझा? मन्सा, वाचा, कर्मणा के लिए इन मुख्य बातों को याद रखे तो फिर सम्पूर्ण समर्पण जो हुए हो उसको अविनाशी बना सकेंगे।



बाप बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं वाह मेरे श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चे वाह! जो बाप के साथ-साथ अवतरित हुए विश्व के अन्धकार को मिटाने के लिए। सारे कल्प में ऐसा बर्थ डे किसी का भी नहीं हो सकता, जो आप बच्चे परमात्म बाप के साथ मना रहे हो। इस अलौकिक अति न्यारे, अति प्यारे जन्म दिन को भक्त आत्मायें भी मनाती हैं लेकिन आप बच्चे मिलन मनाते हो और भक्त आत्मायें सिर्फ महिमा गाते रहते हैं। महिमा भी गाते, पुकारते भी, बापदादा भक्तों की महिमा और पुकार सुनकर उन्हें भी नम्बरवार भावना का फल देते ही हैं। लेकिन भक्त और बच्चे दोनों में महान अन्तर है। आपका किया हुआ श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ भाग्य का यादगार बहुत अच्छा मनाते हैं इसीलिए बापदादा भक्तों के भक्ति की लीला देख उन्हें भी मुबारक देते हैं क्योंकि यादगार सब अच्छी तरह से कॉपी की है। वह भी इसी दिन व्रत रखते हैं, वह व्रत रखते हैं थोड़े समय के लिए, अल्पकाल के खान-पान और शुद्धि के लिए। आप व्रत लेते हो सम्पूर्ण पवित्रता, जिसमें आहार-व्यवहार, वचन, कर्म, पूरे जन्म के लिए व्रत लेते हो। जब तक संगम की जीवन में जीना है तब तक मन-वचन-कर्म में पवित्र बनना ही है। न सिर्फ बनना है लेकिन बनाना भी है। तो देखो भक्तों की बुद्धि भी कम नहीं है, यादगार की कॉपी बहुत अच्छी की है। आप सभी सब व्यर्थ समर्पण कर समर्थ बने हो अर्थात् अपने अपवित्र जीवन को समर्पण किया, आपकी समर्पणता का यादगार वह बलि चढ़ाते हैं लेकिन स्वयं को बलि नहीं चढ़ाते, बकरे को बलि चढ़ा देते हैं। देखो कितनी अच्छी कॉपी की है, बकरे को क्यों बलि चढ़ाते हैं? इसकी भी कॉपी बहुत सुन्दर की है, बकरा क्या करता है? में-में-में करता है ना! और आपने

क्या समर्पण किया? मैं, मैं, मैं। देह-भान का मैं-पन, क्योंकि इस मैं-पन में ही देह-अभिमान आता है। जो देह-अभिमान सभी विकारों का बीज है।

✚ तस्वीर भी आप हो, भविष्य की तकदीर के आधारमूर्त भी आप हो। आप श्रेष्ठ बनते, तब ही दुनिया भी श्रेष्ठ बनती है। आपकी उड़ती कला की स्थिति तो विश्व की भी उड़ती कला है। आप ब्राह्मण आत्मायें समय प्रति समय जैसी स्टेज से पास करते तो विश्व की स्टेजेस भी परिवर्तन होती रहती है। आपकी सतोप्रधान स्थिति है तो विश्व भी सतोप्रधान है, गोल्डन एजेड है। आप बदलते तो दुनिया भी बदल जाती है। इतने आधारमूर्त हो! वर्तमान समय बाप के साथ कितना श्रेष्ठ पार्ट बजा रहे हो! सारे कल्प के अन्दर सबसे बड़े - ते - बड़ा विशेष पार्ट इस समय बजा रहे हो! बाप के साथ - साथ सहयोगी बन विश्व की हर आत्मा की अनेक जन्मों की आशायें पूर्ण कर रहे हो। बाप द्वारा हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अधिकार प्राप्त कराने के निमित्त बने हुए हो। सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले बाप समान - 'कामधेनु' हो, कामनायें पूर्ण करने वाले हो। ऐसे हर आत्मा को इच्छा - मात्रम् - अविद्या की स्थिति का अनुभव कराते हो जो आधाकल्प अनेक जन्म, न भक्ति वाली आत्माओं को, जीवनमुक्त अवस्था वाली आत्माओं को कोई भी इच्छा रहती है। एक जन्म की इच्छायें पूर्ण कराने वाले नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए इच्छा - मात्रम् - अविद्या की अनुभूति कराने वाले हो। जैसे बाप के सर्व भण्डारे, सर्व खज़ाने सदा भरपूर हैं, अप्राप्ति का नाम निशान नहीं है; ऐसे बाप समान, सदा और सर्व खज़ानों से भरपूर हो। ब्राह्मण आत्मा अर्थात् प्राप्ति स्वरूप आत्मा, सम्पन्न आत्मा। जैसे बाप सदा लाइट - हाउस, माइट हाउस है; ऐसे ब्राह्मण आत्मायें भी बाप समान हो, लाइटहाउस हो। इसलिए हर आत्मा को अपनी मंजल पर पहुँचाने के निमित्त हो। जैसे बाप हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म से हर समय दाता हैं, वरदाता हैं; ऐसे आप ब्राह्मण आत्मायें भी दाता हो, मास्टर वरदाता हो। ऐसे ब्राह्मण जीवन की तस्वीर हो?

✚ आज होली सब मनाते हैं लेकिन आप इस समय जो डबल होली बनते हो उसका यादगार उत्सव के रूप में होली मनाते हैं। आपके ही हर कदम-कदम का जीवन का महत्व उत्सव के रूप में मनाते हैं। आप इस संगम पर हर दिन, हर कदम उमंग और उत्साह में रहते हो तो आपके उमंग-उत्साह का यादगार यह उत्सव के रूप में मनाते हैं। क्यों उमंग उत्साह रहता? क्योंकि आप परमात्मा के संग के रंग की होली मनाते हो। तो आपका हर कदम उत्सव के रूप में मनाते हैं। अभी होली में पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं। आप भी संगम पर अभी अपने पुराने संस्कार स्वभाव को योग अग्नि में जलाते हो क्योंकि अपने पुराने संस्कार को जलाने के बिना परमात्म संग का रंग लग नहीं सकता, परमात्म मिलन हो नहीं सकता। तो आपने योग अग्नि में संस्कारों को जलाया फिर परमात्म संग के रंग में रंगे। तो आजकल जलाते भी हैं और रंग भी लगाते हैं लेकिन आपके अध्यात्मिक रूप को स्थूल रूप दे दिया है। वह स्थूल आग जलाते, स्थूल रंग लगाते क्योंकि अभी बॉडीकान्सेस वृत्ति है। आप होली बनते हो वह होली मनाते हैं। सारे कल्प में कोई भी अध्यात्मिक होली मनाके डबल होली नहीं बनें। तो आप सभी जो भी जहाँ से आये हो तो परमात्म संग के होली में आये हो। परमात्म संग की होली मनाने आये हैं। आप होली के लिए कहते हो कि होली अर्थात् जो बात हो चुकी वह हो ली। तो ड्रामा अनुसार जो बीत चुका उसको कहते हैं हो ली, बीती सो बीती। कोई भी व्यर्थ बात चित पर नहीं लाते हैं, हो चुकी, ऐसी होली मनाते रहते हो ना। आप सभी ने होली अर्थात् पवित्र बनने का पूर्ण पुरुषार्थ कर पवित्रता को धारण किया है तभी भविष्य में आपको डबल पवित्रता की निशानी डबल ताज दिखाते हैं। तो आज के दिन आप हर एक बच्चा क्या जलाके जायेंगे? बापदादा ने देखा कि जन्मदिन पर जो बाप ने होम वर्क दिया था - क्रोध को जन्मदिन पर जन्मदिन की गिफ्ट दे दो।

✚ जैसे साइंस वाले इस साकार सृष्टि से, पृथ्वी से ऊपर अन्तरिक्ष यान द्वारा अपना कार्य शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्थूल से सूक्ष्म में जा रहे हैं। क्यों? सूक्ष्म शक्तिशाली होता है। मंसा शक्ति भी 'अन्तर्मुखी यान' है। जिस द्वारा जहाँ भी चाहो, जितना जल्दी चाहो पहुँच सकते हो। जैसे साइंस द्वारा पृथ्वी की आकर्षण से परे जाने वाले स्वतः ही लाइट (हल्के) बन जाते हैं। ऐसे मंसा शक्तिशाली आत्मा स्वतः ही डबल लाइट स्वरूप सदा अनुभव करती है।

जैसे अन्तरिक्ष यान वाले ऊँचे होने के कारण सारे पृथ्वी के जहाँ के भी चित्र खींचने चाहें खींच सकते हैं ऐसे साइलेन्स की शक्ति से अन्तर्मुखी यान द्वारा मंसा शक्ति द्वारा किसी भी आत्मा को चरित्रवान बनने की, श्रेष्ठ आत्मा बनने की प्रेरणा दे सकते हो! साइंस वाले तो हर चीज़ पर समय और सम्पत्ति खूब लगाते हैं, लेकिन आप बिना खर्चें थोड़े समय में बहुत सेवा कर सकते हो। जैसे आजकल कहाँ-कहाँ फ्लाइंग सासर (उड़न तश्तरी) देखते हैं। सुनते हो ना - समाचार। वह भी सिर्फ लाइट ही देखने में आती है। ऐसे आप मंसा सेवाधारी आत्माओं का आगे चल अनुभव करेंगे कि कोई लाइट की बिन्दी आई, विचित्र अनुभव कराके गई। यह कौन थे? कहाँ से आये? क्या देकर गये! यह चर्चा बढ़ती जायेगी। जैसे आकाश के सितारों की तरफ सबकी नजर जाती है, ऐसे धरती के सितारे दिव्य ज्योति चारो ओर अनुभव करेंगे। ऐसी शक्ति मंसा सेवाधारियों की है। समझा? महानता तो और भी बहुत है लेकिन आज इतना ही सुनाते हैं। मंसा सेवा को अब तीव्र करो तब 9 लाख तैयार होंगे। अभी गोल्डन जुबली तक कितनी संख्या बनी है? सतयुग की डायमण्ड जुबली तक 9 लाख तो चाहिए ना। नहीं तो विश्व राजन किस पर राज्य करेगा, 9 लाख तारे गाये हुए हैं ना। सितारा रूपी आत्मा का अनुभव करेंगे तब 9 लाख सितारे गाये जायेंगे। इसलिए अब सितारों का अनुभव कराओ।

✚ कम्बाइन्ड रूप की स्थिति से जैसे स्थूल में दो को देखते हुए वार करने के लिए संकोच होता है - वैसे ही कम्बाइन्ड स्थिति का प्रभाव उस समय के प्रकृति और व्यक्ति के ऊपर पड़ेगा अर्थात् किसी भी प्रकार के वार करने में संकोच होगा। न सिर्फ व्यक्ति लेकिन प्रकृति का तत्व भी संकोच करेगा अर्थात् वह भी वार नहीं कर सकेगा। एक कदम की दूरी पर भी सेफ (सुरक्षित) हो जायेंगे। शस्त्र होते हुए भी, शस्त्र शक्तिवान् होते हुए भी निर्बल हो जायेंगे। लेकिन उस सेकेण्ड परिवर्तन करने की शक्ति यूज़ (प्रयोग) करो कि मैं अकेली नहीं, मैं फीमेल नहीं, शिव-शक्ति हूँ और कम्बाइन्ड हूँ। इसमें भी परिवर्तन शक्ति चाहिए ना? जो स्वयं की पॉवरफुल स्मृति और वृत्ति से व्यक्ति को व प्रकृति को परिवर्तन कर लें। अब तो यह दूसरी-तीसरी चौपड़ी या दूसरी-तीसरी क्लास के पेपर्स है। फाइनल (अन्तिम) पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुना भयानक

रूप की होगी। फिर क्या करेंगे। कड़ियों का संकल्प चलता है - कौन-सा ? कई स्नेह और हुज्जत में कहते हैं कि इस दृश्य के पहले ही हमको बुलाना, हम भी वतन से देखेंगे। लेकिन शक्ति स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान् बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है। इसलिये ऐसे नजायें को, अकाले मृत्यु के नगाड़ों को देखने और सुनने के लिये परिवर्तन की शक्ति को बढ़ाओ। एक सेकेण्ड में परिवर्तन करो, क्योंकि खेल ही एक सेकेण्ड के आधार पर है। ऐसे समय पर एक तरफ नाथिंग न्यू का पाठ भी याद रहना चाहिए - जिससे मिरूआं मौत मलूकाँ शिकार की स्थिति होगी तो साक्षीपन की स्थिति अर्थात् देखने में मजा भी आयेगा और साथ-साथ विश्व-कल्याणकारी की स्थिति जिसमें तरस भी होगा। दोनों का बैलेन्स (सन्तुलन) चाहिए। साक्षीपन की स्टेज भी और विश्व-कल्याणकारी स्टेज भी।

✚ होली अर्थात् महान पवित्र आत्मायें। दुनिया वाले तो शरीर को स्थूल रंग से रंगते हैं लेकिन आप आत्माओं ने आत्मा को कौन से रंग में रंगा है? सबसे अच्छे ते अच्छा रंग कौनसा है? अविनाशी रंग कौनसा है? आप जानते हो, आप सबने परमात्म संग का रंग आत्मा को लगाया जिससे आत्मा पवित्रता के रंग में रंग गई। यह परमात्म संग का रंग कितना महान और सहज है इसलिए परमात्म संग का महत्व अभी अन्त में भी सतसंग का महत्व होता है। सतसंग का अर्थ ही है परमात्म संग, जो सबसे सहज है। संग में रहना और ऊंचे ते ऊंचे संग में रहना क्या मुश्किल है क्या? और इस संग के रंग में रहने से जैसे परमात्मा ऊंचे ते ऊंचा है वैसे आप बच्चे भी ऊंचे ते ऊंचे पवित्र महान आत्मायें पूज्य आत्मायें बन गईं। यह अविनाशी संग का रंग प्यारा लगता है ना! दुनिया वाले कितना प्रयत्न करते हैं परम आत्मा का संग तो छोड़ो सिर्फ याद करने में भी कितनी मेहनत करते हैं। लेकिन आप आत्माओं ने बाप को जाना, दिल से कहा मेरा बाबा। बाप ने कहा “मेरे बच्चे” और रंग लग गया। बाप ने कौन सा रंग लगाया? ज्ञान का गुलाल लगाया, गुणों का रंग लगाया, शक्तियों का रंग लगाया, जिस रंग से आप तो देवता बन गये लेकिन अब कलियुग अन्त तक भी आपके पवित्र चित्र देव आत्माओं के रूप में पूजे जाते हैं।

पवित्र आत्मायें बहुत बनते हैं, महान आत्मायें बहुत बनते हैं, धर्म आत्मायें बहुत बनते हैं लेकिन आपकी पवित्रता देव आत्माओं के रूप में आत्मा भी पवित्र बनती और आत्मा के साथ शरीर भी पवित्र बनता है। इतनी श्रेष्ठ पवित्रता बनी कैसे? सिर्फ संग के रंग से। आप सभी फलक से कहते हो, अगर कोई आप बच्चों से पूछे, परमात्मा कहाँ रहता है? परमधाम में तो है ही लेकिन अभी संगम में परमात्मा आपके साथ कहाँ रहता है? आप क्या जवाब देंगे? परमात्मा को अभी हम पवित्र आत्माओं का दिलतख्त ही अच्छा लगता है।

✚ स्वप्न, संकल्प और कर्म सबमें सदा विजयी - इसको कहते हैं 'समर्थ'। ऐसे समर्थ हो? क्योंकि जो अब के विजयी हैं, बहुतकाल से वही विजय माला में गायन-पूजन योग्य बनते हैं। अगर बहुतकाल के विजयी नहीं, समर्थ नहीं तो बहुतकाल के गायन-पूजन योग्य नहीं बनते हैं। जो सदा और बहुत काल विजयी हैं, वही बहुत समय विजय माला में गायन-पूजन में आते हैं और जो कभी-कभी के विजयी हैं, वह कभी-कभी की अर्थात् 16 हजार की माला में आयेंगे। तो बहुतकाल का हिसाब है और सदा का हिसाब है। 16 हजार की माला सभी मन्दिरों में नहीं होती, कहाँ-कहाँ होती है।


✚ सभी अपने को इस विशाल ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी आत्मायें अनुभव करते हो? आप सबका हीरो पार्ट है। हीरो पार्टधारी क्यों बने? क्योंकि जो ऊंचे ते ऊंचा बाप जीरो है - उसके साथ पार्ट बजाने वाले हो। आप भी जीरो अर्थात् बिन्दी हो। लेकिन आप शरीरधारी बनते हो और बाप सदा जीरो है। तो जीरो के साथ पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर हैं - यह स्मृति रहे तो सदा ही यथार्थ पार्ट बजायेंगे, स्वतः ही अटेन्शन जायेगा। जैसे हृद के ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी को कितना अटेन्शन रहता है! सबसे बड़े ते बड़ा हीरो पार्ट आप सबका है। सदा इस नशे और खुशी में रहो - वाह, मेरा हीरो पार्ट जो सारे विश्व की आत्मायें बार-बार हेयर-हेयर करती हैं! यह द्वापर से जो कीर्तन करते हैं यह आपके इस समय के हीरो पार्ट का ही यादगार है।


कितना अच्छा यादगार बना हुआ है! आप स्वयं हीरो बने हो तब आपके पीछे अब तक भी आपका गायन चलता रहता है। अन्तिम जन्म में भी अपना गायन सुन रहे हैं। गोपीवल्लभ का भी गायन है तो ग्वाल बाप का भी गायन है, गोपिकाओं का भी गायन है। बाप का शिव के रूप में गायन है तो बच्चों का शक्तियों के रूप में गायन है। तो सदा हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं - इसी स्मृति में खुशी में आगे बढ़ते चलो।

✚ होली शब्द का अर्थ भी याद रहे तो जला भी लिया फिर भी सदा काल नहीं रहेगा। होली शब्द में जलाना भी है, मनाना भी है। दोनों ही अर्थ हैं। होली शब्द तो पक्का है ना? तो होली अर्थात् हो-ली, बीती सो बीती। जो बात गुज़र गई उसको कहते हैं हो-ली। जो होना था वह हो-ली। तो बीती को बीती करना माना होली जलाना। और जब बाप के सामने आते हो तो कहते हो मैं बाप की हो ली, हो गई। तो मनाया भी ओर हो ली, बीती सो बीती। बीती को भूल जाना यह है जलाना। तो एक ही होली शब्द में जलाना और मनाना है। गीत गाते हो ना मैं तो बाप की हो ली। पक्के हो ना? क्योंकि बापदादा ने सबका तपस्या का पोतामेल देखा। तपस्या अगर कभी भी कम हुई तो उसका कारण क्या बना है? बीती को बीती करने में बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क लगा दिया। और छोटी सी गलती करते हो, छोटी लेकिन नुकसान बहुत बड़ा होता है। वह क्या गलती करते हो? जिसको भूलाना है उसको याद करते हो और जिसको याद करना है उसको भूला देते हो। तो भूलाना आता है ना? बाप को भूलने नहीं चाहते हो तो भी भूल जाते हो और जिस समय भूलना चाहिए उस समय क्या कहते हो - भूलना चाहते हैं लेकिन भूलते नहीं, बार बार याद आ जाता है। तो याद करना और भूलना दोनों ही बाते आती हैं। लेकिन क्या याद करना है और क्या भूलना है? जिस समय भूलना है उस समय याद करते हो और जिस समय याद करना है उस समय भूल जाते हो। छोटी सी गलती है ना? तो इसको हो ली कर दो, जला दो। अंश से खत्म कर दो। ज्ञानी तू आत्मा हो ना? ज्ञानी का अर्थ ही है समझदार। और आप तो तीनों कालों के समझदार हो। इसलिए होली मनाना अर्थात् इस गलती को जलाना। जो भूलना है वह सेकेण्ड में भूल जाये और जो याद करना है वह सेकेण्ड में याद

आए। कारण सिर्फ बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क है। क्यों सोचा और क्यू शुरू हो जाती है। ऐसा वैसा क्यों क्या बड़ी क्यू शुरू हो जाती है। सिर्फ क्वेश्चन मार्क लगाने से।

✚ सम्पूर्ण अधिकार वा सर्व प्राप्तिओं से सम्पन्न आत्मा जो सदा अमृतवेले से रात तक प्राप्तिओं के नशे वा अनुभव में रहती है, उनकी निशानी क्या होगी? प्राप्तिओं की निशानी है सन्तुष्टता। वो सदा सन्तुष्टमणि बन दूसरों को भी सन्तुष्टता की झलक का वायब्रेशन फैलाते रहते हैं। उनका चेहरा सदा प्रसन्नचित्त दिखाई देगा। प्रसन्नचित्त अर्थात् सर्व प्रश्नचित्त से न्यारा। कोई प्रश्न नहीं होगा, प्रसन्न होगा। क्यों, क्या, कैसे-यह सब समाप्त। तो ऐसे प्रसन्नचित्त बने हो? कि अभी भी कभी-कभी कोई प्रश्न उठता है कि ये क्या है, ये क्यों है, ये कैसे होगा, कब होगा? ये प्रश्न चाहे मन में, चाहे दूसरों से उठता है? प्रश्नचित्त हो या प्रसन्नचित्त हो? या कभी प्रश्नचित्त, कभी प्रसन्नचित्त? क्या है? वैसे गायन है-अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में। ये किसका, किन ब्राह्मणों का गायन है? आपका है या दूसरे आने वाले हैं? आप ही हो! तो जब कोई अप्राप्ति होती है ना, अप्राप्ति असन्तुष्टता का कारण है। अपना अनुभव देखो-कभी भी मन असन्तुष्ट होता है तो कारण क्या होता है? कोई न कोई अप्राप्ति का अनुभव करते हो तब असन्तुष्टता होती है। गायन तो है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। ये अब का गायन है या विनाश के समय का? विनाश के समय सम्पन्न हो जायेंगे कि अभी होना है? जो समझते हैं कि हम सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं, कभी भी किसी भी बात में, चाहे अपने सम्बन्ध में, चाहे दूसरों के सम्बन्ध में भी प्रश्न नहीं उठता, सदा सन्तुष्ट रहते हैं-ऐसी सन्तुष्ट आत्मायें कितनी होंगी? बहुत हैं! अच्छा, जो समझते हैं सदा प्रसन्न रहते हैं, चाहे माया कितना भी हिलाये, लेकिन हम नहीं हिलते, माया को हिला देते हैं, माया नमस्कार करती है, हम नहीं हिलते हैं, हम अंगद हैं, माया हार जाती लेकिन हम विजयी हैं, जो ऐसे हैं वो हाथ उठाओ, सदा शब्द याद रखना, कभी-कभी वाले नहीं।

 जैसे देवियों का दिखाते हैं ना कि सामने असुर विकराल रूप से सामना करने आते हैं, लेकिन उन्हों के आगे जैसे बिल्कुल पशु अर्थात् बेसमझ बन जाते हैं। कितना भी बड़ा समझदार हो लेकिन आपके अनुभवीमूर्त और आत्मिक दृष्टि के सामने बिल्कुल ही अपने को बेसमझ समझेंगे। भले आपके सामने कितना भी रूप धारण करने की कोशिश करें। शक्तियों के पाँव के नीचे सदैव भैंस दिखाते हैं, क्यों? कितना भी कोई अपने को सेन्सिबुल, नॉलेजफुल समझें लेकिन भैंस बिल्कुल बेसमझ होती है। बनकर एक रूप आयें और बन जायेंगे दूसरा रूप। शक्तियों का यादगार दिखाते हैं ना। असुर सामना करने विकराल रूप धारण कर आते हैं लेकिन जब शक्तियों का तीर लगता है तो फिर दूसरा रूप हो जाता है। इसलिए सदैव यह याद रखना कि हम आलमाइटी अथॉरिटी के द्वारा निमित्त बने हुए हैं। आलमाइटी गवर्नमेन्ट के मैसेन्जर हो। कोई से भी डिस्कस में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना है। नहीं तो वे लोग साइन्स की शक्ति से संकल्पों को भी रीड़ करते हैं। इसलिए कभी भी कोई बात का आवाज़ भी आये तो अपने को डिस्टर्ब नहीं करना। अपने चेहरे पर वा मन की स्थिति में अन्तर न लाना। मन्त्र याद रखना। जैसे कोई वाणी से वा और तरीके से वश नहीं होते हैं तो मन्त्र-जन्तर् करते हैं। तो जब देखो ऐसी कोई बात सामने आये तो अपने आत्मिक दृष्टि का नेत्र और मन्मनाभव का मन्त्र प्रयोग करना, तो शेर से भैंस बन जायेंगे। जादू-मन्त्र तो आता है ना। यहाँ से ही सभी सिस्टम निकली है। मन्त्र चलाना, रिद्धि-सिद्धि भी यहीं से ही निकली है। अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को भी सिद्ध कर सकते हो। वह है रिद्धि-सिद्धि और यहाँ विधि से सिद्धि। शब्दों का अन्तर है। रिद्धि-सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। वह रिद्धि-सिद्धि यूज करते हैं और आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करते हो।

 अभी बापदादा आपके स्नेह के दिव्य कर्तव्य को देख आपके भक्त वह भी कम बुद्धि वाले नहीं हैं। उन्होंने भी आपके यादगार की कॉपी बहुत अच्छी बनाई है। द्वापर में आये पहला पहला जन्म वैसे भी सतोप्रधान होता है क्योंकि परमधाम से आत्मा आती है। तो भक्तों के तरफ भी आज दृष्टि गई। तो कॉपी बड़ी युक्तियुक्त की है क्योंकि आपके शुरू-शुरू वाले विशेष भक्त जैसा आपका प्रैक्टिकल कर्म है वैसे ही उन्होंने भी यादगार की कॉपी अच्छी बनाई है। लेकिन

आपका प्रैक्टिकल है उन्हीं का यादगार है। जैसे आपने व्रत लिया कौन सा व्रत लिया? पवित्रता का। तो वह भी व्रत लेते हैं व्रत की कॉपी की है लेकिन आपका व्रत एक जन्म में लेने से अनेक जन्म वह व्रत चलता है। वह एक दिन के लिए पवित्र भी रहते और खान-पान भी शुद्ध रखते हैं। आपका 21 जन्मों का व्रत उन्हीं का अल्पकाल के लिए है। ऐसे ही जागरण आप रोशनी में आये तो सारे विश्व के अन्दर अंधकार मिटाया। आधाकल्प अंधकार आ नहीं सकता। मन का अंधकार मिटाया और बाहर प्रकृति का दुःख अंधकार मिटाया। वह भी कॉपी की है जागरण करते हैं। और बात आप बाप के ऊपर बलिहार गये बलि चढ़ गये। पूर्ण सरेन्डर हो गये तो उन्होंने भी कॉपी की है लेकिन अपने को नहीं करते अपने को बलि नहीं चढ़ाते हैं किसको चढ़ाते हैं? जानते हो ना! बकरे को चढ़ाते हैं। बकरे को क्यों ढूँढा और किसको नहीं ढूँढा। सब हंस रहे हैं जानते हो। जो बाप आप बच्चों को बार-बार इशारा देता है मैं पन छोड़ निमित्त भाव धारण करो तो उन्होंने भी बकरे को ढूँढा है क्योंकि वह भी मैं में करता है। तो भक्तों की बुद्धि कमाल की तो है ना! आपके भक्त हैं ना। बाप के आपके भक्त हैं। इसीलिए बाप आपके भक्तों को भी जो सच्ची दिल से करते हैं उनको कुछ न कुछ फल दे देते। भक्ति का फल वह भी सदा सच्चे और सात्विक रहते हैं खुश रहते हैं। दुःख में दुःखी नहीं होते हैं क्योंकि भक्ति सच्ची दिल से करते हैं।



सारे कल्प में ऐसा न्यारा और प्यारा, वन्दरफुल बर्थ डे(शिव जयन्ती), जो एक ही समय पर बाप का भी हो और बच्चों का भी हो - ऐसा कभी होता है क्या? अगर तारीख एक भी होगी तो वर्ष का या मास का या डेट का अन्तर होगा। लेकिन ये अवतरण दिवस कितना वन्दरफुल है जो बाप और बच्चों का साथ-साथ है। इस यादगार दिवस पर विशेष भक्त लोग भी दो विशेषताओं से ये दिवस मनाते हैं। दो विशेषतायें कौन-सी हैं? एक-विशेष व्रत धारण करते हैं और दूसरा-स्वयं को समर्पित न करते हुए और किसी को बलि चढ़ाते हैं। तो बलि चढ़ाना और व्रत धारण करना ये दोनों विशेषताएं इस दिवस की हैं। अनेक प्रकार के व्रत धारण करते हैं। चाहे कोई भोजन का करते हैं, कोई जागरण का करते हैं, कोई दूर-दूर से पैदल करते हुए चलने का करते, कितना भी थक जायें लेकिन व्रत अपना पूरा करते हैं। चाहे कितने दिन भी लग जायें, कितना समय भी लग जाये लेकिन व्रत नहीं छोड़ते। तो यह यादगार किससे कॉपी की?

आपका है ब्राह्मण जीवन का व्रत और भक्तों का है एक दिन का व्रत। आपने भी जब ब्राह्मण जन्म वा दिव्य बर्थ लिया तो क्या व्रत लिया? सदा अज्ञान नींद से जागरण का व्रत लिया ना कि थोड़ा-थोड़ा नींद करेंगे यह व्रत लिया? वा थोड़े-थोड़े झुटके खा लेंगे ऐसे तो नहीं किया? तो आप सभी ने भी शिव जयन्ती वा दिव्य बर्थ डे पर जागरण का व्रत लिया इसलिये भक्त भी यादगार रूप में जागरण करते हैं। और आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत लिया। इसलिए भक्त लोग भी, कुछ भी हो जाये, चाहे बीमार भी हो जाते हैं तो भी अन्न के व्रत को तोड़ेंगे नहीं। तो आप सब भी कोई भी मन के आगे, तन के आगे, परिस्थितियाँ आ जायें तो व्रत तोड़ते हो क्या? कभी कुछ मिक्स खा लिया-ऐसे करते हो क्या? कोई देखता तो है नहीं, चलो खा लिया, अपना नियम पक्का रखते हो ना कि कच्चे हो? कभी-कभी देखकरके थोड़ी दिल होती है? एक ही जैसा खाना खाते-खाते कभी दूसरा भी खाने की दिल होती है?

✚ अपने आपको सदा शिवशक्ति समझ कर हर कर्म करती हो? अपने अलंकार वा अष्ट भुजाधारी मूर्त सदा अपने सामने रहती है? अष्ट भुजाधारी अर्थात् अष्ट शक्तिवान। तो सदा अपने अष्ट शक्ति-स्वरूप स्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं? शक्तियों का गायन है ना -- शिवमई शक्तियाँ। तो शिव बाबा की स्मृति में सदा रहती हो? शिव और शक्ति - दोनों का साथ-साथ गायन है। जैसे आत्मा और शरीर - दोनों का साथ है, जब तक इस सृष्टि पर पार्ट है तब तक अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही शिव और शक्ति - दोनों का भी इतना ही गहरा सम्बन्ध है, जो गायन है शिवशक्तिपन का। तो ऐसे ही सदैव साथ का अनुभव करती हो वा सिर्फ गायन है? सदा साथ ऐसा हो जो कोई भी कब इस साथ को तोड़ न सके, मिटा न सके। ऐसे अनुभव करते हुए सदा शिवमई शक्ति-स्वरूप में स्थित होकर चलो तो कब भी दोनों की लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती। कहावत भी है - दो दस के बराबर होते हैं। तो जब शिव और शक्ति दोनों का साथ हो गया तो ऐसी शक्ति के आगे कोई कुछ कर सकता है? इन डभले शक्तियों के आगे और कोई भी शक्ति अपना वार नहीं कर सकती वा हार खिला नहीं सकती। अगर हार होती है वा माया का वार होता है तो क्या उस समय शिव-शक्ति-स्वरूप में स्थित हो? अपने अष्ट-शक्तियाँ-सम्पन्न

सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित हो? अष्ट शक्तियों में से अगर कोई भी एक शक्ति की कमी है तो अष्ट भुजाधारी शक्तियों का जो गायन है वह हो सकता है? सदैव अपने आपको देखो कि हम सदैव अष्ट शक्तियाँधारी शिव-शक्ति होकर के चल रही हैं? जो सदा अष्ट शक्तियों को धारण करने वाले हैं वही अष्ट देवताओं में आ सकते हैं। अगर अपने में कोई भी शक्ति की कमी अनुभव करते हो तो अष्ट देवताओं में आना मुश्किल है। और अष्ट देवता सारी सृष्टि के लिए इष्ट रूप में गाये और पूजे जाते हैं। तो भक्ति मार्ग में इष्ट बनना है वा भविष्य में अष्ट देवता बनना है तो अष्ट शक्तियों की धारण सदैव अपने में करते चलो।




वर्गों की सेवा तो बहुत की है ना, अभी हर वर्ग का ऐसा एक-एक रत्न तैयार करो, एक भी वर्ग मिस नहीं हो, क्यों? अभी जब समय समीप आ रहा है तो कोई भी वर्ग वाले उल्हना नहीं दें कि हमारा वर्ग रह गया। एक-एक वर्ग में विशेष एक-एक क्वालिटी का हो जो माइक का काम कर सके, क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है तो सर्व वर्ग वाले, सर्व धर्म वाले सबके मुख से एक आवाज़ निकले कि बाप आ गया, क्योंकि इस संगमयुग में ही सभी धर्म स्थापक आत्माओं वा सर्व वर्ग की आत्माओं में बीज पड़ना है। वह इतनी पावर अपने में ले जायेंगे जो फिर अपने-अपने समय पर वर्ग वा धर्म के इन्वेन्टर बनेंगे। तो सब बीज आपको तैयार करने हैं, जो समय पर अपने-अपने डिपार्टमेंट के निमित्त बनेंगे क्योंकि बीज बाप है और आप ब्राह्मण आत्मायें तना हो, सर्व आत्मायें बीज और तना द्वारा ही निकलते हैं। तो ऐसा गुलदस्ता बाप के सामने लाओ, विदेश वाले भी और देश वाले भी। एक-एक सैम्पुल लाओ, सैम्पुल से अन्य अनेकों स्वतः ही बनते हैं। लेकिन एक-एक पावरफुल माइक बनें, ऐसे बीज कहो, धर्म या वर्ग कहो वा वैरायटी फूलों का गुलदस्ता कहो तैयार होना चाहिए। एक भी मिस नहीं हो तब कहा जायेगा विश्व कल्याणकारी वा सर्व आत्माओं के निमित्त उद्धार करने वाली आत्मायें। एक शाखा भी कम नहीं, सर्व शाखायें चाहिए। चाहे आपके नव युग में कई वर्ग नहीं होंगे लेकिन उन आत्माओं में भी द्वापर में या कलियुग में जो इन्वेन्टर निमित्त हैं, उन्हों को शक्ति आप द्वारा ही मिलनी है। जैसे सभी धर्म पितायें आपके आगे बाप का झण्डा, प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने


में सहयोगी बनेंगे, वैसे ही सर्व वर्ग वाले भी प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में सहयोगी बनेंगे, तब कहेंगे सर्व के सहयोग से सुखमय दुनिया की स्थापना। सहयोगी बन रहे हैं लेकिन उनमें से अब विशेष आत्मा को सहयोग में आगे बढ़ाओ, निमित्त बनाओ। निमित्त बनाने का बीज डालो। समझा क्या करना है?

✚ बापदादा सदा साथ है यह अनुभव करो तो हेल्दी वेल्दी नहीं रहेंगे? बापदादा निराकार और साकार दानों के साथ होने से हैल्थ और वैल्थ दोनो आ जाती हैं और हैपी तो आटोमेटिकली होंगे। तो सहज पुरुषार्थ कौन-सा हुआ? निराकार और साकार दोनों को सदा साथ में रखो। सदा साथ न रखने कारण यह रिजल्ट है। क्या साथ रखना मुश्किल लगता है? जब जान लिया और पहचान लिया, मान लिया कि सभी सम्बन्ध एक साथ हैं, दूसरा ना कोई तो उसमें चलने में क्या मुश्किल है? साथ क्यों छोड़ते हो? सीता का साथ क्यों छूटा? कारण -- लकीर को उल्लंघन किया। यह चन्द्रवंशी सीता का काम है, लक्ष्मी का नहीं। तो मर्यादा के लकीर के बाहर बुद्धि जरा भी ना जाए। नहीं तो चन्द्रवंशी बनेंगे। बुद्धि रूपी पांव मर्यादा की लकीर से संकल्प वा स्वप्न में भी बाहर निकलता है तो अपने को चन्द्रवंशी सीता समझना चाहिए, सूर्यवंशी लक्ष्मी नहीं। सूर्यवंशी अर्थात् शूरवीर। जो शूरवीर होता है वह कब कोई के वश नहीं होता है। तो सदा साथ रखने लिए अपने को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो, लकीर के बाहर ना निकलो। बाहर निकलते हो तो फकीर बन जाते हो। फिर मांगते रहते हो - यह मदद मिले, यह सैलवेशन मिले तो यह हो सकता है। मांगता हुआ ना! फकीर बनने का अर्थ ही है -- हैल्थ, वैल्थ गवाँ देते हो, इसलिए फकीर बन जाते हो। तो ना लकीर को पार करो ना फकीर बनो। लकीर के अन्दर रहने से मायाजीत बन सकते हो। लकीर को पार करने से माया से हार खा लेते हो। इसलिए सदा हेल्दी, वेल्दी, हैपी और होली बनो। चेक करो कि - इन चारों में से आज किस बात की कमी रही, आज हैल्थ ठीक है, वैल्थ है, हैपी है, होली है? न है तो क्यों? उस रोग को जानकर फौरन ही उसकी दवाई करो और तो सभी प्रकार की दवाई मिल चुकी है।

सभी प्राप्तियां हैं। तो सभी प्राप्ति होते भी समय पर क्यों नहीं कर पाते हो? समय के बाद स्मृति में क्यों आते हो? यह कमजोरी है जो समय पर काम नहीं करते।

✚ युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सदगति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा अपने-अपने यथा शक्ति अपने धर्म में, अपने समय पर गति के बाद सदगति में ही अवतरित होंगे। क्योंकि विधि-विधाताओं द्वारा संगमयुग पर अन्त तक भी बाप को याद करने की विधि का सन्देश जरूर मिलना है। फिर किसको वाणी द्वारा, किसको चित्रों द्वारा, किसको समाचारों द्वारा, किसको आप सबके पावरफुल वायब्रेशन द्वारा, किसको अन्तिम विनाश लीला की हलचल द्वारा, वैराग वृत्ति के वायुमण्डल द्वारा। संगम पर ही प्रकृति सहयोगी बनने का अपना पार्ट आरम्भ कर देगी। सब तरफ से प्रकृति-पति का और मास्टर प्रकृतिपति का आयजान करेगी। सब तरफ से आफरीन और आफर होगी। फिर क्या करेंगे? यह जो भक्ति में गायन है, हर प्रकृति के तत्व को देवता के रूप में दिखाया है। देवता अर्थात् देने वाला। तो अन्त में यह सब प्रकृति के तत्व आप सबको सहयोग देने वाले दाता बन जायेंगे। यह सागर भी आपको सहयोग देंगे। चारों ओर की सामग्री भारत की धरनी पर लाने में सहयोगी होंगे। इसलिए कहते हैं सागर ने रतनों की थालियाँ दी। ऐसे ही धरनी की हलचल सारी वैल्युबल वस्तु आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए एक स्थान भारत में इकट्ठी कर देने में सहयोगी होगी। इन्द्र देवता कहते हैं ना! तो बरसात भी धरनी की सफाई के सहयोग में हाजिर हो जायेगी। इतना सारा किचड़ा आप तो नहीं साफ करेंगे। यह सारा प्रकृति का सहयोग मिलेगा। कुछ वायु उड़ायेगी, कुछ बरसात साथ ले जायेगी। अग्नि को तो जानते ही हो। तो अन्त में यह सब तत्व आप श्रेष्ठ आत्माओं को सहयोग देने वाले देवता बनेंगे। और सर्व आत्मायें अनुभव करेंगी। फिर भक्ति में जो अब सहयोग देने के कर्तव्य के कारण देवता बने उस कर्तव्य का अर्थ भूल, देवताओं का मनुष्य रूप दे देते हैं। जैसे सूर्य है तत्व लेकिन मनुष्य रूप दे दिया है। तो समझा विधि-विधाता बन क्या कार्य करना है।

 सभी एक लगन में मगन रहने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो? साधारण तो नहीं। सदा श्रेष्ठ आत्मायें जो भी कर्म करेंगी वह श्रेष्ठ होगा। जब जन्म ही श्रेष्ठ है तो कर्म साधारण कैसे होगा! जब जन्म बदलता है तो कर्म भी बदलता है। नाम रूप, देश, कर्म सब बदल जाता है। तो सदा नया जन्म, नये जन्म की नवीनता के उमंग-उत्साह में रहते हो! जो कभी-कभी रहने वाले हैं उन्हें राज्य भी कभीकभी मिलेगा। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हें निमित्त बनने का फल मिलता रहता है। और फल खाने वाली आत्मायें शक्तिशाली होती हैं। यह प्रत्यक्षफल है, श्रेष्ठ युग का फल है। इसका फल खाने वाले सदा शक्तिशाली होंगे। ऐसे शक्तिशाली आत्मायें परिस्थितियों के ऊपर सहज ही विजय पा लेती हैं। परिस्थिति नीचे और वह ऊपर। जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं कि उसने साँप को भी जीता। उसके सिर पर पाँव रखकर नाचा। तो यह आपका चित्र है। कितने भी जहरीले साँप हों लेकिन आप उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाले हो। यही श्रेष्ठ शक्तिशाली स्मृति सबको समर्थ बना देगी। और जहाँ समर्थता है वहाँ व्यर्थ समाप्त हो जाता है। समर्थ बाप के साथ हैं, इसी स्मृति के वरदान से सदा आगे बढ़ते चलो। 2. सभी अमर बाप की अमर आत्मायें हो ना। अमर हो गई ना? शरीर छोड़ते हो तो भी अमर हो, क्यों? क्योंकि भाग्य बना करके जाते हो। हाथ खाली नहीं जाते। इसलिए मरना नहीं है। भरपूर होकर जाना है। मरना अर्थात् हाथ खाली जाना। भरपूर होकर जाना माना चोला बदली करना। तो अमर हो गये ना। 'अमर भव' का वरदान मिल गया। इसमें मृत्यु के वशीभूत नहीं होते। जानते हो जाना भी है फिर आना भी है। इसलिए अमर हैं। अमरकथा सुनते-सुनते अमर बन गये। रोज-रोज प्यार से कथा सुनते हो ना। बाप अमरकथा सुनाकर अमरभव का वरदान दे देता है। बस सदा इसी खुशी में रहो कि अमर बन गये। मालामाल बन गये। खाली थे, भरपूर हो गये। ऐसे भरपूर हो गये जो अनेक जन्म खाली नहीं हो सकते।

 एक तरफ दीपक वा मोमबत्ती जलाते हो, दूसरा केक काटते हो, तीसरा झण्डा लहराते हो, चौथा-गीत गाते हो, पांचवा-डांस भी करते हो। और क्या करते हो? मीठा बांटते और खाते हो। तो अभी ये 6 बातें ही करनी पड़ेंगी। पहले तो दृढ़ संकल्प का अपने मन में दीप जलाओ कि अब से दृढ़ता द्वारा सफलता को पाना ही है। देखेंगे, पता नहीं, पता नहीं, नहीं। होना ही है,

करना ही है, गे शब्द नहीं, है। और दूसरा केक कौन-सा काटेंगे? केक पूरा नहीं खाया जाता, काटकर खाया जाता है। तो क्या काटेंगे? जो भी सम्पन्न बनने में या सम्पूर्ण बनने में कोई भी संकल्प मात्र भी रूकावट हो उसको अब से काट लो, खत्म। और जो कमजोरी हो उसके बजाय शक्ति धारण करने का केक मुख में डालो। पहले काटो, फिर मुख में खाओ। समझा? झण्डा कौन-सा लहरायेंगे? ये तो यादगार के रूप से झण्डा लहराते हैं लेकिन अपने दिल में बाप को हर संकल्प, बोल और कर्म द्वारा सदा प्रत्यक्ष करने का झण्डा दिल में लहराओ। कोई भी संकल्प, बोल और कर्म ऐसा नहीं हो जो बाप को प्रत्यक्ष करने का नहीं हो। क्योंकि सबके दिल में बाप के स्नेह के कारण यही संकल्प है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है। तो कैसे करेंगे? सदा अपने संकल्प, बोल और कर्म द्वारा दिल में प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराओ और सदा खुश रहने की डांस करते रहो। कभी खुश, कभी उदास-यह नहीं। जब उदास होते हो तो उस समय भी अपना एक फोटो निकालो। और जब खुश होते हो तो भी फोटो निकालो। फिर दोनों फोटो साथ रखो। फिर देखो अच्छा क्या है? मैं ये हूँ या वो हूँ? तो सदा हर्षित रहने का, खुश रहने का डांस करो। कुछ भी हो जाये, कोई कितना भी खुशी चुराने की कोशिश करे। क्योंकि माया किसी के द्वारा ही तो करायेगी ना। कुछ भी हो जाये, कितना भी कोई किसी भी प्रकार से खुशी कम करने या खुशी गुम करने का प्रयत्न करे लेकिन जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। यह पक्का व्रत लिया है ना। क्या नहीं कर सकते हो, विल पॉवर है ना?

✚ सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना 'सन्तुष्टता' का बाप द्वारा आप सबने प्राप्त किया है। इसलिए सन्तुष्टता लेने के लिए सन्तोषी देवी की पूजा करते रहते हैं। सभी सन्तुष्ट आत्मायें - सन्तोषी माँ हो ना। सब सन्तोषी हो ना! आप सभी सन्तुष्ट आत्मायें सन्तोषी मूर्त हो। बापदादा द्वारा सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार रूप में प्राप्त की है इसलिए सफलता का दान, वरदान आपके चित्रों से मांगते हैं। सिर्फ अल्प-बुद्धि होने के कारण, निर्बल आत्मायें होने के कारण, भिखारी आत्मायें होने के कारण अल्पकाल की सफलता ही मांगते हैं। जैसे भिखारी कभी भी यह नहीं कहेंगे कि हजार रूपया दो। इतना ही कहेंगे कुछ पैसे दे दो। रूपया, दो दे दो। ऐसे यह आत्मायें भी सुख-

शान्ति पवित्रता की भिखारी अल्पकाल के लिए सफलता मांगेंगी। बस यह मेरा कार्य हो जाए, इसमें सफलता हो जाए। लेकिन मांगते आप सफलता स्वरूप आत्माओं से ही हैं। आप दिलाराम बाप के बच्चे दिलवाला बाप को सभी दिल का हाल सुनाते हो, दिल की बातें करते हो। जो किसी आत्मा से नहीं कर सकते वह बाप से करते हो। सच्चे बाप के सच्चे बच्चे बनते हो। अब भी आपके चित्रों के आगे सब दिल का हाल बोलते रहते हैं। जो भी अपनी कोई छिपाने वाली बात होगी, सबके स्नेही सम्बन्धी से छिपायेंगे लेकिन देवी-देवताओं से नहीं छिपायेंगे। दुनिया के आगे कहेंगे मैं यह हूँ, सच्चा हूँ, महान हूँ। लेकिन देवताओं के आगे क्या कहेंगे? जो हूँ वह यही हूँ। कामी भी हूँ तो कपटी भी हूँ। तो ऐसे नये विश्व की तकदीर हो। हर एक की तकदीर में पावन विश्व का राज्य भाग्य है। ऐसे विधाता-वरदाता, विधि-विधाता सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। हरेक के श्रेष्ठ मत रूपी हाथों में स्वर्ग के स्वराज्य का गोला है। ये ही माखन है। राज्य-भाग्य का माखन है। हरेक के सिर पर पवित्रता की महानता का, लाइट का क्राउन है। दिलतख्तनशीन हो। स्वराज्य के तिलकधारी हो। तो समझा 'मैं' कौन? 'मैं कौन'की पहेली हल करने आये हो ना?



कई ऐसे समझते हैं कि जब फर्स्ट, सेकेण्ड आत्मायें जो निमित्त बनीं वही साधारण गुप्त रूप अपना साकार रूप का पार्ट समाप्त कर चले गये तो हम लोगों की झलक फिर क्या दिखाई देगी? लेकिन नहीं। 'सन शोज फादर' गाया हुआ है। तो फादर का शो बच्चे प्रैक्टिकल में लाने से ही करेंगे। 'अहो प्रभु' की पुकार जो आत्माओं की निकलेगी वा पश्चाताप की लहर जो आत्माओं में आयेगी वह कब, कैसे आयेगी? जिन्होंने साकार में अनुभव ही नहीं किया उन्हीं को भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं, यह कब मानेंगे कि बरोबर बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया? तो यह प्रैक्टिकल रूहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे से, चलन से दिखाई दे। अपने को और आप निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्टेज को देखते हुए अनुभव करेंगे - बाप ने इन्हीं को क्या बनाया! और फिर पश्चाताप करेंगे। अगर यह झलक नहीं देखते तो क्या समझेंगे? इतना समय ज्ञान तो नहीं लेंगे जो नॉलेज से आपको

जानें। तो यह प्रैक्टिकल चेहरे से झलक और फलक दिखाई देगी। बाप के तो महावाक्य ही हैं कि मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। लेकिन विश्व के आगे कौन प्रख्यात होंगे? वह साकार में बाप का कर्तव्य था, प्रैक्टिकल में बच्चों का कर्तव्य है प्रख्यात होने का और बाप का कर्तव्य है बैकबोन बनने का, गुप्त रूप में मददगार बनने का। इसलिए ऐसे भी नहीं कि जैसे मात-पिता का गुप्त पार्ट चला वैसे ही अन्त तक गुप्त वातावरण रहेगा। जयजयकार शक्तियों की गाई हुई है और 'अहो प्रभु' की पुकार बाप के लिए गाई हुई है। आप लोग आपस में भी एक दो के अनुभव करते होंगे - जब विशेष अटेन्शन अपने निशाने वा नशा का रहता है, तो भले कितने भी बड़े संगठन में बैठे होंगे तो भी सभी को विशेष कुछ दिखाई जरूर देगा। महसूस करेंगे कि यह समय याद में बहुत अच्छा बैठे। अभी जो साधारण अटेन्शन है वह बदलकर नेचरल विशेष अटेन्शन हो जायेगा और चेहरे से झलक-फलक दिखाई देगी। सिर्फ स्मृति को शक्तिशाली बनाना है।



(विदाई के समय - 14 जनवरी मकर-संक्रान्ति की यादप्यार) कुछ खाते हैं, कुछ खिलाते हैं। वह तिल दान करते हैं या खाते हैं। तिल अर्थात् बहुत छोटी-सी बिन्दी, कोई भी बात होती है-छोटी-सी होती है तो कहते हैं - यह तिल के समान है और बड़ी होती है तो पहाड़ के समान कहा जाता है। तो पहाड़ और तिल बहुत फर्क हो जाता है ना। तो तिल का महत्व इसलिए है क्योंकि अति सूक्ष्म बिन्दी बनते हो। जब बिन्दी रूप बनते हो तभी उड़ती कला के पतंग बनते हो। तो तिल का भी महत्व है। और तिल सदा मिठास से संगठन रूप में लाते हैं, ऐसे ही तिल नहीं खाते हैं। मधुरता अर्थात् स्नेह से संगठित रूप में लाने की निशानी है। जैसे तिल में मीठा पड़ता है तो अच्छा लगता है, ऐसे ही तिल खाओ तो कडुवा लगेगा लेकिन मीठा मिल जाता है तो बहुत अच्छा लगेगा। तो आप आत्मायें भी जब मधुरता के साथ सम्बन्ध में आ जाती हो, स्नेह में आ जाती हो तो श्रेष्ठ बन जाती हो। तो यह संगठित मधुरता का यादगार है। इसकी भी निशानी है। तो सदा स्वयं को मधुरता के आधार से संगठन की शक्ति में लाना, बिन्दी रूप बनना और पतंग बन उड़ती कला में उड़ना, यह है आज के दिन का महत्व। तो मनाना अर्थात् बनना। तो आप बने हो और वह सिर्फ थोड़े समय के लिए मनाते हैं। इसमें दान देना अर्थात् जो भी कुछ कमजोरी हो उसको दान में दे दो। छोटी-सी बात समझकर दे दो। तिल समान समझकर दे दो। बड़ी बात


नहीं समझो - छोड़ना पड़ेगा, देना पड़ेगा नहीं। तिल के समान छोटी-सी बात दान देना, खुशी खुशी छोटी-सी बात समझकर खुशी से दे दो। यह है 'दान' का महत्वा समझा। सदा स्नेही बनना, सदा संगठित रूप में चलना और सदा बड़ी बात को छोटा समझ समाप्त करना। आग में जला देना यह है महत्वा तो मना लिया ना। दृढ़ संकल्प की आग जला दी। आग जलाते हैं ना इस दिन। तो संस्कार परिवर्तन दिवस - वह 'संक्रान्ति' कहते हैं आप 'संस्कार-परिवर्तन' कहेंगे। अच्छा, सभी को स्नेह और संगठन की शक्ति में सदा सफल रहने की यादप्यार और गुडमार्निंग।




आप लोगों को अमृतवेले से लेकर रात तक सारा दिन यही श्रेष्ठ संग है, शुद्ध वातावरण है और शान्त वायुमण्डल है। जब संग और वातावरण दोनों ही श्रेष्ठ प्राप्त है तो स्मृति और वृत्ति सहज ही श्रेष्ठ हो सकती है। ड्रामा में जब यह गोल्डन चान्स प्राप्त है तो क्या उसका उतना ही लाभ उठाते हो? बाहर में रहने वाले कीचड़ में कमल हैं। आप लोगों को तो कमल से भी श्रेष्ठ रूहानी रूहें और गुलाब बनने का चान्स है। गुलाब का फूल पूजा के काम आता है अर्थात् वह देवताओं को अर्पित किया जाता है। कमल-पुष्प की विशेषता गाई जाती है लेकिन वह अर्पित नहीं किया जाता। तो आप सब बाप के आगे अर्पित गुलाब हो, जैसे गुलाब वायुमण्डल में खुशबू फैलाता है, ऐसे ही आप सब भी चारों ओर अपनी रूहानियत की खुशबूएं फैलाने वाले हो? क्या जैसा नाम वैसा ही काम है, जैसा स्थान वैसी स्थिति है, जैसा वातावरण वैसी वृत्ति है और जैसा संग वैसी स्मृति है? इसमें अलबेलापन क्यों होता है? कारण कि जैसे बाप की पहचान नहीं, तो प्राप्ति भी नहीं। इसी प्रकार अपने मिले हुए श्रेष्ठ भाग्य की भी पहचान नहीं तो अलबेलापन का कारण हुआ कि ज्ञान की कमी और पहचान की कमी। इसलिये अब समय की समीपता प्रमाण सम्पूर्ण ज्ञान स्वरूप बनो तब ही ज्ञान का फल अनुभव करेंगे, समझा? पाण्डवों का किला तो प्रसिद्ध है। किला मज़बूत बनाना यह पाण्डवों का ही कर्तव्य है। अगर स्वयं मज़बूत होंगे तो किला भी मज़बूत होगा। किले की दीवार क्या है? स्वयं ही तो दीवार हैं। दीवार के बीच से यदि एक ईंट या पत्थर भी हिल जाये और दीवार में ज़रा भी क्रैक (दरार) आ जाए तो सम्पूर्ण दीवार ही कमज़ोर हो जाती है। क्या माया के तूफान और माया के अर्थ-क्वेक (धरतीकम्प),

फाउण्डेशन (नींव) को हिलाते तो नहीं हैं या क्रैक तो नहीं पड़ता है? किला मज़बूत है ना? किला अर्थात् संगठन। जब विश्व पर प्रभाव डाल सकते हो तो क्या समीप वालों को प्रभावित नहीं कर सकते? इतना सहजयोगी बनो जो आपको देखते ही औरों का योग लग जावे।

✚ ऊँचा अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण स्वर्ग को ऊँचा दिखाते हैं और नर्क को नीचे दिखाते हैं। संगमयुगी स्वर्ग सतयुगी स्वर्ग से भी ऊँचा है। क्योंकि अभी दोनों संसार के नॉलेजफुल बने हो। यहाँ अभी देखते हुए जानते हुए न्यारे और प्यारे हो। इसलिए मधुवन को स्वर्ग अनुभव करते हो। कहते हो ना - स्वर्ग देखना हो तो अभी देखो। वहाँ स्वर्ग का वर्णन नहीं करेंगे। अभी फलक से कहते हो कि हमने स्वर्ग देखा है। चैलेन्ज करते हो कि स्वर्ग देखना हो तो यहाँ आकर देखो। ऐसे वर्णन करते हैं ना। पहले सोचते थे, सुनते थे कि स्वर्ग की परियाँ बहुत सुन्दर होती हैं। लेकिन किसने देखा नहीं। स्वर्ग में यह यह होता, सुना बहुत लेकिन अब स्वयं स्वर्ग के संसार में पहुँच गये। खुद ही स्वर्ग की परियाँ बन गये। श्याम से सुन्दर बन गये ना! पंख मिल गये ना! इतने न्यारे पंख - ज्ञान और योग के मिले हैं जिससे तीनों ही लोकों का चक्कर लगा सकते हो। साइंस वालों के पास भी ऐसा तीव्रगति का साधन नहीं है। सभी को पंख मिले हैं? कोई रह तो नहीं गया है। इस संसार का ही गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के संसार में। इसलिए गायन है - एक बाप मिला तो सब कुछ मिला। एक दुनिया नहीं लेकिन तीनों लोकों का मालिक बन जाते। इस संसार का गायन है - 'सदा सभी झूलों में झूलते रहते'। झूलों में झूलना भाग्य की निशानी कहा जाता है। इस संसार की विशेषता क्या है? कभी अतीन्द्रिय सुख के झूलों के झूलते, कभी खुशी के झूले में झूलते, कभी शान्ति के झूले में, कभी ज्ञान के झूले में झूलते। परमात्म गोदी के झूले में झूलते। परमात्म गोदी है - याद की लवलीन अवस्था में झूलना। जैसे गोदी में समा जाते हैं। ऐसे परमात्म-याद में समा जाते, लवलीन हो जाते। यह अलौकिक गोद सेकण्ड में अनेक जन्मों के दुःख दर्द भूला देती है। ऐसे सभी झूलों में झूलते रहते हो! कभी स्वप्न में भी सोचा था कि ऐसे संसार के अधिकारी बन जायेंगे! बापदादा आज अपने प्यारे संसार को देख रहे हैं।

 अभी थोड़े समय के अन्दर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। क्योंकि अब अन्तिम समय है। अनुभव करेंगे कि इतना समय बाप के रूप में कारण भी सुने, स्नेह भी दिया, रहम भी किया, रियायत भी बहुत की लेकिन अभी यह दिन बहुत थोड़े रह गए हैं। फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प के भूल एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है। अभी-अभी किया और अभी-अभी इसका फल व दण्ड प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे अभी वह समय बहुत जल्दी आने वाला है। इसलिए बापदादा सूचना देते हैं क्योंकि फिर भी बापदादा बच्चों के स्नेही है। अब मास्टर रचयितापन का नशा धारण कर रचना के सर्व आकर्षण से अपने को दूर करते जाओ। बाप के आगे रचना हो लेकिन अब समय ऐसा आने वाला है जो मास्टर रचयिता, मास्टर नॉलेजफुल बनकर उस आकर्षक पावरफुल स्थिति में स्थित न रहे तो रचना और भी भिन्न-भिन्न रंग-ढंग, रूप और रचेगी। इसलिए फुल बनने के लिए स्टेज पर पूरी रीति स्थित हो जाओ तो फिर कहाँ भी फेल नहीं होंगे। अभी बचपन की भूलें, अलबेलेपन की भूलें, आलस्य की भूलें, बेपरवाही की भूलें रही हुई हैं। इन चार प्रकार की भूलों को ऐसे भूल जाओ जैसे सतयुगी दुनिया में भूल जायेंगे। तो ऐसा पावरफुल शक्तिस्वरूप, शस्त्रधारी स्वरूप, सदा जागती ज्योति स्वरूप अपना प्रत्यक्ष रूप दिखाओ। अभी आपके अपने अपने भक्त आप गुप्त वेशधारी देवताओं को फिर से पाने के लिए तड़फ रहे हैं। आप के सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब तो आप के भक्त प्रत्यक्ष रूप में अपने इष्ट को पा सकेंगे। अभी तो कई प्रकार के हैं। भल आवाज़ सुनेंगे लेकिन यह भी याद रखना एक तरफ आसुरी आत्माओं की आवाज़ और भी आकर्षक तथा फुल फ़ोर्स में होंगी। दूसरी तरफ आप के भक्तों की आवाज़ भी कई प्रकार से और फुल फ़ोर्स में होंगी। अभी प्रत्यक्ष रूप में क्या लाना है और क्या नहीं लाना है वह भी परखना बुद्धि का काम है। इसलिए अभी रियायत का समय गया। अभी रूहानियत का समय है। अगर रूहानियत नहीं होगी तो भिन्न-भिन्न प्रकार की माया की रंगत में आ जायेंगे।

 सभी में ज्ञान, योग, गुणों की धारणा और सेवा भाव है भी लेकिन सब होते हुए भी किसमें ज्ञान की चमक है तो किसमें विशेष याद की - योग की है। और कोई-कोई अपने गुण-मूर्त की चमक से विशेष आकर्षित कर रहा है। चारों ही धारणा होते हुए भी परसेन्टेज में अन्तर है। इसलिए भिन्न-भिन्न सितारे चमकते हुए दिखाई दे रहे हैं। यह रूहानी विचित्र तारामण्डल है। आप

रूहानी सितारों का प्रभाव विश्व पर पड़ता है। तो विश्व के स्थूल सितारों का भी प्रभाव विश्व पर पड़ता है। जितना शक्तिशाली आप स्वयं सितारे बनते हो उतना विश्व की आत्माओं पर प्रभाव पड़ रहा है और आगे पड़ता ही रहेगा। जैसे जितना घोर अन्धियारा होता है तो सितारों की रिमझिम ज्यादा स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे अप्राप्ति का अंधकार बढ़ता जा रहा है और जितना बढ़ता जा रहा है, बढ़ता जायेगा उतना ही आप रूहानी सितारों का विशेष प्रभाव अनुभव करते जायेंगे। सभी को धरती के चमकते हुए सितारे ज्योति-बिन्दु के रूप में प्रकाशमय काया फरिश्ते के रूप में दिखाई देंगे। जैसे अभी आकाश के सितारों के पीछे वह अपना समय, एनर्जी और धन लगा रहे हैं, ऐसे रूहानी सितारों को देख आश्चर्यवत होते रहेंगे। जैसे अभी आकाश में सितारों को देखते हैं ऐसे इस धरती के मण्डल में चारों ओर फरिश्तों की झलक और ज्योतिर्मय सितारों की झलक देखेंगे, अनुभव करेंगे - यह कौन हैं, कहाँ से इस धरती पर अपना चमत्कार दिखाने आये हैं! जैसे स्थापना के आदि में अनुभव किया है कि चारों ओर ब्रह्मा और कृष्ण के साक्षात्कार की लहर फैलती गई। यह कौन है? यह क्या दिखाई देता है? यह समझने के लिए बहुतों का अटेन्शन गया। ऐसे अब अन्त में चारों ओर यह दोनों रूप 'ज्योति और फरिश्ता' उसमें बापदादा और बच्चे सबकी झलक दिखाई देगी। और सभी का एक से अनेकों का इसी तरफ स्वतः ही अटेन्शन जायेगा। अभी यह दिव्य दृश्य आप सबके सम्पन्न बनने तक रहा हुआ है। फरिश्ते पन की स्थिति सहज और स्वतः अनुभव करें तब वह साक्षात् फरिश्ते साक्षात्कार में दिखाई देंगे।



समझो आपका कोई साक्षात्कार करता है और आपकी मूर्त नीचे ऊपर होती रहेगी तो क्या साक्षात्कार करेंगे? जैसे फोटो निकालने के समय हिलना बंद कराते हैं न। अगर हिला तो फोटो खराब। वैसे ही आपकी अवस्था हिलती रहेगी तो क्या साक्षात्कार होगा? जैसे फोटो निकालते समय अपने को कितना स्थिर करते हो वैसे ही सदैव समझो कि हमारे भक्त हर समय हमारा साक्षात्कार कर रहे हैं। तो साक्षात्कार मूर्त अर्थात् स्थिरमूर्त होंगे। नहीं तो भक्तों को साक्षात्कार स्पष्ट नहीं होगा। स्पष्ट साक्षात्कार कराने के लिए स्थिरबुद्धि, एकटिक स्थिति आवश्यक है। समझो। अभी से ही भक्त लोग एक-एक का साक्षात्कार करेंगे। वह बीज अर्थात् संस्कार उन

भक्तों की आत्मा में भरेगा। फिर उस संस्कार से मर्ज होंगे और फिर द्वापर में वही संस्कार इमर्ज होगा। जैसे आप समझाते हो ना कि धर्म-स्थापक यहाँ से सन्देश लेकर, भरकर जायेंगे वही फिर इमर्ज होगा। वैसे आप सभी के अपने-अपने भक्त और प्रजा संस्कार ले जाएंगी। फिर उसी प्रमाण इमर्ज होते हैं। अगर भक्तों के सामने स्पष्ट मूर्त ही नहीं दिखायेंगे तो उनमें वह संस्कार कैसे भरेंगे? यह भी कर्तव्य करना है। सिर्फ प्रजा नहीं बनानी है, साथ-साथ भक्तों में भी वह संस्कार भरना है। कितनी प्रजा बनी है, कितने भक्त बने हैं यह भी मालूम पड़ेगा। भक्तों की माला और प्रजा की माला दोनों प्रत्यक्ष होंगे। हरेक को अपनी दोनों मालाओं का साक्षात्कार होगा। अपना भी साक्षात्कार होगा कि मैं कहाँ माला में पिरोया हुआ हूँ। यह भी एक गुप्त रहस्य है कि किन्हीं के भक्त ज्यादा होते, किन्हीं की प्रजा जास्ती बनती। जैसे कोई की राजधानी बड़ी होते भी संपत्ति कम होती, कोई की राजधानी कम होती परन्तु संपत्ति ज्यादा होती है। यह भी गुप्त रहस्य है। जो कभी खोलेंगे। अभी तो लक्ष्य रखो – प्रजा बनाने का। भक्त तो लास्ट में मिनट मोटर के समान बनेंगे। यहाँ भी भक्त वंदना करेंगे। पूजा नहीं। गायन करेंगे, पूजा वही वहाँ करेंगे। यह सब बाद में मालूम पड़ेगा।



एक प्रश्न पूछा था कि अब जो बापदादा अन्य तन में आते हैं तो जैसे साकार रूप में मुरली चलाते थे वैसे ही क्यों नहीं चलाते? क्या वैसे ही मुरली नहीं चला सकते हैं? क्यों भाषा बदली, क्यों तरीका बदला ऐसे प्रश्न बहुतों को उठता है। जबकि तुम भाषण कर सकते हो तो बापदादा का कोई भी तन द्वारा मुरली चलाना मुश्किल है? लेकिन क्यों नहीं चलाते हैं? (दो चार ने अपने विचार सुनाये) जिस तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ, अब फिर पढ़ाई-पढ़ाने लिये नहीं आते। वह कोर्स था उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिये, बहलाने के लिये। और मुख्य बातें कौन सी हैं? जैसे अशरीरी, कर्मातीत बन कर के क्या किया? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया। साकार शरीर से एक सेकेण्ड में उड़े ना। तो अब पढ़ाई पूरी हुई। बाकी एक कार्य रहा हुआ है। साथ ले जाने का। इसलिए अब सिर्फ मिलने, अव्यक्त शिक्षाओं से बहलाने और उड़ाने लिये आते हैं। पढ़ाई के पॉइंट्स पढ़ाई का

रूप अब नहीं चल सकता है। अभी कोर्स रिवाइज हो रहा है। लेकिन कितने समय में रिवाइज करेंगे? कितने तक कोर्स पूरा हुआ है? अभी यह सभी को निर्णय करना है कि कहाँ तक रिवाइज कोर्स हुआ है। कितना समय अब चाहिए? साकार तन के हर कर्म, हर स्थिति से अपने को भेंट करना उनको देखते, यह लक्ष्य रखते अपने को देखो फिर पता पड़ेगा कि कहाँ तक है। लक्ष्य तो बता दिया कि कैसे अपने को परखना, फिर उत्तर देना। दूसरा प्रश्न यह देते हैं। होमवर्क तो तुम्हारा चल ही रहा है। उसमें विशेष ध्यान खिंचवाते हैं यह जो पार्ट भावी प्रमाण हुआ है उस साकार रूप को अव्यक्त क्यों बनाया? इनके भी कई गुह्य रहस्य हैं। इसकी गहराई में जाना, सागर के लहरों में नहाने नहीं लग जाना। लेकिन सागर के तले में जाना। फिर जो रत्न मिले वह ले आना। यह सोचना इनका गुह्य रहस्य ड्रामा में क्या नून्हा हुआ है। ऊपर कोई गुह्य रहस्य है। बिना रहस्य के तो कोई भी चलन हो ही नहीं सकती। अच्छा-अभी टाइम हो गया है।



तो मूल तना, जिस द्वारा ही सर्व धर्म रूपी शाखाएं उत्पन्न हुई हैं। तो मूल आधार अर्थात् सर्व के पूर्वज 'ब्राह्मण सो देवता' हैं, ऐसे पूर्वज अर्थात् आदि देव द्वारा आदि रचना हो। हर एक को अपने पूर्वज का रिगार्ड और स्नेह रहता है। हर कर्म का आधार, कुल की मर्यादाओं का आधार, रीति-रस्म का आधार, पूर्वज होते हैं। तो सर्व आत्माओं के आधार मूर्त्त और उद्धार मूर्त्त आप पूर्वज हो। ऐसे अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित रहते हो? पूर्वज का स्वमान होने के कारण पूर्वजों के स्थान का भी स्वमान हैं। किसी भी धर्म वाले न जानते हुए भी भारत भूमि अर्थात् पूर्वजों के स्थान को महत्व की नज़र से देखते हैं। साथ-साथ सर्व महान् प्राप्तिओं का आधार सहजयोग वा किसी भी प्रकार का योग वा आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति का केन्द्र भारत को ही मानते हैं। भारत के यादगार गीता शास्त्र को भी सर्व शास्त्रों के श्रेष्ठ स्वमान का शास्त्र मानते हैं। साइंस और साइलेन्स दोनों को प्रेरणा देने वाले गीता शास्त्र को मानते हैं। अपने पूर्वजों का चित्र और चारित्र देखने और सुनने की मन में इच्छा उत्पन्न होती है। पूरी पहचान न होने का कारण, स्मृति न होने का कारण, इच्छा होते हुए भी धर्म और देश की भिन्नता होने कारण, इतने समीप नहीं आ पाते हैं। इन सब बातों का कारण, उन सबके पूर्वज आप हो। जैसे लौकिक रीति में भी अपने पूर्वजों

की भूमि अर्थात् स्थान से, चित्रों से, वस्तुओं से, बहुत स्नेह होता है, ऐसे ही जाने अनजाने भारत की पुरानी वस्तुओं और पुराने चित्रों का मूल्य और धर्म वालों को अब तक भी है। ऐसे निमित्त बने हुए पूर्वज आत्माएं सदा यह महामंत्र याद रखते हैं कि जो इस समय अपना संकल्प अर्थात् मन्सा, वाचा और कर्मणा द्वारा कर्म व संकल्प चलता है वह सर्व आत्माओं तक पहुँचता है? तना द्वारा ही सर्व शाखाओं को शक्ति प्राप्त होती है। ऐसे आप आत्माओं द्वारा ही सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ संकल्पों की शक्ति वा सर्वशक्तियों की प्राप्ति ऑटोमेटिकली होती रहती है।

✚ क्या बापदादा निर्मोही है? आप सभी बच्चे निर्मोही हो? निर्मोही बने हो? तो बापदादा निर्मोही और बच्चों में शुद्ध मोह तो मिलन कैसे होगा। बापदादा में शुद्ध मोह है? (साकार बाबा का बच्चों में शुद्ध प्यार था) शिवबाबा का नहीं है? बापदादा का है? (जैसा हमारा है वैसा नहीं) शुद्ध मोह बच्चों से भी जास्ती है। लेकिन बापदादा और बच्चों में एक अन्तर है। वह शुद्ध मोह में आते हुए भी निर्मोही हैं और बच्चे शुद्ध मोह में आते हैं तो कुछ स्वरूप बन जाते हैं। या तो प्यारे बनते या तो न्यारे बनते। लेकिन बापदादा न्यारे और प्यारे साथ-साथ बनते हैं। यह अन्तर जो रहा हुआ है इसको जब मिटायेंगे तो क्या बनेंगे? अन्तर्मुख, अव्यक्त, अलौकिक। अभी कुछ कुछ लौकिकपन भी मिल जाता है। लेकिन जब यह अन्तर खत्म कर देंगे तो बिल्कुल अलौकिक और अन्तर्मुखी, अव्यक्त फरिश्ते नजर आयेंगे। इस साकार वतन में रहते हुए भी फरिश्ते बन सकते हो। आप फिर कहेंगे आप वतन में जाकर फरिश्ता क्यों बनें? यहाँ ही बनते। लेकिन नहीं। जो बच्चों का काम वह बच्चों को साजे। जो बाप का कार्य है वह बाप ही करते हैं। बच्चों को अब पढ़ाई का शो दिखाना है। टीचर को पढ़ाई का शो नहीं दिखना है? टीचर को पढ़ाई पढ़ानी होती है। स्टूडेंट को पढ़ाई का शो दिखाना होता है। शो केस में शक्तियों को पाण्डवों को आना है। बापदादा तो है ही गुप्त। अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन चलकर खत्म हो लेकिन जल्दी होगी? हो सकती है? होगी या हो सकती है? भावी जो बनी हुई है, वह तो बनी हुई बनी ही रहेगी। लेकिन बनी हुई भावी में यह इतना नजर आता है कि अगर कल्प पहले माफिक संकल्प आता है तो संकल्प के साथ-साथ अवश्य पहले भी पुरूषार्थ तीव्र किया होगा। तो यह भी संकल्प आता है कि ड्रामा का सीन

जल्दी पूरा कर सभी अव्यक्तवतन वासी बन जायें। बनना तो है। लेकिन आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो। अव्यक्त वतन का नक्शा व्यक्त वतन में बना सकते हो।

✚ ऐसे रूहानी गुलाब हो ना! गुलाब के साथ काँटा लगा हुआ तो नहीं है? गुलदस्ता बनाते हैं तो पहले काँटे निकालते हैं ना! काँटे वाला गुलदस्ता नहीं बनाते, काँटे निकालकर साफ करके फिर गुलदस्ता बनाते हैं। किसी भी देवता के आगे पुष्प चढ़ायेंगे तो पहले साफ करेंगे, फिर भेंट करेंगे। आप भी रूहानी गुलाब बाप के आगे वैराइटी रूप में, गुलदस्ते के रूप में हो। भक्ति मार्ग में भी यहाँ की रस्म चलती रहती है। आप रूहानी गुलाब बाप के आगे अर्पण हुए हो, इसलिए देवताओं को भी पुष्प ही अर्पण करते हैं। रूहानी गुलाब अर्थात् कभी भी रूहानियत से दूर होने वाला नहीं। जैसे फूलों में खुशबू समाई हुई होती है ना, अलग तो नहीं होती है ना। ऐसे आप लोगों में रूहानियत की खुशबू समाई हुई है। आर्टीफिशियल बाहर की नहीं है। समाई हुई है या कभी-कभी खुशबू डाल देते हो? आप खुशबूदार बनते हो, इसलिए मन्दिरों में आपके जड़ चित्रों के आगे भी सदैव खुशबू जलायेंगे। कोई भी मन्दिर में अगरबत्ती कितने प्यार से जलाते हैं! अगर मन्दिर में खुशबू नहीं हो तो कहेंगे-यहाँ पुजारी अच्छा नहीं है, मन्दिर का वातावरण नहीं है। तो यह खुशबू क्यों रखते हैं? अगरबत्ती क्यों जलाते हैं? क्योंकि आप खुशबूदार बनते हो। तो यह नशा है कि यह हमारे ही चित्र हैं? हर एक समझता है कि यह मेरे चित्र हैं। एक नहीं - सभी चित्र आपके हैं! पाण्डव क्या समझते हैं? हनूमान, गणेश - यह आपके चित्र हैं? आपमें हनूमान वा गणेश कौन है? सभी गणेश हो? गणेश अर्थात् विद्यापति। जो नॉलेजफुल हैं वो विद्यापति अर्थात् गणेश हैं और हनूमान अर्थात् जिसके हृदय में सिवाए बाप के और कोई नहीं। सेवाधारी भी हैं और हृदय में बाप समाया हुआ है। तो ऐसे हो या दिल में कभी-कभी और कोई आ जाता है? माताओं के दिल में क्या है? और कोई पोत्रा-धोत्रा है? पोत्रे-धोत्रे प्यारे लगते हैं ना या पोत्रा भी बाप है तो धोत्रा भी बाप है? सब कुछ बाप को बना दिया तो कोई याद नहीं

आयेगा और अगर नहीं बनाया तो याद आयेगा इसलिए बाप कहते हैं - सर्व सम्बन्ध से याद करो।

✚ आज तो सभी होली मनाने आये हैं। दुनिया वालों की होली और आपकी होली में कितना अन्तर है। लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा कि आपके भक्त आप लोगों के किये हुए कार्य को काँपी करने में होशियार हैं क्योंकि यह सब विधियां द्वापर में आने वाली आत्माओं ने बनाई हैं। तो पहला पहला जन्म था ना इसलिए उन्हीं की बुद्धि भी जैसे नियम है पहले सतोप्रधान फिर रजो तमो में आते हैं, तो उस समय उन्हीं की बुद्धि अपने हिसाब से सतो थी इसलिए आपकी एक-एक विशेषता को, आप सदा उत्साह में खुशी में रहते हो उसको उत्सव के रूप में मनाना शुरू किया है। जैसे शिवरात्रि पर भी बताया ना काँपी करने में कितने होशियार हैं। ऐसे अभी भी आप सदा संगम पर उत्साह में रहते हो तो आपका उत्साह उन्हींने उत्सव के रूप में यादगार बनाया है। तो होली में क्या करते हैं? आपने भी अपने जीवन को रंगा है लेकिन आपका रंग कौन सा है? आप सभी का रंग है बाप के संग का रंग। तो सारा समय बाप के संग के रंग में रहते हो ना! तो उन्हींने भी रंग तो बनाया लेकिन बॉडी कान्सेस है ना! तो स्थूल रंग बना दिया है। लेकिन आप सभी सदा यह कल्याणकारी संगम में इस रंग में, संग के रंग में रहते हो ना! रंग लगाया है ना! संग का रंग लग गया और होली इंगलिश में पवित्रता को कहा जाता है। तो संग के रंग में आप होली अर्थात् पवित्र बनते हो। पवित्र बने हैं ना! पवित्रता का व्रत सभी ने लिया है ना पक्का! नम्बरवार भले हैं लेकिन ब्राह्मण बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत लेना क्योंकि बाप सदा पवित्र है। है ही पवित्र स्वरूप। बनना नहीं पड़ता। स्वरूप ही पवित्रता है। तो होली की विशेषता जानते हो क्या है? पवित्र तो आप बनते हो लेकिन आप संग के रंग में डबल पवित्र बनते हो। पवित्र धर्म पितायें, महान आत्मायें बनते हैं लेकिन वह सिर्फ आत्मा को पवित्र बनाते हैं। शरीर और आत्मा दोनों ही पवित्र वह आप भविष्य में बनते हो। शुरू से लेके देखो द्वापर से जो भी आये हैं पवित्र बने हैं लेकिन डबल पवित्र कोई नहीं बना है। शरीर भी पवित्र आत्मा भी पवित्र।

✚ वर्तमान समय के प्रमाण यह चेक करो कि हर सब्जेक्ट में विधिस्वरूप कितने हैं और सिद्धि-स्वरूप कितने हैं? अर्थात् हर सब्जेक्ट में विधि में कितना समय जाता और सिद्धि का कितना समय अनुभव होता है? चारों ही सब्जेक्ट्स में मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों रूप में किस स्टेज तक पहुँचे हैं? यह चेकिंग करनी है। अभी महारथियों के लिये विधि का समय नहीं है बल्कि सिद्धि-स्वरूप के अनुभव करने का समय है। नहीं तो वर्तमान समय की अनेक परेशानियाँ, अब तक विधि में लगे रहने वाली आत्मा को अपनी शान से परे परेशान के प्रभाव में सहज लायेंगी। इसलिये जैसे गायन है कि पाण्डव अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दुःख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधानस्व रूप हो जायेगा, तो वर्तमान समय ऐसी स्थिति चाहिए। ऐसी है? जरा भी हलचल में तो नहीं आ जाते? क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा? अचल स्वरूप हो ना? अचल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही विजयी रत्न बनेंगे। बापदादा आज बच्चों की आज्ञा पर आज्ञाकारी का पार्ट बजा रहे हैं। प्रोग्राम प्रमाण नहीं आये हैं - तो फॉलो फादर। कल आत्माओं का आह्वान है, बाप का नहीं! आप लोग भी अपने विश्व-महाराजन् स्वरूप में व विश्व के मालिक पन के बाल स्वरूप में अच्छी तरह स्थित रहना। जिससे आपके अपने-अपने भक्त अल्पकाल के लिए भी दर्शन से प्रसन्न तो हो जायें। और फिर सभी अनुभव सुनाना कि सारे दिन में कितने भक्तों को बाप द्वारा भक्ति का फल दिलाया। अपने भक्तों को राजी तो करेंगे न? एक की यादगार नहीं है, एक के साथ आप सब भी हो। तो कल आप सबकी जन्माष्टमी मनायेंगे। सभी कृष्ण समान देवताई स्वरूप में तो होंगे न? आप सबके देवताई स्वरूप के स्मृति का दिन है। दुनिया वाले मनायेंगे और आप क्या करेंगे? वह मनायेंगे आप मनाने वालों के प्रति महादानी और वरदानी बनेंगे।

✚ (दादी को) आपकी सखी (दीदी) कहाँ हैं? गर्भ में? निमित्त गर्भ में है लेकिन अभी भी सेवा की परिक्रमा दे रही है। जैसे ब्रह्मा बाप के साथ साकार स्वरूप में जगत अम्बा के बाद साथी

रही। वैसे अभी भी अव्यक्त ब्रह्मा के साथ है। सेवा में साथीपन का पार्ट बजा रही है। निमित्त कर्मेन्द्रियों का बन्धन है लेकिन विशेष सेवा का बन्धन है। जैसे यज्ञ की स्थापना की कारोबार पहले विशेष रूप में जगत अम्बा ने सम्भाली। जगत अम्बा के बाद विशेष निमित्त रूप में इसी आत्मा (दीदी) को रहा। साथी भले और भी रहे लेकिन विशेष स्टेज पर और साकार ब्रह्मा के साथ पार्ट में रही। अभी भी ब्रह्मा बाप और दीदी की आपस में रूह-रूहान, मनोरंजन और सेवा के भिन्न-भिन्न पार्ट चलते रहते हैं। नई सृष्टि की स्थापना में भी विशेष ब्रह्मा के साथ-साथ अनन्य आत्माओं का अभी जोर-शोर से पार्ट चल रहा है! जैसे साकार दीदी के विशेष संस्कार, सेवा के प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने का, उमंग-उत्साह दिलाने का रहा। वैसे अभी भी वो ही संस्कार नई दुनिया की स्थापना के कार्य को वा कार्य के अर्थ निमित्त बने हुए ग्रुप को और तीव्रगति देने का पार्ट चल रहा है। दीदी का विशेष बोल याद है? उमंग उत्साह में लाने के लिए विशेष शब्द क्या थे? हमेशा यही शब्द रहे कि कुछ और नया करो। अभी क्या हो रहा है? बार-बार पूछती थी, नवीनता क्या लाई है? ऐसे अभी भी अव्यक्त ब्रह्मा से बार-बार इसी शब्दों से रूह-रूहान करती थी। एडवान्स पार्टी में भी उमंग-उत्साह ला रही है। अभी तक क्या किया है, क्या हो रहा है। वो ही संस्कार अभी भी प्रैक्टिकल में ला रही है। किसको भी बैठने नहीं देती थी ना। एडवान्स पार्टी को भी अभी स्टेज पर लाने का बाण भर रही है। कन्ट्रोलर के संस्कार थे ना। अभी एडवान्स पार्टी का कन्ट्रोलर है। सेवा के संस्कार अभी भी इमर्ज रूप में है। समझा! अभी दीदी कहाँ है? अभी तो विश्व का चक्कर लगा रही हैं। जब सीट ले लेंगी तो बता देंगे। अभी वह भी आपको सहयोग देने के बहुत बड़े-बड़े प्लैन्स बना रही है। अभी देरी नहीं लगेगी।



अगर सेवा को बढ़ाते हो और बढ़ाना ही है तो स्थापना को भी नज़दीक लाना है या नहीं? कौन लायेगा? बाप लायेगा? सभी लायेंगे। साथी हैं ना! अकेला बाप भी कुछ नहीं कर सकता, सिवाए आप साथी बच्चों के। देखो, बाप को अगर समझाना भी है तो भी शरीर का साथ लेना पड़ता है। बिना शरीर के साथ के बोल सकता है? चाहे पुरानी गाड़ी हो चाहे अच्छी हो, लेकिन आधार तो लेना पड़ता है। बिना आधार के कर नहीं सकता। ब्रह्मा बाप का साथ लिया ना,

तभी तो आप ब्राह्मण बनें। ब्रह्माकुमार कहते हो, शिवकुमार नहीं कहते हो। क्योंकि निराकार बाप को भी साकार का आधार लेना ही है। जैसे साकार ब्रह्मा का आधार लिया, अभी भी ब्रह्मा के अव्यक्त फरिश्ते के रूप में आधार लेने के बिना आपकी पालना नहीं कर सकते हैं। चाहे साकार में लिया, चाहे आकार रूप में लिया लेकिन आत्मा का आधार, साथ लेना ही पड़ता है। वैसे तो आलमाइटी अथॉरिटी है, जब जादूगर विनाशी खेल सेकण्ड में दिखा सकते हैं तो क्या आलमाइटी अथॉरिटी जो चाहे वह नहीं कर सकता है? कर सकता है? अभी-अभी विनाश को ला सकता है? अकेला ला सकता है? अकेला नहीं कर सकता। चाहे आलमाइटी अथॉरिटी भी है लेकिन आप साथियों के संबंध में बंधा हुआ है। तो बाप का आपसे कितना प्यार है। चाहे कर सकता है, लेकिन नहीं कर सकता। जादू की लकड़ी नहीं घुमा सकता है क्या? लेकिन बाप कहते हैं कि राज्य अधिकारी कौन बनेगा? बाप बनेगा क्या? आप बनेंगे। स्थापना तो कर ले, विनाश भी कर ले लेकिन राज्य कौन करेगा? बिना आपके काम चलेगा? इसलिए बाप को आप सभी को कर्मातीत बनाना ही है। बनना ही है ना कि बाप जबरदस्ती बनाये? बाप को बनाना है और आप सबको बनना ही है। यह है स्वीट ड्रामा। ड्रामा अच्छा लगता है ना? कि कभी कभी तंग हो जाते हो, ये क्या बना? यह बदलना चाहिए-सोचते हो? बाप भी कहते हैं - बना बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। रिपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता। ड्रामा में इस आपके अन्तिम जन्म को पावर्स हैं। है ड्रामा, लेकिन ड्रामा में इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म में बहुत ही पावर्स मिली हुई हैं।

✚ शक्तियों को भुजाएं धारी दिखाया है। अष्ट भुजाधारी, 16 भुजाधारी भी दिखाते हैं लेकिन रावण के सिर ज्यादा दिखाते हैं। यह क्यों? क्योंकि रावण माया की शक्ति पहले दिमाग को ही हलचल में लाती है। जिस समय कोई भी माया आती है तो सेकण्ड में उसके कितने रूप होते हैं? क्यों, क्या, ऐसे, वैसे, जैसे कितने क्वेश्चन के सिर पैदा हो जाते हैं। एक काटते हैं तो दूसरा पैदा हो जाता है। एक ही समय में 10 बातें बुद्धि में फौरन आ जाती हैं। तो एक बात को 10 सिर लग गये ना! इन बातों का तो अनुभव है ना? फिर एक-एक सिर अपना रूप दिखाता है।

यही 10 शीश के शस्त्रधारी बन जाते हैं। अभिमान के सिर वाली शक्ति नहीं लेकिन सदा सर्व भुजाधारी अर्थात् सर्व परिस्थिति में 'सहयोगी'। रावण के 10 सिर वाली आत्मायें हर छोटी-सी परिस्थिति में भी कभी सहयोगी नहीं बनेगी। क्यों, क्या, कैसे के सिर द्वारा अपना उल्टा अभिमान प्रत्यक्ष करती रहेंगी। क्यों का क्वेश्चन हल करेंगी तो फिर कैसे का सिर ऊंचा हो जायेगा अर्थात् एक बात को सुलझायेंगी तो फिर दुसरी बात शुरू कर देंगी। दूसरी बात को ठीक करेंगी तो तीसरा सिर पैदा हो जायेगा। बार-बार कहेंगे यह बात ठीक है लेकिन यह क्यों? वह क्यों? इसको कहा जाता है कि एक बात के 10 शीश लगाने वाली शक्ति सहयोगी कभी नहीं बनेंगे, सदा हर बात में अपोजीशन करेंगे। तो अपोजीशन करने वाले रावण सम्प्रदाय हो गये ना। चाहे ब्राह्मण बन गये लेकिन उस समय के लिए आसुरी शक्ति का प्रभाव होता है, वशीभूत होते हैं। और शक्ति स्वरूप हर परिस्थिति में, हर कार्य में सदा सहयोगी बन औरों को भी सहयोगी बनायेंगे। चाहे स्वयं को सहन भी करना पड़े, त्याग भी करना पड़े लेकिन सदा सहयोगी होंगे। सहयोग की निशानी भुजायें हैं, इसलिए कभी भी कोई संगठित कार्य होता है तो क्या शब्द बोलते हो? अपनी-अपनी अँगुली दो, तो यह सहयोग देना हुआ ना। अँगुली भी भुजा में है ना। तो भुजायें सहयोग की ही निशानी दिखाई हैं। तो समझा शक्ति की भुजायें और रावण के सिर। तो अपने को देखो कि सदा के सहयोगी मूर्त बने हैं?



पाण्डवों की विशेषता क्या है? पाण्डव यज्ञ सेवा के सहयोगी हैं। यज्ञ सेवा के सहयोगी सो सदा सहयोग लेने के पात्र। जो जितनी सच्ची दिल से, स्नेह से सहयोग देता है, उतना पद्म गुणा बाप से सहयोग लेने का अधिकारी बनता है। बाप पूरा ही सहयोग का हिसाब चुक्तु करते हैं। बड़े कार्य को भी सहज करने का चित्र पर्वत का दिखाते हैं। (पर्वत को अँगुली दी) तो पाण्डव विशेष सेवा के सहयोगी बन कोई भी कार्य सहज कर लेते हैं। जिस कार्य को लोग मुश्किल समझते हैं, वह सहज ही खेल के समान कर लेते हो ना? सेवा नहीं समझते, ड्यूटी नहीं समझते लेकिन रूहानी खेल अनुभव करते हो। खेल के लिए किसको भी बुलाओ तो ना नहीं करेगा और कभी थकेगा भी नहीं। तो आप सभी भी यज्ञसेवा में थकते नहीं हो ना। रूहानी खेल है, इसलिए

थकावट भी नहीं होती है और ना करने चाहो तो भी नहीं कर सकते हो क्योंकि ईश्वरीय बंधन में बंधे हुए हो। यह बंधन ही नजदीक सम्बन्ध में लाने वाला है। जितनी जो सेवा करता है उतना सेवा का फल - समीप सम्बन्ध में आता है। यहाँ के सेवाधारी वहाँ के राज्य फैमिली (परिवार) के अधिकारी बनेंगे। यहाँ जितनी हार्ड (सख्त) सेवा करते, उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं, वह वहाँ काम करेंगे। हिसाब है ना। एक-एक सेकण्ड का, एक-एक काम का हिसाब-किताब बाप के पास है। इसलिए, एक-एक सेकण्ड का हिसाब कर चुक्तु भी करता है। गिनती करके हिसाब देता है, ऐसे नहीं देता। लेकिन पद्मगुणा देता है। तो आज के सेवाधारी कल के राज-अधिकारी बनते हैं और आज के राज्य करने वाले कल के सेवा करने वाले बनते हैं। सेवा-भाव सदा ऊँचा उठाता है। नाम सेवा है लेकिन सेवा वाला खाता सदैव मेवा है! तो मेवा खाने वाले सेवाधारी हैं, वैसे सेवाधारी नहीं। एक दो, पद्म लो। तो पाण्डवों का गायन है! सेवा करने में बहुत मजबूत रहे हैं, इसलिए वह मजबूत शरीर दिखाते हैं। लेकिन हैं मजबूत दिल वाले, मजबूत मन वाले। वह मन व दिल कैसे दिखायें, इसलिए शरीर दिखा दिया है। खुशी की खुराक बहुत खाते हैं, इसलिए मोटे दिखाते हैं।

✚ ब्रह्मा बाप बोले कि ऐसे बच्चों पर बाप की नज़र गई है कि जिनके लिए दुनिया वालों का यह सोचना भी असम्भव है कि ऐसी आत्मायें भी श्रेष्ठ बन सकती हैं। जो दुनिया की नजरों में अति साधारण आत्मायें हैं उन्हों को बापदादा ने अपने नैनों के नूर बना लिया है। बिल्कुल ही नाउम्मीद आत्माओं को विश्व के आगे सर्वश्रेष्ठ आत्मायें बना दिया है। तो बापदादा अपनी सेना के महावीरों को, अस्त्रधारी आत्माओं को देख रहे थे कि कौन-कौन आलमाइटी अथार्टी पाण्डव सेना में मैदान पर उपस्थित हैं। क्या देखा होगा? कितनी वण्डरफुल सेना है! दुनिया के हिसाब से अनपढ़ दिखाई देते हैं लेकिन पाण्डव सेना में टाइटल मिला है - 'नालेजफुल'। सभी नालेजफुल हो ना? शरीर से चलना, उठना भी मुश्किल है लेकिन पाण्डव सेना के हिसाब से सेकण्ड में परमधाम तक पहुँच कर आ सकते हैं। वे तो एक हिमालय के ऊपर झण्डा लहराते हैं लेकिन शिव शक्ति पाण्डव सेना ने तीनों लोकों में अपना झण्डा लहरा दिया है। भोले भाले

लेकिन ऐसे चतुर सुजान हैं जो विचित्र बाप को भी अपना बना दिया है। तो ऐसी सेना को देख बापदादा मुस्करा रहे थे। चाहे देश में चाहे विदेश में सच्चे ब्राह्मण फिर भी साधारण आत्मायें ही बनते हैं। जो वर्तमान समय के वी. आई. पीज. गाये जाते, सबकी नजरों में हैं लेकिन बाप की नजरों में कौन हैं? वे नामीग्रामी, कलियुगी आत्माओं द्वारा स्वार्थ के कारण गाये जाते वा माने जाते हैं। उन्हीं की अल्पकाल की कलियुगी जमाने की महिमा है। अभी-अभी महिमा है, अभी-अभी नहीं है। लेकिन आप संगमयुगी पाण्डव सेना के पाण्डव और शक्तियों की महिमा सारा कल्प ही कायम रहती है क्योंकि अविनाशी बाप के मुख द्वारा जो महिमा गाई जाती वह अविनाशी बन जाती है। तो कितना नशा रहना चाहिए! जैसे आजकल की दुनिया में कोई नामीग्रामी श्रेष्ठ आत्मा गुरु के रूप में मानते हैं जैसे जिनको लौकिक गुरु भी अगर कोई बात किसको कह देते हैं तो समझते हैं गुरु ने कहा है तो वह सत्य ही होगा। और उसी फलक में रहते हैं। निश्चय के आधार पर नशा रहता है। ऐसे ही सोचो आपकी महिमा कौन करता है?



इतने श्रेष्ठ शक्तिशाली वरदान मिले हुए हैं - न सिर्फ अपने प्रति कार्य में लगाए फल प्राप्त कर सकते हो लेकिन अन्य आत्माओं को भी वरदाता बाप से वरदान प्राप्त कराने के योग्य बना सकते हो! यह संगमयुग का वरदान 21 जन्म भिन्न रूप से साथ में रहता है। यह संगम का रूप अलग है और 21 जन्म यही वरदान जीवन के हिसाब से चलता रहता है। लेकिन वरदाता और वरदान प्राप्त होने का समय अभी है। तो यह चेक करो कि सर्व वरदान कार्य में लगाते सहज आगे बढ़ रहे हो? जब भक्त आत्मायें भी मेहनत कर थक जाती हैं तो बाप से वरदान ही मांगती हैं। आपके पास भी जब लोग आते हैं, योग लगाने की मेहनत नहीं करने चाहते तो क्या भाषा बोलते हैं? कहते हैं - सिर्फ हमें वरदान दे दो, माथे पर हाथ रख लो। आप ब्राह्मण बच्चों के ऊपर वरदाता बाप का हाथ सदा है। श्रेष्ठ मत ही हाथ है। स्थूल हाथ तो 24 घण्टे नहीं रखेंगे ना! यह बाप के श्रेष्ठ मत का वरदान रूपी हाथ सदा बच्चों के ऊपर है। अमृतवेले से लेकर रात को सोने तक हर श्वास के लिए, हर संकल्प के लिए, हर कर्म के लिए श्रेष्ठ मत का हाथ है ही। इसी वरदान को विधिपूर्वक चलाते चलो तो कभी भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। जैसे देवताओं के लिए गायन है - इच्छा - मात्रम् - अविद्या। यह है फरिश्ता जीवन की विशेषता। देवताई जीवन

में तो इच्छा की बात ही नहीं। ब्राह्मण जीवन सो फरिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते। किसी भी शुद्ध कर्म वा व्यर्थ कर्म वा विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में बंधकर करना - इसको कर्मातीत अवस्था नहीं कहेंगे। एक ही कर्म का सम्बन्ध, एक है बन्धन। तो जैसे यह गायन है - हृद की इच्छा से अविद्या, ऐसे फरिश्ता जीवन वा ब्राह्मण जीवन अर्थात् 'मुश्किल' शब्द की अविद्या, बोझ से अविद्या, मालूम ही नहीं कि वह क्या होता है! तो वरदानी आत्मा अर्थात् मुश्किल जीवन से अविद्या का अनुभव करने वाली। इसको कहा जाता है - वरदानी आत्मा। तो बाप समान बनना अर्थात् सदा वरदाता से प्राप्त हुए वरदानों से पलना, सदा निश्चिन्त, निश्चित विजय अनुभव करना।



महान आत्मा बनकर हर संकल्प और हर कर्म करते हो? समझना है लक्ष्य और करना वह है प्रैक्टिकल। सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ महान आत्मा हूँ - इस स्मृति से किसके भी सामने जाओ तो क्या अनुभव करेंगे? आपकी महानता के आगे सभी के सिर झुक जायेंगे। जैसे आप के जड़ चित्रों के सामने कितना भी कोई आज कलियुग के महान् मर्तबे वाला जाये तो क्या होगा? सिर झुकायेंगे। जब चित्रों के आगे सिर झुक जाता है तो क्या चैतन्य चरित्रवान, सर्व गुणों में बाप समान चैतन्य मूर्त्त के सामने सिर नहीं झुकायेंगे? या समझते हो कि यह रिजल्ट भविष्य की है। अभी होना है? कब? अन्त में भी कितना समय पड़ा है? अगर झुक कर झुकाया तो क्या बड़ी बात है। ऐसी महान् आत्मा बनो जो किसके भी सामने जाओ तो उसको साक्षात्कार हो। फिर बताओ वह अपना सिर आप साक्षात्कारमूर्त्त के आगे दिखा सकेंगे? झुक जायेंगे। जब अभी यह सिर झुकायेंगे तब आपके जड़ चित्रों के आगे स्थूल सिर झुकायेंगे। जो जितनों का अभी सिर झुकायेंगे उतने उनके जड़ चित्रों के आगे सिर झुकायेंगे। प्रजा के साथ भक्त भी बनाने हैं। सारे कल्प की प्रारब्ध की नूँध अभी ही होनी है। वारिस भी बनाने हैं और प्रजा भी अभी बनानी है। द्वापर युग के भक्त भी अभी बनेंगे। समझा? आपके भक्तों में भी आप लोगों द्वारा भक्ति के अर्थात् भावना के संस्कार अभी भरने हैं। यह बहुत ऊँचे हैं -- सिर्फ इस भावना के संस्कार भरने से भक्त बन जायेंगे। तो भक्त भी अभी बनाने हैं। अभी तक तो प्रजा बनाने में ही मेहनत कर रहे हो। जैसे-जैसे आप लोगों की स्थिति प्रत्यक्ष होती जायेगी, वैसे-वैसे

आपके वारिस अर्थात् रायल फैमिली, प्रजा और भक्त तीनों ही प्रत्यक्ष होते जायेंगे। अभी तो मिक्स हैं। क्योंकि अभी आपकी स्थिति ही फिक्स नहीं हुई है। इसलिए वह भी मिक्स हो जाते हैं। फिर प्रत्यक्ष दिखाई पड़ेंगे। आप महसूस करेंगे कि भक्त हैं। यह भी महसूस करेंगे क्योंकि त्रिकालदर्शी का गुण प्रत्यक्ष हो जायेगा। तो अपनी भी तीनों कालों की प्रारब्ध को स्पष्ट देख सकेंगे। दिव्य-दृष्टि से नहीं, प्रत्यक्ष साक्षात्कार करेंगे।

✚ जमा का खाता किसने कितना जमा किया है? चाहे मन्सा में, चाहे वाचा से, चाहे कर्मणा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से - आप सभी का चैलेन्ज है, अपने को ही नहीं लेकिन विश्व के आगे बोलते हो कि एक जन्म में 21 जन्म का जमा करना है। यह बोलते हो ना! जानते हो ना? तो एक जन्म में 21 जन्मों का जमा करना है तो कितना करना पड़े? अभी मन्सा में जो जमा करते हो उससे एक तो आधाकल्प आपको मन्सा से वृत्ति या वायब्रेशन फैलाने की आवश्यकता नहीं है, 21 जन्म यह पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं है और दूसरा द्वापर से लेकर जो आपके चित्र भिन्न-भिन्न रूप में पूजे जाते हैं, आपको पता नहीं है कि हम किस रूप में पूजे जाते हैं लेकिन पूज्य तो हो ना! 33 करोड़ देवताओं की मान्यता है तो आधाकल्प माननीय और पूजनीय बनते हो। उन जड़ चित्रों द्वारा भी आपकी मन्सा सेवा आटोमेटिक होती रहेगी। कोई भी भगत आपके जड़ चित्र के सामने आयेंगे तो उनको मन्सा वायब्रेशन से शान्ति, खुशी, शक्ति की अनुभूति होगी, यह मन्सा के जमा का प्रभाव होगा। और जो वाणी में जमा करते हैं, खाता अच्छा है, उन्हीं का फिर वाणी द्वारा गायन और पूजन ज्यादा होता है। वाणी द्वारा उन्हीं की महिमा और पूजा युक्तियुक्त होती है। काम चलाऊ पूजा नहीं, युक्तियुक्त पूजा होती है, क्योंकि वाणी द्वारा आप सभी उन्हीं को सुख देते हो, शान्ति देते हो तो आधाकल्प आपका वाणी से बहुत युक्तियुक्त गायन होगा। एक गायन होगा और दूसरा युक्तियुक्त पूज्य बनेंगे। और कर्म द्वारा जो सदा करने वाली आत्मायें हैं, आधा दिन किया, आधा दिन नहीं किया, कभी किया, कभी नहीं किया, नहीं। लेकिन सदा और हर कर्म में अगर आपने जमा किया है, तो आपके हर कर्म की पूजा होगी। बहुत थोड़े देवताओं की हर कर्म की पूजा होती है। कभी-कभी

वालों की सारे दिन में कभी-कभी होगी। और स्नेह, सहयोग वाली जो आत्मायें हैं, स्नेह से सहयोग से जो जमा करते हैं उन्हीं की चाहे छोटी सी मूर्ति भी हो, मन्दिर भले छोटा हो लेकिन उस मूर्ति से स्नेह और सहयोग का वरदान प्रैक्टिकल में अनुभव होगा। समझा। अभी अपने को चेक करना कि चारों बातों में मेरा जमा का खाता कितना है?

✚ जितनी-जितनी दिव्यता की शक्ति हर कर्म में लायेंगे उतना ही सबके मन से, मुख से स्वतः ही यह बोल निकलेंगे कि 'यह दिव्य दर्शनीय मूर्त हैं।' अनेक भक्तों को जो दर्शन के अभिलाषी हैं, ऐसे दर्शन-अभिलाषी आत्माओं के सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी। और प्रसन्नता के कारण आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं पर प्रसन्नता के पुष्प वर्षा करेंगी। हरेक आत्मा के द्वारा यही प्रसन्नता के बोल निकलेंगे, जन्मजन्म की जो प्यास थी वा आश थी कि मुक्ति को प्राप्त हो जाएं वा एक झलक मात्र दर्शन हो जाएं, आज मुक्ति वा मोक्ष का अनेक जन्मों का संकल्प पूरा हो गया। वा दर्शन के बजाए दर्शनीय मूर्त मिल गए। हमारे ईष्ट हमें मिल गए। इसी थोड़े समय की प्राप्ति के नशे और खुशी में जन्म-जन्म के दुख दर्द भूल जायेंगे। थोड़े से समय की यह समर्थ स्थिति आत्माओं को यथाशक्ति भावना के फलस्वरूप कुछ पापों से भी मुक्त कर देगी। इसलिए आत्मायें स्वयं को यथा शक्ति हल्का अनुभव करेंगी। इसलिए ही पाप हरो देवा वा पाप नष्ट करने वाली देवी, शक्ति, जगत मां यह बोल जरूर बोलते हैं। किसी भी देवी वा देवता के पास जाते हुए यह भावना वा निश्चय रखते हैं कि यह हमारे पाप नाश कर ही लेंगे। और अब अन्त में देवताओं के साथ गुरु लोग भी यही टैम्पटेशन देते हैं कि मैं तुम्हारे पाप नाश कर दूँगा। भक्त भी इसी भरोसे से गुरु करते हैं। लेकिन यह रसम आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं से प्रत्यक्ष रूप में होने का यादगार चला आ रहा है। ऐसे जल्दी ही यह दिव्य दृश्य विश्व के सामने आया कि आया! अभी अपने आपको देखो कि हम दिव्य दर्शनीय मूर्त दर्शन योग्य, सर्व शृंगार सम्पन्न बने हैं? बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप में स्थित हैं? पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते, जब याद के ज्वाला स्वरूप बनेंगे - ऐसे बने हैं? दर्शन के लिए पर्दा खोलते हैं, पर्दा हटता और दर्शन होता है। ऐसे सम्पन्न दर्शनीय

स्वरूप बने हो जो समय का पर्दा हट जाए और आप दिव्य दर्शनीय मूर्त प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष हो जाओ। वा दर्शनीय मूर्त अभी तक सम्पन्न सज रहे हो? दर्शन सदा सम्पन्न स्वरूप का होता है।

✚ व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्त व वस्तु में भावना रहना कि यह प्रिय है व अच्छी है, यह व्यक्त-वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रूप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते। जैसे आप लोग चित्र में कृष्ण को सृष्टि के ग्लोब पर दिखाते हो-ऐसा ही चित्र अपनी प्रैक्टिकल स्थिति का बनाओ। इस व्यक्त देश व इस पुरानी दुनिया से उपराम। व्यक्त भाव और व्यक्त वस्तुओं आदि सबसे उपराम अर्थात् इनके ऊपर साक्षी होकर खड़े रहें। जैसे पाँव के नीचे ग्लोब दिखाते हैं व ग्लोब के ऊपर बैठा हुआ दिखाते हैं अर्थात् उनका मालिकपन व अधिकारीपन दिखाते हैं तो ऐसे अपना चित्र बनाओ। इस पुरानी दुनिया में, जैसे अपनी स्व-इच्छा से, अपने रचे हुए संकल्प के आधार से अव्यक्त से व्यक्त में आते, व्यक्ति व वस्तुओं के आकर्षण के अधीन होकर नहीं। जैसे लिफ्ट में चढ़ते हो, तो स्विच अपने हाथ में होता है चाहे फर्स्ट फ्लोर पर जाओ, चाहे सेकेण्ड फ्लोर पर जाओ। जब स्विच कंट्रोल से बाहर हो जाता है तब वाया रिज़ल्ट होती है? बीच में लटक जावेंगे ना? ऐसे ही यह स्मृति का स्विच अपने कंट्रोल में रखो। जहाँ चाहो, जब चाहो और जितना समय चाहो वैसे अपने स्थान को व स्थिति को सैट कर सको, क्या ऐसे अधिकारी बने हो? क्या काल पर विजय प्राप्त की है? काल अर्थात् समय। तो काल पर विजयी बने हो? अगर पाण्डव सेना की व शक्ति सेना की यह स्टेज अन्त में आयेगी तो साइलेन्स पॉवर तो साइन्स से कम हो गई। क्योंकि साइंस ने तो अभी भी इन तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है। प्रदर्शनी में, आप लोग चित्र दिखाते हो ना, कि रावण ने चार तत्वों पर विजय प्राप्त की है, उसमें काल भी दिखाते हो न? जब रावण ने अर्थात् रावण की शक्ति साइंस ने अभी भी काफी हद तक तत्वों पर विजय प्राप्त कर ली है, तो साइंस आपसे पॉवरफुल हुई ना? जब साइन्स की

शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत दे रही है तो साइलेन्स की शक्ति अपना प्रत्यक्ष सबूत क्या अन्त में देगी? समय पर विजय अर्थात् काल पर विजय। इसकी परसेन्टेज अभी कम है।

✚ सबसे ज्यादा यादगार किसके बनते हैं? और अनेक प्रकार के यादगार किसके बनते हैं? बाप के वा बच्चों के? बाप की यादगार का एक ही रूप बनता है लेकिन आप लोगों के अर्थात् श्रेष्ठ आत्माओं के अनेक रूप और रीति-रस्म के अनुसार बने हुये हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं के भिन्न-भिन्न कर्म का भी यादगार बना हुआ है। तो जबकि बाप से भी ज्यादा अनेक प्रकार के यादगार बने हुए हैं, वह कैसे? आपके प्रैक्टिकल श्रेष्ठ कर्म के, श्रेष्ठ स्थिति के ही यादगार बने हैं ना। तो जो भी संकल्प वा कर्म करते हो वा वचन बोलते हो, उस हर वचन और कर्म को चेक करो कि वह वचन वा बोल ऐसा है जो हमारी यादगार बने? यादगार वह कर्म वा बोल होते हैं जो याद में रह कर के करते हो। जैसे कोई चीज़ गाड़ी जाती है, जैसे झण्डे को गाड़ते हो ना अर्थात् फाउंडेशन डालते हो। कहते हैं - इस चीज़ को अच्छी तरह से गाड़ लेना। ऐसे ही याद से किये हुये कर्म सदा के लिये यादगार बन जाता है। जैसे कोई चीज़ दुनिया के आगे रखनी होती है तो कितनी सुन्दर और स्पष्ट बनाई जाती है! साधारण चीज़ को किसी के आगे नहीं रखेंगे। कोई विशेषता होती है तब किसी के आगे रखी जाती है। तुम्हारे यह अभी के हर कर्म वा हर बोल विश्व के आगे यादगार के रूप में आने वाले हैं। ऐसा अटेन्शन रखते हुये व ऐसी स्मृति रखते हुये हर कर्म वा बोल बोलो जो कि यादगार बनने के योग्य हो। अगर यादगार बनने के योग्य नहीं है तो वह कर्म नहीं करो - यह स्मृति सदा रखो। जो व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ बोल वा साधारण कर्म होते हैं, उनका यादगार बनेगा क्या? यादगार बनने के लिये याद में रह कर कर्म करो। जैसे बाप को देखो कि याद में रहते हुये कर्म करने से ही कर्म आज आप सभी के दिल में यादगार बन गया है ना। ऐसे ही अपने कर्मों को भी विश्व के सामने यादगार रूप बनाओ। यह तो सहज है ना। जबकि निश्चय है कि यह सभी अनेक प्रकार के यादगार हमारे ही हैं; तो किये हुये अनेक बार के श्रेष्ठ कर्म वा यादगार स्वरूप अब फिर से रिपीट करने में मुश्किल होती है क्या? कल्प-कल्प के किये हुये को सिर्फ रिपीट करना है। तो मास्टर त्रिकालदर्शा बन अपने कल्प पहले के यादगार को सामने रख फिर से सिर्फ रिपीट करो। इस स्मृति के पुरुषार्थ में सदा रहते आये हो।

✚ तो पिचकारी बड़ी सभी की भरी हुई है ना! छोटी-छोटी तो नहीं जो एक बार में ही समाप्त हो जाए। फिर बार-बार भरना पड़े। ऐसी मेहनत करने की भी दरकार नहीं। सभी को अविनाशी रंग से रंग लो। होली बनाने की होली मनाओ। आपकी तो होली हो गई है ना - कि मनानी है? होली हो गई अर्थात् होली मना ली। रंग लगा हुआ है ना। यह रंग साफ नहीं करना पड़ेगा। स्थूल रंग लगाते भी खुशी से हैं और फिर उनसे बचने भी चाहते हैं। और आपका यह रंग तो ऐसा है जो कहेंगे और भी लगाओ। इससे कोई डरेगा नहीं। उस रंग से तो डरते हैं - आँख में न लग जाए। यह तो कहेंगे जितना लगाओ उतना अच्छा। तो ऐसी होली मना ली है ना। होली बन गये! यह पवित्र बनने बनाने का यादगार है। यहाँ भारत में तो अनेक कहानियाँ बना दी हैं क्योंकि कहानियाँ सुनने की रूचि रखते हैं। तो हर उत्सव की कहानियाँ बना दी हैं। आपकी जीवन कहानी से भिन्न-भिन्न छोटी-छोटी कहानियाँ बना दी हैं। कोई राखी की कहानी बना दी कोई होली की कहानी, कोई जन्म की कहानी बना दी। कोई राज्य दिवस की बना दी। लेकिन यह हैं सब आपके जीवन कहानियों की कहानियाँ। द्वापर में व्यवहार में भी इतना समय नहीं देना पड़ता था, फ्री थे। संख्या भी आज के हिसाब से कम थी। सम्पत्ति भी रजोप्रधान थी - स्थिति भी रजोप्रधान थी। इसलिए बिजी रहने के लिए यह कथा, कहानियाँ, कीर्तन यह साधन अपनाये हैं। कुछ तो साधन चाहिए ना। आप लोग तो फ्री होते हो तो सेवा करते हो या याद में बैठ जाते हो। वो उस समय क्या करें! प्रार्थना करेंगे या कथा कीर्तन करेंगे। इसलिए फ्री बुद्धि हो करके कहानियाँ बड़ी अच्छी-अच्छी बनाई हैं। फिर भी अच्छा है जो अपवित्रता में ज्यादा जाने से बच गये। आजकल के साधन तो ऐसे हैं जो 5 वर्ष के बच्चे को ही विकारी बना देते हैं। और उस समय फिर भी कुछ मर्यादायें भी थीं- लेकिन हैं सब आपका यादगार। इतना नशा और खुशी है ना कि हमारा यादगार मना रहे हैं। हमारे गीत गा रहे हैं। कितने प्यार से गीत गाते हैं। इतने प्यार स्वरूप आप बने हैं तब तो प्यार से गाते हैं। समझा- होली का यादगार क्या है! सदा खुश रहो, हल्के रहो - यही मनाना है। अच्छा - कभी मूड आफ नहीं करना। सदा होली मूड, लाइट मूड! हैपी मूड। अभी बहुत अच्छे समझदार बनते जाते हैं।

✚ बड़ी दादियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात - आदि से अब तक जो हर कार्य में साथ चलते आ रहे हैं, उन्हीं की यह विशेषता है - जैसे ब्रह्मा बाप हर कदम में अनुभवी बन अनुभव की अर्थारिटी से विश्व के राज्य की अर्थारिटी लेते हैं ऐसे ही आप सभी भी बहुतकाल के हर प्रकार के अनुभव की अर्थारिटी के कारण बहुतकाल के राज्य की अर्थारिटी में भी साथी बनने वाले हो। जिन्होंने आदि से संकल्प किया - जहाँ बिठायेंगे, जैसे चलायेंगे वैसे चलते हुए साथ चलेंगे। तो साथ चलने का पहला वायदा बापदादा को निभाना ही पड़ेगा। ब्रह्मा बाप के भी साथ रहने वाले हो। राज्य में भी साथ रहेंगे, भक्ति में भी साथ रहेंगे। जितना अभी बुद्धि से सदा का साथ रहता है उसी हिसाब से राज्य में भी सदा साथ हैं। अगर अभी थोड़ा-सा दूर तो कोई जन्म में दूर के हो जायेंगे। कोई जन्म में नजदीक के। लेकिन जो सदा ही बुद्धि से साथ में रहते हैं, वह वहाँ भी साथ-साथ रहेंगे। साकार में तो आप सब 14 वर्ष साथ रहे, संगमयुग के 14 वर्ष कितने वर्षों के समान हो गये। संगमयुग का इतना समय साकार रूप में साथ रहे हो, यह भी बहुत बड़ा भाग्य है। फिर बुद्धि से भी साथ हो, घर में भी साथ होंगे, राज्य में भी साथ होंगे। भले तख्त पर थोड़े बैठते हैं लेकिन रॉयल फैमली के नजदीक सम्बन्ध में, सारे दिन की दिनचर्या में साथ रहने में पार्ट जरूर बजाते हैं। तो यह आदि से साथ रहने का वायदा सारा कल्प ही चलता रहेगा। भक्ति में भी काफी समय साथ रहेंगे। यह पीछे के जन्म में थोड़ा-सा कोई दूर, कोई नजदीक लेकिन फिर भी साथ सारा कल्प किसी न किसी रूप से रहते हैं। ऐसा वायदा है ना! इसलिए आप लोगों को सभी किस नजर से देखते हैं! बाप के रूप हो। इसी को ही भक्ति में उन्होंने कहा है - यह सब भगवान के रूप हैं! क्योंकि बाप समान बनते हो ना! आपके रूप से बाप दिखाई देता है इसलिए बाप के रूप कह देते हैं। जो बाप के सदा साथ रहने वाले हैं उनकी यही विशेषता होगी, उनको देखकर बाप याद आयेगा, उनको नहीं याद करेंगे लेकिन बाप को याद करेंगे। उन्हीं से बाप के चरित्र, बाप की दृष्टि, बाप के कर्म, सब अनुभव होंगे। वह स्वयं नहीं दिखाई देंगे लेकिन उन द्वारा बाप के कर्म वा दृष्टि अनुभव होगी। यही विशेषता है अनन्य, समान बच्चे की।

✚ तो भक्ति की भी आदि आत्माएं हो और ज्ञान-मार्ग की भी आदि आत्माएं हो। आदि की भक्ति में अव्यभिचारी भक्ति होने कारण भक्ति का आनन्द, सुख उस समय के प्रमाण कम नहीं हुआ। वह सुख और आनन्द भी अपने स्थान पर श्रेष्ठ रहा। भक्त-माला में आप हो? जब भक्ति आपने शुरू की तो भक्त-माला में नहीं हो? डबल फॉरेनर्स भक्त-माला में थे? भक्त बने या भक्त-माला में थे? अभी सब सोच रहे हैं कि हम थे वा नहीं थे! विजय माला में भी थे, भक्त-माला में भी थे? पुजारी तो बने लेकिन भक्त-माला में थे? भक्त-माला अलग है। आप तो ज्ञानी सो भक्त बने। वह हैं ही भक्त। तो भक्त-माला और ज्ञानियों की माला में अंतर है। ज्ञानियों की माला है - 'विजय माला'। और जो सिर्फ भक्त हैं, ऐसे नौधा भक्त जो भक्ति के बिना और बात सुनना ही नहीं चाहते, भक्ति को ही श्रेष्ठ समझते हैं। तो भक्त-माला अलग है, ज्ञान माला अलग है। भक्ति जरूर की लेकिन भक्त-माला में नहीं कहेंगे। क्योंकि भक्ति का पार्ट बजाने के बाद आप सबको ज्ञान में आना है। वह नौधा भक्त हैं और आप नौधा ज्ञानी हो। आत्मा में संस्कारों का अंतर है। भक्त माना सदा मंगता के संस्कार होंगे। मैं नीच हूँ, बाप ऊँचा है - यह संस्कार होंगे। वह रॉयल भिखारी हैं और आप आत्माओं में अधिकारीपन के संस्कार हैं। इसलिए परिचय मिलते ही अधिकारी बन गये। समझा? भक्तों को भी कोई जगह दो ना। दोनों में आप आयेंगे क्या? उन्हीं का भी आधाकल्प है, आपका भी आधाकल्प है। उन्हीं को भी गायनमाला में आना ही है। फिर भी दुनिया वालों से तो अच्छे हैं। और तरफ तो बुद्धि नहीं है, बाप की तरफ ही है। शुद्ध तो रहते हैं। पवित्रता का फल मिलता है - "गायन योग्य होने का"। आपकी पूजा होगी। उन्हीं की पूजा नहीं होती, सिर्फ स्टेच्यू बनाके रखते हैं गायन के लिए। मीरा का कभी मंदिर नहीं होगा। देवताओं मिसल मीरा की पूजा नहीं होती, सिर्फ गायन है। अभी लास्ट जन्म में चाहे किसी को भी पूज लेवें। धरनी को भी पूजें तो वृक्ष को भी पूजें। लेकिन नियम प्रमाण उन्हीं का सिर्फ गायन होता है, पूजन नहीं। आप पूज्य बनते हो। तो आप पूजनीय आत्माएं हो- यह नशा सदा स्मृति में रखो। पूज्य आत्मा कभी कोई अपवित्र संकल्प को टच भी नहीं कर सकती। ऐसे पूज्य बने हो! अच्छा!

✚ बाप एक, जन्म एक, वर्सा एक, परिवार एक, वेला भी एक संगमयुग, फिर नम्बर क्यों? सर्व प्राप्ति अर्थात् तकदीर सभी को बेहद की मिली है। अन्तर क्या हुआ? बेहद की तकदरी को जीवन के कर्म की तस्वीर में लाना इसमें यथा शक्ति होने के कारण अन्तर पड़ जाता है। ब्राह्मण जीवन अर्थात् तकदीर को तस्वीर में लाना, जीवन में लाना। हर कर्म में लाना, हर संकल्प से, बोल से, कर्म से तकदीरवान को तकदीर अनुभव हो अर्थात् दिखाई दे। ब्राह्मण अर्थात् तकदीरवान आत्मा के नयन, मस्तक, मुख की मुस्कराहट हर कदम सभी को श्रेष्ठ तकदीर की अनुभूति करावे। इसको कहा जाता है - तकदीर की तस्वीर बनाना। तकदीर को अनुभव की कलम से, कर्म के कागज के तस्वीर में लाना। तकदीर के तस्वीर की चित्र रेखा बनाना। तस्वीर तो सभी बना रहे हो लेकिन किसकी तस्वीर सम्पन्न है और किसकी तस्वीर कुछ न कुछ किसी बात में कम रह जाती है। अर्थात् प्रैक्टिकल जीवन में लाने में किसकी मस्तक रेखा अर्थात् मंसा, नयन रेखा अर्थात् रूहानी दृष्टि, मुख की मुस्कराहट की रेखा अर्थात् सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप सन्तुष्ट आत्मा। सन्तुष्टता ही मुस्कराहट की रेखा है। हाथों की रेखा अर्थात् श्रेष्ठ कर्म की रेखा। पांव की रेखा अर्थात् हर कदम श्रीमत प्रमाण चलने की शक्ति। इसी प्रकार तकदीर की तस्वीर बनाने में किसका किस में, किसका किस में अन्तर पड़ जाता है। जैसे स्थूल तस्वीर भी बनाते हैं तो कोई को नैन नहीं बनाने आते, कोई को टांग नहीं बनाने आती। कोई मुस्कराहट नहीं बना सकते। तो फर्क पड़ जाता है ना। जितना सम्पन्न चित्र उतना मूल्यवान होता है। वो ही एक का चित्र लाखों का मूल्य कमाता और कोई 100 भी कमाता। तो अन्तर किस बात का हुआ? सम्पन्नता का। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें भी सर्व रेखाओं में सम्पन्न न होने कारण किसी एक रेखा, दो रेखा की सम्पूर्णता न होने कारण नम्बरवार हो जाते हैं। तो आज तकदीरवान बच्चों की तस्वीर देख रहे थे। जैसे स्थूल तकदीर में भी भिन्न-भिन्न तकदीर होती है। वैसे यहाँ तकदीर की भिन्न-भिन्न तस्वीरें देखीं। हर तस्वीर में मुख्य मस्तक और नयन तस्वीर की वैल्यु बढ़ाते हैं। वैसे यहाँ भी मंसा वृत्ति की शक्ति और नयन के रूहानी दृष्टि की शक्ति, इसका ही महत्व होता। यही तस्वीर का फाउन्डेशन हैं।



“इच्छा-मात्रम्-अविद्या” - यह गायन किसका है? देवताओं का या ब्राह्मणों का? देवताई जीवन में तो इच्छा वा न इच्छा का सवाल ही नहीं। यहाँ नॉलेज है - इच्छा क्या है और निरइच्छा क्या है। तो नॉलेज होते “इच्छा-मात्रम्-अविद्या” होना इसी को ही ब्राह्मण-जीवन कहा जाता है। किस चीज़ की इच्छा है? जब रचयिता अपना हो गया तो रचना कहाँ जायेगी? रचयिता को अपना बना लिया है ना, अच्छी तरह से बनाया है, ढीला-ढीला तो नहीं? माताओं के लिए गायन है कि भगवान को भी रस्सी से बांध लिया। तो अच्छी तरह से बांधा है? यह है स्नेह की रस्सी। तो स्नेह की रस्सी मजबूत है ना, यह कभी टूट नहीं सकती। यह तो निमित्त मात्र दृष्टांत हैं। जहाँ बाप है वहाँ सब-कुछ है, इसलिए तो गाते हो - बाप मिला सब-कुछ मिला। जो भी मिला है वह इतना मिला है जो सर्व इच्छाएं इकट्ठी करो उनसे भी पद्मगुणा ज्यादा है, उसके आगे इच्छा क्या हुई? जैसे सूर्य के आगे दीपक। सर्व प्राप्तियों के आगे कितनी भी अच्छी इच्छा हो, वह दीपक के समान है। इसलिए सदा संतुष्ट। क्वेश्चन ही नहीं उठता है। इच्छा उठने की तो बात छोड़ो लेकिन इच्छा होती भी है - यह क्वेश्चन भी नहीं उठ सकता। इतनी समाप्ति हो गई है, नाम-निशान नहीं। क्योंकि थोड़ा भी अगर अंश रहा तो अंश से वंश पैदा होता है। अंश-मात्र भी नहीं हो। इसीलिए देखो, रावण को जलाते भी हैं, पहले मारते हैं फिर जलाते हैं। जलाकर के फिर समाप्ति कर देते हैं। अंश-मात्र भी नहीं रहे। तो कोई अंश तो नहीं है? मोटे रूप में तो रावण के शीश खत्म हुए लेकिन सूक्ष्म में तो नहीं है ना? सुनाया था कई ऐसे कहते हैं - इच्छा तो नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। मोटे रूप में कहेंगे - इच्छा नहीं है और महीन रूप में अच्छा लगता है। तो अच्छा लगा माना बुद्धि का झुकाव होगा ना। अच्छा लगता है तो अच्छा - अच्छा होते इच्छा हो जायेगी। अच्छा लगता है तो सब अच्छा लगता है। एक चीज़ अच्छी क्यों लगती है या कोई एक व्यक्ति अच्छा क्यों लगे या कोई एक काम अच्छा क्यों लगे? सब अच्छा है। कई ऐसे कहते हैं कि इस आत्मा का योग अच्छा लगता है, इस आत्मा का भाषण अच्छा लगता है। लेकिन यह भी कोई अच्छा लगे, कोई अच्छा नहीं लगे - यह भी ठीक नहीं। अगर अच्छा लगता भी है तो बाप का हैं ना। बाप अच्छा लगे ना।

✚ बाप-दादा के सम्मुख कौनसे बच्चे सदा रहते हैं? सदा सम्मुख रहने वाले बच्चों की विशेषता क्या है? ऐसे विशेष आत्माओं के प्रति बापदादा को विशेष रूप से मिलन मनाना होता है। ऐसे बच्चों को नयनों के सितारे व जहान के नूर कहा जाता है। जैसे स्थूल शरीर के अन्दर सबसे विशेष और सदा आवश्यक अंग नयन हैं। नयन नहीं तो जहान नहीं। इसी प्रकार ऐसे बच्चे इतने विशेष गाये हुए हैं। ऐसे बच्चे सर्विसएबल होने के कारण विश्व के लिये व जहान के लिए नूर अर्थात् प्रकाश व ज्योति के समान हैं। जैसे जान (शरीर) के लिए नयन आवश्यक हैं वैसे ही जहान के लिए नूर आवश्यक हैं। अगर ऐसी आत्मायें निमित्त नहीं बनें तो जहान जंगल बन जाता है अर्थात् जहान, जहान नहीं रहता। ऐसे सदा स्वयं को भी सितारा ही समझकर कर्म करते हैं? सितारा भी चमकता हुआ सितारा। ऐसे बच्चे ही बापदादा के नयनों में समाये हुए अर्थात् बाप की लगन में सदा मग्न रहने वाले हैं। साथ-साथ उनके नयनों में भी सदा बापदादा समाया हुआ रहता है। ऐसे नयनों के नूर सिवाय बाप के और कोई भी व्यक्ति व वस्तु को देखते हुए भी नहीं देखते। ऐसी स्थिति बनी है अथवा अब तक भी और कुछ दिखाई देता है? किसी में भी अंश-मात्र कोई रस दिखाई देता है? असार संसार अनुभव होता है? यह सब मरे ही पड़े है - ऐसा बुद्धि द्वारा अनुभव होता है? मुर्दों से कोई प्राप्ति की इच्छा हो सकती है, क्या कोई सम्बन्ध की अनुभूति होती है? ऐसे इच्छा मात्रम् अविद्या, सदा एक के रस में रहने वाले, एक रस स्थिति वाले बन चुके हो अथवा अब तक भी मुर्दों से किसी प्रकार की प्राप्ति की कामना है या कोई विनाशी रस अपनी तरफ आकर्षित करते हैं? जब तक कोई प्राप्ति की इच्छा व कामना है या कोई रस का आकर्षण है तो बापदादा के नयनों के सितारे नहीं बन सकते व सदा नयनों में बापदादा समा नहीं सकते। एक हैं ऐसी विशेष आत्मायें जिन्हें को नूरे-रत्न व नयनों के सितारे व जहान के नूर कहते हैं। तो फर्स्ट नम्बर में तो नयनों के नूर हैं। सेकेण्ड नम्बर क्या है? जैसे नूरे रत्न प्रसिद्ध हैं। नूरे जहान व जहान के नूर, इसी प्रकार सेकेण्ड नम्बर वाले किस रूप में प्रसिद्ध हैं? भुजाओं के रूप में! ब्रह्मा की भुजायें अनेक दिखाते हैं। सेकेण्ड नम्बर वाली भुजायें ज़रूर हैं अर्थात् सहयोगी आत्मायें हैं।



बाप एक त्रिमूर्ति शिव गाया और पूजा जाता है और आप सालिग्राम आत्मायें अनेक हो। पूजा दोनों की होती है। क्योंकि बाप ने सभी बच्चों को अपने समान पूज्य बनाया है। कभी भी सालिग्राम को देखते हो तो क्या अनुभव करते हो? ये हम ही हैं-ऐसे लगता है? तो बाप ने बच्चों को समान तो क्या लेकिन अपने से भी श्रेष्ठ पूज्य बनाया है। बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है। बाप की पूजा एक ही शिवालिंग के रूप में होती है। आप बच्चों की सालिग्राम के रूप में भी होती है और देव आत्माओं के रूप में भी होती है। बाप से भी ज्यादा डबल रूप के पूजा के अधिकारी आत्मायें आप हो। जैसे डबल विदेशी कहलाते हो तो डबल पूज्य भी हो। डबल ताजधारी भी आप बनते हो। निराकार बाप नहीं बनते। कहाँ-कहाँ भक्त लोग शिव की प्रतिमा को ताज डाल देते हैं। क्योंकि ताजधारी बनाया है इसलिये कहाँ-कहाँ ताज दिखा देते हैं। लेकिन बाप कभी भी रत्न जड़ित सोने-चाँदी के ताजधारी नहीं बनते। क्योंकि ताज धारण होता है प्रैक्टिकल में, मस्तक में। तो निराकार बाप को मस्तक है क्या? शरीर ही नहीं है तो ताज क्या धारण करेंगे! लेकिन स्नेह के कारण ताज दिखा देते हैं। तो बाप ने बच्चों को अपने से भी आगे रखा है। इतनी खुशी और इतनी श्रेष्ठ स्मृति रहती है? बापदादा को अपनी जयन्ती मनाने की खुशी नहीं है लेकिन आप सबकी भी जयन्ती है, इसलिये बच्चों की जयन्ती की खुशी है। क्योंकि बाप अकेला कुछ नहीं कर सकता और आप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते। चाहे कहीं-कहीं कोई-कोई बच्चों को थोड़ा आ जाता है कि मैं ही करने वाला हूँ लेकिन सिवाए बाप के सफलता नहीं मिलती। तो न बाप अकेला कुछ कर सकता, न बच्चे अकेले कुछ कर सकते हैं। अगर बाप बच्चों से मिलन मनाने भी साकार में चाहे वा आकार में भी चाहे तो ब्रह्मा का आधार लेना ही पड़ता है। ब्रह्मा के बिना भी कुछ कर नहीं सकता। माध्यम के बिना साकार मिलन नहीं मना सकता। तो कितना प्यार बाप का बच्चों से है और बच्चों का बाप से है! एक-दो के बिना कुछ नहीं कर सकते। अगर बाप को किनारा किया, साथ नहीं रखा तो अकेले कुछ कर सकते हो। बाप कर सकता है? बाप भी नहीं कर सकता। तो ये बाप और बच्चों का साथ-साथ दिव्य जन्म लेना, साथ-साथ विश्व परिवर्तन करना और साथ-साथ अपने स्वीट होम में जाना-ये ड्रामा की अविनाशी नूँध है। इसको कोई बदल नहीं सकता।

✚ मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने वाले बाप के आज्ञाकारी बच्चे माया को दूर से ही पहचान लेते हैं। पहचानने में देरी करते हैं, वा गलती करते हैं तब माया से घबरा जाते हैं। जैसे यादगार में कहानी सुनी है - सीता ने धोखा क्यों खाया? क्योंकि पहचाना नहीं। माया के स्वरूप को न पहचानने कारण धोखा खाया। अगर पहचान लें कि यह ब्राह्मण नहीं, भिखारी नहीं, रावण है तो शोक वाटिका का इतना अनुभव नहीं करना पड़ता। लेकिन पहचान देरी से आई तब धोखा खाया और धोखे के कारण दुःख उठाना पड़ा। योगी से वियोगी बन गई। सदा साथ रहने से दूर हो गई। प्राप्ति स्वरूप आत्मा से पुकारने वाली आत्मा बन गई। कारण? पहचान कम। माया के रूप को पहचानने की शक्ति कम होने कारण माया को भगाने के बजाए स्वयं घबरा जाते हैं। पहचान कम क्यों होती है, समय पर पहचान नहीं आती, पीछे क्यों आती। इसका कारण? क्योंकि सदा बाप की श्रेष्ठ मत पर नहीं चलते। कोई समय याद करते हैं, कोई समय नहीं। कोई समय उमंग-उत्साह में रहते, कोई समय नहीं रहते। जो सदा की आज्ञा को उल्लंघन करते अर्थात् आज्ञा की लकीर के अन्दर नहीं रहने के कारण माया समय पर धोखा दे देती हैं। माया में परखने की शक्ति बहुत है। माया देखती है कि इस समय यह कमजोर है। तो इस प्रकार की कमजोरी द्वारा इसको अपना बना सकते हैं। माया के आने का रास्ता है ही - कमजोरी। जरा-सा भी रास्ता मिला तो झट पहुँच जाती है। जैसे आजकल डाकू क्या करते हैं! दरवाजा भले बन्द हो लेकिन वेन्टीलेटर से भी आ जाते हैं। जरा-सा संकल्प मात्र भी कमजोर होना अर्थात् माया को रास्ता देना है। इसलिए मायाजीत बनने का बहुत सहज साधन है - 'सदा बाप के साथ रहो।' साथ रहना अर्थात् स्वतः ही मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहना। एक-एक विकार के पीछे विजयी बनने की मेहनत करने से छूट जायेंगे। साथ रहो तो स्वतः ही जैसे बाप वैसे आप। संग का रंग स्वतः ही लग जायेगा। बीज को छोड़ सिर्फ शाखाओं को काटने की मेहनत नहीं करो। आज काम जीत बन गये, कल क्रोध जीत बन गये, नहीं। हैं ही सदा विजयी! जब बीजरूप द्वारा बीज को खत्म कर देंगे तो बार-बार मेहनत करने से स्वतः ही छूट जायेंगे। सिर्फ बीजरूप को साथ रखो। फिर यह माया का बीज ऐसा भस्म हो जायेगा जो फिर कभी भी उस बीज से अंश भी नहीं निकल सकता। वैसे भी आग में जले हुए बीज से कभी फल नहीं निकल सकता।

✚ बेहद की सेवा जो अभी आप वाणी या सम्बन्ध, सहयोग से करते हो, वह मनोबल से करो। तो मनोबल की बेहद की सेवा अगर आपने बेहद की वृत्ति से, मनोबल द्वारा विश्व के गोले के ऊपर ऊंचा स्थित हो, बाप के साथ परमधाम की स्थिति में स्थित हो थोड़ा समय भी यह सेवा की तो आपको उसकी प्रालब्ध कई गुणा ज्यादा मिलेगी। आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा है। इसका अभ्यास अभी से करो। चाहे वाणी द्वारा वा सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा सेवा करते हो लेकिन अब इस मन्सा सेवा का अभ्यास अति आवश्यक है, साथ-साथ अभ्यास करते चलो। समझा क्या करना है? यह मन्सा सेवा वही रंगत दिखायेगी जो स्थापना के आदि में बाप की मन्सा द्वारा रूहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया। और मन्सा सेवा के फल स्वरूप अभी भी देख रहे हो कि वही आत्मायें अब भी फाउण्डेशन हैं। ड्रामा अनुसार यह बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो कितने पक्के हैं। तो अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित्त बनेंगी। वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे। साक्षात्कार अलग चीज़ है लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे। ऐसा है ना? तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं के आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे। वह समझेंगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित्त बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ-साथ अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे। इसके लिए यही जो आज सुनाया अभी से प्रालब्ध स्वरूप में स्थित रहो। छोड़ो छोटी-छोटी बातों को, अब ऊंचे जाओ। विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और कराओ। समझा। अभी सभी अपने अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड में स्थित हो सकते हो? क्योंकि अन्त में एक सेकण्ड की ही सीटी बजने वाली है। तो अभी से अभ्यास करो। बस टिक जाओ।

✚ पाण्डवों का गायन क्या है? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना। अभी प्रत्यक्ष होना चाहिए। जैसे स्थूल स्टेज पर प्रत्यक्ष होते जा रहे हो, अब अपनी सूक्ष्म स्टेज को प्रत्यक्ष करो। गर्जना की रचना करो। अगर कमजोर रचना करेंगे तो कमजोर रचना को सम्भालने में भी समय लगेगा। पावरफुल रचना होने से सहयोगी बनेंगे। अभी ललकार करनी चाहिए। देवियों के पूजन में ललकार का ही पूजन होता है। यह पावर की निशानी यादगार रूप में है - जोर-जोर से चिल्लाते हैं। अपने अन्दर के फोर्स को इस रीति प्रसिद्ध करते हैं। देवियों का पूजन चुपचाप नहीं करेंगे, जोर-शोर से करते हैं। तो अब शक्तियों को ललकार और गर्जना करनी चाहिए-अपने सिद्धान्तों को सिद्ध करने में, तब सिद्धि को प्राप्त करेंगे। जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धान्त को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करती हैं, तो आप लोगों को सिद्धान्तों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए! आप वायुमण्डल के होश में आ जाते हो। आदि का पार्ट फिर से अन्त में गुह्य और गोपनीय रूप से रिपीट करना है। अभी लास्ट कोर्स कौनसा रहा है? फोर्स रूप बनना है। अभी जगत्-माता बहुत बने, अब शक्तिरूप से स्टेज पर आना है। शक्तियां आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करती हैं और स्नेही मां जो होती है वह धीरे-धीरे प्यार से पालना करती है। पहले वह आवश्यकता थी लेकिन अभी आवश्यकता है शक्ति रूप बन आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करना। जैसे वह बलि चढ़ाते हैं तो पहले श्रृंगार करते हैं, उसमें समय लगता है। लेकिन जब बलि चढ़ती है तो एक सेकेण्ड में। श्रृंगार बहुत किया, अब एक धक से वायुमण्डल से भी आसुरी संस्कारों को खत्म करने का फोर्स होना चाहिए। रहमदिल के साथ-साथ शक्तिरूप का रूहाब भी होना चाहिए। सिर्फ रहमदिल भी नहीं। जितना ही अति रूहाब उतना ही अति रहम। शब्दों में भी रहमदिल का भाव हो, ऐसी सर्विस का अभी समय है। यह जो गायन है नज़र से निहाल करने का, वह किसका गायन है? शक्तियों के चित्रों में सदैव नयनों की शोभा आप देखेंगे। और कोई इतनी आकर्षण वाली चीज़ नहीं होती है। नयनों द्वारा ही सब भाव प्रसिद्ध करते हैं। तो यह नज़र से निहाल करना - यह सर्विस भी शक्तियों की गाई हुई है। नयनों की आकर्षण हो, नयनों में रूहानियत हो, नयनों में रूहाब हो, नयनों में रहमदिली हो - ऐसा प्लैन बनाना है।



आप श्रेष्ठ आत्माओं के नाम का भी भाग्य है - जो आपके नाम अब भी विश्व की आत्माएँ वर्णन करती हैं। जैसे 'ब्राह्मण चोटी'। आपके ब्राह्मण नाम से आज के नामधारी ब्राह्मण अब लास्ट समय तक भी श्रेष्ठ गाये जा रहे हैं। अब तक भी काम बदल गया है लेकिन नाम का मान मिल रहा है। ऐसे ही 'पाण्डव सेना', आज तक भी इस पाण्डव नाम से दिलशिकस्त आत्मा स्वयं को उत्साह दिलाती है कि पाँच पाण्डवों के समान बाप का साथ लेने से विजयी बन जायेंगे। पाण्डव सदा विजयी रहे हैं। हम भी विजयी बन सकते हैं। इसी प्रकार 'गोप-गोपियाँ'। आज भी गोप गोपियों की महिमा करते खुशी में आ जाते हैं। नाम सुनते ही प्रेम में लवलीन हो जाते हैं। इसी प्रकार से आपके नाम का भी भाग्य है। रूप का भी भाग्य है - शक्तियों के रूप में अब तक भी भक्त लोग दर्शन के लिए सर्दा-गर्मा सहन कर रहे हैं। यहाँ तो फिर भी आराम है। वह तो धरती और आकाश के बीच खड़े-खड़े तपस्या करते हैं। तो शक्तियों के रूप में, देवी-देवताओं के रूप में पूजन होने का भाग्य है। दोनों रूप में पूज्य बनते हो। तो रूप का गायन और पूजन है। विशेष पूजन का ही भाग्य है। आपके गुणों का भाग्य है - आज तक कीर्तन के रूप में वर्णन कर रहे हैं। ऐसा वर्णन करते हैं जो आप के गुणों के भाग्य का प्रभाव अल्पकाल के लिए कीर्तन करने वालों को भी शान्ति और खुशी का, आनन्द का अनुभव होता है। यह है गुणों का भाग्य। कर्त्तव्य का भाग्य - आज तक सारे वर्ष में भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्सव मनाते हैं। आप श्रेष्ठ आत्माओं ने अनेक प्रकार के साधनों द्वारा आत्माओं के जीवन में उत्साह दिलाया है। इसलिए कर्त्तव्य के भाग्य की निशानी उत्सव मनाते हैं। निवास स्थान - निवास-स्थान अर्थात् रहने का धाम। उसका यादगार 'तीर्थस्थान' है। आप के स्थान का भी इतना भाग्य है जो स्थान तीर्थ स्थान हो गये हैं। जिसकी मिट्टी का भी भाग्य है। अगर तीर्थस्थान की मिट्टी भी मस्तक में लगाते हैं तो अपने को भाग्यशाली समझते हैं। जो स्थान का भाग्य है और आगे इस संगम समय के भाग्य का वर्णन विशेष अमृतवेले के रूप में गाया जाता है। अमृतवेला अर्थात् अमृत द्वारा अमर बनने की वेला। साथ-साथ धर्माऊ युग 'पुरूषोत्तम युग'। नुमाशाम का समय भी श्रेष्ठ भाग्य का मानते हैं। यह सब समय का गायन आपके इस समय का गायन है। तो समझा, अपने श्रेष्ठ भाग्य को।

✚ विकराल रूप तो प्रकृति अब धारण करेगी जिसमे विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। अभी तो थोड़ा समय पहले मालूम पड़ जाता है। लेकिन प्रकृति का विकराल रूप क्या होगा? एक ही समय प्रकृति के सभी तत्व साथसाथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेगे और ही साधन समस्या का रूप बनेंगे। ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिये किस बात की आवश्यकता होगी? अपने अकाल-तख्त नशीन अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ 'मास्टर महाकाल' स्वरूप में स्थित होंगे तब ही सामना कर सकेंगे। महाविनाश देखने के लिये मास्टर महाकाल बनना पड़ेगा। मास्टर महाकाल बनने की सहज विधि कौन-सी है? अकालमूर्त बनने की विधि है -- हर समय अकाल-तख्त नशीन रहना। जरा-सा भी देहभान होगा, तो अकाले मृत्यु के समान अचानक के वार में हार खिला देगा! जैसे प्रकृति के पाँच तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे, वैसे ही पाँच विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अन्तिम वार अति सूक्ष्म रूप में ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अन्तिम दाव लगायेंगे। जैसे किसी भी स्थूल युद्ध में भी अन्तिम दृश्य हस (हास) पैदा करने वाला होता है और हिम्मत बढ़ाने वाला भी होता है, ऐसे ही कमजोर आत्माओं के लिये भी हस पैदा करने वाला दृश्य होगा - मास्टर सर्वशक्तिवान् आत्माओं के लिये वह हिम्मत और हुल्लास देने वाला दृश्य होगा। ऐसे समय में जैसी स्थिति सुनाई उसके लिये विशेष कौनसी शक्ति की आवश्यकता होगी? सेकेण्ड के हार-जीत के खेल में कौन-सी शक्ति चाहिए? ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक है। जो अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, क्या होगा? - इस हलचल के संकल्प को भी समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को भी वा अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो - बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। शरीर का कोई भी सम्बन्ध व सम्पर्क नीचे न ला सके। जैसे इस समय साक्षात्कार में जाने वाले साक्षात्कार के आधार पर अनुभव करते हैं कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, ऐसे ही ज्ञानी एवं योगी आत्मायें ऐसा अनुभव करेंगी।

✚ जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हृद की और चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र प्रवृत्ति नहीं बना सकेंगे। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों की प्रवृत्ति कौनसी है? जैसे हृद के सम्बन्ध की प्रवृत्ति है वैसे ब्रह्माकुमार और कुमारी के नाते से सारे विश्व की आत्माओं से साकारी भाई-बहन का सम्बन्ध - इतनी बड़ी बेहद की प्रवृत्ति है। लेकिन पहले अपनी देह की प्रवृत्ति बनायें, तब बेहद की प्रवृत्ति को भी पवित्र बना सकेंगे। कहावत है - चेरिटी बिगिन्स एट होम - पहले अपनी देह की प्रवृत्ति अर्थात् घर को पवित्र बनाने की सेवा करनी है। फिर बेहद की करनी है। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रूपी घर को पवित्र बनाया है? संकल्प को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रूहानी अर्थात् पवित्र बनाया है? जैसे दीपावली पर घर के हर कोने को स्वच्छ करते हैं, कोई एक कोना भी न रह जाये इतना अटेन्शन रखते हैं -- ऐसे हर कर्म-इन्द्रिय को स्वच्छ बना कर आत्मा का दीपक सदाकाल के लिये जगाया है? ऐसे रूहानी दीवाली मनाई है अथवा अभी मनानी है? सबके दीपक अखण्ड जगमगा रहे है ना? जैसे गायन है कि घर-घर मन्दिर बनेंगे। ऐसे अपने देह रूपी घर को मन्दिर बनाया है? जब घर-घर मन्दिर बनाओ तब ही विश्व को भी चैतन्य देवताओं का निवास स्थान मन्दिर बनायेंगे। जितने भी ब्राह्मण हैं हर-एक ब्राह्मण चैतन्य सालिग्राम का मन्दिर है, चैतन्य शक्ति मन्दिर है, ऐसे मन्दिर समझते हुए उनको शुद्ध पवित्र बनाया है? अभी के पुरूषार्थ के समय प्रमाण व विश्व के सम्पन्न परिवर्तन के समय प्रमाण इस समय कोई भी कर्म-इन्द्रिय द्वारा प्रकृति व विकारों के वशीभूत नहीं होना चाहिए जैसे मन्दिर में भूत प्रवेश नहीं होते हैं। तो हर घर को मन्दिर बनाया है? जहाँ अशुद्धि होती है वहाँ ही अशुद्ध विकार अथवा भूत प्रवेश होता है। चैतन्य सालिग्राम के मन्दिर में व चैतन्य शक्तिस्वरूप के मन्दिर में, असुर संहारनी के मन्दिर में आसुरी संकल्प व आसुरी संस्कार कभी प्रवेश नहीं कर सकते। अगर प्रवेश होते हैं तो कोई-न-कोई प्रकार की अशुद्धि अर्थात् अस्वच्छता है। ऐसे अपने को चेक करो - कहीं भी कोई प्रकार की अशुद्धि रह गई हो तो उसको अभी खत्म करो अर्थात् सच्ची दीपावली मनाओ। जब ऐसी अपनी पवित्र प्रवृत्ति बनाओ तब ही विश्व-परिवर्तन होगा।



चमकते हुए रूहानी सितारों का कितना अच्छा संगठन देख रहे हैं। इस रूहानी ज्योतिर्मय सितारों का मण्डल अलौकिक और अति सुन्दर है। आप सभी भी इस दिव्य तारा मण्डल में अपना चमकता हुआ बिन्दु स्वरूप देख रहे हो? यही महाशिवरात्रि है। शिव ज्योति के साथ आप अनेक ज्योतिबिन्दु सालिग्राम हो। बाप भी महान, बच्चे भी महान हैं। इसलिए महाशिवरात्रि गाई जा रही है। कितनी श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माएं हो! जो चैतन्य साकार स्वरूप में शिव बाप के साथ शिवरात्रि मना रहे हो। ऐसे कभी संकल्प में, स्वप्न में भी नहीं सोचते थे कि ऐसी अलौकिक शिवरात्रि मनाने वाले हम सालिग्राम आत्माएं हैं। आप सब चैतन्य रूप में मनाते हो। उसका ही यादगार अब भक्तों द्वारा जड़-चतत्र में चैतन्य भावना से मनाने का देख रहे हो। सच्चे भक्त चित्र में भावना से, भावना स्वरूप अनुभव करते और आप सालि-ग्राम आत्माएं सम्मुख मनाने वाली हो। तो कितना भाग्य है! पद्म, अरब, खरब यह भी आपके भाग्य के सामने कुछ नहीं है। इसलिए सभी बच्चे निश्चय के फलक से कहते हैं - हमने देखा, हमने पाया। यह गीत सभी का है या कोई-कोई का है? सभी गाते हैं ना? वा यह गाते हो कि देख लेंगे, पा लेंगे? पा लिया है वा पाना है? डबल विदेशी क्या समझते हैं पा लिया है? बापको देखा भी है ना? दिल से कहते हो कि बाप को देखा है, पाया है। देखना और पाना तो क्या लेकिन बाप को अपना बना लिया है। बाप आपको हो गया है ना। देखो, आपको बाप हो गया तब तो आपके कहने से बाप आ जाते हैं ना। तो अधिकारी बन गये ना। महाशिवरात्रि की क्या विशेषताएं हैं? एक तो बाप के आगे प्रतिज्ञा करते हैं और दूसरा बाप के प्यार में व्रत रखते हैं। क्योंकि प्यार और खुशी में सब भूल जाते हैं इसलिए व्रत रखते हैं। खुशी की खुराक खा लेते तो दूसरी खुराक की आवश्यकता नहीं होती है। मिलन की खुशी के कारण व्रत रखते हैं। व्रत खुशी की भी निशानी है और व्रत रखना अर्थात् प्यार में त्याग-भावना। कुछ छोड़ना अर्थात् त्याग भावना की निशानी है। तीसरी बात - शिवरात्रि अर्थात् बलि चढ़ना। यादगार रूप में तो स्थूल बलि चढ़ाते हैं लेकिन होना, मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित होना - यह है वास्तविक बलि चढ़ना। तो ये तीनों ही विशेषताएं महाशिवरात्रि की विशेषताएं हैं। शिवरात्रि मनाना अर्थात् यह तीनों विशेषताएं प्रैक्टिकल जीवन में लाना। सिर्फ कहना नहीं लेकिन करना। कहना और करना सदा समान हो।

✚ तो 84 जन्म में यह वर्तमान का जन्म तो सबसे श्रेष्ठ है ना! इसको नहीं जान सकते हो? मैं कौन? इस पहेली को अच्छी तरह से जाना है ना? तो यह भी क्या हुआ? मैं कौन की पहेली। जानने का हिसाब बहुत सहज है। एक है- याद की माला, तो जितना स्नेह और जितना समय आप बाप को याद करते उतना और उसी स्नेह से बाप भी याद करते हैं। तो अपना नम्बर निकाल सकते हो। अगर आधा समय याद रहता और स्नेह भी 50 का है, वा 75 का है तो उसी आधार से सोचो 50 स्नेह और आधा समय याद तो माला में भी आधी माला समाप्त होने के बाद आयेंगे। अगर याद निरन्तर और सम्पूर्ण स्नेह, सिवाए बाप के और कोई नजर ही नहीं आता, सदा बाप और आप भी कम्बाइन्ड हैं तो माला में भी कम्बाइन्ड दाने के साथ-साथ आप भी कम्बाइन्ड होंगे। अर्थात् साथ-साथ मिले हुए होंगे। सदा सब बातों में नम्बर वन होंगे। तो माला में भी नम्बरवन होंगे। जैसे लौकिक पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन, सेकेण्ड, थर्ड होती हैं, वैसे यहाँ भी महारथी, घोड़े सवार और पैदल तीन डिवीजन हैं। फर्स्ट डिवीजन- सदा फास्ट अर्थात् उड़ती कला वाले होंगे। हर सेकेण्ड, हर संकल्प में बाप के साथ का, सहयोग का, स्नेह का अनुभव करेंगे। सदा बाप के साथ और हाथ में हाथ की अनुभूति करेंगे। 'सहयोग दो,' यह नहीं कहेंगे। सदा स्वयं को सम्पन्न अनुभव करेंगे। सेकेण्ड डिवीजन- चढ़ती कला का अनुभव करेंगे लेकिन उड़ती कला का नहीं। चढ़ती कला में आये हुए विघ्नों को पार करने में कभी ज्यादा, कभी कम समय लगायेंगे। उड़ती कला वाले ऊपर से क्रास करने के कारण ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कोई विघ्न आया ही नहीं। विघ्न को विघ्न नहीं लेकिन साइडसीन समझेंगे, रास्ते के नजारे हैं। और चढ़ती कला वाले- रूकेंगे, विघ्न है यह महसूस करेंगे। इसलिए जरा-सा लेसमात्र कभी-कभी पार करने की थकावट वा दिलशिकस्त होने का अनुभव करेंगे। तीसरी डिवीजन- उसको तो जान गये होंगे। रूकना और चलना और चिल्लाना। कभी चलेंगे, कब चिल्लायेंगे। याद की मेहनत में रहेंगे। क्योंकि सदा कम्बाइन्ड नहीं रहते। सर्व सम्बन्ध निभाने के प्रयत्न में रहते हैं। पुरूषार्थ में ही सदा लगे रहते हैं। वह प्रयत्न में रहते और वह प्राप्ति में रहते। तो इससे अभी समझो- "मेरा नम्बर कौन-सा?" माला के आदि में है अर्थात् फर्स्ट डिवीजन में है वा माला के मध्य में अर्थात् सेकेण्ड डिवीजन में वा माला के अन्त में अर्थात् थर्ड डिवीजन में है? तो याद और विजय दोनों के आधार से अपने आपको जान सकते हो।

✚ ऐसे रूहानी फखर में रहने वाले, विकारों को भी परिवर्तित कर काम विकार को शुभ कामना, श्रेष्ठ कामना के स्वरूप में बदल, सेवा में लगाने वाले, ऐसे दुश्मन को सेवाधारी बनाने वाले, प्रकृति के किसी भी तत्व की तरफ वशीभूत नहीं होते हैं। लेकिन हर तत्व को तमोगुणी रूप से सतोप्रधान स्वरूप बना लेते हैं। कलियुग में यह तत्व धोखा और दुख देते हैं। संगमयुग में परिवर्तन होते हैं। रूप बदलते हैं। सतयुग में यह 5 तत्व देवताओं के सुख के साधन बन जाते हैं। यह सूर्य आपका भोजन तैयार करेगा तो भण्डारी बन जायेगा ना! यह वायु आपका नैचरल पंखा बन जायेगी। आपके मनोरंजन का साधान बन जायेगी। वायु लगेगी वृक्ष हिलेंगे और वह टाल टालियाँ ऐसे झूलेंगी जो उन्हीं के हिलने से भिन्न-भिन्न साज़ स्वतः ही बजते रहेंगे। तो मनोरंजन का साधन बन गया ना! यह आकाश आप सबके लिए राज्य पथ बन जायेगा। विमान कहाँ चलायेंगे? यह आकाश ही आपका पथ बन जायेगा। इतना बड़ा हाईवे और कहाँ पर है? विदेश में है? कितने भी माइल बनावें लेकिन आकाश के पथ से तो छोटे ही है ना। इतना बड़ा रास्ता कोई है? अमेरिका में है? और बिना एक्सीडेंट के रास्ता होगा। चाहे 8 वर्ष का बच्चा भी चलावे तो भी गिरेंगे नहीं। तो समझा! यह जल इत्र-फुलेल का कार्य करेगा। जैसे जड़ी-बूटियों के कारण गंगा जल अभी भी और जल से पवित्र है। ऐसे खुशबूदार जड़ी-बूटियाँ होने के कारण जल में नैचरल खुशबू होगी। जैसे यहाँ दूध शक्ति देता है ऐसे वहाँ का जल ही शक्तिशाली होगा, स्वच्छ होगा। इसलिए कहते हैं - दूध की नदियाँ बहती हैं। सब अभी से खुश हो गये हैं ना! ऐसे ही यह पृथ्वी ऐसे श्रेष्ठ फल देगी जो जिस भी भिन्न-भिन्न टेस्ट के चाहते हैं उस टेस्ट का फल आपके आगे हाजर होगा। यह नमक नहीं होगा। चीनी भी नहीं होगी। जैसे अभी खटाई के लिए टमाटर है, तो बना बनाया है ना। खटाई आ जाती है ना। ऐसे जो आपको टेस्ट चाहिए उसके फल होंगे। रस डालो और वह टेस्ट हो जायेगी। तो यह पृथ्वी एक तो श्रेष्ठ फल, श्रेष्ठ अन्न देने की सेवा करेगी। दूसरा नैचरल सीन-सीनरियाँ जिसको कुदरत कहते हैं - तो नैचरल नजारे, पहाड़ भी होंगे। ऐसे सीधे पहाड़ नहीं होंगे। नैचरल ब्युटी भिन्न-भिन्न रूप के पहाड़ होंगे। कोई पंछी के रूप में कोई पुष्पों के रूप में। ऐसे नैचरल बनावट होगी। सिर्फ निमित्त मात्र थोड़ा-सा

हाथ लगाना पड़ेगा। ऐसे यह 5 तत्व सेवाधारी बन जायेंगे। लेकिन किसके बनेंगे? स्वराज्य अधिकारी आत्माओं के सेवाधारी बनेंगे।

✚ अभी विदेश में विशेष क्रिसमस मनाने की तैयारियाँ कर रहे हैं। खाना, गाना, बजाना और नाचना यही करेंगे ना। और मिलन मनायेंगे। आप हर दिन क्या करते हो? अमृतवेले से लेकर रात तक यही काम करते हो ना। सेवा भी करते हो, सेवा अर्थात् ज्ञान डांस करते हो। बापदादा के गुणों के गीत आत्माओं को सुनाते हो। तो रोज उत्सव मनाते हो ना। कोई दिन ऐसा नहीं जो सच्चे ब्राह्मण यह कार्य न करते हों। संगमयुग का हर दिन उत्साह भरे उत्सव का दिन है। वह तो एक-दो दिन मनाते हैं। लेकिन बापदादा सभी ब्राह्मण बच्चों को ऐसे श्रेष्ठ बनाते हैं, ऐसी गोल्डन गिफ्ट देते हैं जो सदा के लिए सम्पन्न, सदा भरपूर बन जाते हो। वो लोग क्रिसमस के दिन का इन्तजार करते हैं कि क्रिसमस फादर आकर आज गिफ्ट देंगे। वह क्रिसमस फादर को याद करते और आप क्रिसमस जैसा मीठा बनाने वाले बाप को याद करते हो। इतनी गिफ्ट मिलती है जो 21 जन्म यह गिफ्ट चलती रहती है! वह विनाशी गिफ्ट थोड़ा समय चल समाप्त हो जायेगी, यह अविनाशी गिफ्ट अनेक जन्म आपके साथ रहेगी। जैसे वो लोग क्रिसमस ट्री को सजाते हैं। बापदादा इस बेहद के वर्ल्ड ट्री में आप चमकते हुए सितारों को, संगमयुगी श्रेष्ठ धरती के सितारों को अविनाशी लाइट-माइट स्टार सजाते हैं। आप स्टार्स का यादगार स्थूल चमकती हुई लाइट्स के रूप में दिखाते हैं। या लाइट से सजाते या फूलों से सजाते हैं, यह किसका यादगार है? रूहानी खुशबूदार फूलों - ब्राह्मण आत्माओं का। यह सब उत्सव आप संगमयुगी ब्राह्मणों के उत्साह भरे उत्सवों के यादगार हैं। संगमयुग पर कल्प वृक्ष के चमकते हुए सितारे, रूहानी गुलाब आप ब्राह्मण आत्मायें हो। अपना ही यादगार स्वयं देख रहे हो। अविनाशी बाप द्वारा अविनाशी रत्न बनते हो, इसलिए अन्तिम जन्म तक अपना यादगार देख रहे हो। डबल रूप का यादगार देख रहे हो। संगमयुग के रूप का यादगार भिन्न-भिन्न रूप से, रीति से दिखाते हैं और दूसरा भविष्य देव-पद का यादगार देख रहे हैं। न सिर्फ अपने रूप का यादगार देखते हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ कर्मों का भी यादगार है। बाप और बच्चों के चरित्र का भी यादगार है। तो अपना यादगार देख सहज याद आ जाता है ना कि हर कल्प हम ऐसी विशेष आत्मायें बनती

हैं। बने थे, बने हैं और आगे भी बनते रहेंगे। बापदादा ऐसे सदा याद में रहने वाले, जिन्हों का यादगार अभी है, ऐसे बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। याद में रहने वालों का यह यादगार है। याद का महत्व यादगार देख रहे हो।

✚ अब सम्पूर्ण स्थिति की स्टेज व सम्पूर्ण परिणाम (फाइनल रिज़ल्ट) का समय नजदीक आ रहा है। रिज़ल्ट आऊट बाप-दादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज़ व बोर्ड पर नम्बर नहीं लिखेंगे। लेकिन रिज़ल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं प्रमाण अपने-अपने निश्चित नम्बर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिज़ल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई देंगे। अब तक तो रॉयल पुरुषार्थियों की रॉयल भाषा चलती है, लेकिन थोड़े समय में रॉयल भाषा रीयल हो जायेगी। जैसेकि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का- कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रूपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जायेगा। ऐसी फाइनल रिज़ल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी। अभी तो बड़े-बड़े दाग भी छुपाने से छुप जाते हैं, क्योंकि अभी शीश-महल नहीं बना है, जो कि चारों ओर के दाग स्पष्ट दिखाई दे जावें। जब किनारा कर लेते, तो दाग छिप जाता अर्थात् पाप दर्पण के आगे स्वयं को लाने से किनारा कर छिप जाते हैं। छिपता नहीं है, लेकिन किनारा कर और छिपा हुआ समझ स्वयं को खुश कर लेते हैं। बाप भी बच्चों का कल्याणकारी बन अनजान बन जाते हैं जैसे कि जानते ही नहीं। अगर बाप कह दे कि मैं जानता हूँ कि यह दाग इतने समय से व इस रूप से है तो सुनाने वाले का क्या स्वरूप होगा? सुनाना चाहते भी मुख बन्द हो जायेगा, क्योंकि सुनाने की विधि रखी हुई है। बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे, तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफसोस करना या माफी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने

की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिये अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बाप-दादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए जब महसूसता के आधार पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फरिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।

✚ जैसे महान् आत्मा जो बनते हैं वह कभी भी किसी के आगे झुकते नहीं हैं। उनके आगे सभी झुकते हैं तब उसको महान आत्मा कहा जाता है। जो आजकल के ऐसे ऐसे महान् आत्माओं से भी महान्, श्रेष्ठ आत्मायें, जो बाप की चुनी हुई आत्मायें हैं, विश्व के राज्य के अधिकारी हैं, बाप के वरसे के अधिकारी हैं, विश्व-कल्याणकारी हैं - ऐसी आत्मायें कहां भी, कोई भी परिस्थिति में वा माया के भिन्न-भिन्न आकर्षण करने वाले रूपों में क्या अपने आप को झुका सकते हैं? आजकल के कहलाने वाले महात्माओं ने तो आप महान् आत्माओं की कॉपी की है। तो ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें कहां भी, किसी रीति झुक नहीं सकतीं। वे झुकाने वाले हैं, न कि झुकने वाले। कैसा भी माया का फोर्स हो लेकिन झुक नहीं सकते। ऐसे माया को सदा झुकाने वाले बने हो कि कहां-कहां झुक करके भी देखते हो? जब अभी से ही सदा झुकाने की स्थिति में स्थित रहेंगे, ऐसे श्रेष्ठ संस्कार अपने में भरेंगे तब तो ऐसे हाइएस्ट पद को प्राप्त करेंगे जो सतयुग में प्रजा स्वमान से झुकेगी और द्वापर में भिखारी हो झुकेंगे। आप लोगों के यादगारों के आगे भक्त भी झुकते रहते हैं ना। अगर यहां अभी माया के आगे झुकने के संस्कार समाप्त न किये, थोड़े भी झुकने के संस्कार रह गये तो फिर झुकने वाले झुकते रहेंगे और झुकाने वालों के आगे सदैव झुकते रहेंगे। लक्ष्य क्या रखा है, झुकने का वा झुकाने का? जो अपनी ही रची हुई परिस्थिति के आगे झुक जाते हैं -- उनको हाइएस्ट कहेंगे? जब तक हाइएस्ट नहीं बने हो तब तक होलीएस्ट भी नहीं बन सकते हो। जैसे आपके भविष्य यादगारों का गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी। तो इसको ही होलीएस्ट कहा जाता है। सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी

परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए वा उनके वशीभूत न हो। अगर कोई बहुत समय से ऐसी स्थिति में स्थित नहीं रहता है तो ऐसी आत्माओं का फिर गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ऐसे नहीं समझना कि लास्ट में फास्ट जाकर इसी स्थिति को पा लेंगे। लेकिन नहीं। बहुत समय जो गायन है -- उसको भी स्मृति में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट और हाइएस्ट बनाओ। कोई भी संकल्प वा कर्म करते हो तो पहले चेक करो कि जैसा ऊंचा नाम है वैसा ऊंचा काम है? अगर नाम ऊंचा और काम नीचा तो क्या होगा? अपने नाम को बदनाम करते हो? तो ऐसे कोई भी काम नहीं हो - यह लक्ष्य रखकर ऐसे लक्षण अपने में धारण करो। जैसे दूसरे लोगों को समझाते हो कि अगर ज्ञान के विरुद्ध कोई भी चीज़ स्वीकार करते हो तो ज्ञानी नहीं अज्ञानी कहलाये जायेंगे।



आज जब वतन में गई तो बापदादा दोनों बहुत बिजी थे। क्या देखा - दोनों के आगे बहुत से फूल भी थे और पत्ते भी थे। जैसे गुलदस्ते में फूल भी डाले जाते और पत्ते भी डाले जाते। फूल दो तीन प्रकार के अलग-अलग थे, उनको देख रहे थे और छांट रहे थे। तो बाप-दादा दोनों उसी ही कार्य में बिजी थे। मुझे देखा भी नहीं। जब मैं नजदीक गई तो मुझे देख मुस्कराया - और कहा कि मैं सारा दिन बिजी रहता हूँ। देखो बच्ची कितनी बड़ी कारोबार चल रही है। यह फूल पत्ते तीन क्वालिटी के अलग-अलग करके रखे हैं। पहले बाबा ने मुझे फूल दिखाये जिनकी संख्या बहुत कम थी फिर बीच की क्वालिटी दिखाई जिसमें फूल बहुत थे लेकिन साथ में थोड़े पत्ते भी लगे थे। फूल अच्छे थे लेकिन जो पत्ते लगे हुए थे वह कुछ डिफेक्टेड थे। तीसरी क्वालिटी में फिर पत्ते जास्ती थे और फूल बहुत ही कम थे। इस पर बाबा ने मुझे समझाया कि यह पहली क्वालिटी जिसमें थोड़े फूल हैं - यह वह बच्चे हैं जो बिल्कुल दिल पर चढ़े हुए हैं और ऐसे दिल वाले अनन्य बच्चे बहुत ही थोड़े हैं। दूसरे नम्बर वाले बच्चे हैं बहुत अच्छे, परन्तु थोड़ा कुछ कमी है। फूल बने हैं लेकिन थोड़ी कमी है। बाकी तीसरी क्वालिटी के हैं प्रजा। उनमें कोई फूल निकलता है जो पीछे जाने वाला है। बाकी सब हैं प्रजा। तो दो ऊपर की क्वालिटी बच्चों की है। बापदादा अब गुलदस्ता सजाते हैं। जब गुलदस्ता सजाया जाता है तो सिर्फ फूल डालने से गुलदस्ता नहीं शोभता। उसमें कुछ पत्ते भी चाहिए। तुम फूल हो लेकिन तुम्हारे साथ पत्ते भी चाहिए। तुम राजा बनेंगे तो प्रजा भी चाहिए ना। तो प्रजा रूपी पत्तों के बीच में फूल

शोभता है। तो यहाँ बैठे तुम बच्चों का गुलदस्ता बनाता हूँ और देखता हूँ कि एक फूल ने कितनी प्रजा बनाई है। जिसने जास्ती प्रजा बनाई है उनका गुलदस्ता भी शोभता है। फिर बाबा ने एक प्रश्न पूछा- कि जब कोई देवता पर फूल चढ़ाते हैं तो सिर्फ फूल चढ़ाते पत्ते निकाल देते हैं क्यों? पत्ते तो फूल का शो होते हैं फिर पत्ते क्यों निकाल देते? फिर बाबा ने सुनाया कि तुम बच्चों से ही यह सारी रसम-रिवाज होती है। जब तुम पहले अर्पण हुए तो अकेले थे लेकिन फूल को अगर कुछ समय रखना हो तो पत्ते साथ में होंगे तो रख सकेंगे वैसे ही जब तुम पहले अर्पण हुए तो तुम अकेले फूल अर्पण हुए हो। फिर तुमको 21 जन्मों के लिए अविनाशी चलना है - तो प्रजा रूपी पत्ते भी लगाये जाते हैं। पहले तुम आये तो प्रजा नहीं थी लेकिन अब तो तुम फूलों की शोभा ही प्रजा रूपी पत्तों से है इसलिए बापदादा कहते हैं, प्रजा बनाओ।



ऐसे वर्तमान समय की ब्राह्मण जीवन के तस्वीर की विशेषतायें अपने में भर ली है? बड़े ते बड़े चित्रकार आप हो जो अपना चित्र भी बना रहे हो। आपके चित्र बनते ही विश्व का चित्र बनता जा रहा है। ऐसे अनुभव करते हो ना। कई पूछते हैं ना कि नई दुनिया में क्या होगा? तो नई दुनिया की तस्वीर ही आप हो। आपकी जीवन से भविष्य स्पष्ट होता है। इस समय भी अपनी तस्वीर में देखो कि सदा ऐसी तस्वीर बनी है जो कोई भी देखे तो सदा के लिए प्रसन्नचित्त हो जाए। कोई भी जरा भी अशान्ति की लहर वाला हो तो आपकी तस्वीर देख अशान्ति को ही भूल जाएँ, शान्ति की लहरों में लहराने लगे। अप्राप्ति स्वरूप, प्राप्ति की अनुभूति स्वतः ही अनुभव करे। भिखारी बनकर आये, भरपूर बनकर जाये। आपकी मुस्कराती हुई मूर्त देख मन का वा आँखों का रोना भूल जाएँ, मुस्कराना सीख जाएँ। आप लोग भी बाप को कहते हो ना - कि मुस्कराना सिखा दिया.. तो आपका काम ही है रोना छुड़ाना और मुस्कराना सिखाना। तो ऐसी तस्वीर ब्राह्मण जीवन है! सदा यह स्मृति में रखों कि हम ऐसे आधारमूर्त हैं, फाउण्डेशन हैं। वृक्ष के चित्र में देखा - ब्राह्मण कहाँ बैठे हैं? फाउण्डेशन में बैठे हो ना। ब्राह्मण फाउण्डेशन मजबूत है, तब आधा कल्प अचल - अडोल रहते हो। साधारण आत्मायें नहीं हो, आधारमूर्त हो, फाउण्डेशन हो। इस समय की आपकी सम्पूर्ण स्थिति सतयुग की 16 कला सम्पूर्ण स्थिति का

आधार है। अब की 'एक - मत' वहाँ के एक राज्य के आधारमूर्त है। यहाँ के सर्व खजानों की सम्पन्नता - ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, सर्व खजाने वहाँ की सम्पन्नता का आधार हैं। यहाँ का देह के आकर्षण से न्यारापन, वहाँ के तन की तन्दरूस्ती के प्राप्ति का आधार है। अशरीरी - पन की स्थिति निरोगी - पन और लम्बी आयु के आधार स्वरूप है। यहाँ की बेफिकर - बादशाह - पन की जीवन वहाँ के हर घड़ी मन की मौज जीवन, इसी स्थिति के प्राप्ति का आधार बनती है। एक बाप दूसरा न कोई - यहाँ की यह अखण्ड - अटल साधना वहाँ अखण्ड, छोटा - सा संसार बापदादा वा मात - पिता और बहन - भाई, वहाँ के छोटे संसार का आधार बनता है। यहाँ एक मात - पिता के सम्बन्ध के संस्कार वहाँ भी एक ही विश्व के विश्व - महाराजन वा विश्व - महारानी को मात - पिता के रूप में अनुभव करते हैं। यहाँ के स्नेह - भरे परिवार का सम्बन्ध, वहाँ भी चाहे राजा और प्रजा बनते लेकिन प्रजा भी अपने को परिवार समझती है, स्नेह की समीपता परिवार की रहती है। चाहे मर्तबे रहते हैं लेकिन स्नेह के मतर्बे हैं, संकोच और भय के नहीं। तो भविष्य की तस्वीर आप हो ना।



आप लोग भी तो यह देख-रेख करती हो कि हमारा संगठन एक संकल्प वाला कहाँ तक बना है? शास्त्रों में गायन है कि ब्रह्मा को संकल्प उठा कि सृष्टि रचें तो सृष्टि रची गई। यहाँ अकेले ब्रह्मा की तो बात नहीं, लेकिन ब्रह्मा सहित सब ब्राह्मणों का भी जब एक साथ यह संकल्प उठे कि अब हम सब एवररेडी हैं और नई दुनिया की स्थापन होनी ही चाहिए या होगी ही - ऐसा दृढ संकल्प जब ब्राह्मणों के अन्दर उत्पन्न हो, तब ही सृष्टि का परिवर्तन हो अर्थात् नई सृष्टि की रचना प्रैक्टिकल में दिखाई दे। इसमें भी संगठन का बल चाहिए। एक दो का वा सिर्फ आठ का नहीं, लेकिन सारे संगठन का एक संकल्प चाहिये। संकल्प से सृष्टि रचना, इसका रहस्य इस प्रकार से है। संकल्प उत्पन्न होगा और सेकेण्ड में समाप्ति का नगाड़ा बजना शुरू हो जायेगा। एक तरफ समाप्ति का नगाड़ा, दूसरी तरफ नई दुनिया का नज़ारा साथ-साथ दिखाई देगा। वहाँ ही विनाश की अति होगी और वहाँ ही जलमई के बीच चारों ओर विनाश में एक हिस्सा धरती और बाकी तीन हिस्सा तो जलमई होगी ना? यह जो सभी पीछेपीछे अनेक धर्मों के कारण

अनेक देश बने हैं, वह अनेक धर्म जब समाप्त होंगे तो अनेक देश भी एक सैरगाह के रूप में जल के बीच एक टापू के मुआफिक हो जायेंगे। तो एक तरफ विनाश की अति के नगाड़े होंगे, दूसरी तरफ फर्स्ट प्रिन्स (श्रीकृष्ण) के जन्म का आवाज बुलन्द होगा, वह पत्ते पर नहीं आयेगा। दिखाते हैं ना जलमर्द के बाद पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। तीन हिस्से जलमर्द में होने के कारण भारत जब परिस्तान बनता है तो उसको जलमर्द दिखा दिया है। ऐसे जलमर्द के बीच पहला पत्ता जो फर्स्ट आत्मा है उसके जन्म का चारों ओर आवाज प्रसिद्ध होगा कि फर्स्ट प्रिन्स प्रत्यक्ष हो चुका है, जन्म हो चुका है। तो वह भी अति में होगा अर्थात् जलमर्द के तीन हिस्से का नज़ारा होगा और एक हिस्सा भारत-परिस्तान के रूप में प्रगट होगा। जो दिखाते हैं कि सोने की द्वारिका पानी से निकल आयी, लेकिन पानी से नहीं - तीन हिस्से पानी में होंगे। इसलिये पानी के बीच सोने की द्वारिका दिखाई देगी। इसलिये कहते हैं कि सोने की द्वारिका पानी से निकल आयी। सिर्फ उस बात का पूरा वर्णन नहीं कर सके हैं और उसी समय पर फर्स्ट आत्मा के जन्म की जयजयकार होगी। ऐसे नज़ारे सामने आते हैं तो पुरानी दुनिया के महाविनाश का नगाड़ा और नये फर्स्ट प्रिन्स के जन्म का नज़ारा साथसाथ दिखाई देगा। जैसे नगाड़ा बजाने से पहले नगाड़े को गर्म किया जाता है तब आवाज बुलन्द होती है। यह भी योग अग्नि से नगाड़ा बजने के पहले तैयारी चाहिए तब नगाड़े में आवाज़ बुलन्द होगी।

✚ अब का स्वराज्य अधिकारी बनना, जितना जैसा बनेंगे उतना ही अधिकार प्राप्त होगा। तो चेक करो - जैसे गायन है एक राज्य...., एक ही राज्य होगा, दो नहीं। तो वर्तमान स्वराज्य की स्थिति में सदा एक राज्य है? स्वराज्य है वा कभी-कभी पर-राज्य भी हो जाता है? कभी माया का राज्य अगर है तो पर-राज्य कहेंगे या स्वराज्य कहेंगे? तो सदा एक राज्य है, पर-अधीन तो नहीं हो जाते? कभी माया का, कभी स्व का? इससे समझो कि सम्पूर्ण वर्सा अभी प्राप्त हो रहा है, हुआ नहीं है, हो रहा है। तो चेक करो सदा एक राज्य है? एक धर्म - धर्म अर्थात् धारणा। तो विशेष धारणा कौन सी है? पवित्रता की। तो एक धर्म है अर्थात् संकल्प, स्वप्न में भी पवित्रता है? संकल्प में भी, स्वप्न में भी अगर अपवित्रता की परछाई है तो क्या कहेंगे? एक धर्म

है? पवित्रता सम्पूर्ण है? तो चेक करो, क्यों? समय फास्ट जा रहा है। तो समय फास्ट जा रहा है और स्वयं अगर स्लो है तो समय पर मंज़िल पर तो नहीं पहुंच सकेंगे ना! इसलिए बार-बार चेक करो। एक राज्य है? एक धर्म है? लॉ और आर्डर है? कि माया अपना आर्डर चलाती है? पर-मात्म बच्चे श्रीमत के लॉ और आर्डर पर चलने वाले। माया के लॉ एण्ड आर्डर पर नहीं। तो चेक करो - सभी भविष्य के संस्कार अभी दिखाई दें क्योंकि संस्कार अभी भरने हैं। वहाँ नहीं भरने हैं, यहाँ ही भरने हैं। सुख है? शान्ति है? सम्पत्तिवान हैं? सुख अभी साधनों के आधार पर तो नहीं है? अतीन्द्रिय सुख है? साधन, इन्द्रियों का आधार है। अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। अखण्ड शान्ति है? खण्डित तो नहीं होती है? क्योंकि सतयुग के राज्य की महिमा क्या है? अखण्ड शान्ति, अटल शान्ति। सम्पन्नता है? सम्पत्ति से क्या होता है? सम्पन्नता होती है। सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियां, ज्ञान यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ - तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। सर्व प्राप्ति का आधार है सन्तुष्टता, असन्तुष्टता अप्राप्ति का साधन है। तो चेक करो - एक भी विशेषता की कमी नहीं होनी चाहिए। तो इतना चेक करते हो? सारा संसार आप अभी के संस्कार द्वारा बनाने वाले हो। अभी के संस्कार अनुसार भविष्य का संसार बनेगा। तो आप सभी क्या कहते हो? कौन हो आप? विश्व परिवर्तक हो ना! विश्व परिवर्तक हो? तो विश्व परिवर्तक के पहले स्व-परिवर्तक। तो यह सब संस्कार अपने में चेक करो। इससे समझ जाओ कि मैं 108 की माला में हूँ या आगे पीछे हूँ? यह चेकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण में अपने वर्तमान और भविष्य को देखो। देख सकते हो?

✚ सभी इस समय अपने श्रेष्ठ स्वमान के सिंहासन पर स्थित हो? सदा स्वमान के सिंहासन पर स्थित रहते हो? या सिंहासन पर टिक नहीं पाते हो? नाम ही है सिंहासन। इसका अर्थ क्या हुआ? इस पर कौन स्थित हो सकता है? सर्व शक्ति सम्पन्न ही इस आसन पर अर्थात् स्थिति में स्थित हो सकता है। सिंह अर्थात् शेर या शेरनी। अगर सिंह नहीं बने हो तो आसन पर स्थित

नहीं हो सकते हो। सिंहासन किस के लिए है? जो सर्वशक्तिमान् की पहली रचना है। पहली रचना में रचयिता के समान सर्व-शक्तियाँ स्वरूप में दिखाई देती हैं? पहली रचना कि विशेषता जो इस समय है क्या उसको जानते हो? जिस विशेषता के कारण विश्व रचयिता के भी मालिक बनते हो, बाप से भी विशेष पूज्य योग्य बनते हो, बाप भी ऐसी रचना का गुणगान करते हैं, और वन्दना करते हैं, वह कौन-सी विशेषता है? बाप का गायन आत्मायें ही करती हैं लेकिन ऐसी सर्वश्रेष्ठ आत्माओं का गायन स्वयं सर्वशक्तिवान् करते हैं अर्थात् परमात्मा द्वारा आत्माओं का गायन होता है। स्वयं बाप ऐसी आत्माओं का हर रोज बार-बार स्मरण करते हैं। ऐसी विशेष आत्माओं की मुख्य विशेषता क्या है जो ऐसे श्रेष्ठ बने हो? अपनी उस विशेषता को जानते हो? अवश्य ही बाप से भी कोई विशेषता आपकी ज्यादा है। उसको जानते हो? किस बात में बाप से भी आगे हो? वह विशेषता सुनाओ। बापदादा से किस बात में आगे हो? अष्ट रत्नों में सिर्फ शक्तियाँ हैं वा पाण्डव भी आ सकते हैं। जब भाई-भाई हैं तो आत्मिक रूप की स्थिति में स्थित हुई आत्मा अष्ट रत्न बन सकते हैं? इसमें शक्ति अथवा पाण्डवों की बात नहीं है, अपितु आत्मिक स्थिति की बात है। दोनों आ सकते हैं। पाण्डवों की सीट भी आठ में है। अच्छा फर्स्ट विशेषता क्या हुई जो आत्माओं को बाप का भी मालिक बनाती है? वो बाप से भी श्रेष्ठ बनते हैं। यह विशेषता है बाप को प्रत्यक्ष करना, बाप के सम्बन्ध में समीप लाना, बाप के वारिस बनाना। यह आप पहली रचना का कर्तव्य है। बाप बच्चों द्वारा ही प्रत्यक्ष होते हैं। निराकार बाप और साकार ब्रह्मा बाप दोनों को, अपने निश्चय, अपने ब्राह्मण जीवन के आधार से, अपने अनुभव के आधार से, विश्व के आगे प्रख्यात किया तब विशेष मानते हैं। तो बाप को प्रख्यात करने की विशेषता बच्चों की है, इसलिए बाप रिटर्न में विश्व के आगे, स्वयं गुप्त रूप में रह, शक्ति सेना व पाण्डव सेना को प्रख्यात करते हैं। तो यह विशेषता बच्चों की है इसलिए बाप से भी ज्यादा पूज्य बने हो। ऐसी अपनी विशेषता स्मृति में रहती है या भूल जाते हो? संगमयुगी ब्राह्मणों की विशेषता सदा स्मृति स्वरूप की है।

✚ माया की अपोजीशन क्यों होती है? अपोजीशन का निवारण बहुत सहज है। अपोजीशन से सिर्फ 'अ' शब्द निकाल दो। तो क्या हो जायेगा? पोजीशन में ठहरने से अपोजीशन होगा? अगर अपने पोजीशन पर स्थित है तो माया की अपोजीशन नहीं होगी। सिर्फ एक शब्द कट कर देना है। अपने पोजीशन में ठहरना - यही याद की यात्रा है। जो हूँ, जिसका हूँ उसमें स्थित होना - यही याद की यात्रा है। मुश्किल है क्या? जो जैसा है ऐसा अपने को मानने में मुश्किल होता है क्या? आप लोगों ने असलियत को भुला दिया है, उसमें स्थित कराने की ही शिक्षा मिली है। तो असली रूप में ठहरना मुश्किल होता है वा नकली रूप में ठहरना मुश्किल होता है? होली के अथवा दशहरे के दिनों में छोटे बच्चे आर्टाफिशियल नकाब पहनते हैं, उन्हों को कहो कि यह नकली नकाब उतार असली रूप में हो जाओ तो क्या मुश्किल होगा? कितना समय लगेगा? आप लोगों ने भी यह खेल किया है ना। क्या-क्या नकाब धारण किये? कब बन्दर का, कब असुर का, कब रावण का। कितने नकली नकाब धारण किये हैं? अब बाप क्या कहते हैं? वह नकली नकाब उतार दो। इसमें क्या मुश्किल है? तो सदैव यह नशा रखो कि असली स्वरूप, असली धर्म, असली कर्म हमारा कौनसा है? असली नॉलेज के हम मास्टर नॉलेजफुल हैं यह नशा कम है? यह नशा सदैव रहे तो क्या बन जायेंगे? जो बन जायेंगे उसका यादगार देखा है? दिलवाला मन्दिर है तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों का यादगार। और सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन-सा है? अचलघरा। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अडोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रूप में भी हिला नहीं सकती। ऐसे अचल बन जायेंगे। यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पाँव हिलाने की कोशिश की लेकिन ज़रा भी हिला न सके। ऐसा नशा रहता है कि यह हमारा यादगार है? या समझते हो कि यह बड़े-बड़े महारथियों का यादगार है? यह मेरा यादगार है - ऐसा निश्चयबुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है। यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमजोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन

विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो, तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना-बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर 'बना-बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है।

✚ अपना पूर्वजपन स्मृति में आया? सभी आत्माओं की शान्ति की शक्ति से पालना की? या यही सोचते रहे-यहाँ यह हुआ, वहाँ यह हुआ? विशेष आत्माओं की ऐसे समय पर सेवा की अति आवश्यकता है। अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा-शक्ति द्वारा विशेष सेवा की? वा जैसे विधिपूर्वक याद में रहते हो, सेवा करते हो, उसी रीति ही किया? आप रूहानी सोशल वर्कर भी हो। तो रूहानी सोशल वर्कर ने अपनी विशेष एक्स्ट्रा सोशल सेवा की? इतनी अपनी जिम्मेवारी समझी? या प्रोग्राम मिलेगा तो करेंगे? ऐसे समय पर सेकेण्ड में अपनी सेवा पर अलर्ट हो जाना चाहिए। यही आप पूर्वज आत्माओं की जिम्मेवारी है। अभी भी विश्व में हलचल है और यह हलचल तो समय प्रति समय बढ़नी ही है। आप आत्माओं का फर्ज है-ऐसे समय पर आत्माओं में विशेष शान्ति की, सहन शक्ति की हिम्मत भरना, लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट देना। समझा, क्या करना है? अभी अपनी जिम्मेवारी वा फर्ज-अदाई और तीव्र गति से पालन करो जिससे आत्माओं को रूहानी शक्ति की राहत मिले, जलते हुए दुःख की अग्नि में शीतल जल भरने का अनुभव करें। यह फर्ज-अदाई कर सकते हो? दूर से भी कर सकते या जब सामने आयेंगे तब करेंगे? कर तो रहे हो लेकिन अभी और जैसे हलचल तेज होती जाती है, तो आपकी सेवा भी और तेज हो। समझा, पूर्वजों की पालना क्या है? ऐसे नहीं कि पूर्वज हैं लेकिन पालना नहीं कर सकते। पूर्वज का काम ही है-पालना द्वारा शक्ति देना। श्रेष्ठ शक्तिशाली स्थिति द्वारा परिस्थिति को पार करने की शक्ति अनुभव कराओ। वर्तमान समय अशान्त आत्माओं को शान्ति देना-यही सभी का विशेष कार्य है। रहमदिल बाप के बच्चों को सर्व आत्माओं के प्रति रहम आता है ना। रहमदिल क्या करता है? रहम का अर्थ ही है-किसी भी प्रकार की हिम्मत देना, निर्बल आत्मा को बल देना। तो आत्माओं के दुःख का संकल्प तो मास्टर सुखदाता आत्माओं के पास पहुँचता ही है। जैसे वहाँ दुःख की लहर है, ऐसे ही विशेष

आत्माओं में सेवा की विशेष लहर चले-देना है, कुछ करना है। क्या किया-वो हर एक को सेवा का एक्स्ट्रा चार्ट चेक करना चाहिए। जैसे साधारण सेवा चलती है, वो तो चलती है। लेकिन वर्तमान समय वायुमण्डल द्वारा, वृत्ति द्वारा सेवा का विशेष अटेन्शन रखो। इसी से स्व की स्थिति भी स्वतः ही शक्तिशाली हो जायेगी। ऐसी लहर फैलाई है? विश्व के राजे बनते हैं तो सर्व आत्माओं के प्रति लहर होनी है ना। वंचित कोई आत्मा न रह जाये। चाहे अन्य धर्म की आत्मायें हों लेकिन हैं तो अपनी वंशावली। चाहे कोई भी धर्म की आत्मायें हैं लेकिन जड़ तो एक ही है। यह लहर है? (नहीं है) अटेन्शन प्लीज़!

✚ बुरे दिन खत्म हो खुशी के उत्साह में रहने के उत्सव का दिन 'संगमयुग' है। जिस बड़े दिन पर वृक्षपति 'कल्प-वृक्ष' की कहानी सुनाते हैं। इसी संगमयुग के बड़े दिन पर कल्प वृक्ष के फाउण्डेशन में चमकती हुई श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माएँ जगमगाती हुई सारे वृक्ष को जगमगाती हैं। लकी सितारे, लवली सितारे, वृक्ष को अति सुन्दर बना देते हैं। वृक्ष के डेकोरेशन चैतन्य जगमगाते सितारे हैं। वृक्ष में व्हाइट और लाइट फरिश्ते चमकते हुए वृक्ष को चमकाते हैं। इसी का यादगार आज के दिन - 'क्रिसमस ट्री' के रूप में सजाते हैं। संगम के बड़े दिन में उत्साह के उत्सव के दिन में, रात को दिन बना देते हैं। अंधकार को रोशनी में बदल लेते हैं। ब्राह्मण परिवार संगम के बड़े दिन पर मिलकर आत्मा का भोजन - 'ब्रह्मा भोजन' प्यार से खाते हैं। इसलिए यादगार रूप में भी सपरिवार मिलकर खाते-पीते मौज मनाते हैं। सारे कल्प में मौज मनाने का दिन वा मौजों का युग - 'संगमयुग' है। जिस संगमयुग में जितना चाहें दिल भरकर मौज मना सकते हैं। ज्ञान अमृत का नशा लवलीन बना देता है। इस रूहानी नशे का अनुभव विशेष बड़े दिन पर करते हैं। संगमयुग के ब्रह्म-महूर्त में अमृतवेले में श्रेष्ठ जन्म की आँख खोली और क्या मिला! कितने सौगाते मिलीं? आँख खोली बूढ़ा बाबा देखा! सफेद-सफेद बाबा देखा! सफेद में लाल देखा ना! कौन देखा? शान्ति कर्त्ता बाप देखा! कितने सौगातें दी। इतनी सौगाते दी जो जन्म-जन्म उन सौगातों से ही पलते रहेंगे। कुछ खरीद नहीं करना पड़ेगा। सबसे बड़ी ते बड़ी सौगात हीरे से भी मूल्यवान स्नेह का कंगन, ईश्वरीय जादू का कंगन दिया। जिस द्वारा जो चाहे जब चाहो संकल्प से आह्वान किया और प्राप्त हुआ। अप्राप्त कोई वस्तु नहीं ब्राह्मणों के खज़ाने

में। ऐसी सौगात आँख खोलते ही, सभी बच्चों को मिली। सबको मिली है ना। कोई रह तो नहीं गया ना। यह है बड़े दिन का महत्त्व। फर्स्ट ब्राह्मण आत्माओं का यादगार, लास्ट धर्म तक भी, निशानी अब तक चल रही है। क्योंकि आप ब्राह्मण श्रेष्ठ आत्माएं सारे वृक्ष के फाउण्डेशन हो। सर्व आत्माओं के दादे परदादे तो आप ही हो ना। आपकी यह शाखायें हैं। वृक्ष का फाउण्डेशन आप बड़े ते बड़े ब्राह्मण हो। इसलिए हर धर्म की आत्मायें किसी न किसी रूप में आप आत्माओं को और आपके संगमयुगी रीति रसम को अभी तक भी मनाते रहते हैं। ऐसी परमपरा की पूज्य आत्माएँ हो। परम-आत्मा से भी डबल पूज्य आप हो। ऐसे स्वयं को बड़े ते बड़े, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समझते हुए मौजों के दिन मना रहे हो ना! मनाने के दिन कितने थोड़े से हैं। कल्प के हिसाब से एक ही बड़ा दिन खूब मनाओ।

✚ कई बच्चे मूँझते हैं कि साकार द्वारा तो यह कहा कि सूक्ष्मवतन है ही नहीं, तो बाबा कहाँ गये? इसका मूल कारण यही है कि जैसे आप लोगों ने देखा होगा कि कभी-कभी छोटे बच्चे जब कोई चीज के पीछे लग जाते हैं तो वह चीज भल अच्छी भी होती है लेकिन हद से ज्यादा उस अच्छी चीज के पीछे पड़ जाते हैं तो बच्चों से क्या किया जाता है? वह चीज उनकी आँखों से छिपाकर यह कहा जाता है कि है ही नहीं। इसलिए ही कहा जाता है कि इसकी जो एकस्ट्रा लगन लग गई है, वह कुछ ठीक हो जाए। और कई बच्चों के मन में यह भी प्रश्न है कि ना मालूम जो बापदादा कहते थे कि सभी को साथ में ले जायेंगे, अब वह तो चले गये। लेकिन वह चले गये हैं? मुक्तिधाम में जा नहीं सकते - सिवाए बारात वा बच्चों के। बारात के बिगर अकेले जा सकते हैं? बारात तैयार है? यही सुना है अब तक कि बारात के साथ ही जायेंगे। जब बारात ही सज रही है तो अकेले कैसे जायेंगे। अभी तो सूक्ष्मवतन में ही अव्यक्त रूप से स्थापना का कार्य चलता रहेगा। जब तक स्थापना का कार्य समाप्त नहीं हुआ है तब तक बिना कार्य सफल किये हुए घर नहीं लौटेंगे, साथ ही चलेंगे और फिर चलने के बाद क्या करेंगे? मालूम है - क्या करेंगे? साथ चलेंगे और साथ रहेंगे। और फिर साथ-साथ ही सृष्टि पर आयेंगे। आप बच्चों का जो गीत है कभी भी हाथ और साथ न छूटे, तो बच्चों का भी वायदा है तो बाप का भी वायदा है। बाप अपने वायदे से बदल नहीं सकते। और भी कोई प्रश्न है? यूँ तो समय प्रति समय सब स्पष्ट होता

ही जायेगा। कईयों के मन में यह भी है ना कि ना मालूम जन्म होगा वा क्या होगा? जन्म होगा? जैसे आप की मम्मा का जन्म हुआ वैसे होगा? आप बच्चों का विवेक क्या कहता है? ड्रामा की भावी को देख सकते हो? थोड़ा-थोड़ा देख सकते हो? जब आप लोग सबको कहते हो कि हम त्रिकालदर्शी बाप के बच्चे हैं तो आने वाले काल को नहीं जानते हो? आपके मन के विवेक अनुसार क्या होना चाहिए? अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर हाँ वा नाँ कहो? तो जवाब निकल आयेगा। (इस रीति से बापदादा ने दो चार से पूछा) बहुत करके सभी का यही विचार था कि नहीं होगा। आज ही उत्तर चाहते हो या बाद में! हलचल तो नहीं चम रही है। यह भी एक खेल रचा जाता है। छोटे-छोटे बच्चे तालाब में पत्थर मारकर उनकी लहरों से खेलते हैं। तो यह भी एक खेल है। बाप तुम सभी के विचार सागर में प्रश्रों के पत्थर फेंक कर तुम्हारे बुद्धि रूपी सागर में लहर उत्पन्न कर रहे हैं। उन्ही लहरों का खेल बापदादा देख रहे हैं। अभी आप सबके साथ ही अव्यक्त रूप से स्थापना के कार्य में लगे रहेंगे। जब तक स्थापना का पार्ट है तब तक अव्यक्त रूप से आप सभी के साथ ही हैं।



अब तो आप सबके सिद्धि का प्रत्यक्ष रूप दिखाई देगा। कोई बिगड़ा हुआ कार्य भी आपकी दृष्टि से, आपके सहयोग से सहज हल होगा जिसके कारण भक्ति में धन्य-धन्य करके पुकारेंगे। यह सब सिद्धियाँ भी आपके सामने प्रत्यक्ष रूप में आयेंगी। कोई सिद्धि के रीति से आप लोग नहीं कहेंगे कि 'हाँ, यह हो जायेगा', लेकिन आपका डायरेक्शन स्वतः सिद्धि प्राप्त कराता रहेगा। तब तो प्रजा जल्दी-जल्दी बनेगी, सब तरफ से निकल कर आपकी तरफ आयेंगे। यह सिद्धि का पार्ट अभी चलेगा। लेकिन पहले इतने शक्तिशाली बनो जो सिद्धि को स्वीकार न करो, तब यह प्रत्यक्षता होगी। नहीं तो, सिद्धि देने वाले ही सिद्धि में फँस जाँएँ तो फिर क्या करेंगे? तो यह सब बातें यहाँ से ही शुरू होनी हैं। बाप का जो गायन है कि वह सर्जन भी है, इंजीनियर भी है, वकील भी है, जज भी है - इसका प्रैक्टिकल सब अनुभव करेंगे, तब सब तरफ से बुद्धि हटकर एक तरफ जायेगी। अभी तो आपके पीछे भीड़ लगाने वाली है। बापदादा तो यह दृश्य देखते हैं और कभी-कभी अब के दृश्य देखते हैं - बहुत फर्क लगता है। आप हो

कौन, वह बाप जानता है! बहुत-बहुत वण्डरफुल पार्ट होने हैं, जो ख्याल-ख्वाब में भी नहीं हैं। सिर्फ थोड़ा रूका हुआ है, बस। जैसे पर्दा कभी-कभी थोड़ा अटक जाता है ना। झण्डा भी लहराते हो तो कभी अटक जाता है। ऐसे अभी थोड़ा-थोड़ा अटक रहा है। आप जो है, जैसे हो - बहुत महान हो। जब आपकी विशेषता प्रत्यक्ष होगी तब तो इष्ट बनेंगे। आखिर तो भक्त माला भी प्रत्यक्ष होगी ना। लेकिन पहले ठाकुर सजकर तैयार हों तब तो भक्त आयें ना। आप सभी श्रेष्ठ आत्मायें सबकी प्यास बुझाने वाले हो ना? वह है स्थूल जल और आपके पास है - 'ज्ञान अमृत'। जल अल्पकाल की प्यास बुझाए तृप्त आत्मा बना देता है। तो सर्व आत्माओं को अमृत द्वारा तृप्त करने के निमित्त बने हुए हो ना। यह उमंग सदा रहता है? क्योंकि, प्यास बुझाना - यह महान पुण्य है। प्यासे की प्यास बुझाने वाले को पुण्य आत्मा कहते हैं। आप भी महान पुण्य आत्मा बन सभी की प्यास बुझाने वाले हो। जैसे प्यास से मनुष्य तड़फते हैं, अगर पानी न मिले तो प्यास से तड़फेंगे ना। ऐसे, ज्ञान-अमृत न मिलने से आत्मायें दुःख-अशान्ति में तड़फ रही हैं। तो उनको ज्ञान अमृत देकर प्यास बुझाने वाली पुण्य आत्मायें हो। तो पुण्य का खाता अनेक जन्मों के लिए जमा कर रहे हो ना? एक जन्म में ही अनेक जन्मों का खाता, अनेक जन्मों के लिए जमा कर रहे हो ना? एक जन्म में ही अनेक जन्मों का खाता जमा होता है। तो आपने इतना जमा कर लिया है ना? इतने मालामाल बन गये जो औरों को भी बाँट सकते हो! अपने लिए भी जमा किया और दूसरों को भी देने वाले दाता बने।



अगर नाजुक समय में भी कोई नाजों से चलेंगे तो रिजल्ट में नुकसान ही होगा। इसलिए अभी संहारीमूर्त बनना है। विकरालरूप धारी बनना है। तो अब दिन प्रतिदिन नाजुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका? अपने संस्कारों का। अपने विकर्मों पर और विकर्मी आत्माएं जो इस समय हैं उन्हीं के ऊपर अब विकराल रूप धारण कर एक सेकंड में भस्म करने का है। शंकर के लिए कहते हैं ना कि एक सेकंड में आँख खोली और विनाश। यह संहारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। कोई के भी ऊपर विकराल रूप बनकर दृष्टि डाली और उनके विकर्मी संस्कारों को भस्म कर दें। तो विकर्मों और व्यर्थ कर्मों, विकर्मियों के ऊपर अब

विकराल रूप धारण करना है। अब स्नेहीमूर्त भी नहीं। अब तो काली रूप चाहिए। विकराल संहारी रूप चाहिए। अब लास्ट समय है। अब तक अगर विकराल रूपधारी नहीं बनेंगे तो अपने विकर्मों और विकर्मियों का सामना नहीं कर सकेंगे। अभी समाने की बात नहीं। विकर्मों, व्यर्थ संकल्पों को वा विकर्मियों के विकर्मी चलन को अब समाना नहीं है लेकिन संहार करना है। अब स्नेह को समाना है। शक्तिरूप को प्रत्यक्ष करना है। शक्तियों को एक ही समय तीन बातें धारण करनी हैं। एक तो मस्तक में मातृ-स्नेहीपने का गुण, रूप में रूहानियत और वाणी में वज्र। एक-एक बोल विकर्मों और विकर्मियों को खत्म करनेवाला हो। जब यह तीनों बातें इकट्ठी धारण होंगी तब क्या होगा? विकर्मों और विकर्मी भस्म हो जायेंगे। शक्तियों की नज़र से विकर्मी आत्माएं कम्पायमान होंगी। किससे? अपने विकर्मों से। तो अब संहारकारी बनो और जल्दी-जल्दी संहार करो। कहाँ-कहाँ श्रृंगार करते संहार को भूल जाते हैं। श्रृंगार तो बहुत किया लेकिन अब संहार करो। मास्टर ब्रह्मा भी बने, पालना की, श्रृंगार किया लेकिन अब पार्ट है संहार का। शक्तियों के अलंकार और शक्तियों की ललकार और शक्तियों के किस कार्य का गायन है? घुँघरू की झंकार। घुँघरू डालकर असुरों पर नाचना है। नाचने से क्या होता है? जो भी चीज़ होगी वह दब कर खत्म हो जाएगी। निर्भयता और विनाश की निशानी यह घुँघरू की झंकार है। ऐसे नहीं कि पाण्डवों ने नहीं किया है। पाण्डव भी शक्ति रूप हैं। शक्ति रूप में दोनों आ जाते हैं। तो यह तीनों कर्तव्य प्रैक्टिकल और प्रत्यक्ष रूप में चल रहे हैं। अब कमजोरों का काम नहीं है। मैदान पर कमज़ोर नहीं आते हैं। शूरवीर आते हैं। तो अब मैदान पर प्रत्यक्ष होने का समय है। शूरवीर शक्तिरूप बनकर प्रत्यक्ष रूप में सामने आओ। जब इस रूप में प्रत्यक्ष होंगे तब क्या होगा? प्रत्यक्षता। बाप और बच्चों की प्रत्यक्षता होगी। जितना प्रत्यक्ष होंगे उतनी प्रत्यक्षता होगी। तो बाप को प्रख्यात करने के लिए प्रत्यक्ष होना पड़े।



आप बच्चों का मनाना एक तो है मिलना और दूसरा है अपने समान बनाना। तो मिलना और बनाना, यही है मनाना। मिलन तो मना ही रहे हो बाकी आप समान बनाना। यह दोनों बातें की गोया शिव जयंती मनायी। जब भक्त लोग जल चढाने के लिए जाते हैं तो भी बीच में ब्राह्मण होते हैं, जो उनसे कराते हैं। तो आप भी ब्राह्मण हो। जैसे भक्त लोग जल चढाते हैं वैसे तुम बच्चे

बाप के ऊपर आत्माओं से जल चढ़वाते हो। यह जल अथवा दूध चढ़ाने की रस्म क्यों चली है? जिस समय जल चढ़ाते हैं उस समय मन में क्या सोचते हैं, मालूम हैं? जल वा दूध जो चढ़ाते हैं उनका भावार्थ यह है। जब कोई भी प्रतिज्ञा करनी होती है तो हाथ में जल उठाते हैं, सूर्य को भी जल चढ़ाते हैं तो अन्दर में प्रतिज्ञा करते हैं। तुम्हारे पास भी जब कोई आते हैं तो पहले-पहले उन्हीं से प्रतिज्ञा का जल लो। एक प्रतिज्ञा कराते हो ना कि हम आज से एक शिवबाबा के ही बनकर रहेंगे। तो पहले उनसे प्रतिज्ञा कराते हो। वह लोग भी अन्दर में प्रतिज्ञा कर फिर स्वयं सम्मुख आकर देवताओं पर अर्पण होते हैं। जो पुरे भक्त होते हैं वह सारा ही अपने को उनके आगे झुकाते हैं अर्थात् अपने को अर्पण कर देते हैं। तो तुम भी पहले उन्हीं से प्रतिज्ञा कराते हो। जब पक्के हो जाते हैं, तो सम्पूर्ण स्वाहा कराते हो। ऐसी सर्विस करनी है। बिलकुल न्यौछावर कराना। आप ने कितने को न्यौछावर कराया है? जो जितना स्वयं न्यौछावर बने हैं उतना ही औरों को बनाते हैं। अभी न्यौछावर होने में मेहनत और समय दोनों ही लगता है। लेकिन थोड़े ही समय में न्यौछावर होनेवालों की क्यू लग जाएगी। जैसे वहां यादगार है काशी कलवट खाने का। स्वयं अपनी इच्छा से कटने को तैयार हो जाते हैं। वैसे यहाँ भी तैयार हो जायेंगे। आप लोगों को इच्छा पैदा करने की मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। स्वयं अपनी इच्छा से जम्प देने के लिए तैयार हो जायेंगे। पाण्डवों के लिए तो प्रसिद्द है कि वह कभी भी प्रतिज्ञा से हिलते नहीं थे। एक परसेंटेज की भी कमी हुई तो इसको कमी ही कहा जायेगा। आज पहले प्रतिज्ञा का जल चढ़ाना है फिर सौगात भी मिलेगी। प्रतिज्ञा की तीन लकीर दिखाते हैं। बेल पात्र भी जो चढ़ाते हैं वह भी तीन पत्तों का होता है। तो आज के दिन तीन प्रतिज्ञा कराई हैं। सहनशीलता का बल अपने में धारण करेंगे, क्यों की क्यू को खत्म करेंगे और आसुरी संस्कारों पर पहरा देना है। तो तीन प्रतिज्ञा का यह बेलपात्र चढ़ाना है। भक्त लोग तो खेल करते हैं लेकिन ज्ञान सहित खेल करना वह तो बच्चे ही जानते हैं। इसलिए आज के शिवरात्री का यादगार फिर भक्ति में रस्म माफिक चलता है। पहले आरम्भ बच्चे ही करते हैं ज्ञान सहित। और फिर भक्त कॉपी करते हैं अन्धश्रद्धा से। ज़रूर कभी किया है तब यादगार बना है।

✚ अमृतवेले उठते स्मृति में लाओ - मैं कौन? फरिश्ता हूँ। संकल्प तो करते हो और चाहते भी हो, फिर भी जब अपनी रिजल्ट देखते हो वा लिख करके भी देते हो, तो मैजारिटी कहते हो कि जितना चाहते हैं उतना नहीं हुआ। 50 परसेन्ट हुआ, 60 परसेन्ट हुआ। तो डायमण्ड जुबली में भी ऐसे परसेन्टेज में होंगे या फुल में होंगे? क्या होगा? डबल फोरेनर्स बोलो परसेन्टेज होगी? हाँ या ना? थोड़ा-थोड़ा छुट्टी दें! शक्तियों में परसेन्टेज होगी? हाँ उमंग से नहीं करते, सोच के करते हैं। डबल विदेशी या भारत वाले अगर परसेन्टेज के बिना फुल पास हो गये तो ब्रह्मा बाबा पता है क्या करेगा? (शाबास देंगे) बस, सिर्फ शाबास दे देगा! और क्या करेगा? रोज़ आपको अमृतवेले अपनी बाहों में समा लेगा। आपको महसूसता होगी कि ब्रह्मा बाबा की बाहों में, अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हैं। बड़ी-बड़ी भाकी मिलेगी। ब्रह्मा बाबा का बच्चों के साथ बहुत प्यार है ना तो अमृतवेले भाकी मिलेगी और सारा दिन क्या मिलेगा? जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना, कि जब तूफान आया, पानी बढ़ गया तो सांप छत्रछाया बन गया। उन्होंने तो श्रीकृष्ण के लिए स्थूल बात दिखा दी है लेकिन वास्तव में ये है रूहानी बात। तो जो फरिश्ता बनेगा उसके सामने अगर कोई भी परिस्थिति आई या कोई भी विघ्न आया तो बाप स्वयं आपकी छत्रछाया बन जायेंगे। करके देखो। क्योंकि ऐसे ही बापदादा नहीं कहते हैं। अच्छा। जिन बच्चों की डायमण्ड जुबली है वो हाथ उठाओ। अभी डायमण्ड जुबली वालों से बापदादा बात करते हैं, आप लोगों ने 14 वर्ष में योग तपस्या की तो विघ्न कितने आये लेकिन आपको कुछ हुआ? तो बापदादा छत्रछाया बना ना, कितनी बड़ी-बड़ी बातें हुई। सारी दुनिया, मुखी, नेतायें, गुरू लोग सब एन्टी हो गये, एक ब्रह्माकुमारियाँ अटल रही, प्रैक्टिकल में बेगरी लाइफ भी देखी, तपस्या के समय भिन्न-भिन्न विघ्न भी देखे। बन्दूक भी आई तो तलवारें भी आई, सब आया लेकिन छत्रछाया रही ना। कोई नुकसान हुआ? जब पाकिस्तान हुआ तो लोग हंगामें में डरकर सब छोड़कर भाग गये। और आपका टेनिस कोर्ट सामान से भर गया। क्योंकि जो अच्छी चीज़ लगती थी, वो छोड़ें कैसे, उससे प्यार होता है ना, तो जो सिन्धी लोग उस समय एन्टी थे वो गाली भी देते थे और सामान भी दिया। जो बढ़िया-बढ़िया चीज़ें थीं वो हाथ जोड़कर देकर गये कि आप ही यूज़ करो। तो दुनिया वालों के लिए हंगामा था और ब्रह्माकुमारियों के लिए पांच रूपये में सब्जियों की सारी बैलगाड़ी थी। पांच रूपये में सब्जियाँ। आप कितने मजे से सब्जियाँ

खाते थे। तो दुनिया वाले डरते थे और आप लोग नाचते थे। तो प्रैक्टिकल में देखा कि ब्रह्मा बाप, दादा - दोनों ही छत्रछाया बन कितना सेफ्टी से स्थापना का कार्य किया। तो जब इन्हों को अनुभव है तो क्या आप अनुभव नहीं कर सकते? पहले आप।

✚ विश्व की पतित-पावनी सरस्वती नदी का गायन ही है - 'गुप्त सेवाधारी'। गंगा और जमुना प्रसिद्ध हैं साकार में। लेकिन सरस्वती की सेवा गुप्त रूप में भी दिखाई है और प्रख्यात में सितारधारी यादगार रूप में भी है। और गुप्त रूप में गुप्त नदी के रूप में यादगार है। दोनों ही पार्ट वण्डरफुल हैं। जन्म द्वारा सेवा के पार्ट का सम्बन्ध है। जहाँ जीत वहाँ जन्म। कोई राज्य की जीत नहीं लेकिन जन्म द्वारा विकारों पर जीत हो जाती है। जहाँ जन्म वहाँ जीत है, न कि जहाँ जीत वहाँ जन्म। यह जो थोड़ा बहुत गायन है वही प्रैक्टिकल में पार्ट तो चलना ही है। अब यह विशेष सेवाधारी, समय का और साकार सेवाधारियों के सेवा की पार्ट समाप्त हो, तब नये राज्य के लेन-देन के वण्डरफुल पार्ट की आदि हो। तो एडवान्स का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामीग्रामी आत्मायें हैं उनका संगठन बहुत मजबूत है। श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म, दिलाने के लिए धरनी तैयार करने का वण्डरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्रगति से चल रहा है। जैसे विनाशकारी बटन दबाने के लिए रूके हुए हैं। वैसे दिव्य जन्म द्वारा स्थापना कराने के निमित्त बनी हुई एडवान्स सेवा की पार्टी टचिंग करने के लिए, मैसेज देने के लिए, प्रत्यक्षता करने के लिए रूकी हुई है। वह तो सम्बन्ध के स्नेह से प्रत्यक्ष करेंगे। यह भी विचित्र कहानियों के रूप से स्थापना के जन्म का पार्ट नूँधा हुआ है। पहले कृष्ण पीछे राधे होगी ना। तो जन्मस्थान और उनकी स्थिति दोनों का सम्पूर्ण कार्य समाप्त कर पीछे जन्म होगा राधे का। इसलिए वह बड़ा वह छोटी हो जायेगी। जैसे यहाँ भी सेवा का भिन्न रूप में जन्म स्थान और स्थिति तैयार करने का भी वण्डरफुल पार्ट है। जैसे यहाँ भी कारोबार के निमित्त जगत् अम्बा के क्षेत्र में पहले जगत अम्बा धरनी बनाने गई और फिर बाप गये। ऐसे जगत अम्बा और मुरबी बच्चा विश्व किशोर साथी, सामना करने वाले थे। मैदान पर आगे सेवा में आने वाले रहे, वैसे ही अभी भी भिन्न रूप में कार्य के संस्कार वही हैं। दोनों स्थापना के जन्म की कहानी में हीरो पार्टधारी हैं। गर्भमहल तैयार करा रहे हैं। यहाँ भी तो कारोबार में निमित्त दोनों मूर्तियाँ रहीं। तो यह महल तैयार करने वाले भी ऐसे पॉवरफुल

चाहिए। यहाँ स्थापना की तैयारी की और फिर वहाँ आप सबके लिए जो विशेष अष्ट रतन हैं, उनके लिए तैयारी कर रहे हैं, महल तैयार कर रहे हैं। जब तैयारी हो तब तो आत्मायें वहाँ जायेंगी ना। तो अब अपवित्र सृष्टि में पवित्र महल तैयार करना कितना श्रेष्ठ कार्य करना पड़े। ऐसी पॉवरफुल आत्मायें चाहिए जो यह पॉवरफुल कार्य कर सकें। ऐसी वैसी नहीं कर सकतीं। वह भी डेट पूछ रहे हैं किस डेट तक महल तैयार चाहिए, डेट बताओ। वह तो कहते हैं साकार सेवा का पार्ट समाप्त होगा तब हमारे कार्य की आदि होगी। इनकी अन्त हमारी आदि।

✚ यह तो सभी जानते ही हो कि सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही 'संगमयुग' है। छोटा-सा युग, छोटी-सी जीवन है। लेकिन इस युग, इस जीवन की विशेषता है जो अब ही जितना जमा करने चाहें वह कर सकते हैं। इस समय के श्रेष्ठ खाते के प्रमाण पूज्य पद भी पाते हो और फिर पूज्य सो पुजारी भी बनते हो। इस समय के श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ नॉलेज का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का, श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का सब श्रेष्ठ खाते अभी जमा करते हो। द्वापर से भक्ति का खाता अल्पकाल का अभी-अभी किया, अभी-अभी फल पाया और खत्म हुआ। भक्ति का खाता अल्पकाल का इसलिए है - क्योंकि अभी कमाया और अभी खाया। जमा करने का अविनाशी खाता जो जन्म-जन्म चलता रहे वह अविनाशी खाते जमा करने का अभी समय है इसलिए इस श्रेष्ठ समय को 'पुरूषोत्तम युग या धर्माऊ युग' कहा जाता है। 'परमात्म अवतरण युग' कहा जाता है। डायरेक्ट बाप द्वारा प्राप्त शक्तियों का युग कहा जाता है। इसी युग में ही बाप विधाता और वरदाता का पार्ट बजाते हैं। इसलिए इस युग को 'वरदानी युग' भी कहा जाता है। इस युग में स्नेह के कारण बाप भोले भण्डारी बन जाते हैं। जो एक का पद्मगुणा फल देता है। एक का पद्मगुणा जमा होने का विशेष भाग्य अभी ही प्राप्त होता है। और युगों में जितना और उतना का हिसाब है। अन्तर हुआ ना! क्योंकि अभी डायरेक्ट बाप वर्से और वरदान दोनों रूप में प्राप्ति कराने के निमित्त हैं। भक्ति में भावना का फल है, अभी वर्से और वरदान का फल है। इसलिए इस समय के महत्त्व को जान, प्राप्तियों को जान, जमा के हिसाब को जान, त्रिकालदर्शी बन हर कदम उठाते रहते हो? इस समय का एक सेकण्ड कितने साधारण समय से बड़ा है - वह जानते हो? सेकण्ड में कितना कमा सकते हो और सेकण्ड में कितना


गँवाते हो, यह अच्छी तरह से हिसाब जानते हो? वा साधारण रीति से कुछ कमाया कुछ गँवाया? ऐसा अमूल्य समय समाप्त तो नहीं कर रहे हो? ब्रह्माकुमार- ब्रह्माकुमारी तो बने लेकिन अविनाशी वर्से और और विशेष वरदानों के अधिकारी बने? क्योंकि इस समय के अधिकारी जन्म-जन्म के अधिकारी बनते हैं। इस समय के किसी न किसी स्वभाव वा संस्कार वा किसी सम्बन्ध के अधीन रहने वाली आत्मा, जन्म-जन्म अधिकारी बनने के बजाए प्रजा पद के अधिकारी बनते हैं। राज्य अधिकारी नहीं। प्रजा पद अधिकारी बनते हैं। बनने आये हैं राजयोगी, राज्य अधिकारी लेकिन अधीनता के संस्कार कारण विधाता के बच्चे होते हुए भी राज्य अधिकारी नहीं बन सकते। इसलिए सदा यह चेक करो - स्व अधिकारी कहाँ तक बने हैं? जो स्व अधिकार नहीं पा सकते वह विश्व का राज्य कैसे प्राप्त करेंगे? विश्व के राज्य अधिकारी बनने का चैतन्य मॉडल, अभी स्व-राज्य अधिकारी बनने से तैयार करते हो। कोई भी चीज़ का पहले माडल तैयार करते हो ना। तो पहले इस माडल को देखो।

✚ जैसे खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती, माना जाता है कि यह मूर्ति है लेकिन पूजी नहीं जाती। ऐसे जो ब्राह्मण आत्मायें सेवा का फल अर्थात् सेवा में सफलता प्राप्त कर लेते हैं लेकिन 'मैं - पन' की चिड़िया ने फल को खण्डित कर दिया, इसलिए सिर्फ माना जायेगा कि सेवा बहुत अच्छी करते हैं, महारथी हैं, सर्विसएबल हैं लेकिन संगमयुग पर भी सर्व ब्राह्मण परिवार के दिल में स्नेह के पात्र वा पूज्य नहीं बन सकते हैं। संगमयुग में दिल का स्नेह, दिल का रिगार्ड - यही पूज्य बनना है। फल को मैं - पन में लाने वाले ऐसा पूज्य नहीं बन सकते। एक है दिल से किसको ऊँचा मानना, तो ऊँचे को पूज्य कहा जाता है। जैसे आजकल की दुनिया में भी बाप ऊँचा होने कारण बच्चे "पूज्य पिताजी" कहकर बुलाते हैं या लिखते हैं ऐसे दिल से ऊँचा मानना अर्थात् दिल से रिगार्ड देना। दूसरा होता है बाहर की मर्यादा प्रमाण रिगार्ड देना ही पड़ता है। तो "दिल से देना" और "देना ही पड़ता" इसमें कितना अन्तर है! पूज्य बनना अर्थात् दिल से सर्व मानें। मैजारिटी होने चाहिए, पहले भी सुनाया कि 5 परसेन्ट तो रह ही जाता है लेकिन मैजारिटी दिल से मानें - यह है संगमयुग पर पूज्य बनना। पूज्य बनने का संस्कार भी अभी से

ही भरना है। लेकिन भक्ति मार्ग के पूज्य बनने में और अब के पूज्य बनने में अन्तर है। अभी आपके शरीरों की पूजा नहीं हो सकती क्योंकि अन्तिम पुराना शरीर है, तमोगुणी तत्वों का बना हुआ शरीर है। अभी फूलों के हार नहीं पड़ेंगे। भक्ति - मार्ग में तो देवताओं के ऊपर चढ़ाते हैं ना। पूज्य की निशानी है - धूप जलाना, हार पहनाना, आरती करना, कीर्तन करना, तिलक लगाना। संगमयुग पर यह स्थूल विधि नहीं है। लेकिन संगमयुग में सदा दिल से उन पूज्य आत्माओं के प्रति सच्चे स्नेह की आरती उतारते रहते हैं। आत्माओं द्वारा सदा कोई - न - कोई प्राप्ति का कीर्तन करते रहते हैं, सदा उन आत्माओं के प्रति शुभ भावना की धूप वा दीपक जगाते रहते हैं। सदा ऐसी आत्माओं को देख स्वयं भी जैसे वह आत्मायें बाप के ऊपर बलिहार गई है, वैसे अन्य आत्माओं में भी बाप के ऊपर बलिहार जाने का उमंग आता है। तो बाप के ऊपर बलिहार जाने का हार सदा उन आत्माओं को स्वतः ही प्राप्त होता है। ऐसी आत्मायें सदा स्मृतिस्वरूप के तिलकधारी होती हैं। इस अलौकिक विधि से इस समय के पूज्य आत्मायें बनती हैं। भक्ति - मार्ग के पूज्य बनने से श्रेष्ठ पूजा अब की है। जैसे भक्ति - मार्ग की पूज्य आत्माओं के दो घड़ी के सम्पर्क से अर्थात् सिर्फ मूर्ति के सामने जाने से दो घड़ी के लिए भी शान्ति, शक्ति, खुशी का अनुभव होता है। ऐसे संगमयुगी पूज्य आत्माओं द्वारा अब भी दो घड़ी - एक घड़ी भी दृष्टि मिलने से भी खुशी, शान्ति वा उमंग - उत्साह की शक्ति अनुभव होती है। ऐसी पूज्य आत्मायें अर्थात् नम्बरवन विशेष आत्मायें हैं।

✚ तो आज वतन में मम्मा और दीदी और दादी त्रिमूर्ति को विशेष सभी के संगठन के बीच खड़ा किया और साथी तो थे लेकिन इन तीनों को विशेष पार्ट से खड़ा किया और इन्हों को याद दिलाया याद है भी। लेकिन इन्हों को गुप्त रूप में सेवा करनी पड़ती है। अमृतवेले यह भी वतन में इमर्ज होते हैं और सेवा पर जाते हैं। सेवा जो विशेष आत्मायें हैं उन्होंने छोड़ी नहीं है। वतन में अमृतवेले इन्हों का फिक्स है आना अपने असली ब्राह्मण जीवन में इमर्ज होना और चारों ओर कोई न कोई सेवा अर्थ मन्सा सेवा मन्सा से मन और बुद्धि द्वारा आत्माओं के मन और बुद्धि को आकर्षण करने की विशेष सेवा करते हैं। तो बापदादा ने आज इन त्रिमूर्ति से पूछा कि आप क्या कर रहे हो? बाप जानता तो है फिर भी पूछता तो है ना। तो इन्होंने कहा कि हम दो प्रकार

से प्रेरणा देते हैं एक हलचल मचाने वालों को भी और दूसरा नये सृष्टि के निमित्त बनने वालों को भी क्योंकि हम इन्तजार कर रहे हैं तो मम्मा ने कहा कि हमें तो बहुत टाइम हो गया है इन्तजार करते। तो हमारी सखियों से पूछना कि क्या अभी तक इन्तजार कराना है या कुछ इंतजाम करना है! तो मम्मा की या दादी दीदी की सखियां तो बहुत बैठी हैं सखे भी बैठे हैं। साथ रहने वाले भाई भी हैं बहिनें भी हैं तो उन्हीं का प्रश्न है तो इन्तजार करना हमारा काम है आपका एडवांस स्टेज वालों का क्या पार्ट है? हम तो इन्तजार कर रहे हैं आपका काम है इन्तजाम करना। हमारा काम है इन्तजार करना। तो कब डेट फिक्स करेंगे? आप सब बाबा के बच्चे जब समान सम्पूर्ण बनेंगे तब इन्तजाम होगा। तो दीदी ने कहा तो मेरी तरफ से एक प्रश्न सभी से पूछो। दीदी ने क्या कहा? तो आप सभी जानते भी हो कहते भी हो एवररेडी। तो सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी हो? और दादी ने क्या कहा? आज रूहरिहान चल रही थी। दादी ने कहा तो मेरे से जब भी कोई मिलता था तो देखा सब कहते भी थे मेरे को तो दादी आपको तो कर्मातीत कर्मातीत बनना है यही तात लगी हुई है। हम भी तो साथ में चलेंगे ना। तो अभी भी मैं अपने साथियों को यही कहती हूँ कि कर्मातीत बनना ही है कब? कब को अब में कब बदली करेंगे? तो बाप तो मुस्कराते रहते हैं। तो आज पहले इन्हीं की रूहरिहान चल रही थी और भी सभी उन्हीं को साथ देते थे मम्मा यह बहुत अच्छा कहा दीदी आप थोड़ा फोर्स भरो ना और दादी को कहते थे तो दादी आपने तो सभी को साथ दिया। बाबा के अव्यक्त होते जो आपने पार्ट बजाया हम सभी के दिलों में दादी की यह बात याद है तो और साथी जो उन्हीं के थे तो कहा दादी अभी आपकी बात को याद करके चलो बाप अव्यक्त है शिव बाबा निराकार है वह अव्यक्त फरिश्ता है। लेकिन दादी तो साकार में थी अभी आपने जो सोचा था वह करके तो दिखावे। दादी जैसी जिम्मेवारी तो लेके दिखावे। मतलब तो आज दिल खोल के रूहरिहान कर रहे थे। सुना। अभी क्या करना है?

 तो अभी शिवरात्रि शिवजयन्ती मनाते हैं तो इसमें विशेष तीन बातें मनाते हैं। कमाल तो बापदादा यह विधियां यह उत्सव मनाने वाले जो कापी की है उसको भी बधाईयां दे रहे हैं। विशेष 3 बातें मनाते हैं एक तो व्रत पालन करते हैं। आप लोगों को कापी किया है लेकिन

अल्पकाल का। आप लोग भी जब से बाप के बने तो दो व्रत धारण किये। एक पवित्रता का सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं ब्रह्माचारी। कई बच्चे क्या करते? मुख्य बड़े बड़े विकारों का व्रत तो रख देते लेकिन छोटे छोटे जो हैं ना उसको छोड़ देते हैं लेकिन छोटे महा-बलि हो जायेंगे। छोटे कम नहीं होते। समय पर धोखा देने वाले छोटे होते हैं। जैसे चूहा होता है ना है तो छोटा लेकिन काटने में नम्बरवन है। फूंक भी देता है तो काटता भी है जो पता ही नहीं पड़े। तो छोटे छोटे विकार कई बच्चे क्रोध को समझते हैं यह तो होता ही है करना ही पड़ता है। तो क्या उसको सम्पूर्ण आत्मा कहेंगे? दूसरा व्रत रखते हैं खानपान का। तो आप सबने भी शुद्ध भोजन का व्रत रखा है ना। कापी तो की है ना। आपने भी पूरा किया है या कभी थक जाते तो कहते अच्छा कुछ खा लो। ऐसे तो नहीं? थक जाओ या तंग हो यूथ वाले क्या करते हैं? जो कुमार हैं वह हाथ उठाओ। तो देखो कापी तो की है ना। व्रत रखते हैं एक दिन के लिए। और आप व्रत रखते हो जीवन के लिए। एक जीवन का व्रत सदा आपेही चलता है। फिर मेहनत नहीं करनी पड़ती। एक जन्म छोटा सा इसमें मेहनत जरूर है त्याग है। त्याग का भाग्य बनता है और साथ में क्या करते हैं? जागरण। आपने कौन सा जागरण किया है? वह नींद का त्याग करते हैं आपने भी अज्ञान की नींद का त्याग किया है कि अज्ञान की नींद को बिना समय के नींद को आने नहीं देंगे। झुटके नहीं खायेंगे। ऐसे ऐसे नहीं। ऐसे। लिया है ना व्रत यह भी। कईयों की आदत होती है ऐसे ऐसे करने की। बापदादा कहते हैं त्याग किया दृढ़ संकल्प किया तो फिर फिर दृढ़ संकल्प ढीला क्यों करते हो? स्कू टाइट करना नहीं आता है? इसको टाइट करने का स्कू ड्राइवर है प्रतिज्ञा। अभी जो कार्य रहा हुआ है कौन सा रहा हुआ है? बोलो। प्रत्यक्षता का। इसका ही पुरुषार्थ कर रहे हो ना। मेरा बाबा आ गया यह झण्डा क्यों लहराते हो? कोई भी कार्य करते हो झण्डा लहराते हो। आज भी झण्डा लहरायेंगे ना। किसका झण्डा लहरायेंगे? बापदादा का सेवा का बर्थ डे का झण्डा लहरायेंगे। जैसे झण्डा लहराते हो तो जब तक पूरा खुले नहीं तब तक खोलते रहते हो। समाप्ति झण्डे की तब तक होती है जब तक फूल नहीं बरसा है। तो आप भी प्रत्यक्षता क्या चाहते हो? बाप की प्रत्यक्षता हो। तो जितनी जागरण की व्रत लेने की प्रतिज्ञा पक्की करेंगे तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। तो प्रत्यक्षता चाहते हो ना! तो समय को समीप लाने

वाले कौन? आप सब हो ना! समय को समीप लाने वाले आप सच्चे सेवाधारी बच्चे हो। विश्व परिवर्तक बच्चे हो।

✚ देखो, भक्ति मार्ग में जो भी उत्सव मनाते हैं, यादगार हैं लेकिन कुछ-कुछ अर्थ से बने हुए हैं। पहले जलाना है फिर मनाना है। पहले मनाना फिर जलाना नहीं। पहले भस्म करो, अशुद्धि को, कमजोरी को, बुराई को जलाओ फिर मनाओ। तो आपने तो बहुत पहले जला दिया ना या अभी भी थोड़ा सा दुपट्टे का कोना रह गया है? पाण्डवों के बुशर्ट या जो चोला पहनते हैं उसका कुछ कोना रह गया हो? साड़ी का कोना तो नहीं रह गया? वास्तव में देखो आत्मिक मनाना और उस मनाने से शक्ति, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना, वह तभी कर सकते हैं जब पहले जलाया है। मनोरंजन के रूप से मनाना वह अलग चीज़ है। वह तो संगमयुग है मौजों का युग, इसलिए मनोरंजन की रीति से भी मनाते हो और मनाओ, खूब मनाओ। लेकिन परमात्म रंग में रंग जाना अर्थात् बाप समान बन जाना। यह है रंग में रंग जाना। जैसे बाप अशरीरी है, अव्यक्त है वैसे अशरीरी पन का अनुभव करना वा अव्यक्त फरिश्ते पन का अनुभव करना - यह है रंग में रंग जाना। कर्म करो लेकिन अव्यक्त फरिश्ता बनके काम करो। अशरीरीपन की स्थिति का जब चाहो तब अनुभव करो। ऐसे मन और बुद्धि आपके कन्ट्रोल में हो। आर्डर करो - अशरीरी बन जाओ। आर्डर किया और हुआ। फरिश्ते बन जायें। जैसे मन को जहाँ जिस स्थिति में स्थित करने चाहो वहाँ सेकण्ड में स्थित हो जाओ। ऐसे नहीं ज्यादा टाइम नहीं लगा, 5 सेकण्ड लग गये, 2 सेकण्ड लग गये। आर्डर में तो नहीं हुआ, कन्ट्रोल में तो नहीं रहा। कैसी भी परिस्थिति हो, हलचल हो लेकिन हलचल में अचल हो जाओ। ऐसे कन्ट्रोलिंग पावर है? या सोचते - सोचते अशरीरी हो जाऊं, अशरीरी हो जाऊं, उसमें ही टाइम चला जायेगा? कई बच्चे बहुत भिन्न-भिन्न पोज़ बदलते रहते, बाप देखते रहते। सोचते हैं अशरीरी बनें फिर सोचते हैं अशरीरी माना आत्मा रूप में स्थित होना, हाँ मैं हूँ तो आत्मा, शरीर तो हूँ ही नहीं, आत्मा ही हूँ। मैं आई ही आत्मा थी, बनना भी आत्मा है ... अभी इस सोच में अशरीरी हुए या अशरीरी बनने की युद्ध की? आपने मन को आर्डर किया सेकण्ड में अशरीरी हो जाओ, यह तो नहीं कहा सोचो -

अशरीरी क्या है? कब बनेंगे, कैसे बनेंगे? आर्डर तो नहीं माना ना! कन्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना! अभी समय प्रमाण इसी प्रैक्टिस की आवश्यकता है। अगर कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो कई परिस्थितियां हलचल में ले आ सकती हैं। इसलिए एक होली शब्द ही याद करो तो भी ठीक है। होली - बीती सो बीती और हो ली बाप की बन गई। और क्या बन गई? होली अर्थात् पवित्र आत्मा बन गई। एक शब्द होली याद करो तो एक होली शब्द के तीन अर्थ यूज करो, वर्णन नहीं करो, हाँ होली माना बीती सो बीती। हाँ बीती सो बीती है - ऐसे नहीं सोचते रहो, वर्णन करते रहो, नहीं। अर्थ स्वरूप में स्थित हो जाओ। सोचा और हुआ। ऐसे नहीं सोचा तो सोच में ही पड़े रहो। नहीं। जो सोचा वह हो गया, बन गये, स्थित हो गये।

✚ होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन बीती सो बीती का पाठ पक्का करना, यही होली मनाना है। होली के दिन एक तो रंग लगाते हैं और दूसरा क्या करते हैं? एक दिन पहले जलाते हैं दुसरे दिन मनाते हैं। जलाने के बाद मनाना है और मनाने में मिठाई खाते हैं। यहाँ आप कौन सी मिठाई खायेंगे? रंग तो बताया कौन सा लगाना है। अब मिठाई क्यों खाते हैं? जब यह रंग लग जाता है तो फिर मधुरता का गुण स्वतः ही आ जाता है। अपने वा दुसरे की बीती को न देखने से सरल चित्त हो जाते हैं और जो सरलचित्त बनता है उसका प्रत्यक्ष रूप में गुण क्या देखने में आता है? मधुरता। उनके नयनों से मधुरता मुख से मधुरता, और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। तो इस रंग से मधुरता आती है इसलिए मिठाई का नियम है। होली पर और क्या करते हैं? (मंगल-मिलन) मंगल मिलन का अर्थ क्या हुआ? यहाँ मंगल मिलन कैसे मनाएंगे? मधुरता आने के बाद मंगल मिलन क्या होता है? संस्कारों का मिलन होता है। भिन्न-भिन्न संस्कारों के कारण ही एक दो से दूर होते हैं, तो जब यह रंग लग जाता है, मधुरता आ जाती है तो फिर कौन सा मिलन होता है? आप लोग सम्मेलन करके आये हो ना। बापदादा ने यह जो भट्टी बनाई है वह फिर संस्कार मिलन की बनाई है। जब संस्कार मिलन हो, यह सम्मेलन हो तब उस सम्मेलन की प्रत्यक्षता देखने में आएगी। आप लोगों ने सम्मेलन किया और बापदादा संस्कारों का मिलन कर रहे हैं। तो इस मिलन का यादगार यह मंगल मिलन है।

बापदादा का बच्चों से मिलन तो है ही लेकिन आपस में सभी से बड़े ते बड़ा मिलाना है संस्कारों का मिलना। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी। देवियों का गायन है ना कि वह सभी को सिद्धि प्राप्त कराती हैं। कोई को भी रिद्धि सिद्धि प्राप्त करनी होती है तो कीन्हों से प्राप्त करते हैं? रिद्धि सिद्धि प्राप्त कराने वाली कौन हैं? देवियाँ। जब पुरुषार्थ की विधि सम्पूर्ण हो जाती है तब यह सिद्धि भी प्राप्त होती है। कभी भी सिद्धि को प्राप्त करने के लिए बापदादा के पास नहीं आयेंगे। देवियों के पास जायेंगे। देवियाँ स्वयं सिद्धि प्राप्त की हुई हैं। तब दूसरों को रिद्धि सिद्धि दे सकती हैं। तुम्हारे पुरुषार्थ की सिद्धि तब होगी जब संस्कारों का मिलन होगा। सबसे जास्ती भक्तों की क्यू बड़ी कहाँ लगती हैं? (देवियों के पास) जैसे हनुमान के मंदिर में व देवियों के मंदिर में ज्यादा भीड़ लगती है। इससे क्या सिद्ध होता है? साकार रूप में भी क्यू कौन देखेगा? प्रत्यक्षता के बाद जो क्यू लगेगी वह कौन देखेंगे? बच्चे ही देखेंगे। बापदादा गुप्त है प्रत्यक्ष रूप में बच्चे ही देखेंगे। तो उसका यादगार प्रत्यक्ष रूप में बड़ी ते बड़ी क्यू भक्तों की, बच्चों के यादगार रूप पर ही लगती है। लेकिन यह क्यू लगेगी कब? जब संस्कार न मिलने का एक शब्द निकल जायेगा तब वह क्यू भी लगेगी।

✚ कैसे भी कड़े ते कड़ी परिस्थिति हो लेकिन हिम्मत और हुल्लास के पंखों द्वारा सेकण्ड में उड़ती कला की ऊँची स्थिति से हर बड़ी और कड़ी परिस्थिति - छोटी और सहज अनुभव होगी। क्योंकि उड़ती कला के आगे सब छोटे-छोटे खेल के खिलौने अनुभव होंगे। कितनी भी भयानक बातें, भयानक के बजाए स्वाभाविक अनुभव होंगी। दर्दनाक बातें दृढ़ता दिलाने वाली अनुभव होंगी। कितने भी दुखमय नजारे बजते रहेंगे। इसलिए खुशी के नगाड़े, दुख के नजारों का प्रभाव नहीं डालेंगे और ही शान्ति और शक्ति से औरों के दुख दर्द की अग्नि को शीतल जल के सदृश्य सर्व के प्रति सहयोगी बनेंगे। ऐसे समय पर तड़पती हुई आत्माओं को सहयोग की आवश्यकता होती है। इसी सहयोग द्वारा ही श्रेष्ठ योग का अनुभव करेंगे। सभी आपके इस सच्चे सहयोग को ही सच्चे योगी मानेंगे। और ऐसे ही हाहाकार के समय “सच्चे सहयोगी सो सच्चे योगी”। इस प्रत्यक्षता से प्रत्यक्षफल की प्राप्ति से ही जय-जयकार होगी। ऐसे समय का ही गायन है - एक बूँद के प्यासे...यह शान्ति की शक्ति की एक सेकण्ड की

अनुभूति रूपी बूँद तड़पती हुई आत्माओं को तृप्ती का अनुभव करायेगी। ऐसे समय पर एक सेकण्ड की प्राप्ति उन्हें ऐसे अनुभव करायेगी - जैसे कि सेकण्ड में अनेक जन्मों की तृप्ती वा प्राप्ति हो गई। लेकिन वह एक सेकण्ड की शक्तिशाली स्थिति की बहुत काल से अभ्यासी आत्मा, प्यासे की प्यास बुझा सकती है। अब चेक करो - ऐसे दुख दर्द, दर्दनाक भयानक वायुमण्डल के बीच सेकण्ड में मास्टर विधाता, मास्टर वरदाता, मास्टर सागर बन ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करा सकते हो? ऐसे समय पर यह क्या हो रहा है, यह देखने वा सुनने में लग गये तो भी सहयोगी नहीं बन सकेंगे। यह देखने और सुनने की जरा भी नाम मात्र इच्छा भी सर्व की इच्छायें पूर्ण करने की शक्तिशाली स्थिति बनाने नहीं देगी। इसलिए सदा अपने अल्पकाल की 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की शक्तिशाली स्थिति में अब से अभ्यासी बनो। हर संकल्प, हर श्वास के अखण्ड सेवाधारी, अखण्ड सहयोगी सो योगी बनो। जैसे खण्डित मूर्ति का कोई मूल्य नहीं, पूज्यनीय बनने की अधिकारी नहीं। ऐसे खण्डित सेवाधारी खण्डित योगी ऐसे समय पर अधिकार प्राप्त कराने के अधिकारी नहीं बन सकेंगे। इसलिए ऐसे शक्तिशाली सेवा का समय समीप आ रहा है। समय घण्टी बजा रहा है। जैसे भक्त लोग अपने ईष्ट देव वा देवियों को घण्टी बजाकर उठाते हैं, सुलाते हैं, भोग लगाते हैं। तो अभी समय घण्टी बजाए ईष्ट देव, देवियों को अलर्ट कर रहे हैं। जगे हुए तो हैं ही लेकिन पवित्र प्रवृत्ति में ज्यादा बिजी हो गये हैं। प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने की, सेकण्ड में अनेक जन्मों की प्राप्ति वाली शक्तिशाली स्थिति के अभ्यास के लिए तैयारी करने की समय घण्टी बजा रहा है। प्रत्यक्षता के पर्दे खुलने का समय आप सम्पन्न ईष्ट आत्माओं का आह्वान कर रहा है। समझा। समय की घण्टी तो आप सबने सुनी ना।



गुजरात-पूना ग्रुप:- सभी दृष्टि द्वारा शक्तियों के प्राप्ति की अनुभूति करने के अनुभवी हो ना। जैसे वाणी द्वारा शक्ति की अनुभूति करते हो। मुरली सुनते हो तो समझते हो ना - शक्ति मिली। ऐसे दृष्टि द्वारा शक्तियों की प्राप्ति के अनुभूति के अभ्यासी बने हो या वाणी द्वारा अनुभव होता है, दृष्टि द्वारा कम? दृष्टि द्वारा शक्ति कैच कर सकते हो? क्योंकि कैच करने के अभ्यासी होंगे तो दूसरों को भी अपने दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव करा सकते हैं। आगे चलकर वाणी द्वारा सबको

परिचय देने का समय भी नहीं होगा और सरकमस्टांस भी नहीं होंगे तो क्या करेंगे? वरदानी दृष्टि द्वारा, महादानी दृष्टि द्वारा महादान, वरदान देंगे। दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति - सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। जड़ मूर्तियों के आगे जाते हैं तो जड़ मूर्ति बोलती तो नहीं है ना। फिर भी भक्त आत्माओं को कुछ-न-कुछ प्राप्ति होती है। तब तो जाते हैं ना। कैसे प्राप्ति होती है? उनके दिव्यता के वायब्रेशन से और दिव्य नयनों की दृष्टि को देख वायब्रेशन लेते हैं। कोई भी देवता या देवी की मूर्ति में विशेष अटेन्शन नयनों के तरफ देखेंगे। फेस (फेस) की तरफ अटेन्शन जाता है क्योंकि मस्तक के द्वारा वायब्रेशन मिलता है, नयनों द्वारा दिव्यता की अनुभूति होती है। वह तो हैं जड़ मूर्तियाँ। लेकिन किसकी हैं? आप चैतन्य मूर्तियों की जड़ मूर्तियाँ हैं। यह नशा है कि हमारी मूर्तियाँ हैं? चैतन्य में यह सेवा की है तब जड़ मूर्तियाँ बनी हैं। तो दृष्टि द्वारा शक्ति लेना और दृष्टि द्वारा शक्ति देना, यह प्रैक्टिस करो। शान्ति के शक्ति की अनुभूति बहुत श्रेष्ठ है। जैसे वर्तमान समय साइन्स की शक्ति का कितना प्रभाव है, हर एक अनुभव करते हैं लेकिन साइन्स की शक्ति निकली किससे? साइलेन्स की शक्ति से ना! जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए प्राप्ति करा रही है, तो साइलेन्स की शक्ति कितनी प्राप्ति करायेगी। तो बाप के दिव्य दृष्टि द्वारा स्वयं में शक्ति जमा करो। तो फिर जमा किया हुआ समय पर दे सकेंगे। अपने लिए ही जमा किया और कार्य में लगा दिया अर्थात् कमाया और खाया। जो कमाते हैं और खा करके खत्म कर देते हैं उनका कभी जमा नहीं होता। और जिसका जमा का खाता नहीं होता उसको समय पर धोखा मिलता है। धोखा मिलेगा तो दुःख की प्राप्ति होगी। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति जमा नहीं होगी, दृष्टि के महत्त्व का अनुभव नहीं होगा तो लास्ट समय श्रेष्ठ पद प्राप्त करने में धोखा खा लेंगे। फिर दुःख होगा, पश्चाताप होगा। इसलिए अभी से बाप की दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों को अनुभव करते जमा करते रहो। तो जमा करना आता है? जमा होने की निशानी क्या होगी? नशा होगा। जैसे साहूकार लोगों के चलने, बैठने, उठने में नशा दिखाई देता है और जितना नशा होता उतनी खुशी होती है। तो यह है रूहानी नशा। इस नशे में रहने से खुशी स्वतः होगी।

✚ वह भी (एडवांस पार्टी) में अपना संगठन मजबूत बना रहे हैं। उन्हीं का कार्य भी आप लोगों के साथ-साथ प्रत्यक्ष होता जायेगा। अभी तो सम्बन्ध और देश के समीप हैं इसलिए छोटे-छोटे ग्रुप उन्हीं में भी कारण अकारण आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं। यह पूर्ण स्मृति नहीं है लेकिन यह बुद्धि में टचिंग है कि हमें मिलकर कोई नया कार्य करना है। जो दुनिया की हालतें हैं, उसी प्रमाण जो कोई नहीं कर सकता है वह हमें मिलके करना है। इस टचिंग से आपस में मिलते जरूर हैं। लेकिन अभी कोई छोटे, कोई बड़े, ऐसा ग्रुप है। लेकिन गये सभी प्रकार के हैं। कर्मणा वाले भी गये हैं, राज्य स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गये हैं। साथ-साथ हिम्मत हुल्लास बढ़ाने वाले भी गये हैं। आज पूरे ग्रुप में इन तीन प्रकार के बच्चे देखे और तीनों ही आवश्यक हैं। कोई प्लैनिंग वाले हैं, कोई कर्म में लाने वाले हैं और कोई हिम्मत बढ़ाने वाले हैं। ग्रुप तो अच्छा बना रहा है। लेकिन दोनों ग्रुप साथ-साथ प्रत्यक्ष होंगे। अभी प्रत्यक्षता की विशेषता बादलों के अन्दर है। बादल बिखर रहे हैं लेकिन हटे नहीं हैं। जितना-जितना शक्तिशाली मास्टर ज्ञान सूर्य की स्टेज पर पहुँच जाते हैं वैसे यह बादल बिखरते जा रहे हैं। मिट जायेंगे तो सेकण्ड में नगाड़ा बज जायेगा। अभी बिखर रहे हैं। वह भी पार्टी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लैन बना रहे हो ना, तो वह भी यूथ हैं अभी। वह भी आपस में बना रहे हैं। जैसे अभी भारत में अनेक पार्टियों की जो विशेषता थी वह कम हो फिर भी एक पार्टी आगे बढ़ रही है ना। तो बाहर की एकता का भी रहस्य है। अनेकता कमजोर हो रही है और एक शक्तिशाली हो रहे हैं। यह स्थापना के राज में सहयोग का पार्ट है। मन से मिले हुए नहीं है, मजबूरी से मिले हैं, लेकिन मजबूरी का मिलन भी रहस्य है। अभी स्थापना की गुह्य रीति-रसम स्पष्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है और हम क्या कर रहे हैं। अभी आप भी क्वेश्चन करते हो कि वह क्या कर रहे हैं और वह भी क्वेश्चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं? लेकिन दोनों ही ड्रामा अनुसार बढ़ रहे हैं। जगदम्बा तो है ही चन्द्रमा। तो चन्द्रमा जगत अम्बा के साथ दीदी का शुरू से विशेष पार्ट रहा है। कार्य में साथ का पार्ट रहा है। वह चन्द्रमा (शीतल) है और वह तीव्र है। दोनों का मेल है। अभी थोड़ा बड़ा होने दो उसको। जगदम्बा तो अभी भी शीतलता की सकाश दे रही है लेकिन प्लैनिंग में आगे आने में साथी भी चाहिए ना। पुष्पशान्ता और दीदी इन्हीं का भी शुरू में आपस में हिसाब है। यहाँ भी दोनों का हिसाब आपस में समीप का है। भाऊ (विश्वकिशोर) तो बैकबोन

है। इसमें भी पाण्डव बैकबोन हैं शक्तियाँ आगे हैं। तो वह भी उमंग- उत्साह में लाने वाले ग्रुप हैं। अभी प्लैनिंग करने वाले थोड़ा मैदान पर जायेंगे फिर प्रत्यक्षता होगी।

✚ रचना अर्थात् अपनी राजधानी तो बना रहे हो ना? राजधानी में भी नम्बरवार तो होते हैं ना? वह भी किस आधार से होते हैं और उनमें भी, आपके ही भक्त हैं। शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं। आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं। जो समीप आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का, बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फेमिली में आते हैं। एक ही समय में, हरेक आत्मा, अपनी रॉयल फेमिली बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राजघराना भी बना रही है; प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है। भक्तों और प्रजा की निशानी क्या होगी? राज्य के सम्बन्ध में आने की बात तो सुनाई, परन्तु प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी, लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरूर होगी। वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में, यथायोग्य तथा यथा-शक्ति पुरुषार्थी होगी, बाकी और भी जो दूसरे सब्जेक्ट्स हैं-धारणा और ईश्वरीय सेवा- उनमें भी यथा-शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी। इसीलिये वह सोलह कला सम्पूर्ण नहीं बन पाती। कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव के वशीभूत होने के कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प नहीं दे सकती। इसलिये रॉयल परिवार में व राजकुल में आने के बजाय वह रॉयल प्रजा बन जाते हैं। रॉयल कुल नहीं, रॉयल प्रजा बाकि भक्त जो होंगे, वह कभी भी, स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक, भक्तपने के संस्कार रहेंगे और वे सदा मांगते ही रहेंगे- आशीर्वाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो, या दृष्टि दो आदि। ऐसे माँगने के संस्कार व

आधीन होने के संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रूप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चेपन का नशा मालिकपन का नशा, और मास्टर सर्वशक्तिमान् का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे-यह है भक्तों की निशानी। अभी इससे देखो कि प्रजा और भक्त कितने बने हैं? भक्त कभी भी डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही संतुष्ट रहते हैं। उनके बार-बार यही बोल रहेंगे, आप ही हमारे लिए सब-कुछ हो, आपके पास ऐसे भक्त भी आवेंगे। न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। अब समझा! आपकी दुनिया व रचना क्या है? आगे चलकर हरेक को यह साक्षात्कार भी होगा कि मैं किस राजधानी में राज्यपद पाने वाली हूँ या पाने वाला हूँ। अच्छा, यह तो हुई सितारों की दुनिया अर्थात् उनकी रचना।

✚ जैसे सितारों का सम्बन्ध चन्द्रमा और सूर्य के साथ है। गुप्त रूप में सूर्य के साथ रहता है और प्रत्यक्ष रूप में चन्द्रमा के साथ रहता है। आप चैतन्य सितारों का सम्बन्ध भी प्रैक्टिकल रूप में किसके साथ रहा? चन्द्रमा के साथ रहा ना। ज्ञानसूर्य तो गुप्त ही है। लेकिन साकार रूप में प्रसिद्ध रूप में तो बड़ी मां ही के साथ संबंध रहा ना। तो अपने को सितारा समझते रहना है। जैसे सितारों का सम्बन्ध चन्द्रमा और सूर्य के साथ रहता है, ऐसे सदा बापदादा के साथ ही सम्बन्ध रहे। जैसे सितारे चमकते हैं वैसे ही अपने चमकते हुए ज्योति-स्वरूप में सदैव स्थित रहना है। सितारे आपस में संगठन में रहते सदा एक दो के स्नेही और सहयोगी रहेंगे। आप चैतन्य सितारों की यादगार यह सितारे हैं। तो ऐसे श्रेष्ठ सितारे बने हो? चैतन्य और चित्र समान हुए हैं? अपने भिन्न-भिन्न रूप के भिन्न-भिन्न कर्तव्य के यादगार चित्र देखते, समझते हो कि यह मुझ चैतन्य का ही चित्र है? चैतन्य और चित्र में अंतर समाप्त हो गया है वा अजुन समीप आ रहे हो? सितारे कब आपस में संगठन में रहते एक दो के स्नेह और सहयोग से दूर रहते हैं क्या? आप लोगों ने कब सम्मेलन नहीं किया है? संदेश देने के सम्मेलन तो बहुत किये हैं। आपके उस अंतिम सम्मेलन का चित्र है। जो चित्र है उसको ही प्रैक्टिकल में लाना है। सभी का सहयोग, सभी का

स्नेह और सभी का एकरस स्थिति में स्थित रहने का चित्र भी है ना। जैसे गोवर्धन पर्वत पर अंगुली दिखाते हैं, तो अंगुली को बिल्कुल सीधा दिखायेंगे। अगर टेढ़ी-बांकी होगी तो हिलती रहेगी। सीधा और स्थित, उसकी निशानी इस रूप में दिखाई है। ऐसे ही अपने पुरुषार्थ को भी बिल्कुल ही सीधा रखना है। बीच-बीच में जो टेढ़ा-बांका रास्ता हो जाता है अर्थात् बुद्धि यहां-वहां भटक जाती है, वह समाप्त हो एकरस स्थिति में स्थित हो जाना है। ऐसा पुरुषार्थ कर रहे हो? लेकिन अपने पुरुषार्थ से स्वयं संतुष्ट हो? वा जैसे भक्तों को कहते हो कि चाहना श्रेष्ठ है लेकिन शक्तिहीन होने कारण जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते हैं, ऐसे ही आप भी जो चाहते हो कि ऐसे श्रेष्ठ बनें, चाहना श्रेष्ठ और पुरुषार्थ कम, लक्ष्य अपने सन्तुष्टता के आधार से दूर दिखाई दे तो उसको क्या कहा जावेगा? महान ज्ञानी? अपने को सर्व-शक्तिवान् की सन्तान कहते हो लेकिन सन्तान होने के बाद भी अपने में शक्ति नहीं है? मनुष्य जो चाहे सो कर सकता है, ऐसे समझते हो ना? तो आप भी मास्टर सर्व-शक्तिवान् के नाते जो आप 3 वर्ष की बात सोचते हो वह अभी नहीं कर सकते हो? अपनी वह अंतिम स्टेज अभी प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हो? कि अंतिम है इसलिये अंत में हो जावेगी? यह कब भी नहीं समझना कि अंतिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अंत में ही आवेगी। अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे तो दूर ही रह जावेंगे, पा न सकेंगे। इसलिये अब पुरुषार्थ में जम्प लगाओ। चलते-चलते पुरुषार्थ की परसेन्टेज में कमी पड़ जाती है।



“सभी अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझते हो? स्वदर्शन चक्रधारी ही भविष्य में चक्रवर्ती राज्य भाग के अधिकारी बनते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् अपने सारे चक्र के अन्दर सर्व भिन्न-भिन्न पार्ट को जानने वाले। सभी ने यह विशेष बात जान ली कि हम सब इस चक्र के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं। इस अन्तिम जन्म में हीर-तुल्य जीवन बनाने से सारे कल्प के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाले बन जाते हौ। आदि से अन्त तक क्या क्या जन्म लिए हैं, सब स्मृति में हैं? क्योंकि इस समय नालेजफुल बनते हो। इस समय ही अपने सभी जन्मों को जान सकते हो तो 5 हजार वर्ष की जन्म-पत्री को जान लिया। कोई भी जन्मपत्री

बताने वाले अगर किसको सुनायेंगे भी तो दो चार छे जन्म का ही बतायेंगे। लेकिन आप सबको बापदादा ने सभी जन्मों की जन्मपत्री बतादी है। तो आप सभी मास्टर नालेजफुल बन गये ना। सारा हिसाब चित्रों में भी दिखा दिया है। तो जरूर जानते हो तब तो चित्रों में दिखाया है ना। अपनी जन्मपत्री का चित्र देखा है? उस चित्र को देख करके ऐसा अनुभव करते हो कि यह हमारी जन्मपत्री का चित्र है। वा समझते हो नालेज समझाने का चित्र है। यह तो नशा है ना कि हम ही विशेष आत्मयें सृष्टि के आदि से अन्त तक कापार्ट बजाने वाली हैं। ब्रह्मा बाप के साथ साथ सृष्टि के आदि पिता और आदि माता के साथ सारे कल्प में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते आये हो ना। ब्रह्मा बाप के साथ पूरे कल्प की प्रीत कीरीति निभाने वाले हो ना। निर्वाण जाने की इच्छा वाले तो नहीं हो ना। जिसने आदि नहीं देखी उसने क्या किया। आप सबने कितनी बार सृष्टि के आदि का सुनहरी दृश्य देखा है। वह समय वह राज्य, वह अपना स्वरूप, वह सर्व सम्पन्न जीवन, अच्छी तरह से याद है वा याद दिलाने की जरूरत है? अपने आदि के जन्म अर्थात् पहले जन्म और अब लास्ट के जन्म दोनों के महत्व को अच्छी तरह से जान लिया है ना। दोनों की महिमा अपरमपार है। जैसे आदिदेव ब्रह्मा और आदि आत्मा श्रीकृष्ण, दोनों का अन्तर दिखाते हो और दोनों को साथ-साथ दिखाते हो - ऐसे ही आप सब भी अपना ब्राहमण स्वरूप और देवता स्वरूप दोनों को सामने रखते हुए देखो कि आदि से अन्त तक हम कितनी श्रेष्ठ आत्मयें रही हैं। तो बहुत नशा और खुशी रहेगी। बनाने वाले और बनने वाले दोनों की विशेषता है। बापदादा सभी बच्चों के दोनों ही स्वरूप देखकर हर्षित होते हैं। चाहे नम्बरवार हो, लेकिन देव आत्मा तो सभी बनेंगे ना। देवताओं को पूज्य, श्रेष्ठ महान सभी मानते हैं। चाहे लास्ट नम्बर की देव आत्मा हो फिर पूज्य आत्म की लिस्ट में हैं। आधा कल्प राज्य भाग्य प्राप्त किया और आधा कल्प माननीय और पूज्यनीय श्रेष्ठ आत्मा बने। जो अपने चित्रों की पूजा, मान्यता चैतन्य रूप में ब्राहमण रूप से देव रूप की अभी भी देख रहे हो। तो इससे श्रेष्ठ और कोई हो सकता है। सदा इस स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। फिर बार-बार नीचे की स्टेज से ऊपर की स्टेज पर जाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

जैसे भक्तों को भावना का फल देते हैं, वैसे ही कोई आत्मा भावना रखकर, तड़पती हुई, आपके पास आये कि 'जीय दान दो' वा 'हमारे मन को शान्ति दो' तो आप लोग उनकी भावना का फल दे सकती हो? उन्हें अपने पुरुषार्थ से जो कुछ भी प्राप्ति होती है वह तो हुआ उनका अपना पुरुषार्थ और उनका फल। लेकिन आपको कोई अगर कहे कि मैं निर्बल हूँ, मेरे में शक्ति नहीं है तो ऐसे को आप भावना का फल दे सकती हो? (बाप द्वारा)। बाप को तो पीछे जानेंगे-जब कि पहले उन्हें दिलासा मिले। लेकिन यदि भावना का फल प्राप्त हो सकता है तब उनकी बुद्धि का योग डायरेक्शन प्रमाण लग सकेगा। ऐसी भावना वाले भक्त अन्त में बहुत आयेंगे। एक हैं-पुरुषार्थ करके पद पाने वाले, वह तो आते रहते हैं, लेकिन अन्त में पुरुषार्थ करने का न तो समय रहेगा और न आत्माओं में शक्ति ही रहेगी, ऐसी आत्माओं को फिर अपने सहयोग से और अपने महादान देने के कर्तव्य के आधार से उन की भावना का फल दिलाने के निमित्त बनना पड़े। वे तो यही समझेंगे कि शक्तियों द्वारा मुझे यह वरदान मिला। जो गायन है 'नजर से निहाल करना। जैसे बहुत तेज बिजली होती है तो स्विच ऑन करने से जहाँ भी बिजली लगाते हो उस स्थान के कीटाणु एक सेकेण्ड में भस्म हो जाते हैं। इसी प्रकार जब आप आत्माएं अपनी सम्पूर्ण पॉवरफुल स्टेज पर हों और जैसे कोई आया और एक सेकेण्ड में स्विच ऑन किया अर्थात् शुभ संकल्प किया अथवा शुभ भावना रखी कि इस आत्मा का भी कल्याण हो-यह है संकल्प-रूपी स्विच। इनको ऑन करने अर्थात् संकल्प को रचने से फौरन ही उनकी भावना पूरी हो जायेगी, वे गद्गद हो जायेंगे, क्योंकि पीछे आने वाली आत्मायें थोड़े में ही ज्यादा राजी होंगी। समझेंगी कि सर्व प्राप्तियाँ हुई। क्योंकि उनका है ही कना-दाना लेने का पार्ट। उनके हिसाब से वही सब-कुछ हो जायेगा। तो सर्व-आत्माओं को उनकी भावना का फल प्राप्त हो और कोई भी वंचित न रहे; इसके लिए इतनी पॉवरफुल स्टेज अर्थात् सर्वशक्तियों को अभी से अपने में जमा करेंगे तब ही इन जमा की हुई शक्तियों से किसी को समाने की शक्ति और किसी को सहन करने की शक्ति दे सकेंगे अर्थात् जिसको जो आवश्यकता होगी वही उसको दे सकेंगे। जैसे डॉक्टर के पास जैसा रोगी आता है, उसी प्रमाण उनको डोज (Dose) देता है और तन्दुरुस्त बनाता है। इसी प्रकार आपको सर्वशक्तियाँ अपने पास जमा करने का अभी से पुरुषार्थ करना पड़े। क्योंकि जिनको विश्व महाराजन् बनना है उनका पुरुषार्थ सिर्फ अपने प्रति नहीं होगा। अपने जीवन में आने वाले विघ्न व परीक्षाओं को पास करना-वह तो बहुत कॉमन

(Common) है लेकिन जो विश्व-महाराजन् बनने वाले हैं उनके पास अभी से ही स्टॉक (Stock) भरपूर होगा जो कि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। तो इसी प्रकार यहाँ भी जो विशेष आत्मायें निमित्त बनेंगी उनमें भी सभी शक्तियों का स्टॉक अन्दर अनुभव हो, तब ही समझें कि अब सम्पूर्ण स्टेज की व प्रत्यक्षता का समय नजदीक है। उस समय कोई याद नहीं होगा। दूसरों के प्रति ही हर सेकेण्ड, हर संकल्प होगा।

✚ दुनिया वालों के लिए विशेष एक बड़ा दिन होता है और बड़े दिन पर क्या करते हैं? वह समझते हैं बड़े दिल से मना रहे हैं। लेकिन आप जानते हो उन्हों का मनाना क्या है! उन्हों का मनाना और आप बड़े-ते-बड़े बाप के बड़े दिल वाले बच्चों का मनाना - कितना न्यारा और प्यारा है! जैसे दुनिया वालों का बड़ा दिन है। खुशी में नाचते-गाते एक-दो को उस दिन की मुबारक देते हैं। ऐसे आप बच्चों के लिए संगमयुग ही बड़ा युग है। आयु में छोटा है लेकिन विशेषताओं और प्राप्ति दिलाने में सबसे बड़ा युग है। तो संगमयुग का हर दिन आपके लिए बड़ा दिन है। क्योंकि बड़े-ते-बड़ा बाप बड़े युग "संगमयुग" में ही मिलता है। साथ-साथ बाप द्वारा बड़े-ते-बड़ी प्राप्ति भी अभी होती है। बापदादा सभी बच्चों को बड़े-ते-बड़ा - "पुरुषोत्तम", अब बनाते हैं। जैसे आज के दिन की विशेषता है खुशियाँ मनाना और एक-दो को गिफ्ट देना, मुबारक देना और फादर द्वारा ही गिफ्ट मिलने का दिन मनाते हैं। आप सबको बाप ने संगमयुग पर ही बड़े-ते- बड़ी गिफ्ट क्या दी है? बापदादा सदा कहते हैं कि मैंने आप बच्चों के लिए हथेली पर स्वर्ग का राज्य-भाग्य लाया है। तो सबकी हथेली पर स्वर्ग का राज्य-भाग्य है ना। जिसको कहते हैं - 'तिरी पर बहिश्त।' इससे बड़ी गिफ्ट और कोई दे सकता है? कितने भी बड़े आदमी बड़ी गिफ्ट दें लेकिन बाप की गिफ्ट के आगे वह क्या होगी? जैसे सूर्य के आगे दीपक। तो संगमयुग की यादगार निशानियाँ अन्य धर्मों में भी रह गई हैं। आपको बड़े युग में बड़े बाप ने बड़े-ते-बड़ी गिफ्ट दी है, इसलिए आज के बड़े दिन पर इस विधि से मनाते हैं। वह क्रिसमस फादर कहते हैं। फादर सदा बच्चों को देने वाला "दाता" है। चाहे लौकिक रीति से भी देखो - फादर बच्चों का दाता होता है। यह है बेहद का फादर। बेहद का फादर गिफ्ट भी बेहद की देते हैं। और कोई भी

गिफ्ट कितना समय चलेगी? कितने अच्छे-अच्छे मुबारक के कार्ड गिफ्ट में देते हैं। लेकिन आज का दिन बीत गया, फिर उस कार्ड को क्या करेंगे? थोड़ा समय चलता है ना। खाने-पीने की मीठी चीजें भी देंगे, वह भी कितना समय चलेंगी! कितना समय खुशी मनायेंगे! नाचेंगे, गायेंगे - एक रात। लेकिन आप आत्माओं को बाप ऐसी गिफ्ट देते हैं जो इस जन्म में तो साथ है ही लेकिन जन्म-जन्म साथ रहेगी। दुनिया वाले कहते हैं खाली हाथ आये और खाली हाथ जाना है। लेकिन आप क्या कहेंगे? आप फलक से कहते हो कि हम आत्माएं बाप द्वारा मिले हुए खज़ानों से भरपूर होकर जायेंगी और अनेक जन्म भरपूर रहेंगी। 21 जन्मों तक यह गिफ्ट साथ रहेगी। ऐसी गिफ्ट कभी देखी है? चाहे किसी भी फारेन के देश के राजा वा रानी हों, ऐसी गिफ्ट दे सकते हैं? चाहे पूरा तख्त दे देवें, ऑफर करें - यह तख्त आप ले लो। आप क्या करेंगे, कोई लेगा? बाप के दिलतख्त के आगे यह तख्त भी क्या है! इसलिए आप सभी फखुर में रहते हो, फखुर अर्थात् रूहानी नशा। इस रूहानी फखुर में रहने वाले किसी भी बात का फिक्र नहीं करते, बेफिक्र बादशाह बन जाते हैं। अभी के भी बादशाह और भविष्य में भी राजाई प्राप्त करते हो इसलिए सबसे बड़ी और सबसे अच्छी यह बेफिक्र बादशाही है।

✚ शक्तिरूप और स्नेह रूप बन जाना है। कितने भी हजारों के बीच खड़े हो तो भी दूर से अलौकिक व्यक्ति नजर आओ। जैसे साकार रूप के लिए वर्णन करते हैं, कोई भी अनजान समझ सकता था कि यह कोई अलौकिक व्यक्ति है। हजारों के बीच में वह हीरा चमकता था। तो फालो फादर। उन्हीं के वायब्रेशन अपने में नहीं लाना, अपने वायब्रेशन से उन्हों को अलौकिक बनाना - यही नवीनता लानी है। अभी सर्विस के कारण कुछ संसारी लोगों में मिक्स लगते हैं। सर्विस के प्रति सम्बन्ध में रहते भी न्यारे रहने का जो मन्त्र है - उसको नहीं भूलना। अभी वह सम्बन्ध जो रखना था सो रख लिया, अभी इस रीति सम्बन्ध रखने की भी आवश्यकता नहीं। सर्विस कारण अपने को हल्का करने की भी जरूरत नहीं। वह समय बीत चुका। अभी लौकिक के बीच अलौकिक नजर आओ। अनेक व्यक्तियों के बीच अव्यक्त मूर्त लगे। वह व्यक्त देखने में आये, आप - अव्यक्त देखने में आओ यह है परिवर्तन। शुरू में कोई के वायब्रेशन अथवा संग

में अपने में परिवर्तन लाते थे, इसलिए कहते थे ब्रह्माकुमारी में हठ बहुत है लेकिन वह हठ अच्छा था ना। यह है ईश्वरीय हठ, इसलिए अब वायब्रेशन के बीच रहते अपने को न्यारा और प्यारा बनाना है। इतनी सर्विस नहीं करेंगे? सिर्फ वाणी से कुर्बान नहीं होते। आप लोगों ने कैसे कुर्बानी की? आन्तरिक आत्मस्नेह से। प्रजा तो बहुत बनाई लेकिन अब कुर्बान करना है। यह सर्विस रही हुई है। वारिस कम और प्रजा ज्यादा बनाई है। क्योंकि वाणी से प्रजा बनती है लेकिन ईश्वरीय स्नेह और शक्ति से वारिस बनते हैं, तो वारिस बनाने है। यह फर्स्ट स्टेज का पुरुषार्थ है। वाणी से किसी को पानी नहीं कर सकते लेकिन स्नेह और शक्ति से एक सेकेण्ड में स्वाहा करा सकते है। यह भी अन्त में मार्क्स मिलते हैं। वारिस कितने बनाये प्रजा कितनी बनाई। वारिस भी किस वैराइटी और प्रजा भी किस वैराइटी की और कितने समय में बने। फाइनल पेपर आज सुना रहे हैं। किस-किस क्वेश्चन पर मार्क्स मिलते है एक तो यह क्वेश्चन अन्तिम रिजल्ट में होगा दूसरा सुनाया अन्त तक सर्विस का शो। और तीसरी बात थी आदि से अन्त तक जो अवस्था चलती आई है उसमें कितना बारी फेल हुए है, पूरा पोतामेल एनाउन्स होगा। कितने बारी विजयी बने और कितने बारी फेल हुए और विजय प्राप्त की तो कितने समय में? कोई भी समस्या को सामना करने में कितना समय लगा? उनकी भी मार्क्स मिलेगी। तो सारे जीवन की सर्विस और स्वस्थिति और अन्त तक सर्विस का सबूत यह तीन बातें देखी जाती हैं। यहाँ भी हर एक एक दो के सामने स्पष्ट देखेंगे कि इन तीन बातों का क्या-क्या पोतामेल रहा है? और उनको सामने लाकर के अपनी रिजल्ट को भी पहले से ही चेक कर सकते हो और जो कमी रह गई है, उनको रिवाइज कर पूर्ण कर सकते हो। अभी भी अगर इन बातों की कमी हो तो भर लो। मेकप कर सकते हो। आधा घण्टा में भी गाडी मेकप हो जाती है। जो 6 घण्टा भी नहीं चलते वह आधा घण्टा में हो जाते है। इसलिए अब मेकप करने का लास्ट चान्स है। अब रिजल्ट देखेंगे। जैसे शुरू से समाचार आते थे कि कितनी ऊँच आत्मायें हमारे पास आ पहुँची हैं। ऐसा समाचार फिर से आना चाहिए। भट्टी का अर्थ ही है बदलना।

✚ क्यों, क्या का क्वेश्चन तो नहीं? जो भी पार्ट चलते हैं उन हरेक पार्ट में बहुत कुछ गुह्य रहस्य समाए हुए हैं, वह रहस्य क्या था? सुनाया था ना समय की सूचना देने लिये बीच- बीच में घंटी बजा कर जगाते हैं। इसलिए आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना - घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा- चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गये हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हीं को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है। जब कोई अलबेला होता है तो आराम से रहता है। जिम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है कि हमको टाइम पर उठना है, यह करना है। अगर कोई प्रोग्राम में नहीं तो अलबेला ही सो जावेगा। तो यह भी अलबेलापन आ जाता है। जब कोई अलबेले हो ढीले पुरुषार्थ के नींद के नशे में मस्त हो जाते हैं तो क्या करना पड़ता है? उनको हिलाना पड़ता है, हलचल करनी पड़ती है कि उठ जायें। जैसी-जैसी नींद होती है वैसा किया जाता है। बहुत गहरी नींद होती है तो उसको हिलाना पड़ता है लेकिन कोई की हल्की नींद होती है तो थोड़ी हलचल करने से भी उठ जाता है। अभी हिलाया नहीं है, थोड़ी हलचल हुई है। दूसरी चीज़ को निमित्त रख उसको हिलाया जाता है। तो जागृति हो जाती है। यह भी ड्रामा में निमित्त बनी हुई जो सूचना-स्वरूप मूर्तियां हैं, उन्हीं को थोड़ा हिलाया, हलचल की तो सभी जाग गये। क्योंकि हल्की नींद है ना। जागे तो ज़रूर लेकिन जागने के साथ रड़ी तो नहीं की? ऐसे होता है, कोई को अचानक जगाया जाता है तो वह घबरा जाता है - क्या हुआ? तो कोई यथार्थ रूप से जागते हैं, कोई कुछ घबराने बाद होश में आते हैं। लेकिन यह होना न चाहिए, ज़रा भी चेहरे पर रूपरेखा घबराने की न आनी चाहिए। आवाज में भी चेंज न हो। आवाज में भी अगर अन्तर आ जाता है वा चेहरे में भी कुछ चेंज आ जाती है तो इसको भी पास कहेंगे? यह तो कुछ नहीं हुआ। अभी बहुत कड़े पेपर तो आने वाले हैं। पेपर को बहुत समय हो जाता है तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है। फिर जब इम्तिहान के दिन नजदीक होते हैं तो फिर अटेंशन देते हैं। तो यह अभी तो कुछ नहीं देखा। पहले के पेपर कुछ अलग हैं, लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी

होनी चाहिए जैसे हृदय का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरूर कुछ कल्याण होगा। लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है।

✚ कोई श्रीमत् पर चले, बहुत अटेन्शन रखे लेकिन दृढ़ संकल्प की कमजोरी हो तो इसकी रिजल्ट क्या होगी? मेहनत का फल खायेंगे। ऐसे मेहनत का फल खाने वाले भी 'क्षत्रिय' की लाइन में आ गये। जब भी उनसे कोई बात पूछो तो मेहनत या मुश्किल की बात ही सुनायेंगे। जैसे सुनाया था एक बात को निकालते तो दूसरी आ जाती, चूहे को निकालते तो बिल्ली आ जाती, बिल्ली को निकालते तो - कुत्ता आता.. ऐसे निकालने में ही लगे रहते हैं। तीन धर्म साथ-साथ स्थापन हो रहे हैं ना, ब्राह्मण, देवता और क्षत्रिया। तो तीनों ही प्रकार के दिखाई देंगे ना। कड़ियों का तो जन्म ही बहुत मेहनत से हुआ है। और कड़ियों ने बचपन से ही मेहनत करना आरम्भ किया है। यह भी भिन्न-भिन्न तकदीर की लकीरें हैं। कोई से पूछेंगे तो कहेंगे हमने शुरू से कोई मेहनत नहीं की। ऐसे नहीं, अलबेले होंगे लेकिन स्वतः स्वरूप बन करके चलते हैं। अलबेले भी मेहनत नहीं महसूस करते हैं लेकिन वह है उल्टी बात! उसका फिर भविष्य नहीं बनता है। बाकी जन्म से अलबेले - बस खाया, पिया और अपनी पवित्र जीवन बिताई, नियम-प्रमाण चलने वाले लेकिन - धारणा को जीवन में लाने वाले नहीं। उनका भी यहाँ नेमीनाथ के रूप में गायन होता है। तो कई सिर्फ नेमीनाथ भी हैं। योग में, क्लास में आयेंगे सबसे पहले। कहेंगे हाँ सुन लिया। आगे बढ़ना-बढ़ाना वह लक्ष्य नहीं होगा। सुन लिया मजा आ गया, ठीक है। आया, गया, चला, खाया - ऐसे को कहेंगे - नेमीनाथ। फिर भी ऐसों की भी पूजा होती है। इतना तो करते हैं कि नियम प्रमाण चल रहे हैं। उसका भी फल - पूज्य बन जाते हैं। बरसात में अनन्य नहीं आयेंगे लेकिन वह जरूर आयेंगे। फिर भी पवित्र रहते हैं इसलिए पूज्य जरूर बन जाते हैं। ऐसे भी तो

चाहिए ना। दस वर्ष भी हो जायेंगे - तो भी अगर उनसे कोई बात पूछते तो पहले दिन का उत्तर होगा वही 10 वर्ष के बाद भी देंगे। अभी बापदादा वतन में बहुत चिटचैट करते हैं। दोनों स्वतंत्र आत्मायें हैं। सेवा तो सेकण्ड में किया, सर्व को अनुभव कराया फिर आपस में क्या करेंगे? रूह-रूहान करते रहते हैं। ब्रह्मा बाप की यही जन्म के पहले दिन की आशा थी। कौन-सी? सदा यह फखुर और नशा रहा - कि मैं भी बाप समान जरूर बनूंगा। आदि के ब्रह्मा के बोल याद हैं? "आ रहा हूँ, समा रहा हूँ," यही सदा नशे के बोल जन्म के संकल्प और वाणी में रहे। तो यही आदि के बोल अब कार्य समाप्त कर जो लक्ष्य रखा है उसी लक्ष्य रूप में समा गये। पहले अर्थ मालूम नहीं था लेकिन बनी हुई भावी पहले से बोल रही थी। और लास्ट में क्या देखा? बाप समान व्यक्त के बन्धन को कैसे छोड़ा! साँप के समान पुरानी खाल छोड़ दी ना! और कितने में खेल हुआ? घड़ियों का ही खेल हुआ ना। इसको कहा जाता है बाप समान व्यक्त भाव को भी सहज छोड़ 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप'। यह संकल्प भी उठा - मैं जा रहा हूँ, क्या हो रहा है! बच्चे सामने हैं लेकिन देखते भी नहीं देखा। सिर्फ लाइट-माइट, समानता की दृष्टि देते उड़ता पंछी उड़ गया। ऐसे ही अनुभव किया ना! कितनी सहज उड़ान हुई, जो देखने वाले देखते रहे और उड़ने वाला उड़ गया। इसको कहा जाता है - आदि में यही बोल और अन्त में वह स्वरूप हो गया। ऐसे ही फालो फादर।



आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप धारण कर ऊँचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने, किसलिए? बच्चों को तीव्रगति से ऊँचा उठाने के लिए। बच्चों को फ़रिश्ते रूप से उड़ाने के लिए। इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है। सिर्फ स्नेह का दिवस नहीं लेकिन विश्व की आत्माओं का, ब्राह्मण आत्माओं का और सेवा की गति का परिवर्तन ड्रामा में नून्हा हुआ था, जो बच्चे भी देख रहे हैं। विश्व की आत्माओं के प्रति बुद्धिवानो की बुद्धि बने। बुद्धि का परिवर्तन हुआ, संपर्क में आये सहयोगी बने। ब्राह्मण आत्माओं में श्रेष्ठ संकल्प द्वारा तीव्रगति से वृद्धि हुई। सेवा के प्रति 'सन शोज फादर' की गिफ्ट से विहंग-मार्ग की सेवा आरम्भ की। यह गिफ्ट सेवा की लिफ्ट बन गई। अभी तक आप ब्राह्मण -आत्माये अपने तन-मन की मेहनत

से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करने हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई. पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी. वी. वालो को सहयोगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बडा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी...बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अ प ने तन- मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी और सबकी अटेंशन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ़ जायेगी। वह ज्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घंटे बजेगें। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माए पश्चाताप करेगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेंगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊँची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन। बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज़ भरे हुए थे। कई बच्चे सोचते हैं - कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलबान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो 'कर्मातीत' नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड-कनेक्शन से पदमगुणा ज्यादा आत्मिक-कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं - ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बाँधा। और बाँधा कितने टाइम में ! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया। बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं - वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना। जब "वाह, ड्रामा वाह" है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना ! नहीं तो कम-से-कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है ? लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं - ड्रामा का फुलस्टाप। उस घड़ी तो फुलस्टाप ही लगा ना। पीछे भले क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घड़ी नहीं। तो "वाह ड्रामा वाह" कहेंगे ना ! 'बाबा-बाबा' कह बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होना ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।



भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं और आप “पा लिया” इसी खुशी में साथ-साथ मनाते गाते नाचते हो। यादगार जो बनाया है उसमें ही बहुत रहस्य समाया हुआ है। पूजा में, चित्रों में दो विशेषतायें विशेष हैं। एक तो है बिन्दू की विशेषता और दूसरी है - बूँद-बूँद की विशेषता। पूजा की विधि में बूँद-बूँद का महत्व है। इस समय आप बच्चे ‘बिन्दू’ के रहस्य में स्थित होते हो। विशेष सारे ज्ञान का सार एक बिन्दू शब्द में समाया हुआ है। बाप भी बिन्दू, आप आत्मायें भी बिन्दू और ड्रामा का ज्ञान धारण करने के लिए जो हुआ - फिनिश अर्थात् फुलस्टापा। बिन्दू लगा दिया। परम आत्मा, आत्मा और यह प्रकृति का खेल अर्थात् ड्रामा तीनों का ज्ञान प्रैक्टिकल लाइफ में ‘बिन्दू’ ही अनुभव करते हो ना। इसलिए भक्ति में भी प्रतिभा के बीच बिन्दू का महत्व है। दूसरा है - बूँद का महत्व- आप सभी याद में बैठते हो या किसी को भी याद में बिठाते हो तो किस विधि से कराते हो? संकल्पों की बूँदों द्वारा - मैं आत्मा हूँ, यह बूँद डाली। बाप का बच्चा हूँ - यह दूसरी बूँद। ऐसे शुद्ध संकल्प की बूँद द्वारा मिलन की सिद्धि को अनुभव करते हो ना। तो एक है शुद्ध संकल्पों की स्मृति की बूँद। दूसरा जब रूह-रूहान करते हो, बाप की एक-एक महिमा और प्राप्ति के शुद्ध संकल्प की बूँद डालते हो ना। आप ऐसे हो, आपने हमको यह बनाया। यही मीठी-मीठी शीतल बूँद बाप के ऊपर डालते अर्थात् बाप से रूह-रूहान करते हो। एक-एक बात करके सोचते हो ना, इकट्ठा ही नहीं। तीसरी बात - सभी बच्चे अपने तनमन- धन से सहयोग की बूँद डालते। इसलिए आप लोग विशेष कहते हो - फुरी फुरी तालाबा। इतना बड़ा विश्व-परिवर्तन का कार्य, सर्वशक्तिवान का बेहद का विशाल कार्य उसमें आप हरेक जो भी सहयोग देते हो, बूँद समान ही तो सहयोग है। लेकिन सभी की बूँद-बूँद के सहयोग से, सहयोग का विशाल सागर बन जाता है। इसलिए पूजा की विधि में भी बूँद का महत्व दिखाया है। विशेष व्रत की विधि दिखाते हैं। व्रत लेते हो ना। आप सभी बाप के सहयोगी बनने में व्यर्थ संकल्प के भोजन का व्रत लेते हो कि कभी भी बुद्धि में अशुद्ध व्यर्थ संकल्प स्वीकार नहीं करेंगे। यह व्रत अर्थात् दृढ़ संकल्प लेते हो और भक्त लोग अशुद्ध भोजन का व्रत रखते हैं। और साथ-साथ आप सदा के लिए जागती ज्योति बन जाते हो और वह उसके याद स्वरूप में जागरण करते हैं। आप बच्चों के अविनाशी रूहानी अन्तर्मुखी विधियों को भक्तों ने स्थूल बाहरमुखी विधियाँ बना दी हैं। लेकिन काफी आप लोगों को ही की है। जो कुछ टच हुआ, रजोप्रधान बुद्धि होने कारण ऐसे ही विधि बना दी। वैसे रजोगुणी नम्बरवन भक्त और

भक्ति के हिसाब से सतोगुणी भक्त, तो ब्रह्मा और आप सभी विशेष आत्मायें निमित्त बनते हो। लेकिन पहले मंसा स्नेह और मंसा शक्ति होने के कारण मानसिक भाव की भक्ति शुरू होती है। यह स्थूल विधियाँ पीछेपीछे धीरे-धीरे ज्यादा होती है। फिर भी रचयिता बाप अपने भक्त आत्मायें रचना को और उन्हीं की विधियों को देख यही कहेंगे कि इन भक्तों के टचिंग की बुद्धि की भी कमाल है। फिर भी इन विधियों द्वारा बुद्धि को बिजी रखने से, विकारों में जाने से कुछ न कुछ किनारा तो किया ना। समझा- आपके यथार्थ सिद्धि की विधि भक्ति में क्या-क्या चलती आ रही है। यह है यादगार का महत्व।

✚ वैसे जितना और उतने का हिसाब होता है, जो करेगा वह पायेगा। उतना ही पायेगा। यह हिसाब है। लेकिन भोलानाथ क्यों कहते? क्योंकि इस समय देने में जितने और उतने का हिसाब नहीं रखता। एक का पद्मगुणा हिसाब है। तो अनगिनत हो गया ना। कहाँ एक, कहाँ पद्म। पद्म भी लास्ट शब्द है इसलिए पद्म कहते हैं। अनगिनत देने वाले भोले भण्डारी का दिन यादगार रूप में मनाते हैं। आपको तो इतना मिला है जो अब तो भरपूर हो ही लेकिन 21 जन्म 21 पीढ़ी सदा भरपूर रहेंगे। इतने जन्मों की गैरन्टी और कोई नहीं कर सकता। कितना भी कोई बड़ा दाता हो लेकिन अनेक जन्म का भरपूर भण्डारा होने की गैरन्टी कोई भी नहीं कर सकता। तो भोलानाथ हुआ ना! नॉलेजफुल होते भी भोला बनते हैं... इसलिए भोलानाथ कहा जाता है। वैसे तो हिसाब करने में - एक-एक संकल्प का भी हिसाब जान सकते हैं। लेकिन जानते हुए भी देने में भोलानाथ ही बनता है। तो आप सभी भोलानाथ बाप के भोलानाथ बच्चे हो ना! एक तरफ भोलानाथ कहते दूसरे तरफ भरपूर भण्डारी कहते हैं। यादगार भी देखो कितना अच्छा मनाते हैं। मनाने वालों को पता नहीं लेकिन आप जानते हो। जो मुख्य इस संगमयुग की पढ़ाई है, जिसकी विशेष 4 सबजेक्ट हैं, वह चार ही सबजेक्ट यादगार दिवस पर मनाते आते हैं। कैसे? पहले भी सुनाया था कि विशेष इस उत्सव के दिन बिन्दु का और बूँद का महत्व होता है। तो बिन्दु इस समय के याद अर्थात् योग के सबजेक्ट की निशानी है। याद में बिन्दु स्थिति में ही स्थित होते हो ना! तो 'बिन्दु' याद की निशानी और बूँद - ज्ञान की भिन्न-भिन्न बूँदें। इस ज्ञान के सबजेक्ट की निशानी 'बूँद' के रूप में दिखाई है। धारणा की निशानी इसी दिन विशेष

व्रत रखते हैं। तो व्रत धारण करना। धारणा में भी आप दृढ़ संकल्प करते हो। तो व्रत रखते हो कि ऐसा सहनशील वा अन्तर्मुख अवश्य बनके ही दिखायेंगे। तो यह व्रत धारण करते हो ना! यह 'व्रत' धारणा की निशानी है। और सेवा की निशानी है 'जागरण'। सेवा करते ही हो - किसको जगाने के लिए? अज्ञान नींद से जगाना, जागरण कराना, जागृति दिलाना यही आपकी सेवा है। तो यह 'जागरण' सेवा की निशानी है। तो चार ही सबजेक्ट आ गई ना। लेकिन सिर्फ रूपरेखा उन्होंने स्थूल रूप में बदल दी है। गुह्य रहस्य धारण करने की दिव्य बुद्धि तो हैं ही नहीं। भक्त-बुद्धि, महीन बुद्धि नहीं होती। भक्त-बुद्धि को बापदादा मोटी बुद्धि कहते हैं। ब्रह्मा बाप के बोल सुने हैं ना। तो यह भी भक्त बुद्धि महीनता को नहीं ग्रहण कर सकते। इसलिए स्थूल रूप, साधारण रूप दे दिया है। फिर भी भक्तों के ऊपर भी भगवान खुश होते हैं, क्यों? फिर भी ठगत बनने से तो बच गये ना। ठगत से भक्त बनना अच्छा ही है। जो सच्चे भक्त होते हैं वह ठगत नहीं होते हैं। वह भावना वाले होते हैं और सदा ही सच्चे भक्तों की यह निशानी होगी कि जो संकल्प करेंगे उसमें दृढ़ रहेंगे। इसलिए भक्तों से भी बाप का स्नेह है। फिर भी आपके यादगार की द्वापर से परम्परा तो चला रहे हैं और विशेष इस दिन जैसे आप लोग यहाँ संगमयुग पर बार-बार समर्पण समारोह मनाते हो, अलग-अलग भी मनाते हो, ऐसे ही आपके इस फंक्शन का भी यादगार वह स्वयं को समर्पण नहीं करते लेकिन बकरे को करते हैं। बलि चढ़ा देते हैं। वैसे तो बापदादा भी हंसी में कहते हैं कि यह 'मैं-मैं-पन' का समर्पण हो तब समर्पण अर्थात् सम्पूर्ण बनो।



जैसे ईश्वर का सबसे श्रेष्ठ नाम है, महिमा है, जन्म है, वर्म है, वैसे ईश्वरीय रत्नों का वा ईश्वरीय सन्तान आत्माओं का मूल्य सर्वश्रेष्ठ है। इस श्रेष्ठ महिमा का वा श्रेष्ठ मूल्य का यादगार अभी भी 9 रत्नों के रूप में गाये और पूजे जाते हैं। 9 रत्नों को भिन्न-भिन्न विघ्न विनाशक रत्न गाया जाता है जैसा विघ्न वैसी विशेषता वाला रत्न रिंग बनाकर पहनते हैं वा लाकेट में डालते हैं। वा किसी भी रूप से उस रत्न को घर में रखते हैं। अभी लास्ट जन्म तक भी विघ्न-विनाशक रूप में अपना यादगार देख रहे हो। नम्बरवार जरूर हैं लेकिन नम्बरवार होते हुए भी अमूल्य और विघ्न विनाशक सभी हैं। आज भी श्रेष्ठ स्वरूप से आप रत्नों का आत्मायें स्वमान रखती हैं। बड़े प्यार से स्वच्छता से सम्भाल के रखती हैं। क्योंकि आप सभी जो भी हो चाहे अपने को

इतना योग्य नहीं भी समझते हो लेकिन बाप ने आप आत्माओं को योग्य समझ अपना बनाया है। स्वीकार किया - 'तू मेरा मैं तेरा'। जिस आत्मा के ऊपर बाप की नजर पड़ी वह प्रभू नजर के कारण अमूल्य बन ही जाते हैं। परमात्म दृष्टि के कारण ईश्वरीय सृष्टि के, ईश्वरीय संसार के श्रेष्ठ आत्मा बन ही जाते हैं। पारसनाथ से सम्बन्ध में आये तो पारस का रंग लग ही जाता है। इसलिए परमात्म-प्यार की दृष्टि मिलने से सारा कल्प चाहे चैतन्य देवताओं के रूप में, चाहे आधा कल्प जड़ चित्रों के रूप में वा भिन्न-भिन्न यादगार के रूप में, जैसे रत्नों के रूप में भी आपका यादगार है, सितारों के रूप में भी आपका यादगार है। जिस भी रूप में यादगार है, सारा कल्प सर्व के प्यारे रहे हो। क्योंकि अविनाशी प्यार के सागर के प्यार की नजर सारे कल्प के लिए प्यार के अधिकारी बना देती है। इसलिए भक्त लोग आधी घड़ी एक घड़ी की दृष्टि के लिए तड़पते हैं कि नजर से निहाल हो जावें। इसलिए इस समय के प्यार की नजर, अविनाशी प्यार के योग्य बना देती है। अविनाशी प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है। प्यार से याद करते, प्यार से रखते। प्यार से देखते। दूसरी बात- स्वच्छता अर्थात् पवित्रता। तुम इस समय बाप द्वारा पवित्रता का जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करते हो। पवित्रता वा स्वच्छता अपना स्वधर्म जानते हो - इसलिए पवित्रता को अपनाने के कारण जहाँ आपका यादगार होगा वहाँ पवित्रता वा स्वच्छता अभी भी यादगार रूप में चल रही है। और आधाकल्प तो है ही पवित्र पालना। पवित्र दुनिया। तो आधाकल्प पवित्रता से पैदा होते, पवित्रता से पलते और आधाकल्प पवित्रता से पूजे जाते हैं। तीसरी बात- बहुत दिल से, श्रेष्ठ समझ, अमूल्य समझ सम्भालते हैं। क्योंकि इस समय स्वयं भगवान मात-पिता के रूप से आप बच्चों को सम्भालते हैं अर्थात् पालना करते हैं। तो अविनाशी पालना होने के कारण, अविनाशी स्नेह के साथ सम्भालने के कारण सारा कल्प बड़ी रायल्टी से, स्नेह से, रिगार्ड से सम्भाले जाते हो। ऐसे प्यार, स्वच्छता, पवित्रता और स्नेह से सम्भालने के अविनाशी पात्र बन जाते हो। तो समझा, कितने अमूल्य हो? हर एक रत्न का कितना मूल्य है! तो आज रत्नागर बाप हर एक रत्न के मूल्य को देख रहे थे। सारे दुनिया की अक्षोणी आत्मार्ये एक तरफ हैं लेकिन आप 5 पाण्डव अक्षोणी से शक्तिशाली हो। अक्षोणी आपके आगे एक के बराबर भी नहीं हैं। इतने शक्तिशाली हो। तो कितने मूल्यवान हो गये! इतने मूल्य को जानते हो? कि कभी-कभी अपने आपको भूल जाते हो।

✚ हर एक परम पावन पूज्य आत्मायें सिर्फ इस एक जन्म के लिए पावन अर्थात् होली नहीं बने हैं। लेकिन पावन अर्थात् होली बनने की रेखा अनेक जन्मों की लम्बी रेखा है। सारे कल्प के अन्दर और आत्मायें भी पावन होली बनती हैं। जैसे पावन आत्मायें धर्मपिता के रूप में धर्म स्थापन करने के निमित्त बनती हैं। साथ-साथ कई महान आत्मायें कहलाने वाले भी पावन बनते हैं लेकिन उन्हीं के पावन बनने में और आप पावन आत्माओं में अन्तर है। आपके पावन बनने का साधन अति सहज है। कोई मेहनत नहीं। क्योंकि बाप से आप आत्माओं को सुख शान्ति पवित्रता का वर्सा सहज मिलता है। इस स्मृति से सहज और स्वतः ही अविनाशी बन जाते! दुनिया वाले पावन बनते हैं लेकिन मेहनत से। और उन्हें 21 जन्मों के वर्से के रूप में पवित्रता नहीं प्राप्त होती है। आज दुनिया के हिसाब से 'होली' का दिन कहते हैं। वह होली मनाते और आप स्वयं ही परमात्मा रंग में रंगने वाले होली आत्मायें बन जाते हो। मनाना थोड़े समय के लिए होता है, बनना जीवन के लिए होता है। वह दिन मनाते और आप होली जीवन बनाते हो। यह संगमयुग होली जीवन का युग है। तो रंग में रंग गये अर्थात् अविनाशी रंग लग गया। जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। सदाकाल के लिए बाप समान बन गये। संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का समान अनुभव करते हो। तो आपकी होली है 'संग के रंग' में बाप समान बनना। ऐसा पक्का रंग हो जो समान बना दे। ऐसी होली दुनिया में कोई खेलते हैं? बाप समान बनाने की होली खेलने आते हैं। कितने भिन्न-भिन्न रंग बाप द्वारा हर आत्मा पर अविनाशी चढ़ जाते हैं। ज्ञान का रंग, याद का रंग, अनेक शक्तियों के रंग, गुणों के रंग, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना स्वतः सदा बन जाए, यह रूहानी रंग कितना सहज चढ़ जाता है। होली बन गये अर्थात् होली हो गये। वह होली मनाते हैं, जैसे गुण हैं वैसा रूप बन जाते हैं। उसी समय कोई उन्हीं का फोटो निकाले तो कैसा लगेगा। वह होली मनाकर क्या बन जाते और आप होली मनाते हो तो फरिश्ता सो देवता बन जाते हो। है सब आपका ही यादगार लेकिन आध्यात्मिक शक्ति न होने के कारण आध्यात्मिक रूप से नहीं मना सकते हैं। बाहरमुखता होने कारण बाहरमुखी रूप से ही मनाते रहते हैं। आपका यथार्थ

रूप से मंगल मिलन मनाना है। होली की विशेषता है जलाना, फिर मनाना और फिर मंगल मिलन करना। इन तीन विशेषताओं से यादगार बना हुआ है। क्योंकि आप सभी ने होली बनने के लिए पहले पुराने संस्कार, पुरानी स्मृतियाँ सभी को योग अग्नि से जलाया तभी संग के रंग में होली मनाया अर्थात् बाप समान संग का रंग लगाया। जब बाप के संग का रंग लग जाता है तो हर आत्मा के प्रति विश्व की सर्व आत्मायें परमात्म परिवार बन जाते हैं। परमात्म परिवार होने के कारण हर आत्मा के प्रति शुभ कामना स्वतः ही नेचुरल संस्कार बन जाती है। इसलिए सदा एक दो में मंगल मिलन मनाते रहते हैं। चाहे कोई दुश्मन भी हो, आसुरी संस्कार वाले हों लेकिन इस रूहानी मंगल मिलन से उनको भी परमात्म रंग का छींटा जरूर डालते। कोई भी आपके पास आयेगा तो क्या करेगा? सबसे गले मिलना अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा समझ गले मिलना। यह बाप के बच्चे हैं। यह प्यार का मिलन शुभ भावना का मिलन उन आत्माओं को भी पुरानी बातें भूला देती हैं।



घाटकोपर (बंबई) सेवाकेंद्र की नलिनी बहन के लौकिक पिताजी काकू भाई ने 14.1.1988 प्रातः 3.15 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ा, उनके निमित्त प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा ने महावाक्य उच्चारण किए ड्रामा में जो भी दृश्य होते हैं वह सभी अपने - अपने समय प्रमाण बहुत ही रहस्ययुक्त होते हैं। जो भी अनन्य स्नेही आत्माएं जाती हैं, हर एक आत्मा के जाने में भी भिन्न - भिन्न राज होते हैं। अनन्य आत्मायें सदा जहाँ भी जाती हैं सेवा के निमित्त जाती हैं। जैसे संगमयुग की ब्राह्मण जीवन में सेवा के संगठन से सेवा सफल होती जा रही है, ऐसे नई दुनिया की स्थापना के राज में भी संगठन द्वारा कार्य वृद्धि को प्राप्त कर सफलता को प्राप्त कर रहा है। तो इस स्थापना के पार्ट में जिन आत्माओं का जिस समय पार्ट है, वह ड्रामा अनुसार आत्माओं का जाना और उसी कार्य के निमित्त बनना - यह रहस्य कुछ समय से चल रहा है और चलता रहेगा। इसलिए, अनन्य आत्माओं का जाना ऐसा ही है जैसे सेवा का पार्ट बदलना वा सेवा के पार्ट अनुसार शरीर रूपी वस्त्र बदली करना। जैसा पार्ट वैसे वस्त्र चाहिए, वैसे सम्बन्ध चाहिए, वैसा स्थान चाहिए। तो यह तो सेवा के पार्ट से आना - जाना चलता ही रहता है। तो इस आत्मा का भी सेवा का पार्ट है और इस शरीर से भी हिसाब - किताब पूरा होने का टाइम

आता है। इसलिए, ऐसे कमाई करके जाने वाली आत्माओं के लिए कोई आत्माओं को फिकर करने की तो बात ही नहीं। सेवा पर जाने की तो खुशी है। क्योंकि पुराने शरीर से तो इतनी सेवा कर नहीं पाते। तो नया पार्ट बजाएंगे। और जाना तो सबको है, सिर्फ समय की बात है। इसलिए, सदा जैसे स्वयं खुश रहे, वैसे सभी को चाहे लौकिक सम्बन्धी हैं, चाहे अलौकिक हैं - सभी को उनकी खुशी की विशेषता सदा याद रखनी है। जैसे वह स्वयं हल्के रहे, जाने में भी हल्के रहे, रहने में भी हल्के रहे। इसी रीति से सभी को ऐसे ही उनकी विशेषता से स्नेह रखना ही आत्मा से स्नेह है। तो बहुत अच्छा पार्ट बजा के गये और आगे भी अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाएंगे। इसीलिए, हर आत्मा की विशेषता याद रखो, हर आत्मा का विशेष पार्ट याद रखो। तो इससे स्वयं में, वातावरण में सदा ही शांति और शक्ति रहेगी। और वह ऐसी आत्मा तो है ही नहीं जो उसको विशेष बल देंगे तभी खुश रहेगी। वह तो खुश है ही। बाकी अपने स्नेह की रीति याद की यात्रा से स्नेह का सहयोग देना वह तो ब्राह्मण जीवन की रीति - रस्म है। बाकी ऐसी आत्मा नहीं है जो शक्ति देंगे तो शक्ति आएगी। शक्तिशाली है, बाप के साथ सम्बन्ध होने के कारण बाप के पास ही शक्तिस्वरूप बन अनुभव कर रही है। इसलिए जो ड्रामा बीता वह अच्छा कहेंगे। दुनिया वाले तो कहेंगे कि 'हाय, वह चला गया!' और आप क्या कहेंगे? सेवा पर गया। चला नहीं गया, सेवा पर गया। सेवा पर कोई जाता है तो क्या करते हो? खुश होते हो या रोते हो? तो यह भी सेवा पर गये। इसलिए, यह सदा हर्षित आत्मा थी, सदा हर्षित रहेगी। अच्छा! दुनिया के हिसाब से भी अपना पार्ट तो सब पूरा किया। उस हिसाब से भी कोई बड़ी बात नहीं। ब्राह्मणों के लिए तो कोई छोटा भी जाय तो भी बड़ी बात नहीं। यहाँ कोई जवान चला जाए तो रोयेंगे? वहाँ कोई बुजुर्ग जाता है तो लड्डू बाँटते हैं और यहाँ कोई जवान भी जाएगा तो हलुवे का भोग खायेंगे। उसको भी खिलाएंगे, आप भी खाएंगे। क्या करते हो? जब संस्कार करके आते हो तो क्या करते हो? हलुवा ही खाते हो ना! क्योंकि ज्ञान का है ना। इसलिए नथिंगन्यू।



सितारों की दुनिया का गीत गाते हैं लेकिन वह कौन से सितारों की दुनिया है जिसका गायन है, इस रहस्य को भी आप सब जानते हो? हर सितारे का अपना-अपना प्रभाव दिखाते हैं।

सितारों के आधार पर जन्मपत्रि और भविष्य बताते हैं। चैतन्य रूप में आप ज्ञान सितारे सारे कल्प के हर आत्मा के जन्मपत्रि के आधार मूर्त हो। ज्ञान सितारों के श्रेष्ठ जन्म और वर्तमान जन्म के आधार पर प्रालब्ध के जन्म, अर्थात् पूज्य पद के जन्म और पूज्य के आधार पर पुजारी के जन्म, ऐसे 84 जन्मों की कहानी के आधार पर अन्य धर्म आत्माओं के जन्म की पत्रि का आधार है। आपकी जन्मपत्री में उन्हीं की जन्मपत्री नूंधी हुई है। आप हीरो और हीरोइन पार्टधारी के आधार पर सारा ड्रामा नूंधा हुआ है। आप आत्माओं का पुजारीपन आरंभ होना और अन्य धर्म की आत्माओं की स्थापन होना, आप पूर्वज आत्माओं के आधार पर है। यह छोटी-छोटी बिरादरियाँ निकलती हैं, इसलिए यादगार रूप में भी हृद के सितारों के आधार पर भविष्यदर्शा बनते हैं। क्योंकि इस समय आप त्रिकालदर्शी बनते हैं, आप चैतन्य सितारे त्रिकालदर्शी हो। हर आत्मा को भविष्य बनाने के निमित्त बने हुए हो। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवन्मुक्ति दो। लेकिन जीवन्मुक्ति के गेट खोलने के निमित्त ज्ञान-सूर्य बाप के साथ ज्ञान-सितारे निमित्त बनते हैं। इसलिए आपकी जड़ यादगार सितारे भी भविष्यदर्शा बने हुए हैं अर्थात् भविष्य दिखाने के निमित्त बने हुए हो। अभी जड़ यादगार हृद के सितारे को देखते, अपना सितारा स्वरूप स्मृति में आता है? सितारों में भी अलग-अलग स्पीड दिखाते हैं। चक्र लगाने की स्पीड कोई की तेज गति दिखाते और कोई की धीमी गति दिखाते। कोई सितारे संगठित रूप हैं, कोई सितारे एक दो से कुछ दूरी पर दिखाते हैं, कोई बार-बार जगह बदली करते हैं और कोई पुच्छल तारे होते हैं। यह सब प्रकार की चैतन्य सितारों की स्थिति, पुरुषार्थ की स्पीड, अचल और हलचल का रूप संगठित रूप में, सेवाधारी वा सर्व स्नेही वा सहयोगी का स्वरूप, श्रेष्ठ गुणों और कर्तव्य का स्वरूप, यादगार रूप में दिखाया है। सितारों का चन्द्रमा के साथ सम्बन्ध दिखाया है। कोई चन्द्रमा के समीप हैं और कोई दूर हैं। ज्ञान सूर्य की सन्तान होते हुए भी चन्द्रमा के साथ का चित्र क्यों बना हुआ है? इसका भी रहस्य है। चन्द्रमा अर्थात् बड़ी माँ, ब्रह्मा को कहा जाता है। ज्ञान सूर्य से सर्व शक्तियों की नॉलेज की लाईट जरूर लेते हैं, लेकिन ड्रामा के अन्दर पार्ट बजाने में साकार रूप में साथ आदि पिता ब्रह्मा और ब्राह्मणों का है। ज्ञान सूर्य इस चक्र से न्यारा रहता है। इसीलिए अनेक जन्मों का भिन्न नाम-रूप में, साथ चन्द्रमा और ज्ञान सितारों का रहता है। इसी कारण यादगार चित्र में भी चन्द्रमा और सितारों का सम्बन्ध है। अपने आपसे पूछो कि मैं

कौनसा सितारा हूँ? संगठित रूप में सर्व के स्नेही और सदा सहयोगी बनने की स्थिति रहती है? वा संगठन में स्वभाव, संस्कार, स्थिति बदल लेते हैं, अर्थात् स्थान बदल लेते हैं? सदा चमकते हुए विश्व को रोशन करने वाले सितारे हो? वा स्वयं को स्वयं भी नॉलेज की लाईट और याद की माईट नहीं दे सकते हो? अन्य आत्माओं को लाईट और माईट के आधार पर ठहरे हुए हैं? सदा स्वयं को त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रखते हो? ऐसे अपने आपको चेक करो। सुनाया था ना कि तीन प्रकार के सितारे हैं - एक है सदा लकी सितारे, दूसरे हैं सदा सफलता के सितारे, तीसरे हैं उम्मीदवार सितारे।



लेकिन कोई बच्चों की सम्पूर्ण स्टेज समीप है। जिसकी निशानी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा-सदा अपने सम्पूर्ण स्टेज और भविष्य प्रालब्ध अर्थात् फरिश्ता स्वरूप और देवपद स्वरूप दोनों ही सदा ऐसे स्पष्ट स्मृति में रहते थे जो सामने जाने वाले भी पुरुषार्थी स्वरूप होते हुए भी फरिश्ता रूप और भविष्य श्रीकृष्ण का रूप देखते और वर्णन करते थे। ऐसे बच्चों में भी सम्पूर्णता के समीप आने की निशानी स्वयं भी समीपता का अनुभव करेंगे और औरों को भी अनुभव होगा। व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति करेंगे। जिससे सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करेंगी। यह है समीपता की निशानी। और कई बच्चों को अभी सम्पूर्णता स्पष्ट और समीप नहीं अनुभव होती, उनकी निशानी क्या होगी? जो स्पष्ट चीज़ होती है और समीप चीज़ होती है उसको अनुभव करना सहज होता है। और दूर की चीज़ को अनुभव करना, उसमें विशेष बुद्धि लगानी पड़ती है। ऐसे ही ऐसी आत्माएं भी नालेज के आधार से बुद्धियोग द्वारा सम्पूर्ण स्टेज को खींचकर मेहनत से उसमें स्थित रह सकती हैं। दूसरी बात- ऐसी आत्माओं को स्पष्ट और समीप न होने के कारण कभी कभी यह भी संकल्प उत्पन्न होता है कि बनना तो चाहिए लेकिन बन सकूंगी? स्वयं के प्रति जरा-सा व्यर्थ संकल्प के रूप में शक पैदा होगा-जिसको कहा जाता है - “संशय का रायल रूप”। शक जरा-सा लहर के माफिक भी आया तो गया। लेकिन निश्चय बुद्धि विजयन्ति। उसमें यह स्वप्न मात्र संकल्प, लहर मात्र संकल्प भी फाइनल नम्बर में उसे दूर कर देता है। उसका विशेष संस्कार वा स्वभाव अभी अभी बहुत उमंग-उत्साह में उड़ने वाले और अभी अभी स्वयं से दिलशिकस्त। बार-बार जीवन में यह

सीढ़ी उतरते और चढ़ते रहेंगे। दिलखुश और दिलशिकस्त की सीढ़ी, कारण? अपनी सम्पूर्ण स्टेज स्पष्ट और समीप नहीं। तो अभी क्या करना है? अभी सम्पूर्ण स्टेज को समीप लाओ। कैसे लायेंगे? उसकी विधी को जानते भी हो। क्या जानते हो? है तो हंसी की बात। बापदादा क्या देखते हैं। कई बच्चे, सब नहीं लेकिन मैजारिटी, क्या करते हैं? ऊंचे ते ऊंचे बाप के लाडले होने के कारण ज्यादा लाडले हो जाते हैं। तो ज्यादा लाडले होने के कारण नाजुक बन जाते हैं। नाजुक तो नाज-नखरे ही करेंगे। नाज नखरे भी कौन से करते हैं? बाप की बातें बाप को ही सुनाने लगते हैं। आप नाजुक बनते और बाप को कहते हैं हमारे तरफ से आप करो। सहनशक्ति की मजबूती कम है, सहनशक्ति है सर्व विघ्नों से बचने का कवच। कवच न पहनने के कारण नाजुक बन जाते हैं। मुझे करना है, यह पाठ बहुत कच्चा रहता है। लेकिन दूसरा करे या बाप करे, यह पाठ नाजुक बना देता है। इसी कारण अलबेलेपन का पर्दा आ जाता है और सम्पूर्ण स्टेज समीप और स्पष्ट नहीं दिखाई देती है। इसलिए तीन लोकों में चक्कर लगाने के बजाए इसी दिलखुश और दिलशिकस्त की बातों में, इसी दुनिया में या इसी सीढ़ी पर उतरते चढ़ते हैं। तो इसीलिए क्या करना पड़े? लाडले भले बनो लेकिन अलबेलेपन के लाडले नहीं बनो। तो क्या हो जायेगा? अपनी सम्पूर्णता को सहज पा सकेंगे। पहले तो अपने सम्पूर्ण स्टेज को, स्वयं को वरना है अर्थात् सदा उमंगउत्साह की वरमाला पहननी है तब फिर लक्ष्मी को वरेंगे। वा नारायण को वरेंगे। समझा क्या करना है? आप सबकी सम्पूर्ण स्टेज आप पुरुषार्थी का आह्वान कर रही है। जब आप सब सम्पूर्ण स्टेज को पाओ तब ही सम्पूर्ण ब्रह्मा और ब्राह्मण साथ-साथ ब्रह्मघर में जा सकें और फिर राज्य अधिकारी बन सकें।

✚ लौकिक जीवन में बाप वा गुरु वरदान देते हैं। 'धनवान भव', 'पुत्रवान भव', 'बड़ी आयु भव', या 'सुखी भव' का वरदान देते हैं। बापदादा ने क्या वरदान दिया? 'सदा ज्ञान - धन, शक्तियों के धन से सम्पन्न भव'। यही ब्राह्मण जीवन का खज़ाना है। जब से ब्राह्मण जन्म लिया, तब से संगमयुग की स्थापना के कार्य में अन्त तक जीना अर्थात् 'बड़ी आयु भव'। बीच में अगर ब्राह्मण जीवन से निकल पुराने संस्कारों या पुराने संसार में चले जाते हैं तो इसको कहा जाता

है - जन्म लिया लेकिन छोटी आयु वाले, क्योंकि ब्राह्मण जीवन से मर गये। कोई - कोई ऐसे भी होते हैं जो कोमा में चले जाते हैं, होते हुए भी ना के बराबर होते हैं और कभीकभी जाग भी जाते हैं लेकिन वह जिंदा होना भी मरने के समान ही होता है। तो 'बड़ी आयु भव' अर्थात् सदा आदि से अन्त तक ब्राह्मण जीवन वा श्रेष्ठ दिव्य जीवन की सर्व प्राप्ति में जीना। बड़ी आयु के साथ - साथ 'निरोगी भव' का भी वरदान आवश्यक है। अगर आयु बड़ी है लेकिन माया की व्याधि बार - बार कमजोर बना देती है तो वह जीना भी जीना नहीं है। तो 'बड़ी आयु भव' के साथ सदा तन्दुरूस्त रहना अर्थात् निर्विघ्न रहना है। बार - बार उलझन में वा दिलशिकस्त की स्थिति के बिस्तर हवाले नहीं होना है। जो कोई बीमार होता है तो बिस्तरे हवाले होता है ना। छोटी - छोटी उलझन तो चलते - फिरते भी खत्म कर देते हो लेकिन जब कोई बड़ी समस्या आ जाती, उलझन में आ जाते, दिलशिकस्त बन जाते हो तो मन की हालत क्या होती है? जैसे शरीर बिस्तरे के हवाले होता है तो कोई दिल नहीं होती - उठने की, चलने की वा खाने - पीने की कोई दिल नहीं होती। ऐसे यहाँ भी योग में बैठेंगे तो भी दिल नहीं लगेगी, ज्ञान भी सुनेंगे तो दिल से नहीं सुनेंगे। सेवा भी दिल से नहीं करेंगे; दिखावे से वा डर से, लोकलाज से करेंगे। इसको सदा तन्दुरूस्त जीवन नहीं कहेंगे। 'पुत्रवान भव' वा 'सन्तान भव'। आपके सन्तान हैं? दो - चार बच्चे नहीं पैदा किये हैं? 'सन्तान भव' का वरदान है ना। दो - चार बच्चों का वरदान नहीं मिलता लेकिन जब बाप समान मास्टर रचयिता की स्टेज पर स्थिति हो तब तो यह सब अपनी रचना लगती है। बेहद के मास्टर रचयिता बनना, यह बेहद का 'पुत्रवान भव', 'सन्तान भव' हो जाता। हद के नहीं कि जो दो - चार जिज्ञासु हमने बनाया, यह मेरे हैं। नहीं। मास्टर रचता की स्टेज बेहद की स्टेज है। किसी भी आत्मा को वा प्रकृति के तत्वों को भी अपनी रचना समझ विश्व - कल्याणकारी स्थिति से हर एक के प्रति कल्याण की शुभ भावना, शुभ कामना रहती है। रचता की रचना प्रति यही भावनायें रहती हैं। जब बेहद के मास्टर रचयिता बन जाते हो तो कोई हद की आकर्षण आकर्षित नहीं कर सकेगी। सदा अपने को कहाँ खड़ा हुआ देखेंगे? जैसे वृक्ष का रचता 'बीज', जब वृक्ष की अन्तिम स्टेज आती है तो वह बीज ऊपर आ जाता है ना। ऐसे बेहद के मास्टर रचयिता सदा अपने को इस कल्प वृक्ष के ऊपर खड़ा हुआ अनुभव करेंगे, बाप के साथ - साथ वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप बन शक्तियों की, गुणों

की, शुभभावना - शुभ कामना की, स्नेह की, सहयोगी की किरणें फैलायेंगे। जैसे सूर्य ऊँचा रहता है तो सारे विश्व में स्वतः ही किरणें फैलती हैं ना। ऐसे मास्टर रचयिता वा मास्टर बीजरूप बन सारे वृक्ष को किरणों वा पानी दे सकते हो? तो कितनी सन्तान हुई? सारी विश्व आपकी रचना हो गई ना। तो 'मास्टर रचता भव'। इसको कहते हैं 'पुत्रवान भव'। तो कितने वरदान हैं! इसको ही कहा जाता है - बाप समान बनना।

✚ आज बेहद का बाप अपनी आदि श्रेष्ठ डायरेक्ट रचना को देख रहे हैं। ब्राह्मण आत्मायें डायरेक्ट शिव वंशी ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हो। ब्राह्मण आत्मायें आदि देव की आदि रचना हो। इसलिए कल्प वृक्ष में ब्राह्मण फाउंडेशन अर्थात् जड़ में दिखाये गये हैं। अपना स्थान देखा है ना? तो वृक्ष में आप आदि रचना बीज के समीप जड़ में दिखाये गये हो। इसलिए डायरेक्ट रचना हो। अन्य आत्मायें डायरेक्ट मात पिता अर्थात् शिव बाप और ब्रह्मा माता अर्थात् डायरेक्ट परमात्म रचना नहीं हैं। आप डायरेक्ट रचना का कितना महत्त्व है। डायरेक्ट बीज के साथ सम्बन्ध है, उन्हीं का इनडायरेक्ट सम्बन्ध है, आपका डायरेक्ट है। आप सभी रूहानी नशे से कहेंगे कि हम परमात्म सन्तान हैं। जो भी धर्म वाली आत्मायें आती हैं वह सभी अपने को क्रिश्चियन, बौद्धि, इस्लामी कहलायेंगी। डायरेक्ट शिव वंशी वा आदि देव ब्रह्मा की रचना नहीं कहलायेंगी। क्राइस्टवंशी क्रिश्चियन कहेंगे, धर्म पिता क्राइस्ट के क्रिश्चियन हैं - यही जानते हैं। वह सभी धर्म पिता के वंश है। और आप कहेंगे परमात्मा के। तो धर्मपिता और परमपिता - कितना अन्तर है! डबल विदेशी क्या समझते हैं परमपिता के हो या धर्म पिता के हो? परमपिता के अर्थात् डायरेक्ट रचना होना। तो डायरेक्ट और इनडायरेक्ट में कितना अन्तर है! नशे में भी अन्तर है तो प्राप्ति में भी अन्तर है। इसलिए भक्तिमार्ग में भी इनडायरेक्ट अपने इष्ट द्वारा बाप को याद करते हैं। अगर कोई शिव भक्त भी हैं तो वो भी शिव शंकर एक मान करके याद करते हैं। तो इनडायरेक्ट हो गया ना! जानते भी हैं कि राम का भी रामेश्वर है लेकिन फिर भी याद राम को ही करेंगे। तो भक्ति इनडायरेक्ट हो गई ना। क्योंकि भक्त आत्माओं की रचना भी पीछे की आत्मायें हैं। आप डायरेक्ट परमात्म वंशी आत्मायें हो। द्वापर में भक्ति भी करते हो, तो बिना पहचान के भी पहले शिव बाप की भक्ति करते हो। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर यह सूक्ष्म देवताओं की

पूजा पीछे शुरू होती है, आदि में नहीं। तो अन्य आत्माएं रचना भी इनडायरेक्ट आत्माओं द्वारा हैं और भक्ति में भी इनडायरेक्ट भक्ति है। आप डायरेक्ट भक्त हो, इनडायरेक्ट नहीं। अर्थात् शिव की पूजा ही आरम्भ करते हो। तो प्राप्ति में भी देखो आप डायरेक्ट आत्माओं अर्थात् डायरेक्ट रचना को अनेक जन्मों के लिए वर्सा जीवनमुक्ति का मिलता है। अन्य आत्माओं को जीवनमुक्ति का वर्सा इतने समय का नहीं मिलता है। आपकी जीवनमुक्ति आधा कल्प चलती है और अन्य आत्माओं को जीवन-मुक्ति और जीवन-बन्ध दोनों ही आधा कल्प के अन्दर मिलता है। वह भी द्वापर से आदि वाली आत्माओं को। पीछे वाली आत्माओं को तो थोड़े जन्मों में ही दोनों ही प्राप्ति होती है। और विशेषता यही है कि आपकी जीवन-मुक्ति अर्थात् गोल्डन, सिल्वर एज चक्र के भी गोल्डन, सिल्वर समय पर प्राप्त होती है। आपकी गोल्डन एज है तो युग भी गोल्डन एज का है, प्रकृति भी गोल्डन एज है। चक्र को अच्छी तरह से जानते हो ना और अन्य आत्माओं की जब गोल्डन एज है तो युग कॉपर एज या आयरन एज है, कॉपर एज में उन्हीं की गोल्डन एज है और आप की गोल्डन एज में गोल्डन एज है। कितना अन्तर हुआ! आप सतोप्रधान हैं तो प्रकृति भी सतोप्रधान है। वह रजो प्रधान प्रकृति में सतोप्रधान स्टेज का अनुभव करते हैं। तो डायरेक्ट और इनडायरेक्ट रचना का कितना अन्तर है! इतना नशा है कि हम डायरेक्ट परमात्म रचना हैं! सदा नशा रहता है या कभी-कभी नशा चढ़ता है? परसेंटेज में फर्क पड़ जाता है, कभी 100% रहता है तो कभी 50% | लेकिन रहना क्या चाहिए?

✚ होली में अल्पकाल की मस्ती में मस्त हो जाते हैं। तो क्या अपने अविनाशी ईश्वरीय मस्ती का स्वरूप अनुभव करते हो? जैसे होली की मस्ती में मस्त होने कारण अपने सम्बन्ध अर्थात् बड़े छोटे के भान को भूल जाते हैं, आपस में एक समान समझकर मस्ती में खेलते हैं, मन के अन्दर जो भी दुश्मनी के संस्कार एक दो के प्रति होते हैं वह अल्पकाल के लिए सभी भूल जाते हैं क्योंकि मंगल मिलन दिवस मनाते हैं। यह विनाशी रीति-रस्म कहां से चली? यह रस्म चलाने के निमित्त कौन बने? आप ब्राह्मण। अब भी जब होली अर्थात् पवित्रता की स्टेज पर ठहरते हो वा बाप के संग के रंग में रंगे हुए होते हो तो इस ईश्वरीय मस्ती में यह देह का भान वा भिन्न-

भिन्न सम्बन्ध का भान, छोटे-बड़े का भान विस्मृत हो एक ही आत्म-स्वरूप का भान रहता है ना। तो आपके सदाकाल की स्थिति का यादगार दुनिया के लोग मना रहे हैं। ऐसी खुमारी वा खुशी रहती है कि हमारी ही प्रत्यक्ष स्थिति का प्रमाण स्वरूप यह यादगार देख रहे हैं? यादगार को देखते हुए अपनी कल्प पहले वाली की हुई एक्टिविटी याद आती है वा वर्तमान समय प्रैक्टिकल में अपने किये हुए ईश्वरीय चरित्र का साक्षात्कार इन यादगार रूप दर्पण में करते रहते हो? अपने चरित्रों का यादगार देखते हो ना। अपनी स्थिति का वर्णन अन्य आत्माओं द्वारा गायन के रूप में सुनते हो ना। अपने चैतन्य रूहानी रूप का, चरित्रों का यादगार भी देख रहे हो। यह सभी देखते हुए, सुनते हुए क्या अनुभव करते हों? क्या यह समझते हो कि यह मैं ही तो हूँ? ऐसे अनुभव करते हों वा यह समझते हो कि यह यादगार किन विशेष आत्माओं का है? जैसे साकार रूप में यह निश्चय हर कर्म में देखा कि अपने भविष्य यादगार को देखते हुए सदा यह खुमारी और खुशी थी कि यह मैं ही तो हूँ, ऐसे ही आप सभी को यादगार चित्र देखते हुए वा चरित्र सुनते हुए वा गुणों का गायन सुनते हुए यह खुमारी और खुशी रहती है कि यह मैं ही तो हूँ? यह सदा स्मृति में रहना चाहिए कि अभी-अभी हम प्रत्यक्ष रूप में पार्ट बजा रहे हैं और अभी-अभी अपने पार्ट का यादगार भी देख रहे हैं। सारे कल्प के अन्दर ऐसी कोई आत्माएं हैं जो अपना यादगार अपनी स्मृति में देखें? यूं तो देखते सभी हैं लेकिन स्मृति तो नहीं रहती है ना। सिर्फ आप आत्माओं का ही पार्ट है जो इस स्मृति से अपनी यादगार को देखते हो। तो स्मृति से अपनी यादगार को देखते हुए क्या होना चाहिए? (कोई-कोई ने बताया) विजयी तो हो ही। विजय का तिलक लगा हुआ है। जैसे गुरुओं पास वा पण्डितों के पास जाते हैं तो वह तिलक लगाते हैं, यहाँ भी आने से ही, बच्चे बनने से ही पहले-पहले स्व- स्मृति द्वारा सदा विजयी बनने का तिलक बापदादा द्वारा लग ही जाता है। इसलिए पण्डित भी तिलक लगा देते हैं। सभी रस्म ब्राह्मणों द्वारा ही अब चलती हैं। ब्राह्मणों का पिता रचयिता तो साथ है ही। बच्चे शब्द ही बाप को सिद्ध कर देता है। बलिहार जाने वाले की हार नहीं होती है। स्मृति समर्थी को लाती है और समर्थी में आने से ही कार्य सफल होते हैं। अथवा जो सुनाया -- खुशी, मस्ती, नशा वा निशाना सभी हो जाता है। यह सभी बातें गायब होने कारण निर्बलता है। विस्मृति के कारण असमर्थी। तो स्मृति से समर्थी आने से सभी सिद्धि प्राप्त हो जाती हैं अर्थात् सभी कार्य

सिद्ध हो जाते हैं। स्व- स्मृति में रहने वाला सदैव जो भी कार्य करेगा वा जो भी संकल्प करेगा उसमें उसको सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य वा यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है अर्थात् ऐसा निश्चयबुद्धि अपनी विजय वा सफलता निश्चित समझ कर चलता है।

✚ आज बापदादा अपने स्नेही भावना-मूर्त आत्माओं और ज्ञान-स्वरूप योगी आत्माओं को देख रहे हैं। दोनों प्रकार की आत्मायें बाप की प्रिय हैं और दोनों ही बाप से अपने अपने यथा स्नेह और भावना प्रमाण प्रत्यक्ष फल वर्से के अधिकारी हैं। ज्ञान स्वरूप योगी तू आत्मायें अपने शक्ति प्रमाण बाप के समीप समान सर्वशक्तियों की अनुभूति का वर्सा प्राप्त कर रही हैं। दोनों ही प्राप्ति स्वरूप हैं। लेकिन दोनों के प्राप्ति में अन्तर है। स्नेह और भावना-मूर्त बच्चे सदा भावना के कारण याद में रहते हैं। बाप से प्यार का अनुभव करते हैं, शक्ति का भी अनुभव भावना के फल के स्वरूप में करते हैं। लेकिन सदा और सर्वशक्तियाँ अनुभव नहीं करते। ज्ञान स्वरूप योगी तू आत्माएं सदा सर्वशक्तियों की अनुभूति द्वारा सहज विजयी बनने का विशेष अनुभव करती हैं, समानता का अनुभव करती हैं। तो दोनों प्रकार के बच्चे वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। सदा अचल अटल स्थिति का अनुभव योगी तू आत्माएं ही करती हैं। स्नेही वा भावना-स्वरूप आत्मायें भावना से, स्नेह से आगे बढ़ रहे हैं लेकिन सदा विजयी नहीं। स्नेही आत्माओं के मन में, मुख में सदा बाबा-बाबा है इस कारण समय प्रति समय सहयोग प्राप्त होता रहता है। भावना का फल समय प्रमाण बाप द्वारा प्राप्त हो ही जाता है। लेकिन समान बनने में ज्ञानी योगी तू आत्मायें समीप हैं। इसलिए भावना और ज्ञान स्वरूप बनने का लक्ष्य रखो। जितनी भावना हो उतना ही ज्ञान स्वरूप भी हो। सिर्फ भावना वा सिर्फ ज्ञान यह भी सम्पूर्णता नहीं। ज्ञान-युक्त भावना, स्नेह-सम्पन्न योगी आत्मा - यह दोनों का बैलेन्स सहज उड़ती कला का अनुभव कराता है। बाप समान अर्थात् दोनों की समानता। वर्तमान समय भावना स्वरूप आत्मायें सेवा में ज्यादा आती हैं। यह आत्मायें भी स्थापना के कार्य में, चाहे आदि सनातन देगता धर्म की स्थापना में, चाहे राज्य के स्थापना में, दोनों में आवश्यक है। लेकिन अभी समय प्रमाण ज्ञानी योगी तू आत्माओं की आवश्यकता और ज्यादा है। क्योंकि आगे के समय में वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के कारण भावना स्वरूप आत्मायें और भी सहज आनी ही हैं। इसलिए सेवा के लक्ष्य में ज्ञानी-योगी तू आत्माओं के तरफ अटेन्शन ज्यादा चाहिए। ऐसी आत्माओं की वृद्धि

आवश्यक है। समझा, ऐसे नहीं समझो कि संख्या बहुत बढ़ रही है। लेकिन ऐसी बाप समान सर्वशक्तियों की अनुभूति वाली आत्माएं तैयार करो। राजधानी की वृद्धि तो अच्छी हो रही है। लेकिन विश्व परिवर्तन में दोनों स्वरूप के बैलेन्स वाली आत्माएं ही निमित्त बनती हैं। क्योंकि विश्व परिवर्तन के लिए बहुत सूक्ष्म शक्तिशाली स्थिति वाली आत्माएं चाहिए। जो अपनी वृत्ति द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन कर सके। स्वयं स्नेही वा भावुक आत्मा स्वयं में बहुत अच्छे चलते हैं लेकिन वह स्नेह व भावना विश्व के प्रति नहीं होती। स्वयं के व्रति वा कुछ समीप आत्माओं के प्रति होती है। बेहद की सेवा वा विश्व प्रति सेवा बैलेन्स वाली आत्माएं कर सकती हैं। बेहद की सेवा वा अपनी शक्तिशाली मन्सा शक्ति द्वारा, शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा होती है। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित कर सकते हो। तो ऐसे भावना और ज्ञान, स्नेह और योग शक्ति हो, ऐसी आत्माएं बने हो कि सिर्फ स्नेही भावुक आत्माओं को देख खुश हो रहे हो? कल्याणकारी बने हो? या बेहद विश्व कल्याणकारी बने हो - यह चेक करो। क्या रिज़ल्ट है? बापदादा ने सुनाया कि बाप को दोनों ही प्यारे हैं।

✚ आजकल इस पुरानी सृष्टि में विशेष क्या चल रहा है? आजकल विशेष आप लोगों का आह्वान चल रहा है। फिर आह्वान का रिसपॉन्स करते हो? भक्त क्या चाहते हैं? भक्तों की इच्छा यही है कि देवियाँ चैतन्य-रूप में प्रगट हो जाएं। जड़ चित्रों में भी चैतन्य शक्तियों का आह्वान करते हैं कि चैतन्य रूप में वरदानी बन वरदान दे दें। तो यह इच्छा भक्तों की कब पूरी होगी? भक्ति का भी अभी फुल फोर्स चारों ओर दिखाई दे रहा है। उसमें भी जैसे प्रैक्टिकल में बाप गुप्त है और शक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप में हैं। ऐसे ही भक्ति में भी पहले बाप की पुकार ज्यादा करते थे - हे भगवान् कह पुकारते थे - लेकिन अभी मेजॉरिटी भगवती की पूजा होती है। भक्तों की भावना पूरी करने के लिए शक्तियाँ ही निमित्त बनती हैं। इसलिए आह्वान भी शक्तियों का ज्यादा हो रहा है। तो अब शक्तियों में रहम के संस्कार इमर्ज होने चाहिए। अभी सबके अन्दर रहम के संस्कार इमर्ज नहीं हैं, मर्ज हैं। जैसे बाप चारों ओर चक्कर लगाते हैं, वैसे आप भी भक्तों के चारों ओर चक्कर लगाती हो? कभी सैर करने जाती हो? आवाज सुनने में आती है, तो कशिश नहीं होती है?

बाप के साथ-साथ शक्तियों को भी पार्ट बजाना है, जैसे शक्तियों का गायन है कि अन्तःवाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाती थीं, वैसे बाप भी अव्यक्त रूप में चक्कर लगाते हैं। अन्तःवाहक अर्थात् अव्यक्त फरिश्ते रूप में सैर करना। यह भी प्रैक्टिस चाहिए और यह अनुभव होंगे। जैसे साइन्स के यन्त्र दूरबीन द्वारा दूर की चीजों को नजदीक में देखते हैं, ऐसे ही याद के नेत्र द्वारा अपने फरिश्तेपन की स्टेज द्वारा दूर का दृश्य भी ऐसे ही अनुभव करेंगे, जैसे साकार नेत्रों द्वारा कोई दृश्य देख आये। बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देंगे अर्थात् अनुभव होगा। साइन्स का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइन्स का जलवा है, लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही साइलेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट। इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्दरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं, वैसे ही जब चाहें, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। न सिर्फ इतना, जो सिर्फ आपको अनुभव हो लेकिन जहाँ आप पहुँचो उन्हीं को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। यह है सफलतामूर्त की सिद्धि। वह तो रिवाजी आत्माओं को भी सिद्धि प्राप्त होती है एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रकट कर सकते और अनुभव करा सकते हैं। वह तो अल्प काल की सिद्धि है, लेकिन यह है ज्ञान-युक्त सिद्धि। ऐसे अनुभव भी बहुत होंगे। आगे चलकर कई नई बातें भी तो होगी ना। जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा। सभी महारथियों का संकल्प है कि अब कुछ नया होना चाहिए तो ऐसी-ऐसी नई रंगत अब होती जायेंगी। लेकिन इसमें एक तो बहुत हल्कापन चाहिये, किसी भी प्रकार का बुद्धि पर बोझ न हो और दूसरी सारी दिनचर्या बाप समान हो, तब ब्रह्मा बाप समान आदि से अन्त के दृश्य का अनुभव कर सकते हो। समझा? अब महारथियों को क्या करना है? सिर्फ योग नहीं, सेवा का रूप परिवर्तन करना है। महारथियों का योग वा याद अब स्वयं प्रति नहीं लेकिन सेवा प्रति हो, तब तो महादानी और महाज्ञानी कहे जायेंगे। समय की समाप्ति की निशानी क्या होगी? जब सारे संगठन की एक आवाज, एक ही ललकार हो कि हम विजयी है, विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है वा विजय हमारे गले का हार है। ऐसा

प्रैक्टिकल में अनुभव होगा। सिर्फ कहने मात्र नहीं, लेकिन यह नशा रहे, सदा सामने दिखाई दे। ऐसे विजय का निशाना दिखाई देता है? अच्छा।

✚ आज कौन-सी सभा लगी हुई है? स्वयं को किस स्वरूप में वर्तमान समय देख रहे हो? यूँ तो जैसे बापदादा बहुरूपी है वैसे ही आप सब भी बहुरूपी हो। लेकिन इस समय किस स्वरूप को धारण कर इस सभा में बैठी हो? यह जानते हो कि आज की सभा किन्हीं की है? बताओ तो वर्तमान समय दुनिया के लोग आप श्रेष्ठ आत्माओं के कौनसे स्वरूप का आह्वान कर रहे हैं? आप सब श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान करते हैं व एक आत्मा का। किसका आह्वान करते हैं? आपका किस स्वरूप में वर्तमान समय आह्वान करते हैं? अभी दुनिया में कौन-सा समय चल रहा है? आह्वान किसका चल रहा है? वर्तमान समय दो रूपों से आह्वान कर रहे हैं। देखो तो वे आप लोगों का ही आह्वान कर रहे हैं और आप लोगों को मालूम ही नहीं पड़ता। इस समय सबसे ज्यादा वरदानी व विश्व-कल्याणकारी दाता के रूप में आप सब श्रेष्ठ आत्माओं का चारों ओर आह्वान हो रहा है, क्योंकि भक्ति मार्ग द्वारा व भक्ति के आधार से, यथाशक्ति, श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा जो भी अल्पकाल के साधन व सामग्री अर्थात् वैभव आज की दुनिया में प्राप्त हैं - उन सब का अल्पकाल की प्राप्ति का सिंहासन डगमगाना शुरू हो गया है। जब कोई का आधार रूप सिंहासन हिलना शुरू होता है, तो उस समय क्या याद आता है? ऐसे समय सदा काल की प्राप्ति कराने वाले व सुख चैन देने वाले बाप और साथ-साथ शिव शक्तियाँ व महादानी वरदानी देवियाँ ही याद आती हैं, क्योंकि देवियों अथवा माताओं का हृदय स्नेही और रहमदिल होने के कारण वर्तमान समय माता के रूप का पूजन या आह्वान ज्यादा करते हैं। सिद्धि-स्वरूप अर्थात् सर्व कार्य सिद्ध करने वाली आत्माओं का आह्वान वर्तमान समय ज्यादा है। आजकल सर्व परेशानियों से परेशान निर्बल आत्मायें, मंज़िल को ढूँढ़ने वाली आत्मायें और सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये तड़फती हुई आत्मायें पुरुषार्थ की विधि नहीं चाहतीं, बल्कि विधि के बजाय सहज सिद्धि चाहती हैं। सिद्धि के बाद विधि के महत्व को जान सकेंगी। ऐसी आत्माओं को आप विश्वकल् याणकारी आत्मा का कौन-सा स्वरूप चाहिए? वर्तमान समय चाहिए प्रेम

स्वरूप। लॉफुल नहीं, लेकिन लवफुल पहले लव दो फिर लॉ दो। वे लव के बाद लॉ को भी स्नेह का साधन अनुभव करेंगे क्योंकि बाहर के रूप की चमक वाली दुनिया में व विज्ञान के युग में विज्ञान के साधन बहुत ही हैं, लेकिन जितना भिन्न-भिन्न प्रकार के अल्पकाल की प्राप्ति के साधन निकलते जाते हैं उतना ही सच्चा स्नेह व रूहानी प्यार, स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है। आत्माओं से स्नेह समाप्त हो, साधनों से प्यार बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई प्रकार की प्राप्ति के होते हुए भी स्नेह की अप्राप्ति के कारण सन्तुष्ट नहीं। और भी दिन-प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ेगी। महसूस करेंगे कि यह साधन मंजिल से दूर करने वाले, भटकाने वाले हैं! ये आत्मा को तड़फाने वाले हैं। अर्थात् जैसे कल्प पहले का गायन है कि अन्धे की औलाद अन्धे, मृग तृष्णा के समान सर्व प्राप्ति से वंचित ही रहे। ऐसा अनुभव समय-अनुसार चारों ओर करेंगे। ऐसे समय पर ऐसी आत्माओं की सर्व मनोकामनायें पूर्ण करने वाली व मन- इच्छित प्रत्यक्ष फल देने वाली कौनसी आत्मायें निमित्त बनेंगी? जो स्वयं सिद्धि स्वरूप हों, दिन-रात विघ्नों के मिटाने की विधि में न हों। स्वयं बापदादा द्वारा मिले हुए प्रत्यक्ष फल (भविष्य फल नहीं) - अतीन्द्रिय सुख व सर्व-शक्तियों के वरदान प्राप्त हुई वरदानी-मूर्त आत्मायें होंगी। स्वयं पुकारने वाले नहीं होंगे कि बाबा यह कर दो, यह दे दो! रॉयल रूप से मांगने का अंश भी नहीं होगा। बाबा यह काम आपका है-आप तो करेंगे ही! ऐसे स्वयं करने वाले को स्मृति दिलाकर अपने समान मानव नहीं बनायेंगे क्योंकि कहने से करने वाला मनुष्य गिना जाता है। बिना कहे, करने वाला देवता गिना जाता है। अपने को चेक करो, साधारण चेकिंग नहीं।

✚ पहले यह बातें सुनने के लिये समय देते थे, पूछते थे -- कोई समस्या तो नहीं है, कोई सम्पर्क वाले विघ्न तो नहीं डालते। अब यह पूछने की आवश्यकता नहीं। अब अनुभवी हो चुके हो। तो ऐसी स्टेज तक पहुंची हो वा अभी तक यह बातें करती हो कि यह हुआ, फिर यह हुआ? इन बातों को कहते हैं रामायण की कथाएं-यह हुआ, फलानी ने यह बोला। रामायण की कथाओं में टाइम तो नहीं गंवाती हो? अभी तक भी कथा-वाचक नहीं हो? रामायण की कथा भी कोई एक हफ्ते में, कोई 10 दिन में पूरी करता है। ऐसी कथाएं तो नहीं करती हो? आपस में एक दो

से मिलती भी हो तो याद की यात्रा की युक्तियां वा दिन-प्रतिदिन जो गुह्य-गुह्य बातें सुनते जाते हो उनकी लेन-देन करो। अब ऐसी स्टेज हो जानी चाहिए। जैसे भक्ति मार्ग को दुर्गति मार्ग समझ छोड़ देती हो ना। अगर भक्ति मार्ग की कोई भी रीति-रस्म अब तक भी हो तो आश्चर्य लगेगा ना। क्योंकि समझते हो वह दुर्गति मार्ग है। वैसे ही यह बातें करना वा इन बातों में समय गंवाना, इसको भी ऐसे समझना चाहिए जैसे भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग की रीति रस्म। जब ऐसा अनुभव होगा तब समझो परिवर्तन। जैसे अनुभव करती हो ना - भक्ति मार्ग जैसे पिछले जन्म की बातें। इस जन्म में कब घंटी बजावेंगे वा माला सुमिरण करेंगे? पास्ट लाइफ पर हंसी आवेगी। वैसे यह भी क्या है? अगर समझो, किसी के अवगुण वा ऐसी चलन का सुमिरण करती हो तो यह भी भक्ति हुई ना? जैसे बाप के गुणगान करना, सुमिरण करना वह माला हुई, अगर किसी के अवगुण वा ऐसी देखी हुई बातों का सुमिरण करती हो तो वह भी भक्ति मार्ग दुर्गति की माला फेरती हो। मन में संकल्प करना, यह भी जाप हुआ ना। जैसे वह अजपाजाप करते रहते हैं, वैसे संकल्प चलते रहते हैं, बंद नहीं होते। तो यह भी जाप हुआ। यह है भक्ति के दुर्गति की रस्म। एक दो को सुनाते हो, यह घंटियां बजाती हो -- फलानी ने यह किया, यह किया। यह भक्ति, दुर्गति की रस्म है। मधुबन निवासी तो ज्ञान स्वरूप हैं ना। कोई भी दुर्गति की रीति-रस्म चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म है, उनसे वैराग्य आना चाहिए। जैसे भक्ति के स्थूल साधनों से वैराग्य आ गया नॉलेज के आधार पर, वैसे इन भक्ति-मार्ग के रस्म से भी ऐसे वैराग्य आना चाहिए। इस वैराग्य के बाद ही याद की स्पीड बढ़ सकेगी। नहीं तो कितना भी पुरूषार्थ करो। जैसे भक्त लोग कितना भी पुरूषार्थ करते हैं भगवान की याद में बैठने का, बैठ सकते हैं? कितना भी अपने को मारते हैं, कष्ट करते हैं, भिन्न रीति से समय देते हैं, सम्पत्ति लगाते हैं, फिर भी हो सकता है? यहां भी अगर दुर्गति मार्ग की रीति-रस्म है तो याद की यात्रा की स्पीड बढ़ नहीं सकती, अटूट याद हो नहीं सकती। घंटिया बजाना आदि छूट गया कि स्थूल रूप में छोड़ सूक्ष्म रूप ले लिया? भक्तों को तो खूब चैलेंज करते हो कि टाइम वेस्ट, मनी वेस्ट करते हो। अपने को चेक करो - कहां तक 'ज्ञानी तू आत्मा' बने हो? 'ज्ञानी तू आत्मा' का अर्थ ही है हर संस्कार, हर बोल ज्ञान सहित हो। कर्म भी ज्ञान-स्वरूप हो। इसको 'ज्ञानी तू आत्मा' कहा जाता है। आत्मा में जैसे-जैसे संस्कार हैं वह आटोमेटिकली वर्क करते हैं। 'ज्ञानी तू आत्मा' के नेचरल कर्म, बोल ज्ञान-

स्वरूप होंगे। तो अपने को देखो - 'ज्ञानी तू आत्मा' बने हैं? भक्ति अर्थात् दुर्गति में जाने का ज़रा भी नाम-निशान न होना चाहिए। जैसे आप लोग कहते हो - जहां ज्ञान है वहां भक्ति नहीं, जहां भक्ति है वहां ज्ञान नहीं। रात और दिन की मिसाल देकर बताती हो ना। तो भक्तिपन के संस्कार स्थूल व सूक्ष्म रूप में भी न हों। ज्ञान के संस्कार भी बहुत समय से चाहिए ना। बहुत समय से अभी संस्कार न भरेंगे तो बहुत समय राज्य भी नहीं करेंगे। अन्त समय भरने का पुरुषार्थ करेंगे तो राज्य-भाग्य भी अंत में पावेंगे। अभी से करेंगे तो राज्य-भाग्य भी आदि से पावेंगे। हिसाब-किताब पूरा है। जितना और उतना।



अन्त का स्वरूप शक्तिपन का है। शक्ति रूप रहमदिल का नहीं होता है। शक्ति का रूप सदैव संहारी रूप दिखाते हैं। तो संहार का समय अब समीप आ रहा है। संहार के समय रहमदिल नहीं बनना होता है। संहार के समय संहारी रूप धारण किया जाता है। इसलिए अभी रहमदिल का पार्ट भी समाप्त हुआ। बाप के सम्बन्ध से बच्चों का अलबेलापन वा नाज सभी देखते हुए आगे बढ़ाया, लेकिन अब किसी भी प्रकार से पावन बनाकर साथ ले जाने का पार्ट है सदुरू के रूप में। जैसे बाप बच्चों के नाज वा अलबेलापन देख फिर भी प्यार से समझाते चलाते रहते हैं। वह रूप सदुरू का नहीं होता। सतगुरू का रूप जैसे सदुरू है-वैसे सत संकल्प, सत बोल, सत कर्म बनाने वाला है। फिर चाहे नॉलेज द्वारा वा पुरुषार्थ द्वारा बनावे, चाहे फिर सजा द्वारा बनावे। सदुरू नाज और अलबेलापन देखने वाला नहीं है। इसलिए अब समय और बाप के रूप को जानो। ऐसे न हो -- बाप के इस अन्तिम स्वरूप को न जानते हुए अपने बचपन के अलबेलेपन में आकर अपने आपको धोखा दे बैठो। इसलिए बहुत सावधान रहना है। शक्तियों को अभी अपना संहारी रूप धारण करना चाहिए। जैसे दिखाया हुआ है - कोई भी आसुरी संस्कार शक्तियों का सामना नहीं कर सकता, आसुरी संस्कार वाले शक्तियों के सामने आंख उठाकर देख नहीं सकते। तो ऐसे संहारी रूप बनकर स्वयं में भी आसुरी संस्कारों का संहार करो और दूसरों के भी आसुरी संस्कार के संहार करने वाले संहारीमूर्त बनो। ऐसी हिम्मत है? माता रूप में भले रहम आ जाता, शक्ति रूप में रहम नहीं आता। माता बनकर पालना तो बहुत की और माता के आगे बच्चे लाडकोड करते भी हैं। शक्तियों के आगे किसकी हिम्मत नहीं जो

अलबेलापन दिखा सके। अपने प्रति भी अब संहारी बनो। ऐसी स्टेज बनाओ जो आसुरी संस्कार संकल्प में भी ठहर न सकें। इसको कहते हैं - एक ही नजर से असुर संहारनी। संकल्पों को परिवर्तन करने में कितना समय लगता है? सेकेण्ड। और नजर से देखने में कितना समय लगता है? एक सेकेण्ड। तो नजर से असुर संहार करने वाले अर्थात् एक सेकेण्ड में आसुरी संस्कारों को भस्म करने वाले, ऐसे बने हो? कि आसुरी संस्कारों के वशीभूत हो जाते हो? आसुरी संस्कारों के वशीभूत होने वाले को किस सम्प्रदाय में गिना जायेगा? आप कौन हो? (ईश्वरीय सम्प्रदाय) तो ईश्वरीय सम्प्रदाय वालों के पास आसुरी संस्कार भी नहीं आने चाहिए। अभी आसुरी संस्कार आते हैं वा भस्म हो गये हैं? (आते हैं) तो फिर क्या बन जाते हो? अपना रूप बदल बहुरूपी बन जाते हो क्या? अभी-अभी ईश्वरीय सम्प्रदाय, अभी- अभी आसुरी संस्कारों के वश हो गये तो क्या बन गये? बहुरूपी हो गये ना। अगर अभी-अभी अपने से आसुरी संस्कारों को भस्म करने की हिम्मत रखकर संहारी रूप बने तो मुबारक है। अभी यह भी ध्यान रखना, सूक्ष्म सजाओं के साथ-साथ स्थूल सजायें भी होती हैं। ऐसे नहीं समझना - सूक्ष्म सजा तो अपने अन्दर भोग कर खत्म करेंगे। नहीं। सूक्ष्म सजाएं सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सजाएं भी भोगनी पड़े। फिर तब क्या होगा? अपने दैवी परिवार के स्नेह, सम्बन्ध और जो वर्तमान समय की सम्पत्ति का खज़ाना है उनसे वंचित होना पड़े। इसलिए अब बहुत सोच- समझकर कदम उठाना है। ऐसे लॉज (नियम) शक्तियों द्वारा स्थापन हो रहे हैं। पहले से ही सावधान करना चाहिए ना। फिर ऐसे न कहना कि ऐसे तो हमने समझा नहीं था, यह तो नई बात हो गई। तो पहले से ही सुना रहे हैं। सूक्ष्म लाज़ के साथ स्थूल लाज वा नियम भी हैं। जैसे-जैसे गलती, उसी प्रमाण ऐसी गलती करने वाले को सजा। इसलिए ला-मेकर हो तो ला को ब्रेक नहीं करना। अगर ला-मेकर भी ला को ब्रेक करेंगे तो फिर ला-फुल राज्य करने के अधिकारी कैसे बनेंगे?

✚ दीपक कौन से अच्छे लगते हैं? जो दीप अखण्ड और अटल होता है, जिसका घृत कभी खुटता नहीं, वही अखण्ड जलता है। अपने को ऐसा दीपक समझते हो? ऐसे दीपकों की यादगार माला है। अपने को माला के बीच चमकता हुआ दीपक समझते हो? ऐसे समझते हो कि हमारा यादगार आज मना रहे हैं। दीपमाला के दिन दो बातें विशेष ध्यान पर रखनी होती है। दीपमाला पर किन बातों का ध्यान रखते हैं? (सफाई रखते हैं, नया चोपड़ा बनाते हैं) परन्तु लक्ष्य क्या रखते हैं? कमाई का। उस लक्ष्य को लेकर सफाई भी करते हैं। तो सफाई भी सभी प्रकार से करना है और कमाई का लक्ष्य भी बुद्धि में रखना है। यह सफाई और कमाई का दोनों कार्य आप सभी ने किया है? अपने आप से संतुष्ट हो? जब कमाई है तो सफाई तो ज़रूर होगी ना। इन दोनों बातों में संतुष्टता होना आवश्यक है। लेकिन यह संतुष्टता आएगी उनको जो सदैव दिव्यगुणों का आह्वान करते रहेंगे। जितना जो आह्वान करेंगे उतना इन दोनों में सदा सन्तुष्ट रहेंगे। जितना-जितना दिव्यगुणों का आह्वान करते जायेंगे उतना अवगुण आहुति रूप में खत्म होते जायेंगे। फिर क्या होगा? नए संस्कारों के नए वस्त्र धारण करेंगे। अभी आत्मा ने नए संस्कारों रूपी नए वस्त्र धारण किये हैं कि कभी-कभी पुराने वस्त्रों से प्रीत होने के कारण वह भी धारण करते हैं। जब मरजीवा बने, नया जन्म, नए संस्कारों को भी धारण किया फिर पुराने संस्कार रूपी वस्त्रों को कभी क्यों धारण कर लेते? क्या पुराने वस्त्र अति प्रिय लगते हैं? जो चीज़ बाप को प्रिय नहीं वह बच्चों को प्रिय क्यों? आज तक जो कमज़ोरी, कमियाँ, निर्बलता, कोमलता रही हुई है वह सभी पुराने खाते आज से समाप्त करना, यही दीपमाला मनाना है। अल्पकाल के लिए नहीं, लेकिन सदाकाल के लिए और सर्व रूपों से समाप्त करना, यह है दीपावली मनाना। दीपावली को ताजपोशी का दिवस कहते हैं। आज आप सभी के कौन सी ताजपोशी मनाई है? ताजपोशी के दिन क्या किया जाता है? राज सिंहासन का समारोह कब देखा है? स्मृति आती है। कितनी बार देखा होगा? अनेक बार। दिन प्रतिदिन ऐसे अनुभव करेंगे जैसे इस जन्म में प्रत्यक्ष देखी हुई बातें स्पष्ट रूप में इमर्ज रहती है। वैसे भविष्य राजाई के संस्कार जो आत्मा में समाये हुए हैं वह जैसे कल की देखी बात है। ऐसा अनुभव करते रहेंगे। ऐसे प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। इससे समझना अब हम अपने सम्पूर्ण स्थिति और अपने राज्य के समीप पहुँच गए हैं। सतयुगी संस्कार सोचने वा स्मृति में लाने से नहीं, लेकिन स्वतः ही और स्पष्ट रीति

जीवन में आते रहेंगे। इस दुनिया में रहते हुए भी नयनों में सतयुगी नज़ारे दिखाई देंगे न सिर्फ़ इतना लेकिन अपना भविष्य स्वरूप जो धारण करना है वह भी आँखों के आगे बार-बार स्पष्ट दिखाई देगा। बस अभी –अभी यह छोड़ा, वह सजा-सजाया चोला धारण करना है ऐसे अनुभव करते रहेंगे। इस संगमयुग पर ही सतयुगी स्वरूप का अनुभव करेंगे। पुरुषार्थ और प्रालब्ध दोनों रूपों से हरेक को प्रत्यक्ष देखेंगे। तो आज दीपावली के दिन दिव्यगुणों का आव्हान करना है। अभी फिर भी मुख से निकलता है कि हाँ कल्प पहले यह किया होगा। लेकिन पीछे यह शब्द बदल जायेंगे। इस कल्प की बात हो जाएगी। 5000 वर्ष की बात इतनी स्पष्ट स्मृति में आएगी जैसे कल की। जैसे साइंस के साधन से दूर की चीज़ भी समीप और स्पष्ट दिखाई पड़ती है। जिसको दूरबीन कहते हैं। तो आप का तीसरा नेत्र कल्प पहले की बातें समीप और स्पष्ट देखेगा वा अनुभव करेगा। तो पुराने संस्कारों की चौपड़ियों को फिर से भूल से भी नहीं देखना। पुराने संस्कारों का चोला फिर-फिर धारण नहीं करना, नवीनता को धारण करना। यही आज के दिन का मन्त्र है। रत्नजड़ित चोला छोड़ जड़जड़ीभूत चोले से प्रीत नहीं लगाना। सदैव बुद्धि में बापदादा की स्मृति व निशाना और आनेवाले राज्य के नज़ारें, नयनों में और मुख में सदैव बापदादा का नाम हो। इसको कहते हैं बापदादा के अति स्नेही और समीप रत्न।



बन्धन होते हुए भी बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात पास विद आनर्स की पास करनी है, जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर में जो पास होंगे वही पास विद आनर्स होंगे। इसलिये जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते वैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सके, नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे। फाइनल पेपर है अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जाये यह है पास विद आनर की निशानी। लेकिन वह तब हो सकेगी जब अपना चोला टाइट नहीं होगा। अगर टाइटनेस होगी तो सहज मुक्त नहीं हो सकेंगे। टाइटनेस का अर्थ है कोई से लगाव। इसलिए अब यही सिर्फ़ एक बात चेक करो - ऐसा लूज़ चोला हुआ है जो एक सेकेण्ड में इस चोले को छोड़ सके। अगर कहाँ भी अटका हुआ होगा तो निकलने में भी अटक होगी।

इसी को ही एवररेडी कहा जाता है। ऐसे एवररेडी वही होंगे जो हर बात में एवररेडी होंगे। प्रैक्टिकल में देखा ना एक सेकेण्ड के बुलावे पर एवररेडी रह दिखाया। यह सोचा क्या कि बच्चे क्या कहेंगे? बच्चों से बिगर मिले कैसे जावे - यह सोचा? एलान निकला और एवररेडी। चोले से इज़ी होने से चोला छोड़ना भी इज़ी होता है, इसलिए यह कोशिश हर वक्त करनी चाहिए। यही संगमयुग का गायन होगा कि कैसे रहते हुए भी न्यारे थे। तब ही एक सेकेण्ड में न्यारे हो गये। बहुत समय से न्यारे रहने वाले एक सेकेण्ड में न्यारे हो जायेंगे। बहुत समय से न्यारापन नहीं होगा तो यही शरीर का प्यार पश्चाताप में लायेगा इसलिए इनसे भी प्यारा नहीं बनना है। इससे जितना न्यारा होंगे उतना ही विश्व का प्यारा बनेंगे। इसलिए अब यही पुरुषार्थ करना है, ऐसे नहीं समझना है कि कोई व्याधि आदि का रूप देखने में आयेगा तब जायेंगे उस समय अपने को ठीक कर देंगे। ऐसी कोई बात नहीं है पीछे ऐसे-ऐसे अनोखे मृत्यु बच्चों के होने हैं जो सन शोज फादर करेंगे। सभी का एक जैसा नहीं होगा। कई ऐसे बच्चे भी हैं जिन्हों का ड्रामा के अन्दर इस मृत्यु के अनोखे पार्ट का गायन सन शोज फादर करेगा। यह भी वही कर सकेंगे जिसमें एक विशेष गुण होगा। यह पार्ट भी बहुत थोड़ों का है। अन्त तक भी बाप की प्रत्यक्षता करते जायेंगे। यह भी बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। अन्त घड़ी भी बाप का शो होता रहेगा। ऐसी आत्मायें जरूर कोई पावरफुल होगी जिनका बहुत समय से अशरीरी रहने का अभ्यास होगा। वह एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायेंगे। मानो अभी आप याद में बैठते हो कैसे भी विघनों की अवस्था में बैठते हो, कैसी भी परिस्थितियाँ सामने होते हुए भी बैठते हो लेकिन एक सेकेण्ड में सोचा और अशरीरी हो जाये। वैसे तो एक सेकेण्ड में अशरीरी होना बहुत सहज है लेकिन जिस समय कोई बात सामने हो, कोई सर्विस के बहुत इंग्रट सामने हो परन्तु प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो एक सेकेण्ड, सेकेण्ड भी बहुत है, सोचना और करना साथ-साथ चले। सोचने के बाद पुरुषार्थ न करना पड़े। अभी तो आप सोचते हो तब उस अवस्था में स्थित होते हो लेकिन ऐसा जो होगा उनका सोचना और स्थित होना साथ में होगा। सोच और स्थिति में फर्क नहीं होगा। सोचा और हुआ। ऐसे जो अभ्यासी होंगे वही सर्विस करने का पान का बीड़ा उठा सकेंगे। ऐसे कोई निमित्त है लेकिन बहुत थोड़े, मैजारिटी नहीं हैं। मैनारिटी है, उन्हीं के ऊपर यहाँ ही फूल बरसायेंगे। ऐसे जो पास विथ आनर होंगे, उन्हीं के ऊपर जो द्वापर के भक्त हैं वह अन्त में इस साकार रूप में फूलों की वर्षा करेंगे। जो अन्त तक सन शोज फादर करके ही जायेंगे। ऐसा

सर्विसप्लल मृत्यु होता है। इस मृत्यु से भी सर्विस होती है। सर्विस के प्रति बच्चे ही निमित्त है, ना कि माँ बाप। वह तो गुप्त रूप में हैं। सर्विस में मात-पिता बैकबोन है और बच्चे सामने हैं। इस सर्विस के पार्ट में मात-पिता का पार्ट नहीं है। इस में बच्चे ही बाप का शो करेंगे।

✚ दादियों से - माला के विजयी रत्न सदा ही विशेष गाये और पूजे जाते हैं। ऐसी विशेष पूज्य आत्मायें हो। जब कोई ऐसा दिन आता है तो जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होते हो उतना भक्त आत्माओं के आह्वान का अनुभव होता है! भक्तों की शुभ भावनायें वा कामनायें बाप द्वारा पूर्ण कराने के लिए विशेष वायब्रेशन आने चाहिए। आखिर सभी भक्त आत्मायें बाप के साथ अपनी पूज्य आत्माओं को प्रत्यक्ष रूप में देखेंगी। वर्णन करेंगी कि वही हमारे इष्ट देव हैं। इष्ट देव किसको बनाते हैं? इष्ट क्यों कहते हैं? क्योंकि उसी एक में - एक बल एक भरोसा होता है। उसी में परिपक्व रहते हैं। उन्हीं के लिए वही एक सब कुछ होता है, ऐसे जो एक बाप में इष्ट भावना वाले रहे हैं, इष्ट स्थिति वाले रहे हैं वही 'इष्ट देव' बनते हैं। इसको कहते हैं - एक बल एक भरोसा! इष्ट देव की निशानी यह है जो एक बल एक भरोसे की स्थिति में, निश्चय में, सेवा में, परिपक्व रहे हैं। इसलिए इष्ट देव को मानने वाले भक्त भी एकाग्र रहते हैं। यहाँ वहाँ नहीं भटकते हैं। एक में अटल रहते हैं। बाप प्रत्यक्ष होंगे लेकिन बाप के साथ-साथ सब इष्ट देव, इष्ट देवियाँ भी प्रत्यक्ष होंगे। यह भी नशा चाहिए कि हम श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान हो रहा है। और हम ही बाप द्वारा उन्हीं को रिटर्न दिलाने वाले हैं। दिलायेंगे तो बाप द्वारा ही लेकिन निमित्त बनते हैं - इसलिए वह इष्ट देव के रूप में पूजे जाते हैं। विशेष दिनों पर जैसे विशेष भक्त लोग व्रत रखते हैं, साधना करते हैं। एकाग्रता का विशेष अटेन्शन रखते हैं। ऐसे सेवाधारी बच्चों को भी वह वायब्रेशन आने चाहिए। हम ही हैं! यह अनुभव होना चाहिए। बापदादा तो है ही लेकिन साथ में अनन्य बच्चे भी हैं। यह प्रैक्टिकल में महसूसता आनी चाहिए। जो आशीर्वाद, आशीर्वाद का रिवाज चला है, वह ऐसे अनुभव होगा जैसे सम्पन्न होने के कारण ब्रह्मा बाप द्वारा चलते-फिरते सबको स्वतः आशीर्वाद का अनुभव होता था। तो आप भी चलते-फिरते ऐसे अनुभव करो जैसे बाप द्वारा कुछ न कुछ प्राप्ति करा रहे हैं। प्राप्ति ही आशीर्वाद है। और कुछ मुख से नहीं कहेंगे लेकिन प्राप्ति का अनुभव कराने के कारण सबके मुख से - “यही हैं, यहीं

हैं” के गीत निकलेंगे। वह भी दिन आने वाले हैं। साक्षात्कार मूर्त अभी होने चाहिए। अभी सेवा साक्षात्कार मूर्त द्वारा हो। जैसे शुरू में चलते-फिरते साक्षात्कार मूर्त देखते थे। ब्रह्मा को नहीं देखते थे, कृष्ण को देखते थे। कृष्ण पर मोहित हुए ना! ब्रह्मा पर तो नहीं हुए। ब्रह्मा गुम होकर कृष्ण दिखाई देता था तब तो भागे ना! कृष्ण ने भगाया यह तो राइट है। क्योंकि ब्रह्मा को ब्रह्मा नहीं देखते कृष्ण देखते थे। तो यह साक्षात्कार स्वरूप हुआ ना! उसी ने इतना मस्त बनाया, भगाया। साक्षात्कार ने ही सब कुछ छुड़ाया। भक्ति का साक्षात्कार सिर्फ देखने का हेता है। लेकिन ज्ञान का होता है देखने के साथ पाना - यही अन्तर है। सिर्फ देखा नहीं, पाया। कृष्ण हमारा है, हम गोपियाँ हैं, इसी नशे ने स्थापना कराई। हम वही हैं, हमारे ही चित्र हैं। तो ऐसे ही साक्षात्कार द्वारा अभी भी सेवा हो। सुनने द्वारा प्रभाव तो पड़ता ही है लेकिन परिवर्तन नहीं होता है। अच्छा-अच्छा कहते हैं लेकिन अच्छा बनते नहीं। जब उन्हें साक्षात्कार में प्राप्ति होगी तो बनने के बिना रह नहीं सकेंगे। जैसे आप सब बन गये हो ना! तो अभी चलते-फिरते फरिश्ते स्वरूप का साक्षात्कार कराओ। सिर्फ भाषण वाले नहीं लेकिन साक्षात्कार स्वरूप दिखाई दे। भाषण करने वाले तो बहुत हैं लेकिन आप हो भासना देने वाले। ऐसे जो बनते हैं वही नम्बर आगे लेते हैं। सिर्फ क्लास कराने से भासना नहीं आती, क्लास सुनते भी हरेक की चाहना होती कि भासना मिले, तो अब भाषण बदलकर भासना दो। तब समझेंगे कि यह अल्लाह लोग हैं। अल्लाह लोग अर्थात् न्यारे। अभी तो कह देते हैं - यह भी अच्छा वह भी अच्छा। मिलाते रहते हैं लेकिन अभी भासना स्वरूप बन जाओ। प्राप्ति का अनुभव कराओ।

✚ बाप आज देख रहे थे कि कौन-कौन से बच्चे किस स्टेज तक पहुँचे हैं? मुख्य बात है बाप समान सर्वगुणों में मास्टर सागर कहाँ तक बने हैं? सर्व शक्तियों का वर्सा प्रैक्टिकल जीवन में कहाँ तक अनुभव किया है? साथ-साथ आत्मा की जो श्रेष्ठ व महान् स्टेज है - सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक - इस महानता को कहाँ तक जीवन में लाया है? गुण सम्पन्न अवस्था का केवल गायन ही है और सर्वगुण सम्पन्न की अवस्था में यदि एक भी गुण की कमी है तो उन्हें फुल महिमा के योग्य नहीं कहेंगे। तो अपने आप को चेक करो कि सर्व गुणों में से कितने गुणों में और कितने परसेन्टेज

में स्वयं में गुणों की कमी है। सोलह कला अर्थात् सर्व विशेषताओं में सम्पन्न अर्थात् जैसा समय वैसा स्वरूप बना सकें, और जैसा संकल्प वैसा स्वरूप में ला सकें। बाप द्वारा प्राप्त हुए पुरुषार्थ की विधि द्वारा सर्व सिद्धियाँ समय पर स्वयं के प्रति व सर्व-आत्माओं की सेवा के प्रति कार्य में लगा सकें। सर्व-शक्तियों को अनुभव में लाते हुए सर्व-आत्माओं के प्रति उन्हीं की आवश्यकता प्रमाण, वरदानी रूप में दे सकें। सर्व बातों में बैलेन्स रख सकें अर्थात् अभी-अभी लवफुल और अभी-अभी लॉ-फुल बन सकें। अभी-अभी महाकाली रूप और अभी-अभी शीतला रूप बन सकें। ऐसी सर्व विशेषताएं अर्थात् सोलह कला सम्पन्न। इसके लिये सर्व-कर्मेन्द्रियों और सर्व-आत्मिक शक्तियों, मन, बुद्धि और संस्कार - इन सर्व पर अधिकार चाहिए। ऐसा अधिकारी ही सोलह कला सम्पन्न बन सकता है। कोई भी कमजोरी वाला कला नहीं दिखा सकता अर्थात् विशेषतायें नहीं दिखा सकता और न ही अनुभव करा सकता है। इसी रीति से अपने को चेक करो कि सर्व विशेषतायें धारण की हैं अर्थात् सोलह कला सम्पन्न बने हैं? सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् सर्व विकार सर्व वंश-सहित, अंश-मात्र भी अर्थात् संकल्प व स्वप्न-मात्र में भी न हो। उसको कहते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात् हर संकल्प, हर सेकेण्ड और हर कदम श्रीमत् अनुसार अर्थात् मर्यादा के प्रमाण हो। संकल्प भी वा एक कदम भी ईश्वरीय मर्यादा की लकीर के बाहर न हो। अमृतवेले से रात के सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल, स्मृति, वृत्ति, और दृष्टि भी सदा ही मर्यादा प्रमाण हो। ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम कहाँ तक बने हो? डबल अहिंसक अर्थात् अपवित्रता अर्थात् 'काम महाशत्रु' स्वप्न में भी वार न करें। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वतः अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो। ऐसे डबल अहिंसक, आत्मघात का महापाप भी नहीं करते। आत्मघात अर्थात् अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिर कर अपना घात नहीं करते। ऊंचाई से नीचे गिरना ही घात है। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिये कहा जाता है आत्मघाती महापापी। साथ-साथ अहिंसक आत्मा कभी खून नहीं करती। खून करना अर्थात् हिंसा करना। तो आप में से कोई खून करते हैं? जो बाप द्वारा दिव्य-बुद्धि व दिव्य-विवेक व ईश्वरीय-विवेक मिला है वह माया वश, परमत वश, कुसंग वश, या परिस्थिति के वश अगर ईश्वरीय विवेक को दबाते हो, तो

समझो कि ईश्वरीय विवेक का खून करते हो, या दिव्य-बुद्धि का खून करते हो। बाद में फिर चिल्लाते हो कि चाहता तो नहीं हूँ लेकिन कर लिया, न चाहते हुए भी हो गया। गोया यह है ईश्वरीय विवेक का खून करना। झूठ बोलना, चोरी करना, ठगी करना व धोखा देना इसको भी हिंसा व महापाप कहा जाता है। तो तुम ब्राह्मण चोरी कौनसी करते हो? शूद्रपन के संस्कार स्वभाव व बोल व किसी के प्रति भावना, ब्राह्मण बनने के बाद कार्य में लगाते हो व अपनाते हो तो गोया शूद्रों की वस्तु चोरी करते हो। जबकि यह ब्राह्मणों की वस्तु ही नहीं है। तो दूसरों की वस्तु यूज करना अर्थात् ब्राह्मण बनने के बाद आसुरी व शूद्रपन के संस्कार व स्वभाव धारण करना अर्थात् हिंसा करना है।

✚ जैसे पहले ग्रुप में आप लोग निकले तो पहले ग्रुप की शक्ति, हिम्मत और दूसरे ग्रुप की शक्ति, हिम्मत और तीसरे ग्रुप की शक्ति और हिम्मत में अन्तर दिखाई देता है ना। ऐसे ही फिर नई-नई आत्माएं जो अब निकल रही हैं उनकी शक्ति और हिम्मत में भी अन्तर दिखाई देता है। तन से भी और मन से भी हर ग्रुप में अन्तर दिखाई देता जाता है। यह तो सबका अनुभव है ना? हिसाब से सोचो कि अब जो लास्ट की आत्मायें आवेंगी, वह क्या होंगी? अति निर्बल होंगी ना? तो, ऐसी निर्बल आत्माओं को सिर्फ ज्ञान दे दिया, उन्हें कोर्स करा दिया व योग में बैठा दिया, वे इससे आगे नहीं बढ़ेंगी। अब तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को, अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से ही निर्बल आत्माओं को सहयोग देते हुए, आगे बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिये अभी से ही अपने में सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा करो। जैसे स्थूल भोजन का लंगर लगता है ना, ऐसे ही आपके पास शक्ति लेने का दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा अर्थात् आप लोगों को भी शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिये आप को अपने में पहले से ही स्टॉक जमा करना पड़ेगा। जो गायन है-द्रोपदी के देगड़े का। द्रोपदियाँ तो आप सब हो न? द्रोपदी अर्थात् यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है। एक तो स्थूल साधनों की कोई कमी नहीं और दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं। सर्व-शक्तियों से सम्पन्न देगड़ा कब खाली नहीं होता। भल कितने भी आ जाएं। कितना बड़ा लंगर लग जावे कोई भूखा नहीं जा सकता। आगे चल कर,

जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आयेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब सब स्थूल साधनों से व स्थूल धन से प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें और कोई हमें शान्ति देवे। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एकादा बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? जब ऐसी परीक्षाएँ आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षाओं को सहन करने की इतनी हिम्मत है? क्या उस समय योग लगेगा या कि प्यास लगेगी। अगर कूँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे? जब यह विशेष आत्माओं का ग्रुप है, तो उनका पुरूषार्थ भी विशेष होना चाहिए ना? क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते-जैसा कि गायन है कि चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्टी में पड़े हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया। आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण। लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो वहाँ सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो शक्तियाँ आपकी प्रकृति को दासी जरूर बनावेंगी अर्थात् साधन स्वतः जरूर प्राप्त होंगे। शुरू-शुरू में अखबार में निकाला गया था कि 'ओम् मण्डली इज दि रिचेस्ट इन दि वर्ल्ड (Om Mandali I Richet In The World)' तो यही बात फिर अन्त में, सबके मुख से निकलेगी। लेकिन यह अटेन्शन जरूर रखना कि अगर किसी भी शक्ति की कमी होगी, तो कहीं-न-कहीं धोखा खाने का भी अनुभव होगा। इसलिये

पुरुषार्थ अभी इन महीन बातों पर ही करना चाहिए। किसी को दुःख तो नहीं दिया, हैन्डालिंग करना आया अथवा नहीं।

✚ इस समय के हर कर्म की विधि भविष्य में चलती ही है लेकिन द्वापर के बाद भी भक्तिमार्ग में इस समय के श्रेष्ठ कर्मों की विधि भक्तिमार्ग की विधि बन जाती है। तो पूज्य रूप में भी इस समय की विधि जीवन के श्रेष्ठ विधाता के रूप में चलती है और पुजारी मार्ग अर्थात् भक्तिमार्ग में भी आपकी हर विधि नीति व रीति में चलती आती है। तो विधाता, वरदाता और विधि - विधाता भी हो। आपके मूल सिद्धान्त सिद्धि प्राप्त होने के साधन बन जाते हैं। जैसे मूल सिद्धान्त - “बाप एक है। धर्म - आत्मायें, महान - आत्मायें अनेक हैं लेकिन परम - आत्मा एक है”। इसी मूल सिद्धान्त द्वारा आधा कल्प आप श्रेष्ठ आत्माओं को एक बाप के द्वारा प्राप्त हुआ वर्सा सिद्धि के रूप में प्राप्त होता है। प्रालब्ध मिलना अर्थात् सिद्धि स्वरूप बनना। क्योंकि एक बाप है, बाकी महान - आत्मायें वा धर्म - आत्मायें हैं, बाप नहीं है, भाई - भाई हैं। वर्सा बाप से मिलता है, भाई से नहीं मिलता। तो इस मूल सिद्धान्त द्वारा आधा कल्प आपको सिद्धि प्राप्त होती है और भक्ति में भी ‘गॉड इस वन’ - यही सिद्धान्त सिद्धि प्राप्त करने का आधार बनता है। भक्ति का आदि आधार भी एक बाप के ‘शिवालिंग’ रूप से आरम्भ होता है जिसको कहा जाता है - ‘अव्यभिचारी भक्ति’। तो भक्तिमार्ग में भी इसी एक सिद्धान्त द्वारा ही सिद्धि प्राप्त होती है कि ‘बाप एक है’। ऐसे, जो भी आपके मूल सिद्धान्त है, उस एक - एक सिद्धान्त द्वारा सिद्धि प्राप्त होती रहती है। जैसे इस जीवन का मूल सिद्धान्त ‘पवित्रता’ है। इस पवित्रता के सिद्धान्त द्वारा आप आत्माओं के भविष्य में सिद्धि स्वरूप के रूप में लाइट का ताज सदा ही प्राप्त है जिसका यादगार - रूप डबल ताज दिखाते हैं और भक्ति में भी जब भी यथार्थ और दिल से भक्ति करेंगे तो पवित्रता के सिद्धान्त को मूल आधार समझेंगे और समझते हैं कि सिवाए पवित्रता के भक्ति की सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती है। चाहे अल्पकाल के लिए, जितना समय भक्ति करते हैं, उतना समय ही पवित्रता को अपनायें लेकिन ‘पवित्रता ही सिद्धि का साधन है’ - इस सिद्धान्त को अपनाते अवश्य हैं। इसी प्रकार से हर एक ज्ञान का सिद्धान्त वा धारणा का

मूल सिद्धान्त बुद्धि से सोचे कि हर एक सिद्धान्त सिद्धि का साधन कैसे बनता है? यह मनन करने का काम दे रहे हैं। जैसे दृष्टान्त सुनाया, इसी प्रकार से सोचना। तो आप विधि - विधाता भी बनते हो, सिद्धि - दाता भी बनते हो। इसलिए आज तक भी जिन भक्तों को जो - जो सिद्धि चाहिए, वो भिन्न - भिन्न देवताओं द्वारा भिन्न - भिन्न सिद्धि प्राप्त करने के लिए, उन्हीं देवताओं की पूजा करते हैं। तो सिद्धि - दाता बाप द्वारा आप भी सिद्धि - दाता बनते हो - ऐसा अपने को समझते हो ना। जिनको स्वयं सर्व सिद्धियाँ प्राप्त है, वहीं औरों को भी सिद्धि प्राप्त कराने के निमित्त बन सकते हैं। सिद्धि खराब चीज़ नहीं है। क्योंकि आपकी रिद्धि - सिद्धि नहीं है। रिद्धि - सिद्धि जो होती है वह अल्पकाल के लिए प्रभावशाली होती है। लेकिन आपकी यथार्थ विधि द्वारा सिद्धि है। ईश्वरीय विधि द्वारा जो सिद्धि प्राप्त होती है, वह सिद्धि भी ईश्वरीय सिद्धि है। जैसे ईश्वर अविनाशी है, तो ईश्वरीय विधि और सिद्धि भी अविनाशी है। रिद्धि - सिद्धि दिखाने वाले स्वयं भी अल्पज्ञ आत्मा हैं, उन्हों की सिद्धि भी अल्पकाल की है। लेकिन आपकी सिद्धि, सिद्धान्त की विधि द्वारा सिद्धि है। इसलिए आधाकल्प स्वयं सिद्धिस्वरूप बनते हो और आधा कल्प आपके सिद्धान्त द्वारा भक्त आत्मायें यथा - शक्ति, तथा - फल की प्राप्ति वा सिद्धि की प्राप्ति करते आते हैं। क्योंकि भक्ति की शक्ति भी समय प्रमाण कम होती आती है। सतोप्रधान भक्ति की शक्ति, भक्त आत्माओं को सिद्धि की अनुभूति आजकल के भक्तों से ज्यादा कराती है। इस समय की भक्ति तमोप्रधान भक्ति होने के कारण न यथार्थ सिद्धान्त रहा है ना सिद्धि रही है। तो इतना नशा रहता है कि हम कौन हैं! सदा इस श्रेष्ठ स्वमान के स्थिति की सीट पर सेट रहते हो?



फिर भक्ति मार्ग में कीर्तन हो जायेगा। अभी अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति के कारण खुशी में आत्माओं का मन नाचता है और भक्ति में फिर पाँव से नाचेंगे। अभी श्रेष्ठ आत्माओं के गुणों की माला सिमरण करते हैं वा वर्णन करते हैं फिर भक्ति मार्ग में मणकों की माला सिमरण करेंगे। अभी आप सब स्वयं बाप को भोग लगाते हो, भक्ति में इसका रिटर्न आप सबको भोग लगायेंगे। जैसे अभी आप सब सिवाए बाप को स्वीकार कराने कोई भी वस्तु स्वीकार नहीं

करते, "पहले बाप" यह स्नेह सदा दिल में रहता है, ऐसे ही भक्ति में सिवाए आप देव आत्माओं को स्वीकार कराने के खुद स्वीकार नहीं करते हैं। पहले देवता, पीछे हम। जैसे अभी आप कहते हो पहले बाप फिर हम। तो सब कापी की है। आप याद स्वरूप बनते, वह यादगार के स्मृति स्वरूप रहते। जैसे आप सब अटूट अव्यभिचारी अर्थात् एक की याद में रहते हो, कोई भी हिला नहीं सकता, बदल नहीं सकता, ऐसे ही नौधा भक्त, सच्चे भक्त, पहले भक्त, अपने इष्ट के निश्चय में अटूट और अटल निश्चय बुद्धि होते हैं। चाहे हनुमान के भक्त को राम भी मिल जाए तो भी वह हनुमान के भक्त रहेंगे। ऐसे अटल विश्वासी होते हैं। आपका एक बल, एक भरोसा - इसको कापी की है। आप सभी अभी रूहानी यात्रु बनते। आपकी याद की यात्रा और उन्हीं की यादगार की यात्रा। आप लोग वर्तमान समय ज्ञान स्तम्भ, शान्ति स्तम्भ के चारों ओर शिक्षा के स्मृति स्वरूप महावाक्य के कारण चक्कर लगाते हो और सभी को लगवाते हो। आप शिक्षा के कारण चक्कर लगाते हो, एक तरफ भी छोड़ते नहीं हो। जब चारों तरफ चक्कर सम्पन्न होता तब समझते हो सब देखा, अनुभव किया। भक्तों ने आपके याद स्वरूपों का चक्कर लगाना शुरू किया। जक तक परिक्रमा नहीं लगाते तो भक्ति सम्पन्न नहीं सम- झते। सबका सब कर्म और गुण सूक्ष्म स्वरूप से स्थूल रूप का भक्ति में कापी किया हुआ है। इसलिए बापदादा सर्व देव आत्माओं को सदा यही शिक्षा देते कि सदा एक में अटल निश्चय बुद्धि रहो। अगर आप अभी एक की याद में एकरस नहीं रहते, एकाग्र नहीं रहते, अटल नहीं बनते तो आपके भक्त अटल निश्चय बुद्धि नहीं होंगे। यहाँ आपकी बुद्धि भटकती है और भक्त पाँव से भटकेंगे। कब किसको देवता बनायेंगे, कब किसको। आज राम के भक्त होंगे, कल कृष्ण के बन जायेंगे। "सर्व प्राप्ति एक द्वारा" - ऐसी स्थिति आपकी नहीं होगी तो भक्त आत्मायें भी हर प्राप्ति के लिए अलग-अलग देवता के पास भटकेंगे। आप अपनी श्रेष्ठ शान से परे हो जाते हो तो आपके भक्त भी परेशान होंगे। जैसे यहाँ आप याद द्वारा अलौकिक अनुभूतियाँ करने के बजाए अपनी कमजोरियों के कारण प्राप्ति के बजाए उल्हनें देते हो। चाहे दिलशिकस्त हो उल्हनें देते, चाहे स्नेह से उल्हनें देते, तो आपके भक्त भी उल्हनें देते रहेंगे। उल्हनें तो सब अच्छी तहर जानते हो इसलिए सुनाते नहीं हैं। बाप कहते हैं - रहमदिल बनो, सदा रहम की भावना रखो। लेकिन रहम के बदले अहम् भाव वा वहम् भाव हो जाता है। तो भक्तों में भी ऐसा होता है। वहम् भाव अर्थात्

यह करें, ऐसा होगा, नहीं होगा, ऐसे तो नहीं होगा। इसी में रहम भूल जाता है। स्वयं के प्रति भी रहम दिल और सर्व के प्रति भी रहमदिल। स्वयं के प्रति भी वहम् होता है और औरों के प्रति भी वहम् होता है। अगर वहम् की बीमारी बढ़ जाए तो कैंसर के समान रोग हो जाता। फर्स्ट स्टेज वाला फिर भी बच सकता है लेकिन लास्ट स्टेज वाले का बचना मुश्किल है। न जिंदा रह सकता है, न मर सकता। तो यहाँ भी न पूरा अज्ञानी बन सकता न ज्ञान बन सकता। उन्हीं की निशानी होगी - एक ही सलोगन रटते रहेंगे वा कहेंगे - मैं हूँ ही ऐसा, वा दूसरे के प्रति कहेंगे - यह है ही ऐसा। कितना भी बदलने की कोशिश करेंगे, कहेंगे यह है ही ऐसा। कितना भी बदलने की कोशिश करेंगे लेकिन यही रट होगी। कैंसर वाला पेशेन्ट खाता पीता बहुत अच्छा है। बाहर का रूप अच्छा दिखाई देगा लेकिन अन्दर शक्तिहीन होगा। वहम् की बीमारी वाले बाहर से अपने को बहुत अच्छा चलायेंगे, बाहर कोई कमी नहीं रखेंगे, न कोई और रखेगा तो स्वीकार करेंगे। लेकिन अन्दर ही अन्दर आत्मा असन्तुष्ट होने के कारण खुशी और सुख की प्राप्ति कमजोर होते जाते।

✚ क्योंकि बाप की जयन्ती के साथ आपकी भी है। अपने बर्थ-डे (जन्म-दिन) का रहस्य तो सुना सकते हो ना! यादगार तो भक्त लोग भी बड़ी भावना से मनाते हैं। लेकिन अन्तर यह है कि वह शिवरात्रि पर हर साल व्रत रखते हैं और आप तो पिकनिक करते हो। क्योंकि आप सब ने जन्मते ही सदाकाल के लिए अर्थात् सम्पूर्ण ब्राह्मण जीवन के लिए एक बार व्रत धारण कर लिया, इसलिए बार-बार नहीं करना पड़ता। उन्हीं को हर साल व्रत रखना पड़ता है। आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने जन्म लेते ही यह व्रत ले लिया कि हम सदा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण रहेंगे। यह पक्का व्रत लिया है या थोड़ा कच्चा.....? जब आत्मा और परमआत्मा का सम्बन्ध अविनाशी है तो व्रत भी अविनाशी है ना। दुनिया वाले सिर्फ खान-पान का व्रत रखते हैं। इससे भी क्या सिद्ध होता है? आपने ब्राह्मण जीवन में सदा के लिए खान-पान का भी व्रत लिया है ना। कि यह फ्री है-खाना-पीना जो भी चाहे खा लो? पक्का व्रत है वा “कभी-कभी थक जाओ तो व्रत तोड़ दो? कभी टाइम नहीं मिलता तो क्या बनायें, कुछ भी मंगाकर खा लेवें?” थोड़ा-थोड़ा ढीला करते हो? देखो, आपके भक्त व्रत रख रहे हैं। चाहे साल में एक बार भी रखते हैं

लेकिन मर्यादा को पालन तो कर रहे हैं ना। तो जब आपके भक्त व्रत में पक्के हैं, तो आप कितने पक्के हो? पक्के हो? कभी-कभी थोड़ा ढीला कर देते हो-चलो, कल भोग लगा देंगे, आज नहीं लगाते। यह भी आप ब्राह्मण आत्माओं की जीवन के बेहद के व्रत के यादगार बने हुए हैं। विशेष इस दिन पवित्रता का भी व्रत रखते हैं। एक-पवित्रता का व्रत रखते; दूसरा-खान-पान का व्रत रखते; तीसरा-सारा दिन किसी को भी किसी प्रकार का दुःख या धोखा नहीं देंगे-यह भी व्रत रखते हैं। लेकिन आप का इस ब्राह्मण जीवन का व्रत बेहद का है, उन्हीं का एक दिन का है। पवित्रता का व्रत तो ब्राह्मण जन्म से ही धारण कर लिया है ना! सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन पांचों ही विकारों पर विजय हो-इसको कहते हैं पवित्रता का व्रत। तो सोचो कि पवित्रता के व्रत में कहाँ तक सफल हुए हैं? जैसे ब्रह्मचर्य अर्थात् काम महाशत्रु को जीतने के लिये विशेष अटेन्शन में रहते हो, ऐसे ही और भी चार साथी जो काम महाशत्रु के हैं, उनका भी इतना ही अटेन्शन रहता है? कि उसके लिए छुट्टी है-थोड़ा-थोड़ा क्रोध भल कर लो? छुट्टी है नहीं, लेकिन अपने आपको छुट्टी दे देते हो। देखा गया है कि क्रोध के बाल-बच्चे जो हैं उनको छुट्टी दे दी है। क्रोध महाभूत को तो भगाया है लेकिन उसके जो बाल-बच्चे हैं उनसे थोड़ी प्रीत अभी भी रखी है। जैसे छोटे बच्चे अच्छे लगते हैं ना। तो यह क्रोध के छोटे बच्चे कभी-कभी प्यारे लगते हैं! व्रत अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत। कई बच्चे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं। कहते हैं-”क्रोध आया नहीं लेकिन क्रोध दिलाया गया, तो क्या करें? मेरे को नहीं आया लेकिन दूसरा दिलाता है।” बहुत म०जे की बातें करते हैं। कहते हैं-आप भी उस समय होते तो आपको भी आ जाता। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा भी कहते-अच्छा, तुमको माफ कर दिया, लेकिन आगे फिर नहीं करना। शिवरात्रि का अर्थ ही है-अंधकार मिटाए प्रकाश लाने वाली रात्रि। मास्टर ज्ञान-सूर्य प्रकट होना-यह है शिवरात्रि। आप भी मास्टर ज्ञान-सूर्य बन विश्व में अंधकार को मिटाए रोशनी देने वाले हो। जो विश्व को रोशनी देने वाला है वह स्वयं क्या होगा? स्वयं अंध-कार में तो नहीं होगा ना। दीपक के माफिक तो नहीं हो? दीपक के नीचे अंधियारा होता है, ऊपर रोशनी होती है। आप मास्टर ज्ञान-सूर्य हो। तो मास्टर ज्ञान-सूर्य स्वयं भी प्रकाश-स्वरूप है, लाइट-माइट रूप है और दूसरों को भी लाइट-माइट देने वाले हैं। जहाँ सदा रोशनी होती है वहाँ अंधकार का सवाल ही नहीं, अंधकार हो ही नहीं सकता। तो सम्पूर्ण पवित्रता

अर्थात् रोशनी। अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। रह सकता है? आ सकता है? चलो, रहे नहीं लेकिन आकर चला जाए-यह हो सकता है? अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसको रोशनी कहेंगे या अंधकार कहेंगे? अंधकार खत्म हो गया ना। शिवरात्रि का चित्र भी दिखाते हो ना। उसमें क्या दिखाते हो? अंधकार भाग रहा है। कि थोड़ा-थोड़ा रह गया?

✚ ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर सेकेण्ड सुखमय जीवन। चाहे दुःख का नजारा भी हो लेकिन जहाँ पवित्रता की शक्ति है, वह कभी दुःख के नजारे में दुःख का अनुभव नहीं करेंगे लेकिन दुःख-हर्ता सुख-कर्ता बाप समान दुःख के वायुमण्डल में दुःखमय व्यक्तियों को सुख-शान्ति के वरदानी बन सुख-शान्ति की अंचली देंगे, मास्टर सुख-कर्ता बन दुःख को रूहानी सुख के वायुमण्डल में परिवर्तन करेंगे। इसी को ही कहा जाता है - 'दुःख-हर्ता सुख-कर्ता।' जब साइन्स की शक्ति अल्पकाल के लिए किसी का दुःख-दर्द समाप्त कर लेती है, तो पवित्रता की शक्ति अर्थात् साइन्स की शक्ति दुःख-दर्द समाप्त नहीं कर सकती? साइन्स की दवाई में अल्पकाल की शक्ति है तो पवित्रता की शक्ति में, पवित्रता की दुआ में कितनी बड़ी शक्ति है? समय प्रमाण जब आज के व्यक्ति दवाइयों से कारणे-अकारणे तंग होंगे, बीमारियाँ अति में जायेंगी तो समय पर आप पवित्र देव वा देवियों के पास दुआ लेने लिए आयेंगे कि हमें दुःख, अशान्ति से सदा के लिए दूर करो। पवित्रता की दृष्टि-वृत्ति साधारण शक्ति नहीं है। यह थोड़े समय की शक्तिशाली दृष्टि वा वृत्ति सदाकाल की प्राप्ति कराने वाली है। जैसे अभी जिस्मानी डॉक्टर्स और जिस्मानी हॉस्पिटल्स समय प्रति समय बढ़ते भी जाते हैं, फिर भी डॉक्टर्स को फुर्सत नहीं, हॉस्पिटल्स में स्थान नहीं। रोगियों की सदा ही क्यू लगी हुई होती है। ऐसे आगे चल हॉस्पिटल्स वा डॉक्टर्स के पास जाने का, दवाई करने का, चाहते हुए भी जा नहीं सकेंगे। मैजारिटी निराश हो जायेंगे तो क्या करेंगे? जब दवा से निराश होंगे तो कहाँ जायेंगे? आप लोगों के पास भी क्यू लगेगी। जैसे अभी आपके वा बाप के जड़ चित्रों के सामने 'ओ दयालू, दया करो' कहकर दया वा दुआ मांगते रहते हैं, ऐसे आप चैतन्य, पवित्र, पूज्य आत्माओं के पास 'ओ पवित्र देवियों वा

पवित्र देव! हमारे ऊपर दया करो' - यह मांगने के लिए आयेंगे। आज अल्पकाल की सिद्धि वालों के पास शफा लेने वा सुख-शान्ति की दया लेने के लिए कितने भटकते रहते हैं! समझते हैं - दूर से भी दृष्टि पड़ जाए। तो आप परमात्म-विधि द्वारा सिद्धि-स्वरूप बने हो। जब अल्पकाल के सहारे समाप्त हो जायेंगे तो कहाँ जायेंगे? यह जो भी अल्पकाल की सिद्धि वाले हैं, अल्पकाल की कुछ न कुछ पवित्रता की विधियों से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करते हैं। यह सदा नहीं चल सकती है। यह भी गोल्डन एजड आत्माओं को अर्थात् लास्ट में ऊपर से आई हुई आत्माओं को पवित्र मुक्तिधाम से आने के कारण और ड्रामा के नियम प्रमाण, सतोप्रधान स्टेज के प्रमाण पवित्रता के फलस्वरूप अल्पकाल की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं लेकिन थोड़े समय में ही सतो, रजो, तमो - तीनों स्टेजस पास करने वाली आत्मायें हैं। इसलिए सदाकाल की सिद्धि नहीं रहती। परमात्म-विधि से सिद्धि नहीं है, इसलिए कहाँ न कहाँ स्वार्थ व अभिमान सिद्धि को समाप्त कर लेता है। लेकिन आप पवित्र आत्मायें सदा सिद्धि स्वरूप हैं, सदा की प्राप्ति कराने वाली हैं। सिर्फ चमत्कार दिखाने वाली नहीं हो लेकिन चमकती हुई ज्योतिस्वरूप बनाने वाले हो, अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले हो। इसलिए यह सब सहारे अब थोड़ा समय के लिए हैं और आखिर में आप पवित्र आत्माओं के पास ही अंचली लेने आयेंगे। तो इतनी सुख-शान्ति की जननी पवित्र आत्मायें बने हो? इतनी दुआ का स्टॉक जमा किया है वा अपने लिए भी अभी तक दुआ मांगते रहते हो? कई बच्चे अभी भी समय प्रति समय बाप से मांगते रहते कि इस बात पर थोड़ी-सी दुआ कर लो, आशीर्वाद दे दो। तो मांगने वाले दाता कैसे बनेंगे? इसलिए पवित्रता की शक्ति की महानता को जान पवित्र अर्थात् पूज्य देव आत्मायें अभी से बनो। ऐसे नहीं कि अन्त में बन जायेंगे। यह बहुत समय की जमा की हुई शक्ति अन्त में काम में आयेगी। तो समझा, पवित्रता की गुह्य गति क्या है? सदा सुख-शान्ति की जननी आत्मा - यह है पवित्रता की गुह्यता! साधरण बात नहीं है! ब्रह्मचारी रहते हैं, पवित्र बन गये हैं। लेकिन पवित्रता जननी है, चाहे संकल्प से, चाहे वृत्ति से, वायुमण्डल से, वाणी से, सम्पर्क से सुख- शान्ति की जननी बनना - इसको कहते हैं - 'पवित्र आत्मा'। तो कहाँ तक बने हो - यह अपने आपको चेक करो।

✚ पूज्य वह जिसकी आंख बाप के सिवाए कहाँ भी न डूबे सदा यह नशा रहता है कि हम कल्प-कल्प की सर्वश्रेष्ठ पूज्य आत्मायें बनते हैं? कितनी बार आपकी पूजा हुई है? पूज्य आत्मा हूँ-यह पूज्यपन की अनुभूति क्या होती है? निशानी क्या है? नशा है, खुशी है-वह तो ठीक है। लेकिन कौनसा संस्कार ऐसा है जिससे समझते हो-मैं ही पूज्य था? जो पूज्य आत्मायें हैं उनकी विशेषता क्या है? किस विशेषता के आधार पर कोई पूज्य बनता है? लौकिक में भी देखो-किसको कहते हैं कि यह तो पूज्य है। पूज्य आत्मा की निशानी है-वह कभी भी किसी भी वस्तु के पीछे, व्यक्ति के पीछे झुकेगा नहीं। सब उसके आगे झुकेंगे लेकिन वह झुकेगा नहीं। नम्रता से झुकना-वह अलग चीज है। लेकिन झुकना अर्थात् प्रभावित होना। पूज्य के आगे सब झुकते हैं, पूज्य नहीं झुकता है। तो किसी भी प्रकार के व्यक्ति या वैभव की आकर्षण झुका लेवे-यह पूज्य की निशानी नहीं है। तो यह चेक करो कि कभी भी, किसी भी आकर्षण में मन और बुद्धि झुकती तो नहीं है, प्रभावित तो नहीं होते हो? सिवाए एक बाप के और कहाँ भी मन और बुद्धि का झुकाव नहीं। पूज्य अर्थात् झुकाने वाला, न कि झुकने वाला। जो कल्प-कल्प का पूज्य होगा उसकी निशानी क्या होगी? सिवाए बाप के, और कहाँ भी आंख नहीं डूबेगी। यह बहुत अच्छा है, यह बहुत अच्छी चीज है-नहीं। पूज्य आत्माओं के आगे स्वयं सब व्यक्ति और वैभव झुकते हैं। जो इष्ट देव होते हैं, भक्त लोग स्वयं बढ़िया ते बढ़िया अच्छी चीज इष्ट के आगे भेंट चढ़ायेंगे। इष्ट उन चीजों पर प्रभावित नहीं होगा लेकिन वो चीजें स्वयं उसके आगे झुकेंगी। तो पूज्य की निशानी है-एक बाप के सिवाए कहाँ भी मन-बुद्धि का झुकाव नहीं। रिगॉर्ड और चीज है, प्यार और चीज है, नम्रता और चीज है लेकिन प्रभावित होना और चीज है। तो पूज्य आत्मा थे और बार-बार बनेंगे। यह निशानी अपने अन्दर चेक करो। कभी भी किसी भी संस्कार के वश आत्मा वशीभूत हो जाती है तो यह भी झुकना हुआ। मानो कोई ब्राह्मण आत्मा, पूज्य आत्मा कहे कि आज क्रोध के वश हो गई, लोभ के वश हो गई, अभिमान के वश हो गई-तो यह झुकना हुआ या झुकाना हुआ? तो पूज्य कभी झुकता नहीं। पूज्य के आगे सब आकर्षित होकर स्वयं आते हैं, पूज्य किसी के पीछे आकर्षित नहीं होता। तो यह निशानी देखो। अगर कभी-

कभी झुकाव हो जाता है तो पूजा भी कभी-कभी होगी, सदा नहीं होगी। पूज्य में भी नम्बर होते हैं। वैरा-यटी होती है ना। कोई पूज्य सदा पूजे जाते हैं और कोई-कोई की कभी पूजा होती है, कोई की विधिपूर्वक होती है और कोई की काम-चलाऊ पूजा होती है। मन्दिरों में भी फर्क होता है ना। तो यहाँ भी ऐसे है। जो विधिपूर्वक श्रीमत को अपनाते नहीं, काम-चलाऊ, चलो अमृतवेले उठना है, बैठना है, कोई देखे नहीं, कोई कहे नहीं कि यह उठा नहीं, फिर चाहे बाप से मिलन मनाये या निद्रा से मिलन मनाये। यह काम-चलाऊ हो गया ना। अमृतवेले उठा, बैठा लेकिन विधिपूर्वक नहीं। तो मूर्ति को भी बिठा देते हैं लेकिन पूजा विधिपूर्वक नहीं होती है। लगाव तब होता है जब झुकाव होता है। बिना लगाव के झुकाव नहीं होता। आज के भक्तों का भी चाहे अल्पकाल की प्राप्ति की तरफ लगाव हो, तभी झुकाव होता है। आजकल पूज्य की तरफ लगाव नहीं है, अल्पकाल की प्राप्ति के तरफ लगाव है। लेकिन प्राप्ति कराने वाली पूज्य आत्मायें हैं, इसलिये झुकते उनकी तरफ ही हैं। तो समझा, पूज्य की निशानी क्या है? कल्प-कल्प की श्रेष्ठ पूज्य आत्मायें सदा स्वयं को सम्पन्न अनुभव करेंगी। जो सम्पन्न होता है उसकी आंख किसमें भी नहीं जाती। पूज्य आत्मा सम्पन्न होने के कारण सदा ही अपने रूहानी नशे में रहेगी। उनके मन-बुद्धि का झुकाव कहाँ भी नहीं होगा- न देह के सम्बन्ध में, न देह के पदार्थ में। सबसे न्यारा और सबसे प्यारा। ब्राह्मण जीवन का मजा जीवन्मुक्त स्थिति में है। न्यारा अर्थात् मुक्त। संस्कार के ऊपर भी झुकाव नहीं। जब कहते हो क्या करूँ, कैसे करूँ-तो उस समय जीवन्मुक्त हुए या जीवन-बन्ध?करना नहीं चाहते थे लेकिन हो गया-यह है जीवन-बन्ध बनना। इच्छा नहीं थी लेकिन अच्छा लग गया, शिक्षा देनी थी लेकिन क्रोध आ गया-यह है जीवन-बन्ध स्थिति। ब्राह्मण अर्थात् जीवन्मुक्त। कभी भी किसी बंधन में बंध नहीं सकते।



आप उत्सव मनाते हुए होली बन जाते हो और दूसरों को भी होली बनाते हो। वह सिर्फ मनाते हैं, आप मनाते बन जाते हो। लोग तीन प्रकार की होली मनाते हैं - एक जलाने की होली। दूसरी रंग लगाने की होली। तीसरी मंगल मिलन मनाने की होली। ये तीनों होली हैं रूहानी रहस्य से। लेकिन वह स्थूल रूप में मनाते रहते हैं। इस संमगयुग पर आप महान आत्मायें जब बाप की

बनती हो अर्थात् होली बनती हो तो पहले क्या करती हो? पहले सब पुराने स्वभाव संस्कार योग अग्नि से भस्म करते हो अर्थात् जलाते हो। उसके बाद ही याद द्वारा बाप के संग का रंग लगता है। आप भी पहले जलाने वाली होली मनाते हो फिर प्रभु संग के रंग में रंग जाते हो अर्थात् बाप समान बन जाते हो। बाप ज्ञान सागर तो बच्चे भी संग के रंग में ज्ञान स्वरूप बन जाते हैं। जो बाप के गुण वह आपके गुण हो जाते। जो बाप की शक्तियाँ वह आपका खजाना बन जाता। आपकी प्रॉपर्टी हो जाती। तो संग का रंग ऐसा अविनाशी लग जाता जो जन्म-जन्मान्तर के लिये यह रंग अविनाशी बन जाता है। और जब संग का रंग लग जाता, यह रूहानी रंग की होली मना लेते तो आत्मा और परमात्मा का, बाप और बच्चों का श्रेष्ठ मिलन का मेला सदा ही होता रहता। अज्ञानी आत्माओं ने आपके इस रूहानी होली को यादगार के रूप में मनाना शुरू किया है। आपकी प्रैक्टिकल उत्साह भरी जीवन का भिन्न भिन्न रूप में यादगार मनाकर अल्पकाल के लिए खुश हो जाते। हर कदम में, आपके श्रेष्ठ जीवन में जो विशेषतायें प्राप्त हुईं उनको याद कर थोड़े समय के लिए वह भी मौज मनाते रहते हैं। यह यादगार देख वा सुन हर्षित होते हो ना कि हमारी विशेषताओं का यादगार है! आपने माया को जलाया और वह होलिका बनाके जला देते हैं। इतनी रमणीक कहानियाँ बनाई हैं जो सुनकर आपको हँसी आयेगी कि हमारी बात को कैसे बना दिया है! होली का उत्सव आपके भिन्न-भिन्न प्राप्ति के याद रूप में मनाते हैं। अभी आप सदा खुश रहते हो। खुशी की प्राप्ति का यादगार बहुत खुश होकर होली मनाते हैं। उस समय सब दुख भूल जाते हैं। और आप सदा के लिए दुख भूल गये हो। आपकी खुशी की प्राप्ति का यादगार मनाते हैं। और बात मनाने के समय छोटे बड़े बहुत ही हल्के बन, हल्के रूप में मनाते हैं। उस दिन के लिए सभी का मूड भी हल्का रहता है। तो यह आपके डबल लाइट बनने का यादगार है। जब प्रभु-संग के रंग में रंग जाते हो तो डबल लाइट बन जाते हो ना। तो इस विशेषता का यादगार है। और बात - इस दिन छोटे बड़े किसी भी सम्बन्ध वाले समान स्वभाव में रहते हैं। चाहे छोटा-सा पोत्रा भी हो वह भी दादा को रंग लगायेगा। सभी सम्बन्ध का, आयु का भान भूल जाते हैं। समान भाव में आ जाते हैं। यह भी आपके विशेष समान भाव अर्थात् भाई- भाई की स्थिति और कोई भी देह के सम्बन्ध की दृष्टि नहीं। यह भाई-भाई की समान स्थिति का यादगार है। और बात - इस दिन भिन्न-भिन्न रंगों से खूब पिचकारियाँ भर एक दो को रंगते हैं। यह भी इस समय की आपकी सेवा का यादगार है।

कोई भी आत्मा को आप दृष्टि की पिचकारी द्वारा प्रेम स्वरूप बनाने का रंग, आनन्द स्वरूप बनाने का रंग, सुख का, शान्ति का, शक्तियों का कितने रंग लगाते हो? ऐसा रंग लगाते हो जो सदा लगा रहे। मिटाना नहीं पड़ता। मेहनत नहीं करनी पड़ती। और ही हर आत्मा यही चाहती कि सदा इन रंगों में रंगी रहूँ। तो सभी के पास रूहानी रंगों की रूहानी दृष्टि की पिचकारी है ना! होली खेलते हो ना! यह रूहानी होली आप सबके जीवन का यादगार है। ऐसा बापदादा से मंगल मिलन मनाया है जो मिलन मनाते बाप समान बन गये। ऐसा मंगल मिलन मनाया है जो कम्बाइण्ड बन गये हो। कोई अलग कर नहीं सकता। और बात - यह दिन सभी बीती हुई बातों को भुलाने का दिन है। 63 जन्म की बीती को भुला देते हो ना! बीती को बिन्दी लगा देते हो। इसलिए होली को बीती सो बीती के अर्थ में भी कहते हैं। कैसी भी कड़ी दुश्मनी को भूल मिलन मनाने का दिन माना जाता है। आपने भी आत्मा के दुश्मन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव भूल कर प्रभु मिलन मनाया ना! संकल्प मात्र भी पुराना संस्कार स्मृति में न आये। यह भी आपके इस भूलने की विशेषता का यादगार मना रहे हैं। तो सुना आपकी विशेषतायें कितनी हैं? आपके हर गुण का, हर विशेषता का, कर्म का अलग-अलग यादगार बना दिया है। जिसके हर कर्म का यादगार बन जाए, जो याद कर खुशी में आ जाएँ वह स्वयं कितने महान हैं? समझा -अपने आपको कि आप कौन हो? होली तो हो लेकिन कितने विशेष हो!



जिन्होंने जब से मन से त्याग किया अर्थात् कोई भी देह के बन्धन व देह के सम्बन्ध को एक सेकेण्ड में त्याग कर दिया उन की वह तिथि-तारीख और वेला सभी ड्रामा में व बापदादा के पास नूँधी हुई है। जैसे आजकल ज्योतिषी, ज्योतिष विद्या को जानने वाले जन्म की तिथि और वेला के प्रमाण अपनी यथा-योग्य नॉलेज के आधार से भविष्य जन्मपत्री बनाते हैं। उन्हीं का भी आधार तिथि और वेला पर होता है। वैसे यहाँ भी मरजीवा जन्म की तिथि वेला और स्थिति है। वे लोग परिस्थिति को देखते हैं किस परिस्थिति में पैदा हुआ। यहाँ उस वेला के समय स्थिति को देखा जाता है। जन्मते ही किस स्थिति में रहे, उसी आधार पर यहाँ भी हरेक के भविष्य प्रारब्ध का आधार है। तो आप लोग भी इन तीनों बातों की तिथि, वेला और स्थिति को जानते हुए अपने संगमयुग की प्रारब्ध व संगमयुग की भविष्य स्थिति और भविष्य जन्म की प्रारब्ध

अपने-आप भी जान सकते हो। एक-एक बात की प्राप्ति प्रैक्टिकल जीवन के साथ सम्बन्धित है। यह है ही अपने तकदीर को जानने का नेत्र। इससे आप हरेक अपनी फाइनल स्टेज (Final tage) के नम्बर को जान सकते हो। जैसे ज्योतिषी हस्तों की लकीरों द्वारा किसी की भी जन्मपत्री को जान सकते हैं, वैसे आप लोग मास्टर त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री व ज्ञानस्वरूप अर्थात् मास्टर नॉलेजफुल होने के नाते अपने मरजीवा जीवन की प्रैक्टिकल कर्म रेखाओं से, संकल्पों की सूक्ष्म लकीरों से अगर संकल्प को चित्र में लायेंगे तो किस रूप में दिखावेंगे? अपने संकल्पों की लकीरों के आधार पर व कर्मों की रेखाओं के आधार पर अपनी जन्मपत्री को जान सकते हो कि संकल्प रूपी लकीरें सीधी अर्थात् स्पष्ट हैं? कर्म की रेखायें श्रेष्ठ अर्थात् स्पष्ट हैं! एक तो यह चेक करो कि बहुत काल से स्थिति में व सम्पर्क में श्रीमत के प्रमाण बिताया है? यह है काल अर्थात् समय को देखना। समय अर्थात् वेला का प्रभाव भी जन्मपत्री पर बहुत होता है। तो यहाँ भी समय अर्थात् बहुत समय के हिसाब से सम्बन्ध रखता है। बहुत समय का मतलब यह नहीं कि स्थूल तारीखों व वर्षों के हिसाब से नहीं, लेकिन जब से जन्म लिया तब से बहुत समय की लगन हो। सभी सब्जेक्ट्स में यथार्थ रूप से कहाँ तक बहुत समय से रहते आये हैं, इसका हिसाब जमा होगा। मानो कोई को 35 वर्ष हुए हैं लेकिन अपने पुरुषार्थ की सफलता में बहुत समय नहीं बिताया है तो उनकी गिनती बहुत समय में नहीं आयेगी। अगर कोई 35 वर्ष के बदले 15 वर्ष से आ रहे हैं लेकिन 15 वर्ष में बहुत समय पुरुषार्थ की सफलता में रहा है तो उनकी गिनती जास्ती में आयेगी। बहुत समय सफलता के आधार पर गिना जाता है। तो वेला का आधार ही हुआ ना? बहुत समय के लगन में मग्न रहने वाले को प्रारब्ध भी बहुत समय तक प्राप्त होती है। अल्प काल की सफलता वालों की अल्पकाल अर्थात् 21 जन्मों में थोड़े जन्म की ही प्रारब्ध होती है। बाकी साधारण प्रारब्ध। इसलिये ज्योतिषी लोग भी वेला को महत्व देते हैं। बहुत काल से निर्विघ्न अर्थात् कर्मों की रेखा क्लियर हो, उसका आधार जन्मपत्री पर होता है। जैसे हस्तों की लाइन में अगर बीच-बीच में लकीर कट होती हैं तो श्रेष्ठ भाग्य नहीं गिना जाता है व बड़ी आयु नहीं मानी जाती है। वैसे ही यहाँ भी अगर बीच-बीच में विघ्नों के कारण बाप से जुटी हुई बुद्धि की लाइन कट होती रहती है, व क्लियर नहीं रहती है तो बड़ी प्रारब्ध नहीं हो सकती। अभी अपने-आपको जान सकेंगे कि हमारी जन्मपत्री क्या है?

किस पद की प्राप्ति नूँधी हुई है? जन्मपत्री में दशायें भी देखते हैं। जैसे बृहस्पति की दशा रहती है। क्या बहुत समय बृहस्पति की दशा रहती है या बार-बार दशा बदलती रहती है? कभी बृहस्पति की, कभी राहू की? अगर बार-बार बदलती है अर्थात् निर्विघ्न नहीं है तो प्रारब्ध भी बहुत समय के लिए निर्विघ्न राज्य में नहीं पा सकते। जन्मपत्री में राशि देखते हैं। यहाँ कौन-सी राशि है? यहाँ तीन राशि हैं। एक है महारथी की राशि, दूसरी है घोड़े सवार की और तीसरी है प्यादे की। इन तीनों में से अपनी राशि को भी देखो कि शुरू से अर्थात् जन्म से ही पुरूषार्थ की राशि महारथी की रही, या घुड़सवार या प्यादे की रही है? इस राशि के हिसाब से भी जन्मपत्री का मालूम पड़ जाता है। मास्टर त्रिकालदर्शी का ज्ञान-स्वरूप बन अपनी जन्मपत्री स्वयं ही चेक करो और अपने भविष्य को देखो। राशि को व दशा को व लकीरों को बदल भी सकते हैं। परखने के बाद, चेक करने के बाद, फिर चेंज (Change) करने का साधन अपनाना।



दुनिया की होली एक-दो दिन की है और आप होली हंस संगमयुग ही होली मनाते हो। वो रंग लगाते हैं और आप बाप के संग के रंग में बाप समान सदा के लिए होली बन जाते हो! हद से बेहद के हो जाने से सदाकाल के लिए होली अर्थात् पवित्र बन जाते हो। यह होली का उत्सव होली अर्थात् पवित्र बनाने का, बनने का उत्साह दिलाने वाला है। जो भी यादगार विधि मनाते हैं उन सब विधियों में पवित्र बनने का सार समाया हुआ है। पहले होली बनने वा होली मनाने के लिए अपवित्रता, बुराई को भस्म करना है, जलाना है। जब तक अपवित्रता को सम्पूर्ण समाप्त नहीं किया है तब तक पवित्रता का रंग चढ़ नहीं सकता। पवित्रता की दृष्टि से एक-दो में रंग रंगने का उत्सव मना नहीं सकते। भिन्न-भिन्न भाव भूलकर एक ही परिवार के हैं, एक ही समान हैं अर्थात् भाई-भाई के एक समान वृत्ति से मनाने का यादगार है। वे तो लौकिक रूप में मनाने लिए छोटा बड़ा, नर-नारी समान भाव में मनावें इस भाव से मनाते हैं। वास्तव में भाई-भाई के समान स्वरूप की स्मृति अविनाशी रंग का अनुभव कराती है। जब इस समान स्वरूप में स्थित हो जाते हैं तब ही अविनाशी खुशी की झलक अनुभव होती है और सदा के लिए उत्साह रहता है कि सर्व आत्माओं को ऐसा अविनाशी रंग लगावें। रंग पिचकारी द्वारा लगाते हैं। आपकी पिचकारी कौन-सी है? आपके दिव्य बुद्धि रूपी पिचकारी में अविनाशी रंग भरा

हुआ है ना। संग के रंग से अनुभव करते हो, उन भिन्न-भिन्न अनुभवों के रंग से पिचकारी भरी हुई है ना। भरी हुई बुद्धि की पिचकारी से किसी भी आत्मा को दृष्टि द्वारा, वृत्ति द्वारा मुख द्वारा इस रंग में रंग सकते हो जो वह सदा के लिए होली बन जाए। वो होली मनाते हैं, आप होली बनाते हो। सब दिन होली डे के बना देते हो। वो अल्पकाल के लिए अपनी खुशी की मूड बनाते हैं मनाने के लिए लेकिन आप सभी सदा मनाने के लिए होली और हैपी मूड में रहते हो। मूड बनानी नहीं पड़ती है। सदा रहते हो होली मूड में और किसी प्रकार की मूड नहीं। होली मूड सदा हल्की, सदा निश्चिन्त, सदा सर्व खज़ानों से सम्पन्न, बेहद के स्वराज्य अधिकारी। यह जो भिन्न-भिन्न मूड बदलते हैं, कब खुशी की, कब ज्यादा सोचने की, कभी हल्की, कभी भारी - यह सब मूड बदल कर सदा हैपी और होली मूड वाले बन जाते हो। ऐसा अविनाशी उत्सव बाप के साथ मनाते हो। मिटाना, मनाना और फिर मिलन मनाना। जिसका यादगार जलाते हैं, रंग लगाते हैं और फिर मिलन मनाते हैं। आप सभी भी जब बाप के रंग में रंग जाते हो, ज्ञान के रंग में, खुशी के रंग में, कितने रंगों की होली खेलते हो। जब इन सब रंग से रंग जाते हो तो बाप समान बन जाते हो। और जब समान आपस में मिलते हैं तो कैसे मिलेंगे? स्थूल में तो गले मिलते, लेकिन आप कैसे मिलते? जब समान बन जाते तो स्नेह में समा जाते हैं। समाना ही मिलना है। तो यह सारी विधि कहाँ से शुरू हुई? आप अविनाशी मनाते, वो विनाशी यादगार रूप मनाकर खुश हो जाते हैं। इससे सोचो कि आप सभी कितने अविनाशी उत्सव अर्थात् उत्साह में रहने के अनुभवी बने हो जो अब सिर्फ आपके यादगार दिन को भी मनाने से खुश हो जाते हैं। अन्त तक भी आपके उत्साह और खुशी का यादगार अनेक आत्माओं को खुशी का अनुभव कराता रहता है। तो ऐसे उत्साह भरे जीवन, खुशियों से भरी जीवन बना ली है ना! ड्रामा के अन्दर यही संगमयुग का वण्डरफुल पार्ट है जो अविनाशी उत्सव मनाते हुए अपना यादगार उत्सव भी देख रहे हो। एक तरफ चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें हो। दूसरे तरफ अपने चित्र देख रहे हो। एक तरफ याद स्वरूप बने हो, दूसरे तरफ अपने हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार देख रहे हो। महिमा योग्य बन गये हो और कल्प पहले की महिमा सुन रहे हो। यह वण्डर है ना। और स्मृति से देखो कि यह हमारा गायन है! वैसे तो हर आत्मा भिन्न नाम रूप से अपना श्रेष्ठ कर्म का यादगार चित्र देखते भी हैं लेकिन जानते नहीं है। अभी गाँधी जी भी भिन्न नाम रूप से अपनी फिल्म देखता

तो होगा ना। लेकिन पहचान नहीं। आप पहचान से अपने चित्र देखते हो। जानते हो कि यह हमारे चित्र हैं! यह हमारे उत्साह भरे दिनों का यादगार उत्सव के रूप में मना रहे हैं। यह ज्ञान सारा आ गया है ना। डबल विदेशियों के चित्र मन्दिरों में है? यह देलवाड़ा मन्दिर में अपना चित्र देखा है? या सिर्फ भारत वालों के चित्र हैं? सभी ने अपने चित्र देखे? यह पहचाना कि हमारे चित्र हैं। जैसे हे अर्जुन! एक का मिसाल है, वैसे यादगार चित्र भी थोड़े दिखाते हैं। परन्तु हैं सभी के। ऐसे नहीं समझो कि यह तो बहुत थोड़े चित्र हैं। हम कैसे होंगे। यह तो सैम्पल दिखाया है। लेकिन है आप सबका यादगार। जो याद में रहते हैं उनका यादगार जरूर बनता है।



सभी देवतायें पूजनीय तो हैं, फिर भी नम्बरवार जरूर हैं। किन देवताओं की पूजा विधिपूर्वक और नियमित रूप से होती है और किन्हीं की पूजा विधिपूर्वक नियमित रूप से नहीं होती। किन्हीं के हर कर्म की पूजा होती है और किन्हीं के हर कर्म की पूजा नहीं होती है। कोई का विधिपूर्वक हर रोज श्रृंगार होता है और कोई का श्रृंगार रोज नहीं होता है, ऊपर-ऊपर से थोड़ा-बहुत सजा लेते हैं लेकिन विधिपूर्वक नहीं। कोई के आगे सारा समय कीर्तन होता और कोई के आगे कभी-कभी कीर्तन होता है। इन सभी का कारण क्या है? ब्राह्मण तो सभी कहलाते हैं, ज्ञान-योग की पढ़ाई भी सभी करते हैं, फिर भी इतना अन्तर क्यों? धारणा करने में अन्तर है। फिर भी विशेष कौन-सी धारणाओं के आधार पर नम्बरवन होते हैं, जानते हो? पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के ऊपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते हैं, उतना ही सर्व प्रकार के पूजनीय बनते हैं और जो निरन्तर विधिपूर्वक आदि, अनादि विशेष गुण के रूप से पवित्रता को सहज अपनाते हैं, वही विधिपूर्वक पूज्य बनते हैं। सर्व प्रकार की पवित्रता क्या है? जो आत्मायें सहज, स्वतः हर संकल्प में, बोल में, कर्म में सर्व अर्थात् ज्ञानी और अज्ञानी आत्मायें, सर्व के सम्पर्क में सदा पवित्र वृत्ति, दृष्टि, वायब्रेशन से यथार्थ सम्पर्क-सम्बन्ध निभाते हैं - इसको ही सर्व प्रकार की पवित्रता कहते हैं। स्वप्न में भी स्वयं के प्रति या अन्य कोई आत्मा के प्रति सर्व प्रकार की पवित्रता में से कोई कमी न हो। मानो स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है वा किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, आवेशता के

वश कर्म होता या बोल निकलता है, क्रोध के अंश रूप में भी व्यवहार होता है तो इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। सोचो, जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा! इसलिए खण्डित मूर्ति कभी पूजनीय नहीं होती। खण्डित मूर्तियाँ मन्दिरों में नहीं रहतीं, आजकल के म्यूजियम में रहती हैं। वहाँ भक्त नहीं आते। सिर्फ यही गायन होता है कि बहुत पुरानी मूर्तियाँ हैं, बस। उन्होंने स्थूल अंगों के खण्डित को खण्डित कह दिया है लेकिन वास्तव में किसी भी प्रकार की पवित्रता में खण्डन होता है तो वह पूज्य-पद से खण्डित हो जाते हैं। ऐसे, चारों प्रकार की पवित्रता में खण्डन होता है तो पह पूज्य-पद से खण्डित हो जाते हैं। ऐसे, चारों प्रकार की पवित्रता विधिपूर्वक है तो पूजा भी विधिपूर्वक होती है। मन, वाणी, कर्म (कर्म में सम्बन्ध सम्पर्क आ जाता है) और स्वप्न में भी पवित्रता - इसको कहते हैं - 'सम्पूर्ण पवित्रता'। कई बच्चे अलबेलेपन में आने के कारण, चाहे बड़ों को, चाहे छोटों को, इस बात में चलाने की कोशिश करते हैं कि मेरा भाव बहुत अच्छा है लेकिन बोल निकल गया, वा मेरी एम (लक्ष्य) ऐसे नहीं थी लेकिन हो गया, या कहते हैं कि हंसी-मजाक में कह दिया अथवा कर लिया। यह भी चलाना है। इसलिए पूजा भी चलाने जैसी होती है। यह अलबेलापन सम्पूर्ण पूज्य स्थिति को नम्बरवार में ले आता है। यह भी अपवित्रता के खाते में जमा होता है। सुनाया ना - पूज्य, पवित्र आत्माओं की निशानी यही है - उन्हीं की चारों प्रकार की पवित्रता स्वभाविक, सहज और सदा होगी। उनको सोचना नहीं पड़ेगा लेकिन पवित्रता की धारणा स्वतः ही यथार्थ संकल्प, बोल, कर्म और स्वप्न लाती है। यथार्थ अर्थात् एक तो युक्तियुक्त, दूसरा यथार्थ अर्थात् हर संकल्प में अर्थ होगा, बिना अर्थ नहीं होगा। ऐसे नहीं कि ऐसे में बोल दिया, निकल गया, कर लिया, हो गया। ऐसी पवित्र आत्मा सदा हर कर्म में अर्थात् दिनचर्या के हर कर्म में यथार्थ युक्तियुक्त रहती है। इसलिए पूजा भी उनके हर कर्म की होती है अर्थात् पूरे दिनचर्या की होती है। उठने से लेकर सोने तक भिन्न-भिन्न कर्म के दर्शन होते हैं। अगर ब्राह्मण जीवन की बनी हुई दिनचर्या प्रमाण कोई भी कर्म यथार्थ वा निरन्तर नहीं करते तो उसके अन्तर के कारण पूजा में भी अन्तर पड़ेगा। मानो कोई अमृतवेले उठने की दिनचर्या में विधिपूर्वक नहीं चलते, तो पूजा में भी उनके पुजारी भी उस विधि में नीचे-ऊपर

करते अर्थात् पुजारी भी समय पर उठकर पूजा नहीं करेगा, जब आया तब कर लेगा। अथवा अमृतवेले जागृत स्थिति में अनुभव नहीं करते, मजबूरी से वा कभी सुस्ती, कभी चुस्ती के रूप में बैठते तो पुजारी भी मजबूरी से या सुस्ती से पूजा करेंगे, विधिपूर्वक पूजा नहीं करेंगे। ऐसे हर दिनचर्या के कर्म का प्रभाव पूजनीय बनने में पड़ता है। विधिपूर्वक न चलना, कोई भी दिनचर्या में ऊपर-नीचे होना - यह भी अपवित्रता के अंश में गिनती होता है। क्योंकि आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह विकार है। तो अपवित्रता का अंश हो गया ना। इस कारण पूज्य पद में नम्बरवार हो जाते हैं। तो फाउण्डेशन क्या रहा? - पवित्रता।



पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो या स्पष्ट है कि क्या बनोगे। और कौनसी राजधानी में? लक्ष्मी-नारायण भी किस नम्बर में? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम-रूप-देश-काल यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है किस नाम से, किस रूप से और किस समय, पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे। दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे! यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी। बापदादा जब भी किसी को देखते हैं तो तीनों को देखते हैं। पहले क्या था अब क्या है फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं। तो एक-एक दीप में यह तीनों काल देखते हैं। आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो। पहले क्या थे और अब क्या है लेकिन भविष्य में क्या होना है, उसको जितना-जितना योग-युक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट जान जायेंगे। जैसे वर्तमान स्पष्ट है। वर्तमान में कभी भी संकल्प नहीं उठता है कि है या नहीं है। ना मालूम क्या है यह कभी संकल्प नहीं उठेगा। इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा। ऐसा स्पष्ट नशा हर एक की बुद्धि में नम्बरवार आता जायेगा। जैसे साकार रूप में माँ-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था। नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था। इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे? वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा। अभी दिल में थोड़ा बहुत किस-किस को आ सकता है। लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चय बुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है। अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करे या न करे। लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन, आपकी तदबीर जो है वह

आपके भविष्य तस्वीर को प्रसिद्ध करेगी। अब तदबीर और भविष्य में कुछ फर्क है। लेकिन जैसे- जैसे समय और आपका पुरुषार्थ समान होता जायेगा तो फिर कोई को संकल्प नहीं उठेगा। दीपमाला पर क्या करते हैं? एक दीप से अनेक दीप जगाते हैं तो अनेकों का एक के साथ लगन लगता है, यही दीपमाला है। अगर एक-एक दीपक की एक दीपक के साथ लगन है तो यही दीपमाला है। दीपक में क्या है? अग्नि। तो लगन होगी तो अग्नि भी होगी। लगन नहीं तो अग्नि भी नहीं। यही देखना है कि हम दीपक लगन लगाकर अग्नि बने हैं? दीपक कितने प्रकार के होते हैं? जो दुनिया में भी प्रसिद्ध है? (हरेक ने अपना- अपना विचार सुनाया) एक है अंधियारे को मिटाकर रोशनी करने वाला मिट्टी का स्थूल दीपक और दूसरा है आत्मा का दीपक, तीसरा है कुल का दीपक और चौथा कौन-सा है? आशाओं का दीपक कहते हैं ना। बाप को बच्चों में आशा रहती है। तो चौथा है आशाओं का दीपक। यह चार प्रकार के दीपक गाये जाते हैं। अब इन चार दीपकों से हरेक ने कितने दीपक जगाये हैं? बापदादा की आशायें जो बच्चों में रहती हैं - वह दीपक जगाया है? मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं। आत्मा का दीपक जगा है? यह चारों प्रकार के दीपक जब जग जाते हैं तब समझो दीपमाला मनाई। ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का दीपक बुझ जाये। ऐसी कोई चलन न हो जो बापदादा बच्चों में आशाओं का दीपक जगाते वह बुझ जाये। एकरस और अटल-अडोल यह सभी दीपक जग रहे हनी? जिसका दीपक खुद जगा हुआ होगा वह औरों का दीपक जगाने बिगर रह नहीं सकता। बापदादा की बच्चों में मुख्य आशायें कौन सी रहती हैं? बापदादा की हर एक बच्चे में यही आशा रहती है कि एक-एक बच्चा पहले नम्बर में जाये अर्थात् हरेक विजयी रत्न बने। विजयी रत्न की निशानियाँ क्या होगी? जो आप सभी ने सुनाया वह तो जो सुना है वही बोला। इसलिए ठीक ही है। जो विजयी होगा उनके लक्षण तो आप सभी ने सुनाये लेकिन साथ-साथ विजयी उनको कहा जाता है - जो खुद तो विजय प्राप्त किया हुआ हो लेकिन औरों को भी अपने से आगे विजयी बनाये। जैसे बापदादा बच्चों को अपने से भी आगे रखते थे ना! वैसे ही जो विजयी रत्न होंगे उनकी विजय की निशानी यह है कि वह अपने संग का रंग सभी को लगायेंगे। जो भी सामने आये वह विजयी बनकर ही निकले। ऐसे विजयी रत्न विजय माला के किस नम्बर में आते हैं? खुद तो विजयी बने हो लेकिन और भी आपके संग के रंग से विजयी

बन जाये। यही सर्विस रही हुई है। ऐसे नहीं कि कोटों में कोई ही विजयी बनेंगे। लेकिन जो जैसा होता है वैसा ही बनाता है। ऐसे विजयी रत्न जो अनेकों को विजयी बना सके वही माला के मुख्य मणके हैं। तो विजयी की निशानी है आप समान विजयी बनाना। अभी यह सर्विस रही हुई है। अनेकों को विजयी बनाना है सिर्फ खुद को नहीं बनाना है। दीपमाला में पूरी दीपमाला जगी हुई होती है। जब दीपमाला कहा जाता है तो अनेक जगे हुए दीपकों की माला हरेक ने गले में डाली है? ऐसे जगे हुए दीपकों की माला हरेक रत्न और गले में जब डालेंगे तब विजय का नगाड़ा बजेगा। जैसे दिव्य गुणों की माला अपने में डाली है जैसे अनेक जगे हुए दीपकों की माला अपने गले में डालना है। जितनी यहाँ दीपकों की माला अपने गले में डालोगे उतनी वहाँ प्रजा बनेगी। कोई-कोई माला बहुत लम्बी-चौड़ी होती है। कोई सिर्फ गले में पहनने तक होती है।



सदा शुभ चिन्तक बन शुभ भावना, शुभ कामना की मानसिक सेवा से भी सभी को सुख-शान्ति की अंचली देने वाले हो ना! अकाले मृत्यु वाली आत्माओं को, अकाल मूर्त बन शान्ति और शक्ति का सहयोग देने वाले हो ना! क्योंकि वर्तमान समय सीजन ही अकाले मृत्यु की है। जैसे वायु का, समुद्र का तूफान अचानक लगता है, ऐसे यह अकाल मृत्यु का भी तूफान अचानक और तेजी से एक साथ अनेकों को ले जाता है। यह अकाले मृत्यु का तूफान अभी तो शुरू हुआ है। विशेष भारत में सिविल वार और प्राकृतिक आपदायें ये ही हर कल्प परिवर्तन के निमित्त बनते हैं। विदेश की रूप रेखा अलग प्रकार की है। लेकिन भारत में यही दोनों बातें विशेष निमित्त बनती हैं। और दोनों की रिहर्सल देख रहे हो। दोनों ही साथ-साथ अपना पार्ट बजा रहे हैं। बच्चों ने पूछा कि एक ही समय इकट्ठा मृत्यु कैसे और क्यों होता? इसका कारण है। यह तो जानते हो और अनुभव करते हो कि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। सभी आत्माओं का, द्वापरयुग वा कलियुग से किए हुए विकर्मों वा पापों का खाता जो भी रहा हुआ है वह अभी पूरा ही समाप्त होना है। क्योंकि सभी को अब वापस घर जाना है। द्वापर से किये हुए कर्म वा विकर्म दोनों का फल अगर एक जन्म में समाप्त नहीं होता तो दूसरे जन्मों में भी चुक्तू का वा प्राप्ति का हिसाब चलता आता है। लेकिन अभी लास्ट समय है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए अब जल्दी-जल्दी जन्म और जल्दी-जल्दी मृत्यु - इस सजा द्वारा

अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। तो वर्तमान समय मृत्यु भी दर्दनाक और जन्म भी मैजारिटी का बहुत दुःख से हो रहा है। न सहज मृत्यु न सहज जन्म है। तो दर्दनाक मृत्यु और दुःखमय जन्म यह जल्दी हिसाब-किताब चुकू करने का साधन है। जैसे इस पुरानी दुनिया में चीटियाँ, चीटें, मच्छर आदि को मारने के लिए साधन अपनाये हुए हैं। उन साधनों द्वारा एक ही साथ चीटियाँ वा मच्छर वा अनेक प्रकार के कीटाणु इकट्ठे हो विनाश हो जाते हैं ना। ऐसे आज के समय मानव भी मच्छरों, चीटियों सदृश्य अकाले मृत्यु के वश हो रहे हैं। मानव और चींटियों में अन्तर ही नहीं रहा है। यह सब हिसाबकिताब और सदा के लिए समाप्त होने के कारण इकट्ठा अकाले मृत्यु का तूफान समय प्रति समय आ रहा है। वैसे धर्मराजपुरी में भी सजाओं का पार्ट अन्त में नूँधा हुआ है। लेकिन वह सजायें सिर्फ आत्मा अपने आप भोगती और हिसाब-किताब चुकू करती है। लेकिन कर्मों के हिसाब अनेक प्रकार में भी विशेष तीन प्रकार के हैं - एक हैं आत्मा को अपने आप भोगने वाले हिसाब। जैसे - बीमारियाँ। अपने आप ही आत्मा तन के रोग द्वारा हिसाब चुकू करती है। ऐसे और भी दिमाग कमजोर होना वा किसी भी प्रकार की भूत प्रवेशता। ऐसे ऐसे प्रकार की सजाओं द्वारा आत्मा स्वयं हिसाब-किताब भोगती है। दूसरा हिसाब है - सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा दुःख की प्राप्ति। यह तो समझ सकते हो ना कि कैसे है! और तीसरा है - प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुकू होना। तीनों प्रकार के आधार से हिसाब-किताब चुकू हो रहे हैं। तो धर्मराजपुरी में सम्बन्ध और सम्पर्क द्वारा हिसाब वा प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुकू नहीं होगा। वह यहाँ साकार सृष्टि में होगा। सारे पुराने खाते सभी के खत्म होने ही हैं। इसलिए यह हिसाब-किताब चुकू की मशीनरी अब तीव्रगति से चलनी ही है। विश्व में यह सब होना ही है। समझा! यह है कर्मों की गति का हिसाब-किताब। अब अपने आप को चेक करो - कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का तीव्रगति के तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सब पुराने हिसाब-किताब चुकू हुए हैं वा अभी भी कुछ बोझ रहा हुआ है? पुराना खाता अभी कुछ रहा हुआ है वा समाप्त हो गया है? इसकी विशेष निशानी जानते हो? श्रेष्ठ परिवर्तन में वा श्रेष्ठ कर्म करने में कोई भी अपना स्वभाव-संस्कार विघ्न डालता है वा जितना चाहते हैं, जितना सोचते हैं उतना नहीं कर पाते हैं, और यही बोल निकलते वा संकल्प मन में चलते कि न चाहते भी पता नहीं क्यों हो जाता है। पता नहीं क्या हो जाता है? वा स्वयं की चाहना श्रेष्ठ होते, हिम्मत हुल्लास होते भी परवश अनुभव करते हैं, कहते हैं ऐसा करना तो नहीं था, सोचा

नहीं था लेकिन हो गया। इसको कहा जाता है स्वयं के पुराने स्वभाव-संस्कार के परवश। वा किसी संगदोष के परवश वा किसी वायुमण्डल वायुब्रेशन के परवश। यह तीनों प्रकार के परवश स्थितियाँ होती हैं तो न चाहते हुए होना, सोचते हुए न होना वा परवश बन सफलता को प्राप्त न करना - यह निशानी है पिछले पुराने खाते के बोझ की। इन निशानियों द्वारा अपने आपको चेक करो - किसी भी प्रकार का बोझ उड़ती कला के अनुभव से नीचे तो नहीं ले आता। हिसाब चुकू अर्थात् हर प्राप्ति के अनुभवों में उड़ती कला। कब-कब प्राप्ति है। कब है तो अब रहा हुआ है। तो इसी विधि से अपने आपको चेक करो। दुःखमय दुनिया में तो दुःख की घटनाओं के पहाड़ फटने ही हैं। ऐसे समय पर सेफ्टी का साधन है ही - 'बाप की छत्रछाया'।



आप सभी दीपरानियाँ दीपकों के राजा से लग्न लगाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हों वा सभी सच्ची सीतायें एक राम बाप के सदा साथ रहने वाली हो। इसलिए दीपकों के मालिक दीपराजा के साथ-साथ आप दीपकों का भी माला के रूप में गायन हो रहा है। लेकिन दीपमाला के पहले, एक दीपराज बड़े दीपक में जगाते हैं। एक दीपक से आप अनेक दीपक जगमगाते हो। तो यह आप सभी का यादगार आज दिन तक भी मनाया जा रहा है। दीपमाला को देख क्या दिल में आता है? यह उमंग आता है कि मुझ दीपक का यह यादगार है? सिर्फ चमक देख खुश होते हो या अपना यादगार समझ खुशी होती है? अपने को उसमें देखते हो? जानते हो कि मैं भी दीपक इस माला में हूँ? जानते हो, यह दीपमाला, माला के रूप में क्यों दिखाते हैं? दीप दिवस नहीं कहते, दीपमाला दिवस कहते हैं। क्योंकि आप सभी विशेष आत्माओं के संगठन का यह यादगार है। माला तब सजती है जब अनेक दीपक संगठित रूप में हों। अगर एक वा दो दीपक जगा दें तो माला नहीं कहेंगे। तो दीपमाला अविनाशी, अनेक जगे हुए दीपकों का यादगार है। तो अपना दिन मना रहे हो। एक तरफ चैतन्य दीपक के रूप में जगमगाते हुए विश्व को दिव्य रोशनी दे रहे हो, दूसरे तरफ अपना यादगार भी देख रहे हो। देख-देख हर्षित होते हो ना? यह दीपकों के रूप में क्यों दिखाया है? क्योंकि आप चमकती हुई आत्मायें दीपक की लौ मिसल दिखाई देती, इसलिए चमकती हुई आत्मायें, दिव्य ज्योति का यादगार रूप है। एक तरफ निराकारी आत्मा के रूप का यादगार रूप है, दूसरी तरफ आप ही के भविष्य साकार दिव्य


स्वरूप लक्ष्मी के रूप में यादगार है। यही दीपमाला देव-पद प्राप्त करती है। इसलिए, निराकार और साकार - दोनों रूपों का साथ-साथ यादगार है। तो डबल रूप का यादगार दीपमाला है। लक्ष्मी का यादगार डबल रूप में एक तरफ धन-देवी अर्थात् दाता का रूप संगमयुग का यादगार है जो सदैव धन देते रहते हैं। यह संगमयुग पर अविनाशी धन-देवी के रूप में चित्र दिखाया जाता है। सतयुग में तो कोई लेने वाला ही नहीं होगा तो देंगे किसको? यह संगमयुग के श्रेष्ठ कर्तव्य की निशानी है। और दूसरे तरफ ताजपोशी दिवस के रूप में मनाया जाता है। ताजपोशी भविष्य की निशानी है और धन-देवी संगमयुग के दाता रूप की निशानी है। दोनों ही युग को मिला दिया है। क्योंकि संगमयुग छोटा-सा युग है। लेकिन जितना छोटा है उतना महान है। सर्व महान कर्तव्य, महान स्थिति, महान प्राप्ति, महान अनुभव इस छोटे से युग में होते हैं। बहुत प्राप्तियाँ, बहुत अनुभव होते और संगमयुग के बाद सतयुग जल्दी आता है, इसलिए संगमयुग और सतयुग के चित्र और चरित्र मिला दिये हैं। चित्र सतयुग का, चरित्र संगम का दे देते हैं। इसी प्रकार यह दीपमाला भी आपके डबल रूप, डबल समय का यादगार हो गया है। जो दीपमाला में विधि रखते हैं, वह भिन्नभिन्न विधियाँ भी मिक्स कर दी हैं। एक तरफ अपने पुराने खाते समाप्त कर नया बनाते हैं, दूसरे तरफ दीपमाला में नये वस्त्र भी विधिपूर्वक पहनते हैं। तो पुराना हिसाब-किताब चुक्तु करना और नया खाता आरम्भ करना - यह संगमयुग का यादगार है। पुराना सब भूल जाते हो, नया जन्म, नया सम्बन्ध, नया कर्म - सब परिवर्तन करते हो। नया वस्त्र अर्थात् नया शरीर सतयुग की निशानी है। संगमयुग पर नया शरीर नहीं मिलता है, पुराने वस्त्र में ही रहते हो। तो दोनों ही समय की विधियों को मिक्स कर दिया है। गोल्डन वस्त्र अर्थात् सतोप्रधान शरीर भविष्य में धारण करेंगे। अभी तो चत्ती वाले शरीर हैं। आपरेशन में सिलाई करते हैं ना। बड़े-बड़े आपरेशन में एक तरफ का मांस निकाल दूसरे तरफ लगाते हैं, तो चत्ती लगाई ना। पुराने की निशानी है सिलाई होना। तो यह हैं चत्ती वाले वस्त्र और भविष्य में गोल्डन नया वस्त्र मिलेगा। तो आपके नये वस्त्र धारण करने का यादगार है। देव-आत्मा बन नया वस्त्र अर्थात् नया शरीर, सुनहरी अर्थात् सोने तुल्या। आज की दुनिया में तो लोग बन नहीं सकते। इसलिए यादगार रूप में स्थूल नये वस्त्र पहन खुश हो जाते हैं। वह एक दिन के लिए खुशी मनायेंगे, करके 3 दिन भी मनावें लेकिन आप तो अविनाशी मनाते हो ना। ऐसा मनाते हो जो

यह संगमयुग का मनाना अनेक जन्म मनाते ही रहेंगे। सदा ही जगमगाते दीपक जगते ही रहेंगे। पहले फिर भी विधिपूर्वक दीपक जगाते थे जिससे सदा दीपक जगता रहे, बुझे नहीं - यह ध्यान रखते थे। घृत डालते थे, विधिपूर्वक आह्वान के अभ्यास में रहते थे। अभी तो दीपक के बजाए बल्ब जगा देते हैं। दीपमाला नहीं मनाते, अब तो मनोरंजन हो गया है। वह आह्वान की विधि अथवा साधना समाप्त हो गई है। स्नेह समाप्त हो अभी सिर्फ स्वार्थ रह गया है। धन बढ़ जाए - इसी स्वार्थ से करते। भावना से नहीं, कामना से करते हैं। पहले फिर भी भावना थी, अभी तो वह भावना, कामना के रूप में बदल गई है। रहस्य समाप्त हो गया और रीति-रस्म रह गई है। इसलिए, यथार्थ दाता रूपधारी लक्ष्मी किसी के पास आती नहीं। धन भी आता है तो काला धन आता है। दैवी-धन नहीं आता, आसुरी धन आता है। लेकिन आप सभी यथार्थ विधि से अपने दैवी पद का आह्वान करते स्वयं देवता या देवी बन जाते हो। तो दीपावली मनाने आये हो ना।

✚ दीपावली के दिन अपने प्रति विशेष अटेन्शन रहा? आज के दिन अपने आत्मा के संस्कारों में सदा के लिए परिवर्तन लाने का विशेष अटेन्शन दिया? जब यादगार रूप में आज का दिन पुराने खाते खत्म करने की रीति रूप में चलता आ रहा है, वह अवश्य प्रैक्टिकल रूप में आप आत्माओं ने किया है तब तो यादगार चलता आया है। तो आज के दिन अपने पुराने संस्कारों का ज़रा भी रहा हुआ खाता खत्म किया? खत्म करने के पहले अपने खाते को चेक किया जाता है, रिजल्ट निकाली जाती है। आज के दिन तक जो भी पुरुषार्थ चला उसकी रिजल्ट अब तक किन बातों में और किस परसेन्टेज में सफलतामूर्त बने? पहले अपने मन्सा संकल्पों को, पोतामेल को चेक करो कि - “अब तक सम्पूर्ण श्रेष्ठ संकल्पों के पुरुषार्थ में कहाँ तक सफलता आई है? व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के ऊपर कहाँ तक विजयी बने हैं और वाणी द्वारा कहाँ तक आत्माओं को बाप का परिचय दे सकते, कितनी आत्माओं को बाप के स्नेही वा सहयोगी बना सकते हैं? वाचा में कहाँ तक रूहानियत वा अलौकिकता वा आकर्षण आई है? ऐसे ही कर्मणा द्वारा सदा न्यारे और प्यारे, अलौकिक, असाधारण कर्म कहाँ तक कर सकते

हैं? कर्मों में कहाँ तक कर्मयोगी का, योगयुक्त, युक्तियुक्त, स्नेहयुक्त रूप लाया है? अपने संस्कारों और स्वरूपों में अर्थात् सूरत में कहाँ तक बाप समान आकर्षण रूप, स्नेही रूप, सहयोगी रूप बने?" ऐसे अपना पोतामेल चेक करने से अब तक जो कमी वा कमजोरी रह गई है उसको समाप्त कर नया खाता शुरू कर सकेंगे। ऐसा अपना पोतामेल चेक करो। इसको कहते हैं दीपावली मनाना अथवा अपने को सम्पूर्ण बनाने का दृढ़ संकल्प करना ही मनाना है। तो ऐसे दीपावली मनाई है कि सिर्फ मिलन मनाया? मिलन मनाने का यादगार माला के रूप में है लेकिन दृढ़ संकल्पों का यादगार दीपक के ज्योति रूप का है। तो दोनों रूप से मनाया? नये वस्त्र पहने? आत्मा को नया चोला किस आधार से मिलता है? संस्कारों के आधार से मिलता है ना। आत्मा के जैसे संस्कार होते हैं उस प्रमाण ही चोला तैयार होता है। तो नया चोला वा नये वस्त्र कौनसे पहनेंगे? आत्मा में नये युग के संस्कार वा नये युग के स्थापक बाप जैसे सम्पूर्ण संस्कारों को धारण करना-यही नये वस्त्र पहनना है। शरीर में नये वस्त्र भले कितने भी पहनो लेकिन आज की पुरानी दुनिया की नई वस्तु भी नई दुनिया के आगे पुरानी है क्योंकि जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं। इसलिए नये वस्त्र पहनो तो भी नये नहीं कहेंगे। सतोप्रधान दुनिया में ही सब-कुछ नया है। तमोप्रधान दुनिया की चीज़ें सभी पुरानी हैं। असार हैं। तो उनको नया कहेंगे क्या? तो नया वस्त्र अर्थात् अपनी आत्मा के नये संस्कार, श्रेष्ठ संस्कार धारण करना है। और क्या करेंगे? जब नये संस्कार धारण कर लिए हैं तो पोतामेल रखने से पोताई हो जायेगी ना। तो पोतामेल रखना - यही पोताई अर्थात् सफाई, स्वच्छता है। तो जब ऐसा पोतामेल चेक करेंगे तो जो भी कमजोरी होगी वह स्वतः ही खत्म हो जायेगी। एक-दो में अपने मधुर बोल से लेन-देन क्या करेंगे? जैसे दीपावली पर एक-दो से खर्चा लेते हैं ना। आप लोग एक-दो में कौनसी खर्ची देंगे। आपके पास कौनसी चीज़ है जो एक दो को खर्चा देंगे? (स्नेह की खर्चा) स्नेही तो एक-दो के सदा के लिए हो, कि आज के दिन खास स्नेही बनेंगे? स्नेही तो हो और इसी स्नेह की निशानी, एक-दो के समीपता की निशानी दीपमाला कहा जाता है। विशेष दिनों पर विशेष खर्चा कौनसी देनी है? जो अब तक अपने पुरुषार्थ द्वारा सहज सफलता प्राप्त हुई हो वा अनुभव हुआ हो, ऐसा अपने अनुभव का ज्ञान-रत्न, जिस द्वारा

प्रैक्टिकल अनुभवी बन अनुभवी बना सकते हो, ऐसा रत्न एक-दो को खर्चा के रूप में विशेष रूप से देना चाहिए। समझा? बाप के खज़ाने को अपने अनुभव द्वारा जो अपना बनाया ऐसा अपना बनाया हुआ ज्ञान-रत्न एक दो को देना चाहिए, जिससे वह आत्मा भी इससे सहज अनुभवी बन जाये। यह है खर्चा। तो एक-दो को ऐसी खर्चा देनी चाहिए जो सदा के लिए याद रूप बन जाए। जब ऐसा रत्न किसको देंगे तो सदा के लिए उस आत्मा को बाप के साथ आपके दिये हुए रत्न की याद ज़रूर रहेगी। तो किसको सदा के लिए सम्पन्न करने वाली खर्चा देनी चाहिए। ऐसी दीपावली मनाओ और ऐसे ही श्रेष्ठ आत्मा बन अन्य आत्माओं की श्रेष्ठ सेवा करो। आज के दिन सर्व आत्माएं धन के प्यासी हैं। तो ऐसी प्यासी आत्माओं को ऐसा रूहानी धन दो जिससे कभी भी आत्मा को धन मांगने की आवश्यकता ही न रहे। धन कौन मांगते हैं? भिखारी। आज के दिन आत्मा भिखारी बनती है। रॉयल भिखारी कहो। कितने भी करोड़पति हों, लेकिन आज के दिन भिखारी बनते हैं। ऐसी भिखारी आत्मा को भिखारीपन से छुड़ाओ, यह है बेहद की सेवा। दाता के बच्चे हो ना। तो दाता के बच्चे, वरदाता के बच्चे, अपने वरदान की शक्ति से, ज्ञान-दान की शक्ति से भिखारियों को मालामाल बनाओ। आज के दिन इन भिखारी आत्माओं के ऊपर विधाता और वरदाता के बच्चों को तरस पड़ना चाहिए। जिन आत्माओं को ऐसा तरस पड़ता है, उन्हीं को ही माया और विश्व की ऐसी आत्माएं नमस्कार करती हैं। इसलिए अब तक भी दीपक जगाते हैं। जब लाइट जलाते हैं तो नमस्कार ज़रूर करते हैं। तो ऐसी ज्योति जगी हुई आत्माओं की यादगार अभी तक भी कायम है। बुझे हुए दीपक को नमस्कार नहीं करते।

 सभी मधुवन महान तीर्थ पर मेला मनाने के लिए चारों ओर से पहुँच गये हैं। इसी महान तीर्थ के मेले की यादगार अभी भी तीर्थ स्थानों पर मेले लगते रहते हैं। इसी समय का हर श्रेष्ठ कर्म का यादगार चरित्रों के रूप में, गीतों के रूप में अभी भी देख और सुन रहे हो। चैतन्य श्रेष्ठ आत्मायें अपना चित्र और चरित्र देख सुन रही हैं। ऐसे समय पर बुद्धि में क्या श्रेष्ठ संकल्प चलता है? समझते हो ना कि हम ही थे, हम ही अब हैं। और कल्प-कल्प हम ही फिर होंगे। यह “फिर से”

की स्मृति और नालेज और किसी भी आत्मा को, महान आत्मा को, धर्म आत्मा को वा धर्म पिता को भी नहीं है। लेकिन आप सब ब्राह्मण आत्माओं को इतनी स्पष्ट स्मृति है वा स्पष्ट नालेज है जैसे 5000 वर्ष की बात कल की बात, है। कल थे आज हैं फिर कल होंगे। तो आज और कल इन दोनों शब्दों में 5000 वर्ष का इतिहास समाया हुआ है। इतना सहज और स्पष्ट अनुभव करते हो! कोई होंगे वा हम ही थे, हम ही हैं! जड़ चित्रों में अपने चैतन्य श्रेष्ठ जीवन का साक्षात्कार होता है? वा समझते हो कि यह महारथियों के चित्र हैं, वा आप सबके हैं? भारत में 33 करोड़ देवताओं को नमस्कार करते हैं अर्थात् आप श्रेष्ठ ब्राह्मण सो देवताओं के वंश के भी वंश, उनके भी वंश, सभी का पूजन नहीं तो गायन तो करते ही हैं। तो सोचो जो स्वयं पूर्वज हैं उनहों का नाम कितना श्रेष्ठ होगा! और पूजन भी पूर्वजों का कितना श्रेष्ठ होगा। 9 लाख का भी गायन है। उससे आगे 16 हजार का गायन है फिर 108 का है फिर 8 का है। उससे आगे युगल दाने का है। नम्बरवार हैं ना! गायन तो सभी का है क्योंकि जो भाग्य विधाता बाप के बच्चे बने, इस भाग्य के कारण उन्हों का गायन और पूजन दोनों होता है लेकिन पूजन में दो प्रकार का पूजन है। एक है प्रेम की विधि पूर्वक पूजन और दूसरा है सिर्फ नियम पूर्वक पूजन। दोनों में अन्तर हैं ना। तो अपने से पूछो, मैं कौन सी पूज्य आत्मा हूँ? पहले भी सुनाया था कि कोई-कोई भक्त, देवता नाराज न हो जाए इस भय से पूजा करते हैं। और कोई-कोई भक्त दिखावा मात्र भी पूजा करते हैं। और कोई-कोई समझते हैं भक्ति का नियम वा फर्ज निभाना है। चाहे दिल हो या न हो लेकिन निभाना है। ऐसे फर्ज समझ करते हैं। चारों ही प्रकार के भक्त किसी न किसी प्रकार से बनते हैं। यहाँ भी देखो देव आत्मा बनने वाले, ब्रह्माकुमार कुमारी कहलाने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं ना। नम्बरवन पूज्य सदा सहज स्नेह से और विधि पूर्वक याद और सेवा वा योगी आत्मा, दिव्यगुण धारण करने वाली आत्मा बन चल रहे हैं। चार सबजेक्ट द्वारा विधि और सिद्धि प्राप्त किये हुए हैं। दूसरे नम्बर के पूज्य विधि पूर्वक नहीं लेकिन नियम समझ करके करेंगे चार ही सबजेक्ट पूरे लेकिन विधि सिद्धि के प्राप्ति स्वरूप हो करके नहीं। लेकिन नियम समझकर चलना ही है, करना ही है, इसी लक्ष्य से जितना कायदा उतना फायदा प्राप्त करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। वह दिल का स्नेह स्वतः और सहज बनाता है। और नियम पूर्वक वालों को कभी सहज कभी मुश्किल लगता। कभी मेहनत करनी पड़ती और

कभी मुहब्बत की अनुभूति होती। नम्बरवन लवलीन रहते, नम्बर दो लव में रहते। नम्बर तीसरा मैजारिटी समय चारों ही सबजेक्ट दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र करते हैं। याद में भी बैठेंगे - नामीग्रामी बनने के भाव से। ऐसे दिखावा मात्र सेवा भी खूब करेंगे। जैसा समय वैसा अल्पकाल का रूप भी धारण कर लेंगे लेकिन दिमाग तेज और दिल खाली। नम्बर चौथा सिर्फ डर के मारे कोई कुछ कह न दे कि यह तो है ही लास्ट नम्बर का वा यह आगे चल नहीं सकता, ऐसे कोई इस नजर से नहीं देखे। ब्राह्मण तो बन ही गये और शूद्र जीवन भी पसन्द नहीं और ब्राह्मण जीवन में विधि पूर्वक चलने की हिम्मत नहीं इसलिए मजबूरी मजधार में आ गये। ऐसे मजबूरी वा डर के मारे चलते ही रहते। ऐसे कभी-कभी अपने श्रेष्ठ जीवन का अनुभव भी करते हैं इसलिए इस जीवन को छोड़ भी नहीं सकते। ऐसे को कहेंगे चौथे नम्बर का पूज्य आत्मा। तो उन्हीं की पूजा कभी-कभी और डर के मारे मजबूरी भक्त बन निभाना है, इसी प्रमाण चलती रहती। और दिखावा वाले की भी पूजा दिल से नहीं लेकिन दिखावा मात्र होती। इसी प्रमाण चलते रहते। तो चार ही प्रकार के पूज्य देखे हैं ना! जैसा अभी स्वयं बनेंगे वैसे ही सतयुग त्रेता की रॉयल फैमिली वा प्रजा उसी नम्बर प्रमाण बनेगी और द्वापर कलियुग में ऐसे ही भक्त माला बनेगी। अभी अपने आप से पूछो - मैं कौन! वा चारों में ही कभी कहाँ कभी कहाँ चक्र लगाते हो? फिर भी भाग्य विधाता के बच्चे बने, पूज्य तो जरूर बनेंगे। नामीग्रामी अर्थात् श्रेष्ठ, पूज्य 16 हजार तक नम्बरवार बन जाते हैं। बाकी 9 लाख लास्ट समय तक अर्थात् कलियुग के पिछाड़ी के समय तक थोड़े बहुत पूज्य बन जाते हैं। तो समझा गायन तो सबका होता है। गायन का आधार है - भाग्य विधाता बाप का बनना। और पूजन का आधार है - चारों सबजेक्ट में पवित्रता, स्वच्छता, सच्चाई, सफाई। ऐसे पर बापदादा भी सदा स्नेह के फूलों से पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और पूजन अर्थात् श्रेष्ठ मानते हैं। परिवार भी श्रेष्ठ मानते हैं और विश्व भी वाह-वाह के नगाड़े बजाए उन्हीं की मन से पूजा करेगा। और भक्त तो अपना ईष्ट समझ दिल में समायेंगे। तो ऐसे पूज्य बने हो? जब है ही परमपिता। सिर्फ पिता नहीं है लेकिन परम है तो बनायेंगे भी परम ना! पूज्य बनना बड़ी बात नहीं है लेकिन परम पूज्य बनना है।

✚ आज यह संगठन ज्ञानी तू आत्माओं का है। ऐसी ज्ञानी तू आत्मायें, अथवा योगी आत्मायें बापदादा को भी अति प्रिय है और विश्व में भी अति प्रिय हैं। ऐसी ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का भक्ति मार्ग में गायन और पूजन चलता रहता है। वर्तमान समय में भी वह आत्मायें पूजनीय और गायन-योग्य है। पूजनीय अर्थात् ऊंची आत्मायें और गायन-योग्य आत्माएँ - ऐसी आत्माओं के गुणों का गायन व वर्णन अब भी सब करते हैं। भविष्य के गायन और पूजन का आधार वर्तमान पर है। भविष्य में अर्थात् भक्ति में कौन कितने गायन और पूजने योग्य बनेंगे, उसका बुद्धि-बल द्वारा साक्षात्कार हर कोई अभी कर सकता है। हर- एक अपने आपको देखे कि इस समय भी मुझ आत्मा को सर्व-आत्मायें अर्थात् जो सम्पर्क में आने वाली हैं, अपने ब्राह्मण कुल की आत्मायें हैं और साथ-साथ अज्ञानी आत्मायें भी जो सम्पर्क में आती हैं, तो वे श्रेष्ठ अर्थात् पूज्यता की नजर से देखती है? पूज्य बड़े को भी कहा जाता है। तो सर्व आत्मायें उस नजर से देखती व समझती हैं? अगर अल्प आत्मायें पूज्य अनुभव करती हैं तो वर्तमान का आधार सारे भविष्य पर है। ऐसे ही जो भी आत्मायें साथी बनती हैं व सम्बन्ध में आती हैं, उनको मुझ आत्मा विशेष के गुण अनुभव में आते हैं? अगर किसी आत्मा के गुण अनुभव में आयेंगे तो अब भी वह आत्मायें मन-ही-मन में व वाणी में भी ऐसी आत्माओं के गुणों का गायन अवश्य करेंगी। गुण कोई भी हों वे अपना प्रभाव अवश्य डालते हैं। गुण छुप नहीं सकते। तो ऐसी पूज्य और गुणगान कराने वाली ज्ञानी आत्मायें और योगी आत्माएँ बने हो? अल्प आत्माओं के प्रति अथवा सर्व के प्रति सर्व गुणों का गायन करते हैं अथवा थोड़े-बहुत गुणों का गायन करते हैं? गुणों के गायन का पलड़ा भारी है अथवा साधारण चलन का पलड़ा भारी है? समय-प्रमाण अभी अपने सब सब्जेक्ट्स के खाते को चेक करो कि कहाँ तक जमा किया है व मन, वाणी, कर्म द्वारा कहाँ तक हर सब्जेक्ट को सम्पन्न किया है। सर्व-गुण सम्पन्न बने हैं या गुण-सम्पन्न ही बने हैं? कल्याणकारी बने हैं अथवा विश्व-कल्याणवारी बने हैं? अब अगर चेक करेंगे तो चेक करने के बाद सम्पन्न करने का कुछ समय है। लेकिन कुछ समय के बाद सम्पन्न करने का समय भी समाप्त हो जायेगा। फिर क्या करेंगे? सम्पन्न बनी हुई आत्माओं को देखने वाले बन जायेंगे। सीट लेने वाले नहीं बन सकेंगे। तो साक्षात्कार मूर्त बनना है या साक्षात्कार करने वाला बनना है? इन तीन बातों के आधार से ही विश्व के आगे विश्व-

कल्याणकारी प्रसिद्ध होंगे। उनके स्पष्टीकरण को अच्छी तरह से जानते हो? सर्व-अधिकारी का अर्थ है-सर्व-कर्मेन्द्रियों पर अधिकार। साथ-साथ जैसे इस शरीर की भिन्न-भिन्न शक्तियाँ हाथ, पांव आदि हैं, वैसे ही आत्मा की भी शक्तियाँ हैं - मन, बुद्धि और संस्कार। इन सूक्ष्म शक्तियों पर भी अधिकारी बने हो? अपनी रचना - प्रकृति के ऊपर अधिकारी बने हो? कोई भी प्रकृति के तत्व अपनी तरफ आकर्षित तो नहीं करते हैं? जब साइन्स द्वारा प्रकृति व पृथ्वी के आकर्षण से परे स्टेज पर पहुँच जाते हैं तो मास्टर सर्व-शक्तिवान् प्रकृति के आकर्षण से परे, अर्थात् व्यक्त भाव से परे, अव्यक्त व ऑलमाइटी अथॉरिटी की स्टेज को प्राप्त करना मुश्किल अनुभव करे - यह तो शोभता नहीं। ऐसे ही बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व शक्तियाँ जिनमें से थोड़ा सैम्पल रूप में चित्र भी बना है। तो वर्से में प्राप्त हुई शक्तियाँ अर्थात् स्वयं की जायदाद व प्रॉपर्टी पर अपना अधिकार है। जब चाहो तब किसी भी शक्ति द्वारा स्वयं को सफल बना सको। जैसे स्थूल जायदाद पर अधिकार होने के कारण जिस समय चाहो उस समय उसी वस्तु को काम में लगा सकते हो क्योंकि अपनी जायदाद है। ऐसे ही ईश्वरीय जायदाद को जिस समय चाहो और जिस शक्ति को चाहो उसको काम में लगा सकते हो? इस जायदाद के भी अधिकारी हो? इसको कहा जाता है सर्व-अधिकारी। हर आत्मा के प्रति सदा उपकार अर्थात् शुभ भावना और श्रेष्ठ कामनायें। हर आत्मा को देखते हुए ऐसे अनुभव हो कि यह सर्व-आत्माएँ जैसे कि बाप के हर समय स्नेही और सहयोगी बनने के लिए स्वयं को कुर्बान कर देते हैं। ऐसे कुर्बान करने के निमित्त क्यों बनते? - क्योंकि बाप सब के आगे स्वयं कुर्बान होते हैं। सर्व के सामने स्वयं को सब शक्तियों समेत सेवा में समर्पित किया है। अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को सर्व के प्रति महादानी बन दाता बने। ऐसे फॉलो फादर स्वयं के प्रति नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान करने वाले ही परोपकारी बन सकते हैं। लेने की इच्छा छोड़ देने वाले महादानी ही परोपकारी बन सकते हैं। ऐसे ही सत्कारी सर्व के प्रति सत्कार की भावना हो - सत्कारी बनने के लिए स्वयं को सर्व के सेवाधारी समझना पड़े। सेवाधारी की परिभाषा भी गुह्य है। सिर्फ स्थूल सेवा व वाणी द्वारा सेवा, सम्पर्क द्वारा सेवा, सेलवेशन द्वारा व भिन्न-भिन्न प्रकार के साधनों द्वारा सेवा करना, सिर्फ इतना ही नहीं, अपने हर गुण द्वारा दान करना व दूसरों को भी गुणवान बनाना, स्वयं के संग का रंग चढ़ाना, यह है श्रेष्ठ सेवा। अवगुण को देखते हुए

भी नहीं देखना। स्वयं के गुणों की शक्ति द्वारा अन्य के अवगुणों को मिटा देना अर्थात् निर्बल को बलवान बनाना। निर्बल को देख किनारा नहीं करना है व थक नहीं जाना है। लेकिन होपलेस केस को भी स्वयं की सेवा द्वारा अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो सम्मान देने के द्वारा सर्व के सत्कारी बन सकते हैं। स्वयं के त्याग द्वारा अन्य को सत्कार देते हुए अपना भाग्य बनाना है। छोटा, बड़ा, महारथी व प्यादा सर्व को सत्कार की नजर से देखो। सत्कार न देने वाले को भी सत्कार देने वाला, ठुकराने वाले को भी ठिकाना देने वाला, ग्लानि करने वाले के भी गुणगान करने वाला, ऐसे को कहा जाता है सर्व-सत्कारी।

✚ यह तो मालूम है ना कि सबसे मुख्य अनुभव करने व सुनने का दृश्य किस समय होता है? विशेष बच्चों के प्रति अमृतवेले का समय ही निश्चित है। फिर तो, विश्व की अन्य आत्माओं के प्रति, यथा-शक्ति भावना का फल व कोई भी रजोप्रधान कर्म, अल्पकाल के लिए जिन आत्माओं द्वारा होते रहते हैं उनको भी उनके कर्मों के अनुसार अल्पकाल के लिये फल देने के प्रति, साथ-साथ सच्चे भक्तों की पुकार सुनने और भक्तों की भिन्न-भिन्न प्रकार की भावना के अनुसार साक्षात्कार कराने और अब तक भी चारों ओर कल्प पहले वाले छुपे हुए ब्राह्मण आत्माओं को सन्देश पहुंचाने के लिए, बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में, पुरानी दुनिया को समाप्त कराने-अर्थ निमित्त बने हुए, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सहयोगी बच्चों को, सारे दिन के अन्दर ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में 'हिम्मते बच्चे, मददे बाप' के नियम के अनुसार, उनको भी मदद देने के कर्तव्य में, ड्रामानुसार निमित्त बने हैं। अब समझा कि बाप सारे दिन क्या करते हैं? साकार बाप भी अब अव्यक्त होने के कारण क्विक-स्पीड में निराकार बाप के साथी व सहयोगी सदाकाल के लिए बनने का पार्ट बजा सकते हैं। ब्रह्मा बाबा, अव्यक्त शरीरधारी, शरीर के बन्धन में न होने के कारण, जैसे अब क्विक-स्पीड में बाप-समान साथी बने हैं, वैसे व्यक्त में साथी नहीं बन सकते थे, क्यों नहीं बन सकते थे? कारण क्या है? जो व्यक्त और अव्यक्त रूप में, अन्तर पड़ जाता है कि व्यक्त शरीर में फिर भी व्यक्त शरीर के प्रति, समय देना पड़ता है और कभी-कभी कर्मभोग के प्रति भी,

अपने निमित्त सर्व-शक्तियों को यूज करना पड़ता है। तो व्यक्त शरीर में स्वयं के प्रति, बच्चों के प्रति और विश्व के प्रति इन तीनों में ही, समय देना पड़ता है और व्यक्त शरीरधारी होने के कारण व्यक्त साधनों के आधार पर सर्विस करनी पड़ती है। लेकिन अव्यक्त रूप में स्वयं के प्रति भी साधनों का आधार नहीं लेना पड़ता। इस प्रकार एक तो सम्पूर्ण होने के नाते, सम्पूर्णता की तीव्रगति है, दूसरा स्वयं पर, समय व शक्तियाँ यूज न करने के कारण सेवा में भी तीव्र गति है। तीसरा विनाशी साधनों का आधार न होने के कारण संकल्प की गति भी तीव्र है। संकल्प द्वारा कहीं भी पहुंचने और विनाशी शरीर द्वारा कहाँ पहुंचने में, समय और शक्ति का कितना अन्तर पड़ जाता है! ऐसे ही व्यक्त और अव्यक्त की गति में भी अन्तर है। साइंस वाले, समय को और अपनी एनर्जी अर्थात् मेहनत को, साधनों के विस्तार को, सूक्ष्म और शार्ट कर रहे हैं। कम-से-कम एक सेकेण्ड तक पहुंचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं जैसे विनाश के अर्थ, निमित्त बनी हुई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये ना? तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे। तो अब व्यक्त शरीर में और अव्यक्त शरीर में अन्तर समझा? अव्यक्त होना ड्रामा अनुसार किस सेवा के निमित्त बना हुआ है, क्या इस रहस्य को समझा? ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूँधा हुआ है। जब तक, स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है, तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगत पिता के नये जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। मनुष्य-सृष्टि की सर्व-वंशावली रचने का सिर्फ ब्रह्मा के लिए ही गायन है ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर (Great Great Grand Father) इसीलिये गाया हुआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड) का परिवर्तन हुआ है, लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है। कड़ियों के संकल्प पहुंचते हैं कि इतना समय बाबा क्या कर रहा है? बाप भी प्रश्न पूछते हैं कि क्या ब्रह्मा के साथ ब्राह्मणों का, सर्व-आत्माओं के कल्याण-अर्थ निमित्त बनने का पार्ट व नई सृष्टि की स्थापना का नूँधा हुआ पार्ट समाप्त हुआ है? जब पार्ट समाप्त नहीं हुआ और सृष्टि का परिवर्तन ही नहीं हुआ, तो ब्रह्मा का पार्ट समाप्त कैसे होगा? स्नेह वे कारण

ही संकल्प आता है कि वतन में इतना समय क्या करेंगे? वतन का पार्ट इतना समय क्यों और कैसे, यह संकल्प कब आता है? यह भी एक गुप्त रहस्य है। कर्म-बन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व- सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा, जहाँ चाहे और जितना समय चाहे, वह वहाँ स्वतन्त्र रूप में पार्ट बजा सकती है। जब अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करने वाली आत्माएं, अपनी सिद्धि के आधार पर अपने रूप परिवर्तन कर सकती हैं, तो सर्व-सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा अव्यक्त रूपधारी बन कर, जितना समय चाहे क्या वह उतना समय ड्रामा- अनुसार नहीं रह सकती? आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है? एक कर्मों का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और देह का बन्धन-चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है-तो इन सब के बन्धनों को सोचो। स्थापना के पार्ट का जो बन्धन है, वह व्यक्त से अव्यक्त रूप में और ही तीव्र गति से हो रहा है। इस कल्प के अन्दर अब अन्य देह के आकर्षण का बन्धन नहीं, देहधारी बन कर्म-बन्धनों में आने का बन्धन समाप्त कर लिया। जब सर्व-बन्धनों से मुक्त आत्मा बन गई, तो यह व्यक्त देह व व्यक्त देश आत्मा को खींच नहीं सकते। जैसे साइन्स द्वारा भी स्पेस में चले जाते हैं और धरनी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा स्वतन्त्र है और वह व्यक्त-बन्धनों से मुक्त है।

✚ आज ज्ञान-सूर्य, ज्ञान-चंद्रमा अपने चमकते हुए तारामण्डल को देख रहे हैं। वह आकाश के सितारे हैं और यह धरती के सितारे हैं। वह प्रकृति की सत्ता है, यह परमात्म-सितारे हैं, रूहानी सितारे हैं। वह सितारे भी रात को ही प्रगट होते हैं, यह रूहानी सितारे, ज्ञान-सितारे, चमकते हुए सितारे भी ब्रह्मा की रात में ही प्रगट होते हैं। वह सितारे रात को दिन नहीं बनाते, सिर्फ सूर्य रात

को दिन बनाता है। लेकिन आप सितारे ज्ञान-सूर्य, ज्ञान-चन्द्रमा के साथ साथी बन रात को दिन बनाते हो। जैसे प्रकृति के तारामण्डल में अनेक प्रकार के सितारे चमकते हुए दिखाई देते हैं, वैसे परमात्म-तारामण्डल में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के सितारे चमकते हुए दिखाई दे रहे हैं। कोई समीप के सितारे हैं और कोई दूर के सितारे भी हैं। कोई सफलता के सितारे हैं तो कोई उम्मीदवार सितारे हैं। कोई एक स्थिति वाले हैं और कोई स्थिति बदलने वाले हैं। वह स्थान बदलते, यहाँ स्थिति बदलते। जैसे प्रकृति के तारामण्डल में पुच्छल तारे भी हैं। अर्थात् हर बात में, हर कार्य में “यह क्यों”, “यह क्या” - यह पूछने की पूँछ वाले अर्थात् क्वेश्चन मर्मा करने वाले पुच्छल तारे हैं। जैसे प्रकृति के पुच्छल तारे का प्रभाव पृथ्वी पर भारी माना जाता है, ऐसे बार-बार पूछने वाले इस ब्राह्मण परिवार में वायुमण्डल भारी कर देते हैं। सभी अनुभवी हो। जब स्वयं के प्रति भी संकल्प में ‘क्या’ और ‘क्यों’ का पूँछ लग जाता है तो मन और बुद्धि की स्थिति स्वयं प्रति भारी बन जाती है। साथ-साथ अगर किसी भी संगठन बीच वा सेवा के कार्य प्रति ‘क्यों’, ‘क्या’, ‘ऐसा’, ‘कैसा’,..... - यह क्वेश्चन मर्मा की क्यू का पूँछ लग जाता है तो संगठन का वातावरण वा सेवा क्षेत्र का वातावरण फौरन भारी बन जाता है। तो स्वयं प्रति, संगठन वा सेवा प्रति प्रभाव पड़ जाता है ना। साथ-साथ कई प्रकृति के सितारे ऊपर से नीचे गिरते भी हैं, तो क्या बन जाते हैं? पत्थर। परमात्म-सितारों में भी जब निश्चय, सम्बन्ध वा स्व-धारणा की ऊँची स्थिति से नीचे आ जाते हैं तो पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। कैसे पत्थर बुद्धि बन जाते? जैसे पत्थर को कितना भी पानी डालो लेकिन पत्थर पिघलेगा नहीं, रूप बदल जाता है लेकिन पिघलेगा नहीं। पत्थर को कुछ भी धारण नहीं होता है। ऐसे में जब पत्थर बुद्धि बन जाते तो उस समय कितना भी, कोई भी अच्छी बात महसूस कराओ तो महसूस नहीं करते। कितना भी ज्ञान का पानी डालो लेकिन बदलेंगे नहीं। बातें बदलते रहेंगे लेकिन स्वयं नहीं बदलेंगे। इसको कहते हैं पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। तो अपने आप से पूछो - इस परमात्म-तारामण्डल के सितारों बीच, मैं कौन-सा सितारा हूँ? सबसे श्रेष्ठ सितारा है सफलता का सितारा। सफलता का सितारा अर्थात् जो सदा स्वयं की प्रगति में सफलता को अनुभव करता रहे अर्थात् अपने पुरुषार्थ की विधि में सदैव सहज सफलता अनुभव करता रहे। सफलता के सितारे संकल्प में भी स्वयं के पुरुषार्थ

प्रति भी कभी 'पता नहीं यह होगा या नहीं होगा', 'कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे' - यह असफलता का अंश-मात्र नहीं होगा। जैसे स्लोगन है - सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार है, ऐसे वह स्वयं प्रति सदा सफलता अधिकार के रूप में अनुभव करेंगे। अधिकार की परिभाषा ही है बिना मेहनत, बिना मांगने से प्राप्त हो। सहज और स्वतः प्राप्त हो - इसको कहते हैं अधिकार। ऐसे ही एक - स्वयं प्रति सफलता, दूसरा - अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए, चाहे ब्राह्मण आत्माओं के, चाहे लौकिक परिवार वा लौकिक कार्य के सम्बन्ध में, सर्व सम्बन्ध-सम्पर्क में, सम्बन्ध में आते, सम्पर्क में आते कितनी भी मुश्किल बात को सफलता के अधिकार के आधार से सहज अनुभव करेंगे अर्थात् सफलता की प्रगति में आगे बढ़ते जायेंगे। हाँ, समय लग सकता है लेकिन सफलता का अधिकार प्राप्त होकर ही रहेगा। ऐसे, स्थूल कार्य वा अलौकिक सेवा का कार्य अर्थात् दोनों क्षेत्र के कर्म में सफलता के निश्चयबुद्धि विजयी रहेंगे। कहाँ-कहाँ परिस्थिति का सामना भी करना पड़ेगा, व्यक्तियों द्वारा सहन भी करना पड़ेगा लेकिन वह सहन करना उन्नति का रास्ता बन जायेगा। परिस्थिति को सामना करते, परिस्थिति, स्वस्थिति के उड़ती कला का साधन बन जायेगी, अर्थात् हर बात में सफलता स्वतः, सहज और अवश्य प्राप्त होगी। सफलता का सितारा, उसकी विशेष निशानी है - कभी भी स्व की सफलता का अभिमान नहीं होगा, वर्णन नहीं करेगा, अपने गीत नहीं गायेगा लेकिन जितनी सफलता उतना नम्रचित, निर्मान, निर्मल स्वभाव होगा। और (दूसरे) उसके गीत गायेंगे लेकिन वह स्वयं सदा बाप के गुण गायेगा। सफलता का सितारा कभी भी क्वेश्चन माँ नहीं करेगा। सदा बिन्दी रूप में स्थित रह हर कार्य में औरों को भी 'ड्रामा की बिन्दी' स्मृति में दिलाये, विघ्नविनाशक बनाये, समर्थ बनाये सफलता की मंजल के समीप लाता रहेगा। सफलता का सितारा कभी भी हद की सफलता के प्राप्ति को देख प्राप्ति की स्थिति में बहुत खुशी और परिस्थिति आई वा प्राप्ति कुछ कम हुई तो खुशी भी कम हो जाये - ऐसी स्थिति परिवर्तन करने वाले नहीं होंगे। सदा बेहद के सफलतामूर्त होंगे। एकरस, एक श्रेष्ठ स्थिति पर स्थित होंगे। चाहे बाहर की परिस्थिति वा कार्य में बाहर के रूप से औरों को असफलता अनुभव हो लेकिन सफलता का सितारा, असफलता की स्थिति के प्रभाव में न आये, सफलता के स्वस्थिति से असफलता को भी

परिवर्तन कर लेगा। यह है सफलता के सितारे की विशेषतायें। अभी अपने से पूछो - मैं कौन हूँ? सिर्फ उम्मीदवार हूँ वा सफलता स्वरूप हूँ?' उम्मीदवार बनना भी अच्छा है, लेकिन सिर्फ उम्मीदवार बन चलना, प्रत्यक्ष सफलता का अनुभव न करना, इसमें कभी शक्तिशाली, कभी दिलशिकस्त.....यह नीचे-ऊपर होने का ज्यादा अनुभव करते हैं। जैसे कोई भी बात में अगर ज्यादा नीचे-ऊपर होता रहे तो थकावट हो जाती है ना। तो इसमें भी चलते-चलते थकावट का अनुभव दिलशिकस्त बना देता है। तो नाउम्मीदवार से उम्मीदवार अच्छा है, लेकिन सफलता स्वरूप का अनुभव करने वाला सदा श्रेष्ठ है। अच्छा। सुना तारामण्डल की कहानी?



मुख्य तीन दान बताये। ज्ञान का दान भी करते हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। तो एक है मन्सा का दान, दूसरा है वाचा का और तीसरा है कर्म द्वारा दान। मन्सा द्वारा सर्व शक्तियों का दान। वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा सर्व गुणों का दान। तो सदैव जो दिन आरम्भ होता है उसमें पहले यह प्लैन बनाओ कि आज के दिन यह तीनों दान किस-किस रूप से करना है और फिर दिन समाप्त होने के बाद चेक करो कि - “हम महादानी बने? तीनों ही प्रकार का दान किया?” क्योंकि तीनों प्रकार के दान की अपनी-अपनी प्रारब्ध वा प्राप्ति है। जैसे भक्ति मार्ग में जो-जो जिस प्रकार का दान करता है उसको उस प्रकार की प्राप्ति होती है। ऐसे ही जो इस महान जीवन में जितना और जैसा दान करता है उतना और वैसा ही भविष्य बनता है। न सिर्फ भविष्य लेकिन प्रत्यक्ष फल भी मिलता है। अगर कोई वाणी का वा कर्म का दान नहीं करते हैं सिर्फ मन्सा का दान करते हैं, तो उनको प्रत्यक्षफल और मिलता है। अभी आप लोग कर्म फिलासाफी को अच्छी रीति जान गये हो ना। तीनों दान की प्राप्ति अपनी-अपनी है। जो तीनों ही दान करते हैं उनको तीनों ही फल प्रत्यक्ष रूप में मिलते हैं। आप कर्मों की गति को जानते हो ना। मन्सा-दान का प्रत्यक्षफल क्या है? मन्सा महादानी बनने वाले को प्रत्यक्षफल यहीं प्राप्त होता है - एक तो वह अपनी मन्सा अर्थात् संकल्पों के ऊपर एक सेकेण्ड में विजयी बनता है अर्थात् संकल्पों के ऊपर विजयी बनने की शक्ति प्राप्त होती है। और, कितना भी कोई चंचल संकल्प वाला हो यानी एक सेकेण्ड भी उनका मन एक संकल्प में न टिक सके - ऐसे चंचल संकल्प वाले को भी अपनी विजय की

शक्ति में टेम्प्रेरी टाइम के लिए शांत व चंचल से अचल बना देंगे। जैसे कोई भी दुःख में तड़पते हुए को इन्जेक्शन द्वारा बेहोश कर देते हैं, उनके दुःख की चंचलता खत्म हो जाती है। ऐसे ही मन्सा द्वारा महादानी बनने वाला अपनी दृष्टि, वृत्ति और स्मृति की शक्ति से ऐसे ही उनको शान्ति का अनुभवी बना सकते हैं लेकिन टेम्प्रेरी टाइम के लिए। क्योंकि उनका अपना पुरुषार्थ नहीं होता है। लेकिन महादानी की शक्ति के प्रभाव से थोड़े समय के लिए वह अनुभव कर सकता है। तो जो मन्सा के महादानी होंगे उनके संकल्प में इतनी शक्ति होती है जो संकल्प किया उसकी सिद्धि मिली। तो मन्सा-महादानी संकल्पों की सिद्धि को प्राप्त करने वाला बन जाता है। जहाँ संकल्प को चाहे वहाँ संकल्पों को टिका सकते हैं। संकल्प के वश नहीं होंगे लेकिन संकल्प उनके वश होता है। जो संकल्पों की रचना रचे, वह रच सकता है। जब संकल्प को विनाश करना चाहे तो विनाश कर सकते हैं। तो ऐसे महादानी में संकल्पों के रचने, संकल्पों को विनाश करने और संकल्पों की पालना करने की तीनों ही शक्ति होती है। तो यह है मन्सा का महादान। ऐसे ही समझो मास्टर सर्वशक्तिवान का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाई देता है। समझा? वह हो गया मास्टर सर्वशक्तिमान और जो वाचा के महादानी हैं उनको क्या मिलता है? वह हैं मास्टर नालेजफुल। उनके एक-एक शब्द की बहुत वैल्यु होती है। एक रत्न की वैल्यु अनेक रत्नों से अधिक होती है। वाचा द्वारा तुम रत्नों का दान करते हो ना। तो जो ज्ञान-रत्नों का दान करते हैं उनका एक-एक रत्न इतना वैल्युएबल हो जाता है जो उनके एक-एक वचन सुनने के लिए अनेक आत्माएं प्यासी होती हैं। अनेक प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने वाला एक वचन बन जाता है। मास्टर नॉलेजफुल, वैल्युएबल और तीसरा फिर सेन्सीबल बन जाता है। उनके एक-एक शब्द में सेन्स भरा हुआ होता है। सेन्स अर्थात् सार के बिना कोई शब्द नहीं होता। जब कोई ऐसे सेन्स से शब्द बोलता है तो कहते हैं ना - यह तो बहुत सेन्सीबल है। वाणी द्वारा सेन्स का मालूम पड़ता है। तो दोनों सेन्सीबल भी बन जाते हैं। यह तो हुआ लक्षण। प्राप्ति क्या होती है? वाचा के दानी बनने वाले को विशेष प्राप्ति एक तो खुशी रहती है, क्योंकि धन को देख हर्षित होता है ना। और दूसरा वह कभी भी असंतुष्ट नहीं होंगे। क्योंकि खजाना भरपूर होने के कारण, कोई अप्राप्त वस्तु न होने के कारण सदैव सन्तुष्ट और हर्षित रहेंगे। उनका एक-एक बोल तीर समान लगेगा। जिसको जो बोलेंगे उनको वह लग जायेगा। उनके बोल प्रभावशाली होते हैं। वाणी का दान करने से वाणी में बहुत गुण आ जाते हैं। अवस्था में सहज ही खुशी की प्राप्ति

होगी। प्राप्ति करने का पुरुषार्थ नहीं करेंगे लेकिन स्वतः ही प्राप्त होगी। जैसे कोई खान से चीज निकलती है तो अखुट होती है ना। ऐसे ही अन्दर से खुशी स्वतः ही निकलती रहेगी। यह वरदान के रूप में प्राप्त होता है। खुशी के लिए पुरुषार्थ नहीं किया। पुरुषार्थ तो वाणी द्वारा दान करने का किया। प्राप्ति खुशी की हुई। कर्मणा द्वारा गुणों का दान करने के कारण कौनसी मूर्त बन जायेंगे? फरिश्ता। कर्म अर्थात् गुणों का दान करने से उनकी चलन और चेहरा - दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देंगे। दोनों प्रकार की लाइट होगी अर्थात् प्रकाशमय भी और हल्कापन भी। जो भी कदम उठेगा वह हल्का। बोझ महसूस नहीं करेंगे। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म में मदद की महसूसता करेंगे। हर कर्म में सर्व द्वारा प्राप्त हुआ वरदान अनुभव करेंगे। दूसरे, हर कर्म द्वारा महादानी बनने वाला सर्व की आशीर्वाद के पात्र बनने के कारण सर्व वरदान की प्राप्ति अपने जीवन में अनुभव करेंगे। मेहनत से नहीं, लेकिन वरदान के रूप में। तो कर्म में दान करने वाला एक तो फरिश्ता रूप नज़र आयेगा, दूसरा सर्व वरदानमूर्त अपने को अनुभव करेगा। तो अपने को चेक करो - कोई भी दान करने में कमी तो नहीं करते हैं? तीनों दान करते हैं? तीनों का हिसाब किस-न-किस रूप से पूरा करना चाहिए। इसके लिए तरीके, चान्स ढूंढो। ऐसे नहीं - चान्स मिले तो करेंगे। चान्स लेना है, न कि चान्स मिलेगा। ऐसे महादानी बनने से फिर लाइट और माइट का गोला नज़र आयेगा। आपके मस्तष्क से लाइट का गोला नज़र आयेगा और चलन से, वाणी से नॉलेज रूपी माइट का गोला नज़र आयेगा अर्थात् बीज नजर आयेगा। मास्टर बीजरूप हो ना। ऐसे लाइट और माइट का गोला नज़र आने वाले साक्षात् और साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे।



सदा भरपूर रहो। भरपूर आत्मा अचल होगी। जो भरपूर नहीं होगा उसमें हलचल होगी। इस समय भी भरपूर बने हो, फिर भविष्य में जब राज्य करेंगे तो भी कितने भरपूर होंगे! कोई कमी नहीं होगी। और जब पूज्य बनते हो तो आपके मन्दिर भी कितने भरपूर हो जायेंगे! भारत के मन्दिरों से और लोग मालामाल हुए। जब जड़ चित्र मन्दिर भी आपके इतने सम्पन्न थे तो आप कितने सम्पन्न होंगे! अप्राप्ति का नाम-निशान नहीं होगा। सतयुग में कोई अप्राप्ति होगी? अभी कोई अप्राप्ति है? सब-कुछ मिल गया! अच्छा, सतयुग में बाप (शिवबाबा) होगा? तो अप्राप्ति

हुई या नहीं हुई? हो गई ना। तो सतयुग से भी ज्यादा सर्व प्राप्तियां अभी हैं। कितनी खुशी, कितना नशा है! सदा यह स्मृति में रखो कि हम ही आधा कल्प राज्य-अधिकारी बनते हैं और आधा कल्प पूज्य आत्माए बनते हैं और संगम पर सर्व प्राप्ति सम्पन्न आत्मा बनते हैं। तो सारा कल्प भरपूर हो ना! क्योंकि इस समय की सम्पन्नता सारे कल्प राज्य के रूप में और पूज्य रूप में चलती है। अभी भी देखो-चाहे कलियुग का अन्त है, फिर भी स्वयं सूखी रोटी खायेंगे लेकिन देवताओं को बढ़िया भोग लगायेंगे। चैतन्य मनुष्यों को रहने का स्थान नहीं होगा, फुटपाथ पर सोते हैं, झोपड़ियां लगाकर सोते हैं और आपके जड़ चित्र कितने विधिपूर्वक मन्दिरों में रहते हैं! तो चैतन्य को जगह नहीं मिलती लेकिन आपके जड़ चित्रों को भी जगह देते हैं! कितने बड़े-बड़े मन्दिर हैं! और मूर्ति कितनी होती है! तीन पैर पृथ्वी चाहिए लेकिन मन्दिर कितने बड़े बनाते हैं! तो इस अन्तिम जन्म में भी आप आत्माए कितनी सम्पन्न हो! जड़ चित्र भी आपके सम्पन्न हैं। तो चैतन्य में भी सम्पन्न हो ना। सारे कल्प का श्रेष्ठ भाग्य अब मिल रहा है। मिल गया। भाग्यविधाता ने हर बच्चे की सारे कल्प की तकदीर की लकीर खींच दी। सारा कल्प नाम बाला होगा। तो इतना नशा रहता है? समझते हो-हमारी पूजा हो रही है? किसकी पूजा हो रही है? आपका मन्दिर है? या बड़े-बड़े महारथियों के मन्दिर हैं? जो ब्राह्मण बनता है वह ब्राह्मण सो देवता बनता है और देवता सो पूज्य जरूर बनता है। नम्बरवार हैं लेकिन पूज्य जरूर बनते हैं। मन्दिरों में भी नम्बरवार हैं ना। कोई मूर्ति की पूजा देखो कितना विधिपूर्वक होती है! और कोई मन्दिरों में कभी-कभी पूजा होती है। जो कभी-कभी याद में रहता है उसकी मूर्ति की पूजा भी कभी-कभी होती है और जो सदा याद में रहते हैं, सदा श्रीमत पर चलते हैं उनकी पूजा भी सदा होती है। जो हर कर्म में कर्मयोगी बनता है, उसकी पूजा भी हर कर्म की होती है। बड़े-बड़े मन्दिरों में हर कर्म की पूजा होती है-भोजन की भी होगी, झूले की भी होगी, सोने की भी होगी तो उठने की भी होगी। तो जितनी याद उतना राज्य, उतनी पूजा। अभी अपने आपसे पूछो कि मैं कितना याद में रहता हूँ? आज विश्व-रचना बाप अपनी श्रेष्ठ रचना को देख रहे हैं। सर्व रचना में से श्रेष्ठ रचना आप ब्राह्मण आत्मायें हो क्योंकि आप ही विश्व की पूर्वज आत्मायें हो। एक तरफ पूर्वज हो, साथ-साथ पूज्य आत्मायें भी हो। इस कल्प-वृक्ष की फाउन्डेशन अर्थात् जड़ आप ब्राह्मण आत्मायें हो। इस वृक्ष के मूल आधार-'तना'भी आप हो। इसलिए आप सर्व

आत्माओं के लिए पूर्वज हो। सृष्टि-चक्र के अन्दर जो विशेष धर्म-पिता कहलाये जाते हैं उन धर्म-पिताओं को भी आप पूर्वज आत्माओं द्वारा ही बाप का सन्देश प्राप्त होता है, जिस आधार से ही समय प्रमाण वो धर्म-पितायें अपने धर्म की आत्माओं प्रति सन्देश देने के निमित्त बनते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर है, तो ब्रह्मा के साथ आप ब्राह्मण आत्मायें भी साथी हो। इसलिए आप पूर्वज आत्मायें गाई हुई हो। पूर्वज आत्माओं का, डायरेक्ट चाहे इन्डायरेक्ट, सर्व आत्माओं से कनेक्शन है। जैसे-वृक्ष की सर्व टाल-टालियों का सम्बन्ध जड़ से वा तना से जरूर होता है। चाहे किसी भी धर्म की छोटी वा बड़ी टाल-टालियाँ हों लेकिन सम्बन्ध स्वतः ही होता है। तो पूर्वज हुए ना। आधा कल्प राज्य-अधिकारी बनने के बाद फिर पूज्य आत्मायें बनते हो। पूज्य बनने में भी आप आत्माओं जैसी पूजा और किसी भी धर्म के आत्माओं की नहीं होती। जैसे आप पूज्य आत्माओं की विधिपूर्वक पूजा होती है, ऐसे कोई धर्म-पिता की भी पूजा नहीं होती। बाप के कार्य में जो आप ब्राह्मण साथी बनते हो, उन्हीं की भी देवता वा देवी के रूप में विधिपूर्वक पूजा होती है। और कोई भी धर्म-पिता के साथी धर्म की पालना करने वाली आत्माओं की विधिपूर्वक पूजा नहीं होती, गायन होता है। स्टैच्यू (tatie) बनाते हैं लेकिन आप जैसे पूज्य नहीं बनते। आपका गायन भी होता है तो पूजा भी होती है। गायन की विधि भी आप ब्राह्मण आत्माओं की सबसे न्यारी है। जैसे आप देवात्माओं का गायन बहुत सुन्दर रूप से कीर्तन के रूप में होता है, आरती के रूप में होता है, ऐसे अन्य आत्माओं का गायन इसी प्रकार से नहीं होता। ऐसे क्यों होता? क्योंकि आप श्रेष्ठ रचना पूर्वज और पूज्य हो। आदि आत्मायें आप ब्राह्मण आत्मायें हो क्योंकि आदि देव ब्रह्मा के सहयोगी श्रेष्ठ कार्य के निमित्त बने हो। अनादि रूप में भी परम आत्मा के अति समीप रहने वाले हो। आत्माओं का जो चित्र दिखाते हो उसमें सबसे समीप आत्मायें कौनसी दिखाते हो? उसमें आप हो। तो अनादि रूप में भी अति समीप हो जिसको डबल विदेशी कहते हैं-नियरेस्ट और डियरेस्ट। ऐसे अपने को समझते हो? पूर्वज का क्या काम होता है? पूर्वज सभी की पालना करते हैं। बड़ों की पालना ही प्रसिद्ध होती है। तो आप सभी पूर्वज आत्मायें सर्व आत्माओं की पालना कर रहे हो? या सिर्फ अपने आने वाले स्टूडेन्ट्स की पालना करते हो? वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्माओं की पालना करते हो? सारे विश्व की आत्माओं के पूर्वज हो वा सिर्फ ब्राह्मण

आत्माओं के पूर्वज हो? जो जड़ वा तना होता है वह सारे वृक्ष के लिए होता है। वा सिर्फ अपने तना के लिए ही होता है? सब टाल-टालियों के लिए होता है ना। जड़ अथवा तना द्वारा सारे वृक्ष के पत्तों को पानी मिलता है। वा सिर्फ थोड़ी टाल-टालियों को पानी मिलता है? सबको मिलता है ना। लास्ट वाले पत्तों को भी मिलता है। इतना बेहद का नशा है? वा बेहद से हद में भी आ जाते हो? कितनी सेवा करनी है! हर एक पत्ते को पानी देना है अर्थात् सर्व आत्माओं की पालना करने के निमित्त हो। किसी भी धर्म की आत्माओं को मिलते हो वा देखते भी हो तो “हे पूर्वज आत्मायें! ऐसे अनुभव करती हो कि यह सब आत्मायें हमारे ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर की वंशावली है, हम ब्राह्मण आत्मायें भी मास्टर ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर हैं अर्थात् पूर्वज हैं, यह सब हमारे हैं?” वा सिर्फ ब्राह्मण आत्मायें हमारी हैं? जब भाई-भाई कहते हैं तो आप पूर्वज आत्मायें बड़े भाई अर्थात् बाप समान हो। इस स्मृति को ही प्रैक्टिकल लाइफ में अनुभव करना है और कराना है।



क्योंकि आज वतन में एडवांस में गई हुई आत्मायें इमर्ज थी। वह विशेष आत्मायें रूह-रूहान कर रही थीं। मुख्य रूह-रूहान क्या होगी? आप सभी ने भी विशेष आत्माओं को इमर्ज किया ना! वतन में भी रूह-रूहान चल रही थी कि ‘समय और सम्पूर्णता’ दोनों में कितना अन्तर रह गया है? नम्बर कितने तैयार हुए हैं? नम्बर तैयार हुए हैं या अभी होने हैं? नम्बरवार सब स्टेज पर आ रहे हैं ना। एडवांस पार्टी पूछ रही थी - कि अभी हम तो एडवांस का कार्य कर रहे हैं लेकिन हमारे साथी हमारे कार्य में विशेष क्या सहयोग दे रहे हैं? वह भी माला बना रहे हैं। कौन-सी माला बना रहे हैं? कहाँ-कहाँ किस-किस का नई दुनिया के आरम्भ करने का जन्म होगा। वह निश्चित हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में विशेष सहयोग - सूक्ष्म शक्तिशाली मन्सा का चाहिए। जो शक्तिशाली स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्मायें हैं वह स्वयं भल पावन हैं लेकिन वायुमण्डल व्यक्तियों का, प्रकृति का तमोगुणी है। अति तमोगुणी के बीच अल्प सतोगुणी आत्मायें कमल पुष्प समान हैं। इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य, तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं का विनाश किसी भी विधि से होगा लेकिन अचानक के मृत्यु,

अकाले मृत्यु, समूह रूप में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रेशन कितने कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूनी नाहक वायुमण्डल के वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना - क्या इस विशाल कार्य के लिए तैयारी कर रहे हो? या सिर्फ कोई आया, समझाया और खाया, इसी में ही तो समय नहीं जा रहा है? वह पूछ रहे थे। आज बापदादा उन्हीं का सन्देश सुना रहे हैं। इतना बेहद का कार्य करने के निमित्त कौन हैं? जब आदि में निमित्त बने हो तो अन्त में भी परिवर्तन के बेहद के कार्य में निमित्त बनना है ना। वैसे भी कहावत है - 'जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया'। गर्भ महल भी तैयार करने हैं। तब तो नई रचना का, योगबल का आरम्भ होगा। योगबल के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। अपनी सेफ्टी के लिए भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण न भी प्राप्त हो सकता है। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर नहीं होगी तो अपनी कमजोरियाँ पश्चाताप के रूप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी। क्योंकि स्मृति में कमजोरी आने से भय - भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला लेते हो लेकिन अन्त में भय अनुभव होगा। इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अभी आपके साथी, आपके सहयोग का इन्तजार कर रहे हैं। कार्य चाहे अलग-अलग है लेकिन परिवर्तन के निमित्त दोनों ही हैं। वह अपनी रिजल्ट सुना रहे थे। एडवांस पार्टी वाले कोई स्वयं श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वाहन करने के लिए तैयार हुए हैं और हो रहे हैं, कोई तैयार कराने में लगे हुए हैं। उन्हीं का सेवा का साधन है - मित्रता और समीपता के सम्बन्ध। जिससे इमर्ज रूप में ज्ञान चर्चा नहीं करते लेकिन ज्ञानी तू आत्मा के संस्कार होने के कारण एक दो के श्रेष्ठ संस्कार, श्रेष्ठ वायब्रेशन और सदा होली और हैपी चेहरा एक दो को प्रेरणा देने का कार्य कर रहा है। चाहे अलग-अलग परिवार में हैं लेकिन किसी न किसी सम्बन्ध वा मित्रता के आधार पर एक दो के सम्पर्क में आने से आत्मा नॉलेजफुल होने के कारण यह अनुभूति होती रहती है कि यह अपने हैं वा समीप के हैं। अपनेपन के आधार से एक दो को पहचानते हैं। अभी समय समीप आ रहा है इसलिए एडवांस पार्टी का कार्य तीव्रगति से चल रहा है। ऐसी लेन-देन वतन में हो रही थी। विशेष जगत-

अम्बा सभी बच्चों के प्रति दो मधुर बोल, बोल रही थी। दो बोल में सभी को स्मृति दिलाई - “सफलता का आधार सदा सहनशक्ति और समाने की शक्ति है, इन विशेषताओं से सफलता सदा सहज और श्रेष्ठ अनुभव होगी।” औरों का भी सुनायें क्या? आज चिटचैट का दिन विशेष मिलने का रहा तो हर एक अपने अनुभव का वर्णन कर रहे थे। अच्छा और किसका सुनेंगे? (विश्व किशोर भाऊ का) वह जैसे भी कम बोलता है लेकिन जो बोलता है वह शक्तिशाली बोलता है। उसका भी एक ही बोल में सारा अनुभव रहा कि किसी भी कार्य में सफलता का आधार - “निश्चय अटल और नशा सम्पन्न”। अगर निश्चय अटल है तो नशा स्वतः ही औरों को भी अनुभव होता है। इसलिए निश्चय और नशा सफलता का आधार रहा। यह है उसका अनुभव। जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व महाराजन बना कि बना। ऐसे विश्वकिशोर को भी यह नशा रहा कि मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हूँ। यह नशा वर्तमान और भविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना। जो साथ में रहे उन्होंने ऐसा देखा ना। अच्छा - दीदी ने क्या कहा? दीदी रूह-रूहान बहुत अच्छी कर रही थी। वह कहती है कि आपने सभी को बिना सूचना दिये क्यों बुला लिया। छुट्टी लेकर तैयार हो जाती। आप छुट्टी देते थे? बापदादा बच्चों से रूह-रूहान कर रहे थे - देह सहित देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार सबके सम्बन्ध, लौकिक नहीं तो अलौकिक तो हैं। अलौकिक सम्बन्ध से, देह से, संस्कार से ‘नष्टोमोहा’ बनने की विधि, यही ड्रामा में नूंधी हुई है। इसलिए अन्त में सबसे नष्टोमोहा बन अपनी ड्यूटी पर पहुँच गई। चाहे विश्व किशोर का पहले थोड़ा-सा मालूम था लेकिन जिस समय जाने का समय रहा उस समय वह भी भूल गया था। यह भी ड्रामा में नष्टोमोहा बनने की विधि नूंधी हुई थी जो रिपीट हो गई। क्योंकि कुछ अपनी मेहनत और कुछ बाप ड्रामा अनुसार कर्मबन्धन मुक्त बनाने में सहयोग भी देता है। जो बहुत काल के सहयोगी बच्चे रहे हैं, ‘एक बाप दूसरा न कोई’ इस मेन सबजेक्ट में पास रहे हैं, ऐसे एक बाप अनुभव करने वालों को बाप विशेष एक ऐसे समय सहयोग जरूर देता है। कई सोचते हैं कि क्या यह सब कर्मातीत हो गये, यही कर्मातीत स्थिति है? लेकिन ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। इसलिए कुछ अपनी मेहनत कम भी दिखाई देती हो लेकिन बाप की मदद उस समय अन्त में एक्स्ट्रा मार्क्स दे पास विद आनर बना ही देती है। वह गुप्त होता है

- इसलिए क्वेश्चन उठते हैं- कि क्या ऐसा हुआ? लेकिन यह सहयोग का रिटर्न है। जैसे कहावत है ना - 'आईवेल में काम आता है'। तो जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्हीं को ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा - इस रहस्य को? इसलिए नष्टोमोहा की विधि से एक्स्ट्रा मार्क्स की गिफ्ट से सफलता को प्राप्त कर लिया। समझा - पूछते रहे हो ना कि आखिर क्या है? सो आज यह रूह-रूहान सुना रहे हैं। अच्छा - दीदी ने क्या कहा? उसका अनुभव तो सभी जानते भी हो। वह यही बोल, बोल रही थी कि 'सदा बाप और दादा की अँगुली पकड़ो या अँगुली दो। चाहे बच्चा बना के अँगुली पकड़ो, चाहे बाप बनाकर अँगुली दो। दोनों रूप से हर कदम में अँगुली पकड़ साथ का अनुभव कर चलना, यही मेरे सपालता का आधार है। तो यही विशेष रूह-रूहान चली। आदि रत्नों के संगठन में वह कैसे मिस होगी इसलिए वह भी इमर्ज थी। अच्छा - वह रही एडवांस पार्टी की बातें, आप क्या करेंगे?



10-20 का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। 5 ही साँपों को गले की माला बना दी है? अगर नाम निकालो तो बहुत हैं। अच्छा है, यह साइंस के साधन आपको बेहद की सेवा करने में बहुत साथ देंगे और सहज सेवा करायेंगे। अच्छा। अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है। अपनी दादियों की, सखियों की, पाण्डवों की याद तो आती है ना! बहुत बड़ा ग्रुप हो गया है एडवान्स पार्टी का। अपने ऊपर राज्य करेंगे? अभी आप लोग जायेंगे तो एडवांस पार्टी भी तैयार चाहिए ना। अभी काम सारा आपके ऊपर है। अभी तो चला लो, फिर देखा जायेगा!" यह अलबेलेपन के संकल्प हैं। अवस्था अच्छी रही, चिल्लाया नहीं। आ गया... आ गया... का नगाड़ा बजाओ। आज के दिन(शिव जयन्ती) विशेष भक्त लोग आपका यादगार बलि भी चढ़ाते हैं। आज वतन में बापदादा की आपस में रूह-रूहान थी, कैसे रूह-रूहान करेंगे? आज वतन में भी सभी विशेष आदि रत्न और सेवा के आदि रत्न इमर्ज हुए। आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। आप बच्चों ने अज्ञान नींद से जागरण का संकल्प एक दिन के लिए नहीं किया है, जागरण वह भी करते लेकिन आपने एक संगम युग का हीरे तुल्य जन्म जागरण किया है और कर रहे हैं। आप लोगों ने देखा होगा कि होली में

भिन्न-भिन्न रंगों के, सूखे रंग, थालियां भरकर रखते हैं। आप सब मन-वचन-कर्म से बाप के आगे समर्पण होते हो, उसी का यादगार भक्त लोग अपने को बलि नहीं चढ़ाते, बकरे को बलि चढ़ा देते हैं। आप सबको भी जब कोई मौका होता है तो याद तो आती है ना। आप सभी जितना तन-मन- धन सफल करते रहते हो उतना ही सफलता के सितारे बन गये हो। आप सोचते हो ना - क्या कर रहे हैं? आपकी स्थापना के कनेक्शन से ही यह साइंस की भी तीव्रगति हुई है। आपके अच्छे-अच्छे सेवा साथी एडवांस पार्टी में गये हैं, उन्हीं का आज वतन में होली मनाने का दिन था। आपके अन्तिम महादेव, तपस्वी देव, अशरीरी स्थिति वाली देव आत्मा, फरिश्ता आत्मा इस यादगार में यह सब साँप गले की माला दिखाई है। आपस में अपने जीवन की बहुत सी कहानियां एक दो को सुना रहे थे, बाबा ने ऐसा कहा, बाबा ने ऐसे मेरे से प्यार किया, शिक्षा दी। आपसे पहले भोग उन्होंने ले लिया है, आपको कल मिलेगा। इतना ऊंच मर्तबा बापदादा ने माताओं को दिया है। इतने सारे चाहिए। इसका भी रहस्य आप जानते हो, क्योंकि सबसे बड़े ते बड़ा देह-अभिमान का कारण है "मैं पन"। इसलिए सर्वशक्तिवान द्वारा प्राप्त अपनी शक्तियों को इमर्ज करो। इसलिए साइंस के निमित्त बनने वाले बच्चों को भी बापदादा मेहनत की मुबारक देते हैं। इसीलिए गायन है - 'बूँद-बूँद से तलाब'। उन्हीं की दिल में उस समय भी बाबा ही बाबा था। एक मास के लिए, दो मास के लिए नहीं, जीवन ही व्रत धारण करने वाली बन गई। एक शब्द अलबेलेपन का कारण - "सब चलता है"। एक हैं डायरेक्ट मुख द्वारा वंशावली और दूसरे हैं संकल्प द्वारा वंशावली। एडवांस पार्टी कहती है हम तो तैयार हैं। एडवांस पार्टी का पार्ट अभी तक गुप्त है। एडवांस पार्टी के जन्म की बातें भूल गये और संगम की बातें इमर्ज हो गई। एडवांस पार्टी में अपना पार्ट बजायेंगे। ऐसी मातायें हो ना! सोई हुई आत्माओं को जगायेंगी। ऑर्डर में हुआ? और कोई नहीं मिला, बकरा ही क्यों मिला? और दीदी जैसे यहाँ नशे में चली जाती थी ना, वैसे नशे में खूब रास किया। और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये? कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रूहरूहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? कभी उसका खेल देखना अच्छा तो नहीं लगता है? कम से कम 9 लाख तो साथ जायें। करते हो या कोई एक शीश निकालकर आपके ऊपर डाँस करता है? कितना भी कोई छिपाये, छिपाते भी रॉयल्टी से हैं, साधारण

नहीं। कितनी खुशी है? किस बात के लिए तैयार हैं? कुछ समय के बाद क्या हुआ? कुछ समय के बाद सभी बापदादा की बांहों में समा गये और सब एकदम लवलीन हो गये और उसके बाद फिर बापदादा ने सबके ऊपर भिन्न-भिन्न रंगों के जो हीरे थे, बहुत महीन थे, जैसे किसी चीज़ का चूरा होता है ना, ऐसे थे। कोई ऐसी चीज़ ही नहीं है जिससे तुलना कर सकें। क्या बड़ी बात है! लेकिन ड्रामा का बहुत अच्छा कल्याणकारी नियम बना हुआ है, परमात्म कार्य में फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाव होना है। क्योंकि साकार में तो हर एक के हर कर्म को कोई देख नहीं सकता है, साकार ब्रह्मा भी साकार में नहीं देख सके लेकिन अब अव्यक्त रूप में अगर चाहे तो किसी के भी हर कर्म को देख सकते हैं। खेल देखने लग जाओ। गोल्डन गिफ्ट, जिस गोल्डन गिफ्ट अर्थात् गोल्डन युग में सब स्वतः ही गोल्ड हो जाता है, नया हो जाता है। चन्द्रमणि दादी का हाथ पकड़ा और रास शुरू कर दी। जब यह माला पहनते तब बाप की माला में नम्बर अच्छे में नजदीक मणके बनते हैं। जब संगमयुगी शरीर में इमर्ज हुए तो एक दो में बहुत मिलन मनाने लगे। जाग गये हैं ना, अभी फिर सोयेंगे तो नहीं ना! या थोड़ा-थोड़ा सा सो जायेंगे! अच्छा, सोये नहीं तो थोड़ा झुटका खा लेंगे! यह जागरण ऐसा जागरण है जो स्वयं तो जाग जाते हैं लेकिन औरों को भी जगाते हैं। जिन्होंने आपकी निंदा की है वह आपका कीर्तन गायेंगे क्योंकि बाप की बन गई हैं ना! ऊँचे ते ऊँचे भगवन की साथी बन गई हो। जैसे अभी कोई भी बड़ा दिन होता है ना! तो भारत माता की जय गाते हैं ना! आगे चलकर आप माताओं की जय-जय गायेंगे। जैसे यहाँ इस दुनिया में आप लोग 'मोनोएक्टिंग' करते हो ना! बहुत अच्छी-अच्छी करते हो। जैसे संकल्प शक्ति फास्ट है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स फास्ट पुरुषार्थ और फास्ट प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं इसलिए सारे ब्राह्मण परिवार में डबल फारेनर्स डबल सिकीलधे हो। जो गाया हुआ है कि परमात्मा की हजार आंखें हैं, लाखों आँखें हैं, लाखों कान हैं। ज्ञान की जीवन में जागरण माना अन्धकार से रोशनी में आना। डबल फारेन में भी सुन रहे हैं, देख भी रहे हैं। डबल फारेनर्स को बापदादा कहते हैं कि ब्रह्मा के संकल्प की पैदाइस हैं। तो अलबेलापन एक मोटा रूप है, एक महीन रूप है, शब्द दोनों में एक ही है ``सब चलता है, देख लिया है क्या होता है! कुछ नहीं होता। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था। तो आप लोंगो की साकारी दुनिया में तो एक आत्मा दो पार्ट बजाती है और बापदादा दो

आत्मायें एक शरीर है। तो आप समझते हो कि संगमयुग की बातें जब एक दो में करते हैं तो कितनी खुशी में आ जाते हैं। तो एडवांस पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थी। तो ऐसी माताओं को बापदादा भी नमस्ते कहते हैं। तो कोई भी एक शीश आपको डाँस दिखाने तो नहीं आते? तो चमकती हुई बॉडी थी ना तो उसके ऊपर वह भिन्न-भिन्न रंग के हीरे पड़ने से बहुत सभी जैसे सज गये। तो जब सब आ गये, तो वतन में स्वरूप कौन सा होता है, जानते हो? तो बकरा भी क्या करता है? तो बहुत सभी ऐसे चमक गये जो सतयुग में भी ऐसी ड्रेस नहीं होगी। तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते कि छुट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे, या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? तो बापदादा ने सभी को अपने संगमयुगी शरीर में इमर्ज किया। तो बापदादा सभी बच्चों के मन के खुशी की बैण्ड कहो, बाजे, गाने सुन रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो ब्रह्मा बाप मुस्कराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हूँ। तो मातायें जय-जयकार का आवाज सुनेंगी। तो वतन में आज सब प्रकार की आत्मायें होली मनाने आई थी। तो वतन में भी जैसे सूखा रंग होता है ना - ऐसे बहुत महीन चमकते हुए हीरे थे लेकिन बोझ वाले नहीं थे, जैसे रंग को हाथ में उठाओ तो हल्का होता है ना! ऐसे भिन्न-भिन्न रंग के हीरों की थालियां भरी हुई थी। तो वैरायटी संगमयुग के ही भोग खिलाये। तो संकल्प शक्ति बड़ी महान होती है। तो सबसे ज्यादा फायदा ब्राह्मणों को होना चाहिए ना! इसलिए जब से संगमयुग आरम्भ हुआ है तब से यह साइन्स के साधन भी बढ़ते जा रहे हैं। तो सबसे रमणीक कौन थी इस ग्रुप में? तो सभी एवररेडी हैं या हो जायेंगे? तो सात ही रंग थे। तो हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बापदादा पूछते हैं कि हर प्रकृति के, माया के, स्वभाव-संस्कार के, वायुमण्डल के परिस्थितियों में सर्वशक्तिवान हो ना? दर्द तो काफी हुआ है। दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म लगन है, लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है। दुनिया में भक्त लोग भी शिव जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाते हैं। देखो, एडवांस पार्टी में सब चाहिए। दोनों कैसे एक दो में रूह-रूहान करेंगे? नगाड़ा बजाओ। नगाड़ा बजाने आता है? नजदीक आकर ऊपर चली गई। नम्बरवार तो हैं लेकिन विशेष आत्मायें पक्के हैं। नव युग रचता बाप आप सब बच्चों के लिए कौन-सी गिफ्ट लाते हैं? नव

वर्ष में खुशी मनाते, एक-दो को गिफ्ट देते हैं। नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? निरन्तर मर्यादा पूर्वक घर का वातावरण, माँ-बाप की सन्तुष्टता और स्थूल साधन भी सब प्राप्त हैं। नेचुरल बन गई और नेचर बन गई। न्यारापन है, लेकिन अगर ज्ञान इमर्ज हो जाए तो सभी भाग करके मधुबन में तो आ जायें ना! लेकिन इन्हों का पार्ट न्यारा है, ज्ञान की शक्ति है। पवित्र आहार, पवित्र व्यवहार और पवित्र विचार यह जीवन बन गई। पवित्रता की नेचर बन गई है ना! नेचर बन गई है या बनानी पड़ती है? पुरानी-पुरानी थी ना इसलिए उन्हों को बाबा-बाबा ही याद था और बाबा-बाबा कहते ही गई हैं। फर्क हुआ ना! तो बहुत मजे की बात होती है। फिर एक दो को भी डालने लगे। फिर भी अवस्था अच्छी रही। फीचर्स भी सभी के मैजारिटी एक रॉयल फैमली की तृप्त आत्मायें, भरपूर आत्मायें, हर्षित आत्मायें और दिव्य गुण सम्पन्न आत्मायें दिखाई देते हैं। बहुत खुशी में एक दो से लेन-देन कर रहे थे। बहुत है? बहुत-बहुत मौज मनाई। बापदादा ने इन एडवान्स सबको भोग खिलाया, आप तो कल भोग लगायेंगे ना लेकिन बापदादा ने मधुबन का, संगमयुग का भिन्न-भिन्न भोग सबको खिलाया और उसमें विशेष होली का भोग कौन-सा है? बापदादा ने भी देखा - यह बड़े मौज में आ गये हैं तो मिलने दो इन्हों को। बाबा ऐसे कहता है, बाबा-बाबा, बाबा-बाबा ही था। बाबाबाबा ही कर रहे थे। बुद्धिवानों का बुद्धि क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता? बैण्ड बजाते हो। बोलो। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। भारत के भाई- बहनें आपको देख करके खुश होते हैं, वाह डबल फारेनर्स वाह! डबल फारेनर्स को खुशी होती है ना? मतलब तो बहुत मनाया, नाचा, गाया। मम्मा को बीच में ठहराया और सार्किल लगाया, एक-दो को आँख मिचौनी की, बहुत खेला और बापदादा भी देख-देख बहुत मुस्करा रहे थे। मर्यादा में बहुत पक्के हैं। महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व-जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा। माता गुरु का जो गायन है वह प्रत्यक्ष रूप में दिखायेंगी। माताओं का बहुत अच्छा पार्ट है। माताओं की विशेषता क्या है? माताओं के चरणों में यह सब बड़े-बड़े मर्तबे वाले आप सबके चरणों में झुकेंगे। में, में... तो यह देह-अभिमान के मैं-पन की निशानी है और देह-अभिमान का मैं-पन बहुत सूक्ष्म भी है और भिन्न-भिन्न प्रकार का भी है। मौज के बाद क्या होता है? यह अलौकिक

जागरण सभी को अच्छा लगता है ना! जब से जन्म लिया, जयन्ती मनाई तब से क्या-क्या व्रत लिया? यह कोई-कोई होता है। यह तो हुई उन्हीं की हिस्ट्री, लेकिन वतन में क्या हुआ? यह प्रकृति, माया, संस्कार, वायुमण्डल या संगदोष इन पाँचों को अपनी शक्ति के आधार से अधीन बनाया है? यह भुजायें सर्व शक्तियों का सूचक हैं। यह माता गुरु जो गाया हुआ है, वह सच्चा पार्ट आप मातायें बजायेंगी। यह रूहानी नशा है ना? यह समा जाना ही समान बनाता है। यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। यह “मैं पन” जब अर्पण कर लेते हो तब ही ब्राह्मण बनते हो। यह 5 शीश वाला साँप है, इस साँप पर, 5 शीश पर अधिकारी बन डाँस करते हो? याद है ना! बच्चे कहते हैं याद तो क्या, हमारी तो नेचुरल जीवन ही ‘व्रत’ की हो गई। रमणीक बहनें भी तो बहुत थी ना। लाइट का ही होता है ना! देखा है ना! तो लाइट की प्रकाशमय काया तो पहले ही चमकती रहती है। लाल, पीला, हरा... जो सात रंग कहते हैं ना। लेकिन चमक बहुत थी तो बापदादा ने सबके ऊपर डाला। लेकिन वह मनाते हैं एक दिन का जागरण वा एक दिन का व्रत। वह अभी निराकार और अव्यक्त ब्रह्मा दोनों साथ-साथ देख सकते हैं। वह आप लोगों का आह्वान कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। वह कहते हैं यह प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजायें तो हम सभी प्रत्यक्ष होकर नई सृष्टि की रचना के निमित्त बनेंगे। वह गिफ्ट भी क्या है! थोड़े समय के लिए वह गिफ्ट है। विजय माला के समीप के मणके बनते हैं। शक्ति कम नहीं हुई है। शक्तियों को (शक्ति स्वरूप में पाण्डव भी आ गये तो शक्तियाँ भी आ गई) सदा शक्तियों को कोई को 4 भुजा, कोई को 6 भुजा, कोई को 8 भुजा, कोई को 16 भुजा, साधारण नहीं दिखाते हैं। शक्ति-स्वरूप आत्माओं का क्या स्वरूप दिखाया है? शिवरात्रि: मनाने के समय क्या करते हो? शेश शय्या बना दी है, डाँस का मंच बना दिया है? सतयुग में तो आपके देवता रूप में यह साइन्स सेवा करेगी लेकिन संगमयुग में भी साइन्स के साधन आप ब्राह्मणों को मिल रहे हैं और सेवा में भी, प्रत्यक्षता करने में भी यह साइन्स के साधन बहुत विशाल रूप से सहयोगी बनेंगे। सब मौज में तो थे ही। सबके संस्कारों का तो आपको पता है। सभी अपने पार्ट में खुश हैं। सभी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। सभी को बाबा-बाबा ही याद था। सभी को साथ ले जाना है ना या अकेले-अकेले जायेंगे? सभी सफलता के सितारे बने हो? समय नजदीक आ रहा है तो

तैयारी सब चाहिए ना। समा जाना आता है ना? सर्व मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, अच्छा। साँप भी डाँस तो करता है ना बहुत अच्छी। साकार बाप की पालना लेने वाली, तो पालना तो देंगी ना। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। होली कैसे मनाई? होली मनाने आये तो खेलें भी। बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए अपनी व दूसरों की वृत्ति को पॉजिटिव बनाओ ।